GYAN PEETH PATRIKA
MAR-DEC 1965 G.K.U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-067

078088

078087

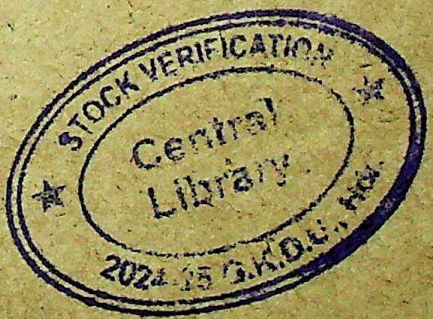

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

28.3.65

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष तीन : अंक आठ
मार्च १९६५

ज्ञानपीठ पत्रिका

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित
लेखन-प्रकाशनकी अधुनातन
दिशा-प्रवृत्ति और उपलब्धि
परिचायिनी मासिकी

078087

भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रस्तुत

दो बहुप्रशंसित संग्रहणीय प्रकाशन

• एक साहित्यिककी डायरी : ले० मुक्तिबोध

कवि गजानन माधव मुक्तिबोधके ललित-वैचारिक निबन्धोंके संग्रहका दूसरा परिवर्द्धित संस्करण। तीन नये महत्त्वपूर्ण निबन्ध संकलित। मूल्य २.५०

• घाटियाँ गूँजती हैं : ले० विष्णुप्रभाकर

बर्बर चीनी आक्रमणके परिप्रेक्ष्यमें लिखे गये त्रि-अंकीय नाटकका दूसरा संस्करण। सर्वथा पठनीय और रंगमंचपर सफलतापूर्वक अभिनेय नाटक। मूल्य २.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

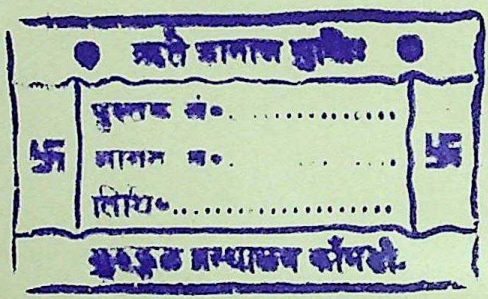

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी

साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष तीन : अंक आठ
मार्च १९६५

१. उद्घोष : माखनलाल चतुर्वेदी २
२. लेखककी प्रतिबद्धताका प्रश्न : राजेन्द्र यादव ३
३. 'आँगनके पार द्वार' : कृति और कवि : डॉ० प्रभाकर माचवे ९
४. हिन्दी साहित्यके शाहजहाँ : द्विवेदीजी : कमलाकान्त वर्मा १४
५. भारतीय भाषाओंकी परिवार-कथा : द्रविड़ : प्रो० दिवाकर पाण्डेय १८
६. शब्द-चिन्तन : दिशाबोधक संज्ञाएँ : सूर्यदेव पाण्डेय २६
७. परिचित शब्दोंकी कथा : वररुचि ३२
८. विशिष्ट तेलुगु कथाकार गोपीचन्द : दोनेपुडी राजाराव ३७
९. जैन साहित्यका विकास : डॉ० पूर्णमासी राय ३९
१०. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया : डॉ० देवराज, जमनालाल जैन ४७
११. समवर्ती प्रकाशन : रेखाछवियाँ ५३
१२. आनेवाली हिन्दी पुस्तकें ५५
१३. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित ५९
१४. साहित्य-संगम : गोष्ठी समारोह : रमेश बक्षी ६५
१५. पाठकीय ७२

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन : : जगदीश

प्रधान एवं सम्पादकीय कार्यालय

भारतीय ज्ञानपीठ, ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता – २७

प्रकाशन कार्यालय

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र : ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली–६

मूल्य : छह रुपये वार्षिक : पचपन पैसे प्रति

[समाज-शिक्षा विभाग राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर
विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्घोष

उत्तम साहित्य

जो वास्तवमें उत्तम साहित्य है उसे प्रचारकी आवश्यकता नहीं होती, अपना प्रचार वह आप कर ले जाता है।

माखनलाल चतुर्वेदी

उत्तम साहित्य फैलानेकी चीज़ नहीं होता, पढ़कर फेंकनेकी चीज़ भी नहीं होता, वह रक्तके बिन्दु-बिन्दुपर उतारनेकी चीज़ होता है। नदियाँ अपना विज्ञापन छपवाये बिना ही प्यासोंको अपनी ओर खींचती हैं, और उनकी प्यास बुझाती हैं। प्यासा यह नहीं देखता कि नदी टेढ़ी-आड़ी है या ऊँची-नीची है, वह केवल उनका स्वाद ही देखता है। उसी तरह हमें देखना चाहिए कि कहीं कविताका स्वाद तो नहीं बिगड़ गया है फिर उसका छन्द या व्याकरण कैसा भी हो स्वादपूर्ण कविता तो बरबस लोगोंको अपनी ओर आकर्षित करेगी। जिस तरह सूर्य बिना तेल भरे, किराया लिये और बिना सुविधा-असुविधाका ख़्याल किये, सब लोगोंमें प्रकाश बाँट जाता है, उसी तरह उत्तम साहित्य अपना प्रचार अपने-आप कर ले जाता है। यथार्थमें तो प्रचार भाषाका होता है, साहित्य तो सजग आँखें आप ही ढूँढ़ लिया करती हैं।

■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखककी प्रतिबद्धताका प्रश्न

अकारण और निराधार नहीं यदि लेखक आज
हठात् अपनेको इस ऊहामें पाये कि वह
क्यों लिखे और क्या उसकी आस्था-
आलम्बन हो।

राजेन्द्र यादव

आत्म-मन्थनके निष्पक्ष क्षणोंमें, बाहरके झूठ और भीतरकी इस सड़ाँधसे घबराकर कथाकारने अपने-आपसे भी अनेक बार यह सवाल किया है कि उसकी ज़िम्मेदारी क्या है? उसका धर्म आज उसे किसके साथ प्रतिबद्ध (कमिटेड) करता है। लेखकका कमिटमेण्ट क्या होता है?

इस प्रतिबद्धताके लिए सबसे पहला नाम उसके सामने आता है: मानवता। लेखकको व्यापक मानवताके प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। लेकिन कौन-सी मानवता? दीन-दुखी, भूखे-भिखारियोंको दया और भीख देना मानवता है या दुखी और भिखारी होनेकी स्थितिके विरुद्ध प्रयत्न करना मानवता है। मरनेवालेके लिए रोना मानवता है या मारनेवाले हाथको पकड़ लेना? मारनेवालेका हाथ पकड़ना! लेकिन उस हाथको पकड़नेके लिए फिर अनेक दर्शन हैं। इस शब्दके खालीपन और अर्थ-हीनताको भरनेके लिए अनेक अर्थ हैं और जो अर्थ अचानक ही अपनी ओर ध्यान खींचता है वह है: सामान्य जनके लिए, सामान्य-जन-द्वारा, समान सुविधाएँ और अवसर। स्वतन्त्रता, बन्धुत्व और समताका दर्शन। मनुष्यका आत्म-विस्तार और राष्ट्रोंके पार मनुष्यके प्रति प्यार। ईसा और बुद्ध – पश्चिम और पूर्व – के उन उदात्त सन्देशोंका प्रसार जो मानव-मात्रके लिए हितकर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसी नामपर 'मानवता' की राजनैतिक, सांस्कृतिक रूपरेखाएँ दे दी जाती हैं जिनकी रक्षाके लिए इतने ऐटमबम, हाइड्रोजन और कोबाल्ट बम हैं कि सारी मानवताका दसों बार सफ़ाया हो सकता है। और धीरे-धीरे यह मानवतावाद अपना ख़ौफ़नाक चेहरा खोलता चला जाता है : पेड़ों और बिजलीके खम्भोंपर लटके जीवित निग्रो चारों ओर हर्ष-ध्वनि करती सफ़ेद भीड़को 'लिंचिंग' का आनन्द देते हैं और अफ्रीकाके जंगलोंमें लुमुम्बाकी कराह ठण्डी भी नहीं पड़ती कि गोली खाये कैनेडीका सिर जैकलीनकी गोदमें लटक आता है। अपने-आप सवाल उठता है कि कैसा यह प्रजातन्त्र है जो कम्युनिज़्मके विरुद्ध हिन्दुस्तानको हथियार देता है और हिन्दुस्तानके विरुद्ध पाकिस्तानको ? अर्थात् सारी दुनियाको अपना बाज़ार बना डालनेके लिए पहले चिन्तित है, प्रजातन्त्रकी रक्षाके लिए बादमें !

लेकिन यह विदेशी मानवतावाद है और हमारी चेतनाको बाहरसे ही छूता है, हमारी आत्माका विष-दंश तो देशी मानवतावाद बनता है। हम देखते हैं इस मानवता, अहिंसा और सत्यमें हर झूठ, हर भ्रष्टाचार, हर हिंसा और हर फ़रेब जायज़ है ! कोठियाँ और बैंक-बैलेन्स बनानेवाले अपरिग्रहका उपदेश देते हैं, सादगीकी महिमा बखानकर ग़रीबीको गौरवान्वित करते हैं। बेशर्म चालबाज़ीको प्रश्रय देकर गद्दियोंसे चिपके जन-नेता त्याग, सदाचार और श्रमके भाष्य बखानते हैं। हर कुत्सा और भेद-भावको ही व्यावहारिक राजनीति बना डालनेवाले, बन्धुत्व और समताका उपदेश देते हैं। जाति और रिश्वतकी चक्कीके बीच प्रजातन्त्रकी साँसें टूट गयी हैं, और ज़िन्दगीकी छोटीसे छोटी आवश्यकताके लिए कोई भी साफ़-सुथरा रास्ता नहीं बचा है। असंख्य भूखी, बेकार और दिग्भ्रान्त 'मानवता' के आगे कोई वृक्षारोपण करता है तो कोई भूमिदान।

देशकी आत्माको प्रजातन्त्रके इस राष्ट्रीय झूठ (फ्रॉड) ने ही शायद सबसे अधिक तोड़ा है। बड़ोंने जिन आदर्शोंको जीवनका आधार घोषित किया था उन्हें ख़ुद अपने-आप ही कुचल डाला और भ्रम-भंगका यह धक्का सँभालना इस पीढ़ीके लिए मुश्किल हो गया। वह हर उस चीज़को ठोकर मारकर तोड़ डालना चाहती है जिसे सामने दिखाकर उसे बहकाया जाता है। प्राचीनताकी गरिमा ? — झूठ है। कोई नहीं जानता वह कभी थी भी या नहीं। अगर हो भी तो वह आज हमारी कोई मदद नहीं कर सकती। नैतिकता ? बकवास है। पिछड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक मूल्योंको आजके विकसित समाजपर लादनेका दुराग्रह। कौन-सा विज्ञान कहता है कि व्यावहारिक साहसहीनता और शारीरिक नपुंसकताको ही नैतिकता कहते हैं ? मर्यादा ? अपने बचाव और दूसरोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेका नाम मर्यादा है। सत्य ? इससे बड़ा झूठ शब्द शायद आज तक नहीं गढ़ा गया। जो एकके लिए सत्य है वही दूसरेके लिए झूठ है। विज्ञान सारे 'शाश्वत-सत्यों' की बखिया उधेड़े दे रहा है। ज्ञानकी सीमा और न जाननेकी मजबूरीका नाम सत्य है। तो फिर मानवता आज कहते किसे हैं ?

शब्द ! शब्द ! शब्द ! नयी पीढ़ीको इनमें-से किसी भी शब्दपर आस्था नहीं है। कुछ शब्दोंको धर्मने खोखला कर दिया था, रहे-सहे शब्दोंका तर्पण इस मानवताने कर दिया। ये सारेके सारे शब्द-कोश, झूठे, खोखले और बे-मानी हैं। कलतक जो इन शब्दोंका कीर्तन करते थे वे ही आज मज़ेमें इनकी हड्डियाँ निचोड़ रहे हैं। भाषण और उपदेश हमारे लिए हैं, अर्थ और स्वार्थ उनके हैं ! क्या खूब बँटवारा है !

इस मानवतावादसे प्रतिबद्ध लेखकोंकी आस्था हमें मानवता और लेखक दोनोंकी कुरुचिपूर्ण पैरॅडी लगती है। सांस्कृतिक औदार्यकी यह गिलगिली संकीर्णता लेखककी प्रतिष्ठाका अपमान है। हमें यह बिलकुल नहीं चाहिए। आध्यात्मिक नैतिकता और सांस्कृतिक आदर्शकी हर प्रतिमाको हम खण्डित कर डालेंगे। जो आदर्शवाद इतना अव्यावहारिक और हवाई हो कि पहले ही प्रलोभनके सामने घुटने टेक दे, जिसपर एक पीढ़ी भी न टिक सके – वह शब्दों और सिद्धान्तोंमें चाहे जितना महान् लगे, चाहे जितना पुरातन और उदात्त हो – वह छल है, आउटडेटेड और विगर्हणीय है। हमें न वह आदर्श चाहिए न आदर्शवादी।

आनेवाली पीढ़ी इसके विरुद्ध एक विषाक्त पितृघाती तिलमिलाहटसे उद्विग्न और बेचैन है : उधर उनके पास प्रलोभन हैं, साधन हैं, और इनके टुकड़े फेंककर वह नयी पीढ़ीको खरीदते हैं। लेकिन भ्रम-भंगकी यह ख़रीद-फ़रोख्त अपने और अपने पिताओंके क्षुद्र और झूठे होनेके सत्यको धो नहीं पाती। एक कैन्सर भीतर ही भीतर फैलता चला जाता है ! नहीं; मानवता, राष्ट्रीयता, सत्य, नैतिकता, धर्म, प्राचीन-गौरवके इन छलावोंके प्रति आस्थावान होना ग़लत है – ये शब्द अव्यावहारिक हैं, अवैज्ञानिक हैं, रूढ़ियाँ हैं। डार्विन, फ्रायड और मार्क्सकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलक्षण और व्यक्तिगत (यूनीक और पर्सनल) अनुभूतियोंको विशिष्ट (सिग्नि-फ़िकेण्ट) और अछूती होनेके गरिमामय कोणसे पेश कर रहे थे और इस प्रकार 'व्यक्तित्वकी गरिमा'से ही 'अनुभूतिकी भव्यता'की भ्रान्ति पैदा कर देते थे। चूँकि व्यक्तित्व और अनुभूतिको समृद्ध करनेवाले बाहरी स्रोतोंको क्षुद्र घोषित करके ये अपनेको उनसे सायास काट रहे थे, इसलिए अपने चुकनेको अभिजात 'अन्दाज़े-बयाँ'की आड़में छिपाते रहे, अपने तक न आ पानेकी औरोंकी 'बेचारगी' पर उन्नासिक सन्तोष पाते रहे, व्यक्तिगत आभिजात्यके बचावके लिए हर सुविधा और अवसरके अनुरूप दृष्टि और दर्शन बदलते रहे और हर नयी रचनामें अपनेको जस्टिफाई करते रहे। आस्था और कमिटमेण्ट इनके लिए सैल्फ़-जस्टिफ़िकेशनका दूसरा नाम रह गया।

आजके कथाकारको लगता है : यह कमिटमेण्ट भी कहीं ग़लत है।

प्रश्न उभरे : आखिर लेखक क्यों लिखे ? किसके लिए लिखे ? आस्था क्या अपने-आपमें कोई आत्यन्तिक मूल्य है या उसका कोई आलम्बन है ? क्या हम आलम्बनके नामपर उन आदर्शोंको अपनी आस्था सौंप दें जो ग़लत, झूठे और अवैज्ञानिक हैं ? या उस वैज्ञानिक सिद्धान्तके लिए जो व्यक्ति और राष्ट्रका गला घोंट देता है ? या सिर्फ़ उस पाठकके लिए जो हर कलात्मक ऊँचाईको अवकाशके क्षणोंका मनोरंजन मानता है ?

हर तरफ़से जला और हताश लेखक सोचता है : नहीं, वह किसी भविष्य और अतीतके प्रति प्रतिबद्ध नहीं है – वह प्रतिबद्ध है केवल अपने वर्तमानके प्रति, अपने उस सीमित यथार्थके प्रति जो उसकी चेतना-परिधिमें आ गया है। वह किसी समाज और व्यक्तिकी ज़िम्मेदारी नहीं ओढ़ेगा, वह ज़िम्मेदार है केवल अपने उस जीवित परिवेशके प्रति जो हम सबको बनाता है और जिसे हम सब मिलकर बनाते हैं, स्वयं जिसके अंग हैं।

[भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा शीघ्र ही प्रकाश्य, लेखकके प्रतिनिधि अधुनातन श्रेष्ठ हिन्दी कहानी संकलनकी भूमिकासे]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आँगन के पार द्वार'
कवि और कृति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार-द्वारा
इस वर्ष सम्मानित

डॉ० प्रभाकर माचवे

'आँगनके पार द्वार' को अकादेमी पुरस्कार मिलनेका मैं स्वागत करता हूँ। १९५५ से अब तक नौ वर्षोंमें अकादेमीने जिन सौ लेखकोंको पुरस्कृत किया उनमें छब्बीस कवि हैं। असमिया, उड़िया, गुजराती, मलयालममें एक-एक कविता-पुस्तक पर, तेलुगु और कश्मीरीमें दो-दो कविता-पुस्तकों पर पुरस्कार दिया गया; कन्नड़ और हिन्दीमें तीन-तीन; और उर्दू, पंजाबी और बँगलामें चार-चार कवि अब तक पुरस्कृत हुए। अँगरेज़ी, मराठी, तमिल, संस्कृत, सिन्धीमें किसी कविता पुस्तकपर पुरस्कार नहीं मिला। हिन्दीके अन्य दो अबतक पुरस्कृत कवि थे: माखनलाल चतुर्वेदी और सुमित्रानन्दन पन्त। अन्य भारतीय कवि जो पुरस्कृत हुए उनके नाम हैं: जतीन्द्रनाथ दुआरा, जीवनानन्द दास, प्रेमेन्द्र मित्र, अमिय चक्रवर्ती, सुभाष मुखोपाध्याय, राजेन्द्र शाह, मास्टर ज़िन्दा कौल, रहमान राही, पुट्टप्पा (कुवेंपु), बेन्द्रे, गोकाक, जी० शंकर कुरुप्प, शची राउत रॉय, भाई वीरसिंह, अमृता प्रीतम, मोहनसिंह, प्रभजोत कौर, विश्वनाथ सत्यनारायण, गुर्रम जाषुवा, जिगर मुरादाबादी, फ़िराक, अख्तरुल ईमान और आनन्दनारायण मुल्ला। कविताएँ—आधुनिकता बोधका जहाँतक प्रश्न है, हिन्दीसे भी पहले उड़िया, पंजाबी, बंगला, कन्नड़, मलयालय, गुजराती आदिने पुरस्कारके रूपमें उसे मुद्रांकित किया। हिन्दीमें अब लगता है कि प्रयोगशीला नयी कविता प्रतिष्ठित हुई। सनातन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्थी समीक्षकोंके तथाकथित आभिजात्यके गढ़में अब नये कवि अस्पृश्य नहीं माने जायेंगे। ऐसी आशा करें।

'अज्ञेय' ने इस संग्रहमें कितने दर्दसे लिखा है :

मैं सच लिखता हूँ
लिख-लिख कर सब
झूठा करता जाता हूँ। (पृ० ५७)

अब तक हिन्दीमें 'अज्ञेय' की यह कैसेण्ड्राके अभिशाप-जैसी नियति क्यों और कैसे रही ? क्या इसके लिए आप और हम सब अंशतः उत्तरदायी नहीं ?

सत्ताईस वर्ष पूर्व जब मैं दर्शन-शास्त्रके एम० ए० का छात्र था तब जिस छोटे-से किरायेके कमरेमें मैं रहता था वहाँ ऊबड़-खाबड़ दीवारोंपर मैं चारकोल-से बुद्धके चित्र बनाया करता था। वात्स्यायन उन्हें देखकर हँसा करते थे। आज 'अज्ञेय' ने दीवारें तोड़ दी हैं, पर बुद्धका चित्र मिटाये नहीं मिटा। शायद मिट नहीं सकता – कहीं भीतर वह गहरा हो गया है।

बार-बार 'मौन' का उल्लेख आता है। बौद्ध दर्शनके 'पारमिता', 'करुणा', 'महाशून्य' जिससे क्वाँरी आत्माने भाँवरें डाली हैं—'तू नहीं कहेगा ? मैं फिर भी सुन ही लूँगा' (महाकस्सपकी मन्द मुसकानसे अवलोकितेश्वर पद्मपाणिका 'ध्यान' या 'ज़ेन' प्रसाद पाना)—'जितनी स्फीति इयत्ता मेरी झलकाती है, उतना ही मैं प्रेत हूँ !' (४७) यह निस्सारताका बोध, इस संग्रहको एक अजब वैरागीपन, फक्कड़पन, उदासी और असम्पृक्ततासे रँग देता है। यहाँ आकर जैसे अहम् का सम्पूर्ण तर्पण है—

मैं भी नहीं रहा मैं।
कवि हूँ
कहना सब सुनना है, स्वर केवल सन्नाटा। (पृ० ३३)

'अज्ञेय' के पुराने काव्य-संग्रहोंमें, बावजूद उनके शुद्ध कलाके आग्रहके, सर्वत्र सामाजिक विषमताके, विसंगतिके, उससे उत्पन्न सात्त्विक रोषके, कहीं प्रजातन्त्रके मंजूषके, कहीं शरणार्थियोंको गिलगिली घृणाके, कहीं 'हवाई यात्रा' और 'हिरोशिमा'के, कहीं माह-पूसके खेतोंके मचानोंके, कहीं बाजरेकी बालियोंके, काँगड़ेकी छोरियोंके, कहीं-न-कहीं इस बाहर दूर तक फैले मैले आँचलके धूल-भरे यातना-ग्राफ़के वक्र मिल जाते हैं। वंचनाके दुर्गोंसे रौंदे हुए इन्द्रधनु तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आँगनके पार द्वार' में पहली बार ऐसा हुआ कि वह 'प्रभामय करुणा' जो अछोर थी मानो पूर्णतः अभ्यन्तर हो गयी। दिल्लीके एक अँगरेज़ी दैनिकने व्यंग्यमें उन्हें 'आधुनिक कबीर' कहा है। कबीर की बानी है :

जल में कुम्भ, कुम्भमें जल है, बाहिर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ, जल जलहिं समाना, यह तत कथौ गियानी!

'अज्ञेय' के इस संग्रहमें पंक्तियाँ हैं :

आँगन के पार
द्वार खुले
द्वार के पार आँगन।
भवन के ओर-छोर
सभी मिले—
उन्हीं में कहीं खो गया भवन। (पृ० ७१)

सन् ४३ में प्रेषणीयता की समस्यासे उलझनेवाले अज्ञेय सन् '६१ में आकर 'अनुभव परिपक्व' हो गये हैं। अब वे 'गानेवाले टीनके लट्टू' के लिए हठ नहीं करते, वे अब 'खाली मिट्टी' से ख़ुश हैं! यह 'सरस्वती पुत्र' अब यान्त्रिक रूपसे राम-नाम जपनेसे अधिक महत्त्वपूर्ण 'हकलाना' और 'दिन-ब-दिन घिग्घी बँध जाना' मानता है। उनमें का चिन्तक पुनः रोमैण्टिक प्रकृति-प्रेम, विराट्के आगे उत्सर्ग, वात्सल्यभाव आदि 'नोस्टोलिजिया' (दौहार्द-भाव) की ओर लौट रहा है। या शायद यही उस विद्रोही 'भग्नदूत' की परिणति थी जिसने सन् '३३ में जेलमें लिखा था—'मैं वह धनु हूँ जिसे चढ़ाने में प्रत्यञ्चा टूट गयी है।'

क्या 'अज्ञेय' ने सृजनके विषयमें परिभाषा अब बदल दी है? उनका वैज्ञानिक मानवतावाद और विवेक आकर कहीं जैसे ठोकर खा जाता है, वे पुनः एक अन्ध 'अबुद्धिवाद' में, एक 'नव्य-रहस्यवादी' धुन्ध के आगे घुटने टेक देते हैं। वे कहते हैं :

कहीं बड़े गहरे में
सभी स्वैर हैं नियम
सभी सर्जन केवल
आँचल पसारकर लेना। (पृ० ३३)

सन् '३८ के 'हंस' के रेखाचित्रांकमें मेरा एक लेख छपा था 'अज्ञेय : जितने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे ज्ञेय हुए'। आज भी उनके बारेमें लिखते हुए मुझे वही शीर्षक चुननेकी इच्छा होती है। स्वर्गीय सत्यप्रकाश कौशलने एक बार 'अज्ञेय' को एक चिर-किशोर (इटर्नल एडौलेस्सेण्ट) कहा था।

आज तो उन्हें भूरी-काली डाढ़ी है, माइकिलए-जेलोकी तूलिकासे बने किसी चित्रकी तरह वे लगते हैं : पर मैं उन्हें तबसे जानता हूँ जब वे एक 'भग्नदूत' नहीं थे, 'विपथगा' क्रान्तिके उद्दाम प्रेमी थे, बाघपतमें किसान-सम्मेलन-समाजवादी नेतृत्व करते थे, जब वे मानवेन्द्रनाथ रॉयके साथी थे, जब बम बनाने-वाले यायावरसे असम-मोर्चेपर खाकीवेशधारी कप्तान बने, जब उन्होंने नेहरू अभिनन्दन-ग्रन्थका सम्पादन किया, उससे पहले 'विशाल भारत' के 'गान्धी-अंक' का····

यों सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन और 'अज्ञेय' दो व्यक्तित्व हैं। वात्स्यायनजी 'अज्ञेय'को अपनेसे अलग, छिपा हुआ, निजी, वैयक्तिक, गोपन रखते हैं। पर 'दो चेहरों'की अभ्यस्त हिन्दी-संसार यह द्विधा समझ नहीं पाता। 'कॅण्टेम्पोरेरी इण्डियन लिटरेचर'में उनके लेखपर उन्हें गालियाँ खानी पड़ीं। जब वे विदेशमें थे तब पटनेके एक साप्ताहिकने सम्पादकीय लिखा – 'अज्ञेय, अकादेमी और माचवे'। यों वात्स्यायन 'अज्ञेय'की खातिर गालियाँ खाते रहे। वात्स्यायनने शायद ही कभी उनके खिलाफ़ उठायी गयी अफ़वाहों, ग़लत-फ़हमियों, जानबूझकर लांछित करनेकी शरारतोंका उत्तर दिया हो। वे कभी किसी प्रतिवादमें नहीं पड़े। वे केवल अपनी बात कहते रहे। लोगोंने बुरा माना, मित्र शत्रु हो गये, जिनपर कृतज्ञता बरसायी वे ही कृतघ्न निकले। पर उन्होंने गिला नहीं किया, न शिकायतका एक शब्द कहा :

और मुझे कहने को क्या हो
जब अपने तईं खरा हूँ ? (पृ० ६४)

इस सारे प्रसंगमें 'तारसप्तक'का उनका सन् '४३ का सम्पादन याद आता है। अब उन सातोंमें-से एक नहीं रहे, एकने कविता लिखना प्रायः छोड़ दी। एकका कविता-संग्रह अबतक नहीं निकला। एक अपनी कलासे 'नये कवि' और 'गीतकार'के दोनों खम्भोंमें लोकप्रिय बने : शुद्ध रसवादी और शुद्ध मार्क्सवादी दोनोंके प्यारे एक साथ बने। एकने अपने कवितासंग्रहकी भूमिकामें 'अज्ञेय'का विरोध किया, और बादमें अपनेको 'अनुपस्थित लोगों'में-से एक मानने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचा छठा मैं – एक अ-कवि, वह अपनी बात क्या कहे ? और 'अज्ञेय' चुप मुसकराते रहे। कविता-संग्रहपर कविता-संग्रह – 'तारसप्तक'के बाद यह उनका सातवाँ संग्रह है – प्रकाशित कराते रहे।

और वे 'असाध्य वीणा'पर पहुँचे। यह एक छोटा-सा क्लैसिक है। शास्त्रीय संगीतके बहुत निकट पहुँचनेवाली, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविताकी यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें बड़ी कसावट है, शिल्पपर असाधारण अधिकार है। सामवेदके 'सिन्धुरुर्मोवधिष्ठिता कारुं विभ्राट् परिस्पृहत्' वाले गायक-कविने इलियटके निर्वैयक्तिकताके मार्गसे वह मंज़िल पा ली है, जहाँ –

श्रेय नहीं कुछ मेरा :
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में –
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था –
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था :
वह तो सब-कुछ की तथ-ता थी –
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है ! (पृ० ८७)

इस संग्रहमें उपनिषदोंकी याद दिलानेवाली, दृष्टान्तबहुल, सूत्रमय, मन्त्र-प्राय रचनाएँ हैं। ये सब मेरी समझमें नहीं आतीं – ये नयी अबूझ उल्टवाँसिया हैं ! विज्ञानके विद्यार्थी 'अज्ञेय'में यह 'अज्ञेय'-वाद मेरी बुद्धिवादितामें नहीं अँटता। इसी कारण मैं 'अज्ञेय'का भक्त नहीं, अनुयायी तो बिलकुल नहीं। 'त्रिशंकु'पर 'हंस'में और 'अपने-अपने अजनबी'पर 'थॉट'में मैं अपना विचार-भेद कई वर्ष पहले व्यक्त कर चुका हूँ।

पर शायद टी० एस्० ईलियटके शब्दोंमें 'हम कविसे दर्शन क्यों माँगे ?'

■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्यके शाहजहाँ
आचार्य द्विवेदी

एक अप्रकाशित कृतिसे
जहाँ कल्पित आयामोंके सहारे व्यक्तित्वको दिशा देनेवाले
तथ्यात्मक तत्त्वोंको प्रकाशित करनेका प्रयास किया गया है

कमलाकान्त वर्मा

दौलतपुरमें आचार्यको देख और सुनकर मुझे एक रहस्यपूर्ण अनुभूति हुई। वह अनुभूति थी उनके व्यक्तित्वमें दो परस्पर विरोधी तत्त्वोंका सह-दर्शन। एक तत्त्व था उनका सरस विनोद, दूसरा उनकी सघन वेदना। इन दोनोंको एक समग्र बोधमें अँटा पानेकी मेरी चेष्टा आसान सिद्ध नहीं हुई।

उस रातको पूर्णिमा थी। उगते हुए चाँद और डूबते हुए सूर्यने दूर-दूरसे ही एक-दूसरेका अभिवादन किया और दोनों अपनी-अपनी राह चल पड़े। लगा मानो दिग्-दिगन्तका भार ऊँघते हुए तर्कने अँगड़ाती हुई कल्पनाको सँभाल दिया हो। और न जाने क्यों मुझे प्रतीत हुआ कि आचार्यका व्यक्तित्व मेरी अनुभूतिमें अब स्पष्टतर होता आ रहा है। मैंने सोचा क्या आचार्यके तर्कोंको सहारा उनकी कल्पनासे ही मिलता है? क्या उनका विनोद वस्तुतः उनकी वेदनाका ही एक आयाम है?

"आपके देशमें चाँदनी अद्भुत होती है!" मैं आकाशकी ओर देखती हुई बोल उठी।

"हाँ" आचार्य बोले, "यहाँ चाँदके हाथों उदास वर्तमानको सदा अतीतसे प्रचुर सहानुभूति और भविष्यत्से यथेष्ट आश्वासन मिलते रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किन्तु मैंने सुना है आपके काव्योंमें चाँद उदासोंको बहुत सताया करता है ?" मैंने मुसकराकर पूछा।

"उदासोंको वह सताता है उनके दुर्बल क्षणोंमें," आचार्य गम्भीर स्वरमें बोले, "किन्तु उनके सबल क्षणोंमें वह उनका मित्र, अनुमन्ता और पथ-प्रदर्शक सब कुछ बन जाता है। इसका एक ऐतिहासिक उदाहरण है हमारा ताजमहल ! आपने ताजमहलको चाँदनीमें देखा है ?"

"देखा तो है", मैंने कहा. "किन्तु उसके सौन्दर्यके रहस्यको मैं समझ नहीं पायी।"

"समझ पायेंगी यदि आप यह कल्पना कर लें कि किसी ऐसी ही चाँदनीमें शाहजहाँने मुमताजको देखकर ताजमहलकी परिकल्पना की होगी।"

मैं चौंक पड़ी, "यह क्या इतिहासका सत्य है ?"

"इतिहासका चाहे न हो पर काव्यका तो हो ही सकता है।" वे बोले, "तर्कसे कल्पनाका सत्य छोटा नहीं होता। पुरुषार्थको स्त्रीत्वकी दी हुई कोई सरस प्रेरणा और स्त्रीत्वको पुरुषार्थका दिया हुआ पुलकित धन्यवाद ही तो है वह ताज जिसका समग्र अर्थ चाँदनी पृथ्वीको सैकड़ों वर्षोंसे समझाती आ रही है किन्तु समझा आज तक नहीं पायी है।"

"उस अर्थमें ध्वनि मुख्यतः आह्लादकी रहती है या विषाद की ?" मैंने पूछा।

"यह तो देखनेवालेके दृष्टिकोणपर निर्भर है।" वे बोले, "आप क्षण-भर-के लिए कल्पना करें उस बूढ़े विवश शाहजहाँको जो कभी चाँदनीमें देख रहा होगा ताजको लोहेके सींकचोंके पीछेसे। कभी यही था शाहन्शाह शाहजहाँ जो द्रष्टा था प्रकृतिके सौन्दर्यका और स्रष्टा था कलाके सौन्दर्यका। अब यही है बन्दी शाहजहाँ जिसकी क्षीण हो गयी है दृष्टि और छिन चुकी है सृष्टि। इस कल्पनाको लेकर चाँदनीमें ताजको देखनेवालेको आह्लाद अधिक मिलेगा या विषाद, इसका अनुमान आप ही करें।"

आचार्य चुप हो रहे ! उनका स्वर रातकी झनकारमें खो गया। मैंने स्तब्ध होकर देखा उस क्षण उनकी आँखें मानो पुकार-पुकारकर कह रही थीं – व्यर्थ है सौन्दर्यकी दृष्टि ! विनश्वर है सौन्दर्यकी सृष्टि ! एक विराट् विफलता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताज ! एक चिरन्तन परिहास है चाँदनी ! अभी-अभी तो वे चर्चा कर रहे थे सबल क्षणोंकी किन्तु उनकी आँखोंपर घुमड़ आये थे दुर्बल क्षण। विवेकके प्रति भावनाका यह कैसा विद्रोह, तर्कके विरुद्ध कल्पनाकी यह कैसी बग़ावत ? शाह-न्शाहको बन्दीका यह कैसा जवाब ?

दूसरे दिन मुझे दौलतपुरसे दिल्ली लौटना था।

"आपको स्टेशन पहुँचानेके लिए बैलगाड़ी तैयार हो रही है", आचार्य बोले। "तबतक आइए, आपको अपना मन्दिर दिखलाऊँ।"

उस कच्चे मन्दिरमें तीन मूर्तियाँ थीं। उनमें-से एकका परिचय श्रद्धासे सिक्त स्वरमें देते हुए आचार्यने कहा, "और यह है मूर्ति मेरी····मेरी स्वर्गीया पत्नीकी !"

"आचार्य-पत्नीकी ?"

मैं कुछ क्षणोंके लिए आश्चर्य-प्रतिहत रह गयी। किन्तु इतनेमें ही तर्कको चुप कराती हुई कल्पना मानो चिल्ला उठी : अरे आश्चर्य तो वास्तवमें तब होना चाहिए था जब इस मन्दिरमें आचार्य-पत्नीकी मूर्ति न होती, उनकी श्रद्धाके इस आँगनमें उनकी प्रेरणाका स्रोत न होता !

चलनेसे पहले मैंने संकोचके साथ पूछा, "आचार्य, मेरी जिज्ञासा अनुचित न हो तो क्या मैं स्वर्गीया आचार्य-पत्नीके सम्बन्धमें कुछ पूछ सकती हूँ ?"

"निस्संकोच। उनके सम्बन्धमें गोपनीय मेरे लिए कुछ नहीं।"

"वे शिक्षिता थीं ?"

"थीं, किन्तु शिक्षितासे अधिक दीक्षिता ही थीं।"

"किसकी उपासनामें दीक्षिता ?"

"अपने सच्चिदानन्दकी, जिनका परिचय मैंने उन्हें दे रखा था सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्के रूपमें।"

"तो दीक्षा उन्हें आपने ही दी थी ?"

"नहीं, मैंने तो केवल थोड़ी-सी शिक्षा दी थी। दीक्षा उन्हें अपने पूर्व-जन्मोंके संस्कारोंमें-से मिली थी। बल्कि····"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी ?"

"कहनेमें मुझे संकोच नहीं कि उलटे मुझे ही दीक्षा उनसे मिली – मेरे अपने स्वधर्ममें····" ।

"अपने साहित्यिक 'हरिजन' – धर्ममें ?"

आचार्य चुप हो रहे ।

भारतीय पतियोंको अपनी पत्नियोंसे क्या-क्या मिला किया है यह थोड़ा बहुत मैं दूर सागर-पार अपने देशमें भी सुन चुकी थी, और मैं जानती थी कि पतिके लिए ऐसी पत्नीको पाकर भी पाना आसान नहीं होता न उसे खोकर भी खोना सम्भव होता है ।

"तो आचार्य-पत्नीकी दी हुई उस दीक्षाको आप आज भी नहीं भूल पाये ?" मैं पूछ उठी ।

"कैसे भूल सकता हूँ ?" स्मृतियोंसे लदे हुए स्वरमें वे बोले, "जबतक आकाशसे वह चाँद उगता रहे जिसे साक्षी बनाकर एक रात मैंने उनसे वह दीक्षा ग्रहण की थी ।"

इससे आगे मुझे और कुछ नहीं पूछना था । उस दीक्षाका साक्षी केवल चाँद ही नहीं, मैंने सोचा, साक्षी हैं वे सभी जिन्होंने देखा है हिन्दी साहित्यके इस आत्म-कथित 'हरिजन'को, परखा है इसकी फल-निरपेक्ष सेवाओंको; साक्षी रहेंगे वे सभी जो पढ़ेंगे भारतकी भावी राष्ट्र-भाषाको, उसमें पहचान पायेंगे इसके द्वारा कलाके सौन्दर्यपर लगाये गये सत्य और शिवके नियमों और नियन्त्रणों-के अंगरागोंको····।

मैंने पिछली रातमें बनाया हुआ आचार्यका स्केच उनके हाथोंमें रख दिया, "यह मेरा विनम्र उपहार आचार्य ग्रहण करें ।"

स्केचके नीचे लिखा था : साहित्यका शाहजहाँ । आचार्य उसे देखने लगे – स्केचकी तरह नहीं, दर्पणकी तरह ।

■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओंकी परिवार-कथा

द्रविड़

एक गम्भीर भाषाशास्त्रीय तथ्योंपर आधारित अध्ययन जिससे प्रकट है कि द्रविड़ और आर्य-भाषाएँ हैं समरूप ही

प्रो० दिवाकर पाण्डेय

प्रारम्भमें युरोपीय विद्वान् द्रविड़ परिवारके लिए 'तमुलिअन' या 'तमुलिक' संज्ञा देते थे। इसका मूल कारण इस परिवारमें तमिलकी प्रमुखता या प्राचीनता ही है। संस्कृतमें इसके लिए 'आन्ध्र-द्राविड़-भाषा' की संज्ञा मान्य रही थी। मनुने पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद और खाश आदि जातियोंके विषयमें यह निर्देश किया है कि ये क्षत्रिय हैं, किन्तु च्युत होकर वृषलकी अवस्थामें चली गयी हैं। ऐतरेय ब्राह्मणमें 'आन्ध्र' और 'तेलुगु' की चर्चा की गयी है और कहा गया है कि ये विश्वामित्रके पदच्युत वंशज हैं। भागवत पुराणमें सत्यव्रतको 'द्रविड़राज' की संज्ञा प्राप्त है। मध्य-भारतीय आर्यभाषाओंकी चर्चाके क्रममें लघु प्राकृतोंकी कोटिमें 'द्राविड़ी' को भी रखा गया है। कभी-कभी 'पैशाची प्राकृत'की श्रेणीमें भी 'द्रविड़' को रखने-का प्रयास किया गया है। इस पारम्परिक परिवेशसे यह स्पष्ट है कि उत्तर भारत-के लिए प्राचीन कालमें द्रविड़ कोई विशिष्ट भाषा-परिवार नहीं थी, एक विशिष्ट भाषा भर थी।

जैसा कि गतांकमें प्रकाशित इस विषयके प्रारम्भिक लेखमें कहा जा चुका है, एक विशिष्ट भाषा-परिवारके रूपमें द्रविड़का अस्तित्व १८१६ में एफ० डब्ल्यू०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलिस-द्वारा संकेतित किया गया है। सिन्धुघाटी-सभ्यताके भग्न ध्वंसावशेषोंके उद्घाटनने भारतीय जातियों और भाषा-परिवारोंके सम्बन्धमें बहुत सारी समस्याएँ प्रस्तुत कर दी हैं। इस तथाकथित हरप्पा संस्कृतिसे हमें अनेक लेख प्राप्त हुए हैं, परन्तु उनका यथोचित अध्ययन सम्भव नहीं हो सका है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वे अनार्य हैं। आधुनिक अनुसन्धानोंके फलस्वरूप, द्रविड़ भाषा-भाषियोंके मूल निवासके सम्बन्धमें मध्य एशिया, मेडिटेरेनियन भू-भाग और मंगोलियाका भी प्रतिपादन किया गया है। इतना तो सच है कि सुदूर अतीतमें द्रविड़ लोग पूरे भारतवर्षमें फैले हुए थे। यह स्थिति आर्योंके आनेके पूर्वकी है। सर जॉन मार्शलने मेसोपोटामिया और ईजिप्टकी सभ्यतासे भी द्रविड़-को ऊँची और पुरातनतर सभ्यताके रूपमें अपनी मान्यता प्रदान की है।

पंजाब और सिन्धमें आर्योंके आगमनके पूर्व यहाँ द्रविड़ भाषा-भाषी थे। बौधायन धर्मसूत्र आदिको ध्यानमें रखकर अगर हम तथ्योंकी परीक्षा करनेकी चेष्टा करें तो यह स्पष्ट होगा कि आर्योंके अनुसार ही, सिन्ध प्रदेशका यह भू-भाग संकर जातियोंसे भरा था। बरहुई भाषाका इस प्रदेशमें वर्तमान अस्तित्व भी इस यथार्थकी पुष्टि करता है। यह निश्चय है कि मोहंजोदड़ोकी सभ्यता बलुचिस्तान और उत्तरपूर्वीय ईरान, इस्लाम और सुमेरियकी तरह ही है। आर्य लोग सर्वप्रथम द्रविड़ोंको दास दस्यु आदि ही कहते थे। बादमें उन्होंने आन्ध्र, द्रविड़, कर्णाट, केरल आदि नामोंका उनके लिए प्रयोग किया। कॉडवेल और डॉ० चैटर्जीका 'द्रविड़' शब्दको संस्कृत कहना मेरी समझमें संगत नहीं जँचता। जैसा कि ग्रियर्सनने भी स्वीकार किया है, यह तमिलसे ही विकसित है। तमिल-का दमिल, द्रविड़, दइड रूप प्राप्त है ही।

मूल द्रविड और आर्य भाषाओंके तुलनात्मक अध्ययनके अभावमें द्रविड़की विशिष्टताओंका अध्ययन सम्भव नहीं हो सका है। डॉ० जी० यू० पोपके अनुसार पदिक (मॉरफ़ेम) की दृष्टिसे द्रविड़ और आर्य भाषाएँ समरूप हैं। प्रोफ़ेसर ओ० स्नोडरने द्रविड़को फ़िन्नो-उग्रिकके साथ जोड़नेका प्रयास किया है। मेरी दृष्टिसे यह इसलिए उचित नहीं कि वाक्य-विन्यास या ध्वनिमें मेल नहीं।

द्रविड़ परिवारकी विशेषताएँ

सामान्य : द्रविड़ परिवारकी भाषाएँ संयोजिका (ऐग्लुटिनेटिंग) और बहु-मात्रिक (पोलिसिलेबिक) हैं। इन भाषाओंमें 'ए' और 'ओ' स्वरोंके लघु और दीर्घ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों ही रूप प्राप्य हैं। मूलतः लिंग-भेद प्राकृतिक या ऐन्द्रिक नहीं, सजीव या निर्जीवके भेदके रूपमें हैं। तृतीय पुरुषके सर्वनाममें स्त्रीलिंग और पुल्लिगका भेद है और उनके विशेषणोंमें भी प्रत्ययके योगसे इसका निर्देश किया जाता है। आवश्यकता पड़नेपर संज्ञाके साथ स्त्री-पुरुषके निर्देशक शब्दोंको जोड़ा जाता है। निर्जीव या नपुंसकका प्रयोग बहुवचनमें न के ही बराबर होता है। पूर्वरूप (प्रिपोज़ीशन) की जगह पररूप (पोस्टपोज़ीशन) का प्रयोग किया जाता है। प्रथम पुरुष सर्वनामके अन्तर्गमिक (इन्क्लूसिव) और बहिर्गमिक (एक्सक्लूसिव) दो बहुवचन होते हैं। क्रियाका भाववाच्य (पैसिव) द्रविड़में नहीं पाया जाता। एक प्रकारका नकारात्मक वाच्य द्रविड़में पाया जाता है जिसका एकमात्र अनिर्देशात्मक काल-रूप बनता है। इसके वाक्य-भेद भी प्राप्य हैं।

ध्वनि

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ एइ अउ।

व्यंजन : कण्ठ्य या कवर्ग – क ग ङ ग्ग।
तालव्य या चवर्ग – च या श ज ञ।
लुण्ठित मूर्धन्य या टवर्ग – ट ड ण।
दन्त्य या तवर्ग – त द न।
ओष्ठ्य या पवर्ग – प ब म।
द्रवित व्यंजन (समस्वर) या यवर्ग – य र ल व ऋ लृ ॠ।
शिण—श ष स ह।

नोट—इन ध्वनियोंके भाषागत-बोलिगत उच्चारण-भेदों और संस्कृतके साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन, इस परिवारके भाषा-विशेषकी चरचाके क्रममें किया जायेगा। यहाँ इतना-भर संकेत कर देना आवश्यक है कि उच्चारणका भेद अत्यन्त जटिल और विस्तृत है।

संघात (एक्सेण्ट)

संस्कृत या ग्रीककी तरहके संघातोंके न होने पर भी द्रविड़में उसका अभाव नहीं। भाषाका संयोजक रूप होनेके कारण इसमें सबल (ऐक्यूट) संघात ही पाया जाता है। मूलतः संघात पहली मात्रा पर ही होता है। समस्त शब्दमें विकल्प भी होता है। कभी-कभी क्रिया और संज्ञा या सर्वनामसे भेद दिखानेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए भी संघातका स्थानान्तरण होता है। संघात-भेदके कारण ही कन्नडमें संस्कृतका दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। पुराने द्रविड़ शब्द 'र' या 'ल' से प्रारम्भ नहीं होते। यह भी संघात-भेदके कारण ही है।

078087

द्रविड़-लिपि

द्रविड़ परिवारमें तमिल, मलयालम, और तेलुगु-कन्नड़ तीन लिपियाँ प्रचलित हैं। तेलुगु और कन्नड़में पारस्परिक भेद बहुत ही कम है, अतः उन्हें एक श्रेणीमें रखा जाता है। तुलु पहले मलयालम लिपिमें लिखी जाती थी परन्तु अब उसमें भी कन्नड़का प्रयोग होने लगा है। इनके अतिरिक्त तमिल प्रदेशमें ग्रन्थ लिपिका भी प्रसार है जिसमें संस्कृत लिखी जाती है। यह नामकरण संस्कृत पुस्तकोंके ग्रन्थ-नामके आधार पर ही हुआ है। निश्चय ही इन सभीका विकास देवनागरी के उस प्रारम्भिक रूपसे हुआ है जो अशोकके शिलालेखोंमें प्रयुक्त है। विम्स महोदयने 'नव्य भारतीय भाषाओंके तुलनात्मक व्याकरण'में जैसा कहा है, तेलुगु, मलयालम, तमिल, सिंहली और बर्मी आधुनिक ओरिया लिपिकी तरह ही हैं। तालपत्रों पर लौह कण्टिकासे लिखे जानेके कारण ही ये लिपियाँ वृत्तात्मक, वर्तुल या गोल हैं। तालपत्र स्वभावतः सीधे लिखने पर फट जाता है। इलिस महोदयका यह कथन भी यथार्थके बहुत निकट है कि ग्रन्थ-लिपि पूर्वप्रचलित द्रविड़ और देवनागरीके संयोगसे विकसित है। एडवर्ड टॉमस महोदयने अशोकके अभिलेखोंकी लिपिको मूल द्रविड़से निःसृत माना है, परन्तु यह उचित नहीं जँचता। डॉ० बर्नेलने भी कुछ इसी तरहके विचार व्यक्त किये हैं और द्रविड़ लिपिको देवनागरीसे भिन्न दिखानेका प्रयास किया है। यथार्थ यह है कि स्वयं देवनागरी और खरोष्ठी लिपियोंके सम्बन्धमें उचित अनुसन्धान-अध्ययन नहीं हो सका है। अतः इस विषयमें प्रामाणिक रूपसे कुछ कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

भाषा-भेद और विस्तार

दक्षिण भारतके एक अखण्ड और विस्तृत भू-भागमें द्रविड़ परिवारकी भाषाएँ बोली जाती हैं। लंकाके उत्तरी अर्द्धांश, मध्य-भारतके कतिपय खण्ड भू-भाग, पूर्व भारतमें बिहारके दक्षिण प्रदेश और बलुचिस्तानके उत्तर-पश्चिम एकान्त प्रान्तर खण्डमें भी इस परिवारकी भाषाएँ बोली जाती हैं। १९३१ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनगणनाके अनुसार द्रविड़-भाषा-भाषियोंकी संख्या ७ करोड़ १० लाख थी जो १९५३ में ९ करोड़ तक पहुँच गयी। लंकामें १९४६ की जनगणनाके अनुसार यह संख्या १५ लाख थी। विश्वके भाषा-परिवारोंमें बोलनेवालोंकी संख्याके क्रमसे द्रविड़का स्थान पाँचवाँ या छठा है।

इस परिवारकी भाषाओंकी प्रामाणिक संख्या नहीं प्रस्तुत की जा सकती क्योंकि खोज और सर्वेक्षणके क्रममें मध्य भारतके भू-भागमें छिटपुट भाषाएँ निकलती ही जा रही हैं। इस परिवारमें अबतककी परिगणित १८ भाषाओंमें अवान्तरिक भेद कठिनाईसे जर्मनिक और रोमनिककी तरह है। पद-संघटना (मॉरफ़ॉलोजी), वाक्य-विन्यास और शब्द-भण्डारकी दृष्टिसे इस परिवारकी सभी भाषाएँ आसानीसे परखी-पहचानी जा सकती हैं।

दक्षिणान्त तमिल-मलयालम अत्यन्त निकटतासे जुड़ी हैं और मलयालम तमिलसे अलग होकर ९वीं-१०वीं शतीमें ही अपना अस्तित्व अर्जित कर सकी है। कन्नड़ भी इनके निकट है। नीलगिरीकी तोड और कोट भाषाएँ भी कन्नड़के ही निकट हैं। पश्चिमी घाटमें कन्नड़ और मलयालमके मध्यवर्ती रूपमें भाषित और प्रयुक्त कुर्गी (कोडगु) भी दक्षिण उपवर्गके ही निकट है। मलाबारके किनारे मंगलोर और उसके आसपास बोली जानेवाली तुलु भाषा दक्षिणी उपवर्गसे भिन्न है। तमिलके उत्तर बोली जानेवाली तेलुगुकी भी वही अवस्था है। मध्यभारतमें कोलामी-नायकी और पार्जी-ओल्लारी दूसरे उपवर्ग या उप-परिवारके खण्ड हैं। गोण्डी भी मध्यभारतसे निकटतासे जुड़ी है, पर उपर्युक्त उप-परिवारोंसे इसका अस्तित्व भिन्न है। तेलुगु क्षेत्रके उत्तरमें कुइ-कुडी एक अलग उप-परिवार है। कुइके उत्तरमें कुरुख (ओराँव) बोलनेवाले हैं। दक्षिण विहार और उड़ीसासे सटे राजमहल घाटीमें माल्टो बोली जाती है जो कुरुखसे ही जुड़ी है। बलुचिस्तानमें बोली जानेवाली बरहुइ कुरुख और माल्टोसे सम्बद्ध है। पर बहुत-से भेद भी हैं।

तमिल, मलयालम, कन्नड़ और तेलुगुका साहित्य-विस्तार बहुत ही बड़ा है। पाण्डित्यपूर्ण गम्भीर द्रविड़ साहित्य पुरानी तमिलमें सुरक्षित है। अ-साहित्यिक द्रविड़ भाषाओंकी कई एक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ उत्तरकी भाषाओंमें सुरक्षित हैं। क्रिया-पदिक (वर्ब मॉर्फोलोजी) कुइकी अत्यन्त मनोरंजक विशेषता है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, यह परिवार संयोजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, और इसका खास रूप पदिक (मॉरफ़म) के अवलोपनकी प्रवृत्तिमें परिलक्षित है ।

व्याकरण-रूपमें मुख्यता संज्ञा और क्रियाकी है। उपसर्गका पूर्णतः अभाव है। क्रिया-रूप और विभक्ति-रूप दोनोंमें ही प्रत्ययोंके योगका प्राचुर्य है। संज्ञा कारकों और वचनोंमें विभक्तित है। पुरुष-वाचक सर्वनामका विभक्ति-रूप भी इसी प्रकारका है। कुछ भाषाओंमें, संज्ञाके प्रथम पुरुषके अब भी दो रूप पाये जाते हैं। एकमें अन्तर्गमित और दूसरेमें सम्बोधित व्यक्ति निर्गमित होता है। उल्लेख सूचक (डिमॉन्स्ट्रेटिव) और प्रश्न-सूचक (इनटेरोगेटिव) सर्वनाम, अधिकांश भाषाओंमें, लिंग-भेदसे युक्त हैं। सामान्यतः यह भेद उच्चवर्गीय जीव और तदेतरका है। उच्चवर्गका निर्देश-रूप भिन्न-भिन्न भाषाओंमें अलग-अलग है। सामान्यतः दक्षिणी भाषाओंमें स्त्री-पुरुष दोनों ही उच्चवर्गीय माने जाते हैं, किन्तु एकवचनमें स्त्री-पुरुषके भिन्न रूप हैं। कोलामी और गोण्डीमें केवल पुरुष ही उच्चवर्गीय हैं। पुरुषेतर और स्त्रीको छोड़कर कुइमें भी इसी तरहकी बात है। तेलुगु और कुरुखमें बहुवचन रूपकी दृष्टिसे स्त्री उच्चवर्गीय है, एकवचनमें नहीं। बरहुइ और तोडमें लिंगका सारा भेद मिट गया है। पूर्ण वाक्यके निर्माणके लिए तेलुगु, गोण्डी, कुइ और कुरुखमें संज्ञा क्रियाके समान ही प्रत्ययोंको जोड़ सकती है। दक्षिणकी तमिल और कन्नड़का प्राचीन रूप भी इसी तरहका था, पर आजकी दक्षिण बोलियोंमें वह रूप समाप्त है। अन्य पुरुषके लिए तोड़में यह रूप प्राप्त है।

कुइमें एक नकारात्मक प्रत्यय और कण्ठ्य ध्वनि है जो स्वर मध्यगत होकर नकारात्मक क्रिया-रूपको अन्य काल और अवस्था (मूड) रूपसे अलग करते हैं। प्राक्-द्रविड़में सम्भवतः यह प्राप्त था, पर कण्ठ्य ध्वनिके लुप्त होने और स्वरके सम्पृक्त होनेके कारण अब अधिकांश द्रविड़ भाषाओंमें नकारात्मक प्रत्यय परिलक्षित नहीं होता। यह विश्वास किया जाता है कि यह अन्तिम पदिक और वाक्यिक द्राविड विशेषता भारतीय आर्यभाषा संस्कृतके पूर्ण-रूपकी तरह ही थी।

आर्य और द्रविड़के परस्पर प्रभाव

अनुसन्धान और तुलनात्मक अध्ययनके द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि भारतीय आर्य भाषा संस्कृत आदिने द्रविडसे वृक्ष, पशु, वस्तु आदिके बोधक अनेक शब्द ग्रहण किये। द्रविड और आर्य शब्दोंका तुलनात्मक अध्ययन अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरू ही हुआ है। शब्द-विनिमयके अतिरिक्त भारतीय आर्य और द्रविड़ भाषाओंने भाषागत अन्य विशेषताओंका विनिमय भी किया है। अन्य युरोपीय भाषाओं – लैटिन, ग्रीक, ईरानी आदिके प्रतिकूल संस्कृतमें मूर्धन्य ध्वनियों – ट ठ ड ढ ण – का समावेश द्रविड़ प्रभावका ही फल है। धार्मिक कृत्य, दर्शन-चिन्ता, और रहस्य-साधना आदिके कुछ रूपोंका आविर्भाव द्रविड़ोंमें ही सर्व-प्रथम हुआ। योग-साधनाओंका भी स्रोत वही है। प्रो० मार्क कोलिन्सने जैसा कहा है, सोलहकी संख्या पर आधारित भारतीय परिगणना स्रोत द्रविड़ ही है। जाति-प्रणालीका स्रोत भी वहींसे प्राप्त है। शिव और उमाके देव-प्रतीक भी वहींसे गृहीत हुए।

इसी तरह भारतीय आर्य भाषाओंने भी द्रविड़को पूर्णतः प्रभावित किया है। कई एक नयी ध्वनियोंका द्रविड़में विकास आर्य भाषाके स्रोतसे ही हुआ है। इसके अतिरिक्त रूप-विधान और वाक्य-रचना पर भी भारतीय आर्य भाषाओंका द्रविड़ पर पूर्णतः प्रभाव है। धर्म और सांस्कृतिक ऐक्यकी स्थापनाके कारण विकसित और समृद्ध द्रविड़ भाषाओंमें संस्कृतके चालीससे पचास प्रतिशत तक शब्द पाये जाते हैं। मलयालम और तमिलमें संस्कृतके शब्दोंका बहुत ही बाहुल्य है। इसी बाहुल्यके कारण मलयालमको बहुत दिनों तक संस्कृत-निःसृत माना जानेका प्रयास चलता रहा। द्रविड़ और संस्कृतके पारस्परिक प्रभावोंके अध्ययनके लिए एक बहुत बड़े ग्रन्थकी आवश्यकता है।

आज भी यह प्रभाव तेज़ीसे काम कर रहा है और एकत्वकी प्रवृत्तियोंमें वृद्धिके कारण समानान्तरण, आकर्षण और प्रभावका क्रम जारी है। एक छोटा-सा उदाहरण सामने रखें तो दो भिन्न परिवारकी भाषाओंके समीकरणकी प्रक्रियाकी प्रत्यक्ष झलक मिल सकती है। दक्षिणके होटलों और रेस्तराँओंमें हम 'उपमा' – एक प्रकारका उत्तर भारतीय पक्वान्न या मिष्टान्न माँगते है और हमारा दक्षिणी द्रविड़ भाई हमें 'उप्पु मवा' देता है। 'उप्पु' अर्थात् आटा और 'मवा' अर्थात् मावा ! 'उप्पु मवा' और 'उपमा' एकसे प्रतीत होकर भी भिन्न हैं, पर यह अर्थ-भेद प्रयोग-भेदके रूपमें आज प्राप्त नहीं। द्रविड़ भाई 'उपमा' को 'उप्पु मवा' और हम 'उप्पु मवा' को 'उपमा' के रूपमें किसी भेदके बिना ही ग्रहण करते हैं।

अन्य किसी भाषा-परिवारके साथ द्रविड़को जोड़नेका अब तक कोई प्रयास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल नहीं हो सका है। सुदूर भारत, इण्डोनेशिया, मध्य एशिया (अल्ताइक) और उत्तरी यूरेशिया (फिन्नो-उग्रिक) के साथ सम्बन्ध-स्थापनका प्रतिपादन भी सिद्ध और समर्थित नहीं हुआ।

आधार और विस्तृत अध्ययनके प्रतिपाद्य –

१. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया।
२. रॉबर्ट कॉल्डवेल : कॅम्परेटिव ग्रामर ऑव द्रविडियन फ़ैमिली ऑव लैंग्वेजेज़।
३. जूल्स ब्लोख़ : स्ट्रैक्चर ग्रामेटिकलेडेज़ लैंगुएज़ द्रविडियन्नेस।
४. फ़ोरबेस : कॅम्परेटिव ग्रामर ऑव द लैंग्वेजेज़ ऑव फ़र्दर इण्डिया।
५. डेनिज़ ब्रे : सेन्सस ऑव इण्डिया।
६. सिल्वियन लेवी, जीन प्रिज़लुस्की ऐण्ड जूल्स ब्लोख़ : प्री-आर्यन ऐण्ड प्री-द्रविडियन इन इण्डिया।
७. टी० बरो ऐण्ड एम० बी० इमेन्यु : ए द्रविडियन इटिमॉलॉजिकल डिक्शनरी।
८. एस० के० चैटर्जी : इण्डो-आर्यन ऐण्ड हिन्दी।

■

आलोचना साहित्य

●

आधुनिक काव्य : रचना और विचार : आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ३.५०

निराला और नवजागरण : डॉ० रामरतन भटनागर १०.००

सामयिक जीवन और साहित्य : डॉ० रामरतन भटनागर ७.००

नयी कविता : संस्कार और शिल्प : डॉ० रामशंकर मिश्र ५.००

हिन्दी साहित्यका संक्षिप्त इतिहास : डॉ० रामरतन भटनागर ७.००

●

साथी प्रकाशन

सागर, म० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-चिन्तन
दिशाबोधक संज्ञाएँ

विभिन्न दिशा-बोधक संज्ञाओंका
भाषाविज्ञान, इतिहास और पुराणकथा पर
आधारित पर्यालोचन

सूर्यदेव शास्त्री

हमारे यहाँ दिशाके लिए ककुप, काष्ठा, आशा, हरित, निदेशिनी, ककुभ, गो, आता, उपरा, आष्ठा, कोम आदि अनेक पर्याय काल-क्रमसे प्रयुक्त होते रहे हैं। इनमें सभी स्थान, भू-खण्ड और दिशा-खण्ड आदिके अर्थ व्यक्त करते हैं।

निर्देश या संकेतके लिए चारों दिशाओंके मध्यवर्ती चार कोण एवं आकाश और पातालको दिशाओंमें परिगणित करना भारतीय संज्ञा-विधानकी मौलिकता एवं सूक्ष्मताका परिचायक है। इतना ही नहीं, इन कोणोंके लिए अलग-अलग संज्ञाएँ भी हैं। अन्य भाषाओंमें कोणोंका भेद तो ज्ञात है, उनकी संज्ञाएँ दो दिशाओंके सामासिक शब्दोंपर आधारित हैं।

दिशाओंके सम्बन्धमें पुराणोंमें कई रोचक कथाएँ प्रचलित हैं। वाराह पुराणके अनुसार जब प्रजापतिने जीवोंकी सृष्टि की तो उनके सामने इनकी संरक्षा और नियमनकी समस्या उपस्थित हुई। इसके लिए उन्होंने दश दिशा-रूपी कन्याओंकी सृष्टि की। ये अत्यन्त सुघड़ और मनोरम थीं, अतः साथ ही इनके संरक्षण और निर्वाह तथा अधिकृतिकी समस्या भी आ उपस्थित हुई। उन्होंने इसका भी समाधान किया। आकाशको स्वयं रखकर पाताल शेषनागको समर्पित कर दिया। शेषमें पूर्व इन्द्रको, दक्षिण यम को, पश्चिम वरुणको और उत्तर कुबेरको प्रदान कर दिया। इसी तरह पूर्व-दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर और उत्तर-पूर्वके कोण क्रमशः अग्नि, निर्ऋत, वायु और ईशानको समर्पित किये। चारों कोणोंके नाम इन्हीं कोणपतियोंपर आधारित हैं।

दिशा-बोधक संज्ञाओं और उनकी अर्थ-प्रक्रियापर विचार करनेसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि विभिन्न भाषाओंमें ये भिन्न-भिन्न अर्थोंके ज्ञापक रहे हैं। उनकी निर्माण-प्रक्रियापर तत्तद्देशीय सांस्कृतिक और जातीय विशेषताओंका भी प्रभाव पड़ा है। एक ही भाषा-परिवारमें दिशाओंके ज्ञापक शब्द भिन्न-भिन्न आधारोंपर निर्मित हुए हैं। इनकी अर्थ-व्यंजनाका रूप भी पूर्णतः विपर्यस्त है।

समस्त भारतीय आर्य भाषाओं – हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, ओड़िया, पंजाबी, असमिया आदि – में दिशा बोधक संज्ञाएँ संस्कृतके ही समान हैं और वैदिक संस्कृतिमें उनके निर्मापक तत्त्व प्राप्य हैं। दिशा शब्द पुरातन भारतीय आर्य भाषाके मूल दिश् धातुसे निर्मित है। इसके अर्थ हैं निर्देश करना, दिखाना, प्रदर्शित करना। भारोपीय परिवारकी ईरानी भाषाका दिस्, ग्रीकका देइक्नुमि, लैटिनका दीको, गोथिकका तेइहुम और पुरानी अँगरेज़ीका तेओन (तिहन से) आदि अपने रूप और अर्थ दोनोंमें संस्कृतके दिश्से तुलनीय हैं।

वैदिक सभ्यता और संस्कृतिमें सूर्योपासनाका महत्त्वपूर्ण स्थान था। इस उपासना-विधिका दिशा-बोधक संज्ञाओंके निर्माणमें बहुत बड़ा योग-दान है। उषःकालमें सूर्योपासना की जाती थी, अतः सूर्यकी तत्कालीन अवस्थितिपर ही दिशाओंके बोधक शब्द निर्मित हुए।

पूर्व

पूर्वके लिए प्राची, पुरा, माघोनी और ऐन्द्री अन्य पर्याय हैं। पूर्व दिशापर इन्द्रका स्वामित्व होनेके कारण उसे माघोनी और ऐन्द्री कहा गया है, क्योंकि मघवा इन्द्रका पर्याय है। पूर्व, पुर, प्रा और पुरस् परस्पर सम्बद्ध हैं। इनके अर्थ हैं – आगे होना, सामने होना। सूर्योपासनाके समय उपासक और सूर्यकी पारस्परिक अवस्थितिसे ही इसका तात्पर्य निर्धारित हुआ है। पूर्वके बोधक प्रांच और प्राची शब्द भी इसी तरह निर्मित हुए : मूल अंच धातुका अर्थ है झुकना, मुड़ना, नमित होना, वक्र होना, घूमना आदि। फलस्वरूप प्र + अंच = प्रांच, प्राची, प्राक्के अर्थ है : अग्रनिर्दिष्ट, उन्मुख, आमने-सामने आदि। निश्चय ही उपासक और सूर्यकी अवस्थितिको ही यहाँ ध्यानमें रखा गया है। साथ ही भौगोलिक अर्थमें भी पूर्व अपेक्षया झुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रविड़ भाषाओंमें तमिलकी ऋ अधस्थताका बोधक और पूर्व दिशाकी संज्ञा है। मलयालमका किरक्कु तमिल देशकी नीची भूमि और पूर्व दिशाकी संज्ञा है। तोडगु भाषाका 'के-की' भी निम्न और पूर्व दिशाका द्योतक है। यहाँ यह स्पष्ट है कि द्रविड़ भाषा-परिवारमें पार्थिव या भौगोलिक उच्चता-निच्चताके आधारपर ही पूर्व दिशाकी बोधक संज्ञाओंका निर्माण हुआ है।

संस्कृत एवं तज्जात अन्य भारतीय भाषाओंमें उदयगिरिकी तरहके शब्दोंमें उदय पूर्वका ही बोधक है और सूर्यके उगनेसे उनकी लक्षणा-सिद्धि होती है। कन्नड़ के मूड, मूडल, मूडी; तुलुका मूडु आदि भी सूर्योदयके कारण पूर्व दिशाकी बोधक संज्ञाएँ हैं और संस्कृत 'उदय'के निकट हैं। तोड भाषाका इऋक शब्द भी निम्न या अधःका बोधक होनेके कारण पूर्व दिशाका निर्देशक है।

अरबीका मश्रिक़ शब्द सूर्य उगनेकी दिशा या उदयका बोधक होनेके कारण पूर्वका बोधक है।

अँगरेज़ीका ईस्ट पुरानी अँगरेज़ीके इअस्टनासे विकसित है। इसका मूल स्रोत टिउटोनिक 'अएस्-टोनौ' है। आधार शब्द अउस (प्रभात) लैटिनमें अउतोर, अउसोसके रूपमें प्राप्त हैं। ग्रीकके हेओस, हओस, अउओस (प्रभात) आदि संस्कृत उषस्से अर्थ और रूप दोनोंमें ही तुलनीय हैं। पुरानी टिउटोनिकका अउस्-टो और पुरानो अँगरेज़ीका इअस्टना उस दिशाके बोधक हैं जिधर सूर्य उदित होता है।

पश्चिम

पश्चिम या पश्च उच्च-निच्चकी तरह ही निर्मित हुए हैं। लैटिन पोस्-त पोस-तेरस, लिथुआनियन पस्कुई, पस्कुतिनिस, संस्कृत पश्चसे रूप और अर्थ दोनोंमें ही तुलनीय हैं। पश्चका अर्थ है पीछे, बादमें आदि। सूर्योपासनाके समय इस संज्ञासे बोध्य दिशाकी अवस्थिति इसी तरह है। प्रति + अंच = प्रत्यंच औ प्रतीची भी इसी तरह पीछे, उलटा हुआ, प्रतिकूल दिशामें भ्रमणशील आदि अर्थोंके द्योतक हैं। वरुण इस दिशाका स्वामी है अतः इसे वारुणी भी कहा गया है।

द्रविड़ परिवारकी भाषाओंमें पश्चिम-बोधक संज्ञाओंका आतिशय्य है। ये विभिन्न अर्थोंकी व्यंजनापर आधारित हैं। मलयालमका परिज्जारु, कन्नड़, पडु, पडुव, पडवले, पडुवल, पडुकु आदि; कोड भाषाका पडिञरी, तेलुगुका पडमर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलुका पडडॅपि आदि शब्द पतन, सूर्यास्त और पश्चिम दिशाके बोधक हैं। संस्कृतमें सूर्यके लिए प्रयुक्त पतत्री, पतंग आदि शब्द अस्तंपथ सूर्यके व्यंजक हैं। द्रविड़ भाषाके उपरिनिर्दिष्ट शब्द सूर्यास्तकी लक्षणापर ही आधारित हैं। भारतीय आर्य भाषाओंके अस्ताचल शब्दकी गत्यर्थकता इनमें व्यंजित है। पूर्वके प्रतिकूल 'पर' की तरह ही मलयालमका पुरम् शब्द है। तमिलके मेक्कु, मेल, मेलइ, मेटकु आदि, मलयालमका मेरक्कु, एवं कोटके मे-मु-ल्, मे-चि-म आदि शब्द भूमि-गत उच्चताके व्यंजक होनेके कारण पश्चिमके बोधक हैं। तमिलका कोटइ, मलयालमका कोट क्रमशः ग्रीष्मता, गर्म हवा, पश्चिमी हवा और पश्चिम दिशाके बोधक हैं। हवाकी दिशा और स्वभावके अनुरूप ही ये नामकरण हुए हैं। तमिलका कुटक्कु कुर्ग प्रदेशका पर्यायवाची सामान्य द्रविड़ शब्द है। इसके तमिल रूप कुटकम्, कुटकु आदि हैं। तमिल कच्चान मलयालम कच्चानसे सम्बद्ध है और उस दिशासे बहनेवाली हवाका बोधक है।

अरबीका मग़रिब, जो मग़रिका बहुवचन है, सूर्यके डूबनेकी जगह या अस्ताचलका व्यंजक होनेके कारण पश्चिम दिशाका बोधक है।

अँगरेज़ीका वेस्ट शब्द पुरानी टिउटोनिक वेस्ट, वेसका विकसित रूप है। ग्रीक हेस्पेरहोस, हेस्पेरहा; लैटिन वेस्पेट, वेस्पेरा आदि सूर्यास्तकी दिशाके बोधक हैं। ये गति, विस्तार, निर्देश आदिकी भी व्यंजना करते हैं।

उत्तर

संस्कृत उत्तर शब्दका अर्थ है ऊपर, उच्चतर, महत्त्वशाली आदि। भारतीय उत्तरी भू-प्रान्त दूसरी दिशाओंसे अधिक उन्नत है, अतः उसे ऐसा कहा गया है। उदंच और उदीची भी उठाना या ऊपरकी ओर करना आदि अर्थोंको व्यक्त करते हैं: द्रविड़ शब्दोंकी तरह ही ये शब्द भी पृथ्वीकी उच्चता-निच्चतासे सम्बद्ध हैं। इस दिशापर कुबेरका आधिपत्य होनेके कारण इसे कौबेरी या दैवी भी कहा जाता है।

तमिलमें उत्तरके लिए वटक्कु शब्द है जो विशेषणका भी कार्य करता है। तमिल वटन्तईके उत्तरीय और उत्तरी हवा दोनों ही अर्थ है। तेलुगु भाषा और प्रान्तके अर्थमें भी इसका प्रयोग होता है: मलयालमके वट और वटक्कु क्रमशः उत्तर और उत्तरकी ओर अर्थ देते हैं। कन्नड़ बड, बडग, बडगल, बडगुके भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर, उत्तरमें आदि अर्थ होते हैं। तुलु भाषाके वडकायि शब्दसे उत्तर और उत्तरीय दोनों ही अर्थोंकी व्यंजना होती है। तेलुगुमें वडांकुंगोडका अर्थ हिमालय है। यह संज्ञा स्पष्ट ही देश-विदेशकी अभिधापर आधारित है।

अरबीका शुमाल स्थानिक लक्षणाके आधारपर ही उत्तर दिशाका बोध कराता है।

अँगरेज़ी नॉर्थका टिउटोनिक और पुरानी फ्रिस्कनसे सीधा सम्बन्ध है। पुरानी अँगरेज़ीका नोरो गोथिक भाषामें प्राप्य नहीं है। इसका अर्थ चार सामान्य दिशा-बिन्दुओंमें वह जो किसी व्यक्तिके पूर्व खड़े होनेपर ठीक बायें पड़ता है।

दक्षिण

सूर्योपासनाके समय पूर्वाभिमुख बैठनेपर दायें अंगकी अवस्थितिके आधारपर ही दक्षिण शब्दका निर्माण हुआ है। अवाची, शायनी, यामी, वैवस्वती आदि इसके अन्य पर्याय हैं। इस दिशापर यमका आधिपत्य होनेके कारण ही इसे याम्य या यामी कहा गया है। देवेन्द्रप्रिया पूर्वदिशाका जो महत्त्व हमारे यहाँ देव-कर्ममें प्राप्त है, यमप्रिया दक्षिण दिशाका पितृ-कर्ममें वही महत्त्व है।

द्रविड़ परिवारका तेन या उसके योगसे निर्मित अन्य शब्द दक्षिणकी तरह ही, अंग और दिशा-विशेष दोनोंके लिए प्रयुक्त हैं। तमिल तेन, दक्षिण दिशाके अतिरिक्त दक्षिण प्रदेश और दक्षिणी हवाके लिए भी प्रयुक्त होता है। मलयालम-के तेन और तेक्कु, कन्नड़के तंक, तेंकल, तेंक, तम्बु, टेंकुलु, टेंकु आदि दक्षिण दिशाके बोधक हैं। अरबीका जनूब भी इसी तरहका अर्थ व्यंजित करता है।

पुरानी अँगरेज़ी सुओसे साउथका विकास हुआ है। पुरानी फ्रिस्कन सुथ पुरानी जर्मनी सुथ, पुरानी उन्नत जर्मनी सुन्द, सुन्त आदि अर्थ और रूप दोनोंमें सुओ या साउथसे तुलनीय हैं। पुरानी नॉर्स भाषाके सुओर शब्दसे नभ और पृथ्वीके उस हिस्सेका बोध होता था जो उत्तरके ठीक सामने हो।

प्रतीकित एवं व्यंजित अर्थोंके साथ ही मुहावरे आदिके प्रयोग-विस्तारने दिशा-बोधक संज्ञाओंके अर्थोंको बहुत ही विस्तृत कर दिया है। आज पूर्व, पश्चिम, उत्तर (चीनी आक्रमणके बाद) ऊपर-नीचे कहनेसे मात्र दिशाका बोध नहीं होता। गंगाके दक्षिण किनारेमें बसे हुए भोले ग्रामीण अभिशापके रूपमें जब कहते हैं 'उत्तर जाओ' तो उसका अर्थ होता है 'जाओ, मर जाओ'! पता नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनगिनत माँओंकी तरह मेरी माँ दक्खिन (यामी) की ओर मुँह करके खानेसे और उत्तर सिर करके सोनेसे आज भी क्यों मना करती है। आज भी भोली युवतियाँ बरसातमें न जाने 'मत जइह पिया मोर, पूरब बनिजिया !' गाकर क्यों रुला देती हैं। रौरव और कुम्भी-पाक नरकोंके द्वार भी तो दक्षिण (यामी) की ओर ही हैं। कबीरके गीतोंके दस दरवाज़े, पछुवा हवाकी टीस, देहाती भाइयोंकी सूअरकोनी (पूर्वोत्तरीय) हवा, न जाने दस दिग्गजोंके दाँतोंकी तरह क्यों मुझे भीत करते रहते हैं।

राजनीति-शास्त्रके सुप्रसिद्ध लेखक
डॉ० सुशीलचन्द्र सिंहकी प्रामाणिक कृतियाँ

राजनीति ...	१०.००
महत्त्वपूर्ण-शासन-प्रणालियाँ ...	१०.००
भारतीय शासन और राजनीतिके सौ वर्ष ...	१०.००
राजनीतिमें निबन्ध ...	१०.००
स्वतन्त्र राष्ट्रोंके सम्बन्ध ...	१५.००
राजनयके सिद्धान्त ...	५.००

साथी प्रकाशन
सागर, म० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचित शब्दोंकी कथा

निवास स्थानके लिए हिन्दीमें प्रयुक्त विभिन्न शब्दोंकी कालिक-सांस्कृतिक कथावार्ता

वररुचि

एक ही उपयोगमें आनेवाली वस्तुके लिए भिन्न-भिन्न शब्दोंका प्रयोग पर्यायवाचिताकी दृष्टिसे मान्य होकर भी अर्थ और विकास-क्रमकी दृष्टिसे विभिन्न स्थितियोंका सूचक होता है। किसी जाति या राष्ट्रकी सांस्कृतिक एकताके सूत्रोंके अनुसन्धानकी दृष्टिसे इसका बड़ा महत्त्व है। प्रायोगिक औचित्यकी दृष्टिसे भी हम एक वस्तुके भिन्न-भिन्न पर्यायोंमें यह पाते हैं कि हर एकका प्रवेश भिन्न-भिन्न कालों और परिस्थितियोंमें किन्हीं विशेष कारणोंसे हुआ है और उनमें एक प्रकारका तात्त्विक भेद हर समय सक्रिय रहता है। यहाँ हम 'आवास' के लिए प्रयुक्त भिन्न-भिन्न शब्दोंकी कालिक-सांस्कृतिक कथापर अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

गृह

श्रेण्य शब्दकोशकार और वैयाकरणने 'गृह्णाति, इति गृहम्' कहकर गृह शब्दकी व्युत्पत्ति की है। ऋग्वेदके प्रारम्भिक मन्त्रोंमें 'गृह' शब्दका अर्थ है सहायक या सेवक। वहीं आगे चलकर एक सामूहिक वास-स्थलके लिए इसका प्रयोग होने लगा और बादमें इसे मिट्टीके बने आवासके लिए भी मान्यता प्रदान की गयी। सहायक और सेवककी व्यंजना और अन्वितिके कारण ही वेदोंमें ही ऐसे आवासको गृह कहा गया जिसके साथ कई कोठरियाँ हों। परिवार, वास,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाताल आदिके लिए भी इसका प्रयोग हुआ है। निश्चय ही यह शब्द हमारी उस अवस्थाका इतिहास सुरक्षित किये हुए है जब हम खण्ड-जीवन प्रक्रियासे सामूहिक गार्हस्थ्य जीवनमें प्रवेश कर रहे थे और परिवारकी सीमा बहुत ही बड़ी थी।

गेह

यह गृहका ही विरूपित रूप है। मनुस्मृति तथा महाभारतमें यह दो आवासों – गृह और शरीर – के अर्थमें प्रयुक्त हुआ है।

घर

तुलनात्मक भाषावैज्ञानिकोंने इसे भारोपीय स्थिति तक ले जानेकी कोशिश की है और इण्डो-युरोपियन 'घ्वोरो' से इसका सम्बन्ध जोड़ा है। ग्रीक और लैटिनमें तत्सम रूपोंके पानेके बाद भी हम यही कह सकते हैं कि यह 'गृह' से ही विकसित है। इसका 'गह' रूप भी पाया जाता है।

वेश्म

'विश्' धातुसे निर्मित 'वेश' शब्दका अर्थ है स्थानान्तरित होकर बसनेवाला, किसान, पड़ोसी, आश्रयी आदि। ऋग्वेदके बाद कठोपनिषद्में यह शब्द द्वार या मार्गके लिए भी प्रयुक्त है। बहुत दूरसे आकर आर्य परिवार दूसरे परिवार या दलके पास जब अपना आवास बनाता था तो उसे वेश्म कहा जाता था। 'प्रतिवेशी' से पड़ोसका अर्थ भी इस दृष्टिसे विचार्य है। 'वेश्मक' शब्द विशेष जाति या लोगोंके लिए भी प्रयुक्त है। 'वेश्या' भी दूरसे घर-द्वार छोड़कर दूसरी जगह आकर बस जानेवालीके ही अर्थका ज्ञापक है।

सदन : सद्म

इन दोनों शब्दोंका प्रयोग ऋग्वेदमें दो भिन्न रूपोंमें होकर भी समतुल्य ही रहा है। दूरकी यात्रा, किसी विशेष समारोह, या किसी विशेष उत्सव या सामाजिक कृत्यके लिए जब हम एक प्रकारकी अस्थायी बैठक या आवास बनाते थे तो उसे सदन या सद्म कहते थे। यह सभागृह या यज्ञशालाके अर्थमें प्रयुक्त था। सदस्, संसद् आदिके वर्तमान अर्थसे हम परिचित हैं ही। सदस् शब्दका प्रयोग भी इसी अर्थमें होता था और वर्तमान 'सदस्य' उस सामूहिक अस्थायी आवासकी ही सदस्यताको व्यंजित करता है। 'सादन' या सादकसे उच्चारक, व्याख्याता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशक, वक्ता या सामूहिक पाठक, कथावाचकका ही अर्थ लिया जाता था। यही कारण है कि वेदोंमें 'सद्म' शब्द मुख्यतः पशुबलिके निमित्त बनाये जाते स्थलका ही द्योतक था।

निकेतन

निकेत या निकेतन 'चित्' धातुसे विकसित है। मूलतः यह चिह्न या संकेतका सूचक रहा है जैसा कि महाभारतमें प्रयुक्त 'तपद्याय निकेत' से स्पष्ट है जो ग्रीष्म ऋतुके बीतनेके बाद बादलोंके आनेके अर्थको व्यक्त करता है। शरीरके अवयव और आवासके अर्थमें इसका प्रयोग बादमें हुआ है। ग्रीष्म ऋतुके बीतनेके बाद वर्षा ऋतुमें रहनेके लायक़ आवासके लिए यह शब्द प्रयुक्त होता था। ब्राह्मणत्व और दिव्यताकी स्थितिको भी निकेत या निकेतन कहा गया है। इस तरहके आवाससे ग्रीष्म ऋतुके गुज़रनेका ही संकेत मिलता था, अतः यह गृह या आवासकी पर्यायवाची संज्ञा न होकर व्यंजक विशेषण-भर है।

पस्त्य

'पस्' और 'त्य' के योगसे निर्मित यह शब्द एक प्रकारके खुले मकान या आश्रम-स्थानके लिए प्रयुक्त हुआ है। इसका लैटिन रूप 'पस्तिस' इस प्रकारकी व्युत्पत्तिमें एक प्रकारका भ्रम उत्पन्न करता है। इसका एक रूप 'पस्त्या' गृह-जीवनकी साधिका एक देवीका भी नाम है। निश्चय ही यह शब्द अत्यन्त पुराना है और पुरुष-आवासके योग्य एक स्थायी स्थलका संकेत करता है। इसे हम गृहकी कोटिमें न रखकर आधुनिक दालानकी कोटिमें रख सकते हैं।

भवन

'भू' धातुसे विकसित 'भवन' शब्द महाभारत-मनुस्मृति आदिमें स्थायी निवास-के अर्थमें प्रयुक्त हुआ है। भू धातुसे जोड़कर 'हुआ जाये जहाँ' इस प्रकारकी व्युत्पत्ति वैसे आवासकी ओर संकेत करती है जहाँ जल-ग्रहण किया जाये। कुण्डलीमें बारह स्थानोंके लिए 'भाव' और 'भवन' दोनों ही शब्दोंका प्रयोग हुआ है। पंचतन्त्रमें वैसे स्थानको भी भवन कहा गया है जहाँ कोई चीज़ बढ़ती और पनपती है। निश्चय ही यह जन्म और पालन-पोषण-गृहकी संज्ञा है।

आगार

'आ' उपसर्गके साथ 'गृ' धातुसे सिद्ध यह शब्द संचय-स्थल या ऐसे स्थलका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अर्थ व्यक्त करता है, जहाँ विभिन्न-स्थलोंमें रहकर भी निश्चित समयपर आकर टिका जाये। यही कारण है कि आगार शब्द खज़ाना या संचय-केन्द्रका बोधक है।

मन्दिर

'मन्द' और 'इर' के योगसे बना यह शब्द महाभारत, ललितविस्तर, काव्यादर्श आदिमें ऐसे किसी भी स्थलके लिए प्रयुक्त हुआ है जहाँ रुककर प्रतीक्षा की जाये या टिका जाये। अश्वशाला और शरीरके अर्थमें भी यह प्रयुक्त हुआ है। यह निश्चय ही किसी व्यक्तिगत आवासके लिए न प्रयुक्त होकर सामूहिक आवास या विश्राम-स्थलका पर्याय है। देवगृह आदिके अर्थोंमें इसका केन्द्रीयकरण इसी प्रक्रियाकी व्यंजना करता है।

निकाय

निकाय 'चि' धातुसे सिद्ध है जिसका अर्थ है संग्रह, ढेर, समूह, वर्ग, श्रेणी आदि। यह उन लोगोंके समूहके अर्थ की भी व्यंजना करता है जो एक ही कार्यका सम्पादन करते हैं। इस तरह यह 'सहधर्मी' का पर्याय कहा जा सकता है। बाद में यह निवास और छिपनेकी जगहके अर्थकी भी अभिव्यक्ति करने लगा। निश्चय ही यह ऐसे आवास या स्थानका द्योतक है जहाँ किसी विशेष कार्यमें लगे हुए लोग टिकते हों या छिपते हों।

निलय

'नि' प्रत्ययसे युक्त 'लि' धातुसे सिद्ध यह रूप 'शरण-स्थल' या 'अवतरण-स्थल' का अर्थ व्यक्त करता है। वेदोंमें लि धातुका प्रयोग पक्षियोंके झुण्डके भूमि पर उतरनेके अर्थमें होता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण और महाभारतमें भी इसका प्रयोग एक जगह उखड़कर दूसरी जगह बसनेके अर्थमें हुआ है।

कुटी

यह द्रविडसे ग्रहण किया है और एक ऐसी अवस्थाका द्योतक है जब किसी ठोस साधनोंके अभावमें घास-फूसके योगसे आवासकी व्यवस्था की जाती थी।

शाला

शाला और शाखा अन्त्य ध्वनि-वेदकी स्थितिमें रहकर भी तुलनात्मक दृष्टिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार्य हैं। जर्मन 'सअल', अँगरेज़ी 'हॉल' को भी हम इस दृष्टिसे तुलनीय समझते हैं। शाल् धातु, घरमें रहना, का अर्थ व्यक्त करता है। इस तरह यह दीवार, वृक्ष, कचहरी, आदिका अर्थ भी व्यक्त करता है। 'विशाल' शब्द विशेषण होकर भी इससे सम्बद्ध है और हमें इसका मूल अर्थ, बहुत ही विशाल भवन से परिचित कराता है।

चैत्य

चित् धातुसे निर्मित यह शब्द आत्मा और शरीर दोनों ही अर्थोंको व्यक्त करता है। आश्वलायन गृह्यसूत्रमें यह स्तूप या दाहक्रिया आदिके स्थलका पर्याय है। ग्रामके समीपके संगम-स्थल, धार्मिक-स्थान, साधु-आश्रम, आदिके अर्थोंमें इसकी परिणति मूलतः महात्माओं और महान् पुरुषोंके समाधि-स्थल या दाह-स्थल पर बनाये गये स्मारक और वहाँके पवित्र संगम-समारोहकी परिव्याप्ति है।

■

क्या आप इस माह निम्नलिखित विषयोंपर पुस्तकें ख़रीद रहे हैं ?

इतिहास-भूगोल, राजनीति-अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र-शिक्षाशास्त्र, उपन्यास-कथा, बाल-प्रौढ़ अथवा आलोचनात्मक व शोध साहित्य : तो कृपया अधिक कमीशन प्राप्त करनेके लिए हमें अवश्य याद रक्खें।

नोट : हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगायें

भारतीय ग्रन्थमाला

थोक पुस्तक-विक्रेता

प्रधान कार्यालय : गूँगे नवाबका पार्क, अमीनाबाद लखनऊ

ब्रांच : अमीनाबाद रोड, निकट नाका हिंडोला, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट तेलुगु कथाकार
गोपीचन्द

दोनेपूडि राजाराव

गोपीचन्दकी कहानियोंने तेलुगु कथा-साहित्यमें आधुनिकताकी सृष्टि की। नयी कथा-वस्तु और नये शिल्पके साथ इन्होंने अपने लेखनका आरम्भ किया। इनकी पहली कहानी 'शम्बूक वध' है जो कॉलेजकी पत्रिकामें १९२८में प्रकाशित हुई थी। इनके पिता श्री त्रिपुरनेनि रामस्वामि चौधरी 'कविराट्' तेलुगुके युग-प्रवर्तक कवि थे।

गोपीचन्द मात्र कथाकार ही नहीं थे। यह चिन्तनशील भी थे। सम्भवतः इसी कारणसे इनकी कहानियोंमें घटनाओंका उतार-चढ़ाव मात्र नहीं है। इन्होंने अपने जीवनानुभवोंको अपनी कहानियोंमें बौद्धिक-स्तरपर उतारा है। यह अपनी कहानियोंमें शिल्पके प्रति भी अत्यधिक सजग हैं। गोपीचन्दने कहानी कहनेका कोई एक विशेष तरीक़ा नहीं अपनाया। इसीलिए इनकी कहानियोंमें शिल्प और शैलीकी विविधता है। इन्होंने समस्या-प्रधान कहानियाँ भी लिखी हैं और अपने ढंगसे समस्याओंके लिए हल भी निकाले हैं।

अपने विचारोंमें गोपीचन्द बर्नार्ड शॉसे प्रभावित रहे हैं। कहानियोंके साथ ही आपने श्रेष्ठ उपन्यास भी लिखे हैं।

'असमर्थकी जीवयात्रा' तेलुगु उपन्यास-साहित्यकी अन्यतम कृति है। उपन्यासके नायक सीतारामारावका यथार्थवादी चरित्र-चित्रण और उसके चरित्रका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथार्थवादी विश्लेषण इस उपन्यासकी अपनी विशेषताएँ हैं। यह पात्र आत्म-पीड़नसे ग्रसित है। गोपीचन्द स्वयं आत्म-पीड़नमें विश्वास करते हैं। आत्म-पीड़नसे दृष्टि मिलती है, ऐसा आपका विचार था। आपने अपने संस्मरणोंमें एक जगह लिखा है – 'हर तीसरे साल मेरे शरीरमें एक कम्पन-सा होता है, आत्मा तड़प उठती है और इस पीड़नसे नयी सूझ एवं भावधारा प्रकट होती है।'

गोपीचन्दकी बहुत-सी कहानियाँ चरित्रोंके अन्तर्द्वन्द्वकी कहानियाँ हैं। इन्होंने अपने पात्रोंकी कुण्ठाओं और कमज़ोरियोंका अद्‌भुत विश्लेषण किया है। गोपीचन्दने प्रायः जीवनके हर क्षेत्रसे अपनी कहानियोंकी सामग्री एकत्र की है। नगर जीवनके साथ ही इन्होंने ग्राम्य जीवनपर कहानियाँ लिखी हैं।

गोपीचन्दकी कहानियोंमें निराशाकी झलक प्रायः ही मिल जाती है। संघर्ष-शील जीवनके कटु अनुभवोंके कारण इनकी कहानियोंमें क्षोभकी मात्रा भी अधिक है। लेकिन यह सच्चे अर्थोंमें मानवतावादी कलाकार हैं और इन्होंने अपने पात्रों-की समस्याओंको सहानुभूतिके साथ देखा-परखा है।

गोपीचन्दने पौराणिक प्रसंगोंको वैज्ञानिक दृष्टि दी है। और ऐतिहासिक पात्रोंके माध्यमसे अपने विचारोंको व्यक्त किया है। इन्होंने कई एकांकी भी लिखे हैं। 'मांचाला' और 'तत्त्वमसि' आदि इनके प्रमुख एकांकी हैं। गोपी-चन्दने चित्रोंके लिए भी कहानियाँ लिखी हैं।

'बिजलीके दाग़' तथा 'पण्डित परमेश्वर शास्त्रीका परमेश्वरनामा' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। कई कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। २ नवम्बर १९६२-को हृद्-गतिके अचानक रुक जानेसे इनका देहावसान हुआ।

इनकी कृतियाँ तेलुगु कथा-साहित्यकी अमूल्य निधियाँ हैं। नयी कथा-वस्तुके साथ, तेलुगु कथा-साहित्यको इन्होंने शिल्प और सौन्दर्य दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैन साहित्यका विकास

हिन्दीमें हुए जैन-साहित्य सम्बन्धी शोध-कार्योंके परिप्रेक्ष्यमें एक विहंगावलोकन

डॉ० पूर्णमासी राय

यह सत्य है कि जैन-साहित्यको हिन्दी साहित्यमें उनका प्राप्य गौरव प्रदान नहीं किया गया। आचार्य शुक्लने तो अपने इतिहासमें उसे यह कहकर बहिष्कृत ही कर दिया था कि "इसमें कई पुस्तकें जैनोंके धर्मतत्त्व-निरूपण सम्बन्धी हैं जो साहित्यकी कोटिमें नहीं आतीं।" शुक्लजीकी इस मान्यताका प्रभाव बड़ा गहरा पड़ा। हिन्दीके विद्वानोंकी धारणा जैन साहित्यको सर्वसामान्य भावसत्तात्मक संवेदनाओंसे हीन समझकर पूर्वगृहीत तथ्योंको लेकर चलीं। इस धारणा का निरसन करते हुए आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदीने लिखा "इधर कुछ ऐसी मनोभावना दिखाई पड़ने लगी है कि धार्मिक रचनाएँ साहित्यमें विवेच्य नहीं हैं। कभी-कभी शुक्लजीके मतको भी इस मतके समर्थनमें उद्धृत किया जाता है। मुझे यह बात उचित नहीं मालूम होती। धार्मिक प्रेरणा या आध्यात्मिक उपदेश होना काव्यत्वका बाधक नहीं होना चाहिए।"[1] आदिकालके विश्लेषणमें जैन लेखकोंकी रचनाएँ केवल तत्कालीन भाषाके समझाने या कुछ प्रसिद्ध काव्यरूपोंके लक्षण निर्धारित करने आदिमें सहायक नहीं हैं। जैसा कि प्रायः माना जाता है। बल्कि जैन कृतिकारोंकी कृतियाँ साहित्यकी स्वाभाविक सरणिमें सर्वमान्य, भावसत्तासे पूर्ण सम्बद्ध हैं। और जन-मानसका प्रकृत बिम्ब भी उनमें प्रतिबिम्बित है। इन रचनाओंमें जन-जीवनकी झाँकी और राग-विरागके अनुभूत क्षणोंकी ध्वनियाँ भी सुनाई पड़ती हैं। अब 'सेकेण्ड हैण्ड नॉलेज' से केवल

---

१. हिन्दी साहित्यका आदिकाल : आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषणा करनेकी आवश्यकता नहीं, आलोड़न-विलोड़न, गहरे पानी पैठ मोती निकालनेकी बेला है।

जैन कवियोंके महत्त्वका आकलन सम्भवतः इसीलिए नहीं हो पाता था, क्योंकि उनका विपुल साहित्य-भण्डार ग्रन्थागारोंमें उपेक्षित पड़ा हुआ था। वह सन् १८७७ की एक महत्त्वपूर्ण तिथि थी। जब सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री जर्मन पिशेलने जर्मनीके हाल नगरसे हेमचन्द्राचार्यके व्याकरणका बहुत अच्छा सुसम्पादित संस्करण निकाला। उस समय अपभ्रंशके विवेचनमें पिशेलने यह अनुमान किया कि अपभ्रंशका विपुल साहित्य खो गया है। उन्होंने हेमचन्द्रके व्याकरणमें प्राप्त दोहोंके अतिरिक्त विक्रमोर्वशीय, सरस्वतीकण्ठाभरण, वैतालपंचविंशति, सिंहासनद्वात्रिंशतिका, और प्रबन्धचिन्तामणि आदि ग्रन्थोंमें पाये जानेवाले अपभ्रंश पद्योंको तथा प्राकृत पैंगलम्में उदाहरण रूपसे उद्धृत कविताओंको ढूँढ़ निकाला। सन् १९०२ ई०में उन्होंने 'माटेरिया लिपन् सुर केण्टानिस डेस अपभ्रंश' नामक पुस्तकको अपने प्राकृत व्याकरणका परिशिष्ट कहकर निकाला। इसके बाद उनका स्वर्गवास हो गया। पिशेल अपभ्रंशके पाणिनि थे।

अपभ्रंश-साहित्यके प्रकाशमें आनेकी मनोरंजक घटनाका उल्लेख सुप्रसिद्ध विद्वान् मुनि जिनविजयजीने 'पउमसिरीचरिउ' नामक अपभ्रंश काव्यकी प्रस्तावनामें इस प्रकार किया है। सन् १९१३–१४ ई० में डॉ० हरमन याकोबी नामक जर्मन इस देशमें आये। अहमदाबादके जैन-भण्डारका निरीक्षण करते हुए उन्हें एक साधुके पास 'भविसयत्तकहा' नामक पुस्तक देखनेको मिली। देखकर वे फड़क उठे। यह अपभ्रंशका काव्य था। एक अनहोनी थी। सन् १९१८ में म्यूनिकको रॉयल एकेडेमीने याकोबी-द्वारा सम्पादित 'भविसयत्तकहा' प्रकाशित की। याकोबी अपभ्रंश विज्ञानके न्यूटन थे।[1]

अपभ्रंश साहित्यका शोध-कार्य आगे बढ़ा। बड़ौदाके महाराज सर सयाजी गायकवाड़की आज्ञासे सन् १९१४ ई० में श्री चिमनलाल डाह्याभाई दयालने पाटणके जैन ग्रन्थ-भण्डारकी हजारों पुस्तकोंकी परीक्षाके उपरान्त कई अपभ्रंश पुस्तकोंका पता लगाया जिनमें मुख्य हैं—सन्देशरासक, वज्रस्वामिचरित्र, अन्तरंगसन्धि, चौरंगसन्धि, सुलसाख्यान, चच्चरी, भावनासार, परमात्मप्रकाश, आरा-

१. हिन्दी साहित्यकी भूमिका : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धना, मंयणरेहासन्धि, नभयासुन्दरसन्धि, भविसयत्तकहा, पउमसिरीचरिउ, इत्यादि ।

श्री दयालने 'भविसयत्तकहा'का सम्पादन भी आरम्भ किया, पर सन् १९१८ में अचानक उनका स्वर्गवास हो गया । बादमें स्वर्गीय पाण्डुरंगगुणेने यह कार्य पूरा किया ।

जैन साहित्यके पारावर्यधुरीण विद्वान् मुनि जिनविजयजीने भाण्डारकर रिसर्च इन्स्टीटचूटमें डेकन कॉलेजसे लायी हुई प्रतियोंके आलोड़नके बाद कई अपभ्रंश ग्रन्थोंका पता लगाया । 'पुप्फयन्त' या 'पुष्पदन्त'की 'तिसट्ठीलक्खणमहापुराण', स्वयम्भूका 'पउमचरिउ' हरिवंश पुराण इत्यादि ।

जैन साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् श्री नाथूराम प्रेमीने अपभ्रंश ग्रन्थोंके अन्वेषणमें अमूल्य योग दिया । उन्होंने 'जसहर चरिउ' और 'णायकुमार चरिउ' नामक दो और अपभ्रंश ग्रन्थ खोज निकाले और अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'जैन साहित्यका इतिहास'के प्रकाशनसे आगामी साहित्य सेवकोंको सोचने-समझनेकी नयी दृष्टि दी । उनकी इस सेवाके पुरस्कार स्वरूप 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ' समर्पित किया गया है । जिसमें जैन साहित्य विषयक ज्ञातव्य सामग्री पुष्कल परिमाणमें है ।

सुप्रसिद्ध जैन साहित्यविद् डॉ० हीरालाल जैनकी साहित्यान्वेषक प्रज्ञाने कई अमूल्य ग्रन्थोंका उद्धार किया । उन्होंने कारंजाके जैन भाण्डारसे 'करकण्डचरिउ', 'सावयधम्म दोहा', 'पाहुड दोहा', आदि कई ग्रन्थोंको खोज निकाला और सम्पादित करके उन्हें प्रकाशित भी कराया । डॉ० जैनने और कई ग्रन्थोंके अन्वेषणसे जैन साहित्यके भाण्डारको समृद्ध किया है । यहाँ यह स्मरणीय है कि 'जैन सिद्धान्त भवन' आरासे प्रकाशित होनेवाले 'द जैन एण्टीक्वेरी'के सम्पादनसे डॉ० जैनने जैन साहित्य विषयक बहुत-सी दुर्लभ सामग्रीकी सूचनाएँ दीं और उनका विश्लेषण भी किया ।

प्राचीन साहित्यके नदीष्ण विद्वान् महापण्डित राहुल सांकृत्यायनके स्वयम्भू और पुष्पदन्त विषयक शोधोंका जैन साहित्यके प्रसारणमें अविस्मरणीय महत्त्व है । हिन्दी काव्यधारा (प्रथम संस्करण सन् १९५४) में उन्होंने स्वयम्भूकी अभ्यर्थना करते हुए यहाँ तक लिख दिया कि "हमारे इसी युगमें (सिद्ध सामन्त युग) नहीं बल्कि हिन्दी कविताके पाँचों युगों—सिद्ध सामन्तयुग, सूफ़ीयुग, भक्त-युग, दरबारी युग और नवजागरण युगके जितने भी कवियोंको हमने यहाँ संग्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीत किया, उनमें यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि 'स्वयम्भू सबसे बड़ा कवि था।' राहुलजीने स्वयम्भू कृत 'पउमचरिउ'के कतिपय अंशोंके अनुधावन करनेकी प्रवृत्ति 'मानस'में बतलायी, जिसको लेकर बड़ी चर्चा रही।

इस प्रकार अपभ्रंशके जैन साहित्यके भारतीय अन्वेषकोंमें श्री मुनि जिन-विजयजी, डॉ० आ० ने० उपाध्ये, डॉ० हीरालाल जैन, डॉ० पी० एल० वैद्य, पं० लालचन्द्र गान्धी, डॉ० भायाणी प्रभृति विद्वानोंने अनेक अपभ्रंश ग्रन्थोंके प्रकाशनसे इस धारणाको निर्मूल प्रमाणित कर दिया है कि अपभ्रंशका साहित्य बहुत कम है। इस सन्दर्भमें पाश्चात्य चिन्तकोंकी सेवाओंको नतशिर होकर स्वीकार करना होगा।

हिन्दीके विद्वानोंका ध्यान इधर जैन साहित्य (अपभ्रंश) के अध्ययनकी ओर भाषा और काव्य-रूपोंकी दृष्टिसे गया। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीने 'हिन्दी साहित्यकी भूमिका' (१९४०) और हिन्दी साहित्यका आदिकाल (१९५४) में इस सामग्रीसे हिन्दी साहित्यकी चिन्तनधाराके अजस्र प्रवाहको पहचाना और अनेक अनाविष्कृत तथ्योंकी ओर विद्वानोंका ध्यान आकृष्ट किया।

श्री हरिवंश कोछड़ने 'अपभ्रंश साहित्य' नामक शोध-प्रबन्धमें इस साहित्य-की धाराका विश्लेषण जिस पटुतासे किया, उससे जैन साहित्यकी विशिष्टता प्रत्यक्ष हो जाती है। वस्तुतः जिस साहित्यने स्वयम्भू, पुष्पदन्त और हेमचन्द्र-जैसे व्यक्तियोंको उत्पन्न किया, वह अपनी महत्ताकी स्वीकृतिके लिए परमुखा-पेक्षी नहीं हो सकता।

प्रेमीजीके बाद श्री बाबू कामताप्रसाद जैन और डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्रीने इस दिशामें उल्लेख्य कार्य किया है। श्री कामताप्रसाद जैनका 'हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास' ऐतिहासिक भूलोंके बावजूद अपना सामयिक महत्त्व रखता है। शास्त्रीजीने 'हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन'[२] (भाग-१,-२, १९५६) में तत्त्वाभिनिवेशी आलोचककी दृष्टिसे विवेचन किया है। वस्तुतः इस पुस्तकमें विवेच्य विषयको प्रबन्ध-काव्य, कथाकाव्य, रीति काव्य, ऐतिहासिक रीतिकाव्य, आध्यात्मिक-रूपक काव्य, आत्मकथा काव्य, और रीति साहित्य आदि विभिन्न शीर्षकोंमें विभक्त कर हिन्दीके कवियोंके साथ तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया

२. हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन, : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। अच्छा होता कि शास्त्रीजी-जैसे अधीती विद्वान् जैन साहित्यके प्रबन्ध काव्योंका और व्यापक परिवेशमें परीक्षण करते तो स्वयम्भू और मानसका भावसाम्य और उद्घाटित होता।

इधर सन् १९५८में प्रकाशित डॉ० शिवप्रसाद सिंहके शोध-प्रबन्ध 'सूरपूर्व ब्रजभाषा और साहित्य'[1] में जैन काव्योंकी मार्मिक छवियोंका उद्घाटन नवीन दृष्टिसे किया गया है। आजतक जैन काव्योंके सम्बन्धमें विद्वानोंकी यह धारणा थी कि उनमें स्थूल धर्माचार, स्तवन आराधना, विरागोपदेश आदिका ही विधान है। इसलिए न उसमें रस है न भाव और न जीवनका स्पन्दन। वस्तुतः जैन काव्योंके सरस स्थलोंको देखनेपर इस धारणाकी भित्ति ही धराशायी हो जाती है। इस स्थलपर 'हिन्दी काव्यधारा'की उन पंक्तियोंको उद्धृत करनेका लोभ संवरण नहीं किया जा सकता जिनमें स्वयम्भू रामायणमें पति-द्वारा मिथ्या लांछनोंसे प्रताड़ित सीताकी अद्भुत करुणा-दर्प मिश्रित मूर्ति अंकित है –

पुरिस णिहोण होंति गुणवंत वि
तियहे ण पक्कि जंति मरंति वि
खडु लक्कडु सलिल वहंतिहे पउराणियहे कुलग्गयहे।
रयणायरु खार इ देन्तउ तो वि ण थक्कइणं णईहे॥

"पुरुष गुणवान् होकर भी कितना हीन होता है। वह मरती हुई पत्नीका विश्वास नहीं करता। वह उस रत्नाकरकी तरह है जो नदियोंको केवल क्षार देता है। किन्तु उनसे छोड़ा नहीं जाता।

इस सीताको कौन भूल सकता है? रामके हाथों मुक्ति पानेवालोंका जब हमारे देशमें नाम भी नहीं रह जायेगा; तब भी तुलसीकी क़द्र होगी। स्वयम्भूके जैन धर्मका अस्तित्व भी न रहनेपर वह नास्तिक भारतका महान् कवि होगा। उसकी वाणीमें वह शक्ति बनी रहेगी कि कभी अपने पाठकोंको उत्फुल्ल कर दे और कहीं आँखोंको भीजनेके लिए मजबूर कर दे।"[2]

जैन कवियोंने जन-जीवनकी मार्मिक छवियाँ उतारी हैं। शृंगार और प्रेम भावनाकी (हिन्दी काव्यधारा-५-५४) रूपासक्ति दिखाई है। व्यंग-विनोद तथा नीति वचन भी कह गये हैं। इस प्रकार जैन काव्यमें केवल धर्मोपदेश

---

१. सूरपूर्व ब्रजभाषा और साहित्य : डॉ० शिवप्रसाद सिंह।
२. हिन्दी काव्यधारा – पृ० ५४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। केवल निर्ग्रन्थ आचरणका सन्देश नहीं है। वहाँ काव्य भी है। और मर्मको छू देनेवाली पीड़ा भी है। इस सम्बन्धमें डॉ० शिवप्रसाद सिंहका उक्त शोध-प्रबन्ध द्रष्टव्य है।

सन् १९६३में प्रकाशित डॉ० प्रेमसागर जैनकी आलोचनात्मक कृति 'जैन भक्ति काव्यकी पृष्ठभूमि'[1] को चर्चा प्रसंगतः अपेक्षित है। डॉ० जैनने इस गवेषणापूर्ण ग्रन्थमें शास्त्र, पुरातत्त्व, और लोकस्थिति परम्पराके आधारपर अत्यन्त व्यापक दृष्टिसे जैन धर्मके भक्तितत्त्व और भक्तिचर्यापर विचार किया है। इसमें जैन धर्म ज्ञानप्रधान है भक्तिका उसमें सम्बन्ध नहीं, इस बद्धमूल धारणा-का खण्डन किया गया है। और आचार्य कुन्दकुन्द समन्तभद्र आदिकी 'जिनेन्द्र भक्ति'का प्रतिपादन किया गया है। डॉ० जैनकी दृष्टिमें जैन भक्तिके पूजा विधान, स्तुति स्तोत्र, संस्तव स्तव और स्तवन, वन्दना विनय मंगल महोत्सव आदि अंश हैं। और जैन भक्तिके सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चरित्र भक्ति, योगि-भक्ति, आचार्यभक्ति, पंचपरमेष्ठिभक्ति, तीर्थंकर भक्ति, शान्ति भक्ति, समाधि-भक्ति, निर्वाण भक्ति, नन्दीश्वरभक्ति और चैत्यभक्ति आदि भेद हैं।

जैन भक्तिमें कई देवियाँ – देवी पद्मावती, देवी अम्बिका, देवी चक्रेश्वरी, देवी ज्वालामालिनी, सच्चियामाता, देवी सरस्वती, और देवी कुरुकुल्ला आदि हैं। इस प्रकार विस्तृत विश्लेषण कर लेखकने पाठकोंको ही सोचनेके लिए छोड़ दिया है कि "जैन धर्म ज्ञानप्रधान है। उसमें भक्तिको स्थान नहीं" क्या यह सत्य है। इस महत्त्वपूर्ण स्थापनाके लिए डॉ० जैनका यह ग्रन्थ भविष्यान्वेषकोंके लिए पथप्रदर्शकका कार्य करेगा।

अतः अपभ्रंश साहित्यके अन्वेषण और विश्लेषणका सिंहावलोकन करनेपर कई तथ्य सामने आते हैं। एक तो यह कि यह साहित्य हिन्दीकी पृष्ठभूमि ही नहीं है बल्कि कतिपय प्रवृत्तियोंका आरम्भ बिन्दु है। इस साहित्यके प्रकाशमें आनेपर हिन्दी साहित्यकी बहुत-सी मान्यताएँ खण्डित हो गयीं।

दूसरा यह कि इसमें केवल विरागोपदेश ही नहीं रागकी झंकृति भी है। मर्मको छूनेवाली भाव लहरियाँ भी हैं। और है शृंगारकी संयमित

---

१. हिन्दी जैन भक्ति काव्य और कवि, तथा जैन भक्ति काव्यकी पृष्ठभूमि : डॉ० प्रेमसागर जैन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिव्यक्ति। अब सामान्य भाव सत्तात्मक होनेके लिए चाहिए क्या ?

जैन साहित्य विपुल है। अभी जैन ग्रन्थागारोंको अनुसन्धायकोंके परिश्रम एवं अध्यवसायकी अपेक्षा है। अभी इसमें शोधका विस्तृत क्षेत्र है। मुझे स्मरण है कि आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदीने डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्रीसे कहा था कि कि संस्कृतको रस-सिद्धान्त परम्पराके बाद हेमचन्द्रने भी कोई सिद्धान्त प्रतिपादित किया होगा। इसपर यदि आप कार्य करें तो एक त्रुटित परम्पराका सन्धान हो जाये। इस प्रकार जैन साहित्यमें चरित-काव्योंकी जो एक महती परम्परा है और जो विपुल कथासाहित्य है उसपर भी विचार-विमर्श हो तो अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हस्तगत हो सकती हैं।

■

सृजनात्मक साहित्यकी
एक महत्त्वपूर्ण घोषणा

● फणीश्वरनाथ 'रेणु'

उपन्यास : **भित्तिचित्रकी मयूरी**

कहानी : **'रेणु' की दस कहानियाँ**

एक और महत्त्वपूर्ण कृतिकी घोषणा मार्चके अन्तमें —

प्रकाशक हैं —

साथी प्रकाशन

सागर, म० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-द्वारा प्रकाशित

१९६४–६५ के उत्कृष्ट प्रकाशन

१. राज-भाषा हिन्दी	सेठ गोविन्ददास	२.००
२. हिन्दी आन्दोलन	सं० लक्ष्मीकान्त वर्मा	४.५०
३. स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दीके संघर्षका इतिहास	श्री रामगोपाल	६.००
४. दक्खिनी हिन्दीका उद्भव और विकास	डॉ० श्रीराम शर्मा	१२.००
५. आधुनिक हिन्दी कवितामें गीतितत्त्व	डॉ० सच्चिदानन्द तिवारी	९.००
६. गढ़वाली लोक-साहित्यका विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ० मोहनलाल बाबुलकर	८.००
७. कबीर और कबीर पन्थ	डॉ० केदारनाथ द्विवेदी	१२.००
८. प्रागन कृत भँवरगीत	सं० श्री हरिमोहन मालवीय	१.५०
९. बालचन्द बत्तीसी	सं० श्री हरिमोहन मालवीय	१.५०
१०. रसख़ान रत्नावली	डॉ० भवानीशंकर याज्ञिक	५.००
११. कुतुबन कृत मृगावती	सं० डॉ० शिवगोपाल मिश्र	६.००
१२. ब्रजभाषा रीतिशास्त्र ग्रन्थ-कोश	श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी	६.५०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंकी प्रतिक्रिया

लेखन-प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी इकाई अधूरी रहेगी जबतक पारखी पाठककी प्रतिक्रिया प्रकाशकके पास होती लेखककी मेज़ तक न पहुँचे

• एक साहित्यिककी डायरी

गजानन माधव मुक्तिबोध

हिन्दी साहित्य-चिन्तनके क्षेत्रमें श्री गजानन माधव मुक्तिबोधकी (जिन्हें इतनी जल्दी स्वर्गीय कहकर संकेतित करनेका दुर्योग आ गया) 'डायरी' का एक विशिष्ट स्थान है। उसका लेखक एक साथ ही सहृदय मनुष्य, कवि और विचारक है। इतनी विशेषताओंका एक साथ, एक बिन्दुपर इकट्ठा होना एक दुर्लभ सम्भावना है। एक दूसरी दृष्टिसे भी मुक्तिबोधका साहित्यिक व्यक्तित्व महत्त्वपूर्ण था; वे अपनी सहानुभूतियोंसे प्रगतिवादी थे, अर्थात् जन-कल्याणकी लगन रखनेवाले; साथ ही वे एक मौलिक चिन्तक थे। हिन्दीमें इन दो चीज़ोंका सम्मिश्रण बहुत कम देखनेको मिलता है। प्रायः दलबद्ध आलोचक स्वतन्त्र, सशक्त निजी दृष्टिका विकास नहीं कर पाते।

तो, 'डायरी' का आकर्षण दोहरा है। वहाँ जगह-जगह हम मौलिक सूझ-बूझ के साथ-साथ सहृदय मानवताका भी साक्षात्कार करते हैं। हिन्दीमें प्रगतिवादने इस बात पर कुछ ज़्यादा ज़ोर दिया था कि लेखकको जन-कल्याणकी साधना करनी चाहिए; इसके विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया घोर व्यक्तिवादकी दूसरी अति तक पहुँच गयी है। आजके लेखकका इसमें बिलकुल ही विश्वास नहीं है कि श्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकी सृष्टिके लिए उसे किसी तरहकी मानवीयता अथवा नैतिक चेतनासे आवश्यक रूपमें सम्पन्न होना चाहिए। इसके विपरीत आजके लेखक प्रायः यह प्रकट करनेमें गौरव महसूस करते हैं कि वे सब प्रकारकी भावुकतासे ही नहीं, नैतिक चेतनासे भी एकदम मुक्त व अछूते हैं। ऐसे वातावरणमें निश्चय ही मुक्तिबोधकी 'डायरी' का अनुशीलन हमारे यहाँ समीक्षात्मक सन्तुलन लानेमें सहायक हो सकता है।

'डायरी' के शुरूमें जो मित्र केशवका रेखाचित्र है उसने मुझे ज्यादा आकृष्ट नहीं किया। किन्तु कुछ पृष्ठोंके बाद शुरू हो जानेवाले मुक्तिबोधके चिन्तनने मुझे बरबस अपने आकर्षणके वृत्तमें खींच लिया : मैं चाहता हूँ कि साहित्य-सम्बन्धी धारणाएँ वास्तविक साहित्यके विश्लेषणके आधारपर बनायी जायें। जिस प्रकार विज्ञानमें इण्डक्शनसे डिडक्शन पर आया जाता है....इण्डक्शनका क्षेत्र केवल हिन्दी साहित्य तक ही सीमित क्यों रहे ? उपन्यास क्या है, यह पढ़ाते समय हम विश्व-के प्रमुख उपन्यासोंके अध्ययनके उपरान्त ही यह ठहरायें कि उपन्यास किसे कहते हैं और उसका शिल्प क्या है अथवा उसके प्रधान अंग क्या होते हैं।' (पृष्ठ १३) आगे काव्य-सृष्टिकी प्रक्रियाका सटीक विश्लेषण है – हिन्दीके समीक्षा-साहित्यमें अपने ढंगका अनूठा। भाषा समर्थ और प्राञ्जल। कलाका पहला क्षण है जीवनका उत्कट तीव्र अनुभव-क्षण। दूसरा क्षण है इस अनुभवका अपने कसकते-दुखते हुए मूलोंसे पृथक् हो जाना और एक ऐसी फैण्टेसीका रूप धारण कर लेना मानो वह फैण्टेसी अपनी आँखोंके सामने ही खड़ी हो। तीसरा और अन्तिम क्षण है इस फैण्टेसीके शब्दबद्ध होनेकी प्रतिक्रियाका आरम्भ और उस प्रक्रियाकी परिपूर्णावस्था तककी गतिमानता। (पृष्ठ १) फैण्टेसीकी प्रधान पीड़ा अपना समर्थन, संरक्षण और पोषण करनेवाले अन्य अनेक जीवनानुभवोंके तत्त्वोंको समेटने लगती है।" और "मूल फैण्टेसीका मर्म जो सिकुड़ा हुआ एक दर्द था, अब फैलकर एक पर्सपेक्टिवका रूप धारण करने लगता है।" (पृष्ठ २४) मेरी सम्मतिमें काव्य-साहित्यकी रचना प्रक्रियाका विश्लेषण करनेवाला यह अंश 'डायरी'का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। और आगे यह शिकायत की गयी है कि कुछ नये कवि जनतासे घृणा करते हैं। वहीं श्रमके 'महान् आध्यात्मिक मूल्य' का उल्लेख है। और उसके बाद 'सच्चा लेखक अपने खुदका दुश्मन होता है' आलोचक "जितना ऊँचा उत्तरदायित्व सिर पर ले लेता है, अपनेको उतना ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् अनुभव करता है। और सच्चा लेखक जितनी बड़ी जिम्मेवारी अपने सिर पर ले लेता है, स्वयंको उतना अधिक तुच्छ अनुभव करता है।" वह "अपने स्वयंके साक्षात्कार-सामर्थ्यकी तुलना उस वस्तु-सत्यकी विशालतासे करता है।" (पृष्ठ ४७-४८)। मेरा विश्वास है कि ये वक्तव्य आजके उस लेखकवर्गके लिए जो अपनेको आसानीसे कृत्यकृत्य मान लेता है, (अकसर सिर्फ़ इसलिए कि उनमें से प्रत्येक एक प्रचलित, प्रचारित नारे या दलके साथ है।) विशेष सार्थकता रखते हैं।

— डॉ० देवराज

• भारतीय इतिहास : एक दृष्टि

डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

भारतके इतिहासपर विदेशी और भारतीय अनेक विद्वानोंने बहुत-कुछ लिखा है, खोज-बीन की है और अपने-अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं। इतिहास लेखनकी दृष्टि असलमें भारतमें विदेशी विद्वानोंने ही विकसित की है। अँग्रेज़ोंकी सत्तासे प्रभावित होकर गौरांग प्रभुओंकी दृष्टि और इच्छाके अनुरूप जो इतिहास लिखे गये वे एक प्रकारसे ऐसे इतिहास-ग्रन्थ थे जो अँग्रेज़ी साम्राज्यकी महानताके प्रचारक थे और उन्हें सचमुच सफलता मिली। यह समझा देनेकी कि भारत सदासे परमुखापेक्षी, गुलाम, हतवीर्य, स्वार्थी, लड़ाई-पसन्द, विलासी और अशिक्षित रहा है – उसमें इतनी योग्यता ही नहीं कि वह स्वतन्त्र रह सके, सदा बाहरी शक्तियोंने उसपर शासन किया है। अनेक दशकों तक तो भारतीय इतिहासकार भी उसी लीकपर चलनेमें अपनी प्रतिष्ठाको सुरक्षित समझते रहे। शुद्ध इतिहास-लेखनकी शक्ति और पुरुषार्थ तो अब जाग रहा है। इस प्रकारकी परिस्थितिमें भी कुछ इतिहासकार भारतमें ऐसे हुए हैं, जिन्होंने इतिहासको एक वैज्ञानिक तटस्थतासे देखा-परखा है और उसकी अनेक अनजानी, अनचीन्हीं परतोंको खोल-कर रखा है। उनके अन्वेषण, शोध-खोजका एक भिन्न ही परिणाम निकला और यह बात सामने आयी कि भारतके गर्भमें विश्व-संस्कृतिकी वे शिलाएँ विद्यमान हैं जिनसे सारा जगत् अनुप्राणित है। सत्ताओंके इशारे पर लिखे गये इतिहासोंने उन शिराओं अथवा स्रोतोंको दबाने और कुचलकर मिटानेका ही प्रयत्न किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास अपने आपमें एक विज्ञान है और इसका सृजन कल्पनाओं – धारणाओंसे हो ही नहीं सकता। तटस्थ शोध-खोज और अनेक सूत्रोंसे एक-दूसरे-का मेल, तारतम्य बैठाना ही इतिहासकारका काम होता है। इतिहासकारका आसन वैज्ञानिकका आसन होता है और उसकी दृष्टि साफ़-सुथरी और पैनी होनी चाहिए।

डॉ० ज्योतिप्रसाद जैनका प्रस्तुत ग्रन्थ सम्पूर्ण भारतका ब्यौरेवार इतिवृत्त तो नहीं है, किन्तु इसमें कुछ ऐसी सामग्रीकी ओर इंगित है जिसकी ओर अब तक के इतिहास-वेत्ताओंका ध्यान तक नहीं गया था। प्रकाशककी ओरसे ठीक ही कहा गया है कि "इतिहासकी यह एक नयी लीक है, नयी दृष्टि है। भारतवर्षके समूचे इतिहास, विशेषकर उसके अतीतकाल और मध्यकालको यदि सही और सन्तुलित परिप्रेक्ष्यमें देखना है तो इतिहासकी इस दृष्टिको भविष्यके इतिहास लेखनमें समाविष्ट करना ही होगा।

इतिहासका क्षेत्र इतना विस्तृत, व्यापक और समयकी अनन्ततासे परिव्याप्त है कि कोई भी इतिहासकार उसमें पूरी तरह उतर नहीं सकता, न कोई ऐसा दावा कर सकता है। भूगर्भीय सामग्री, खण्डहर, साहित्य, परम्पराएँ, भाषाएँ, वेश-परिधान, नदी-पर्वत, जीवन-धर्म, व्यवहार, दर्शन आदि इतनी कुछ चीज़ें बिखरी होती हैं कि कोई कहाँ तक देख सकता है। सहस्रों वर्षोंकी परतोंके नीचे दबे मिट्टीके एक औज़ार या कटोरीमें युग-युगोंकी संस्कृतिका, परम्पराओंका जीवन सुप्त रहता है और उसे उघाड़ता है इतिहासकार। सैकड़ों वर्षोंके अथक और सुगठित, सामूहिक प्रयासोंके बाद भी बहुत कुछ अछूता रह जाता है। डॉ० जैनने अपने इतिहासमें सचमुच इसीको छूने, उघाड़ने, परखनेकी एक दृष्टि दी है जो अब तक किसीके द्वारा अपनायी नहीं गयी थी। जैन ऐतिहासिक आधारोंका इस पुस्तकमें पर्याप्त उपयोग किया गया है। लेकिन उन्होंने यह भी कह दिया है कि इनका उपयोग उसी सीमा तक किया गया है जहाँ तक वे अन्य प्रामाणिक आधारोंसे समर्थित होते हैं या वे सबल और विश्वसनीय प्रतीत हुए।

जैन पुराण-ग्रन्थोंमें मानव-जगत्की जो विकास-कथा, मानव-प्राणीके उद्भव और विकासका जो क्रम वर्णित है, उन तीर्थंकरों, चक्रवर्तियों, कामदेवों, आदि 'शलाका'पुरुषोंका काल-निर्देशके अनुसार वर्णन है, उनकी अन्य साक्षियोंसे तुलना करके, सामंजस्य बैठाकर इतिहासको व्यवस्थित रूप देनेकी जो प्रक्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० जैनने अपनायी है वह सचमुच बड़ी श्रमसाध्य है। इस दृष्टिके कारण भारत-के इतिहासकी एक नयी धारा, एक नयी परम्पराका दर्शन हुआ है। जैन धर्म और जैन संस्कृति इधर ढाई-तीन हज़ार वर्ष पूर्वकी ही मानी जाती है और प्रायः इतिहासकार अधिकसे अधिक पार्श्वनाथ तक ही पहुँच पाते हैं। लेकिन, जैसा कि डॉ० जैनने अनेक प्रमाणोंसे सिद्ध किया है, जैन संस्कृतिके बीज भारतीय वातावरणमें सुदूर अतीत तक पहुँचे हुए मिले हैं, जिनका उन्होंने आदि-कालसे लेकर वैदिक संस्कृतिके चरमोत्कर्ष तकके कालसे सम्बन्ध सिद्ध किया है।

भारतीयता अपने आपमें समृद्ध, समुन्नत और सबल थी, यह तथ्य भी इस ग्रन्थसे सामने आ जाता है। बाहरसे आनेवाली शक्तियोंने यहाँसे बहुत कुछ सीखा है, ग्रहण किया है और अपनेको यहाँकी परम्पराओंमें विलीन कर दिया है। डॉ० जैन लिखते हैं : "·····इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि भारतवर्षमें मानवने पृथ्वी तलके अन्य समस्त प्रदेशोंकी अपेक्षा, उस कालमें भी (धातु पाषाण युगमें) कहीं अधिक द्रुतवेगसे प्रगति की थी और सभ्य मानवकी संस्कृति और सभ्यताका भी सर्वप्रथम यहीं उदय हुआ था और इस प्रगति एवं विकासका सर्वप्रथम केन्द्र उत्तर भारतका प्राचीन मध्य देश ही था। ·····जबसे भूतल पर मानवके अस्तित्वके चिह्न मिलते हैं, तबसे लेकर पाषाण कालके अन्त तक प्रायः सम्पूर्णतया प्रकृत्याश्रित भोग भूमिकी अवस्था बनी रही।"

सिन्धु-घाटी सभ्यताके सम्बन्धमें तृतीय जैन तीर्थंकर सम्भवनाथके युगसे संगति बैठाते हुए डॉ० जैनने निष्कर्ष निकाला है कि "सम्भवनाथका विशिष्ट लांछन अश्व है और सिन्धु देश चिरकाल तक अपने सैन्धव अश्वोंके लिए प्रख्यात रहा है। मौर्यकाल तक सिन्धुमें एक सम्भूत्तर जनपद और साम्भव (सम्बूज) जातिके लोग विद्यमान थे जो बहुत सम्भव है कि सिन्धु-सभ्यताके मूल प्रवर्तकों एवं तीर्थंकर सम्भवनाथके मूल अनुयायियोंकी ही वंश-परम्परामें हों। यह सभ्यता अवैदिक एवं अनार्य ही नहीं, वरन् प्राग्वैदिक थी तथा इसके पुरस्कर्ता ऋषभ प्रणीत योगधर्मके अनुयायी और श्रमण संस्कृतिके उपासक प्राचीन विद्याधर अर्थात् भारतीय द्रविड़ जातिके पूर्वज थे, ऐसा प्रतीत होता है।"

डॉ० जैनने भारतकी अनेक परम्पराओंका अध्ययन अपनी विशिष्ट दृष्टिसे करके जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं, वे कहीं-कहीं अतिरंजित, एकांगी अथवा व्यक्तिगत भी प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु वे ऐसे नहीं हैं कि उनकी एकाएक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपेक्षा की जा सके। भविष्यका इतिहास-लेखक इन आधारोंको, निष्कर्षोंको, त्याग कर बिलकुल आगे नहीं बढ़ सकेगा, यह निश्चित है। वैदिक संस्कृतिके उद्भव, विकास, प्रगति एवं चरमोत्कर्षकी चरचा करते हुए डॉ० जैनने बताया है कि जब श्रमण और वैदिक संस्कृतियोंका विरोध चरम सीमा तक पहुँच गया तब अयोध्यापति रामचन्द्रने दोनों संस्कृतियोंके समन्वयका भगीरथ प्रयत्न किया।

—जमनालाल जैन

प्रपत्र : चार

(नियम ८ के अन्तर्गत)

१.	प्रकाशन-स्थल	: भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी – ५
२.	प्रकाशन-आवृत्ति	: मासिक
३.	मुद्रक का नाम	: बाबूलाल जैन फागुल्ल
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी – ५
४.	प्रकाशक का नाम	: बाबूलाल जैन फागुल्ल
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी – ५
५.	सम्पादक का नाम	: लक्ष्मीचन्द्र जैन और जगदीश
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: ९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता – २७
६.	स्वत्वाधिकारी	: भारतीय ज्ञानपीठ, ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता – २७

मैं, बाबूलाल जैन फागुल्ल, घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये विवरण मेरी जानकारी और विश्वासके अनुसार सही हैं।

दिनांक : २५ फरवरी, १९६५

बाबूलाल जैन फागुल्ल
(हस्ताक्षर), प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समवर्ती प्रकाशन
रेखाछवियाँ

विज्ञापन, समीक्षा और रेखाछवि-अंकन : तीनोंका
प्रकाशनमें अपना-अपना स्थान और उपयोग रहता है,
एककी भी टालना पुस्तकको उस दृष्टि-क्षेत्रसे
वंचित कर देना होगा।

● हिन्दी भक्तिरसामृत सिन्धु : भाष्यकार – आचार्य विश्वेश्वर, सिद्धान्त शिरोमणि; सम्पादक : डॉ० नगेन्द्र, डॉ० विजयेन्द्र स्नातक। प्रकाशक – हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, मूल्य २५) रुपये।

वैष्णव साधकों और भक्ति सम्प्रदायमें प्रस्तुत ग्रन्थका बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। ग्रन्थकार श्री रूप गोस्वामी महाप्रभु चैतन्यके शिष्य थे। सम्पादक महोदयोंने प्रस्तुत ग्रन्थकी टीका और भूमिकाको दार्शनिकता और पृष्ठभूमिसे भिन्न, काव्यशास्त्रीय अर्थवत्ता प्रदान करनेकी कोशिश की है। भक्तिकी इस भूमिकामें भिन्न स्थान देनेका प्रयास बहुत दिनोंसे चलता रहा है और यह भी उसकी एक शृंखला है। सम्पादन और प्रस्तुतिमें एक प्रकारकी मौलिकता और विस्तार है, और भी इस सामान्य परिचय-विस्तारसे ऊपर विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक व्याख्याकी कोटिमें इसे नहीं पहुँचाया। यह पुरानी व्याख्याका नवभाषीकरण है, आधुनिक भाष्य नहीं। ग्रन्थ विचारणीय और संग्रहणीय है।

बच्चन : व्यक्ति और कवि। सम्पादक – बाँकेविहारी भटनागर। प्रकाशक – नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली। मूल्य – तीन रुपये।

हिन्दीके युवामन कवियोंमें 'बच्चन' का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज कविताकी बदली दिशाने 'बच्चन' और उनके समानधर्मा जीवित कवियोंको 'आँख ओट पहाड़ ओट' की स्थितिमें ला दिया है। किन्तु एक सचाई है जिससे हम इनकार नहीं कर सकते – वह यह कि गीतके कवितासे अलग अस्तित्व-स्रष्टा-कवियोंमें इनका स्थान कालजयी है : पूर्वके पृष्ठोंमें पन्तजी, नरेन्द्र शर्मा, बच्चन (स्वयं) और भगवतीचरण वर्माने कविके जीवनके विभिन्न पक्षोंपर अत्यन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकटता और सचाईके साथ अपने विचार व्यक्त किये हैं। रचनाओंमें 'कविकी वासना', 'मधुशाला' आदि रचनाएँ आयी हैं, परन्तु 'लहरोंका नियन्त्रण' और 'मिलन यामिनी' आदि जैसी रचनाएँ भी दे दी जातीं तो अच्छा था जिनके कारण लोगोंके हृदयमें बच्चन 'लिख' गये हैं। सम्पादकके अनुसार ये रचनाएँ स्वयं कविकी दृष्टिमें सुन्दरतम हैं, परन्तु सर्जक और ग्राहककी दृष्टियोंका भेद तो भुलाया नहीं जा सकता।

● **कांचन रंग** : लेखक – शम्भु मित्र, अमित मैत्र; अनुवादक – नेमिचन्द्र जैन। प्रकाशक – नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली। मूल्य – तीन रुपये।

प्रस्तुत नाटक शम्भु मित्रके प्रमुख नाटकोंमें है। वे बंगला रंगमंचके प्रमुख अभिनेता और निर्देशक भी हैं। नाटकके प्रतिपाद्य और प्रस्तुतिमें लेखक, अभिनेता और निर्देशककी समृद्ध क्षमताका उचित प्रदर्शन होता है। हिन्दीमें इस तरहके नाटकोंका अभाव नहीं। अनुवादकने अनुवादमें पूरी संगति और सफलताका निर्वाह किया है।

■

गृह-विज्ञान विषयकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

● **मातृत्व और बाल संगोपन** : डॉ० मालती श्रीखण्डे
(उन्हें, जिनके हाथोंमें पालनेकी डोरी पहुँचनेको है।)

● **परिवार और अर्थ-व्यवस्था** : डॉ० मालती श्रीखण्डे
(उन्हें, जो अब एक परिवार हैं।)

● **शरीर-विज्ञानकी रूप-रेखा** : डॉ० मालती श्रीखण्डे
(उन्हें, जो अपनी शरीर-रचना और उसके क्रिया-कलापोंको जानना चाहते हैं।)

साथी प्रकाशन
सागर, म० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनेवाली हिन्दी पुस्तकें

जिनका परिचय अक्षर-जगत्के लिए
उपयोगी और आवश्यक है

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

हिन्दी विश्वकोश : चतुर्थ खण्ड, मधुमालती वार्ता : सम्पा–डॉ० माता-प्रसाद गुप्त, शोध ग्रन्थ। हिन्दी साहित्यका बृहत् इतिहास (भाग दो) : सम्पा०—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, भाषा-विज्ञान खण्ड। हिन्दी साहित्यका बृहत् इतिहास (भाग दस) : सम्पा०—डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, आलोचना खण्ड।

राजपाल ऐण्ड सन्ज़, दिल्ली–६

पूर्वा : अज्ञेयकी चुनी हुई कविताओंका संग्रह। मानव दानव : मन्मथनाथ गुप्त, उपन्यास। आधे घण्टेका ख़ुदा : कृश्नचन्दर, कहानी-संग्रह। पुस्तककी कहानी : एम० एलिन, ज्ञान-विज्ञान।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, दिल्ली–३२

बुधुआकी बेटी : उग्र, उपन्यास। नागमणि : अमृता प्रीतम, उपन्यास। वसुन्धरा : शैलेश मटियानी, उपन्यास। विप्रदास : शरत्चन्द्र, उपन्यास। पाकिस्तानका सफ़र : बलराज साहनी, यात्रा-संस्मरण। सोमनाथ : आचार्य चतुरसेन, उपन्यास। वीरबल ज़िन्दा है : जी० पी० श्रीवास्तव, हास्य-व्यंग्य। प्रेम और हत्याके रहस्यमय मुक़दमे : सम्पा०—प्रकाश पण्डित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैवेद्य निकेतन, वाराणसी – ५

कुटज : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, द्विवेदीजीके ललित निबन्धोंका संग्रह। कालिदासका लालित्य-विधान : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कालिदास-की सौन्दर्यानुभूतिका परिदर्शन और विवेचन।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – १

चौदह फेरे : शिवानी, उपन्यास। लाल हवेली : शिवानी, पन्द्रह कहानियों-का संकलन।

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली

निरालाकी काव्य-साधना : सुश्री वीणा शर्मा, शोध-प्रबन्ध। हिन्दी साहित्य-की आलोचना : प्रो० भारतभूषण 'सरोज', आलोचना। भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषाका इतिहास : प्रो० भारतभूषण 'सरोज', आलोचना।

साहित्य सदन, देहरादून

प्रतिनिधि एकांकीकार : डॉ० रामचरण महेन्द्र, समीक्षा-ग्रन्थ। आधुनिक हिन्दी काव्यमें प्रतीक-विधान : डॉ० नित्यानन्द शर्मा, शोध-प्रबन्ध। सीमा-संरक्षण : हरिकृष्ण 'प्रेमी', ऐतिहासिक नाटक। हिन्दीके गद्य-निर्माता : सोमती प्रसाद एम० ए०, समीक्षा-ग्रन्थ।

अशोक प्रकाशन, दिल्ली – ६

हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास : डॉ० सुरेश सिन्हा, समीक्षा-ग्रन्थ। पाश्चात्य काव्यशास्त्रके सिद्धान्त : डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त, पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तोंका विवेचन।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – ३

जायसी ग्रन्थावली (सटीक) : राजनाथ शर्मा, 'पद्मावत' टीका सहित तथा जायसीकी अन्य रचनाएँ मूल रूपमें, आलोचनाके साथ। आधुनिक हिन्दी साहित्य : डॉ० रामगोपाल सिंह चौहान, शोध-प्रबन्ध, '४७ से '६२ तकके साहित्यका अध्ययन। आलवार भक्तोंका तमिल प्रबन्धम् और हिन्दी कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य : डॉ० मलिक मोहम्मद, शोध-प्रबन्ध । **निरालाका साहित्य और साधना** : डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, समीक्षा-ग्रन्थ ।

भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली – ६

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ सूची : सम्पा० – यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन, हिन्दी में प्रकाशित लगभग २४,००० पुस्तकों का परिमार्जित विवरण ।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

चाँद का मुँह टेढ़ा है : स्व० गजानन माधव मुक्तिबोध, स्व० मुक्तिबोधके कविता-संग्रहका दूसरा संस्करण । **पीले गुलाबकी आत्मा** : विश्वम्भर 'मानव', बहुपठित और प्रशंसित उपन्यासका दूसरा संस्करण । **गुनाहोंका देवता** : डॉ० धर्मवीर भारती, हिन्दीके एक बहुचर्चित उपन्यासका आठवाँ संस्करण । **अध्यात्म-पदावली** : डॉ० राजकुमार जैन, तीसरा संस्करण । **भाव और अनुभाव** : मुनि श्रीनथमल, द्वितीय संस्करण ।

■

भारत-भरसे प्रकाशित

सम्पूर्ण लायब्रेरी-साहित्य

एक ही स्थानसे प्राप्त करनेके लिए

पधारें अथवा लिखें

स्टार बुक सेण्टर

(मोती महलके पीछे)

२७१५, दरियागंज दिल्ली–६

फ़ोन नं० २७३५८७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नए प्रकाशन

• **पूर्वा** (कविता संग्रह) : अज्ञेय ६.००

हिन्दीके सुप्रसिद्ध कवि अज्ञेय-द्वारा पूरे पच्चीस वर्षोंमें रचित उत्कृष्ट कविताओंका अपूर्व संकलन ।

• **मानव दानव** (उपन्यास) : मन्मथनाथ गुप्त ६.५०

भारतके स्वतन्त्रता संग्रामपर आधारित प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक मन्मथनाथ गुप्तका नवीन एवं सशक्त उपन्यास ।

• **आधे घण्टेका खुदा** (कहानी संग्रह) : कृश्नचन्दर ३.००

धर्म, समाज और राजनीतिके खरे-खोटे तथ्यों सहित कलाकी कसौटीपर निखरी कृश्नचन्दरकी नवीनतम ग्यारह कहानियाँ ।

• **पुस्तककी कहानी** (ज्ञान-विज्ञान) : एम० इलिन २.००

ज्ञान-विज्ञान पुस्तकमालाकी नयी कड़ी । पुस्तक अनेकों चित्रोंसे सुसज्जित है ।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ
ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा
एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी
गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत-कुछ सकीं

• साहित्यिक

प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी – दो : प्रो० ना० सी० फड़के

प्रस्तुत रचना-संग्रह भी एक फूलडाली है। अनेक फूल, और एक ही डाली पर कई रंगके। रचनाओंकी यह विधा-विविधता संग्रहको एक अतिरिक्त आकर्षण और मूल्य दे देती है। पर इस फूलडालीकी सारी विशेषता इसमें नहीं कि एक समर्थ साहित्यकारकी प्रतिनिधि रचनाएँ सामने आयीं, विशेषता इसमें है कि अन्यान्य फूलडालियों-भरे आँगनमें इसका झुकना-झूमना संकेत बन जाता है कि कैसी-कैसी गन्धके फूल किधर लगे हैं।

ये रचनाएँ एक और दृष्टिसे भी महत्त्वकी हैं। नया भाव-बोध और शिल्प इन्हें साहित्यके विकास-क्रममें एक स्थान देनेको बाध्य होगा और जो परम्परानिष्ठ हैं उन्हें इनकी मोहकता आगेको प्रेरित और प्रोत्साहित करेगी। प्रस्तुत हैं एक ही स्थानपर संगृहीत लेखककी स्वसंकलित चौदह प्रतिनिधि रचनाएँ : चार कहानियाँ, एक उपन्यास-अंश, एक एकांकिका, तीन ललित निबन्ध, एक शब्द-चित्र, दो यात्रा-वर्णन तथा दो वैचारिक निबन्ध (प्रबन्ध)।

मूल्य : चार रुपये पचास पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साहित्यिक की डायरी : मुक्तिबोध

मुक्तिबोधजीके ललित-वैचारिक निबन्धोंका दूसरा परिवर्द्धित संस्करण। तीन नये निबन्ध संकलित। अपने प्रकारकी सर्वप्रथम डायरी रचना जिसके सब दस प्रकरणोंमें-से कोई नहीं जो एक आहत आत्माकी पीड़ाके डोरेमें पिरोया हुआ न हो और जिसके स्वरोंमें फिर भी विजितका करुण-भाव न होकर चुनौती स्वीकार करनेवाले शूर सैनिकका ओज न हो।

मूल्य : दो रुपये पचास पैसे

चौंसठ कविताएँ : इन्दु जैन

प्रस्तुत संकलनमें एक भी कविता ऐसी नहीं जो सुधी और संवेदनशील पाठकोंको छुए नहीं, और उसे भीतर तक डूबनेको विवश न करे। अपने प्रकार-की अकेली और नयी कविताएँ हैं ये। मूल्य : तीन रुपये

दर्शन अनुचिन्तन : म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

चुने-चुने चौदह निबन्धोंका यह एक सुसम्बद्ध संकलन है जो भारतीय दर्शनों-के समूचे स्वरूप और प्रमुख सिद्धान्तोंका सुन्दर परिचय देता है। और ऐसी सरल सुबोध भाषामें सारा विचार-विवरण उपस्थित करता है कि सामान्य जन इसे अपने ही लिए लिखा गया मानें और सुधी विशेषज्ञ देखें कि सब कुछ ज्ञातव्य भी और नया चिन्तन भी सुबोध ढंगसे कैसे लिखा जा सकता है।

मूल्य : तीन रुपये

चाँद का मुँह टेढ़ा है : गजानन माधव मुक्तिबोध

मुक्तिबोधजीकी कविताओंका प्रस्तुत संग्रह हिन्दी काव्यकी नयी प्रखरता, क्षमता और युगबोधकी सचेष्टताका ही प्रयोग नहीं, नयी उपलब्धियोंका भी मानक है। ये कविताएँ इसलिए भी हैं कि इन सशक्त शब्द-रेखाओंमें आयी अपनी छविके यथार्थसे सारा समाज परिचित हो और उस यथार्थकी पीड़ाके साथ उसके संकल्प-स्वरको भी ग्रहण करे। मूल्य : आठ रुपये

हिम-विद्ध : डॉ० जगदीश गुप्त

हिम-देशके सम्पर्कने कविके अभ्यन्तरकी रिक्तताको जिस कोमल-स्निग्ध समृद्धिसे भर दिया उसीका संवहन 'हिम-विद्ध' की कविताएँ करती हैं। एक बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषता इन कविताओंकी यह भी है कि विषय सूक्ष्म और चित्रात्मक होते हुए भी ये सब अत्यन्त सरल और अपनेमें रमा लेनेवाली हैं। **मूल्य : तीन रुपये**

भाषा और संवेदना : डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी

प्रस्तुत कृतिमें संवेदनात्मक स्तरपर मानवीय सृजनशीलता और भाषाके आन्तरिक सम्बन्धको देखने-समझनेका एक गम्भीर प्रयत्न किया गया है। साथ ही इसी सन्दर्भमें कुछ विशिष्ट कवियोंकी रचनाओं और युगीन प्रवृत्तियोंकी व्यावहारिक परीक्षा भी की गयी है। **मूल्य : दो रुपये पचास पैसे**

चीड़ोंपर चाँदनी : निर्मल वर्मा

बीसवीं सदीके स्मारक-चिह्नोंकी खोजमें एक भारतीय लेखकके ये यात्रा-संस्मरण अपने-आपको खोजनेका प्रयास तो हैं ही कुछ ऐसे अनुभव-खण्ड हैं जिनमें एककी निरपेक्षता दूसरेकी आत्मीयतासे घुल-मिल गयी है। संग्रहणीय कृति। **मूल्य : तीन रुपये**

अर्द्ध शती : बालकृष्ण राव

बालकृष्ण रावकी पचास अनुपम और मर्मस्पर्शी कविताओंका संकलन। कविताओंकी विशेषता यही है कि इनकी अनुभूतिमें न कोई दुराव है न अभिव्यक्तिमें किसी प्रकारका उलझाव। **मूल्य : तीन रुपये**

हम विषपायी जनम के : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

प्रस्तुत काव्य-संकलनकी यह विशेषता है कि नवीनजीका समस्त अप्रकाशित काव्य-साहित्य इसमें आ जाता है। उनकी राष्ट्रीय और सर्वोत्कृष्ट प्रणय-रचनाएँ तो इस संकलनमें सम्मिलित हैं ही, विज्ञ पाठकोंकी उत्सुकता और जिज्ञासाका विषय 'दोहावली' और 'मृत्युधाम' भी संग्रहीत हुई हैं। सर्वथा पठनीय और संग्रहणीय कृति। **मूल्य : सोलह रुपये**

नाटक बहुरूपी : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

'नाटक बहुरूपी' डॉ० लालके ग्यारह नये नाटकोंका संग्रह है। ये ग्यारहों नाटक अच्छाईका एक नमूना हैं और अनेक दृष्टियोंसे आधुनिक भी, जिन्हें पढ़ें तो अच्छा लगे और स्टेजपर देखें तो प्रेरणा पायें।

मूल्य : तीन रुपये पचास पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैशवांकन

भारतीय ज्ञानपीठका एक सर्वथा अनूठा, नयनाभिराम, कलात्मक प्रकाशन। 'बेबी बुक' हिन्दीमें। अपने शिशुके जन्मोत्सवसे सम्बन्धित अवसरों तथा उत्तरोत्तर प्रगतिका लेखा अंकित करके सुरक्षित रखनेके लिए। सर्वप्रथम भारतीय प्रकाशन। एक संग्रहणीय कृति। **मूल्य : बारह रुपये**

भारतीय संस्कृति का विकास (वैदिक धारा) : डॉ० मंगलदेव शास्त्री

डॉ० शास्त्रीने एक विशिष्ट दृष्टिसे भारतीय संस्कृतिके सम्पूर्ण विकासका अध्ययन किया है। प्रस्तुत यह प्रथम खण्ड वैदिक धाराका अध्ययन उपस्थित करता है। अध्ययन सर्वथा प्रमाणोंपर आधारित है और साथ ही सरस और रोचक भी। आचार्य नरेन्द्रदेवजीके शब्दोंमें "कृति भारतीय संस्कृतिके अध्ययनमें पथ-निर्देशका काम करेगी।" **मूल्य : सात रुपये**

तान्त्रिक साधना : माधव पुण्डलीक पण्डित, रूपा० – देवदत्त

यह कृति तन्त्रके वास्तविक और सम्पूर्ण स्वरूपको स्पष्ट करती हुई विषयको सुबोध और सुगम बना देती है। विद्वान् और अनुभवी लेखकने संक्षेपमें तन्त्र-सम्बन्धी विभिन्न विचारोंका परिचय दिया है और उन सबको पृष्ठभूमिमें श्री अरविन्दके दृष्टिकोणको उपस्थित किया है। तन्त्रकी विशिष्ट साधना-पद्धतिको भी कृतिमें स्पर्श किया गया है। **मूल्य : एक रुपया पचास पैसे**

प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी : कर्तारसिंह दुग्गल

प्रस्तुत पुस्तकमें श्री दुग्गलका एक समूचा नाटक, दो एकांकी, दो उपन्यासोंके अंश, संस्मरण और निबन्ध तो हैं ही, कहानी और कविताएँ तक संकलित हैं। कभी पंजाबी और उर्दूके, और अब तो उतने ही हिन्दीके भी, इस चहोते साहित्यकारकी ये सभी रचनाएँ उसकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं : उसके साहित्यिक व्यक्तित्वसे परिचित होनेके लिए बिलकुल अनिवार्य। **मूल्य तीन रुपये पचास पैसे**

• सांस्कृतिक

उपासकाध्ययन : मूल – सोमदेव सूरि, सम्पा० - अनु० – पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री

सोमदेव सूरि कृत महान् संस्कृत ग्रन्थ यशस्तिलकके अन्तिम तीन आश्वास,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें स्वयं सोमदेवने भी उपासकाध्ययन नाम दिया है। जैन श्रावकाचारका विशद विवेचन। हिन्दी प्रस्तावना, अनुवाद, संस्कृत टीका तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रायल ११६ + ५३९। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य : बारह रुपये

करकण्ड चरिउ : मूल – मुनि कनकामर, सम्पा०– डॉ० हीरालाल जैन

जैन और बौद्ध साहित्यमें 'प्रत्येक बुद्ध'के रूपमें प्रसिद्ध महाराज करकण्डके जीवन चरित्रपर लिखा गया अपभ्रंश काव्य। हिन्दी अँगरेज़ी प्रस्तावना, अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रायल ६४ + २७८। द्वितीय संस्करण १९६४।

मूल्य : दस रुपये

भोजचरित : मूल – पाठक राजवल्लभ, सम्पा० – अनु० –
डॉ० बहादुरचन्द छाबड़ा, शंकरनारायणन्

परमार नरेश भोजके जीवनपर लिखा गया ऐतिहासिक महत्त्वका एक विशिष्ट संस्कृत काव्य। महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी प्रस्तावना, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रायल २४ + १९२। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य : आठ रुपये

■

Hindu Revivalism
and
Indian Nationalism

by. Dr. B. R. Purohit

Price Rs. 15.00

SATHI PRAKASHAN
Saugor, M. P.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयोंकी समृद्धि बढ़ानेवाला तथा प्रकाशन-व्यवसायके लिए
परम उपयोगी सेवा करनेवाला अनोखा सन्दर्भ प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची

(हिन्दी वाङ्मयके ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारोंकी विस्तृत नामावली)

सम्पादक : यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन

मूल्य ३६ रुपये मात्र

क्या आप जानना चाहते हैं कि—

- अमुक लेखककी कौन-कौन-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं ?
- अमुक पुस्तकका लेखक, अनुवादक तथा सम्पादक कौन है ?
- अमुक पुस्तकका प्रकाशक कौन है ? ● अमुक पुस्तकका विषय क्या है ?
- अमुक पुस्तकका मूल्य क्या है ?

इन सब जटिल प्रश्नोंके उत्तर आप बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूचीमें पायेंगे ।

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूचीमें लगभग २४,००० पुस्तकोंका विवरण है ।

सूचीके दो विभाग हैं : (१) लेखक निर्देशी (२) ग्रन्थ निर्देशी । पहले विभागमें लेखक-क्रमसे व्यवस्था है । इसमें लेखक, ग्रन्थका नाम, प्रकाशक, मूल्य तथा विषय दिये गये हैं । दूसरे विभागमें ग्रन्थ शीर्षकसे अनुक्रम है । इसमें ग्रन्थका नाम, लेखक, प्रकाशक तथा मूल्य आदि क्रम है । इनमें आपको सभी तरहकी जानकारी उपलब्ध होगी । इसके अतिरिक्त जिन प्रकाशकों (लगभग ५३०) की पुस्तकोंका इस बृहद् सन्दर्भ ग्रन्थमें समावेश है उनकी पूरी नामावली और पते भी दिये गये हैं । साथ ही अनेक तरहके निर्देशी संलेख (Cross references) भी हैं । यथासम्भव लेखकोंकी जन्म-तिथियाँ भी दी गयी हैं । इन अद्भुत उपकरणोंसे इस ग्रन्थ-सूचीकी उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ गयी है ।

● पृष्ठ संख्या : ६१२, ● आकार : डबल क्राँउन, २० × ३०।८ ● सुन्दर छपाई, ● उत्तम काग़ज़, ● मज़बूत जिल्दबन्दी ।

इस विशिष्ट सन्दर्भ ग्रन्थको परिमित संख्यामें प्रकाशित किया जा रहा है । इसकी प्रति अपने लिए सुरक्षित करा लेना अच्छा होगा । अपने निकटतम पुस्तक-विक्रेतासे प्राप्त करें अथवा सीधे हमें लिखें ।

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३२ लाजपतराय मार्केट, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संगम
गोष्ठा-समारोह

हिन्दी
तात्कालिक सन्दर्भमें

२६ जनवरीको जब हिन्दी केन्द्रीय शासनके कार्यके लिए राष्ट्रीय भाषाके रूपमें स्वीकृत कर दी गयी तब अहिन्दी प्रान्तोंमें उसके विरोध स्वरूप आन्दोलन उठ खड़े हुए। मद्रासके बाद कलकत्तामें भी यह देखा गया कि प्रमुख स्थानोंपर हिन्दी विरोधी प्रचार किया गया। इन्हीं तात्कालिक सन्दर्भोंपर चर्चाके लिए कलकत्ताके प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी साहित्यिक तथा पत्रकार विचार-विमर्शके लिए ३१ जनवरीकी दोपहर भारतीय ज्ञानपीठ हॉलमें इकट्ठा हुए।

गोष्ठीकी प्रस्तावना बतलाते हुए श्री लक्ष्मीचन्द्र जैनने कहा कि यह हम सबकी सामूहिक है; इसका उद्देश्य केवल यही तथ्य सामने रखना है कि हिन्दीका विरोध क्यों और किस रूपमें किया जा रहा है यह परस्पर हम देखें-समझें। क्योंकि, जैसा कि हम सभी चाहते हैं, हिन्दीके सम्बन्धमें जितने भी भ्रम हैं वे दूर किये जायें। यह देखना भी आवश्यक है कि भाषा-सम्बन्धी वर्तमान सन्दर्भमें हम हिन्दी-भाषियोंका क्या कर्तव्य है।

'दृष्टिकोण' के सम्पादक श्री शिवचन्द्र शर्माने कलकत्ताके बंगला साप्ताहिक 'देश' और दैनिक 'युगान्तर' में प्रकाशित स्थानीय प्रतिक्रियाओंकी एक झाँकी दी जिसमें हिन्दीको "अपकृष्ट भाषा" और ऐसी भाषा बतलाया गया है "जिसके अभी दाँत भी नहीं फूटे।" यह निश्चित है कि हिन्दीका विरोध राजनैतिक दृष्टिकोणसे ही किया जा रहा है। श्री शर्माने कई उदाहरण देते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलाया कि बंगला भाषामें वे कमियाँ और कमजोरियाँ हैं जिनके कारण अभिव्यक्ति पूर्णतः ठीक और व्याकरण-सम्मत नहीं हो पाती ।

पश्चिम बंगाल हिन्दी राष्ट्रभाषा परिषद्के प्रमुख श्री रेवतीरंजन सिनहाने अहिन्दी-भाषी क्षेत्रोंमें हिन्दीकी स्थितिपर अपना व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत किया । उनका कहना था कि विरोधी आन्दोलन चलानेवाले स्वार्थको सामने रखकर काम कर रहे हैं । स्थिति ऐसी लगती है कि यदि दो प्रान्त हिन्दीको मान लें तो सारा देश हिन्दीको स्वीकार कर लेगा । वे यह समझते हैं कि हिन्दीका प्रश्न उनकी रोटी और नौकरीसे जुड़ा हुआ है, तब यह आवश्यक है कि उनके सामने सारी स्थिति स्पष्ट कर दी जाये – बादमें केन्द्रीय शासनने इस दिशामें विचार भी किया है । बंगालमें यह भी समस्या है कि वे बंगलामें भी काम नहीं करना चाहते । उन्हें यह लगता है कि अँगरेज़ीके न होनेसे हम मुश्किलमें पड़ जायेंगे । विरोधी विचारवादी यह सोचते हैं कि हिन्दी जल्दी आ गयी तो उनके पद और स्थान छिन जायेंगे । यह निश्चित है कि हर जगहकी प्रशासकीय भाषा मातृभाषा ही नहीं होती और प्रशासकीय भाषाके साथ व्यवस्थित होनेमें समय भी लगता है । कुछ लोगोंके मनमें शासकीय नियुक्तियाँ देखकर यह भ्रम भी पैदा हो गया है कि हिन्दीके सक्रिय रूपमें राजभाषा न होनेपर तो इतने अधिक हिन्दीवाले आ गये हैं फिर यदि हिन्दी राजभाषा बन गयी तो अहिन्दी-भाषी लोगोंका क्या होगा । केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण और हिन्दी निदेशालयके कार्योंसे भी बंगला-भाषी लोगोंको सन्देह पैदा होते हैं । आज आवश्यकता इस बातकी है कि अहिन्दी भाषी लोगोंके मनसे सन्देह दूर हो जाये और साहित्यिक हिन्दीके रूप बंगलामें आयें ताकि उन्हें हिन्दीके प्रमाणस्वरूप उनके सामने रखा जा सके । मद्रासमें जिन लोगोंने आत्माहुति दी है उनका हिन्दीके विरोधसे कोई सम्बन्ध नहीं है । हमारे कार्यका व्यावहारिक रूप यही है कि हम विरोधी लोगोंके सारे सन्देह दूर कर दें ।

श्री कमलाकान्त वर्माने कहा कि यदि आज गान्धीजी ज़िन्दा होते तो हिन्दीका प्रचार ३० वर्ष पीछे हट जाता क्योंकि वे अन्य-अन्य रचनात्मक कार्योंपर विशेष ज़ोर देते । आवश्यक है कि विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनाया जाये । जो हिन्दी प्रान्त हैं उनमें हिन्दीको पूरी तरह प्रतिष्ठित किया जाये । वर्तमान विरोधका भाव मनोवैज्ञानिक रूपसे घटाना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सन्हैयालाल ओझाने सुझाव दिया कि अखबार-रेडियो-अनुवाद आदि सभी माध्यमोंसे अधिकसे अधिक लोगोंको हिन्दीकी शिक्षा दी जानी चाहिए।

श्री मनमोहन ठाकोरने यह बात कही कि हिन्दीका विरोध करनेवाले लोग बगैर समझे-बूझे उसका विरोध करते रहते हैं। बंगला-भाषियोंसे सम्पर्क स्थापित करके इस दिशामें बहुत-कुछ किया जा सकता है।

श्रीमती सुशीला सिंघीने सुझाव दिया कि जोशमें आकर भाषण देनेकी बजाय हिन्दीके लिए व्यावहारिक कार्य किया जाना चाहिए। उनका कहना था कि अधिकांश लोग हिन्दीके विरोधी नहीं हैं और जो लोग विरोध करते हैं वे बंगला भी ठीकसे नहीं जानते। इस बातपर विचार किया जाना चाहिए कि हिन्दीको प्रतिष्ठित होनेमें १७ वर्षका समय ही क्यों लगा है।

श्री कृष्णाचार्यने हिन्दीके विरोधका कारण यह बतलाया कि दक्षिणमें अँगरेज़ी सबपर हावी है। भाषा-विशेषज्ञोंको वहाँ जाकर यह बात समझानी चाहिए कि उनका हित हिन्दी और मातृभाषामें ही है। बंगालमें मातृभाषाके प्रति बड़े सम्मानकी भावना है लेकिन कुछ कारणोंसे हिन्दीका विरोध किया जा रहा है।

श्री वेणीशंकर शर्माने इस बातपर ज़ोर दिया कि हिन्दीके प्रतिष्ठित न होनेका कारण हमारे प्रशासनकी कमज़ोरी है। यदि रोटीका ही प्रश्न है और भाषा उसके बीचमें आती है तो इस प्रश्नको दूसरी तरहसे सुलझाया जा सकता है। इस समय जो हिन्दी-भाषी प्रान्त हैं उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दीके पक्षमें विशेष कार्य करें।

श्री भँवरमल सिंघीने कहा कि हिन्दीका विरोध बंगालमें नहीं, बंगालके कुछ लोगोंमें है। यह सोचना चाहिए कि हम लोगोंने हिन्दी दिवसपर क्या किया था। सब लोगोंको सारी बातें ठीक-ठीक समझाना ज़रूरी है। जिन लोगोंने हिन्दीके विरोधमें हस्ताक्षर किये हैं उन लोगोंसे मिल-भेंटकर इस सम्बन्धमें चर्चा की जानी चाहिए। आवश्यक यह है कि हमलोग विनम्रतासे रचनात्मक दृष्टिकोण सामने रखें।

श्री सूर्यदेव शास्त्रीने प्रस्तुत प्रश्नको व्यापक भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे निरखने-परखनेका प्रयत्न किया। अनेक तथ्यों तथा उदाहरणोंको सामने रखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए उन्होंने बतलाया कि भाषा-वैज्ञानिक परम्पराके लिए भी कुछ किया जाना चाहिए।

श्रीमती कुन्था जैनने यह प्रश्न किया कि हम लोग अपने ही बच्चोंको अँगरेज़ी माध्यमके स्कूलोंमें क्यों भेजते हैं। हिन्दीके लिए व्यावहारिक क़दम यह होना चाहिए कि अगले १५ सालमें हम विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीको ठीकसे प्रतिष्ठित कर दें। हिन्दीकी अधिकसे अधिक पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित होनी चाहिए और हिन्दी माध्यमसे अच्छीसे अच्छी शिक्षा देनेका कार्य किया जाना चाहिए।

सुश्री निर्मला तालवरने हिन्दीके पक्षमें एक नारा दिया : क्विट इंग्लिश। उन्होंने शिक्षा-नीतिपर विचार करते हुए कहा कि १७ वर्ष तक हिन्दीके लिए प्रतीक्षा की जा चुकी है, अब किसी समझौतेसे काम नहीं किया जा सकता। अब तो अँगरेज़ी हटानेके लिए कटिबद्ध होकर काम किया जाना चाहिए।

श्री पृथ्वीनाथ शास्त्रीने सुझाव दिया कि भावात्मक विरोध दूर होने चाहिए और यह समझा जाना चाहिए कि अँगरेज़ीका भारतीय भाषाओंसे विरोध है और उसी रूपमें प्रचार समितियाँ नियुक्त करके कार्य किया जाना चाहिए।

कलकत्ता विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० कल्याणमल लोढ़ाने बंगालमें हिन्दीकी स्थितिपर विश्लेषण प्रस्तुत किया। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयकी शिक्षावृत्तियों तथा शिक्षा संस्थाओंकी स्थितिपर उन्होंने विचार प्रकट किया। भाषा संघम्, आशुतोष मुखर्जी इन्स्टीट्यूट, रामकृष्ण मिशन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आदिके कार्यपर भी आपने दृष्टि डाली। आपने बतलाया कि अहिन्दी-भाषी लोगोंको यह लगता है जैसे हिन्दीका औचित्य सीमाको लाँघ रहा है। उनका कहना था कि हमारा आग्रह इस बातपर नहीं होना चाहिए कि सारा देश हिन्दी सीख ले। एक गोष्ठी बुलाकर रचनात्मक सुझाव इकट्ठे किये जाने चाहिए – हिन्दी विरोधको दूर करनेके लिए कार्य किया जाना चाहिए।

— प्रस्तुतकर्ता : रमेश बक्षी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम

हिन्दी साहित्य सम्मेलनका मासिक

सम्पादक : बालकृष्ण राव

- 'माध्यम' हर अंकमें 'सहवर्ती साहित्य' के स्तम्भमें किसी एक हिन्दीतर भारतीय भाषाकी चुनी हुई समसामयिक रचनाएँ प्रस्तुत करता है।
- 'विवेचना' में प्रकाशित 'चारुचन्द्रलेख', 'समय और हम', 'अपने-अपने अजनबी', शमशेरका काव्य, 'यह पथ बन्धु था', 'एक साहित्यिककी डायरी' तथा 'हम विषपायी जनमके' की समधीत विवेचना और अन्य स्तरीय समीक्षाओंकी चर्चा आपतक पहुँची ही होगी।
- 'माध्यम' के विचार-प्रधान और विचारोत्तेजक लेखोंको आपने पढ़ा ही होगा।
- कविताओं, कहानियों, टिप्पणियोंके चयनमें 'माध्यम' की रुचि और स्तरसे आपका परिचय हो ही चुका है।
- 'माध्यम' का आग्रह है, न केवल आप इसे अवश्य पढ़ें, इसपर अपनी राय भी अवश्य भेजें।

मूल्य : एक प्रति १.००; वार्षिक १०.००

सम्पादकीय कार्यालय : पो० बॉ० सं० ६०, इलाहाबाद।

व्यवस्थापकीय कार्यालय : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी हिन्दी कैसे लिखें

लेखक

डॉ० भगीरथ मिश्र एम० ए०, पी-एच्० डी०

डॉ० शुभकार कपूर एम० ए०, पी-एच्० डी०

क्या हिन्दी भाषी क्या अहिन्दी भाषी, क्या देशी क्या विदेशी, सभीको ऐसी पुस्तककी कमी खटक रही थी जो शुद्ध हिन्दी लिखना-बोलना सीखनेमें सहायक हो। विद्वान् लेखकोंने वर्षोंके परिश्रमसे प्रस्तुत पुस्तकको तैयार कर इस अभावकी पूर्ति की है। हिन्दीके विद्यार्थियोंके लिए, अथवा उन लोगोंके लिए जो शुद्ध हिन्दी लिखना-बोलना सीखनेके इच्छुक हैं, यह पुस्तक अनिवार्य है।

मूल्य चार रुपये मात्र

प्रभात प्रकाशन

२०५ चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

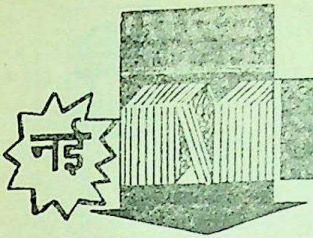

- बुधवाकी बेटी (उपन्यास) 'उग्र'
- नागमणि (उपन्यास) अमृता प्रीतम
- वसुन्धरा (उपन्यास) शैलेश मटियानी
- विप्रदास (उपन्यास) शरत्चन्द्र
- प्रेम और हत्याके रहस्यमय मुक़दमे प्रकाश पण्डित
- पाकिस्तानका सफ़र (यात्रा-संस्मरण) बलराज साहनी
- बीरबल ज़िन्दा है (हास्य-व्यंग्य) जी० पी० श्रीवास्तव
- हितोपदेश नारायण पण्डित

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

सोमनाथ (उपन्यास) आचार्य चतुरसेन
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

जापान (देश और उसके निवासी)
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकीय

प्रो० चन्द्रकुमार मिश्र, कलकत्ता—

हिन्दीकी अनेक बहुरंगी पत्रिकाओंके बीच 'ज्ञानपीठ पत्रिका' का अपना अलग रंग है – देखनेमें जितनी छोटी, उपलब्धिकी दृष्टिसे कई गुना आगे।

फ़रवरी अंकमें प्रकाशित 'प्रकाशनका क्षेत्र और कलाकार' लेखमें डॉ० जगदीश गुप्त-द्वारा उठाये गये प्रायः सभी प्रश्न और समस्याएँ गम्भीर रूपसे विचारणीय हैं। पर, हिन्दीमें तो बड़ी समस्या यही है कि सही समस्याओंपर कोई गम्भीरतापूर्वक विचार भी तो करे!

डॉ० प्रभाशंकर मेहता, कटक—

स्व० श्री मैथिलीशरण गुप्तकी स्मृतिमें पत्रिकाके फ़रवरी अंकमें आये डॉ० शिवप्रसाद सिंह और श्री लक्ष्मीशंकर व्यासके लेख महत्त्वपूर्ण लगे। श्री शिवप्रसाद सिंहजीका लेख तो निस्सन्देह उच्चकोटिका है। दोनों आदरणीय विद्वानोंको मेरा अभिनन्दन।

श्री विष्णुस्वरूप माथुर, इलाहाबाद—

मेरा अनुमान है, हिन्दीकी उच्चस्तरीय मासिकोंकी गिनती की जानेपर 'ज्ञानपीठ पत्रिका'का नाम सहज ही सम्मिलित हो जायेगा। किसी भी पूर्वग्रहमें न बँधकर कहें तो अनुपम मासिकी है यह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका
तथा
भारतीय भाषाओंकी सर्वोत्कृष्ट
सर्जनात्मक साहित्यिक कृतिपर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार-योजना प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित सामग्रीका अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

o

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

o

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

○

लोकोदय ग्रन्थमाला

● राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

● उपन्यास

गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महा श्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.२५
सूरजका सातवाँ घोड़ा	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
पीले गुलाबकी आत्मा	विश्वम्भर मानव	४.००
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	३.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	६.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	४.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस्०	२.५०
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस्०	३.००
तीसरा नेत्र	आनन्दप्रकाश जैन	२.५०
ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• कविता

चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
चाँदका मुँह टेढ़ा है	मुक्तिबोध	८.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
हम विषपायी जनमके	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
बीजुरी काजल आँज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
वेणु लो गूँजे धरा	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
देशान्तर	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
कनुप्रिया	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०
धूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूप शर्मा	६.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
कालके पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोस्ताँ [द्वि० सं०]	शेख सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने अँगन रस बरसे	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
मोतियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १–२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
अतीतके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५०
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००
ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• शाइरी

गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
नरमए-हरम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००

• नाटक

घाटियाँ गूँजती हैं [द्वि० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम कद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
तरकशके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
चेखॅवके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
बारह एकांकी	विष्णु प्रभाकर	३.५०
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०
सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजितकुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

• रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

• ललित-निबन्धादि

एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकीराय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००
वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
ठूँठा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
ग़रीब और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रावी	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकराई [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
दीप जले शंख बजे	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००
भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो-वार्ता शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [तृ० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन[द्वि.सं.]	भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ०रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरत्के नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

दर्शन अनुचिन्तन	म०म०गिरिधर शर्मा चतु०	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव	मुनि नथमल	१.५०
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

हास्य-व्यंग्य

कागज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
तेलकी पकौड़ियाँ	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
सुर्ग़-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

जो पुस्तक आपको सबसे अधिक सोचनेके लिए विवश करती है, आपकी सबसे बड़ी सहायक है।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

सभाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

भदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १२.००

मनुष्य जातिने जो कुछ किया, सोचा और पाया है,
वह पुस्तकोंके जादू-भरे पृष्ठोंमें सुरक्षित है।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — ६.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन — २.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — ८.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — १०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये २.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन–वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल .५०
स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश]
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल १.५०
रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका]
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री प्रभाचन्द्राचार्य २.००
लाटी संहिता [संस्कृत]
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल
नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका]
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात

❀ आगामी प्रकाशन ❀

साहित्यिक

* **जुलूस** : फणीश्वरनाथ रेणु (उपन्यास)
* **प्रतिनिधि रचनाएँ** : पंजाबी : नानक सिंह
* **समानान्तर दुनिया** : राजेन्द्र यादव (कहानी)
* **दूसरा सप्तक** : सं० अज्ञेय (कविता)
* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ** : कृष्णाचार्य (शोध)
* **इतिहास पुरुष** : डॉ० देवराज (कविता)
* **प्रेत** : नेमिचन्द्र जैन (नाटक)
* **अठारह सूरजका पौधा** : रमेश बक्षी (उपन्यास)

सांस्कृतिक

जैन शिलालेख संग्रह : सं०–डॉ० जोहरापुरकर

■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक भावबोध, कला-संचेतना
और नवीनताका
प्रतिनिधि मासिक

ज्ञा नो द य

•

मार्च १९६५ अंक में

आन्द्र पियेर द मान्दियार्ग, एडिथ सिटवेल, लक्ष्मीचन्द्र जैन, कमलेश्वर, हरिशंकर परसाई, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', रामनाथ 'सुमन', शानी, लक्ष्मीकान्त वर्मा, इन्दु जैन, परेश, देवेन गुप्त, ज्ञानरंजन, कौशल्या 'अश्क', शलभ, ममता अग्रवाल, पुरुशिव रेगे, इन्दुकान्त शुक्ल, कुंकुम जोशी

•

- रूखी री यह डाल वसन वासन्ती लेगी
- हम, वे और भीड़
- हिन्दीका प्रश्न और विदेशी प्रश्नकर्त्ता
- एक नमूना सार्थक दिन
- '६३ के ३६ कवि
- किसी एककी उलझन : 'चारुचन्द्रलेख'
  भयंकर इवानका चेहरा
  आधुनिकता और चित्रकला

वार्षिक मूल्य १०.००, एक प्रति १.००

ज्ञानोदय

सम्पादकीय कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
वितरण कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
एकमात्र वितरक : बैनेट कोलमैन ऐण्ड कम्पनी लि०, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पत्रिका : मार्च १९६५ रजिस्टर्ड सं० एल-१७४६

इस वर्ष
साहित्य अकादेमी-द्वारा
पुरस्कृत सम्मानित
श्री 'अज्ञेय' का
अद्वितीय
काव्य-संकलन

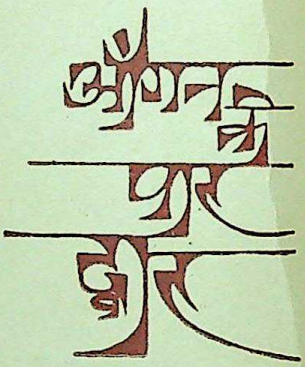

❀

अज्ञेयकी अन्तःसलिलाका सबसे स्फीत और श्रद्धापूत प्रवाह। यहाँतक आते-आते अज्ञेयका काव्य निखार और गहराईके ऐसे उत्कर्षपर पहुँचा है जिसमें भारतीय चिन्तन-परम्पराको विश्वसे संयोजनकी क्षमता साकार हो उठती है। सर्वथा संग्रहणीय और पठनीय कृति।

मूल्य
तीन रुपये मात्र

भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली–६
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय ज्ञानपीठ, काशीकी ओरसे बाबूलाल जैन फागुल्ल-द्वारा प्रकाशित और सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसीमें मुद्रित।

वर्ष तीन : अंक बारह
जुलाई १९६५
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

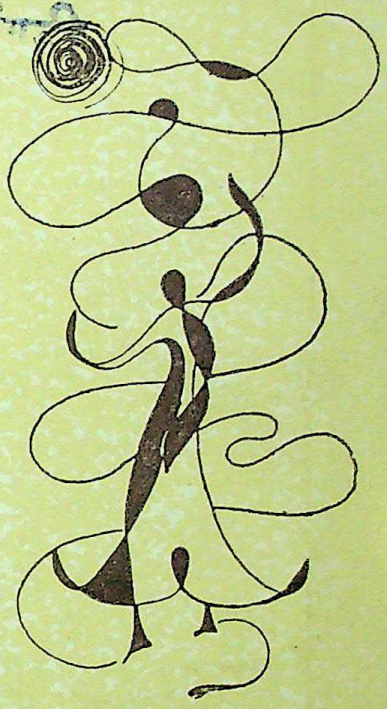

ज्ञानपीठ पत्रिका

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

लेखन-प्रकाशनकी अधुनातन
दिशा-प्रवृत्ति और उपलब्धि परिचायिनी
मासिकी

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

दो नये प्रकाशन

• **इतिहास-पुरुष** : डॉ० देवराज

कविकी बहुचर्चित लम्बी कविता 'इतिहास-पुरुष' तथा तीन और लम्बी कविताएँ—'ऋष्य शृंग', 'नूरजहाँ', 'क्लिओपेट्राका पत्र सीताके नाम'; और साथ ही अन्य विशिष्ट कविताएँ भी संग्रहमें सम्मिलित हैं। हर काव्य-प्रेमीके लिए अनिवार्य रूपसे पठनीय कृति।

• **विवेक के रंग** : सम्पा०- डॉ० देवीशंकर अवस्थी

हिन्दीमें अपने प्रकारकी बिलकुल नयी कृति—विशिष्ट पुस्तकोंपर आये विशिष्ट समीक्षा-लेखोंका संकलन—जो मात्र समसामयिक लेखनका मूल्यांकन ही नहीं, उसके प्रतिमानोंके आकलन तथा भाव-बोधके स्तरोंको उद्घाटित करनेका महत्त्वपूर्ण प्रयत्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी
साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष तीन : अंक बारह

जुलाई १९६५

१. उद्घोष .... सुमित्रानन्दन पन्त २
२. अपनी कविताओंके परिप्रेक्ष्यमें .... डॉ० देवराज ३
३. हिन्दी नवलेखनके सन्दर्भमें .... डॉ० जगदीश गुप्त ६
४. दायित्व और दिशाके प्रश्न .... डॉ० शिवप्रसाद सिंह १०
५. इतिहासकी घाटियोंसे .... कृष्णाचार्य १४
६. तू-शूके नाम .... पद्मधर त्रिपाठी १७
७. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया .... कृष्णविहारी मिश्र, डॉ० शम्भुनाथ सिंह, जितेन्द्रनाथ पाठक, डॉ० बच्चन सिंह १९
८. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित ३३
९. हिन्दीकी डायरी .... लक्ष्मीशंकर व्यास ३९
१०. सामयिकी : विवेचना और विवेचना ४५
११. भारती विश्व : कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ ५५
१२. साहित्य-संगम : गोष्ठी-समारोह ५९
१३. पाठकोंके पत्र ६३

■

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन : : जगदीश
प्रधान एवं सम्पादकीय कार्यालय
भारतीय ज्ञानपीठ, ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता – २७
प्रकाशन एवं वितरण कार्यालय
भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

विक्रय केन्द्र
भारतीय ज्ञानपीठ, ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली – ६
मूल्य : छह रुपये वार्षिक : पचपन पैसे प्रति
समाज-शिक्षा विभाग राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग स्रष्टा कविका दायित्व

अर्थात् जीवनमें नये रागात्मक मूल्योंकी स्थापना
जिनके अभावमें सभ्यता और संस्कृति
का रूपान्तर होना असम्भव है

सुमित्रानन्दन पन्त

विज्ञानके प्रथम चरणसे भयभीत होकर लोग कहते हैं कि कविताका युग बीत गया। पर सत्य यह है कि कविता, कला और संस्कृतिका युग अब आनेवाला है। वैज्ञानिक उपलब्धियों-द्वारा मानव जातिके भोजन-वस्त्र-गृहकी समस्याका समाधान हो जानेपर कबीरके शब्दोंमें भोजनके बाद भजन ही के प्रति मानव हृदयका आकर्षण बढ़ना स्वाभाविक है। वैसे इस युगके सृजन-चिन्तनका ध्येय भी मनुष्यके अतीतोन्मुखी भाव तथा वस्तु-बोधको भविष्यकी ओर अग्रसर करना ही रहा है जिससे वह नवजीवन निर्माणकी चेतनाके सम्पर्कमें आ सके और भीतरी अवरोध सच हो सकें।

सम्भव है जो नया मूल्य मानवकी अन्तश्चेतनामें अवतीर्ण हो चुका है उसकी परिणति मानव जातिके जीवनमें सौ दो सौ साल बाद हो और विगत अभ्यासों तथा रीति-मर्यादाओंमें पथरायी हुई मानव चेतनाको नया रूप ग्रहण करनेके पूर्व अनेक संघर्ष-संग्राम आदि करने पड़ें। किन्तु समस्त विश्व साहित्यमें आज उसके ऋण या धन संवेदन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा रागात्मक विचारों, भावनाओं, दर्शनों, क्रिया-कलापों तथा सौन्दर्य कला-बोधके रूपमें अभिव्यक्ति पाने लगे हैं।

यह नया यथार्थ निश्चय ही बाह्य भौतिक यथार्थ न होकर बहिरन्तर जड़-चेतन समन्वित व्यापक जीवन-यथार्थकी भावना है। और सृजन-चेतना तथा नयी काव्यानुभूतिके लिए अनिवार्य, जिस पक्षके अनेक सूक्ष्म-जटिल स्तरोंका विश्लेषण-संश्लेषण कर भावी सृष्टा तथा नवयुग-स्रष्टा कविको मानव जीवनमें स्थापित करना है वह है रागात्मक मूल्य जिसके परिष्कार, उन्नयन तथा व्यापक बोधके अभावमें मानव सभ्यता तथा संस्कृतिका रूपान्तर होना असम्भव है।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कविताओंके पारप्रेक्ष्यमें

जहाँ लेखककी संसक्ति उसके कृतित्वको
आन्तरिक ऐक्य देती है वहाँ प्रतिबद्धताका
आवेग उसे अधिक सृजनशील बनाता है
और उसकी रचनाको अधिक शक्तिपूर्ण

डॉ० देवराज

मुझे अपना समय, विश्वविद्यालयकी नौकरीके अलावा साहित्य और दर्शनके बीच विभक्त करना पड़ता है; शैलीकारका अवधान और शक्ति भी हिन्दी-अँगरेज़ीके बीच बँट जाती है। इस जीवनमें इन दुर्भाग्यपूर्ण द्वन्द्वोंकी स्थितिसे मुक्तिका कोई रास्ता नहीं दीखता। लेकिन मेरे साहित्यमें मेरा दर्शन दोहराया जाता हो, ऐसा अनुभव मुझे नहीं है। 'संस्कृतिका दार्शनिक विवेचन' पहले लिखा गया था, और लम्बे-चौड़े चिन्तनके बाद, किन्तु 'इतिहास-पुरुष'* की केन्द्रगत दृष्टि वहाँसे उठायी गयी या उसका अनुवाद-मात्र नहीं है। सम्भवतः आगेकी किसी रचनामें वह दृष्टि अब इतने आरोप और सतर्कतासे जगह नहीं पायेगी। सच यह है कि साहित्यगत चिन्तनको उसके प्राणभूत ऐन्द्रिय-बोध एवं भाव-सामग्रीसे जुदा नहीं किया जा सकता। यों किसी भी ईमानदार एवं व्यक्तित्व-सम्पन्न लेखककी विविध रचनाओंमें मौलिक एकता—विकासमान एकसूत्रता—प्रतिफलित होनी ही चाहिए।

हिन्दीके साहित्य-प्रेमियोंके बीच प्रस्तुत लेखक अपनी क्लैसिसिज़्म—क्लैसिकी (श्रेष्य) लेखकोंके पक्षपात—के लिए ख्यात या बदनाम है, पर इसमें सन्देह है कि उसकी क्लैसिकीयताकी धारणा भी उतनी ही सुविदित है। मेरी उक्त धारणाका क्लैसिक-रोमैण्टिकके ऐतिहासिक झगड़ेसे विशेष लगाव नहीं है, मेरी दृष्टिसे क्लैसिक कोटिकी कृति वह है जिसमें—एक प्रकारकी पूर्णता, भावोंका

* भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा आगामी मास प्रकाश्य काव्य-कृति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा परिपाक (लीविसके शब्दोंमें रियलाइज़ेशन) और अभिव्यक्ति प्रौढ़ता तथा रागतत्त्व और बोधतत्त्व (विभावों, इलियटके सह-अपेक्षी वस्तु-विन्यास) की समशक्तिता या आन्तरिक सामंजस्य हो। मैं यह भी मानता हूँ कि इच्छा और प्राणवान साहित्य रोचक या अर्थपूर्ण सन्दर्भोंके निर्माणमें ही अस्तित्व-लाभ करता है। ऐसे सन्दर्भोंका निर्माण रचनाकारमें सशक्त नियन्त्रक बुद्धिके अलावा उन वृत्तियोंकी अपेक्षा करता है जिन्हें इधरके समीक्षकों-विचारकोंने संसक्ति (इन्वॉल्वमेण्ट) और प्रतिबद्धता (कमिटमेण्ट) की आख्याएँ दी हैं। संसक्तिसे मैं समझता हूँ जीवन और उसके मूल्योंमें गहरी, जीवन्त अभिरुचि; प्रतिबद्धताका मतलब है देखे हुए मूल्योंके प्रभावपूर्ण उल्लेख और उन्हें सामाजिकों अथवा सहधर्मियोंके द्वारा ग्राह्य बनानेके लिए बेचैनी। प्रतिबद्ध होनेका अर्थ आवश्यक रूपमें बहिर्मुख, अथवा स्थूल रूपमें कर्मठ, होना नहीं है। इन कृतियोंकी अपेक्षा दो कारणोंसे है : एक, संसक्त और प्रतिबद्ध कलाकार ही जीवन-अनुभूतिके विभिन्न आयामोंसे, सामान्य (नॉर्मल) संवेदनाके धरातलपर, साक्षात् परिचय कर पाता है; इस परिचयमें ही उस भावबोधके तत्त्व निहित रहते हैं जो साहित्यगत चेतनाका ग्रथन करते हैं। जिस व्यक्तिने कभी मन-प्राणसे प्रेम किया है, वही सफल और समृद्ध प्रेम-काव्य लिख सकता है; और जिसने निर्णय और कर्मके विविध अवसरोंपर नैतिक द्वन्द्वको अपने रक्तमें जाना-सहा है, वही उन्हें तीखी साहित्यिक अभिव्यक्ति दे सकता है। एक सच्चे व गहरे अर्थमें देशप्रेमी कवि ही देशको लेकर अर्थ-सम्पन्न रचनाएँ प्रस्तुत कर सकता है। निष्कर्ष यह कि समृद्ध जीवन-संसक्ति (फिर भले ही वह मात्र सशक्त कल्पनाके धरातलपर हो) सम्पन्न साहित्य-सृजनकी आवश्यक शर्त है। मूल्योंके विघटनकी चेतना वहीं तक लेखककी रचनाको समृद्ध करती है, जहाँ तक उसका उद्भव जीवनके विस्तृत सार्थक उपभोगकी माँगमें होता है। दूसरे, जहाँ लेखककी संसक्ति उसके कृतित्वको आन्तरिक ऐक्य देती है वहाँ प्रतिबद्धताका आवेग उसे अधिक सृजनशील बनाता है, और उसकी रचनाको अधिक शक्तिपूर्ण। कहनेकी ज़रूरत नहीं कि रचनाकी दृष्टिसे उपयोगी संसक्ति और प्रतिबद्धता लेखककी उपार्जित दृष्टि व साक्षात्कारका परिणाम होती है – किसी बाहरी स्रोतसे पकड़ी हुई अमूर्त सिद्धान्तवादिता या कट्टरताका नहीं। यही कारण है कि साधनाशील लेखककी दृष्टिका प्रकाशन सहज ही उपयुक्त चित्र-सामग्री और भावबोधसे अलंकृत हो उठता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी उल्लेख्य लेखकपर उस समूचे अतीतका आभार रहता है जिससे आलाप-संलाप करते हुए उसकी चेतना गठित होती है। सचेत रूपमें, प्रस्तुत लेखक 'ग्राम्या'के पन्त और अज्ञेयकी भाषाका विशेष प्रशंसक रहा है; निश्चय ही वह अपने शब्दों-सम्बन्धी बोध और प्रयोगमें उनसे प्रभावित हुआ होगा।

ओवेन बारफ़ील्डने अपनी पुस्तक 'पोएटिक डिक्शन' में काव्यगत चेतनाकी अपरिचितता (स्ट्रेंजनेस) के महत्त्वपर विशेष गौरव दिया है। हमारा अनुमान है कि यह विशेषता पूरी-पूरी प्राचीनोंके 'चमत्कार'में अन्तर्भुक्त हो जाती है; इधरकी नयेपनकी माँग भी एक हद तक उसी चीज़की माँग है—चमत्कारकी। मेरा विचार है कि, विभिन्न स्थितियोंमें, उक्त विशेषताके अलग-अलग उपादान होते हैं – अनुप्रास, सटीक औचित्य, अर्थ-गौरव, अभिव्यक्तिका अप्रत्याशित संक्षेप और सघनता, चित्र सामग्रीकी अक-र्मकता, आदि। इधर कहा गया है कि श्रेष्ठ रचनाकार शब्दोंके परम्परा-मुक्त अर्थमें परिवर्तन उपस्थित करके अभ्यस्त प्रतिक्रिया (स्टॉक रेस्पॉन्स) को निरुद्ध करता है; मेरे खयालमें यह निरोध नये सन्दर्भ-द्वारा स्वतः उत्पन्न हो जाता है। मैं यह भी स्वीकार नहीं करता कि नयेपन, चमत्कार या अपरिचितता संवेदना जगानेका कोई एक रूढ़ तरीक़ा होता है – जैसा कि कतिपय साहित्यिक निकाय प्रचारित करते हैं। ये निकाय साहित्यकी ऐतिहासिक विविधता और पुरानी कृतियोंकी सदाबहार आकर्षकताकी कोई संगत व्याख्या नहीं दे सकते। साथ ही यह देखा जाता है कि रूढ़ तरीक़ोंका सहारा लेनेवाले सम्प्रदायवादी लेखक प्रायः व्यक्तित्व-सम्पन्न नहीं हो पाते, वे युगीन काव्य-साहित्यमें एकरसताके प्रसारका उपकरण भी बन जाते हैं।

साहित्यके इतिहासका सबसे बड़ा आश्चर्य है – उसकी महनीय कृतियोंका कभी न चुकनेवाला आकर्षण और यह आकर्षण तरह-तरहका होता है : चित्र-सामग्रीका, अनुप्रासका, सन्दर्भ-नियन्त्रित सटीक उक्तिका, अभिव्यक्तिकी जटिल या सघन पूर्णता का, और कभी-कभी एकदम सीधी स्वभावोक्ति (?) का। ऐसी स्थितिमें काव्यगत सौन्दर्यके किसी एक उपादानपर एकान्तिक ज़ोर देना (एकत्ववाद) मुझे पसन्द नहीं। यह भी ठीक है कि महत्त्वपूर्ण नवीन लेखक इन उपादानों या तरीक़ोंमें अनजाने नये तत्त्व जोड़ते रहते हैं, अच्छे लेखक प्रायः एक साथ अनेक वैसे तत्त्वों, उपादानों या तरीक़ों का उपयोग करते हैं।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवलेखनके सन्दर्भमें

संश्लिष्ट एवं जटिल स्थितिमें रूप ग्रहण करते
हिन्दी नवलेखनके सन्दर्भमें मात्र विचार
चरचाके लिए संजोये गये कुछ सूत्र

डॉ० जगदीश गुप्त

साहित्य किसी पूर्व-निश्चित उद्देश्य या विचारधाराका अनुसरण करनेके लिए बाध्य नहीं होता। प्रेरक होनेपर भी साहित्यमें विचार सीधे और प्रमुख होकर नहीं आते; उन्हें आत्मसात् करके जब संवेदनाके स्तरपर सृजनशीलताके साथ अभिव्यक्ति मिलती है तभी वे सार्थक प्रतीत होते हैं। हिन्दी नवलेखन किसी पूर्व-निर्धारित विचार-दर्शनसे प्रतिबद्ध नहीं रहा फिर भी उसका चिन्तन-पक्ष पर्याप्त समृद्ध और प्रेरक है। वह सहज रूपमें मानव-केन्द्रित जीवन-दृष्टिका अनुसरण करते हुए नये मानव व्यक्तित्वकी स्थापनामें संलग्न है जिसे नयी कविताके सन्दर्भमें 'नये मनुष्यकी प्रतिष्ठा' कहा गया है। मानवका यह नया व्यक्तित्व अपरिभाषेय अथवा अस्पष्ट नहीं है – जैसा निम्न उद्धरणसे प्रकट है :

मानववादी दृष्टि : नये मनुष्यकी प्रतिष्ठा

"नया मनुष्य रूढ़ि-ग्रस्त चेतनासे मुक्त, मानव-मूल्यके रूपमें स्वातन्त्र्यके प्रति सजग, अपने भीतर अनारोपित सामाजिक दायित्वका स्वयं अनुभव करनेवाला समाजको समस्त मानवताके हितमें परिवर्तित करके नया रूप देनेके लिए कृत संकल्प, कुटिल स्वार्थ-भावनासे विरत, मानवमात्रके प्रति स्वाभाविक सह-अनुभूति युक्त, संकीर्णताओं एवं कृत्रिम विभाजनोंके प्रति क्षोभका अनुभव करनेवाला हर मनुष्यको जन्मतः समान माननेवाला, मानव-व्यक्तित्वको उपेक्षित, निरर्थ और नगण्य सिद्ध करनेवाली किसी भी दैविक शक्ति या राजनैतिक सत्ताके अ अनवनत, मनुष्यकी अन्तरंग सद्वृत्ति के प्रति आस्थावान्, प्रत्येक व्यक्तिके स्वाभि मानके प्रति जागरूक, दृढ़ एवं संगठित अन्तःकरण संयुक्त, सक्रिय किन्तु अपीड़ सत्यनिष्ठ तथा विवेक-सम्पन्न होगा।"

– नयी कविता, पृ० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे 'नव मानववाद', 'सृजनात्मक मानववाद' तथा 'आधुनिक मानववाद' आदि कोई भी संज्ञा दी जा सकती है; पर जो दृष्टिकोण उसके पीछे निहित है उसमें विशेषण गौण है, मानववाद ही महत्त्वपूर्ण है। वह स्वाभाविक रूपसे आजके प्रजातन्त्र, जनतन्त्र, समाजवाद, साम्यवाद आदिसे अनुप्रेरित व्यापक युग-बोधका अंग बन चुका है अतः साहित्यकी रचना-प्रक्रियामें उसपर पृथक् रीतिसे बल देना आवश्यक नहीं है, केवल संकीर्ण प्रतिक्रियावादी विचारधाराके प्रति सचेत रहना अपेक्षित है।

परम्परा : मध्यमार्ग चयन और पुनर्मूल्यांकन

एक गौरवपूर्ण परम्परावाले भारत-जैसे संक्रान्ति-ग्रस्त देशमें नवलेखनका एक ओर हठात् परम्परा-विमुख होना तथा दूसरी ओर प्रमादात् परम्परा-आक्रान्त होना दोनों ही अप्रौढ़ एवं रुग्ण मनःस्थितिके द्योतक हैं। ऐसी दशामें केन्द्रीय मूल्य-दृष्टिको जागृत रखते हुए चयन और पुनर्मूल्यांकनकी प्रक्रिया आवश्यक ही नहीं अनिवार्य कही जा सकती है। परम्पराका वास्तविक विकास उसके समर्थन-द्वारा ही नहीं होता, मूल्यबोधपर आधारित विरोध भी आवश्यक होता है।

राष्ट्रीयता-अन्तर्राष्ट्रीयता : अविरुद्ध

सार्वभौमिक दृष्टिकोणसे तथा सहज संवेदनात्मक स्तरपर साहित्यके अन्तर्गत मानव-अस्तित्व अविभाजित रूपमें सामने आता है जिसमें भारतीय-अभारतीय, देश-विदेशका विचार निरर्थक लगता है। विकासशील होनेपर राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयताके प्रतिमान परस्पर विरोधी न होकर पूरक सिद्ध होते हैं। फिर भी नवलेखनका झुकाव अन्तर्राष्ट्रीयताकी ओर अधिक दिखाई देता है।

प्रयोग : साधन, कथ्यानुरूप सृजनशील अभिव्यक्ति इष्ट

अभिव्यक्तिके क्षेत्रमें नवलेखन कथ्यके अनुरूप स्वतः आविर्भूत होनेवाला कथन-विधिके निरन्तर सृजनशील रूपपर विश्वास करता है। वह किसी पूर्व-निर्धारित रूढ़ तथा बाह्यारोपित शैली-शिल्पके पक्षमें नहीं है। मूल रूपके ग्रहणमें बाधक समझकर वह ऐसी स्थितिको अस्वाभाविक और असुन्दर मानता है। अभिव्यक्ति-क्रममें आवश्यकतानुसार प्रयोगात्मकता उसे इष्ट है, किन्तु साधनके रूपमें ही, साध्यके रूपमें नहीं।

रसानुभूति नहीं सह-अनुभूति

नवलेखनका भाव-पक्ष रसानुभूतिसे मेल नहीं खाता क्योंकि रस प्रकृत्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वैयक्तिकता और आदर्शवादिताकी भाव-भूमिपर अवतरित हो पाता है। रसानुभूतिके विपरीत नयी कविताकी सम्प्रेषणीयता 'सह-अनुभूति'की ही अपेक्षा रखती है क्योंकि उसमें व्यक्तित्वका विलयन अथवा बौद्धिक-पक्षका निरसन आवश्यक नहीं होता। साहित्यकी अन्य विधाओंमें भी भावोंके ग्रहण एवं सम्प्रेषणकी स्थिति 'सह-अनुभूति'से भिन्न प्रतीत नहीं होती। नवलेखन व्यापक रीतिसे उसका अनुसरण करता है।

इहलौकिक जीवन दृष्टिकी उच्चतर भूमिका :
अध्यात्मकी नयी व्याख्या

इहलौकिकताके विरुद्ध रहकर पारलौकिकताकी ओर उन्मुख होनेवाली मध्य-कालीन आध्यात्मिकता अमान्य है; परन्तु भौतिक जीवनके संवाहक, गहन एवं परिष्कृत मानवीय अनुभवके उच्चतर एवं प्रौढ़तर रूपमें अध्यात्म अस्वीकार्य नहीं; केवल इस बातकी सजगता अपेक्षित है कि जीवनको रहस्यके रूपमें ग्रहण न करके एक अन्तर्व्यवस्था-सम्पन्न प्रक्रियाके रूपमें स्वीकार किया जाये।

व्यक्ति सापेक्ष सत्य विज्ञान-युगमें भी महत्त्वपूर्ण

साहित्य मानव-चेतनाकी श्रेष्ठतम उपलब्धियोंमें है और उसका आधार मानव-प्रकृतिमें अन्तर्निहित वह सौन्दर्य-बोध है जो अन्य प्रकारके बोधसे भिन्न अपना स्वतन्त्र महत्त्व रखता है। वर्तमान वैज्ञानिक युगकी अभूतपूर्व एवं युगान्तर-कारी उपलब्धियोंके बीच भी उसकी सत्ता एवं महत्ता अक्षुण्ण है क्योंकि वह मनोगत सत्यको व्यक्तित्वकी परिधिमें लाकर संश्लेषणके माध्यमसे उपलब्ध करता है जब कि विज्ञान निर्वैयक्तिक वस्तुगत सत्य तक विश्लेषणके द्वारा पहुँचना चाहता है। नवलेखन इस तथ्यसे विमुख नहीं है।

ऐतिहासिककी चेतनाके साथ मानवमें आस्था :
व्यापक एवं गहन

मानवके भविष्य, उसके विवेक, उसकी सदाशयता तथा उसकी रचनाशक्ति प्रति आस्थावान् होकर ही उसके स्वाभिमानकी धारणा सार्थक होती है। मानव प्रगतिकी कोई इयत्ता नहीं है और वर्तमान सांस्कृतिक संकटका कारण अनास्था उतना निहित नहीं है जितना विकासशील एवं अविकसित क्षमताओंके बीच व्यवधान तथा जीवन-रूपोंके भीतर युगोंसे व्याप्त असन्तुलनमें निहित है। वर्तमान युगमें यह व्यवधान तथा यह असन्तुलन और भी गहन एवं जटिल हो गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको एक व्यापक संगठन और सन्तुलनकी ओर ले जानेकी चेष्टा करना अथवा उसकी आवश्यकताका अनुभव करना आधुनिक मनोवृत्तिका परिचायक है। यह आस्था बहुधा इतिहासकी अनिवार्य शक्तिको स्वीकार करके चलती है।

सांस्कृतिक पराभव असह्य, आधुनिकताके नामपर आत्मघाती मनोवृत्ति अवांछनीय

आधुनिकताके नामपर सांस्कृतिक पराभवकी द्योतक, परमुखापेक्षी, आत्म-निषेधात्मक, यहाँ तक कि आत्मघाती प्रवृत्ति नवलेखनकी केन्द्रीय प्रवृत्ति नहीं है; क्योंकि एक तो उसमें मूल्यदृष्टिका अभाव मिलता है, दूसरे वह कृत्रिम चीत्कारोंकी भाषामें अपनी बात कहनेको विवश होती है; तीसरे उससे क्रान्ति और विद्रोहकी मूलभूत निष्ठा बिखर जाती है। अपनेको निरर्थक समझकर किसी भी मूल्यकी उपलब्धि नहीं की जा सकती क्योंकि मूल्य-बोधका उत्स मनुष्यमें ही निहित रहता है। अश्लीलता, कुत्सा, कुण्ठा तथा अन्यान्य विकृतियोंकी अभिव्यक्ति साहित्यमें वर्जित न हो यह भिन्न बात है किन्तु उन्हींपर विशेष बल देना अथवा उनसे बँधकर रह जाना अन्ततः अस्वस्थ मनःस्थितिकी सूचना देता है। नवलेखन वर्जनाओंकी प्रतिक्रिया मात्र न होकर अनुभूतिकी यथार्थता एवं समग्रताका परिचायक है। वैचारिकतासे समर्थित तथा अनुभवसे प्रमाणित, व्यक्तित्व-सम्पृक्त यथार्थ-ग्रहण उसकी प्रकृतिके अनुकूल रहा है। जिसके लिए वह मानव-चेतनाके अगणित अलक्षित आयामोंकी खोजमें प्रवृत्त हुआ है।

लेखक और पाठकके बीच सहचरण : सम-सम्बन्ध

नवलेखन अपने विशिष्ट पाठकके प्रति आत्मीयताका भाव लेकर चलता है। उसकी मुद्रा उपदेशककी न होकर सहभागी एवं सहयोगीकी होती है, जो समत्वकी भावनापर आधारित रहती है। उसका लक्ष्य पाठकका मनोरंजन करनेके स्थान पर सुसंस्कृत सौन्दर्य-बोधके साथ एक विशिष्ट उपलब्धिके रूपमें निजी अनुभवका सम्प्रेषण होता है जिसमें अनुभूतिकी सच्चाई अभिव्यक्तिको मर्यादित रखती है। पाठकसे उसका यह सम्बन्ध पूर्व-सम्बन्धकी तुलनामें नया कहा जा सकता है।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायित्व और दिशाके प्रश्न

लेखन और लेखककी सार्थकता इसीमें हो सकती है
कि वे मात्र युगको प्रतिबिम्बित न करते हुए उसे
उचित दिशा देनेके दायित्वको भी पूरा करें।

डॉ० शिवप्रसाद सिंह

बात 'भूखी पीढ़ी' की नहीं है, बात नवलेखनकी है : विशेषकर हिन्दी नव-लेखनकी जिसे चलते अब पन्द्रह वर्ष होने आये। पन्द्रह वर्ष किसी भी साहित्यिक प्रवृत्तिके लिए कम नहीं होते, अपनेको सार्थक और सफल प्रमाणित करनेकी दृष्टिसे।

इतना तो स्पष्ट है कि नवलेखनने जिस मनुष्यकी, आधुनिक मनुष्यकी, खोज की है वह पहले अन्वेषित मनुष्योंसे अधिक समर्थ और सक्षम है। यह मनुष्य न प्राचीनके प्रति अन्धमोहसे ग्रस्त है न भविष्यके प्रति निराधार कल्पनाओंसे प्रेरित; यह मनुष्य आधुनिक युगकी सभी विषमताओंके बीच संघर्ष करते हुए मनुष्यकी मूल चेतना यानी स्वतन्त्रताकी सुरक्षाके लिए संकल्पित है। वह न किसी लिज-लिजी भावुकतासे द्रवित होता है न वैज्ञानिक बुद्धिवादिताकी मशीनी चेतनाके सामने अपनी आत्मानुभूतिकी बलि ही देता है। वह स्वयं जीनेके लिए प्रतिश्रुत है और दूसरोंको अपनी व्यक्तिगत मान्यताओंके अनुसार जीनेका अधिकार देता है।

सहज ही, इसलिए नवलेखनके रचनाकारोंका उत्तरदायित्व दोहरा हो जाता है। उन्हें अपने या दूसरोंपर निर्णय लादनेकी अपेक्षा अपनेको और दूसरोंको समझनेका प्रयत्न करना ही अभीष्ट है। और क्योंकि वह किसी भी बाहरी आदर्श से आरोपित मूल्य या प्रतिबन्धोंको स्वीकार नहीं करता, इसलिए उसे अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्र गतिविधिके प्रति अपेक्षाकृत अधिक सावधान, सचेत और व्यावहारिक होनेकी आवश्यकता है। विरोधी मत रखनेवालोंके प्रति सहनशीलता, धैर्य, और सहानुभूतिकी अनिवार्यता पहलेकी अपेक्षा आज कहीं अधिक है।

यह अवश्य है कि नवलेखन अपने प्रेरणा-स्रोतोंके लिए किसी भी प्रकारके देशकालकी सीमाएँ स्वीकार नहीं करता, क्योंकि हम यह मानकर चलते हैं कि मनुष्यताकी विकास-यात्राओंके पथ सब कहीं समानान्तर हैं और कि आधुनिक मनुष्यकी परिस्थितियों और उसके संघर्ष खण्डशः विभाजित नहीं किये जा सकते। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपने निकटतम परिवेशसे उदासीन हैं, उदासीन हुए रहें। देशमें महँगाई, भ्रष्टाचार, निराशा, कुण्ठा और किंकर्तव्य-विमूढ़ताका भाव निरन्तर घना होता जा रहा है। आक्रान्ता शक्तियाँ अवसर-वादिताके आधारपर संघटित हो रही हैं। पूरा परिवेश भीतरसे विदीर्ण और बाहरसे आक्रान्त होता जा रहा है। स्थिति शोचनीय है, इसपर दो मत नहीं। मतान्तर केवल इसपर हो सकता है कि इसे चिन्ताजनक कहें या निराशाजनक।

देशकी वर्तमान दशा आश्चर्यजनक रूपसे १९४०-५० के बीच फ्रान्समें व्याप्त स्थितिके समान दिखाई पड़ती है। फ्रान्स एक वैभवपूर्ण अतीतवाला महान् सांस्कृतिक परम्पराका देश था। किन्तु नाज़ी आक्रमणके सामने वह भहरा कर गिर पड़ा। सारा देश अपमानके कड़वे घूँट पीकर रह गया। प्रतिरोध आन्दोलनों की सक्रियता बढ़ी, सभी तरहकी विचारधारावाले लोग संघटित होकर स्वतन्त्रता के संघर्षके लिए आगे बढ़े। मुक्ति मिली, पर यह मुक्ति निष्फल रही। स्वतन्त्रता की स्थापित एकोद्देश्यता खण्डित हुई। प्रजातान्त्रिक समाजवादी शक्तियाँ जिनसे कुछ आशा थी दिशाहारा बन गयीं। कम्युनिस्टोंमें सरगरमी अवश्य बची रही।

उस समयके साहित्यमें एक अजीब तरहकी स्थिति दिखाई पड़ी। एक ओर साम्यवादी मान्यताओंसे प्रेरित फ़ॉर्मूलोंपर आधारित कृत्रिम राजनैतिक साहित्य था जो साम्यवादी समाजके निर्माणका एक साधन-भर माना जाता था और जहाँ लेखकको व्यक्तिगत स्वतन्त्रताका, उसकी अपनी निजी अनुभूति और प्रेरणा-का कोई मूल्य न था। दूसरी ओर इसकी प्रतिक्रियामें जो आधुनिक मान्यताओंसे प्रेरित नवलेखन था, वह मूल्योंके विघटनसे इस तरह पंगु होने लगा कि लोगोंको साहित्यके प्रयोजनमें ही शंका होने लगी। इस व्यक्तिगत स्वतन्त्रताका अर्थ दायित्वहीनता मान लिया गया और अतियथार्थवादियोंने जिस मूल्य-विघटनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभियान किया उसने साहित्यके मूल्यों तकको ध्वस्त कर दिया। इसे वहाँ 'साहित्यिक आतंकवाद'की संज्ञा दी गयी। 'साहित्य क्या है, और समाजमें इसका कोई महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है क्या ?' – ये प्रश्न थे जो उन दिनों फ्रान्समें सबसे अधिक चरचाका विषय बने। इसी स्थितिमें साहित्यको जलमग्न होनेसे बचानेके लिए सार्त्रने प्रतिबद्धता (कमिटमेण्ट) की बात की थी। यह अलग बात है कि उन्हें आज खुद समाजमें साहित्यकी उपयोगितापर कोई विश्वास नहीं रह गया है। पर सब-कुछमें विश्वास खो चुकनेके बाद भी सार्त्रने मनुष्यकी स्वतन्त्रता और उसकी अनिवार्यतामें विश्वास कभी नहीं खोया।

फ्रान्सकी तात्कालिक स्थितिसे भारतकी वर्तमान स्थितिकी तुलना करनेपर स्पष्ट होगा कि हिन्दी नवलेखन भी प्रगतिवादी साहित्यकी आरोपित फ़ॉर्मूलावादी प्रवृत्तिमूलक मान्यताओंके प्रति विद्रोहके रूपमें खड़ा हुआ। व्यक्ति-स्वातन्त्र्य उसका मूल मन्त्र था। उसने अपनी समूची शक्ति लगाकर साहित्यको आरोपित राजनैतिक मूल्योंका विवश माध्यम बननेकी विवशतासे मुक्ति दिला दी। 'किन्तु मुक्तिका यह अभियान कहीं मूल्य-मूढ़ताको प्रश्रय तो नहीं दे रहा है ? मूल्योंका विघटन हमें शून्यमें निमज्जित तो नहीं कर रहा है ? कहीं हम सामाजिक दायित्वसे पलायन तो नहीं कर रहे हैं ?' – ये प्रश्न आज अनिवार्य रूपसे हमारे सामने खड़े होते हैं। पूछा जा सकता है कि इस स्थितिमें साहित्यकार कर ही क्या सकता है। भारतकी राजनीति, उसकी पार्टियाँ, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ सभी कुछ तो निराशाका कारण हैं; फिर साहित्यकारसे आशा और आस्थाकी माँग करना क्या उसके ऊपर एक काल्पनिक मूल्यको आरोपित करना नहीं है ? मैं इसे मान लेता हूँ; मगर जिस आधुनिक मनुष्यकी परिकल्पना लेकर हम चले हैं उसकी सारी परिभाषाएँ ऐसे ही मूल्य-संकटमें तो परीक्षित होती हैं। एक ऐसा संकट जिससे छुटकारेका कोई उपाय नहीं, कोई रास्ता नहीं, हमारी आधुनिक मनुष्यताका अनिवार्य अभिशाप है। इसी कारण आधुनिक लेखककी चेतनापर आज जो दबाव वर्तमान है, वह बिलकुल भिन्न प्रकारका है। फिर भी उससे जूझने और तोड़नेके लिए वह कृतसंकल्प है। और इसकी समूची पद्धति, स्ट्रैटेजी, भी उसे ही निर्मित करना है। यह सब वह तभी कर सकता है जब वह निरन्तर इस बोधको जाग्रत रखे कि वह दोहरे इजलासमें खड़ा है। एक अपने भीतरका पराभौतिक इजलास, दूसरा अपने बाहरका सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इजलास। दोहरे निर्णयकी यह चेतना ही उसकी समूची शक्तिका स्रोत है।

आधुनिक परिस्थितियोंकी सही व्याख्या न कर सकनेके कारण तथा साहित्येतर मान्यताओंके पूर्वग्रहके कारण नवलेखनका परीक्षण भी नाना प्रकारकी अन्धघाटियोंमें घसीटा जाता है। सामयिक साहित्यके परीक्षणमें हमेशा ही तरह-तरहके घात-प्रतिघात चलते हैं, जो हमेशा साहित्यको दृष्टिमें रखकर ही नहीं किये जाते। नवलेखनका विरोध कई स्तरोंपर होता है। एक स्तर वह है जहाँ नवलेखन किसी भी रूपमें स्वीकार किया ही नहीं जाता। यह स्तर प्रायः ऐसे लोगोंका है जो युग-चेतनासे पूर्णतः वंचित हैं। वे गहराईमें उतरकर समस्याओंको समझना चाहते ही नहीं। दूसरा स्तर वह है जहाँ नवलेखन प्रतिरोधी शक्तिके रूपमें स्वीकार किया जाता है, यहाँ यह मानकर चला जाता है कि युद्ध और प्रेममें कुछ भी नाजायज नहीं है। तीसरा स्तर उन लोगोंका है जो नवलेखनके प्रति साहित्येतर कारणोंसे शत्रु-भाव रखते हैं और उसे नाना प्रकारसे आहत करनेके लिए पैंतरे बदला करते हैं। ये तीनों ही स्तर नवलेखनके विरोधी हैं। किन्तु जैसा मैंने पहले ही कहा कि आधुनिक मनुष्यको विरोधीपर निर्णय लादनेकी उतनी उतावली नहीं होनी चाहिए, जितनी उसे समझनेकी। यदि हम उसे सही ढंगसे सहानुभूतिपूर्वक समझनेकी कोशिश करें तो खिचावका वातावरण कम हो सकता है और भिन्न धारणा रखनेवाले लोगोंमें भी सौमनस्य और सौहार्दकी स्थापना हो सकती है।

अलबेयर कामूने लिखा है : "हममें-से प्रत्येकके भीतर जेलखाने हैं, अपराधभाव है, ध्वन्सात्मक तत्त्व हैं। किन्तु इन्हें समाजमें उगलना हमारा कर्तव्य नहीं है। हमारा कर्तव्य इनके विरुद्ध अपने भीतर और दूसरोंके भीतर निरन्तर जूझते रहना है। इसी दृष्टिसे लेखकका पेशा एक गौरवपूर्ण पेशा है क्योंकि वह खुद इसे पूरा करके अपने कर्तव्यके प्रति कृतज्ञ होता है।"

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहासकी घाटियोंसे

भारतमें आधुनिक टाइप-निर्माण-सम्बन्धी भूले-बिसरे महत्त्वपूर्ण तथ्योंका अनुसन्धान-उद्घाटन

कृष्णाचार्य

आधुनिक मुद्रण और टाइप-निर्माणका भारतमें स्थायी आरम्भ कलकत्तासे हुआ जब चार्ल्स विल्किन्स (१७५०-१८३६) ने पहली बार बँगला टाइप बनाये। चार्ल्स विल्किन्स १७७० में भारत आये थे और ईस्ट इण्डिया कम्पनीके एक उच्च अधिकारी होनेके साथ-साथ भारतीय वाङ्मयके प्रेमी भी थे। उन्होंने संस्कृत भाषा और साहित्यका अभ्यास कर भगवद्गीता, हितोपदेश और अभिज्ञान-शाकुन्तलका अँगरेज़ी अनुवाद तक किया था।

उस समय कम्पनीके कर्मचारियोंको बँगला भाषाका ज्ञान कराना अधिकारियोंको अपेक्षित जान पड़ा। मुख्यतः इसी दृष्टिसे कम्पनीके एक पदाधिकारी नैथेनिएल ब्रैसी हॉलहेडने 'अ ग्रामर ऑव बेंगाली लैंग्वेज' की रचना की। यह कृति जब मुद्रणार्थ मि० ऐण्ड्रयूज़के हुगली प्रेसमें पहुँची तब इसके लिए बँगला टाइपकी आवश्यकता हुई, जो मि० विल्किन्सने बनाये। इसके बाद, अपने संस्कृत-प्रेमके कारण मि० विल्किन्सने नागरी टाइप बनानेके भी प्रयत्न किये। पर उनके टाइप-निर्माण-सम्बन्धी विचारों और प्रारम्भिक कार्यको पूर्णता एक बंगाली कारीगर, पंचानन कर्मकार-द्वारा प्राप्त हुई। इतना ही नहीं, पंचाननने अन्य भारतीय लिपियोंके भी टाइप बनाये। इस प्रकार, भारतमें बँगला और नागरी टाइपके सर्वप्रथम निर्माणकर्त्ता ये दो व्यक्ति हैं और १८०८ में इन विल्किन्स महोदयकी जो संस्कृत व्याकरण पुस्तक निकली उसमें प्रयुक्त नागरी टाइपके समान सुन्दर टाइप भारतमें उस समय तक नहीं बन पाया था।

पंचानन कर्मकार उस समय प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ कोलब्रुक महाशयके कर्मचारी थे और उनके बंगलेके पास ही रहते थे। इनके बनाये टाइपोंका परिचय कल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कत्तकी एक टाइप फ़ाउण्ड्रीके विज्ञापनके माध्यमसे १७९८ में बैप्टिस्ट मिशनरी विलियम केरीको मिला। इन्होंने अपने श्रीरामपुर प्रेसमें टाइप बनवानेके लिए पंचाननको मि० कोलब्रुकसे माँगा और अनेक प्रकारके अनेक प्रयत्न करनेके बाद केवल कुछ समयके लिए उसे प्राप्त करनेमें सफल हुए। बादमें तो, जब पंचानन श्रीरामपुर आ गये, तब कुछ डेन्मार्क प्रशासनके सहयोगसे और कुछ अपने अनुनय-पूर्ण व्यवहारसे केरीने उसे सदाके लिए ही वहाँ रोक लिया। १८०७ में प्रकाशित मेमॉएर (श्रीरामपुरसे) में लिखा गया कि –

"परमपिता परमेश्वरकी कृपासे हमें प्रेस स्थापित करते ही ऐसा कलाकार मिल गया जिसने चार्ल्स विल्किन्सके विचारोंको अच्छी तरह हृदयंगम कर लिया था। उसकी सहायतासे हमने टाइप फ़ाउण्ड्री लगायी। वह कलाकार यद्यपि अब दिवंगत हो चुका, किन्तु अपनी कला कई साथियोंको इतने अच्छे रूपमें दे गया है कि वे लोग अब सुन्दर-सुन्दर टाइप बना रहे हैं। ये टाइप इतने शुद्ध हैं कि इनकी तुलना किसी भी योरॅपीय कलाकारके बनाये टाइपोंसे की जा सकती है।" केरीके जीवनी-लेखक जॉर्ज स्मिथके शब्दोंमें : "देवनागरीका यह एकदम नया, फ़ाउण्ट भारतमें निर्मित सबसे सुन्दर टाइप माना जाता है। इसमें लगभग १००० टाइप समूहका उपयोग होता है।"

आगे चलकर पंचाननके भतीजे मनोहरने टाइप-निर्माण कलामें इतनी दक्षता प्राप्त कर ली कि "वह भारतीय भाषाओंमें प्रयुक्त प्रायः सभी लिपियोंके टाइप बनाने लगा, और ४० वर्ष तक उसीके बनाये टाइप मिशन-प्रेस तथा बिक्री-वितरणका प्रधान आधार बने रहे। मनोहर अन्त तक लोहार जातिका हिन्दू बना रहा और श्रीरामपुर १८६० तक पूर्वीय देशोंका टाइप-निर्माण केन्द्र। सही-सही कहना हो तो यही कहा भी जा सकता है कि नागरी टाइपका जन्मस्थान कलकत्ता नहीं, हुगली और श्रीरामपुर हैं। श्रीरामपुरमें ही प्रथम बड़ी टाइप फ़ाउण्ड्री बनी जिसने बम्बई तककी टाइपोंकी माँग पूरी की।

बम्बईमें, उपर्युक्त प्रयत्नोंसे पूर्व, १६७४-७५ में भीमजी परेख नामक व्यक्तिने एक प्रेस चालू करना चाहा था, किन्तु काग़ज़ और टाइप आदिके लिए अँगरेज़ व्यापारियोंपर निर्भर होनेके कारण प्रयत्न आगे बढ़ न सका। १६७८ में छपी एक पुस्तक 'होर्टस इण्डिकस मलाबारीकस' का विवरण मिलता है। पर यह ब्लॉक-प्रणालीसे छपी थी। ब्लाक-प्रणालीसे ही १८०५ में मीरजके शासक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गंगाधरराव गोवर्धन पटवर्धनकी सहायतासे नाना फड़नवीसने एक गीता भी छपायी। इसके लिए ताँबेके ब्लाक बने थे और भारतीय ब्लॉक-मुद्रणका सम्भवतः यही पहला नमूना है। इसकी प्रति मीरजके संग्रहालयमें सुरक्षित है।

बम्बईमें भारतीय भाषाका पहला प्रेस २८१२ में स्थापित हुआ था जिसका श्रेय फ़रदूनजी मर्ज़बानको है। इसी प्रेसमें १८१४ में मराठी पंचांग (संवत् १८७१ वि०) छपा था। इसे बम्बईसे मराठी लिपिमें छपी पहली पुस्तक मान सकते हैं। किन्तु बम्बईमें टाइप-द्वारा मुद्रणका इतिहास अमेरिकन मिशन प्रेससे प्रारम्भ होता है जो १८१६ में स्थापित हुआ। इस प्रेसमें एक लकड़ीका प्रेस था और एक फ़ाउण्ट मराठी टाइप, जो सम्भवतः श्रीरामपुरकी फ़ाउण्ड्रीसे मँगाया गया था। उन दिनों टॉमस ग्रैहम नामक एक लड़का ईस्ट इण्डिया कम्पनीमें नौकर था। वह जीवनवल्लभ लोहारके यहाँ धौंकनी चलानेका काम करनेसे लोहा गलाने आदिका काम सीख गया। अमेरिकन मिशन प्रेसके व्यवस्थापकने इसे टाइप बनानेके लिए प्रोत्साहित किया और कालान्तरमें इसीके आग्रहपर बम्बईमें एक पूरी फ़ाउण्ड्री खड़ी करनेकी सामग्रीके साथ एलिजा ए० वेब्स्टर अमेरिकासे वहाँ पहुँचे। ग्रैहमने पंच बनाये और वेब्स्टरने ढलाईके लिए साँचे, और १८१८में टाइपका पहला फ़ाउण्ट, कलकत्तेसे अच्छा, बनकर तैयार होगया।

इसी प्रेससे नागरी और गुजराती टाइप बनानेकी स्वतन्त्र परम्पराका विकास हुआ, यहीं ग्रैहमसे रामजी और जीवनवल्लभने टाइप-निर्माण कला सीखी। गुजराती टाइप पहली बार जीवनवल्लभने बनाये। ग्रैहमसे ही जावजी दादाजीने मुद्रण-कलाकी दीक्षा ली और अपनी भारत-प्रसिद्ध निर्णयसागर प्रेस और टाइप फ़ाउण्ड्री की स्थापना (१८६४) की। इसी फ़ाउण्ड्रीमें रानूजी रावजीने मराठी (देवनागरी) और गुजराती टाइप बनाये। स्वभावतः अबसे नागरीके नयनाभिराम टाइप बम्बईमें ही बने, कलकत्ते नहीं; और सुडौल-सुस्पष्ट तथा टिकाऊ नागरी टाइपके निर्माणके लिए निर्णयसागर फ़ाउण्ड्रीने सब कहीं ख्याति अर्जित की।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू-शू के नाम

एक पत्र जिसे लिखना टालते न बना

पद्मधर त्रिपाठी

सुपर्णा॰ वाराणसी
जुलाईकी तीसरी साँझ

प्रिय तू-शू,

तुम्हारे पत्र : दो उस महीने, एक कल। वही लिनेन पेपर, वही दबी-दबी गन्ध, पर डाक-मुहर इसपर तोक्यो की नहीं फू-यो की। अर्थात् घर पहुँच गयीं ? अच्छे हैं सब ? वह सफ़ेद गुलाब और दूबिया पाँखीका जोड़ा भी ?

उन पत्रोंका उत्तर नहीं गया, पर तुम्हारी याद आयी। सामने सजीं यह दृश्य-छवियाँ छेड़तीं ही। कोई और चित्र आँके इस बीच ? और आकाशी नोट-बुकवाले वे हाइकू, सब कितने हुए अब ? कुछ वर्षके प्रवासमें जितनी हिन्दी तुम सीख गयीं और जिस सहजताके साथ नयी कविताका मर्म चीन्ह चलीं वह सचमुच एक प्रीतिकर आश्चर्य है। मुझे अपनी वर्णमाला तुमने दी : मैं तो उसीमें उलझा झीमता रह गया !

मेरे मनकी नयी कविता पुस्तकोंके बारेमें तुम फिर पूछ उठीं। चाहूँ भी तो तुम्हारी जिज्ञासाको अब टालते शायद ही बने। टालना मुझे चाहिए भी नहीं : एक स्वस्थ-स्वाभाविक जिज्ञासा, वह भी तुम्हारी ! सोच और संकोच होता है तो अपने ही साहित्यिक जगत्की कुछ प्रवृत्तियों और मनोवृत्तियोंके कारण। तुम नहीं जानतीं नयी कविताके लिए अपेक्षित दृष्टि और भावका वातावरणमें अब भी कितना अभाव है। हम स्वयं परस्पर तीन और छह हुए रहते हैं। जैसे नयी कविता एक द्वीपसमूह हो, और इतिहास भले इन द्वीपोंको एक भूखण्डका अंग कहे, ये अपनेको स्वतन्त्र इकाइयाँ समझें : केवल राजनैतिक सम्बन्धोंमें एक-दूसरेसे जुड़े-न-जुड़े। कितनी पीड़ा और कैसी आत्मप्रतारणाकी स्थिति है तू-शू !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर छोड़ो, अपने भरसक तुम्हारी जिज्ञासाका उत्तर दूं ! पहले धर्मवी
भारतीकी 'कनुप्रिया' और 'सात गीत वर्ष' को लूँ ? 'कनुप्रिया' तुम्हें दी भी थी
जब तुम शान्ति-निकेतनसे लौटी थीं और बांग्ला कवितापर मुग्ध थीं। मेरी
धारणा है कि यह तन्वी काव्य-कृति नयी हिन्दी कविताके इतिहासकी एक घटना
है। समूची पुस्तक काव्य-सौष्ठव और अभिव्यक्तिके अनूठे संयमसे अनुप्राणित
भारतीने इसके द्वारा तन्मयतासे जिये हुए प्रत्येक क्षणकी सार्थकताको देखते
दिखाते चेतनासे साक्षात्कार किया है। यही क्या कवि-धर्म भी नहीं ? कहीं-कहीं
उर्दू शब्दोंका प्रयोग अवश्य ही झटके देता है। ऐसे स्थल भी कई आते हैं जो
निराश करें; पर कृतिका सम्पूर्ण प्रभाव प्रभावित नहीं होता। 'सात गीत वर्ष'
की कविताएँ भिन्न भूमिकी हैं। ये यथार्थके प्रति ऐसे भावोंका संवहन करती
हैं जो प्रतिक्रियाको गहरे स्तरपर संवेदित तो करें पर किसी मोह या आसक्ति
को उत्पन्न न होने दें। भारतीका यह संकलन हिन्दी कविताकी अधुनातन दिशा
प्रवृत्ति, भाव-बोध और शिल्पकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है। रह-रहकर दुःख इसका
होता है कि यह कवि-प्रतिभा अब पत्रकार-जगत्‌की हो रही।

यहीं जगदीश गुप्तके पिछले दिनों आये कविता-संग्रह 'हिम-विद्ध' और उसके
पूर्वग 'शब्द-दंश' को भी ले लूँ। भारती मेरे प्रिय कवि हैं, पर जगदीश गुप्तकी
कविताएँ मुझे ऐसा बाँधती हैं, अपनेमें यों रमा लेती हैं, कि छूटने-छूटनेको हो
कर भी मन उनकी अदृश्य पाशोंसे छूट नहीं पाता। 'हिम-विद्ध'की कविताएँ
प्रत्यक्ष ही 'सेन्सेज़' से परे चेतनाके सूक्ष्म तारोंको स्पर्श करती हैं। जगदीश गुप्त
चित्रकार हैं, अपनी शैली और विषय-अभिव्यक्तिके विशिष्ट : तुम्हारी प्रकृतिमें
छाँव और चाँदनी यहाँ भरपूर मिलेगी। 'शब्द-दंश' नयी कविताकी एक प्राप्ति
णिक उपलब्धि है और, तू-शू, 'हिम-विद्ध' तो अपनी भावानुभूति और अभिव्यक्ति
क्षमताके कारण अनूठी ही कृति है। तुलाधर जो भी कहें : वे विज्ञ हैं; पर क्या
हिमविद्धतासे वे कुछ भी परिचित होते ! प्रति भेजूँगा। तुम्हें एक सुखद विह्वल
देगी और तुम्हारी तूलिकाको कुछ बहुत-कुछ।

पुस्तकें बहुत रह गयीं। 'आँगन के पार द्वार' और 'लोकायतन' के बारेमें
तुमने विशेष रूपसे पूछा है। तुम्हारा मधुर आदेश सिर-आँखों, पर पूर्ति अगले
पत्रमें। ठीक न, मेरी जैपेनीज़ डॉल ?

—पद्मधर तुम्हा

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंका प्रतिक्रिया

पुस्तकके लेखन-प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी
इकाई अधूरी रहेगी जबतक पारखी पाठककी
प्रतिक्रिया प्रकाशकके पास होती लेखककी
मेज़ तक न पहुँचे

• चिन्तककी लाचारी

माखनलाल चतुर्वेदी

पं० माखनलाल चतुर्वेदी विश्रुत चिन्तक-मनीषी हैं जिन्हें हिन्दीकी दुनिया 'एक भारतीय आत्मा'के नामसे कविके रूपमें जानती है। लेकिन उनका पूरा परिचय देनेके लिए इतना और कहना ज़रूरी है कि वे एक तेजस्वी पत्रकार भी रहे हैं जिन्होंने पत्रकारिताको देश-सेवाके अनुकूल माध्यमके रूपमें अपनाया था। और हिन्दीके दो-चार विशिष्ट वक्ताओंमें एक नाम माखनलाल चतुर्वेदीका लिया जाता है। 'चिन्तककी लाचारी' अकेले इस बातका साक्ष्य प्रस्तुत करती है। यानी कि 'चिन्तककी लाचारी'में संकलित माखनलालजीके भाषण उनके समग्र व्यक्तित्वको एक पूर्णताके साथ प्रस्तुत करते हैं। यहाँ कवि, चिन्तक, पत्रकार और वक्ता माखनलाल चतुर्वेदीसे एक साथ हमारी भेंट होती है जो अपनी धरतीपर सहज आस्थासे खड़े होकर जातीय प्रश्नोंपर हमें अपनी दृष्टि देते हैं। एक छोटे गद्य-संकलनकी यह एक बड़ी उपलब्धि है।

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विषयोंके चौदह वक्तव्योंका संकलन है जो वैचारिक दृष्टिसे तो समृद्ध है ही प्रकाशनकी दृष्टिसे भी काफ़ी सुरुचिसम्पन्न है।

पुस्तकमें संकलित अधिकांश भाषण उस समयके हैं जब जातीय स्वाधीनताके लिए पूरा देश जूझ रहा था और काफ़ी गहराईसे हम महसूस कर रहे थे कि "भारतमें हमारे अज्ञानपर जीनेवाला शासन होनेके कारण हम सदैव विश्वके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानको बहुत देर बाद पाया करते हैं।" और इस लाचारीके चलते हम बहु
सी ग़लत बातोंको सही मानते रहे हैं। जैसे अपनेको बड़ा सिद्ध करनेके लि
धरती छोड़कर गगनविहारी बन जाना और आकाशकी बोली बोलने लगना
ऐसे ही आकाशी जीवको टोकते हुए पं० माखनलालजी कहते हैं, "नहीं, आ
मानके-से विचार हों, परन्तु हम ज़मीनपर हैं, यह न भूलें। हमें जो बोल
होगा, ज़मीनकी बोलीमें बोलना होगा। वे ज़मीनपर रहते हैं जिनमें हम ज
हैं। हम ज़मीनपर पैदा हुए हैं, और ज़मीनकी उथल-पुथलके सन्देशवाहक होत
ही हमें रहना है। अतः आसमानकी बातें भी हम ज़मीनको बोलीमें बोलें
यह बात विशेष रूपसे उन्हें लक्ष्य कर कही गयी है जो कृत्रिम पंख खोंसकर हमें
उड़ते-उड़ते चलते हैं। और "जिन्हें साहित्य-निर्माणकी नहीं, केवल साहि
परोसनेकी आदत है।" माखनलालजीके शब्दोंमें "वे महापुरुष हो सकते
किन्तु साहित्यिक नहीं।"

हम जानते हैं, नवलेखनमें एक रुग्ण धारा चल रही है और आजकी ए
आम शिकायत है कि हमें सुविधा-साधन नहीं मिलते, हम अपनी रचनात्म
शक्तिका प्रमाण कैसे दें। माखनलालजीका इस धारासे, इन अनास्थावादियो
किसी प्रकारका समझौता नहीं हो सकता। उनके असन्तोषको, उनकी भूख
उनके त्रासको यानी उनकी पूरी लाचारीको सही रूपमें स्वीकारते हुए
माखनलालजीने उनकी पलायन-वृत्तिको कभी प्रश्रय या संरक्षण नहीं दिया क्यो
उनका विश्वास है कि "चिन्तककी रचनाके लिए नन्दन कानन ढूँढ़नेकी जर
नहीं हुआ करती। किन्तु लोग तो हैं कि उन्हें पहाड़का चित्र बड़ा प्यारा ल
है, किन्तु प्रत्यक्ष पहाड़को चट्टानोंको देखकर उससे अरुचि और विरक्ति
बिना नहीं रहती। ख़यालोंका यह जनानापन हमारी शहराती पीढ़ियोंमें
वेगसे आ गया है। कभी संस्कृति, कभी इतिहास, और कभी रसके नाम
कोमलताके क़ायल होते हुए हम मानो प्रत्यक्षकी प्रखरताका सामना ही
करना चाहते।" वर्गवादी न होते हुए भी माखनलालजीने इन फ़ैशनप
कलावादियों और व्यक्ति-गुहामें सिमटे साहित्यकारोंके पूरे वर्गके विरुद्ध
आवाज़ उठायी है।

अपने समानधर्मा और सनातन-पीड़ित कृती साहित्यकारोंके प्रति
मनमें पूरी हमदर्दी है; लेकिन वे ख़ूब जानते हैं कि बड़ी रचनाके लिए बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी झेलनी पड़ती है और संघर्षोंमें ही स्वस्थ साहित्यका निर्माण होता है। कदाचित् इसीलिए बम्बई विद्यापीठके दीक्षान्त समारोहमें उन्होंने निःसंकोच होकर कहा था, कि "हिन्दी-भाषियोंसे यदि मैं कहूँ या समस्त भारतीय साहित्यिक तरुणाईसे मैं कहूँ तो, प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसादकी मौत मैं आपको सौंपता हूँ। मैंने सुना कि वे अपना इलाज नहीं करा सके। यह भी जाननेकी बात है कि जीते-जी मंगलाप्रसाद पारितोषिक नहीं पा सके। न हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापतित्वका गौरव उन्हें दिया गया।" इसी प्रकार सूर-तुलसी, कबीर, मीरा और हरिश्चन्दकी ज़मीनकी याद दिलाते हुए १९४१ में ही माखनलालजीने कहा था कि "यह ज़मीन आज मेरी और आपकी नहीं। अतः इसके आँसू, इसके बन्धन, इसकी ज़बानपर लगा ताला, इसके जीवनपर लगा पहरा, और इसके अन्नदा और प्राणदा होते हुए भी, इसकी ये भूख-स्मृतियाँ भी आज मैं आपको दीक्षादानमें देता हूँ कि कभी आपका साहित्य इन्हें मिटाने योग्य भी हो सके।" यह क्रान्तिकी भाषा और आस्थाका स्वर है जो स्वाधीन भारतके साहित्यमें एक अंश तक खण्डित हो गया है।

'बग़ावत' का नारा लगाते जिनका कण्ठ सूख रहा हो और 'बग़ावत' की माला जपते जो झपकी लेने लगे हों उनकी आँखोंपर छींटे मारकर माखनलालजी-की वाणी उन्हें सचेत करती है कि 'प्रतिकूलताका नाम बग़ावत नहीं है। प्राणों-पर खेलकर लोक-जीवनकी धाराको उन्नतसे उन्नततर जगत्की ओर घुमा देना सच्ची बग़ावत है। निर्माणके हर कील-काँटेको उखाड़ फेंकना बग़ावत नहीं है। जिस निर्माणपर मानव-पतन, मानव-दैन्य, मानव-आडम्बर, मानवकी कमज़ोरी और मानवके निरंकुश अत्याचारोंका प्रासाद खड़ा है, उसकी ईंटसे ईंट बजानेकी प्रेरणा देनेवाली हुंकार करना सच्चा विद्रोह है।" यह विद्रोहकी परिभाषा है। पूरी पुस्तक विद्रोहकी भाषामें है।

चतुर्वेदीजीके वक्तव्यमें अनौचित्य और आडम्बरका इतना कड़ा विरोध है कि उसका सीधा और गहरा असर होता है। इस बिगड़े ज़मानेमें ऐसी विद्रोह-वाणीका प्रकाशन एक साहसपूर्ण प्रयत्न है। इस पुस्तकका यानी इस पुस्तकमें संकलित माखनलालजीके भाषणोंका विशेष महत्त्व यह है कि यह इस बातका ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत करती है कि पराधीन भारतके लेखकों, चिन्तकों, कवियों और पत्रकारोंके पास एक निर्भीक वाणी थी जिसका ताप धीरे-धीरे बुझ रहा है या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना चाहिए स्वाधीन भारतमें वाणीकी वह निर्भीकता दुर्लभ हो गयी है। कहे
न होगा कि मानव अस्तित्वकी रक्षाके लिए, मानव महिमाकी प्रतिष्ठाके लि
निर्भीक वाणी पहली आवश्यकता है।

—कृष्णविहारी मि

• हिम-विद्ध

डॉ० जगदीश गुप्त

१

'हिम-विद्ध' के कवि डॉ० जगदीश गुप्त एक सिद्धहस्त चित्रकार हैं। अत
यह स्वाभाविक है कि उनकी कविताओंमें चित्रकलाके गुण विशेष रूपसे वर्तमान
हों। 'हिम-विद्ध' की अधिकतर कविताएँ चित्रधर्मा हैं। किन्तु जगदीश गुप्तने
चित्रकलामें आधुनिक शैली भले ही अपना ली हो, इन कविताओंमें आधुनिक
चित्रकलाकी शैलीका अभाव दिखाई पड़ता है। इन कविताओंके चित्र रोमैण्टिक
चेतनासे ही अनुप्राणित हैं। रोमैण्टिक भाव-बोधका एक प्रमुख लक्षण है प्रकृतिके
प्रति अहैतुक उद्दाम आकर्षण और प्राकृतिक दृश्योंके प्रति भावुकतापूर्ण कुतूहल
और आश्चर्यकी भावना। यों तो प्राकृतिक सौन्दर्य सभी चेतन व्यक्तियोंके मनको
छूता है पर रोमैण्टिक चेतनावाले व्यक्तिको वह अभिभूत कर देता है। ऐसे
व्यक्ति भावोच्छ्वसित होकर दृश्यके प्रति मोहासक्त और समर्पित हो जाता है
और इस प्रक्रियामें यथार्थ जीवन तथा वस्तु-निष्ठ सत्यसे दूर हट जाता है।
आधुनिक कला वस्तुके प्रति तटस्थ दृष्टि रखकर सत्यान्वेषण करती है और इसे
ही 'तटस्थ रागात्मकता' कहा जाता है। जगदीश गुप्तकी दृष्टि तटस्थ नहीं
मोहासक्त है। वे हिमालयके कोमल, विराट्, निर्मल और पल-पल परिवर्ति
सौन्दर्यसे विद्ध हो गये हैं, उसके प्रति समर्पित हो गये हैं। आँखें फाड़कर वे
हिमालयके अंग-प्रत्यंगको शिशु-सुलभ कुतूहलकी दृष्टिसे देखते हैं :

"गया जिस-जिस अंग तक मन
विहग-शिशु-सा खोलकर निज पाँख
चकित हो पाया यही
वह तो कभी का बन चुका है आँख।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह इन कविताओंमें कविका भाव-बोध रोमैण्टिक भाव-बोधका ही थोड़ा-बहुत परिवर्तित रूप है। आधुनिक जीवनकी जटिलताओं और गहनताओंके सन्दर्भमें हिमालयके प्रति कविकी यह आसक्ति विशेष अर्थ नहीं रखती। यह सही है कि प्रकृति-चित्रणमें जगदीश गुप्तने छायावादी कवियोंकी तरह कल्पनात्मक ऊहाकी पद्धति नहीं अपनायी है पर अपने भावात्मक उद्वेगकी अभिव्यंजनाके लिए उन्होंने अलंकारोंका बहुत अधिक सहारा लिया है। ये कविताएँ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अत्युक्ति आदि अलंकारोंसे भरी हुई हैं। कहीं-कहीं आधुनिकता-का भ्रम उत्पन्न करनेके लिए वर्तमान सभ्यताके उपकरणोंको भी उपमान बनाया गया है:

"रश्मियों की सलाई पर चढ़ा
ऊनी इन्द्रधनु बुनती....."

इन कविताओंमें भावात्मक स्फीति इतनी अधिक मात्रामें है कि आधुनिक बोधवाले पाठकको इनसे ऊब हो सकती है। कविने योजनाबद्ध रूपमें ये कविताएँ लिखी हैं। वह प्रतिज्ञा करके चला है कि इस ग्रन्थमें केवल हिमालयसम्बन्धी कविताएँ ही रहेंगी। इस तरहकी योजना कोई बुरी बात नहीं है यद्यपि उसकी सफलताके मार्गमें खतरे अधिक होते हैं। जगदीश गुप्त, दुर्भाग्यवश, उन खतरों-को पार नहीं कर सके हैं। ऐसी योजनाबद्ध कविताओंमें विषय-वस्तुकी संकीर्णता-के कारण भावात्मक स्फीति और अलंकृतिका भारी खतरा रहता है। जगदीश गुप्तको भी इस खतरेसे होकर गुज़रना पड़ा है। फलस्वरूप उनकी योजनाकी सफलता सन्देहास्पद हो गयी है। पाठकके लिए एक ही प्रकारके भावों और चित्रोंकी निरन्तर पुनरावृत्ति असह्य हो जाती है। विचारोंकी गहनता और चित्रोंके चटकीले रंग भी इन कविताओंमें नहीं हैं जिससे पाठक इनमें कथ्यका वैविध्य और अनुभूतियोंके विस्तृत आयाम नहीं पाता।

इन कविताओंको पढ़कर लगता है कि जगदीश गुप्तको अपनी योजना कुछ और ढंगसे पूरी करनी चाहिए थी। यदि हिमालयसम्बन्धी एक काव्यात्मक यात्रिकी (ट्रैवलेट) की योजना बनायी गयी होती तो वह अधिक सफल हुई होती क्योंकि उसमें नाटकीय सक्रियता और गतिशीलता अधिक होती। भूचित्रां-कन (लैण्डस्केप) के ढंगके शब्दचित्र देनेकी योजना भी बहुत सफल हुई होती। इन दोनों पद्धतियों-द्वारा यह हिमालयसम्बन्धी नये ढंगका प्रबन्ध-काव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गया होता। वर्तमान रूपमें तो वह एक वैसा ही मुक्तक-काव्य है जैसा तुलसीदासकी गीतावली या कवितावली। जिस तरह आधुनिक चित्रकलामें दृश्य-चित्रोंका विशेष महत्त्व नहीं रह गया है, क्योंकि वह अधिकाधिक अमूर्त तथा निराकृतिमूलक होती जा रही है। उसी तरह आधुनिक कविता भी दृश्यांकनकी स्थितिसे बहुत आगे बढ़ आयी है। उसमें प्रतीकात्मक और संकेतात्मक बिम्बोंकी जो बाह्यतः खण्डित, ऊल-जलूल, और अस्वाभाविक प्रतीत होते हैं, अधिकता होती है। इस कसौटीपर कसे जानेपर जगदीश गुप्तकी ये कविताएँ आधुनिकता-की प्रवृत्तियोंसे विच्छिन्न और विगत-युगीन काव्य-प्रवृत्तियोंसे अनुप्राणित प्रतीत होती हैं।

—डॉ० शम्भुनाथ सिंह

२

'हिम-विद्ध' डॉ० जगदीश गुप्तकी तीसरी काव्यकृति है। डॉ० गुप्त हिन्दीके जाने-माने विद्वान्, आलोचक, कवि और चित्रकार हैं। एक ओर जहाँ वे मध्य-कालकी भक्तिकविता और रीतिकविताके मर्मी हैं, वहीं दूसरी ओर वे नयी कविताकी उपलब्धियोंके आस्थावान् पक्षधर-पोषक सम्पादक। एक ओर जहाँ वे लेखनीके समर्थ शब्द-शिल्पी हैं वहीं वे तूलिकाके व्यंजक चित्रकार। ऊपर-ऊपरसे कहीं विरोधी ध्रुवों और कहीं सहधर्मी स्तरोंपर कार्य करते हुए डॉ० गुप्तने अपने एक महत्त्वपूर्ण स्रष्टा व्यक्तित्वकी प्रतिष्ठा की है।

'हिम-विद्ध'का महत्त्व दो दृष्टियोंसे है। पहली तो उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका-की दृष्टिसे और दूसरे हिन्दीके असमृद्ध प्रकृतिचित्रणके सन्दर्भमें हिमवान्की सूक्ष्मातिसूक्ष्म सौन्दर्य-रेखाओंकी पुष्कल मर्मच्छवियोंके अवदात अंकनकी दृष्टिसे।

भूमिकाका महत्त्व भी दो दृष्टियोंसे है। एक तो समसामयिक कविताकी बनती हुई अकाव्योपयोगी रूढ़ियोंके सन्दर्भमें, दूसरे स्वयं कविकी रचनाओंके सन्दर्भमें। डॉ० गुप्तने नयी कविताकी सम्पादकीय टिप्पणियोंमें कई बार बड़े ही चिन्तनपूर्ण ढंगसे नयी कविताको एक शास्त्रीय पीठिका देनेका प्रयास किया है और उन्होंने अनेक नवीन प्रतिपत्तियाँ भी प्रस्तुत की हैं। 'हिम-विद्ध'की भूमिकामें भी कवि कुछ महत्त्वपूर्ण बातें उपस्थित करता है। प्रत्येक युगमें प्रकृतिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षणकी अजेयताकी व्याख्या करते हुए डॉ० गुप्त कहते हैं : "मुझे लगता है कि आजका मनुष्य ईश्वर और धर्मके रूढ़िबद्ध रूपसे किनारा करके भी अपनी सार्थकता, मानव मूल्योंपर अपनी दृढ़ आस्था रखकर तथा प्रकृतिसे अपने आदिम सम्पर्क-सूत्रोंको सजीव बनाकर ही विशेषता प्राप्त कर सकता है।....इसमें युगकी वास्तविकतासे पलायनकी गन्ध भी नहीं है। वरन् एक प्रकारसे उसीकी सर्वांगीण स्वीकृति है। इस कथनसे डॉ० गुप्तने प्रकृतिसे लगभग टूटते हुए समसामयिक कविके सम्बन्धको न केवल जोड़ा है वरन उसे नयी दृढ़ता प्रदान की है। वे ठीक कहते हैं कि "सम्पूर्ण जीवन केवल व्यंग्य और विडम्बना ही नहीं है और न दुःख और अभाव ही उसकी समग्रताको व्यक्त करते हैं।" अपनेको रोमैण्टिक और नियोरोमैण्टिक कहे जानेकी सम्भावनाका प्रतिवाद करते हुए डॉ० गुप्त 'नैसर्गिक सौन्दर्यके बहुविध आकर्षणोंसे उत्पन्न होनेवाली आत्मीयतापरक विमुग्धता', 'सत्यकी उपलब्धिसे प्राप्त होनेवाले अकलुष परितोष' तथा 'मनुष्य-मनुष्यके बीच मानवीयतासे सिक्त सम्बन्धोंका प्रतिफलन बनकर आनेवाली आस्थाका प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि आस्था, परितोष, विमुग्धताका यह पक्ष नष्ट हो जाये तो जीवनका गहरा अर्थ ही समाप्त हो जाये।

डॉ० गुप्तने समसामयिक कवितामें जहाँ 'विवेकपूर्वक दिशाबोध'के अधिकारको प्राप्त करनेका समर्थन किया है वहाँपर संकेत भी किया है कि 'केवल अभिव्यक्तिकी विच्छित्तियों और रूपगत वैचित्र्यपर बल देनेसे भावकी कमीको पूरा नहीं किया जा सकता।' प्रकट ही वे कहते हैं कि 'शक्तिका सन्धान करते हुए समसामयिक कविता और कला भी कुछ ऐसे उपकरणोंकी ओर उन्मुख होती गयी है जो स्वयं भाव न होकर उसके धारक या व्यंजक हैं। परिणामतः जो प्रभाव उसमें मिलता है बहुधा विचार, चिन्तन अथवा अभिव्यक्ति-कौशलकी देन है। अनुभूति इतनी समृद्ध नहीं हो सकी है जितनी किसी प्रौढ़ युगकी रचनाओंमें अपेक्षित होती है।' जाने-अनजाने आजका प्रत्येक ईमानदार सच्चा कवि नयी कवितामें रूपकी इन विच्छित्तियोंके मार्गपर चल रहा है और अनुभूतियोंके स्थानपर उसके पास कहीं कोई विचार होता है तो कहीं कोई आजकी विषमताओंका बार-बार कहा हुआ मुहावरा। लघुताके नामपर विराटता, समसामयिक विद्रूपों और विषमताओंके नामपर प्रकृतिकी नैसर्गिक शोभा, अनास्था और कुण्ठाके नामपर आस्था और मुक्तिके भावोंको कई बार तिरस्कृत कर दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविकताकी तीव्र अनुभूतिके कारण जब हम यह कार्य करते हैं तब तो ठीक रहता है किन्तु जब हम इन बातोंको छायावादी, रोमैण्टिक, नियोरोमैण्टिक कह कर उड़ा देनेकी कोशिश करते हैं तो निश्चय ही हम चाहे नयी कविताका शृंगार करते हों (?) लेकिन कविताका नहीं। शायद इसी अर्थमें डॉ० गुप्त अपनी कविताओंके लिए भूमिकाके अन्तमें कहते हैं: 'मेरे सन्तोषमें कोई कमी न होगी यदि ये कविता होनेकी अपनी मूल सार्थकता सिद्ध कर सकेंगी।'

'हिम-विद्ध' हिमालयके निकट दर्शनसे प्राप्त गहरी तन्मयतामें लिखी पचपन कविताओंका संकलन है। नैसर्गिक शोभासे विमुग्ध कविको इसके पहले 'नावके पाँव' और 'शब्द-दंश' में भी देखा जा सकता है। आधुनिक चेतना प्रकृतिकी नित्य नव मर्मच्छवियोंको उत्कीर्ण करनेमें कोई बाधा न बनकर उलटे एक ऐसा परिप्रेक्ष्य ही प्रदान करती है जैसा परिप्रेक्ष्य पहलेके कवियोंको नहीं प्राप्त था। इस संग्रहकी रचनाओंको पढ़कर ऐसा लगता है कि हम रूपाम्बरा प्रकृतिके आँगनमें निपट अकेले आकर फिर खड़े हो गये। हिन्दीमें 'प्रकृतिके कवि' पन्तजीका बादल और 'पावस ऋतुमें पर्वत प्रदेश'की पंक्तियाँ स्मृतिमें आकर लौट गयीं और लगा कि कल्पनाका द्राविड़ प्राणायाम उपस्थित करनेवाला बादल और पावस ऋतुमें पर्वत प्रदेशके चित्र-फलककी अपनी सार्थकता हो सकती है। लेकिन आवश्यक नहीं कि कल्पना और ईषत् अन्वीक्षणके कैमरेसे लिये गये हिमालयके चित्र गहरी तन्मयताको भी भाषा दे सकें। प्रस्तुत-संग्रहमें कवि विराट्, निर्वाक, प्रश्नवेत हिमवान्का सौन्दर्य देखकर मुग्ध होकर कहता है।

"देखा हिमवान् को
.....
शब्दहीन अट्टहास राशीभूत
कानों ने नहीं
मुग्ध आँखों ने सुना"

मर्मी आँखोंसे पढ़ा जाये तो एक विराट् स्तब्धकर अनुभूतिको कहनेमें बिना दुर्बोधता पैदा किये प्रयुक्त पदावलीका चरम लाघव कविके काव्य-शिल्पका चरम प्रकर्ष सिद्ध करता है। विन्दुओंसे जो पंक्ति बनती है वह कविकी विराट् सौन्दर्यी स्तब्ध भाववृत्तिकी जैसी उत्तम व्यंजना करती है वैसी शायद वह बहुत शब्दों नहीं कर पाती और फिर 'शब्दहीन अट्टहास राशीभूत' या आगेकी एक कवितामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिम नहीं यह
इन मनस्वी पत्थरों पर
निष्कलुष हो
जम गया सौन्दर्य"

या इस प्रकारकी अत्यन्त लघु चित्रपटीपर उस विराट्को कवि-द्वारा अपनी तीव्र प्रतिक्रियासे संश्लिष्ट रूपांकन इस संग्रहकी प्रायः सभी कविताओंमें किसी न किसी रूपमें मिलेगा।

'प्रकृति रमणीक है' शीर्षक कवितामें कवि अपनेसे पहलेके अधिकांश प्रकृति-चित्रणके परिप्रेक्ष्योंसे अपना प्रस्थान-भेद स्पष्ट सूचित कर देता है :

"प्रकृति रमणीक है
जिसने इतना ही कहा है
उसने संकुल सौन्दर्य के घनीभूत भार को
आत्मा के कन्धों पर पूरा नहीं सहा"

इसी सन्दर्भमें इस संग्रहकी कविताओंका पूरा विश्लेषण और मूल्यांकन सम्भव हो सकता है। कवि खाली विमुग्धताके स्तरपर प्रकृतिको निश्चय ही नहीं लेता वह उससे भी आगे जाता है :

"हिम-शिखर, निर्झर, नदी-पथ, चीड़-वन
मुक्त मन के लिए बन्धन हो गये,
दृश्य से छनकर समाये आँख में,
आँख से मन में बसे मन हो गये।"

जिस आत्मीयताके स्तरपर कवि हिमवान्को जीता है उसमें 'आँख-भर देखा कहाँ आँख भर आयी' के सिवा दूसरी मनःस्थिति हो ही क्या सकती है और ऐसी अन्तर्दशामें ही कवि कह सकता है

"हिम बहे क्यों
बहें मेरे अश्रु
जो उसकी अचीन्ही भंगिमाएँ
देखने को निकल आते हैं"

यह सब होते हुए भी वह विद्ध होकर भी विलीन नहीं हो जाता है। 'हिम-स्पर्श' शीर्षक कवितामें दो सार्थकताएँ एक दूसरेको स्पर्श करती हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिघल गया
बाहर का सारा हिम
भीतर के ताप से
पता नहीं मन ने जड़ता को त्यागा या गहा
कुछ क्षण बाद मुझे भान हुआ
मैंने हिम ने दोनों ने दोनों को
विवश एक साथ हुआ"

'बादलोंके वलय' शीर्षक खण्डमें प्रकृतिके अछूते चित्र अछूती शिल्प-सज्जाके साथ प्रकट हुए हैं !

"बादलों की झील के ऊपर
खिला शिखरों का कमल-वन
भोरने भर मूँठ कुंकुम-किरन-केसर
इस तरह फेंकी
वनों के गहन पुरइन पात सारे रँग उठे
ज्योति की बहुरंग झिलमिल मछलियाँ
झील के तलहीन बादल नीर में
बहुत गहरे बहुत गहरे तिर गयीं।"

इस प्रकारके उदात्त सौन्दर्यका एक बड़ा भरा-पूरा चित्रकोष ही 'हिम-विद्ध' है। इन सब चित्रोंमें कविका चित्रकार कहीं चित्रकी सूक्ष्मता प्रकट करनेमें कविसे आगे निकल जाता है कहीं कविका अन्तर्दर्शी रूप। किन्तु ज़्यादेतर दोनों साथ रहे हैं। इन अंकनोंमें कवि दृश्य-सत्ताके अन्तःस्थित छन्दको ही तटस्थ तूलिकासे उकेरनेकी कोशिश करता है और पूरे संग्रहके इन टटके-टटके अंकनोंके क्रममें हिमवान्के स्थिर-गत्वर, लघु-विराट्, स्फीत-सूक्ष्म दृश्योंको तद्वत लयान्विति ही देता गया है। इस छोटी प्रतिक्रिया-लेखनमें 'हिम-विद्ध'का पूरा विश्लेषण सम्भव नहीं है किन्तु इतना अवश्य कहा जायेगा कि पाषाणोंके आगे 'पकी ईंटकी कोमलता'के सहकारसे बने इस 'हिम-विद्ध' कवि-व्यक्तित्वने प्रकृति-चित्रणको एक नयी दिशा दी है और निश्चय ही यह नयी दिशा नयी कविताकी उपलब्धियोंको आत्मसात् करनेके बाद ही मिली है। इस आत्मसात् करनेकी प्रक्रियामें प्रकृष्ट कवि-व्यक्तित्वने जो एक क्लैसिकल-सी भंगिमा पा ली है उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर कोई कविको उसके पुराने पड़ जानेके खतरेसे आगाह करे तो यह निरी बकवास होगी ।

— जितेन्द्रनाथ पाठक

• झाड़ा

श्रीकान्त वर्मा

'झाड़ी' कहानी संग्रह है श्रीकान्त वर्माका । कथ्य और तन्त्र दोनों दृष्टियोंसे यह अन्य कहानी-संग्रहोंसे अलग है । संग्रह तो सभी अलग होते हैं । इसका अलगाव इस मानेमें है कि ये अपने रूप-रंगसे पृथक् अस्तित्वका बोध करा देती हैं । इस संग्रहकी यह सबसे बड़ी विशेषता है ।

– तो इन कहानियोंमें है क्या ? अच्छा तो हो कि 'बात बोले हम नहीं ।' – 'वह झाड़ी कभी लाँघ नहीं सकेगा', 'तुम एक मिट्टीका लौंदा हो जिसे हर कोई अपने चाकपर डाल सकता है', 'न रति ठीक हो सकती है और न वह ठीक हो सकता है', 'वह वर्षोंसे उसकी ओर चल रहा है मगर कभी उसके समीप नहीं पहुँच सका है', 'क्या आप सचमुच मानते हैं कभी कुछ हो सकता है ?' ये सब क्षण हैं आजके वातावरणमें जीते हुए आदमीके । उसे ट्यूमर हो गया है : व बेचैन है - वह ऐसी अनिर्णीत मनःस्थिति है जिसे न वह झटक पाता है, न अपना पाता है ।

वह झाड़ी न लाँघ पाता है और न लाँघ पायेगा क्योंकि खतरनाक जिन्दगी जीना उसके बूतेके बाहर है । फलसफ़ा बघारनेवाले इस दयनीय प्राणीके पास अपने पैर नहीं हैं, दूसरोंके हैं । अविनाश जी लेता है क्योंकि वह ज़िन्दगी नहीं जीता उसके नुसख़े जीता है । लेकिन यह नुसख़ेको नकार कर भी क्या जी पाता है ?

इस संग्रहकी कहानियाँ 'कल और अनुगूँज' मनको सबसे अधिक छूती हैं । समय था – मनुष्यसे बढ़कर कुछ नहीं था, समय है – मनुष्यसे दयनीय कुछ नहीं है । 'कल'में मनुष्यका यही पक्ष कहानीके रूपमें अधिक सही है, जो अ-कहानीके रूपमें आँका गया है । वह प्रेम करके भी प्रेम नहीं करता क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह अपने अहंसे प्रेम करता है। इस अहंसे भी वह सन्तुष्ट नहीं है, पछताता है। वह फिर सोचता है – दुःख बड़ा है। यह उसके अहंका दूसरा रूप है। वह फँसता है इसलिए कि बच नहीं सकता। उसका चाहा हुआ कभी कुछ नहीं हो सकता।

अकेलेपन और अजनबीपनकी जो अनुगूँज 'अनुगूँज'में सुनाई पड़ती है वह एकदम ताज़ी और अछूती है। क्या हम मदारी नहीं हैं? क्या तमाम शोर और क़हक़होंके बीचसे सन्नाटा नहीं उगता है? तमाशबीनोंसे घिरे हुए भी क्या हम अकेले नहीं हैं? उसके तमग़े (सफलताओं) की झंकृति कितनी बेगानी है। यह कहानी बहुत-कुछ पैरेबुल होकर अत्यन्त प्रभावशाली बन जाती है।

'दोपहर' एक मात्र कहानी है जो ट्यूमरसे अछूती है और अपने जीवटमें अकेली। 'शवयात्रा' फ़ान्सीसी कुबड़ेकी याद दिलाती है और वह यान्त्रिक है। अ-कहानियोंके बीच इस कहानीका संकलन मुँह बिराता मालूम पड़ता है।

पर इस संग्रहमें कुछ ऐसी कहानियाँ भी हैं जो नुसख़ेपर आधारित हैं – सन्त्रास या हॉररके नुसख़ेपर। 'उसका क्रॉस' और 'सोचनेवाला जानवर' ऐसी ही कहानियाँ हैं। सन्त्रस्त व्यक्तिकी एक स्थिति यह भी है कि अपनी रक्षाके लिए – निरालम्ब प्रत्यक्ष (हैलुसिनेशन) से अपनी रक्षाके लिए – हवामें व्यर्थ ही हाथ-पाँव मारता है। ये दोनों कहानियाँ उन्हीं लक्षणोंके सहारे खड़ी हैं। ये सन्त्रासके लक्षणोंकी कहानियाँ हैं इसलिए इनमें सन्त्रस्त जीवन नहीं आ पाया है।

सच तो यह है कि इस संग्रहमें कहानियाँ अ-कहानियाँ हैं। वे कहानियोंकी अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावशाली हैं। इनकी भाषा अनलंकृत, सहज और सीधे चोट करनेवाली है।

– डॉ० बच्चन सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिहार्य, अप्रतिम और मौलिक

शोध - प्रबन्ध

जुलाई '६५ के नवीन प्रकाशन

- **प्रसाद की दार्शनिक चेतना :** चक्रवर्ती २५.००
- **सन्त-साहित्य :** डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल २०.००
- **हिन्दी कहानी की रचना-प्रतिक्रिया**
  डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव १२.५०

अन्य प्रकाशन

❀ **मालिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य :**
डॉ० शिवसहाय पाठक १८.००

❀ **आधुनिक हिन्दी कविता में ध्वनि :** डॉ० कृष्णलाल शर्मा १५.००

❀ **छायावाद : काव्य तथा दर्शन :** डॉ० हरनारायण सिंह १५.००

❀ **प्रगतिवादी समीक्षा :** रामप्रसाद त्रिवेदी १०.००

• उच्चकोटि की विषय-विवेचना • आकर्षक रूप-सज्जा • कलात्मक मुद्रण

उच्चकोटि के शोध-प्रबन्धों के प्रकाशक

ग्रन्थम्

१०४ए।२१५, रामबाग, कानपुर-१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौंसठ कविताएँ

इन्दु जैन

० ०

मर्मस्पर्शी कविताओंका संकलन

'चौंसठ कविताएँ' एक बहु-आयामी चेतना-मानसकी रचना है। न कहें कुछ और, पर भिन्न और विशेष इन कविताओंके परिचयमें अवश्य कहा जायेगा। ये कविताएं हिन्दी कविताकी अधुनातन दिशा, भाव-बोध और शिल्पकी प्रामाणिक उपलब्धिका संकेत देती हैं। और प्रचलित सब प्रकारके उलझावोंसे ये मुक्त हैं और अपना अर्थ बड़ी सहजताके साथ स्वयं खोलती हैं।

सब चौंसठ कविताएँ हैं, पर प्रत्येक जैसे एक सौम्य बिजलीकी कौंधका निमिष हो जो अन्दरकी अकुलाहटको, किसी दर्द या उल्लासको, सतरंगी प्रकाश-रेखाओंकी भाषामें उकेर जाये। अनुभूतियोंको ऐसी अभिभूत करने वाली अभिव्यक्ति इनमें हुई है कि क्षितिजपर क्षितिज सामने खुलते चले जाते हैं और भीतर एक गन्ध-भरी चाँदनी छिटक पड़ती है! कविताओंकी पंक्ति-पंक्तिमें साक्ष्य मिलता है कि अन्तश्चेतना भी कितनी मुखर हो सकती है। कविता-प्रेमियोंके लिए कृति अनिवार्य रूपसे पठनीय है।

मूल्य ३.००

भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ
ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत-कुछ सकीं

• साहित्यिक

• प्रतिनिधि रचनाएँ (पंजाबी दो) : नानक सिंह

समयका प्रवाह और उसके परिप्रेक्ष्यमें समाजकी बदलती स्वरूप-छवियाँ ! लगेंगी जैसे किसी विशाल कैलडॅस्कोपकी दृश्य-छवियाँ हों।

निरन्तर बनती-बदलती इन दृश्य-छवियोंको अंकित कर सकता है कोई तो उपन्यासकार। वह भी चाहे जो नहीं। किनारे खड़ा उपन्यासकार अपने अंकनमें उन छवियोंकी आकृति उतार देगा; उनके भाव और स्पन्दन, सन्धियाँ और स्खलन उसके देखे और झेले हुए न होंगे। यह प्राण-चेतना अपने अंकनमें वही उपन्यासकार ला सकेगा जो उन बदलती स्वरूप-भंगिमाओंकी आगमें स्वयं झुलसा है, उनके पत्थर-पानीमें गला और बहा है। प्रस्तुत कृतिका लेखक इसी आधारपर उपन्यासकारके रूपमें विशेष द्रष्टव्य हो जाता है।

गत पचास वर्षोंका देशका इतिहास अत्यन्त घटनापूर्ण रहा है। और घटनाएँ भी ऐसी कि हरेकने इतिहासमें कुछ नया जोड़ा और जीवनको नयी भूमि, नया परिवेश, नया अर्थ तक दिया। सब जो हुआ उसमें कुछ अवांछ्य भी था, दुःखद और यातनाओं-भरा भी। सारी वास्तविकता और सबके परिणामको सामने आते समय चाहिए। पर उस कैलडॅस्कोपकी कुछ दृश्य-छवियाँ यहाँ अवश्य प्रस्तुत हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी जिन्हें लेखकने किनारेसे देखा नहीं, जिया और झेला, और जो इतिहासको होते हुए इतनी आजकी भी हैं कि अनेक पाठकोंको अपनी बीती याद हो आये।

रचनाओंके अंश भी कितना-कितना कह सकते हैं और कैसे सम्पूर्णका आभास दे सकते हैं, इसका यह 'प्रतिनिधि रचनाएँ' एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

मूल्य ४.००

● जुलूस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

नया शायद कुछ नहीं होता। आँख-ओझल तथ्योंके उद्घाटनको शोध नाम मिलता है और जाने-परचे तत्त्वोंका अपने प्रयोजनके अनुरूप संघटन आविष्कार कहलाता है। साहित्य सृजनमें भी, व्यापक दृष्टिसे देखें तो, अपूर्व शायद ही कुछ होता हो।

'रेणु' की यह कृति 'जुलूस' भी अपूर्व तो कैसे कही जाये, पर अनूठी इसे मानना पड़ेगा। हिन्दीमें इस विषय-भूमिकी ओर इसके भाव-संकेत लिये हुए कोई कृति बिरले ही आयी होगी। एक लघुकाय उपन्यास पर विशाल अन्तरंग, गझिन, शक्तिशाली और सारा कथानक सामयिक : घटनाओंकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण और मूल्योंकी दृष्टिसे भी। शैली-शिल्प 'रेणु' के अपने : पहलेसे अधिक प्रौढ़, मँजे-निखरे, प्रभावपूर्ण।

कथानक सीधा-सा है, कला उसका उपयोग करनेकी है। इसके माध्यमसे हिन्दी पाठक देखेंगे कि प्रान्तीय भाव-भेद कितने भी वास्तविक लगें, यथार्थ जीवनके सन्दर्भमें उनका अस्तित्व क्षीण हुए बिना नहीं रहता। और ठीक यही तो मूल आधार है देशकी भावात्मक-सांस्कृतिक एकताके सत्यका। आवश्यकता आचरणकी है, दृष्टिदानकी है। प्रस्तुत है इस दिशामें यह 'रेणु' का सफल रचनात्मक प्रयत्न।

मूल्य ३.५०

● तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो : मुनि नथमल

मनुष्य केवल देह नहीं, प्रधान अंग आत्मा है। आत्मा ही केन्द्र है : जीवनका, जीवन-चेतनाका। और आजका मानव तो इन्द्रियोंकी खिड़कियोंसे झाँकता-भागता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटता-बिखरता, बाहरकी ओर दौड़ा जा रहा है। उस आत्माका सान्निध्य प्राप्त नहीं करता! करता तो देख सकता कि आन्तरिक शक्ति और वैभवकी तुलनामें ये बाहरी समृद्धियाँ तुच्छ हैं।

आत्मासे अस्तित्व है। उसे भुलाया नहीं जा सकता। उस एक सत्यका वरण करना होगा। यह अनुभव भी किया जाने लगा है कि वर्तमान स्थितिपर नियन्त्रण नहीं किया गया तो परिणाम भयंकर होगा। और वह परिणाम तो वे भी नहीं चाहते जो उसका कारण बन रहे हैं। कैसे हो निवारण उस परिणामका, किस प्रकार मनपर अधिकार करते हुए आत्माका सान्निध्य प्राप्त किया जाये, यह अनुभव-सिद्ध, सरल एवं प्रभावपूर्ण रूपमें प्रस्तुत कृतिमें देखें। मूल्य २.००

• क्या धर्म बुद्धिगम्य है ? : आचार्य तुलसी

तर्क और बुद्धिने धर्मको चुनौती दी तो सदासे ही है, किन्तु आज विज्ञान और उन्मुक्त चिन्तनने इस चुनौतीको अधिक व्यापक और अधिक मुखर बना दिया है। धर्मने इस चुनौतीको स्वीकारा भी सदासे है, किन्तु अतीतमें जो उत्तर जिज्ञासुओंको सन्तुष्ट कर देते थे, वे उत्तर आज अपर्याप्त हैं। आजके जीवनके परिवेशमें वर्तमानके चुभते प्रश्नों और अणुयुगीय रोमांचों तथा आतंकोंके सन्दर्भमें प्रश्नकी उत्कटता और प्रखरताको कौन झेले—क्या धर्म बुद्धिगम्य है ? इस प्रश्नका और प्रश्नोंमें-से उभरती उप-प्रश्नोंकी शृंखलाका उत्तर इस कृतिमें आपको मिलेगा। व्याख्याता हैं श्री आचार्य तुलसी, जो अणुव्रत-आन्दोलनके प्रवर्तक ही नहीं हैं, इस युगके विशिष्ट साधक, चिन्तक और दिशादायक भी हैं। श्री आचार्य तुलसीने धर्मका वह स्वरूप प्रतिपादित किया है जो बुद्धिगम्य है, जो सहज आस्था उत्पन्न करता है। मूल्य २.००

• आत्मजयी : कुँवर नारायण

कठोपनिषद्में नचिकेताका आख्यान आता है। सत्यद्रष्टा कविने इसके माध्यमसे भारतीय दर्शनकी एक विशिष्ट उपलब्धिको स्पष्ट किया है। इधर कुछ हिन्दी काव्य-कृतियाँ इस आख्यानको विषय-आधार बनाकर प्रकाशमें आयी हैं। 'आत्मजयी' इन सबमें कई दृष्टियोंसे भिन्न है और विशेष अर्थपूर्ण भी। यह कृति मूल प्रसंगके दार्शनिक पक्षकी ऊहापोह नहीं करती, न ही उसे दिव्यकथाके रूपमें ग्रहण करती है। 'आत्मजयी' के कविने मुख्यतः नचिकेताकी मानवीय परिस्थितिको ही दृष्टिमें रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नचिकेताकी ही तरह आजका चिन्ताशील मनुष्य भी ऐसे मूल्योंके लिए जीना चाह
है जो उसमें सुख ही नहीं सार्थकताका भी बोध करा सकें। सर्वथा संग्रहणी
कृति। मूल्य ३.

● सिकन्दरनामा : सलमा सिद्दीक़ी

सिकन्दरनामा यानी सिकन्दरका हाल। हाँ, सिकन्दर। इतिहासका सिकन्द
नहीं। उसपर सदियोंकी मोटी चादरें पड़ गयी हैं। यह आजका सिकन्दर है जि
अस्तित्वका सबसे बड़ा सबूत यह है कि स्वयं सलमा सिद्दीक़ीने उसे अपनी जा
क़लमकी नोकपर बैठाकर साहित्य-संसारमें रॉकेटकी तरह छोड़ा है।

आप चाहें तो इस सिकन्दरको डॉन क्विग्ज़ोटकी परम्परामें शुमार कर लें; लेकि
हैं यह मियाँ खोजीकी जात-बिरादरीके। जिस तरह हर मिट्टी-पानीकी अपनी-अप
पौध होती है जो अपने-अपने रंग और सुगन्धमें लाजवाब होती है, उसी तरह
सिकन्दर है – हिन्दुस्तानकी धरतीका एक हँसोड़ क्यारीका लुभावना फूल। बड़
दिलचस्प दास्तान है इस सिकन्दरकी। और, सलमा सिद्दीक़ीकी सादाबयानी
मोहक कमाल! नये अन्दाज़, नयी अदा, और कुछ पुराने तौर-तरीक़ोंपर न
चुलबुली निगाह! मूल्य २.

● दर्शन अनुचिन्तन : म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

चुने-चुने चौदह निबन्धोंका यह एक सुसम्बद्ध संकलन है जो भारतीय दर्शन
के समूचे स्वरूप और प्रमुख सिद्धान्तोंका सुन्दर परिचय देता है। और ऐ
सरल सुबोध भाषामें सारा विचार-विवरण उपस्थित करता है कि सामान्य
इसे अपने ही लिए लिखा गया मानें और सुधी विशेषज्ञ देखें कि सब
ज्ञातव्य भी और नया चिन्तन भी सुबोध ढंगसे कैसे लिखा जा सकता है।
मूल्य ३.

● सांस्कृति

● उपासकाध्ययन : मूल – सोमदेव सूरि, सम्पा० - अनु० –
पं० कैलाशचन्द्र शा

सोमदेव सूरि कृत महान् संस्कृत ग्रन्थ यशस्तिलकके अन्तिम तीन आश्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें स्वयं सोमदेवने भी उपासकाध्ययन नाम दिया है। जैन श्रावकाचारका विशद विवेचन। हिन्दी प्रस्तावना, अनुवाद, संस्कृत टीका तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ११६ + ५३९। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य १२.००

● करकण्ड चरिउ : मूल–मुनि कनकामर, सम्पा०–डॉ० हीरालाल जैन

जैन और बौद्ध साहित्यमें 'प्रत्येक बुद्ध'के रूपमें प्रसिद्ध महाराज करकण्डके जीवन-चरित्रपर लिखा गया अपभ्रंश काव्य। हिन्दी अँगरेज़ी प्रस्तावना, अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ६४ + २७८। द्वितीय संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

● भोजचरित : मूल – पाठक राजवल्लभ, सम्पा० – अनु० – डॉ० बहादुरचन्द छाबड़ा, शंकरनारायणन्

परमार नरेश भोजके जीवनपर लिखा गया ऐतिहासिक महत्त्वका एक विशिष्ट संस्कृत काव्य। महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी प्रस्तावना, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल २४ + १९२। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

* **गंगा लहरी :** सं० श्री सुधाकर पाण्डेय। यह पुस्तक कई विश्व-विद्यालयोंके बी० ए० के पाठ्यक्रममें निर्धारित है। १.२५

* **बन्दीकी चेतना :** श्री कमलापति त्रिपाठी। जीवनके सहज अन्तर्द्वन्द्वसे प्रसूत मनोविश्लेषणात्मक निबन्धोंका पत्रात्मक शैलीमें लिखा ग्रन्थ। ५.००

* **मतिराम ग्रन्थावली :** सं० स्व० कृष्णबिहारी मिश्र एवं स्व० डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र। यह पुस्तक मतिरामका सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करती है। ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित। पुनः सम्पादित एवं परिवर्द्धित संस्करण। इस शोधयुगपर प्रस्तुत पुस्तकमें श्री करुणापति त्रिपाठीकी गम्भीर अनुशीलनयुक्त भूमिका है। १२.५०

* **मधुमालती वार्ता :** सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त। हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंकी परम्परामें 'मधुमालती' का प्रेमाख्यान कई लेखकों-द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किन्तु चतुर्भुजदासकी यह रचना उन सबसे भिन्न लोक-व्यवहारपरक है। यह ग्रन्थ मुद्रित रूपमें पहली बार हिन्दी संसारके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। ८.००

* **खालिकबारी :** सं० श्रीराम शर्मा। अमीर खुसरोकृत खालिकबारीका नाम हिन्दी साहित्यमें विख्यात है। आरम्भमें भूमिका और अन्तमें हिन्दी शब्दोंका भाषा-वैज्ञानिक अभिधान। २.७५

* **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण :** दो खण्डोंमें सन् १९०० से १९५५ तकके प्राप्त हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय।
मूल्य प्रति खण्ड ३०.००

नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी डायरी

राजभाषा हिन्दीकी पूर्व पीठिका और
शासनकी नयी नीति : प्रश्नोंके
घेरेमें कुछ नये अ-प्रश्न

लक्ष्मीशंकर व्यास

राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रश्नको राजनीतिक संकीर्णता तथा स्वार्थके कारण जिस-प्रकार उलझाया जा रहा है, वह देशके लिए अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। जिस प्रश्नको राष्ट्रकी आधारभूत नीतिके रूपमें १४ सितम्बर १९४९ को ही संविधान सभामें सर्वसम्मत ढंगसे स्वीकार किया जा चुका है, अब उसमें मौलिक परिवर्तन करनेका प्रयास किया जा रहा है। पिछले दिनों भारत सरकारके मन्त्रिमण्डलकी एक समितिने आपके सम्बन्धमें जो निश्चय किया था, उसमें काँग्रेस कार्यसमितिमें भाषासम्बन्धी जो निर्णय हुआ है, उससे देशमें चिरकाल तक अँगरेज़ीको बनाये रखनेकी व्यवस्था है। क्या यह देशके गौरवके प्रतिकूल नहीं?

स्वतन्त्र देशका प्रथम लक्षण है कि सरकारकी राजकाजकी भाषा राष्ट्रीय हो। जिस देशमें उसके भूतपूर्व शासकोंकी विदेशी भाषा तथा लिपिको स्वाधीनता-के सत्रह वर्षोंके बाद भी बनाये रखे जानेका निर्णय किया जाये, उसे क्या कहा जाये? गत २६ जनवरीको संविधानके निर्देशानुसार भारत सरकारकी राजभाषाके रूपमें, हिन्दीको एकमात्र रूपसे प्रतिष्ठित होना था। यह निर्णय सन् १९४९ में ही ले लिया गया था और हमारे पवित्र संविधानका अंग बन गया था, जब गत २६ जनवरीसे हिन्दीके राजभाषा होनेकी घोषणा की गयी तो कहा गया था कि देश-की स्वाधीनता अब पूर्ण हुई है। कौन जानता था कि इस सुविचारित और निर्णीत प्रश्नको देशके एक भागके कुछ विशेष लोगों-द्वारा चुनौती दी जायेगी! किन्तु हुआ यही और वास्तविकतासे परिचित न होनेके कारण हिंसापूर्ण आन्दोलन-में करोड़ों रुपयोंकी सार्वजनिक सम्पत्ति स्वाहा कर दी गयी। केन्द्रीय सरकारकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसमितिकी बैठक तथा विगत काँग्रेस कार्य समितिके निर्णयसे स्पष्ट है कि हिंसा-पूर्ण आन्दोलनके आगे घुटने टेके जा रहे हैं और अँगरेज़ीको सदा-सर्वदा बनाये रखनेका दु:खद उपक्रम चल रहा है।

प्रश्न सहज ही उठता है कि क्या जो राष्ट्रीय नीति हमारे संविधानका अंग बन चुकी है और देशमें जो एकता, जागर्ति और प्रगतिकी सूचक रही है, वह देशके मुट्ठीभर अँगरेज़ी जाननेवालोंके स्वार्थोंकी रक्षाके लिए बदल दी जायेगी। जो नीति लोकतन्त्रात्मक स्वरूपका एक प्रमुख आधार हो क्या उसमें परिवर्तन किया जा सकता है ? स्पष्ट है कि ऐसा नहीं किया जा सकता। सर्वसम्मत ढंगसे निर्णीत संविधान सभाके निश्चयको बदलनेकी शक्ति किसीमें भी नहीं। देशके स्वाधीनता आन्दोलनमें नवजागरण, नवचेतना और नवयुगका संकेत करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रति किसी स्वदेशभक्तका विरोध हो सकता है, इसकी कल्पना भी कठिन रही है किन्तु राजनीतिक स्वार्थोंकी वेदीपर राष्ट्रभाषा हिन्दीका आज बलिदान किया जा रहा है, इससे बढ़कर दुर्भाग्यकी बात और क्या हो सकती है ?

राष्ट्रभाषाके सुविचारित एवं निर्णीत प्रश्नको नये सिरेसे उठानेका कारण ही राजनीतिक स्वार्थोंकी ओर हमारे कर्णधारोंका झुकाव है। यह नयी उलझन सबसे पहले उस समय आयी जब कि मई '६२ में बताया गया कि भारत सरकार देशमें अभी अँगरेज़ीको बनाये रखनेके लिए एक विधेयक लानेवाली है। यह घोषणा महात्मा गान्धीकी तपोभूमि बर्धामें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके रजतजयन्ती समारोहके अवसरपर की गयी। इसमें देशरत्न डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादजी और प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू भी आनेवाले थे। संयोगकी बात, अस्वस्थताके कारण दोनोंमें-से समारोहमें कोई न आ सका। अत: तत्कालीन स्वराष्ट्र मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्रीने ही समारोहका उद्घाटन किया और भारत सरकारके उक्त निश्चयका संकेत किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके उस समारोहमें अहिन्दीभाषी क्षेत्रों तथा राज्योंके लगभग दस हज़ार प्रतिनिधि उपस्थित थे। उन्होंने जैसे ही यह सुना, सन्न रह गये। शास्त्रीजी तथा देशके विद्वानोंके निकट एक वयोवृद्ध हिन्दी सेवक जिन्होंने महात्मा गान्धीके निर्देशानुसार दक्षिणमें हिन्दीका प्रचार कार्य किया था, कहा कि—यह क्या ? जब सारा देश हिन्दीको ग्रहण करनेके लिए तैयार बैठा है तो भारत सकार यह क्या करने जा रही है ! शास्त्री-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीने अपने भाषणमें अनेक प्रकारसे यह आश्वासन दिया कि हिन्दीका स्थान सुरक्षित बना रहेगा पर एक काली छाया उसी समयसे पड़ने लगी।

अन्ततः सन् १९६३ में भारत सरकार एक राजभाषा विधेयक ले आयी। उन दिनों देशमें चीनी आक्रमणके कारण संकटकालीन स्थिति थी। ऐसे समय जब देशकी एकताकी सर्वाधिक अपेक्षा रहती है, विवादास्पद विषय अथवा विधेयक उपस्थित नहीं किये जाते। सरकारने इसकी परवाह न की और दक्षिण भारतके अँग्रेज़ी समर्थकोंको तुष्ट करनेके लिए सन् '६५ के बाद भी अँगरेज़ीको बनाये रखनेका विधेयक स्वीकृत करा ही लिया! देशमें और देशके प्रतिनिधियोंकी सभा संसद्में इस विधेयकका उग्र विरोध किया गया। यहाँ तक कि सत्तारूढ़ दलके कुछ सदस्योंने भी इसे 'आत्माकी आवाज़' अथवा 'चेतनाकी पुकार' संज्ञा देकर दलीय अनुशासनकी परवाह न की। अन्तमें उक्त विधेयक सन् १९६३ के राजभाषा अधिनियमके रूपमें स्वीकार कर लिया गया और उससे अनिश्चित काल तक देशमें अँगरेज़ी भाषाको भारत सरकारकी राजकाजकी भाषाके रूपमें बनाये रखनेका अधिकार प्राप्त हो गया। दक्षिणवालोंको [illegible] जाब कोकिला अ[illegible] गये आश्वासनोंकी इस प्रकार पूर्ति की गयी। इस संशोधनेण्टिक उपन्यास देशमें सन् '६५ के बाद तक अँगरेज़ी बनाये रखनेकी व्यवस्था [illegible]

इसके बाद जब १४ सितम्बर १९४९ को संविधान सभाके सर्वसम्मत निर्णयको कार्यान्वित किये जानेका भारत सरकारने निश्चय किया तो सारे देशको प्रसन्नताका अनुभव हुआ। ऐसा लगा कि १५ अगस्त १९४७ को मिली राजनीतिक स्वाधीनता अब २६ जनवरी १९६५ को पूर्ण होने जा रही है। सरकारने इस सम्बन्धमें आवश्यक निर्देश भी जारी कर दिये किन्तु मद्रासके अँगरेज़ी भक्तों तथा कुछ राजनीतिक नेताओंने ऐसा भ्रामक एवं विषाक्त प्रचार किया कि ऐसा लगा कि दक्षिणमें क़ानून और व्यवस्था उपद्रवियोंके हाथमें चली गयी है। हिंसापूर्ण आन्दोलनमें अमानवीय घटनाएँ भी हुईं और दक्षिण वियतनामकी 'आत्माहुति' का भी नाटक रचा गया। लोगोंसे कहा गया कि तमिलका स्थान २६ जनवरीसे हिन्दी ले लेगी। इसपर मद्रासके बहुत-से लोगोंने उपद्रवकारियोंका साथ दिया और हिंसाकी ज्वाला भड़क उठी! ११ फ़रवरी १९६५ को प्रधानमन्त्री श्री शास्त्रीने देशकी जनताको भाषाके प्रश्नके संवैधानिक पहलूके साथ ही श्रीनेहरूके आश्वासनोंकी भी याद दिलायी। इतना ही पर्याप्त रहा है किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद भी उक्त अधिनियममें संशोधनके लिए कार्यसमितिने जो निश्चय किया है, उससे वास्तवमें संविधानमें राजभाषा हिन्दीविषयक ऐतिहासिक निर्णयोंकी हत्या हो जाती है। अब गम्भीर प्रश्न उठता है कि क्या राजनीतिक स्वार्थोंकी पूर्तिके लिए पवित्र संविधानके निर्णयों एवं निर्देशोंको बदला जा सकता है? इसीके साथ स्वाभाविक प्रश्न यह भी उठता है कि क्या इस प्रकार राष्ट्रके लोकतन्त्रात्मक ढाँचेको आघात नहीं पहुँचेगा? संसद्के आगामी अधिवेशनमें जब भारत सरकार उक्त आशयका संशोधन उपस्थित करेगी, इसका उत्तर देशकी जनताके प्रतिनिधियोंको राष्ट्रीय गौरवका ध्यान रखते हुए निर्भीकता और दृढ़तापूर्वक देना है।

ती है? ... वर्षों से हिन्दी प्रचार-कार्य में रत विशिष्ट

राष्ट्रभाषाके सुवि... अनुसूयाप्रसाद पाठक के दो अमूल्य ग्रन्थ

- **तमस्... स्वार्थों...द में** : खण्डकाव्य, पृ० सं० १६०, आकार २० × ३० क्राउन, मूल्य तीन रुपये

पुस्तक सर्वांगीण नवीन है। काव्य रचना तो नवीन है ही। कविके चिन्तनका ढंग, सांस्कृतिक आस्था, अनुभूति, नयी चेतनाके साथ रस–अलंकार, शब्द–छन्द गति विशिष्टतासे ओत-प्रोत है। पुस्तक अपनेमें पूर्ण तथा संग्रहणीय है।

- **जहाना** : उपन्यास : पृ० सं० १८० साइज २० × ३० नयनाभिराम छपाई आकर्षक कवर कलात्मक मुद्रण। मूल्य तीन रुपये

ग्रामीण समस्यापर आधारित सत्यकथा है। इसलिए प्रारम्भसे अन्त तक पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता।

प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार**

बाँका बाज़ार, कटक-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नए प्रकाशन

• **भारतकी संस्कृति और कला** : राधाकमल मुकर्जी १२.००

सभ्यता और संस्कृतिके अधिकारी विद्वान् श्री राधाकमल मुकर्जीके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी ग्रन्थका हिन्दी रूपान्तर।

• **संघर्ष** (उपन्यास) : हरमन मेलविले ६.००

हरमन मेलविलेके संसार प्रसिद्ध उपन्यास 'Moby Dick' का हिन्दी रूपान्तर। समरसेट मॉमके विचारमें यह संसारके दस श्रेष्ठतम उपन्यासोंमें-से एक है।

• **नागमणि** (उपन्यास) : अमृता प्रीतम २.५०

यह साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त पंजाब कोकिला अमृता प्रीतमका नवीनतम उत्कृष्ट, साहसिक एवं रोमैण्टिक उपन्यास है।

• **नया समाज** : डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा १.००

इसमें सहकारिता आन्दोलन और उपभोक्ता भण्डारोंपर आधारित नये समाजकी एक झलक प्रस्तुत की गयी है।

• **हिन्दोस्तान हमारा** : धर्मपाल शास्त्री १.५०

इस बालोपयोगी सचित्र पुस्तकमें 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्ताँ हमारा' को अत्यन्त रोचक शैलीमें प्रामाणिक जानकारी सहित चरितार्थ किया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालयस्तरीय साहित्यिक निबन्ध ग्रन्थ

कला साहित्य और समीक्षा
डॉ० भगीरथ मिश्र
१०.००

मूल्य और मूल्यांकन
डॉ० रामरतन भटनागर
७.५०

साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
डॉ० देवराज उपाध्याय
६.००

साहित्य अनुभूति और विवेचन
डॉ० संसारचन्द्र
६.००

साहित्य, शोध, समीक्षा
डॉ० विनयमोहन शर्मा
५.५०

साहित्यवार्ता
गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'
५.५०

आलोचना के द्वार पर
डॉ० ओम प्रकाश
४.५०

आलोचना की ओर
डॉ० ओम प्रकाश
४.००

साहित्य, सन्दर्भ और मूल्य
डॉ० रामदरश मिश्र
४.५०

विचार और निष्कर्ष
डॉ० वासुदेव
७.५०

आलोचना के पथ पर
डॉ० कन्हैयालाल सहल
५.००

भारतीय साहित्य मन्दिर, फ़व्वारा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेचना और विवेचना

मूल पत्र और परिचय
एक दुःखद प्रसंग

१

महोदय,

हमें बड़ा दुःख है कि वर्ष-भर 'विवेचना'के सदस्य रहने व अन्य रूपोंमें उससे सम्बद्ध होने और उसकी रीति-नीतिको पाससे देखने और समझनेके बाद हमें विवश होकर उससे सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ रहा है। हम आपको विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यह निश्चय हमारे लिए सरल नहीं रहा है और न इसके पीछे हमारा कोई तात्कालिक क्षोभ या आक्रोश है। बड़ी गम्भीरतासे पूरी स्थितिपर विचार करने और उसके सौहार्दपूर्ण ढंगसे सुलझानेके अपने प्रयत्नोंमें निष्फल कर दिये जानेपर ही हम इस निश्चयपर पहुँचे हैं। हमें कोई भ्रम नहीं है कि हमारे सम्बन्ध-विच्छेदसे 'विवेचना'का कुछ भी बिगड़ेगा, फिर भी हमने उससे अलग होनेका निश्चय किया है क्योंकि हमारा विवेक अब किसी प्रकार उन अनीतियोंसे सहयोग करनेको प्रस्तुत नहीं है जिनका हमको इस एक वर्षके अपने अनुभवमें बार-बार परिचय मिला है।

'विवेचना'की स्थापनाके समय उसके प्रवर्तकोंने हमसे कहा था, और यही हमने समझा था, कि इस गोष्ठीकी स्थापना साहित्य-विवेचनाके स्वस्थ मूल्योंकी प्रतिष्ठाके लिए और उनके आलोकमें हिन्दी-साहित्यकी अधुनातन श्रेष्ठ उपलब्धियोंके आकलन-विवेचन-द्वारा सामान्य हिन्दी-प्रेमियोंकी साहित्यिक रुचिको जगाने और परिष्कृत करनेके उद्देश्यसे की जा रही है। स्वभावतः यह घोषित उद्देश्य हमको हर प्रकारसे अभिनन्दनीय लगा और हमने सहर्ष 'विवेचना' के सदस्य बनना और उससे सम्बद्ध होना स्वीकार किया।

किन्तु बड़े खेदके साथ हमको कहना पड़ता है कि कार्यतः हमने स्थिति इससे बहुत भिन्न ही नहीं, बिलकुल इसके विपरीत पायी। पहली गोष्ठीसे लेकर अन्तिम गोष्ठी तकका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा अनुभव साक्षी है। उसके आधारपर हम निस्संशय कहना चाहते हैं कि वास्तवतः उसको जितना भी व्यापक रूप दिया गया हो, भीतर-ही-भीतर उसके नीति-निर्धारक, सुचिन्तित और संगठित रूपसे 'विवेचना'को अपनी शक्ति-भर उस दलगत-संकीर्ण, एकांगी और तथाकथित 'आधुनिकता'-वादी साहित्यिक दृष्टिके प्रचार और प्रसारका मंच बनाते रहे हैं जो मात्र व्यक्तिकुण्ठाके साहित्यको श्लाघनीय, और स्वस्थ, मानवतावादी, जीवनधर्मी, समाजपरक साहित्यको नितान्त तिरस्करणीय मानती है। समीक्षाके लिए पुस्तकोंका चयन उनकी लोकप्रियता या महत्त्वको दृष्टिमें रखकर ही किया जाता रहा, पर उनके समीक्षकोंका चयन करते समय दृष्टि सम्भवतः उतनी अनाविल नहीं थी अन्यथा, केवल उदाहरणके लिए, श्री हजारीप्रसाद द्विवेदीके उपन्यास 'चारुचन्द्रलेख', श्री अमृतलाल नागरके उपन्यास 'बूँद और समुद्र', श्री हरिवंशराय 'बच्चन'के काव्य-संकलन 'अभिनव सोपान', श्री मोहन राकेशके उपन्यास 'अँधेरे बन्द कमरे' और श्री रामविलास शर्माकी भाषाशास्त्रकी पुस्तक 'भाषा और समाज' की ऐसी एकांगी, छिद्रान्वेषी, पूर्वग्रहसे आक्रान्त समीक्षाएँ 'विवेचना' में न पढ़ी जातीं, जिनसे स्पष्ट है कि उनका उद्देश्य समीक्ष्य कृतियोंके प्रति न्याय करना नहीं, नीर-क्षीर-विवेक नहीं (जैसी कि स्वस्थ समीक्षाकी परम्परा रही है) और सामान्य हिन्दी-प्रेमियोंकी साहित्यिक रुचि को जगाना और परिष्कृत करना भी नहीं (जैसी कि 'विवेचना' की मूल प्रतिज्ञा थी) बल्कि उन कृतियोंको निम्नकोटिकी रचना सिद्ध करना मात्र रहा है।

इतना ही नहीं, समीक्षा-निबन्धके उपरान्त होनेवाली गोष्ठी-चरचामें दृष्टिकी यही दलगत संकीर्णता बहुत बार (भले गोष्ठीके प्रकाशित कार्य-विवरणमें-से उनको निकाल दिया जाता हो) प्रतिष्ठित लेखकोंके प्रति कहे गये ऐसे अपशब्दों और फूहड़ कटाक्षोंका रूप भी ले लेती है जिन्हें हम किसी भी साहित्यिक गोष्ठीके लिए घोरतर कलंक मानते हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि निर्भीक विवेचना और असंस्कृत आचरण एक ही वस्तु नहीं है। और इस प्रसंगमें सबसे अधिक आश्चर्य तो हमें इस बातका है कि हिन्दीकी संवर्द्धनामें लगी हुई हिन्दी साहित्य सम्मेलन-जैसी संस्था (जिससे 'विवेचना' 'माध्यम' के नाते सम्बद्ध है) के एक वरिष्ठ पदाधिकारीके सभापतित्वमें भी गोष्ठीके भीतर इस प्रकारका अनाचार निरंकुश रूपसे होने दिया जाता है।

ऐसी स्थितिमें हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि अब विवेचनासे किसी प्रकारका सम्बन्ध रखना हमारे लिए सम्भव न होगा।

—अमृतराय, इलाचन्द्र जोशी, विश्वम्भर 'मानव', प्रकाशचन्द्र गुप्त,
गंगाप्रसाद पाण्डेय, केशवप्रसाद मिश्र, सुमित्रानन्दन पन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अमरावती'
९, टैगोर नगर, इलाहाबाद
२४ अप्रैल १९६५

महोदय,

आपके और छह अन्य सज्जनोंके हस्ताक्षरों-सहित एक दिनांक-रहित पत्र जो संयोजक 'विवेचना' इलाहाबादको सम्बोधित था मुझे २१ अप्रैलको मिला। उक्त पत्रमें सातों हस्ताक्षरकर्ताओंकी ओरसे यह कहा गया था कि "अब 'विवेचना' से किसी प्रकारका सम्बन्ध रखना हमारे लिए सम्भव न होगा।" चूँकि उसी दिन सायंकाल 'विवेचना' के प्रस्तावक सदस्योंकी बैठक होने जा रही थी अतः मैंने उस बैठकमें आप लोगोंका पत्र प्रस्तुत कर दिया। पत्रपर विचार किया गया और यह निश्चय किया गया कि विवेचना गोष्ठीकी ओरसे मैं यह उत्तर आप लोगोंकी सेवामें भेजूँ।

आपके पत्रके पहले पैरामें कहा गया है कि 'विवेचना' से सम्बन्ध-विच्छेदके निश्चयके पीछे कोई तात्कालिक क्षोभ या आक्रोश नहीं है। इस सम्बन्धमें उपस्थित सदस्योंको श्री बालकृष्ण रावने बताया कि ११ अप्रैल '६५ को एनीबेसेण्ट हॉलमें, 'लोकायतन' सम्बन्धी गोष्ठीके शुरू होनेके ठीक पहले, उनकी श्री गंगाप्रसाद पाण्डेयसे बातचीत हुई थी। श्री पाण्डेयने प्रायः आधा घण्टा पहले हुए चयन-समितिके चुनावका उल्लेख करते हुए उस चुनावसे अपना घोर असन्तोष ही नहीं व्यक्त किया, यह भी कहा कि 'अब हम लोग विवेचना छोड़ देंगे—मैं, अमृत और जोशीजी।' श्री बालकृष्ण रावके इस ज्ञापनके बाद यह स्वीकार करना कुछ कठिन जान पड़ता है कि आप लोगोंके इस सम्बन्ध-विच्छेदके निश्चयके पीछे सचमुच ही कोई तात्कालिक क्षोभ या आक्रोश नहीं था।

आप लोगोंने लिखा है कि "बड़ी गम्भीरतासे पूरी स्थितिपर विचार करने और उसको सौहार्दपूर्ण ढंगसे सुलझानेके अपने प्रयत्नोंमें निष्फल कर दिये जानेपर ही आप सम्बन्ध-विच्छेदका निश्चय करनेके लिए विवश हुए हैं।" किस स्थितिपर आप लोगोंने गम्भीरतापूर्वक विचार किया यह तो स्पष्ट नहीं है, पर यह मान भी लें कि 'स्थिति' से आप लोगोंका अभिप्राय 'विवेचना' की 'रीति-नीति' से है तो भी यह तो बिलकुल समझमें नहीं आया कि 'सौहार्दपूर्ण ढंगसे सुलझानेके प्रयत्न' क्या थे जो निष्फल किये गये।

सदस्योंको रीति-नीतिविषयक एक ही 'प्रयत्न' की जानकारी है और वह 'प्रयत्न' श्री गंगाप्रसाद पाण्डेयका था। उन्होंने ५ अप्रैल '६५ के अपने एक पत्र-द्वारा चयन-समितिके पुनर्गठनका प्रस्ताव रखा था। और ११ अप्रैल '६५ की संस्थापक-सदस्योंकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठकमें उसके लिए कुछ नाम प्रस्तावित किये थे। बादमें सर्व-सम्मतिसे यह निश्चय किया गया था कि श्री वाचस्पति पाठक और श्रीमती उमाराव चयन-समितिके लिए दो ऐसे सज्जनोंको नामजद कर दें जो गत वर्ष उसमें नहीं थे। उन दोनोंने दो सदस्यों (डॉ० रघुवंश और श्री नरेश मेहता) को नामजद कर दिया और जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, इस नामजदगीसे श्री गंगाप्रसाद पाण्डेयने अपना और सर्वश्री जोशी और अमृतरायका असन्तोष प्रकट किया। उपस्थित सदस्योंमें किसीको भी आप लोगोंके द्वारा किये गये किसी दूसरे प्रयत्नकी जानकारी नहीं है।

आपके पत्रके पहले पैराके अन्तिम वाक्यका एक अंश यह है कि "आपका 'विवेक' अब किसी प्रकार उन अनीतियोंसे सहयोग करनेको प्रस्तुत नहीं है जिनका इस एक वर्षके अनुभवमें बार-बार परिचय मिला है।" यदि यह वाक्यांश तात्कालिक क्षोभ या आक्रोशका द्योतक नहीं है तो हम यह कहना चाहेंगे कि अशिष्ट हुए बिना भी बात स्पष्टता और दृढ़तासे कही जा सकती थी। 'अनीतियों'-जैसे शब्दका प्रयोग यदि जान-बूझकर अपमान करनेके लिए नहीं किया गया तो जाने क्या सोचकर किया गया है। अचम्भेकी बात यह है कि अपने ही कथनानुसार आपलोग साल-भर 'अनीतियों' के साथ सहयोग करते रहे और यह बात तबतक मनमें ही रखे रहे जबतक चयन-समितिका पुनर्गठन नहीं हुआ। इस बीच न संस्थापक सदस्योंकी किसी बैठकमें, न पत्र भेजकर ही आप लोगोंने 'अनीतियों' की रोक-थामका कोई प्रयास किया। ज्ञातव्य यह है कि तेरहवीं गोष्ठीकी समाप्तिपर ज्योंही संयोजकने ज्ञापित किया कि सदस्योंका एक वर्षका चन्दा समाप्त हो गया है त्योंही आपमें-से एक (श्री विश्वम्भर 'मानव') ने अगले वर्षका शुल्क देकर 'अनीतियों' से एक वर्ष और सहयोग करनेकी व्यवस्था की थी। एक अन्य हस्ताक्षरकर्ता श्री गंगाप्रसाद पाण्डेयने अपने ५ अप्रैल '६५ के पत्रमें जो विचार व्यक्त किये उनकी भी हम याद दिलाना चाहेंगे। उन्होंने लिखा था 'गत साल-भर 'विवेचना' के सुचारु संचालन तथा गोष्ठियोंके उत्तमोत्तम प्रबन्धके लिए मेरी हार्दिक बधाई और धन्यवाद स्वीकार करें।"

आपके पत्रका दूसरा मेरा स्पष्टतः 'विवेचना' गोष्ठीकी स्थापनासे पहलेकी बातोंसे सम्बद्ध है।

आपके पत्रके तीसरे पैराका तीसरा वाक्य कि "'विवेचना' गोष्ठीको उसके नीति-निर्धारक; दलगत, संकीर्ण, एकांगी और तथाकथित आधुनिकतावादी साहित्यिक दृष्टिके प्रचार और प्रसारका मंच बनाते रहे हैं जो मात्र व्यक्तिकुण्ठाके साहित्यको श्लाघनीय और स्वस्थ मानवतावादी, जीवनधर्मी, समाजपरक साहित्यको नितान्त तिरस्करणीय मानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है"—उस चिरपरिचित दलबन्दीकी भाषाका नमूना है जिसपर अब कुछ भी टिप्पणी करना व्यर्थ है।

हमारा यह दावा है कि इस एक वर्षमें 'विवेचना' ने न केवल संकीर्णता और गुटबन्दीसे अपनेको दूर रखा है बल्कि आजकी हिन्दी आलोचनामें वस्तुपरक दृष्टि और स्पष्ट कथनकी स्वस्थ परम्पराको बल दिया है। 'विवेचना' में पढ़े गये निबन्ध और उसके गोष्ठी-प्रसंग गुप्त नहीं रखे गये, बराबर प्रकाशित होते रहे हैं। हिन्दी-जगत् ही इसका निर्णायक है कि हमारा दावा सही है या आपका आरोप।

आपने समीक्षार्थ पुस्तकोंके चयनको ठीक माना है, पर समीक्षकोंके चयनको नहीं। अपने आरोपोंके समर्थनमें आपने सर्वश्री देवीशंकर अवस्थी, रघुवंश, बालकृष्ण राव, इलाचन्द्र जोशी और विद्यानिवास मिश्रकी समीक्षाओंको "एकांगी, छिद्रान्वेषी, पूर्वग्रहसे आक्रान्त" बताया है और यह भी कहा है कि "उन समीक्षकोंका उद्देश्य कृतियोंको निम्नकोटिकी रचना सिद्ध करना मात्र रहा है।" जिन समीक्षकोंको आप लोगोंने अभियुक्तके कटघरेमें खड़ा किया है वे आपके द्वारा लगाये गये आरोपके उत्तरमें क्या कहना चाहेंगे यह हम नहीं जानते, पर हम यह अवश्य कहना चाहेंगे कि जो समीक्षक आपके मनकी बात न कहे उसे बेईमान समझना रुग्ण मनोदशा और दूषित दृष्टिका परिचायक ही कहा जा सकता है। एक विलक्षण बात तो यह है कि श्री इलाचन्द्र जोशी अभियोग लगानेवालोंमें भी हैं, अभियुक्तोंमें भी 'तात्कालिक क्षोभ या आक्रोश'के कारण ऐसी असावधानी हो ही जाती है। इसी सन्दर्भमें यह भी। याद दिला दें कि जिन समीक्षकोंपर आप लोगोंने एकांगी आदि होनेका आरोप लगाया है उन्हीं अभियुक्तोंमें-से एक (श्री बालकृष्ण राव) को आप लोगोंमें-से एक (श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय) ने तटस्थ समीक्षा प्रस्तुत करनेपर उसी गोष्ठीमें बधाई दी थी।

आपकी इस स्थापनासे हम पूर्णतया सहमत हैं कि निर्भीक विवेचना और असंस्कृत आचरण एक ही वस्तु नहीं हैं, जैसे आपके इसी पत्रके सन्दर्भमें हम ऊपर कह चुके हैं कि अशिष्ट हुए बिना भी बात स्पष्टता और दृढ़तासे कही जा सकती थी। आपने 'प्रतिष्ठित लेखकों' की बात उठाकर जो संकेत किया है कि 'विवेचना' में चर्चित कुछ प्रतिष्ठित हैं, कुछ नहीं, या लेखक प्रतिष्ठित हैं, समीक्षक नहीं—उससे हमारा घोर विरोध है। हमारी दृष्टिमें हमारे सभी लेखक और समीक्षक बराबर हैं। इसके अलावा यह एक मोटी बात है कि यदि किसी सभामें कोई असंसदीय बात कही जाती है तो उसके विरुद्ध अध्यक्षका ध्यान तुरन्त आकृष्ट करना उपस्थित सभ्योंका कर्तव्य होता है। अध्यक्षकी व्यवस्थासे असन्तोष प्रकट करनेके भी तरीक़े हैं जिन्हें सभी लोग जानते हैं।

यह सर्वथा अनावश्यक रूपसे हिन्दी साहित्य सम्मेलनका नाम घसीटकर यदि इसकी कोशिश की गयी है कि उस संस्थाके अधिकारियोंकी कोपदृष्टि 'माध्यम' की ओर, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत रूपसे श्रीबालकृष्ण रावकी ओर, आकृष्ट हो तो हम यही कह सकते हैं कि यह प्रयास अत्यन्त अशोभन है। इस प्रसंगमें यह उल्लेखनीय है कि ११ अप्रैल '६५ को संस्थापक सदस्योंके समक्ष श्री गंगाप्रसाद पाण्डेयका वह पत्र पढ़ा गया था जिसमें उन्होंने वर्ष-भर गोष्ठीके उत्तमोत्तम प्रबन्ध और सुचारु संचालनपर संयोजक और अध्यक्षको बधाई दी थी।

अन्तमें इतना ही और कहना चाहेंगे कि हस्ताक्षरकर्त्ताओंमें-से केवल तीन (सर्वश्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, इलाचन्द्र जोशी और अमृतराय) 'विवेचना' के संस्थापक सदस्य हैं और दो (सर्वश्री विश्वम्भर 'मानव' और प्रकाशचन्द्र गुप्त) गोष्ठी-सदस्य हैं। सर्वश्री सुमित्रानन्दन पन्त और केशवप्रसाद मिश्र 'विवेचना' से सदस्यरूपमें सम्बद्ध कभी नहीं हुए। अन्तिम दोनों सज्जनोंका सम्बन्ध-विच्छेदका निश्चय कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं रखता।

पर, हम यह कभी भी नहीं चाहते कि आप लोगोंमें-से कोई भी 'विवेचना' से अलग हों क्योंकि जिन कारणोंसे आप लोगोंने अलग होनेका निश्चय किया है वे सभी निराधार हैं। हमें अत्यन्त प्रसन्नता होगी यदि आप पुनर्विचारके फलस्वरूप 'विवेचना' को अपने सक्रिय सहयोगसे लाभान्वित करते रहें।

—विवेचनाकी ओरसे
उमाराव (संयोजक)

सेवामें : सर्वश्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, इलाचन्द्र जोशी, अमृतराय (संस्थापक सदस्य) तथा सर्वश्री प्रकाशचन्द्र गुप्त, विश्वम्भर 'मानव' (गोष्ठी सदस्य)।

३

संयोजक 'विवेचना'
इलाहाबाद

महोदय,

'विवेचना' से अपने सम्बन्ध-विच्छेदकी सूचना देते हुए जो पत्र हमने आपको लिखा था उसके उत्तरमें आपका २४ अप्रैल १९६५का पत्र मिला।

हमारे मनमें कहीं एक क्षीण आशा थी कि 'विवेचना' की आपत्तिजनक रीति-नीतिके किंचित् निष्पक्षता और सद्भावनासे पुनर्विचार करनेकी दिशामें हमारा पत्र आपके लिए एक निमित्त बन सकेगा, आपके पत्रसे वह भी समाप्त हो गयी। हमें बड़ा खेद है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें हमको येन-केन प्रकारेण आपके अपने पक्ष-समर्थनके आग्रह या दुराग्रहके अतिरिक्त और कुछ नहीं मिल सका।

'विवेचना' के विरुद्ध हमारा मूल अभियोग था और है कि उसके नीतिनिर्धारक 'विवेचना' गोष्ठीको उस दलगत, संकीर्ण, एकांगी और तथाकथित आधुनिकतावादी साहित्यिक दृष्टिके प्रचार और प्रसारका मंच बनाते रहे हैं जो मात्र व्यक्तिकुण्ठाके साहित्यको श्लाघनीय और स्वस्थ, मानवतावादी, जीवनधर्मी, समाजपरक साहित्यको नितान्त तिरस्करणीय मानती है। हमारे इस अभियोगको आपने यह कहकर उड़ा देनेका प्रयास किया है कि यह "उस चिरपरिचित दलबन्दीकी भाषाका नमूना है जिसपर अब कुछ भी टिप्पणी करना व्यर्थ है।" हमें आश्चर्य है कि यह लिखते समय आपको इस बातका भी ध्यान नहीं रहा कि अपनी स्थितिकी दुर्बलताको छिपानेका यह ढंग बहुत बासी और पुराना पड़ चुका है।

उसी प्रकार हमें इस बातका भी आश्चर्य है कि आपकी समझमें हमारी यह मोटी-सी बात भी कैसे नहीं आयी कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन-जैसी संस्थासे सम्बद्ध एक गोष्ठीके लिए सम्मेलनकी रीति-नीति या कमसे कम उसकी मर्यादाका थोड़ा-बहुत ध्यान रखना आवश्यक है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दीकी संवर्द्धनामें लगी हुई एक सार्वजनिक संस्था है। उसीके पैसेसे चलनेवाली एक गोष्ठीमें और उसीके साहित्यिक मुखपत्रके माध्यमसे हिन्दी साहित्यको हर महीने ऐसे कुत्सित और हीन रूपमें हिन्दीभाषियों, और उससे भी अधिक अहिन्दीभाषियोंके आगे, चित्रित किया जाये—और ऐसे समयमें जब कि हिन्दी-विरोधी लोग यों ही हिन्दी साहित्यकी हीनताका ढिंढोरा पीट रहे हों। इसमें आपको भले कोई अनौचित्य न दिखाई देता हो, हमें तो निश्चय ही दिखाई देता है, और अपने पत्रमें हमने इसीकी ओर संकेत किया था। ऐसा करते समय हमारा उद्देश्य सम्मेलन-अधिकारियोंकी कोपदृष्टि 'माध्यम' की ओर अथवा व्यक्तिगत रूपसे श्री बालकृष्ण रावकी ओर आकृष्ट करना नहीं, स्थितिके एक सहज सत्यकी ओर ध्यान दिलाना मात्र है। यदि वह भी आपको 'अशोभन' जान पड़ता है तो हम आपकी व्याख्याके अनुसार और आपके ही शब्दोंमें इसे आपकी 'रुग्ण मनोदशा और दूषित दृष्टिका परिचायक' समझनेके लिए बाध्य हैं।

हमें प्रसन्नता है कि आपने एक सन्दर्भमें हिन्दी-जगत्को निर्णायक माननेकी बात कही है। हम आपके प्रस्तावका हृदयसे समर्थन करते हैं। अब यही उचित है कि हिन्दी-जगत्के सामने सभी तथ्य रखे जायें—गोष्ठी-प्रसंगमें चलनेवाले वे उच्छृंखल, कुरुचिपूर्ण कटाक्ष भी, जो 'माध्यम' में प्रकाशित विवरणमें नहीं आने दिये जाते पर जिनके हमीं नहीं और भी बहुत-से साक्षी हैं—और फिर देखा जाये कि हिन्दी-जगत् इसपर अपना क्या निर्णय देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी स्थितिमें अब इस पत्राचारको नितान्त अनुपयोगी जानकर हम यहीं समाप्त करते हैं और आपको सूचित करना चाहते हैं कि 'विवेचना' से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेनेका हमारा निश्चय आपके इस पत्रसे और भी दृढ़ हो गया।

—गंगाप्रसाद पाण्डेय, सुमित्रानन्दन पन्त, इलाचन्द्र जोशी, अमृतराय, विश्वम्भर 'मानव', प्रकाशचन्द्र गुप्त, केशवप्रसाद मिश्र
इलाहाबाद, ९-५-'६४

'विवेचना' की स्थापना २९ जनवरी १९६४ को हुई थी और उसकी पहली गोष्ठी २३ फ़रवरी १९६४ को इलाहाबादके एनीबेसेण्ट मेमोरियल हॉलमें हुई।

'विवेचना' का उद्देश्य साहित्यकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियोंके प्रति रुचि विकसित करना और उनके समुचित मूल्यांकनके लिए उपयुक्त धरातल प्रस्तुत करना है। पहली गोष्ठीमें ही संयोजकने अपने वक्तव्यमें स्पष्ट कर दिया था कि 'विवेचना' की कल्पना किसी 'बुक क्लब' या 'बुक सोसाइटी' के रूपमें नहीं की गयी है। 'विवेचना' प्रतिमास एक गोष्ठीका आयोजन करती है जिसमें किसी पूर्व-निश्चित साहित्यिक कृतिपर किसी अधिकारी व्यक्ति द्वारा समीक्षात्मक निबन्ध प्रस्तुत किया जाता है और उसपर विचार-विमर्श होता है। अभीतक विवेचनाकी १५ गोष्ठियाँ हुई हैं जिनका ब्योरा निम्नलिखित है :

पहली गोष्ठी फ़रवरीमें हुई जिसमें डॉक्टर देवीशंकर अवस्थीने डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदीके उपन्यास 'चारुचन्द्रलेख' की समीक्षा की। दूसरी गोष्ठीमें श्री हर्षनारायण श्री जैनेन्द्रकुमारकी कृति 'समय और हम' की समीक्षा की। तीसरी गोष्ठीमें श्री विजदेव नारायण साही-द्वारा शमशेरजीकी कविताओंकी समीक्षा। चौथीमें श्री नेमिचन्द्र जैन द्वारा श्री नरेश मेहताके उपन्यास 'यह पथ बन्धु था' की समीक्षा। पाँचवींमें श्री कि निवास मिश्र-द्वारा डॉ० रामविलास शर्माकी पुस्तक 'भाषा और समाज' की समीक्षा छठीमें डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी-द्वारा वात्स्यायनजीके उपन्यास 'अपने-अपने अजनबी' की समीक्षा। सातवींमें डॉ० नामवर सिंह-द्वारा श्रीमुक्तिबोधकी 'कृति एक साहित्यिक डायरी' की समीक्षा। आठवींमें डॉ० बच्चनसिंह-द्वारा अश्कजीके उपन्यास 'शहरमें घूमता आइना' की समीक्षा। नवींमें श्री भारतभूषण अग्रवाल-द्वारा 'नवीन' जीकी काव्य-कृति 'हम विषपायी जनम के' की समीक्षा। दसवींमें श्री इलाचन्द्र जोशी-द्वारा श्रीमोहन राकेश के उपन्यास 'अँधेरे बन्द कमरे' की समीक्षा। ग्यारहवींमें डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा-द्वारा श्री सियाराम शरण गुप्तकी काव्य-रचना 'गोपिका' की समीक्षा। बारहवींमें श्री बालकृष्ण राव-द्वारा बच्चनजीके काव्य-संकलन 'अभिनव सोपान' की समीक्षा। तेरहवींमें डॉ० रघुवंश-द्वारा श्री अमृतलाल नागरके उपन्यास 'बूँद और समुद्र' की समीक्षा। चौदहवींमें डॉ० सावि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्हा-द्वारा श्री सुमित्रानन्दन पन्तके महाकाव्य 'लोकायतन' की समीक्षा, और पन्द्रहवीं गोष्ठीमें डॉ० शिवप्रसाद सिंहने भी निर्मल वर्माकी कथा-कृतियों 'जलती झाड़ी' और 'वे दिन' की समीक्षा की।

इस प्रकार अबतक समीक्ष्य कृतियोंमें सात उपन्यास और एक कहानी-संग्रह, पाँच काव्य-कृतियाँ और तीन पुस्तकें अन्य साहित्यिक विषयकी थीं। समीक्षकोंमें दस अन्य शहरोंसे आमन्त्रित बन्धु थे और पाँच स्थानीय।

इन गोष्ठियोंके अतिरिक्त विवेचनाने १० अप्रैल १९६५ को वार्षिक उत्सवके उपलक्ष्यमें एक विशेष गोष्ठीका आयोजन किया था जिसमें हिन्दी आलोचनाकी वर्तमान स्थितिपर विचार हुआ। गोष्ठीमें डॉ० रामदरश मिश्रने निबन्ध पढ़ा और डॉ० देवराजने अध्यक्षता की। डॉ० नामवर सिंहने आमन्त्रित अतिथिके रूपमें गोष्ठीमें भाग लिया। विवेचनाकी गोष्ठियोंमें पठित निबन्ध और उनपर हुए विचार-विमर्शके गोष्ठी-प्रसंग नियमित रूपसे 'माध्यम' पत्रिकामें प्रकाशित होते रहे हैं।

'विवेचना'की रीति-नीतिको लेकर जो आपत्तियाँ उठायी गयी हैं उनमें एक बात यह भी कही गयी है कि "हिन्दी साहित्यको हर महीने ऐसे कुत्सित और हीन रूपमें हिन्दीभाषियों और उससे भी अधिक अहिन्दीभाषियोंके आगे चित्रित किया जाना—और ऐसे समयमें जबकि हिन्दी-विरोधी लोग यों ही हिन्दी-साहित्यकी हीनताका ढिंढोरा पीट रहे हैं" हिन्दीके लिए अनिष्टकारी हो सकता है। विवेचनामें जो समीक्षाएँ की जाती रही हैं वे हिन्दी-संसारके सामने आती ही रही हैं। इसलिए 'कुत्सित और हीन' आदि विशेषणोंके प्रयोगका खण्डन करना हम अनावश्यक समझते हैं। पर अहिन्दीभाषी अथवा हिन्दीभाषी क्षेत्रोंमें हिन्दीकी लोकप्रियताके प्रश्नको दृष्टिमें रखकर साहित्यिक कृतियोंकी समीक्षा करना 'विवेचना' की दृष्टिमें सच्चे साहित्यिक मूल्योंकी अवहेलना है, इसकी न कोई सार्थकता है, न हो सकती है। नीतिकी दृष्टिसे भी इसमें हिन्दीके अहितकी ही आशंका हो सकती है क्योंकि साहित्य और कृतिकार साहित्यिक मूल्योंकी नींवपर खड़ा होकर ही हिन्दी-भाषी अथवा अहिन्दीभाषी क्षेत्रोंमें आदर पा सकता है। यदि इस नींवमें साहित्येतर तत्त्व जोड़ दिये जायें तो हमारी समस्त साहित्यिक उपलब्धियोंके प्रति भावकोंके मनमें शंका जागृत होनेकी सम्भावना अधिक होगी, आदर-भाव उत्पन्न होनेकी कम। पर जो भी हो, 'विवेचना' का उद्देश्य किसी भी साहित्येतर नीतिका स्वीकरण अथवा अस्वीकरण नहीं हो सकता। उसका उद्देश्य तो साहित्यिक मूल्योंके आधारपर कृतियोंकी स्पष्ट और समर्थ समीक्षा करना ही है। 'विवेचना' निर्भीक समीक्षा और मुक्त विचार-विमर्शको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोत्साहित करने और कलागत मानदण्डोंके प्रतिष्ठापनके लिए स्वस्थ वातावरण बनानेके प्रयास करती रही है और करती रहेगी। जिन सात हस्ताक्षरकर्ताओंने 'विवेचना' से सम्बन्ध-विच्छेदका निश्चय किया है, उन्होंने हमारे पत्रके उत्तरमें जो पत्र भेजा है उसमें कोई भी नयी बात नहीं उठायी गयी है, वही बातें दोहरा दी गयी हैं जिनका उत्तर हम अपने पत्रमें पहले ही दे चुके थे। खेदका विषय है कि इसे 'पत्राचार' को प्रकाशित करते या कराते समय हमारे उत्तरको प्रकाशमें लाया ही नहीं गया। हम तो यही समझते थे कि पत्रकारिताके नैतिक औचित्यकी यह माँग होती है कि इस प्रकारके विवादमें केवल एक पक्षकी बात ही नहीं, दोनों पक्षोंकी बातें सामने लायी जाती हैं—भले ही विवादमें पड़नेवाले एक पक्षके लोग विपक्षकी बातें दबा देना चाहें।

—विवेचनाकी ओरसे
उमाराव
(संयोजक)

हमारा नवीन उपलब्धियाँ

- चार मीनारें : कामताप्रसाद सिंह 'काम' १०.००
  कामता ग्रन्थावली
- चतुर्मुखी : ब्रजकिशोर नारायण २.००
  चुटीली उक्तियाँ, तीखे व्यंग्य
- फिर से कहो : मधुकर गंगाधर २.५०
  कहानी
- नयी पड़ोसिन : कु० वीणा सेठ ३.००
  कहानी
- हिन्दी साहित्य : शंकरदयाल सिंह २.५०
  विचार, परम्परा-अनुभूति

पारिजात प्रकाशन
डाक बँगला रोड, पटना-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती विश्व
कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ

जिनका उद्देश्य मनोरंजन करना न
होकर तथ्योंकी थाती सौंपना है

• दक्षिण भारतीय भाषाएँ
सोवियत रूसमें

विस्मय नहीं, एक प्रीतिकर सन्तोषकी बात है यह कि हमारी दक्षिण भारतीय भाषाओंके अध्ययनकी रुझान सोवियत रूसमें इधर अपेक्षाकृत बढ़ी है। वैसे तो दक्षिण भारतीय भाषाओंका अध्ययन-मनन रूसमें १८वीं शतीके मध्यसे ही प्रारम्भ हुआ जो समय-गतिके साथ निरन्तर बढ़ता ही गया। और आज स्थिति यह है कि दक्षिण भारतकी प्रायः सभी भाषाओंकी महत्त्वपूर्ण पुस्तकोंके अनुवाद सभी भाषामें सहज सुलभ हैं। यही नहीं, दक्षिण भारतीय भाषाओंके अध्ययनमें सरलता-सुगमताको देखते सम्बन्धित भाषा-विज्ञान, इतिहास और व्याकरणकी पुस्तकें सोवियत विद्वानोंने मूल रूपमें भी प्रस्तुत की हैं। इस दिशामें एक और बड़ा प्रयत्न शीघ्र ही पूरा होनेको है, वह है—'मलयालम-रूसी शब्दकोश' निर्माण-कार्य। 'तेलुगु-रूसी शब्दकोश' का कार्य भी शीघ्र ही समाप्तिकी ओर है; और अब अगली योजनामें है 'रूसी-मलयालम शब्दकोश' का निर्माण-कार्य।

जानकारी तो यहाँतक है कि हमारी दक्षिण भारतीय भाषाओंकी साहित्यिक गतिविधियोंकी दिनप्रमित जानकारी भी रूसके लोगोंमें रुचिका विषय बन गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● विज्ञानके बढ़ते चरण

सोवियत विशेषज्ञोंका अनुमान है कि वर्तमान शतीके अन्त तक एक ऐसे यन्त्रका निर्माण पूरा हो जायेगा जो किसी भी भाषण या लेखका अनुवाद अन्य अनेक भाषाओंमें सही और तीव्र गतिसे कर सकेगा। इस दिशामें एक और प्रयोग सोवियत विशेषज्ञोंने किया है : विज्ञान और प्रविधिकी कुछ शाखाओंके कोशोंसे, जिनमें अँगरेज़ीके हज़ारों शब्द आये हैं, इस यन्त्रने प्रायः सभी अँगरेज़ी शब्दोंको पहचाना है।

काम यह महत्त्वका है। क्योंकि विभिन्न भाषाओंमें प्रति वर्ष लाखों पुस्तकें और लेख प्रकाशित होते हैं जिनका अनुवाद करना तो दूर सबको पढ़ पाना भी अनुवादकोंके लिए सम्भव नहीं हो पाता। अतः यह विद्युत् यन्त्र न केवल इनके अनुवाद करेगा बल्कि अपने उपयोगकी सामग्री चुनकर अलग भी करेगा।

● नयी स्वतन्त्रता

नयी रुचि

घाना : एक नवोदित स्वतन्त्र राष्ट्र। कह सकते हैं पिछड़ा हुआ, पर माननेकी बात यह नहीं; इसलिए कि स्थिति अब वहाँकी कुछ और है। जानकार सूत्रोंका कहना है कि पिछले दिनों पुस्तकें पढ़नेकी रुचि वहाँके निवासियोंमें बड़ी तेज़ीसे विकसित हुई है—विशेष रूपसे नयी उमरवाले बालक-बालिकाओंमें। इस बढ़ती गहरी रुचिको देखकर वहाँके प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओंने सम्बन्धित आवश्यक व्यवस्था तो की ही, शासनने भी इस दिशामें अपेक्षित ध्यान दिया। बालकोपयोगी पुस्तकालयोंकी संख्या दुगनी-तिगुनी बढ़ा दी गयी और उसी अनुपातमें उनकी मनचाही पुस्तकोंकी संख्यामें वृद्धि भी हुई। किन्तु शिकायत फिर भी यही बनी रही कि पुस्तकालयोंमें पुस्तकोंकी संख्या अभी भी आवश्यकता-भर नहीं है; और न बाज़ारमें ही उतनी पुस्तकें पहुँच पाती हैं जितनीकी माँग है।

प्रत्यक्ष ही इस स्थितिसे वहाँके पुस्तक-व्यवसायी चिन्तित हो उठे हैं, उनके सामने एक समस्या आ गयी है। पर समस्याके समाधानके लिए भी वे मनोयोगसे प्रयत्नशील हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• साहित्य अकादेमीकी एक महत्त्वपूर्ण योजना

हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओंके वरिष्ठ साहित्यकारों और साहित्य-सेवियोंका जीवन-परिचय एक ही स्थानपर उपलब्ध हो—इस दृष्टिसे एक महत्त्वपूर्ण योजना साहित्य-अकादेमीने कार्यान्वित की है। अकादेमी-द्वारा संचालित इस योजनामें प्रायः सभी भारतीय भाषाओंके साहित्य-जगत्से पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है और आगे भी मिलेगा, ऐसी आशा है।

अकादेमी ये परिचय पुस्तिकाएँ काफ़ी सस्ते दामों प्रकाशित कर रही है ताकि ये सर्वसुलभ हों। पहले ये सभी पुस्तकें अँगरेज़ी भाषामें प्रकाशित हो रही हैं किन्तु बादमें अन्य भारतीय भाषाओंमें भी ये अनूदित होकर प्रकाशमें आयेंगी।

कहना न होगा कि यह प्रयास अपने-आपमें अधीती पाठकोंके लिए जितना लाभकारी है, साहित्यकारोंके लिए भी उतना ही। इसके माध्यमसे सम्पूर्ण भारतीय भाषाओंके बीच एक सहयोग-सम्पर्कका आधार भी सहज ही निर्मित हो तो बड़ी बात होगी।

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

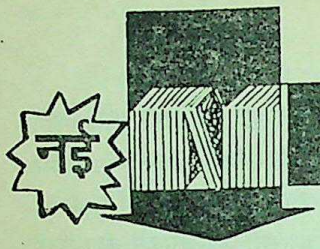

• तारा	(उपन्यास)	यशपाल
• सरहदों के बीच	(उपन्यास)	कमलेश्वर
• पापी	(उपन्यास)	रांगेय राघव
• अलविदा	(उपन्यास)	जयन्त वाचस्पति
• लेन-देन	(उपन्यास)	शरत्चन्द्र
• तीस दिन में सफलता	(जीवनोपयोगी)	ए० पी० परेरा
• प्राणों की बाज़ी		अनु० कान्तिमोहन
• फ़ैज़ की शायरी		सं० प्रकाश पण्डित

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

प्रवंचना (उपन्यास) गुरुदत्त
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

माँ (उपन्यास) गोर्की
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

विश्व भ्रमण (यात्रा-संस्मरण) सेठ गोविन्ददास
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य संगम
गोष्ठी-समारोह

भारतीय हिन्दी परिषद्
इक्कीसवाँ अधिवेशन

"हिन्दीका स्थान विश्वकी भाषाओंमें तीसरा है, इसलिए उसे संयुक्त राष्ट्र संघमें अन्तर्राष्ट्रीय भाषाके रूपमें स्थान मिलना चाहिए, पर इसके लिए यह ज़रूरी है कि हम उसे अपने देशमें राष्ट्रभाषाका उचित सम्मान प्रदान करें, जिसकी कि वह अधिकारिणी है।" – श्री सूर्यभानुजी, उपकुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय-ने भारतीय हिन्दी परिषद्के इक्कीसवें अधिवेशनका उद्घाटन करते हुए ज़ोरदार शब्दोंमें यह बात कही ! उन्होंने विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीको उच्चस्तरीय शिक्षाका माध्यम बनाये जानेपर भी बल दिया।

भारतीय हिन्दी परिषद्का यह अधिवेशन पिछले दिनों कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयके तत्त्वावधानमें, डॉ० रामकुमार वर्माकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशनमें भारतके कोई तीस विश्वविद्यालयोंसे लगभग दो सौ प्रतिनिधियोंने भाग लिया। प्रतिनिधियोंका स्वागत करते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य विनयमोहन शर्माने कहा कि कुरुक्षेत्र प्राचीन कालसे 'धर्म-क्षेत्र' ही नहीं 'विद्या-क्षेत्र' भी रहा है। यहाँ विद्वन्मण्डली समय-समयपर विचार-गोष्ठियाँ आयोजित करती रही है। यहाँके हिन्दीके महत्त्वको दर्शाते हुए उन्होंने यह धारणा प्रकट की कि खड़ी बोलीका जन्म-स्थान वास्तवमें कुरुक्षेत्र और उसका निकटवर्ती क्षेत्र ही है। इसलिए उन्होंने यह आशा प्रकट की कि हिन्दीके विद्वान् यहाँ शान्त चित्तसे हिन्दीसे सम्बन्धित समस्याओंपर गम्भीरतासे विचार करेंगे।

और अध्यक्ष डॉ० रामकुमार वर्माने भी इस बातपर ज़ोर दिया कि भारतके विश्वविद्यालयोंमें शिक्षा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओंके माध्यमसे होनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीके पाठ्यक्रममें एकरूपता लाये जानेका भी आग्रह किया, और कहा कि "मैं इस बातसे सहमत नहीं हूँ कि दक्षिण भारतके विश्वविद्यालयोंमें केवल खड़ी बोली ही पाठ्यक्रममें रहे क्योंकि ब्रज तथा अवधसे कटकर अध्ययन करनेसे हम हिन्दीके वास्तविक वैभवसे वंचित रह जायेंगे।"

इस अधिवेशनमें दो विचार-गोष्ठियाँ तथा दो निबन्ध-गोष्ठियाँ भी आयोजित थीं। प्रथम विचार-गोष्ठी डॉ० ब्रजेश्वर वर्माकी अध्यक्षतामें 'भारतीय भक्ति-साहित्यकी मूलभूत एकता' विषयपर हुई, जिसमें अपने अध्यक्षीय वक्तव्यमें उन्होंने भारतकी प्रायः सभी भाषाओंके भक्ति-साहित्यका विश्लेषण और विवेचन करते हुए उसके मूलभूत तत्त्वोंपर प्रकाश डाला। डॉ० हरवंशलाल शर्माने भी विषयका प्रवर्त्तन करते हुए भारतकी विविध भाषाओंके भक्ति ग्रन्थोंका परिचय दिया, तथा विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों-द्वारा प्रभावित उनके आध्यात्मिक तत्त्वोंका विश्लेषण करते हुए उनकी मूलभूत एकताका प्रतिपादन किया और इस बातपर ज़ोर दिया कि इस समस्त साहित्यका तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए। डॉ० जयभगवान गोयलने विद्वानोंका ध्यान गुरुमुखी लिपिमें रचित हिन्दी काव्यकी ओर आकर्षित करते हुए कहा कि १७वीं शतीसे १९वीं शती तक पंजाबमें लाखोंकी संख्यामें ऐसे छन्द लिखे गये जो भक्ति भावसे ओतप्रोत हैं और उनमें भक्तिके वही मूल तत्त्व विद्यमान हैं जो अन्य भारतीय भाषाओंके साहित्यमें हैं। डॉ० राजगोपालनने तमिलके भक्ति-साहित्यके मूल तत्त्वोंपर प्रकाश डाला और अन्य भारतीय भाषाओंके भक्ति-साहित्यसे उसकी एकरूपता प्रतिपादित की।

दूसरी गोष्ठी फिर डॉ० सावित्री सिन्हा की अध्यक्षतामें 'रस-सिद्धान्त और नयी कविता' विषयपर हुई, जो बहुत ही रोचक थी। इस गोष्ठीमें रसवादियों और नयी कविताके प्रेमियोंमें काफ़ी ज़ोरदार वाद-विवाद हुआ, कुछ व्यंग्यवर्षा भी हुई। अपने अध्यक्षीय भाषणमें डॉ० सिन्हाने कवितामें रसकी व्यापकताका प्रतिपादन किया तथा रसवादी दृष्टिकोणपर अतीतोन्मुखताका आक्षेप करनेवालों-को उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि "हर युगकी श्रेष्ठ कविता वर्तमानसे प्रेरित होकर, यथावश्यकता अतीतका सहारा लेकर भविष्यकी ओर उन्मुख होती है। भविष्योन्मुखता केवल प्रगतिवादका दाय नहीं है और न नयी कविता अतीतोन्मुखतासे परे है। इतिहासकी ओर न तथाकथित रस-काव्य लौटा था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न रसमुक्त काव्य अर्थात् नयी कविता लौटी है। – और फिर, अतीतोन्मुखताको रस-सिद्धान्तकी मूल कसौटी कैसे माना जा सकता है? रस और अरस काव्यके बीचमें एक व्यावर्तक रेखा अवश्य खींची जा सकती है – कि रस-कवि वर्तमानमें न जीकर भूत और भविष्यत्‌की ओर बढ़ता है और रस-मुक्त कवि वर्तमानमें जीता हुआ उसीमें मरना चाहता है क्योंकि द्वन्द्व और असामंजस्यकी स्थिति दीर्घायु नहीं हो सकती।" नयी कविताके सन्दर्भमें रस-निष्पत्तिके महत्त्वकी स्थापना करते हुए सावित्रीजीने कहा, "नयी कविताकी पूर्ववर्ती आधुनिक प्रवृत्तियोंमें-से वही अंश अमरत्वका भागी बना है जो रसकी भूमिपर खरा उतरा है, और नयी चेतना अब जिस ओर मुड़ रही है, वह मार्ग इसके विरोधका नहीं है।"

डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षितने भी विषयका प्रवर्तन करते हुए 'रसवादी' दृष्टिकोणकी स्थापना की। तथा डॉ० गणपतिचन्द्रने 'बुद्धिरस' को मान्यता देते हुए नयी कविताकी बौद्धिक प्रवृत्तिको उसके भीतर स्थान देनेका आग्रह किया। उन्होंने 'शान्तरस' की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की जिसके अन्तर्गत उनके अनुसार नयी कविताकी अनेक प्रवृत्तियोंको समाविष्ट किया जा सकता है।

डॉ० जगदीश गुप्त, डॉ० शम्भुनाथ सिंह तथा श्री गणेशदत्त त्रिपाठीने 'रसदृष्टि' का कड़ा विरोध किया। उन्होंने विघटन, अनास्था और द्वन्द्वकी ही अधिक चरचा की जिनका रससे मौलिक विरोध है। डॉ० जगदीश गुप्तने जहाँ रस-दृष्टिका खण्डन करते हुए कुछ व्यंग्यसे काम लिया, वहाँ कुछ सन्तुलन लानेका भी प्रयत्न किया। रसवादी दृष्टिकोणका भी महत्त्व स्वीकार करते हुए उन्होंने उसकी व्यापकताको माननेसे इनकार किया और नयी कविताको रसनिरपेक्ष एक वस्तुवादी दृष्टिसे परखे जानेपर बल दिया।

गोष्ठीका समापन रसवादी आचार्य डॉ० नगेन्द्रने किया तथा संक्षेपमें रसकी प्राचीन एवं अर्वाचीन मनोवैज्ञानिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हुए रसकी व्यापकताका प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि "रस भावकी कल्पनात्मक अनुभूति है तथा कविता भावकी कल्पनात्मक अभिव्यक्ति। इसलिए रसरहित कविताका अस्तित्व सम्भव ही नहीं है, अब यह निर्णय नयी कवितावालोंको करना है कि वे नयी कविताको कविता बनाये रखना चाहते हैं अथवा नहीं।" गोष्ठीमें डॉ० सत्यदेव चौधरी और प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्माने भी अपने विचार व्यक्त किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्ध-गोष्ठीके क्रममें पहली आचार्य वंशोधर विद्यालंकारकी अध्यक्षतामें हुई जिसमें 'गुरुमुखी लिपिमें हिन्दी काव्य' तथा 'दक्खिनी हिन्दी' पर शोधपत्र पढ़े गये। 'पंजाबके हिन्दी प्रबन्ध-काव्योंमें वात्सल्य रस' पर अपना निबन्ध पढ़ते हुए डॉ० जयभगवान गोयलने यह धारणा प्रस्तुत की कि १७ वीं शतीसे १९ वीं शती तक पंजाबके हिन्दू और सिक्ख लेखकोंकी प्रमुख साहित्य-भाषा हिन्दी थी और इस युगमें पंजाबमें अनेक प्रबन्ध-काव्य लिखे गये जिनमें वात्सल्यका सजीव, मार्मिक एवं विशद चित्रण हुआ है। डॉ० मनमोहन सहगलने भाई गुरुदासकी हिन्दी कविताके काव्य-तत्त्वोंका विवेचन किया और उनकी भक्ति-भावनाके स्वरूप-पर प्रकाश डाला। डॉ० ओमप्रकाश शास्त्रीने पंजाबके रीतिग्रन्थोंके स्वरूपपर प्रकाश डालते हुए ग्रन्थकारोंके आचार्यत्वका मूल्यांकन किया।

'दक्खिनी हिन्दी' के सम्बन्धमें स्वयं अध्यक्ष महोदयने अपने भाषणमें दक्षिणमें रचित हिन्दीके काव्य-ग्रन्थोंका गवेषणात्मक परिचय दिया और इस दिशामें हो रहे शोधोंका भी उल्लेख किया। दक्षिणके कुछ अन्य विद्वानोंने भी वहाँके हिन्दी साहित्यका परिचय प्रस्तुत किया।

दूसरी निबन्ध-गोष्ठी प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्माकी अध्यक्षतामें हुई जिसमें हिन्दी साहित्य और शोधसे सम्बन्धित विविध विषयोंपर स्वतन्त्र निबन्ध पढ़े गये। श्री देवेन्द्रनाथ शर्माने अपने अध्यक्षीय भाषणमें हिन्दीके शोध-प्रबन्धोंके सम्बन्धमें कुछ आपत्तियाँ उठायीं जिनपर काफ़ी चर्चा हुई। और इस बातपर ज़ोर दिया गया कि विभिन्न विश्वविद्यालयोंमें होनेवाले शोध-कार्यमें विषयोंकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। इस गोष्ठीमें डॉ० नगेन्द्र, डॉ० इन्द्रनाथ मदान आदिने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस प्रकार परिषद्का द्विदिवसीय अधिवेशन उपलब्धि और सफलताके बीच सुखद वातावरणमें समाप्त हुआ।

—डॉ० जयभगवान गोयल

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकोंके पत्र

जून १९६५ की 'ज्ञानपीठ पत्रिका'। डॉ० सिद्धनाथ कुमारने अपने लेख 'आज नाटक क्यों' में कई महत्त्वपूर्ण समस्याओंकी ओर संकेत दिया है, वास्तवमें वे गम्भीर विचार-चर्चाकी अपेक्षा रखते हैं। 'वर्तमान स्थितिमें सशक्त कला-माध्यमके रूपमें रंगमंचकी प्रतिष्ठा कैसे की जाये ?' – एक बड़ा प्रश्न है। बड़ी बात होगी यदि विधा-विशेषज्ञ इसपर कुछ जमकर बातें करें।

प्रयाग — शैलेश उपाध्याय

'ज्ञानपीठ पत्रिका' बराबर देख रहा हूँ। हिन्दीमें अपने तरहकी बिलकुल अकेली यह पत्रिका है। सामग्री भी आप खूब चुन-चुनकर देते हैं। इसी जून ६५ के अंकमें श्री अभिरूप पाल महोदयका लेख पढ़कर दाँतों तले उँगली दाबनी पड़ी। कलकत्ता-जैसे शहरमें हिन्दी पुस्तकोंका इतना दारुण अकाल काश हमारी आँखें खोल सके।

नयी दिल्ली — शेखरशरण सक्सेना

रोज़ी-रोटीके चलते मशीनी गड़गड़ाहटके बीच कुछ समय साहित्य पढ़नेके लिए भी निकाल पाता हूँ – यह मेरा सौभाग्य है। प्रति माह अनेक पत्र-पत्रिकाओं-के साथ यह 'ज्ञानपीठ पत्रिका' भी ले आता हूँ और शब्दशः बाँचता हूँ। मुझे सन्तोष है कि इस मासिकीसे मैंने बहुत-कुछ पाया है। आभार सहित,

पांजिम, गोआ — सी० एच० सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
द्वारा प्रकाशित
तथा श्री बालकृष्ण राव-द्वारा
सम्पादित मासिक

'माध्यम' एक वर्ष की
अल्पावधि में
हर प्रबुद्ध पाठक की सबसे
प्रीतिकर पाठ्य-सामग्री
बन गया है।

'माध्यम' के प्रवेशांक से
अबतक की पूरी फ़ाइल की
धुआँधार माँग इसके स्थायी
महत्त्व और लोकप्रियता का
परिचायक है।

सहवर्ती साहित्य, विवेचना, प्रतिपत्तिका,
समीक्षाएँ, प्रत्यालोचन-पुनर्विचार, हिन्दीजगत्, पत्र-पत्रिकाएँ
'माध्यम' के स्तम्भगत आकर्षण हैं।

• •

एक अंक का मूल्य : १.०० । वार्षिक शुल्क : १०.००

• •

पत्राचार : पो० बा० सं० ६०, इलाहाबाद
सम्पादकीय तथा व्यवस्थापकीय कार्यालय :
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका

तथा

भारतीय भाषाओंकी सर्वोत्कृष्ट
सर्जनात्मक साहित्यिक कृतिपर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार-योजना प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित सामग्रीका अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

o

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

o

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला

• राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी दो	नानक सिंह	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

• उपन्यास

जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
पीले गुलाबकी आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर मानव	४.००
गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस्०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	२.५०
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.२५
सूरजका सातवाँ घोड़ा	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	३.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	६.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	४.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस्०	२.५०
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०
ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• कहानी

दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	३.००
झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
कालके पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोस्ताँ [द्वि० सं०]	शेख़ सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने अँगन रस बरसै	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
मोतियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १–२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
अतीतके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५०
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००
ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

आत्मजयी	कुँवरनारायण	३.५०
हम विषपायी जनमके [द्वि० सं०]	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
वेणु लो गूँजे धरा [द्वि० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
चाँदका मुँह टेढ़ा है	मुक्तिबोध	८.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
बीजुरी काजल आँज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
देशान्तर	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
कनुप्रिया	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०
धूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूप शर्मा	६.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : जुलाई १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• शाइरी

गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
नमक-हराम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००

• नाटक

घाटियाँ गूँजती हैं [द्वि० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम क़ैद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
तरकशके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
चेखॅवके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
बारह एकांकी	विष्णु प्रभाकर	३.५०
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०
सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजितकुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

- रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

- ललित-निबन्धादि

चिन्तककी लाचारी	माखनलाल चतुर्वेदी	४.००
एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकीराय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००
वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
ठूँठा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
ग़रीब और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रावी	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकरायी [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

दीप जले शंख बजे [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००
भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो-वार्ता शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [च० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन[द्वि.सं.]	भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ०रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरत्के नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो	मुनि नथमल	२.००
क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?	आचार्य तुलसी	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
दर्शन अनुचिन्तन	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव [द्वि० सं०]	मुनि नथमल	१.५०
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

- हास्य-व्यंग्य

सिकन्दरनामा	सलमा सिद्दीक़ी	२.००
तेलकी पकौड़ियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
काग़ज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
मुर्ग़-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

जो पुस्तक आपको सबसे अधिक सोचनेके लिए विवश करती है, आपकी सबसे बड़ी सहायक है।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ०महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं०फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

सभाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं०शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं०पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल ; कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

मदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १३.००

मनुष्य जातिने जो कुछ किया, सोचा और पाया है,
वह पुस्तकोंके जादू-भरे पृष्ठोंमें सुरक्षित है।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ४
सम्पादन : डॉ० जोहरापुरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये ३.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन–वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल .५०

स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश]
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल १.५०

रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका]
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री प्रभाचन्द्राचार्य २.००

लाटी संहिता [संस्कृत]
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल .५०

नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका]
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात .२५

आगामी प्रकाशन

साहित्यिक

* **विवेक के रंग** : सं०–डॉ० देवीशंकर अवस्थी (समीक्षा संकलन)
* **सिंहली कहानियाँ** : सं०–भदन्त आनन्द कौसल्यायन, एस्० मेधंकर (कहानियाँ)
* **अन्धा चाँद** : मुनि रूपचन्द (कविता)
* **अपभ्रंश भाषा और साहित्य** : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन (शोध)
* **अठारह सूरजके पौधे** : रमेश बक्षी (उपन्यास)
* **नये प्रतिमान पुराने निकष** : लक्ष्मीकान्त वर्मा (समीक्षा)
* **खण्डित सेतु** : डॉ० शम्भुनाथ सिंह (कविता)
* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ** : कृष्णाचार्य (शोध)

■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञा नो द य

सत्रहवें वर्षका पहला अंक

जुलाई १९६५

* नये-नये और नयेसे नये हस्ताक्षर—सम्भावनाओं वाले
* ताज़ी और नयी कहानियाँ–कविताएँ
* नयी पीढ़ीके लिए एक सम्पादकीय भी

० ० ० **कहानियाँ** : हिमांशु जोशी, रामनारायण शुक्ल, ममता अग्रवाल, प्रेम कपूर, शशि तिवारी, अवधनारायण सिंह, अतुल भारद्वाज, अमरेन्द्र 'अमर', ओम प्रभाकर, कमलजीत सिंह ।

० ० ० **कविताएँ** : रणजीत, इन्द्रमणि, इन्दु जैन, रमेश गौड़, जगदीश नारायण श्रीवास्तव, पद्मधर त्रिपाठी, अमृता भारती, केवल गोस्वामी, नीलम सिंह, अवधनारायण मुद्गल, कान्ता, भगवत रावत, कुंकुम जोशी, अनामिका ।

• **किसी एककी उलझन** : 'खुले और रोशन कमरेके सवाल'–सुधा अरोड़ा । 'अँधेरे बन्द कमरे और साझेकी डोर'–मोहन राकेश ।

वार्षिक मूल्य १०.००, १.०० प्रति

ज्ञानोदय

सम्पादकीय कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
वितरण कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

भारतीय ज्ञानपीठ, काशीकी ओरसे बाबूलाल जैन फागुल्ल-द्वारा प्रकाशित और सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसीमें मुद्रित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन उपन्यास

• **जुलूस** : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

रेणुका एक और सफल रचात्मक प्रयत्न—अनूठा उपन्यास—'जुलूस'। हिन्दी इस विषय-भूमिकी कोई कृति बिरले ही आयी होगी। कथानक सामयिक सीधा-सा है—घटनाओंकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण और मूल्योंकी दृष्टिसे भी— जो रेणुकी मँजी और निखरी हुई लेखनीका स्पर्श पाकर अत्यन्त प्रभावपूर्ण बन गया है। मूल्य ३.५०

• **अपने अपने अजनबी** : अज्ञेय

हिन्दी ही नहीं; भारतीय साहित्योंमें अपने प्रकारका अद्वितीय उपन्यास। मृत्युसे साक्षात्कारको विषय बनाकर जीवन और नियतिका सरल मार्मिक विवेचन। मृत्यु-विषयक पूर्व और पश्चिमकी दृष्टियोंकी टकराहट, दोनोंके मिलन-द्वारा मानव-जीवनके एक नये आयामका उन्मेष। सर्वथा संग्रहणीय और पठनीय कृति। मूल्य ३.००

• **सूरज का सातवाँ घोड़ा** : धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारतीके औपन्यासिक कृतित्वका दूसरा पहलू – 'गुनाहोंका देवता' से सर्वथा पृथक्। एक नयी शैली–नया कथानक : जितना महत्त्वपूर्ण है आकर्षक भी उतना ही। उपन्यासका गठन भी सीधा-सादा लेकिन मात्र दिल बहलाने या फ़ुरसतका वक़्त काटनेके लिए नहीं—मनको कचोटने और बुद्धिको झँझोड़ देनेवाला भी। मूल्य २.००

देशके सभी अच्छे पुस्तक विक्रेताओंसे प्राप्य

भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष चार : अंक एक
अगस्त १९६५

*

नववर्षांक

93/c/64

ज्ञानपीठ पत्रिका

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

लेखन-प्रकाशनकी अधुनातन
दिशा-प्रवृत्ति और उपलब्धि-परिचायिनी
मासिकी

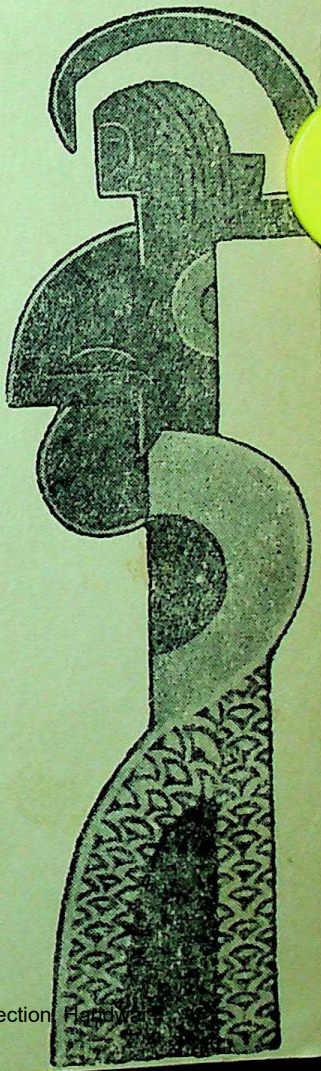

दो नये प्रकाशन

• विवेक के रंग

देवीशंकर अवस्थी-द्वारा सम्पादित हिन्दीमें अपने प्रकार-बिलकुल नयी कृति—विशिष्ट आधुनिक हिन्दी पुस्तकों-आये विशिष्ट समीक्षालेखोंका संकलन।

• इतिहास-पुरुष

देवराजकी बहुर्चाचत लम्बी कविता 'इतिहास-पुरुष', ही तीन और लम्बी कविताओं तथा अन्य विशिष्ट वताओंका संग्रह। हर काव्य-प्रेमीके लिए अनिवार्य रूपसे यीय।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी
साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पत्रिका

वर्ष चार : अंक एक
अगस्त १९६५

१. उद्‌घोष : साहित्यकी पूर्णता··· : 'दिनकर' : ४
२. राजभाषा हिन्दी ही हो सकती है··· : च० राजगोपालाचार्य : ५
३. एक साहित्यिक : एक डायरी : ८
४. विवेकके रंग··· : डॉ० देवीशंकर अवस्थी : ११
५. संस्कृत साहित्यकी गतिविधि··· : महेन्द्र कुलश्रेष्ठ : १५
६. तीन आधुनिक कन्नड़ कवि : देवनन्दन आचार्य : १७
७. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया : १९
८. प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर : २६
९. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित : ३३
१०. पाठक कैसे बढ़े··· : रामनारायण उपाध्याय : ३८
११. एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार : ४१
१२. नयी योजनाएँ : नये प्रयत्न··· : लक्ष्मीचन्द्र जैन : ४४
१३. हिन्दीकी डायरी··· : लक्ष्मीशंकर व्यास : ४६
१४. भारती विश्व : कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ : ४८
१५. प्रकाशन जगत् : प्रवृत्तियाँ और परिवेश : ५१
१६. समसामयिकी : राजनीति और साहित्यकार : ५५

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन :: जगदीश

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन एवं वितरण कार्यालय : भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

मूल्य : छह रुपये वार्षिक, पचपन पैसे प्रति,
द्विवार्षिक : ग्यारह रुपये

समाज-शिक्षा विभाग, राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पत्रिका' के बीते वर्षसे–

'नवीन' श्रद्धांजलि समारोहका विशेषांक मिला। यह अपने ढंगका अकेला विशेषांक है। सम्पूर्ण सामग्री मौलिक ढंगसे सजायी गयी है। आपका यह प्रयोग अन्य पत्रकारोंके प्रस्तुतीकरणका मार्गदर्शन करे, यही चाहता हूँ।

– डॉ० रामकुमार वर्मा

'ज्ञानपीठ पत्रिका' निस्सन्देह एक उच्चस्तरीय मासिकी है। प्रत्येक अंक अपने-आपमें पूर्ण लगता है। लिखनेके लिए तो प्रतिश्रुत हूँ ही, बधाई भी लें।

– डॉ० शिवप्रसाद सिंह

विशेषांक आया। कुछ सामग्री तो कई बार पढ़ गया। निश्चय ही पत्रिकाने ऐतिहासिक महत्त्वका कार्य किया है।

– लक्ष्मीशंकर व्यास

विशेषांक देखा। यह तो कई दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण लगा।

– कृष्णविहारी मिश्र

'ज्ञानपीठ पत्रिका' हर महीने मिल जाती है और मुझे बहुत पसन्द भी आती है। काफ़ी उपयोगी और पठनीय सामग्री आप देते हैं।

– हरिशंकर परसाई

'पत्रिका' में तो बहुत ही अच्छी सामग्री रहती है और इसका क्षेत्र इतना व्यापक और अखिल भारतीय है, यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।

– डॉ० सुरेश अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पत्रिका'–मार्च १९६५ में श्री राजेन्द्र यादवका निबन्ध पढ़कर प्रसन्नता हुई।

– डॉ० रवीन्द्र 'भ्रमर'

'ज्ञानपीठ पत्रिका' हर माह मिलती है और दोस्तो करके, यानी हिलमिलके दो-चार दिन साथ रहती है – तबतक जबतक मैं सारा मधु चाट न डालूँ।

– दामोदर अग्रवाल

'ज्ञानपीठ पत्रिका' बड़ी उपयोगी सामग्री लेकर निकल रही है। नियमित रूपसे पढ़नेको लालायित रहता हूँ।

– डॉ० राजकुमार जैन

'ज्ञानपीठ पत्रिका' के लेख पढ़ता रहा हूँ और अधुनातन विषयों तथा पुस्तकोंपर लिखी समीक्षाओं तथा टिप्पणियोंमें-से अधिकांश पढ़ी हैं। निश्चय ही चयन तथा सम्पादन सुरुचिपूर्ण है।

– जगदीश चतुर्वेदी

'पत्रिका' बहुत सुन्दर और उपयोगी बन गयी है। किन्तु यदा-कदा ही देखनेको मिल पाती है। आपसे आग्रह है कि इसे नियमित पा सकूँ।

– चन्द्रकान्त देवताले

प्रकाशन सम्बन्धी फुटकर जानकारियाँ देनेवाली कई पत्रिकाएँ हिन्दीमें निकल रही हैं। लेकिन प्रकाशन, लेखन और पुस्तक-व्यवसाय तीनों विषयोंको एक साथ रखकर ऊँचे स्तरकी साहित्यिक सामग्री केवल 'ज्ञानपीठ पत्रिका'में ही देखनेको मिली।

– रतनलाल शर्मा

'ज्ञानपीठ' की 'पत्रिका' होते हुए भी यह केवल उसीकी नहीं है – सम्पूर्ण हिन्दी प्रकाशनकी है – उसका लगभग 'अप-टु-डेट' सूचनात्मक ज्ञान प्राप्त करनेका विश्वसनीय साधन है।

– ओम प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्घोष

साहित्यकी पूर्णता

'दिनकर'

साहित्यकी पूर्णता इसीमें नहीं कि वह
लिखा जाये बल्कि इसमें है कि वह
अधिकसे अधिक पाठकों तक पहुँचे

साहित्य लिखनेका काम केवल लेखककी मेजपर समाप्त नहीं होता। पूर्णतापर वह तब पहुँचता है जब लेखककी कृतियाँ पाठकोंके हाथमें पहुँच जाती हैं। जिस भाषाके पाठक बहरे हैं उस भाषाका लेखक एक दिन मूक हो जायेगा। श्रेष्ठ पुस्तकोंका प्रणयन असम्भव हो जायेगा। यह दुर्भाग्यकी ही बात है कि भारतीय भाषाओंको प्रोत्साहन केवल गरीब जनतासे प्राप्त होता है। जो लोग पढ़-लिखकर ऊँची जगहोंपर पहुँच गये हैं वे भारतीय भाषाओंके लिए पैसे खरचनेको तैयार नहीं हैं। वे केवल यह कहकर अपनी जवाबदेहीसे छुट्टी ले रहे हैं कि इन भाषाओंमें है क्या!

यद्यपि यह आरोप अँगरेज़ीकी तुलनामें कुछ हद तक ठीक है, फिर भी वह इतना ठीक नहीं है कि केवल उसीके आधारपर भारतीय भाषाओंकी उपेक्षा की जाये। खेदकी बात है कि हममें-से जो लोग विभिन्न विषयोंमें दक्षता प्राप्त करते हैं उन्हें यह आवश्यक प्रतीत नहीं होता कि वे जहाँ चार पुस्तकें अँगरेज़ीमें लिखते हैं वहाँ कुछ अपनी मातृभाषामें भी लिख डालें। यदि भारतके विभिन्न क्षेत्रोंके विद्वान् ऐसा करने लगें तो हमारी भाषाओं का दारिद्र्य दूर हो जायेगा और जो ज्ञान अँगरेज़ीके जानकारोंके बीच अटका हुआ है वह भी जनताके बीच व्याप्त हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभाषा
हिन्दी ही हो सकती है

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

दक्षिण भारत यदि भावी केन्द्रीय भारत सरकारमें प्रतिनिधित्व करनेसे वंचित नहीं रहना चाहता तो वह हिन्दी पढ़े ; केवल उसके कारण सबपर अँग्रेज़ीका थोपा जाना न सम्भव है न वांछनीय ही।

'टाइम्स ऑव इण्डिया' की वार्षिकीकी सामान्य-परिचय भूमिकामें लेखक—जिससे अतिशयोक्तिकी आशा नहीं की जाती – कहता है, उत्तरी और केन्द्रीय भारतकी मुख्य भाषाओंमें एक ऐसा सामान्य तत्त्व है जो इन भाषाओंके बोलनेवालोंको बिना उनकी अपनी भाषाओंमें विशेष परिवर्तनके ही एक-दूसरेको समझ सकनेमें सहायता प्रदान करता है और यह सामान्य आधार ही भारतके अधिकतर भागकी जन-भाषा बनानेमें सहायक है।' इसके साथ-ही-साथ यह भी ध्यान देने योग्य है कि बंगाली और पश्चिम भारतीय वर्गोंके लिए हिन्दी भाषाका सामान्य ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त सुगम है।

गम्भीर समस्या केवल दक्षिण भारतीयोंकी है। राजनैतिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक दृष्टिकोणोंसे दक्षिण भारतीयोंके लिए हिन्दी सीखना अत्यावश्यक रूपमें जरूरी है। यदि हम लोकतन्त्रका, तथ्य एवं प्रकार दोनों रूपोंमें, सत्य ही स्थापित किया चाहते हैं, यदि हम नहीं चाहते कि शिक्षित व्यक्ति ही सत्ता और प्रभावके स्थानोंपर नियुक्त किये जायें और वे अपना कार्य जनता और निर्वाचकों-से पृथक् होकर करें, तब जन-नियन्त्रणको वास्तविक बनानेके लिए राजभाषा वह भाषा होनी आवश्यक है जो जनताके प्रमुख वर्ग-द्वारा बोली और समझी जाती हो। केन्द्रीय सरकार और विधान-सभाओं और प्रान्तीय सरकारोंकी भारत सरकारसे व्यवहारकी भाषा हिन्दी ही होनी अनिवार्य होगी।

दक्षिण भारत यदि भावी केन्द्रीय भारत-सरकारमें प्रतिनिधित्व करनेसे वंचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहना चाहता है और दक्षिणके शिक्षित व्यक्ति यदि अखिल भारतीय मामलोंमें भाग लेने या ऐसे मामलोंमें लिये जानेवाले निर्णयोंको प्रभावित करनेके अयोग्य नहीं होना चाहते, तो यह आवश्यक है कि वे हिन्दीको अवश्य ही पढ़ें। केवल हमारे ही कारण सब लोगोंपर अँगरेज़ीका थोपा जाना और समस्त भारतमें अपने प्रतिनिधियोंपर जन-नियन्त्रण शिथिल करना न तो सम्भव है और न ही वांछनीय है। यह ध्यान देनेकी बात है कि संवैधानिक संशोधनोंपर नेहरू-प्रतिवेदनने भारतकी राजभाषा हिन्दीको ही अंगीकार किया है। भारतके स्वशासनका यह युक्ति-युक्त निष्कर्ष है।

शिक्षाके मामलोंमें यदि हम पूरी पीढ़ीकी ऊर्जाका अपव्यय और उनको दण्ड देनेसे बचाना चाहते हैं, तो हमें आगामी कुछ वर्षोंकी अनुभूति अभीसे कर लेनी चाहिए। बालकोंकी वर्तमान पीढ़ीको इसी हेतु तुरन्त हिन्दी प्रारम्भ कर देनी चाहिए—चाहे इसे पाठशालाके निर्धारित पाठ्यक्रममें सम्मिलित किया जाये अथवा नहीं। अन्यथा भारतीय नागरिकताके अधिकारोंके एक महत्त्वपूर्ण अंशसे वे व्यावहारिक रूपसे वंचित रह जायेंगे और फिर सिर धुनते रहेंगे, पछताते रहेंगे।

राजनीतिक कारणोंसे कम महत्त्वपूर्ण नहीं, ऐसी भारतकी सांस्कृतिक एकताकी माँग भी सामान्य रूपसे बोली जानेवाली भाषाका ज्ञान है। यदि बृहत् भारतमें प्रतिदिनका सम्पर्क नहीं बनाये रखा गया, तो दक्षिण प्रदेश उस सांस्कृतिक वृक्षकी निर्जीव शाखा-मात्र रह जायेगा। इस कार्यके लिए भी हम अँगरेज़ी माध्यमपर आधारित नहीं रह सकते। क्योंकि इसका ह्रास अन्तर्राष्ट्रीय भारतकी अपनी प्राप्तिकी ओर अग्रसर होनेके साथ होना निश्चित है।

किन्तु राजनीति अथवा संस्कृतिसे भी अधिक प्रत्यक्ष प्रबल समस्या आजीविका उपार्जनकी है। बोलने, समझने और लिखनेका समुचित हिन्दीका ज्ञान तुरन्त उस क्षेत्रको विशाल एवं विस्तृत कर देगा जिससे दक्षिणके शिक्षित व्यक्ति अपनी आपको सेवाके लिए प्रस्तुत कर सकें। अपने प्रान्तमें प्रतिस्पर्धाकी अधिकता अनेक शिक्षित व्यक्तियोंको प्रान्तसे बाहर धकेल रही है, और हिन्दीका काम-चलाऊ ज्ञान निश्चित रूपसे हमारे नवयुवकोंको अखिल भारतीय सार्वजनिक अथवा व्यावसायिक सेवाओंमें उनके अवसर अधिक अच्छे कर देगा।

हिन्दीके पक्षमें तर्कोंका अर्थ मातृभाषाकी उपेक्षा कदापि नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीका महत्त्व तो भारतकी केवल यही सम्भव राजभाषा होनेमें है। और इसीलिए, दक्षिणवासियोंको इसके सीखनेकी अत्यन्त आवश्यकता है। न तो इस कारण मातृभाषाकी उपेक्षा हो सकती है और न ही होनी चाहिए। नागरिकताका अर्थ घरेलू कर्त्तव्य-पालन अवश्य होता है। परिवार राज्यपर आश्रित होता है, और राज्य परिवारोंपर आश्रित रहता है। किसी एककी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसी प्रकार भारतके बालक और बालिकाओंको भी अपने प्रान्त और लोगोंकी भाषाको सीखनेके साथ-साथ भारतकी भाषाको भी अवश्य ही सीखना चाहिए। वास्तवमें जब हिन्दी अखिल भारतीय लोक-सेवाओंकी और मातृभाषा प्रान्तकी समस्त राजनीतिक और सांस्कृतिक कार्योंकी भाषाएँ बन जायेंगी तब अंगरेज़ीपर व्यय किया जा रहा समय इतनी अधिक मात्रामें बच रहेगा कि विकास और पूर्ण समृद्धिके लिए मातृभाषाको नवीन बल और अवसर उपलब्ध हो जायेंगे।

—सैंतीस वर्ष पूर्व 'तमिल-हिन्दी स्वबोधनी' नामक पुस्तककी श्री राजगोपालाचारी-द्वारा लिखित भूमिकाका अंश, उनकी अपनी भाषामें।

● ●

"यदि कुछ प्रान्तीय भाषाओंका यह गर्व हो तो बेदाग रहे कि उनमें हिन्दीसे अधिक श्रेष्ठ साहित्य है। हम तो राष्ट्रभाषाकी उपासना समस्त देशको साथ रखकर इसीलिए किये हुए हैं कि वह देशकी अन्य सब भाषाओंकी अपेक्षा अधिक सरलतासे देशके अधिकांश भागमें समझी और सीखी जा सकती है। हमने हिन्दीको राष्ट्रभाषाके रूपमें प्रस्तुत नहीं किया है। सन्तवाणी होनेके नाते देशकी संस्कृतिका, पूरब और पश्चिम तथा उत्तर और दक्षिणमें लौट-लौटकर वहन करते-करते हिन्दीने स्वयं अपनेको शताब्दियोंमें राष्ट्रभाषा बनाया है। हिन्दीका यह भाग्य रहा कि सन्तोंने उसे सदा वहन किया, जनताने उसे सदा ग्रहण किया और सिंहासनोंने उसे कभी सहारा नहीं दिया।"

'चिन्तककी लाचारी' : माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साहित्यिक : एक डायरी

कवि मुक्तिबोध-कृत
'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के सन्दर्भ-
में अपनी-अपनी दृष्टियोंकी डायरी

● हर कवि अन्वेषी होता है; कुछ वस्तुका अन्वेषण करते हैं, कुछ समाजका, कुछके और कई अन्वेषण हो सकते हैं। मुक्तिबोध आत्मान्वेषणके कवि थे। मुक्तिबोधपर यह आत्मान्वेषण अपनी किसी विशिष्टताकी खोज नहीं था, यह अपने उस रूपकी खोज था जो कविको पूरे समाजसे, मानव-मात्रसे, मिला दे। कोई सोच सकता है कि कविको आत्मान्वेषी कहना उसकी अवमानना करना है, पर मैं इसे कठिनतर यात्रा समझता हूँ और कवि मुक्तिबोधका विशेष सम्मान इसलिए करता हूँ कि वह आजीवन इस कृच्छ्र साधनामें लगे रहे। मेरी धारणा है कि उनका अन्वेषण सफल भी हुआ : वे अपने उस रूपको पहचान भी सके और दूसरों तक पहुँचा भी सके।

— अज्ञेय

● मुक्तिबोधके हर इमेजके पीछे शक्ति होती है। वे अपने हर कथनको दमदार, अर्थपूर्ण और चित्रमय बनाते हैं। वे विशिष्ट बिम्ब, बल्कि उससे अधिक विशिष्ट प्रतीक, की योजना लाते हैं। उनके प्रतीक भी कथा या गाथा (मिथ) सृष्टिकी भूमिका बनाने लगते हैं। मुक्तिबोधकी रचनात्मक प्रक्रियामें अद्भुत अनोखेका विद्युत्प्राण चमकता है। रूढ़ि और परम्परासे वितृष्णा उनसे विद्रोह और नई मानवताका साग्रह आह्वान उनकी शब्दावलीको उत्तेजनासे, रेटॉरिकसे, भर देता है।

उनके यहाँ सूक्ष्म और स्थूल दोनोंके चित्रणमें सर्वत्र एक अद्भुत स्पष्टता होती है। सब कुछ जैसे हम स्पर्श कर सकते हैं : बाहरसे ही नहीं, अन्दरसे भी। सूक्ष्म और स्थूल, वैज्ञानिक और रोमानी, वायवीय और नपे-तुलेका विचित्र और अद्भुत योग मिलता है : बुद्धिके सचेतन-अर्द्धचेतन स्तरोंका नाटकीय विश्लेषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी उनकी कवितामें साधारण जिज्ञासाके संग-संग असाधारण रहस्यमयता-का योग रहता है, हू-ब-हू जैसे यथातथ्यपरक चित्रणके संग कभी-कभी गुम्फित-सी कल्पना शैलीका रेटॉरिकल योग। फिर भी इन सबमें एक सादगी-सी होती है – शायद पारदर्शी व्यक्तित्वकी।

— शमशेरबहादुर सिंह

● हिन्दी कविताके क्षेत्रमें मुक्तिबोध प्रयोगशीलता और प्रगतिशीलताकी समन्वित चेतनासे युक्त ऐसे व्यक्तित्वके रूपमें दिखाई देते हैं जिसका जीवनसंघर्ष और यथार्थ आश्रित अभिव्यक्ति सबसे अधिक जटिल एवं प्रखर है। जहाँतक उनके कल्पना-बहुल काव्यका प्रश्न है, मैं कहूँगा कि उसके लिए भीतरी आवेग आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। जैसी फ़ैण्टेसी उनकी कविताओंमें संग्रथित मिलती है उसको धारण करने और उद्भूत करनेके लिए निरावेग मानस अनुकूल नहीं कहा जा सकता। उनका मानस वैसा रहा भी नहीं। उन्होंने स्वयं फ़ैण्टेसीको 'अनुभव-की कन्या' कहा है। परिस्थितियोंके 'अँधेरे समुद्र' की उत्ताल लहरोंने उनकी बौद्धिकताको हर बार मथकर निरावलम्ब तटपर छोड़ दिया है जहाँ आस्था और अनास्थाके बीचकी रेखा सर्वथा धुँधली पड़ जाती है। उस मानसिक दशामें जो चित्रात्मकता उभरती है वही धुँधलेपनसे विभिन्न प्रकारकी रहस्यमयता ग्रहण करती हुई उस फ़ैण्टेसीमें परिणत हो जाती है जिससे उनकी कविताएँ आपूरित हैं। उनकी कविताएँ अपनी नागात्मकताके कारण मुझे अविस्मरणीय लगती हैं।

— डॉ० जगदीश गुप्त

● कैसे कह दूँ कि वे महज़ उन्मेषशालिनी स्वप्न-दृष्टिके कवि थे, कैसे कह दूँ वे निरुपाय दुःख-बोधके कवि थे या 'जनवादी' मुक्तिके अग्रदूत थे। उनकी अनगढ़ भाषा, उनके प्रस्तरयुगके हथियारोंकी तरह खुरदुरे सहस्र-शीर्षा बिम्ब, उनका बौद्धिक पर आरण्यक संस्कार—ये सब सामान्य आलोचकको परास्त कर देते हैं। ईमानदारीकी बात है तो मुक्तिबोध बीस वर्ष बादके कवि हैं। आजकी अधुनातन कविता उनको समझनेकी 'निसैनी' भर है।

मुक्तिबोध मसीही चेतनाके कवि नहीं हैं, दुःख उनके लिए प्रसाधन नहीं, जीवन है। वे दुःखके सहारे नहीं, दुःखमें जीनेवाले कवि हैं। दुःख भी उनके सत्य हैं इसलिए कि इस दुःखको समझनेवाले वे अकेले चाहे हों, भोगनेवाले अकेले नहीं हैं। यह मार्क्सीय बोध हो भी, मार्क्सवादी तो कम-से-कम नहीं है, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्क्सवादेतर चिन्तनका भी यह उतना ही अंग है जितना मार्क्सवादी चिन्तनका। मुक्तिबोधजीसे मैं कभी मिला नहीं, पर इधर कई रातोंसे उनकी कविता पढ़ते-पढ़ते ऐसा लग रहा है कि वे कहीं गये नहीं, यहीं हैं, बस एक-दो हाथपर।

—विद्यानिवास मिश्र

● मुक्तिबोधकी कविताओंको पढ़ते हुए लगता है कि उनकी रचना-प्रक्रियामें जिस फ़ैण्टेसीका उपयोग किया जाता है वह बड़ी सशक्त व समृद्ध कोटिकी होती है, विविध एवं बहुसंख्यक चित्रोंसे भरी-पूरी। उनका विवेक इन चित्रोंको एक क्रममें संयोजित कर देनेका साधन-भर है। वे चित्रोंमें-से चयन करना ज़्यादा पसन्द नहीं करते—यद्यपि, कभी-कभी, उनके कुछ चित्र दोहराये जाते अथवा बार-बार संकेतित होते हैं। इन्हीं कारणोंसे उनकी रचनाएँ अकसर बहुत लम्बी हो जाती हैं। (इस समय मेरे सामने उनका एकमात्र संग्रह है—'चाँद का मुँह टेढ़ा है'।) किन्तु मुक्तिबोधकी कविताएँ, शैलीकी कतिपय आत्मपरक लम्बी रचनाओंकी भाँति, दुर्बोध नहीं हो पातीं। इसका कारण है—उनकी अनुभूतियाँ तथा चित्रोंका सामाजिक रूप व अर्थवत्ता। इसीसे उनका काव्य आपाततः मूर्त, मांसल व सुबोध है।

—डॉ० देवराज

● नये कवियोंमें लोकप्रिय प्रायः वे ही हैं जो छोटी कविताएँ लिखते हैं, और वह भी ऐसी जिनमें दो-चार ताज़ा चित्र हों या एक तीव्र भावना हो। मुक्तिबोध उन कवियोंमें-से हैं जिन्होंने सफलताका यह सरल पथ छोड़कर इस युगकी उलझनोंमें जान-बूझकर अपनेको डाला है। उनकी कविताओंका केन्द्रीय विषय है आजके व्यक्ति-मनका अन्तर्द्वन्द्व। इस तरह मुक्तिबोध आत्म-विश्लेषणके माध्यमसे इस युगके सामाजिक संघर्षको समझना चाहते हैं। उनकी कवितामें इसी आत्मसंघर्षसे छिटकी हुई चिनगारियोंकी चित्र-शृंखला मिलती है।

जो लोग आज नये कवियोंको बौद्धिक कह रहे हैं वे एक समय छायावादी निरालाको भी बौद्धिक कहते थे। यहाँ इलियटका यह विचार युक्तिसंगत प्रतीत होता है कि बौद्धिक और चिन्तक कविमें अन्तर करना चाहिए। निरालाकी तरह ही मुक्तिबोध चिन्तक कवि हैं। भावुकतावाले कवि जो भी गम्भीर होनेका प्रयत्न करते हैं, चिन्तक न होकर प्रायः बौद्धिक ही हो पाते हैं।

— डॉ० नामवर सिंह

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेकके रंग

डॉ० देवीशंकर अवस्थी

आलोचना नवलेखनसे कटी रहे—
यह उसकी बड़ी कमी होगी। उसका
पहला दायित्व नवलेखनके प्रति ही है।

समसामयिक लेखनकी चर्चा अधिकांशतः पुस्तक-समीक्षाके स्तम्भों तक ही सीमित रहती है। और इन समीक्षाओंमें अकसर महत्त्वपूर्ण समस्याएँ ही नहीं उठायी जातीं, आलोचना-पद्धतिके बदलावके आरम्भिक लक्षण भी दिखाई पड़ते हैं। इन दोनों बातोंमें जहाँतक पहलीका प्रश्न है, कहा जा सकता है कि आलोचनात्मक लेख भी बराबर लिखे जाते हैं। इस तथ्यको मैं अस्वीकार नहीं करता। परन्तु फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि इस प्रकारके लेखोंका एक बड़ा अंश ऐसा होता है जिनमें कि घूम-फिरकर कुछेक कवियोंके कुछेक संग्रहोंकी कुछेक कविताओं या वक्तव्योंकी उद्धरणीकी परम्परा चलती रहती है। इस कारण यह कहनेमें मुझे कोई हिचक नहीं है कि समसामयिक लेखन-चर्चा और विमर्शका ज़्यादा सही प्रतिनिधित्व पुस्तक-समीक्षाओंके संकलनमें देखा जा सकता है।

जहाँतक दूसरी बात, पुस्तक-समीक्षाओंकी गणनीयता या महत्ता, का सम्बन्ध है, इस तथ्यसे इनकार नहीं किया जा सकता कि पुस्तक-समीक्षाओंका स्तर हिन्दीमें, सामान्य रूपसे, अगम्भीर है और उसके प्रति असन्तोषका एक तीखा स्वर हमेशा सुननेको मिलता रहता है। पर यही बात कमोबेश क्या कविताओं, कहानियों, उपन्यासों या नाटकोंके ऊपर नहीं लागू होती? कृति साहित्यके नामपर पेश किया गया कितना साहित्य खाद बन जाता है, इसका अनुमान लगाना बहुत कठिन नहीं है। पर इस कूड़ेके ढेरके बीचसे ऐसी रचनाएँ ऊपर आ जाती हैं जो पूरे युगकी रचनात्मक आकांक्षाको सार्थकता एवं सिद्धि दे देती हैं। इसी प्रकार समकालीनता बोध और समसामयिक लेखनका जीवन्त सम्पर्क नयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचनात्मक प्रज्ञाको जन्म देता है तथा अगम्भीर समीक्षाओंके बीच गम्भीर और गणनीय समीक्षा-क्रियाको सामने ले आता है। आलोचनाकी यह भयंकर खामी होगी कि वह तमाम समसामयिक लेखनसे कटा रहे। यह बात मैं बराबर कहता रहा हूँ कि समकालीनता-बोधसे रहित आलोचनाको आलोचना नहीं कहा जा सकता—शोध, पाण्डित्य या कुछ और भले ही कह लिया जाये। आलोचना का पहला दायित्व नवलेखनके प्रति हो है। आलोचक-वर्गका उदय जिस सांस्कृतिक प्रक्रियाका अंग है उसमें उसे समसामयिक साहित्यकी दुरूहता एवं मूल्य-चिन्ता दोनों ही से उलझना पड़ता है। इस बीच हिन्दीकी ऐकेडेमिक आलोचनापर जो आक्षेप होते रहे हैं, वे इसलिए नहीं हुए कि वे 'ऐकेडेमिक' हैं, बल्कि इसलिए कि समसामयिक जीवन और साहित्य दोनोंके नज़दीकी बोधसे शून्य हैं। इस दुष्चक्रमें पहली फाँक पुस्तक-समीक्षाओंके स्तम्भोंमें ही दिखाई पड़ी है। इस महत्त्वपूर्ण 'क्रिटिकल ऐक्टिविटी' को एक केन्द्रमें लानेसे इस दुष्चक्रको तोड़नेमें सहायता मिल सकती है—यह आशा अनुचित न मानी जायेगी।

रचनाशीलताके बदलावके साथ ही आलोचनाके मानदण्ड और पद्धतियों में भी परिवर्तन होता है—यह बार-बार दोहरायी और कही जानेवाली बात है। पर आश्चर्य होता है कि तमाम आचार्यगण इसी तथ्यको भुला देते हैं और परिणामस्वरूप उनका लेखन या तो पाण्डित्यधर्मी बनकर रह जाता है या ठेठ जड़। बहरहाल, हर युगकी आलोचनात्मक समझ अपने युगके साहित्यसे अनुकूलित और अनुशासित होती है और उसे अनुकूलित करती भी है। एक पीढ़ी या एक समयकी प्रमुख चेतना-संवेदना एक ओर अखण्डित होती है—व्यक्त चाहे वह कवितामें हो, कहानीमें हो या आलोचनामें, इस अनुकूलन-अनुशासनकी प्रक्रियाके अन्तर्गत ही हर युग पुरानी कृतियोंका नये सिरेसे आकलन करनेके लिए बाध्य होता है। इसे ही हम आलोचनाका दूसरा मुख्य दायित्व – पुनर्मूल्यांकन – कह सकते हैं। वस्तुतः आलोचना – व्यावहारिक आलोचना – के साथ, इसी कारण 'शाश्वत' विशेषणका प्रयोग और भी अधिक कठिन है। जहाँतक पुराने क्लैसिक मानदण्डों या साहित्य-सिद्धान्तोंका प्रश्न है, उनकी भी स्थिति 'क्लैसिक' कृतियों-जैसी ही होती है। जिन सिद्धान्तोंमें इतना लचीलापन होता है कि उनकी युगानुरूप पुनर्व्याख्या की जा सके, उनके स्वीकार कर लिये जानेकी सम्भावना सबसे अधिक होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने सिद्धान्तोंकी युगानुकूल व्याख्याका एक अत्यन्त विशिष्ट उदाहरण साधारणीकरणकी चर्चा है। संस्कृत काव्यशास्त्रमें साधारणीकरणका विवाद ऐसा प्रमुख प्रश्न नहीं है कि तमाम रस-सिद्धान्तका प्रतीक बन जाये। संस्कृत-काव्य-परम्परा (या प्राकृत-अपभ्रंशमें भी) में साधारणीकरणका प्रश्न मुख्य था भी नहीं। उस युगमें कवि और रसिककी बौद्धिक भूमि लगभग समान थी अतः सम्प्रेषणकी कठिनाइयाँ नहीं थीं। परन्तु धीरे-धीरे शिक्षाके प्रसार और ज्ञान-विज्ञानोंकी विशेषताके साथ-साथ यह भूमिका बदली है। साथ ही ब्रजसे खड़ी बोलीमें माध्यमका जो बदलाव होता है, वह भी सम्प्रेषणके लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। पश्चिमी विचारधाराओं, पश्चिमी साहित्यों आदिके सम्पर्कसे काव्य-दृष्टिका जो बदलाव हुआ, नये काव्य-रूपोंका आविर्भाव हुआ, काव्य-विषयोंका फैलाव हुआ, उन सबने मिलकर सम्प्रेषणकी समस्याको काफ़ी जटिल बनाया। छायावादी काव्यका भी एक बड़ा हिस्सा दुरूह और अस्पष्ट था तथा पाठकों तक उसके सम्प्रेषणमें कठिनाई होती थी। ऐसी स्थितिमें रस-सिद्धान्तकी चर्चा करते हुए 'साधारणीकरण' की ओर अत्यधिक ध्यान देना वस्तुतः अपने समकालीन साहित्यपर ही ध्यान देना था या उस साहित्यके परिदृश्यमें पुराने रस-सिद्धान्तको रखनेकी चेष्टा थी।

पर साधारणीकरणकी समस्या छायावादी काव्यके साथ समाप्त नहीं हो गयी। आधुनिक समस्याएँ और तीखी बनकर सामने आयीं। विशेषीकरण और बढ़ा, 'भाषा एक रहते हुए भी मुहावरे अनेक हो गये' और फिर इनके साथ ही विकृत समाजशास्त्रके आग्रहोंके कारण यथार्थके नामपर साहित्यको जनता 'पॉप्युलर' अभिरुचिके साथ एकतान करनेकी कोशिश की गयी। परिणामस्वरूप अज्ञेयने शब्दार्थकी समस्याके साथ ही साधारणीकरणकी समस्याको भी उठाया। आश्रय, आलम्बन, कविकी अनुभूति या पाठकके आस्वादन आदिके स्थानपर सीधे माध्यमकी क्षमताओंकी खोजके साथ इस समस्याको ला जोड़ना साधारणी-करणके लिए ही एक नया योगदान नहीं है—नयी कविताके काव्य-सिद्धान्तको स्पष्ट करनेका प्रयास भी है।

पर यह चर्चा तो प्राचीन साहित्य या प्राचीन काव्यशास्त्रकी हुई। आलोचनाका प्रमुख दायित्व समसामयिक साहित्यके प्रति है—यह पीछे कहा जा चुका है और इस दायित्वका निर्वाह सबसे पहले पुस्तक-समीक्षाओंके रूपमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखता है। लाला श्रीनिवासदासके 'संयोगिता स्वयंवर' नाटककी बालकृष्ण भट्ट और बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' लिखित समीक्षाओंसे ही हिन्दीकी व्यावहारिक आलोचनाका सूत्रपात माना गया है। यह तथ्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे सूचित होता है कि इस युगके साहित्यकी प्रकृति बदल गयी थी और उसके लिए यह नया साहित्य रूप 'पुस्तक-समीक्षा' सामने आया था। भट्ट या 'प्रेमघन' की इन समीक्षाओंसे लेकर आज तक, इनकी स्तर-सम्बन्धी घनघोर शिकायतोंके बावजूद, नये साहित्यकी चर्चाके माध्यमके रूपमें पुस्तक-समीक्षाकी एक पुष्ट परम्परा चली आयी है। भारतेन्दु-युगसे अबतकको पुस्तक-समीक्षाओंका संकलन तैयार करें तो हिन्दी आलोचनाके विकासकी व्यवस्थित झाँकी देखी जा सकती है।

भारतेन्दु-युग आलोचनाके नामपर लगभग पुस्तक-समीक्षाओं तक ही सीमित था, द्विवेदी युगमें भी यह माध्यम मुख्य बना रहा। स्वयं पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी बड़े तीखे 'रिव्यूअर' थे। छायावादी कवियोंमें निरालाने तमाम पुस्तकोंकी 'रिव्यू' की थी तथा प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, नरेन्द्र एवं अज्ञेय लिखित पुस्तक समीक्षाओंका परिणाम भी कम नहीं है। सन् १९५० के आस-पास जब साहित्यिक रचनाशीलताका नया उन्मेष हुआ तो पुस्तक-समीक्षाओंका रूप भी बदला और उन्हें महत्त्व भी मिला। यह आकस्मिक संयोग नहीं है कि सन् '५०-'५१ के आस-पास अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य घटित होते दिखते हैं। सन् '४९ में 'हरी घास पर क्षण-भर' प्रकाशित हुआ, सन् '५१ में 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन हुआ, १९५२ में 'नदीके द्वीप'-जैसा उपन्यास तथा 'कोणार्क'-जैसा काव्यात्मक नाटक प्रकाशित हुआ तथा मार्कण्डेयका कहानी-संग्रह १९५४ में आया। 'प्रतीक' मासिक इसी दौरानमें नयी सृजनात्मकताका वाहक और मंच बनता है और १९५१ में ही 'आलोचना'-जैसी पत्रिका प्रकाशित होती है जिसके प्रत्येक अंकका लगभग आधा भाग केवल पुस्तक-समीक्षाओंके लिए रहता था। 'प्रतीक' ने जिन लम्बे पुस्तक-समीक्षा-लेखोंको प्रारम्भ किया था, उन्हें और अधिक महत्त्वके साथ 'आलोचना' ने आगे बढ़ाया। 'कल्पना' का प्रारम्भ भी इसी समयके आस-पास हुआ था और उसमें भी पुस्तक-समीक्षाका स्तम्भ उल्लेखनीय स्तम्भोंमें रहा है। इन समीक्षाओंके आधारपर समसामयिक लेखनके साहित्यशास्त्रकी रूपरेखा बनायी जा सकती है तथा हिन्दी-प्रदेशकी सृजनात्मकता और कलाभिरुचिके विकासको भी परिलक्षित किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्यकी गतिविधि

महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

संस्कृत साहित्यके विकास और उपलब्धियोंकी एक झाँकी

संस्कृत ग्रन्थोंके समालोचनात्मक संस्करण तो आये-दिन प्रकाशित होते रहते हैं, परन्तु उनके अँगरेज़ी अनुवाद बहुत कम किये जाते हैं। सम्भवतः इसका कारण यह है कि अनुवादका कार्य बड़ा कठिन है और वह भी कविता तथा 'क्लैसिक' कहे जानेवाले प्राचीन ग्रन्थोंका। शायद यह समालोचनात्मक संस्करण सम्पादित करनेसे भी कठिन है, यद्यपि ऐसा प्रायः समझा नहीं जाता। जो हो, हालमें ही प्रकाशित कुछ नये अनुवाद इस कमीको कुछ सीमा तक पूर्ण करते प्रतीत होते हैं।

पहला है प्रसिद्ध अमेरिकी संस्कृतज्ञ डैनियल एच० एच० इंगल्स-कृत 'एन एन्थॉलजी ऑव संस्कृत कोर्ट पोएट्री,' जो हारवर्ड 'ऑरिएण्टल सीरीज़' के खण्ड ४४ के रूपमें प्रकाशित हुआ है। १५ डॉलर (लगभग ७५ रु०) मूल्यके इस महाकाय (पृष्ठ सं० ६२५) ग्रन्थमें ग्यारहवीं शताब्दीके मध्य हुए विद्याकर नामक बौद्ध भिक्षु-कृत 'सुभाषितरत्नकोष' नामक संकलनका सुललित अँगरेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। यह भिक्षु बंगालके जगद्दल नामक मठका निवासी था और पढ़नेका शौक़ीन था। उसकी रुचिके विषय थे मुख्यतः रजवाड़ोंकी प्रेम-कविता, प्रकृति तथा दरबारी दृष्टिसे मनुष्यके भावोंकी अभिव्यक्ति। मठके विशाल पुस्तकालयमें-से इसी प्रकारकी अच्छी-अच्छी कविताओंका उसने संकलन किया जो खासा लोकप्रिय हुआ। इसमें १८०० के लगभग कविताएँ हैं। फिर यह संकलन सदियों तक अप्राप्य रहा और कुछ ही वर्ष पूर्व पुनः प्राप्त हुआ। इससे न केवल सैकड़ों लुप्त कविताएँ अपितु दर्जनों लुप्त कवि भी प्राप्त हुए। १९५७ में इसे हारवर्डसे प्रकाशित किया गया और अब उसका प्रथम अनुवाद प्रकाशित किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। इसमें अनुवादकके छह वर्ष लगे हैं। अनुवाद मुक्त छन्द और सरल तथा प्रवाहपूर्ण भाषामें किया गया है। आरम्भमें लम्बी भूमिका, प्रत्येक खण्डके साथ संक्षिप्त परिचय, और अन्तमें टिप्पणियाँ आदि हैं। अनुवादकके शब्दोंमें "यह ग्रन्थ मुस्लिम-पूर्व भारतकी सांस्कृतिक रुचियों तथा प्रवृत्तियोंका अनोखा परिचय देता है।" इसमें राजशेखर, भवभूति, भर्तृहरि, बाण, अभिनन्द, धर्मकीर्ति, अचलसिंह, मनोविनोद, वसुकल्प, लक्ष्मीधर, योगेश्वर, मुरारि, वल्लण, आदि कवियोंकी रचनाएँ आयी हैं।

दूसरा महत्त्वपूर्ण अनुवाद है कलकत्ता-निवासी इण्डो-इंग्लिश कवि–सम्पादक पी० लाल-कृत 'ग्रेट संस्कृत प्लेज़ इन मॉडर्न ट्रान्सलेशन', जिसे न्यूयॉर्कके आधुनिकतावादी प्रकाशक 'न्यू डायरेक्शन्स' ने हालमें ही प्रकाशित किया है। इसमें छह नाटक हैं : अभिज्ञान शाकुन्तल, मृच्छकटिक, स्वप्नवासवदत्ता, उत्तररामचरित, मुद्राराक्षस और रत्नावली। यह अनुवाद बड़ी चर्चाका विषय बना है क्योंकि इसमें न केवल अमेरिकी अँगरेज़ी ही प्रयुक्त की गयी है अपितु वार्तालापका भी पूर्ण आधुनिकीकरण कर दिया गया है। उसमें-से प्राचीनतापरक सब आडम्बर एकदम निकाल दिया गया है। बहुत-सी कठिन चीज़ें छोड़ भी दी गयी हैं। यह सब सम्भवतः इसलिए किया गया है कि सामान्य पाठक नाटकोंमें रुचि ले सके, परन्तु इससे उनकी संस्कृतता बिलकुल नष्ट हो गयी है। 'मुद्राराक्षस' और 'मृच्छकटिक'-जैसे लौकिक नाटकोंमें तो यह शैली कुछ चल भी जाती हैं, पर अन्योंमें बड़ी खटकती है। पुरानी अँगरेज़ीमें किये गये अनुवादोंकी तुलनामें भी ये बड़े अजीब मालूम होते हैं। जो हो, यह एक साहसिक प्रयोग है और भविष्य ही इसकी सफलता या असफलता निश्चित करेगा।

तीसरा है पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालयके संस्कृत-प्रोफ़ेसर डब्लू० नॉर्मन ब्राउन-कृत 'महिम्नस्तव' का अनुवाद जो साहित्यिक दृष्टिसे बहुत महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी प्रकाशन-कलाकी दृष्टिसे अत्युत्कृष्ट बन पड़ा है। इसे 'अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑव इण्डियन स्टडीज़' की पूना शाखाने गत मास ही अपने उद्घाटन-प्रकाशनके रूपमें निकाला है। इसमें मूल ग्रन्थ, काव्यानुवाद, टिप्पणियाँ तथा भूमिका और आर्ट पेपरपर पाण्डुलिपिके सभी पृष्ठ, जिनमें-से हर एकपर एक चित्र भी है, बड़ी सुन्दरतासे छापे गये हैं। यह संस्था भारत-भारतीके सभी क्षेत्रोंमें शोधकी अनेक योजनाएँ लेकर चली है।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन
आधुनिक कन्नड़ कवि

देवनन्दन आचार्य

जिनसे कन्नड़ काव्यने श्री और
समृद्धि भी प्राप्त की और
नयी दिशा-चेतना भी

आधुनिक कन्नड़ कविताके इतिहास और विकासकी चर्चा पत्रिकाके एक पिछले अंकमें आयी है। पश्चिमकी काव्य-धारासे यह भी प्रभावित हुई, स्पष्ट है। अँगरेजी कवियोंके प्रभाव तो बहुत स्पष्ट हैं। फिर भी यह मानना होगा कि उसके रूप और स्वरका मूल स्रोत कन्नड़ प्रान्तके जीवन और परिवेशमें है, वहाँ की अपनी समस्याओं और चेतना-भावनाओंमें है।

आधुनिक कन्नड़ कवि अपने व्यक्तिकी इकाईमें सिमटा-बँधा नहीं रहा। सामाजिक बोध-भावनासे अनुप्राणित हो उसने भी आस-पासकी और सबकी जीवनगत समस्याओंको व्यापक दृष्टिसे देखा और उनका समाधान खोजनेके लिए यथार्थवादी वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे उनका विश्लेषण किया। इस बौद्धिक अवलोकन पद्धतिका सहज परिणाम यह हुआ कि एक ओर उसे विचार-चिन्तन और काव्य-रचनाके लिए नये-नये विषय उजागर होते मिले और दूसरी ओर अपनी अभिव्यक्तिके लिए परम्परागत शैलियोंके स्थानपर नयी शैलियोंकी आवश्यकता प्रतीत होने लगी।

अनेक आधुनिक कन्नड़ कवि हैं जिन्हें इस दृष्टिसे प्रमाणस्वरूप और उदाहरणस्वरूप गिना-गिनाया जा सकता है। सबका अपना-अपना स्थान-मान है और सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ भी। आधुनिक कन्नड़ कविताका भरा-पूरा समृद्ध स्वरूप सबकी प्रतिभा, सबकी लगन, और सबकी उपलब्धियोंका समवेत फल है। कुछ नाम उभरकर भी सामने आते हैं। जैसे : बेन्द्रे, पुट्टप्पा, मास्ति वेंकटेश अय्यंगर, शेट्टपु कृष्ण भट, क० शंकर भट, मंजेश्वर गोविन्द पै, गुण्डप्पा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी० कृ० गोकक, चेन्नवीर कनवी, गणपति पण्डेश्वर, पी० टी० नरसिंहाचार, नरसिंह स्वामी, पी० सीतारामैया आदि। इनमें-से तीनकी काव्यगत विशेषताओंकी एक नखच्छवि-जैसी यहाँ प्रस्तुत है : बेन्द्रे की, पुट्टप्पा की, नरसिंहाचार की।

बेन्द्रेकी कविता उस वर्गकी नहीं होती कि कोई पढ़े और बस उसमें रस लेता हुआ उसे समझता चला जाये। उसकी कविताकी बड़ी विशेषता उसका विचार-दर्शन पक्ष रहता है। कई-कई बार जबतक न पढ़ी जाये और फिर साथ-के-साथ उसमें डूबनेकी भी न करें तबतक तह तक पहुँचना और आनन्द-प्रेरणा लाभ करना सम्भव नहीं होता। विचित्रता यह कि भाषा प्रायः निरपवाद रूपसे सरल रहती है, सुपरिचित, प्रवाहमय। इनकी कविताका जैसा उदात्त भाव कहीं और बिरले ही मिलता है। एक-एक शब्द चुनकर रखा होगा, दो शब्द हुए कि एक सौम्य संगीत-सा झरता मिलेगा; भाव-भाव नया, और दृष्टि-शक्ति इतनी विस्तीर्ण-व्यापक कि अपनी परिधिमें सब-कुछ समेट ले।

पुट्टप्पा मात्र कवि नहीं। उन्होंने एक बृहत् और स्मारक कृति उपन्यासके रूपमें भी दी है, और अनेक कहानियाँ, कुछ नाटक तथा कई आलोचना निबन्ध तो उनके प्रसिद्ध ही हैं। पर निर्विवाद सत्य यही है कि उनकी प्रतिभाकी अभिव्यक्ति जैसी कवितामें हुई, किसी अन्य विधामें नहीं। पुट्टप्पाने संस्कृत, कन्नड़ और अँगरेज़ी तीनों भाषाओंके साहित्यको समान पूर्णताके साथ आत्मसात् किया है; और इसीका यह प्रतिफल कि कन्नड़ काव्य-साहित्यको वह विलक्षण-प्रकृति-छवियों द्वारा समृद्ध कर सके : ऐसी छवियाँ जो परिकल्पना और रंग-रेखाओंमें उतनी ही आधुनिक हैं जितनी भारतीय।

नरसिंहाचार भी प्रकृतिका कवि है, पर उसकी सहजानुभूतिमें चिन्तन-दर्शनका भी पर्याप्त पुट रहता है। गद्य-कृतियाँ इनकी भी हैं, पर सब एकमत हैं कि जैसे पुट्टप्पा वैसे ही यह भी हैं मूलतः कवि। बड़ी सधी हुई और सन्तुलित इनकी रचनाएँ होती हैं : न ऐसी कि अति गम्भीर विचार-पक्षके कारण भारी हो रहें न ऐसी ही कि उन्हें चित्रण या वर्णन मात्र कह दिया जाये।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंकी प्रतिक्रिया

लेखन-प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी इकाई अधूरी रहेगी जबतक पारखी पाठककी प्रतिक्रिया प्रकाशकके पास होती लेखककी मेज़ तक न पहुँचे

एक नितान्त निजी पत्र
डॉ० प्रभाकर माचवेके नाम
उनकी 'जो' के सन्दर्भमें

माचवे जी,

आपने उलहना दिया था न कि मेरा पिछला पत्र बहुत संक्षिप्त-सी पाती थी! और मैंने उत्तरमें लिखा था कि सर्जनके किसी नितान्त निजी क्षणमें आपसे बहुत-कुछ कहनेको है!

सो आज निजमें हूँ। सिरजनकी सीलनमें भी। पोंछ-निचोड़ रहा हूँ। तो शुरू शिकवेसे ही करूँ? सिरजते समय भी आप कहीं कुछ बरजते क्यों रहते हैं? वर्जनाओंके इण्ट्रा-वीनस इन्जेक्शन दे-देकर जो सर्जक आज तक सताते रहे हैं उनसे तो हम-आप पहले ही इतना सताये हुए बैठे हैं कि नसोंमें धँसे वे जरासीम निकाल फेंकनेके ऐण्टीडोट ढूँढ़ते फिर रहे हैं!

जितने भी लोग मुझसे एक दशक पहलेसे सर्जन कर रहे हैं उनमें-से जिनपर मेरी आसकी आँख टिकती है उन्हींमें हैं आप। इसलिए उस आँखमें अगर आज कहीं कोई किरकिरी रड़क आयी है तो उसे निकलवाने भी तो उसी 'सर्जन' के पास आया हूँ!

मैं साफ़ देख रहा हूँ, आप सेण्ट-लुईके ब्लू एंजेल होटलमें बैठे हुए हैं और डिक्सीलैण्ड जाज़ अपने पूरे उभार पर है····भीड़में सिसकती रेंगती शराब और बीयर छोटी-छोटी मेज़ोंपर पहुँचानेवाली लड़कीके हाथकी बोतलका झाग ग्लासोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे उँड़िलकर कहाँ बह-चू रहा है—मैं यह भी क्रिस्टल-क्लियर होकर देख रहा हूँ। मगर आप····माइकपर खड़ो नीली पोशाकवाली छरहरी सांवली और नक़्शीली-नशीली उस स्कर्टवालीके भीतर तक मेरी निगाहें ट्रेसपास कर गयी हैं। उसने तो 'पादरीकी भी बाइबल नीचे रखवा दी है!' आपसे भी वह 'सारा अनकहा कह गयी है!' मगर आप 'सारी मण्डली' को झुपाकर और 'शराबके प्याले ढालकर' कितने सारे कहनीय-कुछको भी अन-कह-टाल गये हैं!

पर जानता हूँ कि आपके लिए भी मेरी तरह 'देर तक सु-व्यवस्थित और तार्किक ढंगसे सोच पाना सम्भव नहीं। जी पाना भी मुमकिन नहीं। ऊब जाते हैं न! थक भी। और नीग्रो कवि फ़ैण्टन जॉनसनकी पंक्तियाँ जी लेना चाह उठते हैं कि मैं थक गया हूँ सभ्यताका निर्माण करता-करता, मेरी प्यारी, अब मैं सैलूनमें जाऊँगा, एक-आध बोतल पिऊँगा, दो-चार बाज़ियाँ खेलूँगा, और किसी शराबके पीपेपर सो जाऊँगा···और तुम, मेरी रानी, गिरजाघरोंको जहन्नुमकी अथाह खाइयोंमें डूब जाने दो···भूल जाओ कि तुम्हारा विवाह मुझसे हुआ था···ठाठसे अपनी रातें बिताओ, शराबमें चूर होकर····और अपने बच्चों-को नदीमें फेंक दो···

सवाल सिर्फ़ अमरीकाके काले-गोरोंके झगड़ेका ही नहीं, माचवे जी, दुनिया-भरके एक-एक व्यक्तिके बाहर-भीतरके 'काले-गोरे' की 'टसल' का भी उतना ही है। एक नस्लकी मान्यता मुझसे यह मनवानेका हठ करती है कि मेरे भीतरकी जातियाँ काली हैं, उनका प्रवेश गोरे गिरजाघरोंमें निषिद्ध कर दूँ। मेरी नस्ल यह पहचानने-मानने लगी है कि इन गिरजोंके काले, हब्शी, वहशी दरिन्दोंसे अपने भीतरके गोरे-गोरे मासूम शिशुओंको बचाना होगा।

जानता हूँ, इसी नस्लकी कोई जद्दोजहद रही होगी जिसने उस हसीन मुल्कमें भी आपकी रातोंकी नींद हराम किये रखी। और आप 'मानुष-सत्य' के सूतोंमें उलझे-उलझे देखते रहे – पालथी मारे बैठी एक बहुत बड़ी छिपकली मोहेंजोदड़ो-की सीलमें-के सींगवाले देवताकी तरह पासमें रेंगते हुए कीड़े····पेड़की डालियोंकी जगह लटकती साड़ियाँ····और तालाबमें नहाती नंगी गोपियाँ! और श्रुतियोंकी पोथियोंको सफ़ेद कीड़े खाते रहे। दुनियाके गोलेपर मधुमक्खियोंके छत्तोंकी तरह आदमी घड़ीके काँटों-द्वारा भगाये जाते रहे! नीला दरवाज़ा : बाहर आओ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल दरवाज़ा : भीतर जाओ···सीटी हुई : क़वायद चालू; सीटी हुई : क़वायद बन्द····

और मानुष 'लिंचिंग' के नीग्रो कविके एक काले और एक सफ़ेद हाथके बीच सैण्डविच होता रहा।

अपने भीतरके आदिवासी क्षेत्रमें शेर-चीतोंके रहते हुए भी शिकारपर रोक लगाकर हम असुरक्षित हो गये ! निरन्तर टैररके स्लेव हो गये !

मेरे मैण्टल टेन्शनका ग्राफ़ बाक़ई दिनोंदिन ऊपर-ही-ऊपर चढ़ता जा रहा है। और मेरी पूरी-की-पूरी पीढ़ी 'डिस्टर्ब्ड्' हो गयी है।

अब चाहें तो आप सोशियॉलॅजीके किसी ऐंगलसे डेप्थ-साइकॉलॅजीका कोई मेथड ऐप्लाई कर लें या कि एन्थ्रॉपालॅजीकी खुर्दबीनसे खोज कर प्रागैतिहासिक पीरियडके किसी आदिवासीको मेरे भीतर स्थापित कर लें—फ़र्क़ कुछ नहीं पड़ता। सिर्फ़ मेथड-भेद ही तो है !

और कि सोशियॉलॅजीकी कोर्सीय किताबोंमें दास-प्रथा भले ही अब समाप्त हो चुकी हो; इतिहासके विद्यार्थी ग़ुलामोंकी मण्डियोंके हाल पढ़-पढ़कर आज अपनेको कितने भी मुहज़्ज़ब क्यों न मान लें, मगर हक़ीक़त क्या यह नहीं कि दास-प्रथाका रोग अलामतें बदलकर आज भी हमपर हावी है ? आज भी हम मण्डियोंमें बिकनेवाली ग़ुलाम दोशीज़ाओंकी तरह ही बेकस हैं ? हमारा एक-एक अंग खोल-टटोलकर मोल-तोल किया जाता है ? और हर क़दमपर हम अपने भीतरके हर-कुछको नीलाम होने देनेके लिए अवश हैं ?

आख़िर कौन है ऑक्शनर ? कहाँसे आ रही हैं ये ऑक्शन-बिड्सकी सदाएँ कि जिनके जाज़की ट्यूनपर हम स्ट्रिप-हीज़ कर रहे हैं ?

जैक माइकेलाइन जानता है। आप जानते हैं। मैं जानता हूँ। 'हंग्री हाई' होटलकी नंगी नर्तकी जानती है। बेसी जानती है। बेसीकी नाजायज़ औलाद जानती है। उस नाजायज़का विवाह-बाह्य बाप जिम जानता है। अपने प्रेमीको गोली मार देनेवाली मार्था जानती है। और जानता था गोली खाकर अपनी जीवन-भरकी प्रतारणासे मुक्त होनेवाला जो भी।

बट फ्रॅंक एक्स्प्रैशन इज़ रीएली ए क्रूएल मिस्ट्रेस, माचवे जी-ई !

आप कुछ कहेंगे ? तो सूत्र पकड़ लूँगा।

आपका

सुदर्शन चोपड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौंसठ कविताएँ

इन्दु जैन

इन्दु जैनकी कविताएँ वर्तमान हिन्दी कविताकी बदलती हुई दिशा या नये मोड़का संकेत करती हैं। पिछले कुछ वर्षोंसे नयी कविता अपने ही निर्मित नये रास्तों और प्रयोगोंकी रूढ़ियाँ बनाकर उन्हींमें उलझती जा रही थी अथवा रहस्यवादी दिशाओंमें मुड़कर प्रत्यावर्तन करनेको उद्यत जान पड़ती थी। उसे उस दलदलसे निकालकर नवीन भाव-बोध और सही अर्थोंमें आधुनिकताकी दिशामें ले जानेका प्रयत्न करनेवाले कुछ इन गिने-चुने कवियोंमें इन्दु जैनका नाम भी महत्त्वपूर्ण माना जायेगा, ये कविताएँ इसका प्रमाण हैं। इनमें ऐसी ताजगी, सहजता और खुलापन है जो अधिकतर नये कवियोंमें नहीं दिखाई पड़ता। कवयित्रीने इन कविताओंमें बहुत बड़े दावे या आकांक्षाएँ नहीं की हैं, किन्तु जिस घरेलूपन और आत्मीयताके साथ उसने अपनी भोगी हुई स्थितियों एवं अनुभूतियोंको सहज ढंगसे व्यक्त किया है उससे उसके कवि-व्यक्तित्वका निजीपन स्थापित हो जाता है और प्रतीत होता है कि यहाँ एक कवि है जो भीड़से हटकर, किन्तु विक्षिप्त रूपमें नहीं बल्कि साधारण गतिसे, चल रहा है।

आधुनिकता-बोध एक जटिल और अनिश्चित अर्थ व्यक्त करनेवाला शब्द बनता जा रहा है। महानगरोंमें मध्यवर्गीय युवक-युवतियोंके अधकचरे और अनुकृत दृष्टिकोणको, जिसे वे स्वयं कभी विद्रोह और कभी अनुभूतिकी सचाई नाम देते हैं, कृत्रिम और ऊपरसे ओढ़ी हुई आधुनिकताके अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता। ऐसी कविताओं और कहानियोंमें प्रतिक्रिया-जन्य ऊब, जलूलपन (ऐब्सर्डिटी), बेहयापन और मरणोपासनाकी प्रवृत्ति अमर्यादित रूपमें दिखाई पड़ती है। प्रसन्नताकी बात है कि इन्दु जैनने कलकत्ता और दिल्लीके उस तथाकथित आधुनिक बोधको नहीं अपनाया है जिसे कॉफ़ी हाउसकी आधुनिकता या चौरंगी और कनॉटप्लेसकी आधुनिकता कह सकते हैं। इन्दु जैनका आधुनिक बोध जीवनकी वास्तविक अनुभूतियोंपर आधारित है और उसकी पीठिका दार्शनिक है। इन कविताओंका मूल स्वर जिजीविषा और अस्तित्व-बोधका स्वर है। सामाजिक और पारिवारिक विसंगतियोंसे उत्पन्न विवशता, लाचारी और कसक अपने आपमें कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है वह चिन्तन-प्रक्रिया जो इन अनुभूतियोंसे उत्पन्न होती और समस्त व्यक्ति चेतनाको झकझोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर अस्तित्वकी निरर्थकता और खोखलेपनको अनावृत कर देती है। इन्दुकी अनेक कविताओंमें यह आधुनिक चिन्तन-प्रक्रिया स्पष्ट रूपसे उभरी है। किन्तु इन्दु अनेक तथाकथित आधुनिकतावादी कवियोंकी तरह वर्तमान सभ्यताके अन्तर्विरोधोंसे उत्पन्न निरर्थकताकी स्थितिको स्थायी और अन्तिम नहीं मान लेती। वह ऐसी सभी भयावह और त्रासद स्थितियोंसे उबरनेका संकल्प भी करती है :—

अँधेरे से डर नहीं है।
अँधेरे से डर नहीं है
मेरा अस्तित्व एक गूँज हो गया है ?

यही कारण है कि परिस्थिति-जन्य दुःख कवयित्रीको माँजता ही है, तोड़ता नहीं, उसमें घुट-घुटकर मरनेका एहसास नहीं उत्पन्न करता। वह अनजानी-अनबूझी उदासी जो वर्तमान यान्त्रिक सभ्यताकी देन है, इन्दुको भी घेरती है, ऊपरसे भारतीय नारीकी विवशताकी चेतना भी दुहरी वर्जना बनकर उसे बेधती है; पर उसमें एक सहज मानवीय दर्प भी है :—

प्राणार्पण की बेला में
निष्कम्प रहूँगी—सीधी।

इसी दर्पके कारण वह समस्त वर्जनाओंको तोड़कर सत्यको निरावृत रूपमें देखना चाहती है। देह-धर्मको नकारना उसकी दृष्टिमें असत्योपासना है। वह देहके आकर्षणोंको स्वीकारती है पर उसीकी जकड़नमें बन्दी बनकर जीवनके महत्तर लक्ष्यको आँखोंसे ओझल नहीं होने देती। बहुजनकी पीड़ाके वनमें वह जीवनका सुखद मार्ग प्रशस्त करना चाहती है :—

बहुजन की पीड़ा के वन से
आओ
पेड़ तराश दें।
काँटे बुहार कर
मार्ग निकाल दें।

इन्दु जैनकी ये कविताएँ जाने-अनजाने कवियोंकी ढेरोंढेर प्रकाशित होनेवाली तथाकथित आधुनिकतावादी कविताओंके रेगिस्तानमें एक सुखद और मनोरम नखलिस्तानकी तरह हैं।

— शम्भुनाथ सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• अंकित होने दो :
अजितकुमार

नवलेखनधर्मी रचनाकारोंकी विविध विधाओंकी रचनाओंको एकत्र रूपमें प्रस्तुत करनेका लाभ लेखक और पाठक दोनोंके लिए है। इससे जहाँ लेखककी अनेक विधाओंमें व्यक्त होनेवाली सृजन-क्षमता, शक्ति-सम्भावनाका स्वरूप स्पष्ट होता है वहींपर पाठकोंको नाना आस्वादकामी श्रवणेन्द्रियोंका भी परितोष होता है। ज़्यादा महत्त्वपूर्ण लेखकीय परितोष ही है। क्योंकि व्यावसायिक प्रकाशनके इस युगमें बहुविध प्रयोगोंको समेटनेवाली कृतियोंके प्रकाशनका खतरा उठानेके लिए बहुत कम प्रकाशक तैयार होते हैं और इस सन्दर्भमें ज्ञानपीठका महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

'अंकित होने दो' नये कवि-कहानीकार-समीक्षक अजितकुमारकी कृतियोंकी निरन्तरताके एक विनम्र प्रतीकके रूपमें उपस्थित हुआ है। इसी बातमें इस संग्रह की सम्भावनाशीलता और उपयोगिता है। किसी लीकबद्ध समीक्षा दृष्टिसे हम इन रचनाओंमें पूर्णता अथवा तकनीकी रूढ़ियोंकी तलाश करना चाहेंगे तो हम उस पूरेसे वंचित रह जायेंगे जो यह पुस्तक हमें दे सकती है।

इस संकलनमें अजितकुमारकी कहानियाँ-रेखाचित्र 'झुकी गरदनवाला ऊँट' नामक शीर्षकके अन्तर्गत, कविताएँ 'नोमकी टहनी'के अन्तर्गत तथा परिवेशगत अनुभव 'परिमण्डल', व्यक्तिगत अनुकृतियाँ 'अनुभूति' और पठित रचनाओंकी प्रतिक्रिया या रचनाओंकी पृष्ठभूमि तैयार करनेवाले साहित्यिक संस्मरण 'रचना' शीर्षकके अन्तर्गत रखे गये हैं। अन्तिम तीन शीर्षक 'अंकन' नामके बड़े शीर्षकके अधीन हैं। इस प्रकार इस पूरी पुस्तकमें अजितकुमारकी व्यक्तिगत अनुभूति और चिन्तनके इतने सृजनात्मक अध्याय स्पष्ट हुए हैं जिनसे फिर हम यही निष्कर्ष निकालेंगे कि 'अंकित होने दो' एक सम्भावनाशील नये स्रष्टा बननेकी प्रक्रियामें छूटा हुआ ताज़ा मार्गचिह्न है।

कहानियाँ और रेखाचित्रोंमें पुरानी समीक्षा-दृष्टिको कथाके अवयवोंमें अल्पता और असामंजस्यकी शिकायत हो सकती है लेकिन कथानकको कम महत्त्व देने वाली नयी रचना-दृष्टिको इनमें-से कुछको कहानी कहनेमें कोई हिचक नहीं होगी। 'झुकी गरदनवाला ऊँट' कई अर्थोंमें कहानी-रेखाचित्र खण्डकी सबलतम सृष्टि है। एक प्रतीकवादी कहानीके रूपमें यह बड़ी सफलताके साथ कैशोर्य भंगकी मोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तिका एक मनोवैज्ञानिक आख्यान है। इस कहानीकी विशेषताको अज्ञेयजीने ठीक ही व्याख्यापित किया है 'जो बीत गया उसके बीत चुकनेकी अपरिहार्यता-का बोध उसमें है किन्तु पराजयकी कुण्ठा उसमें बिलकुल नहीं है। 'ख़ाली पन्ने'में एक नौकरीपेशा युवतीके अन्तरंगकी तलाश हुई है। 'आलस्य' एक आत्मसंस्मरणा-त्मक रेखाचित्र-जैसा हो गया है। कहानीकी चुस्ती इसमें अप्राप्य है। 'दफ़्तरका बाबू' एक शुष्क जीवन बितानेवाले बाबूकी अमूल्यांकित संवेदनाके विवश रूपको उभारता है। इनमें-से कईमें कविताका प्रभाव संक्रमित है तो कईमें संस्मरण या रेखाचित्रका। एकाध तो निबन्ध भी लगते हैं।

अजितकुमार मूलतः कवि हैं इसलिए 'अकेले कण्ठकी पुकार' का कवि 'नीमकी टहनी' का मार्मिक कवि बन सका है। छोटे शब्दों, छोटे वाक्यों और छोटे छन्दोंमें बँधी हुई उसकी अनुभूतियाँ और उसमें भी व्यंग्यपूर्ण तल्खियोंका आत्मीयतापूर्ण विनियोजन ठीक हलके-फुलके हरे पत्तोंवाली नीमकी टहनीकी तरह है। प्रसन्नता-की बात है कि कवि जहाँ पदावलीकी ऋजुताकी ओर सचेत है वहींपर लया-न्वितिकी ओर भी।

अंकन खण्डके अन्तर्गत अजितकुमारके इलाहाबादके साहित्यिक जीवनके संस्मरण, परिवेशके कटुतिक्त अनुभव और डायरीके रूपमें अन्य अनेक व्यक्तिगत अनुभूतियाँ आती हैं। डायरीकारके रूपमें, अजितकुमारकी क्षमता निस्सन्दिग्ध रूपसे मान्य है।

एक संभावनाशील कवि-गद्यकारके रूपमें अजितकुमारकी निजी विशेषताएँ हैं और यही उनकी संभावनाशीलताका सबसे बड़ा कारण है। उनकी रचनाएँ प्रयोगके आत्यन्तिक प्रभावसे बहुत कम आक्रान्त हैं और ज़्यादेतर उनके प्रयोग बड़े सफल सिद्ध हुए हैं। कमसे कम 'अंकित होने दो' में उनका कवि और डायरी-कारका रूप ज़्यादे प्रस्फुट हुआ है। कहानियोंमें कुछकी 'फिनिश' तो ठीक है लेकिन कुछमें 'कुछ बात ही नहीं बन पायी' है।

कुल मिलाकर 'अंकित होने दो' में अजितकुमारका बननेकी प्रक्रियामें-से गुज़रता हुआ व्यक्तित्व दिखलाई पड़ता है।

—जितेन्द्रनाथ पाठक

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित समीक्षाएँ

शेष स्वर

'लोकायतन'

स्तम्भ नया है, और उद्देश्य इसके पीछे यही कि विशिष्ट कृतियोंपर प्रकाशित महत्त्वपूर्ण और विवेकी समीक्षाओंके मूल स्वर एक व्यवस्थित रूपमें उपलब्ध हों। जिनके माध्यमसे पाठक भी अपनेको कृतिके अधिक निकट पहुँचा सके। प्रारम्भ है श्री सुमित्रानन्दन पन्तके महाकाव्य 'लोकायतन' से : तीन समीक्षाओंके शेष स्वर

: १ :

'लोकायतन' में, एक प्रकारसे, कविने भारतके सांस्कृतिक इतिहासका विहंगावलोकन अथवा सर्वेक्षण करनेका प्रयत्न किया है। निश्चय ही उसमें पन्तजीने अपनी विशिष्ट जीवन-दृष्टि एवं आदर्शके केन्द्रीय सूत्रों-द्वारा सम्पूर्ण काव्यको एकता देनेकी चेष्टा की है, किन्तु, साथ ही, उसमें दूसरे अनेक विचार कमोबेश स्वतन्त्र रूपमें, अर्थात् केन्द्रीय विचार-सूत्रसे घना सम्बन्ध न रखते हुए, प्रवेश पा गये हैं। जहाँ-तहाँ सन्निवेशित बहुसंख्यक ऐसे विचारोंके बीच केन्द्रीय विचार-सूत्रको पकड़ना अकसर कठिन हो जाता है। वास्तवमें, कविने इस विशाल काव्यको पर्याप्त अवकाशके 'मूड' में लिखा है। उसका समुचित अध्ययन भी अवकाश-साध्य है। एक स्पष्ट कथासूत्रके अभावमें वैसा अध्ययन मुश्किल भी हो जाता है। इसीलिए इस बातका खतरा है कि अधिकांश पाठक काव्यके उन प्रसंगोंके प्रति, जो समर्थ एवं रसमय हैं, उचित न्याय न कर सकें।

पन्तकी शैलीकी जो विशेषता सचेत पाठकका तुरन्त ध्यान खींचती है वह है उनका समर्थ, सार्थक एवं संयमित शब्द-प्रयोग। इतने बड़े काव्यमें कहीं भी पन्तकी शैली एवं भावयोजना आयासित नहीं जान पड़ती। वे कठिन-से-कठिन विचारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं भावभंगियोंको बड़ी सहजतासे प्रकट करते चलते हैं। यह दूसरी बात है कि उनकी भाषा, तत्सम शब्दोंके अबाधित समावेशके कारण, कुछ ज्यादा शिक्षित व संस्कृत स्तरकी जान पड़ती है। इस ऊँचे स्तरकी शालीन सुषमाका हमें पग-पगपर अनुभव होता है।

प्रस्तुत लेखकका खयाल है कि पन्तजीकी रचनाओंमें उनके विचार-पक्ष तथा आदर्शवादी-पक्षपर अत्यधिक गौरव दिया गया है। मेरी कामना और सुझाव है कि 'लोकायतन'का एक ऐसा संक्षिप्त संस्करण किया जाये जिसमें ऐसे पद्योंका बाहुल्य रहे जो कलात्मक सौन्दर्यकी दृष्टिसे अधिक रोचक व आकर्षक हैं—और ऐसे पद्योंकी संख्या काफ़ी बड़ी है। विचारोंके वाहक पद्योंका समावेश सिर्फ़ उनकी दिशा व तारतम्य दिखानेके लिए ही किया जाये।

पन्तकी इधरकी रचनाओंमें मैं पहला स्थान 'लोकायतन'को नहीं बल्कि 'कला और बूढ़ा चाँद'को दूँगा। मुझे यह भी विश्वास है कि पन्तजी, कहींसे एक नया धक्का पाकर, अभी हिन्दीको फिर एक महत्त्वपूर्ण, अपेक्षाकृत अधिक निर्दोष व सन्तुलित रचना देनेकी क्षमता रखते हैं। 'कला और बूढ़ा चाँद'की रचनाओंमें प्रेरणा-स्फूर्तिका वेग शिल्पपर हावी है, 'लोकायतन'की स्थिति विपरीत है। श्रेष्ठतम रचनामें इन दोनों तत्त्वोंका, प्रौढ़ जीवन-दृष्टिकी छाँहमें, सामंजस्य होना चाहिए।

डॉ० देवराज
'कल्पना', मई १९६५

: २ :

जैसे महाभारतमें एक युगका इतिहास नहीं है और आख्यानों और संवादोंके द्वारा असंख्य युगोंका इतिहास है, वैसे ही 'लोकायतन' में एक युगकी कविता नहीं है, इसमें वैदिक काव्य है, उपनिषद् काव्य है, पौराणिक काव्य है, रामायण-को तरह प्रकृति-वर्णन है, कालिदासका-सा देशका विहंगावलोकन है, तुलसीदास-के ज्ञानके संवाद हैं, रीति-कालीन कवियोंका-सा सौन्दर्य वर्णन है, छायावादी कवियोंका-सा अरूपके प्रति प्रेम निवेदन है, :

सुभगे ! तुम रसयोनि प्राणतम को
श्री-शोभा में करती आलोकित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि अन्ध था काम थाम अंगुलि
किया भावपथ तुमने निर्देशित

प्रगतिवादी गर्जन भी है, और लोकसाहित्यका जहाँ-तहाँ छिड़काव भी।

दर्शनका प्रतिपादन तो आदिसे अन्त तक है। कविको कल्पनाके कनकौवे उड़ाना पसन्द नहीं है और इसीलिए उसके बिम्ब बहुत अर्थवान् बिम्ब हैं। वह बहुत सीधे शब्दोंमें गहरी मानवीय चेतनाकी ऊर्ध्वोन्मुख यात्राका वर्णन प्रस्तुत करता है और भारतके आदर्शके अनुरूप एक समन्वयका पथ प्रशस्त करता है। वह इस विश्वासमें प्राण डालता है कि कवि स्रष्टा है, मसीहा है और समस्त चेतनाका केन्द्र है। कविने प्रतीक साधनाका चरम उत्कर्ष ला दिया है। पढ़ते-पढ़ते यह लगता है कि वन, नदी, पहाड़, पशु-पक्षी, आदमी, इतिहास-भूगोल, ज्ञान-विज्ञान सभी प्रतीक हो गये हैं और केवल प्रतीक-ही-प्रतीक चल रहे हैं, राम प्रतीक है, सीता प्रतीक है कविके पात्र प्रतीक हैं, प्रकृतिके बिम्ब प्रतीक हैं, और मैं उसमें यह जोड़ना चाहूँगा कि कविका यह काव्य स्वयं प्रतीक है एक प्राण-हीन आदर्शकी विफलताका।

'लोकायतन' सब कुछ है पर काव्य नहीं है; न तो प्रबन्ध काव्य है न संग्रह काव्य ही। यह 'राजतरंगिणी'-जैसा ऐतिहासिक काव्य भी नहीं है, क्योंकि यह घटित-अघटित-अर्धघटित सबको समेटे हुए है। यह कुछ पुराणके समीप ज़रूर है। पर यह नया मानव-पुराण वंशहीन है।

'लोकायतन' में काव्यत्व तुक मिलाने और छन्द बैठाने तक सीमित है। अधिक-से-अधिक सौन्दर्यके कुछ चित्रोंको बार-बार उकेरने तक सीमित है। ऋषित्वका बोझ उठाकर कवि जैसे बिलकुल पंगु हो गया है। इतनी निष्प्राण और असम्भव कथावस्तुके ऊपर समूचे युगको चेतनाके इतिहासको लादना अपनेमें अत्यन्त उपहसनीय प्रयास है। दो कवियोंकी प्रतिस्पर्धासे प्रलय होनेकी कल्पना प्रहसनका विषय चाहे बन सके, गम्भीर उद्देश्यवाले महाकाव्यका विषय नहीं बन सकती। पात्र भी इतने अरूप और निराकार हैं कि उनके शाब्दिक विलासको अलग कर दीजिए, तो वे एकदम किसी आन्दोलनके झण्डे या पोस्टर नज़र आते हैं। जहाँतक मूल चित्रण सामग्रीका प्रश्न है, वह स्वयं असंगतियोंसे भरी हुई है। उसमें व्यर्थका खण्डनात्मक उत्साह है, एक अजीब-सा खोखलापन है और जीवनसे एक स्पष्ट बिलगाव है। अरविन्द-दर्शनको ही यदि लोकप्रिय बनाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीष्ट था, तो गद्यका माध्यम ही क्या बुरा था, पर मेरी समझमें तो इसमें अरविन्द दर्शनकी गहनता भी नहीं है। इसमें केवल एक धरातल-हीन जीवन-दर्शनकी पटेबाजी है। कहीं-कहीं तो सबको सुन्दर कहनेका प्रयास एकदम बचकाना लगने लगता है। इसी तरह भारतकी अहिंसावादी तटस्थता नीतिकी व्याख्याका प्रयास भी स्वाँग प्रतीत होने लगता है। आख़िर क्या आफ़त पड़ी थी कि वर्तमान युगके संघर्षसे गुज़रे बिना, आधुनिक जीवनकी जटिलताओंमें सम्पृक्त हुए बिना, व्यक्तिके भीतरके विखण्डनको झेले बिना, एक शीशमहलमें बैठे-बैठे एक मुश्किल ज़मानेके मुश्किल आदमीकी कहानी अपने कवित्वको प्रमाणित करनेके लिए लिखी जाये।

काव्यशिल्पकी दृष्टिसे देखनेपर तो काव्यकी विफलता और अधिक उभर आती है। सैकड़ों पंक्तियों तक तो 'अ' के साथ व्यंजनकी तुक मिलती जाती है, छन्द, कुछ अंशोंको छोड़कर, ऐसा है कि लगता है प्रवाह-रुद्ध हो गया है; शब्द-चयन तक नीरस और बार-बार दोहराये जानेके कारण उबानेवाला है। 'पल्लव' से लेकर 'कला और बूढ़ा चाँद' तककी भव्य शोभा-यात्रापर पानी फिर गया लगता है। निरी सूचियों और शुष्क ऊहापोहोंसे ग्रन्थ इतना ठसाठस भरा हुआ है कि काव्यके लिए कहीं रन्ध्र नहीं रह गया है। काश, कथावाचनका उत्साह प्रकृतिके लाड़ले कविको न सताता और यदि कथावाचन ही का लोभ था, तो कम-से-कम कथावाचकोंकी लटकेबाज़ी भी तो होती। यहाँ तो वह भी नहीं है, सपाट रेगिस्तान है, बीच-बीचमें भू-चेतनाके निरन्तर बनने और बिगड़नेवाले दूह हैं।

—डॉ० विद्यानिवास मिश्र
'कल्पना', मई १९६५

: ३ :

'लोकायतन' अपने पहलेके हर महाकाव्यसे अलग है। न तो उसमें द्विवेदी-युगीन महाकाव्योंके समान अतीतका गौरव-गान, शूद्र अथवा नारीका उद्धार है और न परवर्ती प्रबन्ध काव्योंकी भाँति किसी एक सार्वभौम समस्याके विरोधी पहलुओंकी टक्करमें संशय और द्वन्द्वग्रस्त चेतनाका चित्रण है। 'लोकायतन' के कविकी दृष्टि-प्रक्रिया ही अलग है। पूर्ववर्ती प्रबन्ध-काव्योंमें व्यक्ति, घटना अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या प्रधान है, युग और परिवेश उनकी नियामक इकाइयोंमें-से ही एक है, पर 'लोकायतन' का लक्ष्य तो मूर्त विराट्पर केन्द्रित है, घटनाएँ और पात्र उसी विराट्के एक और अंश हैं।' इसके अतिरिक्त 'लोकायतन' एक लक्ष्य-प्रधान भविष्योन्मुखी काव्य है। अतीत, वर्तमान, इतिहास, पुराण, राजनीति, संस्कृति, कला, विज्ञान सबकी सार्थकता कविकी भविष्य-दृष्टिकी इकाइयोंके रूपमें ही है, इसलिए कृतिकी सफलता-असफलताका निर्णय इन विचार-बिन्दुओंके परिपाकके सत्यासत्यपर निर्भर होगा – कथानक-विन्यास अथवा चरित्र-चित्रणके आधारपर नहीं।

पन्तजीकी विश्व-दृष्टि राष्ट्र और देशकी सीमाओंको पार करती हुई गयी है, इसलिए भारतके राजनीतिक आन्दोलनों और सामाजिक समस्याओंका चित्रण उनके लिए अनिवार्य हो गया है। परन्तु इस क्षेत्रमें उनकी परिसीमाएँ बिलकुल स्पष्ट हैं। यह उस युगका इतिहास है, जिसमें रहकर भी, पन्त उसके बीच नहीं, उससे अलग जिये। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक आन्दोलनों और क्रान्तियोंके कोलाहलके बीच वे कमरा बन्द करके कल्पना और चिन्तनमें लीन रहे। उस आन्दोलनकी आग उन्होंने न झेली और न उसे अपनी रचनाओंमें कोई विशेष स्थान दिया। 'लोकायतन' में उसी युगकी गाथाका शायद पहली बार स्मृतियों और इतिहासके सहारे गान किया गया है, जो उनको लेखनीमें बँधकर चलती-फिरती घटनाओंका वर्णन मात्र रह गया है। पात्र अधिकतर नैतिकता और अनुशासनकी अतिके कारण गुरुकुलके छात्रोंके समान निस्तेज और निर्वैयक्तिक लगते हैं। वे उस युगके ओज और शौर्यका प्रतिनिधित्व करनेमें असमर्थ निष्प्रभ स्वयंसेवक मात्र रह गये हैं।

'लोकायतन'के कुछ द्वार ऊँचे धरातलपर हैं, कुछ नीचे। कहीं-कहीं समतल पृथ्वीपर अकस्मात् ही टीलोंकी-सी ऊँचाइयाँ आ जाती हैं। इन अनिश्चित चढ़ाइयों और ढलानोंके बीच बने द्वारोंके मध्य-बिन्दुमें ऐसा लगता है कि छह रास्तोंके संगमपर विस्मित, खोये हुए-से पन्तजी खड़े हैं और बारी-बारीसे भू-चेतना और ऊर्ध्व-चेतना उन्हें ऊँचाइयों और समतलोंपर घुमा रही हैं। इन निर्देशिकाओंकी आवाज़ पहचाननेके कारण कवि दिग्भ्रमित नहीं होता पर पाठक तो जैसे लखनऊके इमामबाड़ेकी भूल-भुलैयामें अपनेको खोया हुआ पाता है।

वंशी कवि और माधो गुरुके व्यक्तित्वमें स्वयं पन्त और निरालाके व्यक्तित्वों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छाया मिलती है। 'लोकायतन' का हर आलोचक इस तथ्यकी ओर इंगित कर चुका है। कहीं-कहीं व्यक्तिगत स्पर्शोंके संकेत बिलकुल स्पष्ट हो गये हैं। परनिन्दा-रस-लोलुप रसिकोंका ध्यान 'लोकायतन' में कहीं और रमे या नहीं, इस प्रसंगमें उनकी रसवृत्तियोंका पूर्ण परिपाक होता है।

पन्तकी बहुमुखी संश्लिष्ट चित्र-योजनाएँ, अमूर्त विचारों और दार्शनिक तथ्योंको भी मूर्त कर सकी हैं। समृद्धि, नूतनता, व्यापकता और रंजकताके तत्वोंने दर्शनके गाम्भीर्यको भी रूप, रस, गन्ध और जीवनका स्पर्श दे कर मूर्त बना दिया है। अनेक बार 'पल्लव-कालीन' कल्पना-पुत्रके प्रौढ़ अमूर्त संवेदन अधिक भव्यता और गहराईसे चक्षुओं और श्रवणोंके माध्यमसे कल्पनामें मूर्त हो उठते हैं।

पन्तके दार्शनिक प्रतिपाद्यमें स्थूल शृंगारिक बिम्बों, कुरूप खुले शब्दों और सहज निवारणीय मुखर प्रयोगोंका रहस्य समझमें नहीं आता। बीस-पचीस वर्ष पहलेका पाठक अपने लिए वर्जित, रूमानी शृंगारिक भावनाओंका आनन्द पन्तकी रेशमी, वायवी कल्पनाओं और प्रच्छन्न सूक्ष्म शृंगारिक उद्भावनाओंमें लिया करता था, पन्तकी अतीन्द्रिय कल्पनाओंमें उसकी ऐन्द्रिक भावनाओंको पंख मिल जाते थे। पर आज, पन्तकी दार्शनिक चेतनाका निरूपण करते समय, कुछ शब्दोंको बचा देना पड़ता है, रूपकोंके कुछ अंशोंको छोड़कर आगे बढ़नेको विवश होना पड़ता है। क्या यह मान लिया जाये कि विचार-संयुक्त जटिल आध्यात्मिक अनुभूतियोंकी सम्प्रेषणीयतामें अविश्वासके कारण दार्शनिक कविको स्थूल माध्यमोंका सहारा लेना पड़ता है? आध्यात्मिकताकी प्रेषणीयताके ये आदिम स्थूल माध्यम क्या आजके युगमें अपना अर्थ नहीं खो चुके हैं? खजुराहो-की मूर्तियोंमें निहित आध्यात्मिक तत्त्व क्या अब दर्शनका पुरातत्त्व और इतिहास मात्र नहीं रह गया है? फिर आधुनिक युगकी बौद्धिक माँगोंके अनुकूल संशोधित अरविन्द-दर्शनको अभिव्यक्तिका माध्यम कविने आदिम-वृत्तियोंको क्यों बनाया है? एक-एक शब्दमें अनेक प्रसंग और अर्थ भर देनेवाला कवि अब भद्दे, स्थूल और भोंड़े शब्दोंका मोहताज क्यों हो गया है?

—डॉ० सावित्री सिन्हा
'माध्यम', जून १९६५,

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नए प्रकाशन

• **भारतकी संस्कृति और कला** : राधाकमल मुकर्जी १२.००

सभ्यता और संस्कृतिके अधिकारी विद्वान् श्री राधाकमल मुकर्जीके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी ग्रन्थका हिन्दी रूपान्तर।

• **संघर्ष** (उपन्यास) : हरमन मेलविले ६.००

हरमन मेलविलेके संसार प्रसिद्ध उपन्यास 'Moby Dick' का हिन्दी रूपान्तर। समरसेट मॉमके विचारमें यह संसारके दस श्रेष्ठतम उपन्यासोंमें-से एक है।

• **नागमणि** (उपन्यास) : अमृता प्रीतम २.५०

यह साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त पंजाब कोकिला अमृता प्रीतमका नवीनतम उत्कृष्ट, साहसिक एवं रोमैण्टिक उपन्यास है।

• **नया समाज** : डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा १.००

इसमें सहकारिता आन्दोलन और उपभोक्ता भण्डारोंपर आधारित नये समाजकी एक झलक प्रस्तुत की गयी है।

• **हिन्दोस्तान हमारा** : धर्मपाल शास्त्री १.५०

इस बालोपयोगी सचित्र पुस्तकमें 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्ताँ हमारा' को अत्यन्त रोचक शैलीमें प्रामाणिक जानकारी सहित चरितार्थ किया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ
ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा
एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी
गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत-कुछ सकीं

• साहित्यिक

• प्रतिनिधि रचनाएँ (पंजाबी दो) : नानक सिंह

समयका प्रवाह और उसके परिप्रेक्ष्यमें समाजकी बदलती स्वरूप-छवियाँ ! लगेंगी जैसे किसी विशाल कैलडॅस्कोपकी दृश्य-छवियाँ हों ।

निरन्तर बनती-बदलती इन दृश्य-छवियोंको अंकित कर सकता है कोई तो उपन्यासकार । वह भी चाहे जो नहीं । किनारे खड़ा उपन्यासकार अपने अंकनमें उन छवियोंकी आकृति उतार देगा; उनके भाव और स्पन्दन, सन्धियाँ और स्खलन उसके देखे और झेले हुए न होंगे । यह प्राण-चेतना अपने अंकनमें वही उपन्यासकार ला सकेगा जो उन बदलती स्वरूप-भंगिमाओंकी आगमें स्वयं झुलसा है, उनके पत्थर-पानीमें गला और बहा है । प्रस्तुत कृतिका लेखक इसी आधारपर उपन्यासकारके रूपमें विशेष द्रष्टव्य हो जाता है ।

गत पचास वर्षोंका देशका इतिहास अत्यन्त घटनापूर्ण रहा है । और घटनाएँ भी ऐसी कि हरेकने इतिहासमें कुछ नया जोड़ा और जीवनको नयी भूमि, नया परिवेश, नया अर्थ तक दिया । सब जो हुआ उसमें कुछ अवांछ्य भी था, दुःखद और यातनाओं-भरा भी । सारी वास्तविकता और सबके परिणामको सामने आते समय चाहिए । पर उस कैलडॅस्कोपकी कुछ दृश्य-छवियाँ यहाँ अवश्य प्रस्तुत हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी जिन्हें लेखकने किनारेसे देखा नहीं, जिया और झेला, और जो इतिहासको होते हुए इतनी आजकी भी हैं कि अनेक पाठकोंको अपनी बीती याद हो आये।

रचनाओंके अंश भी कितना-कितना कह सकते हैं और कैसे सम्पूर्णका आभास दे सकते हैं, इसका यह 'प्रतिनिधि रचनाएँ' एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

मूल्य ४.००

• जुलूस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

नया शायद कुछ नहीं होता। आँख-ओझल तथ्योंके उद्घाटनको शोध नाम मिलता है और जाने-परखे तत्त्वोंका अपने प्रयोजनके अनुरूप संघटन आविष्कार कहलाता है। साहित्य सृजनमें भी, व्यापक दृष्टिसे देखें तो, अपूर्व शायद ही कुछ होता हो।

'रेणु' की यह कृति 'जुलूस' भी अपूर्व तो कैसे कही जाये, पर अनूठी इसे मानना पड़ेगा। हिन्दीमें इस विषय-भूमिकी ओर इसके भाव-संकेत लिये हुए कोई कृति बिरले ही आयी होगी। एक लघुकाय उपन्यास पर विशाल अन्तरंग, गझिन, शक्तिशाली और सारा कथानक सामयिक : घटनाओंकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण और मूल्योंकी दृष्टिसे भी। शैली-शिल्प 'रेणु' के अपने : पहलेसे अधिक प्रौढ़, मँजे-निखरे, प्रभावपूर्ण।

कथानक सीधा-सा है, कला उसका उपयोग करनेकी है। इसके माध्यमसे हिन्दी पाठक देखेंगे कि प्रान्तीय भाव-भेद कितने भी वास्तविक लगें, यथार्थ जीवनके सन्दर्भमें उनका अस्तित्व क्षीण हुए बिना नहीं रहता। और ठीक यहीं तो मूल आधार है देशकी भावात्मक-सांस्कृतिक एकताके सत्यका। आवश्यकता आचरणकी है, दृष्टिज्ञानकी है। प्रस्तुत है इस दिशामें यह 'रेणु' का सफल रचनात्मक प्रयत्न।

मूल्य ३.५०

• तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो : मुनि नथमल

मनुष्य केवल देह नहीं, प्रधान अंग आत्मा है। आत्मा ही केन्द्र है : जीवनका, जीवन-चेतनाका। और आजका मानव तो इन्द्रियोंकी खिड़कियोंसे झाँकता-भागता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटता-बिखरता, बाहरकी ओर दौड़ा जा रहा है। उस आत्माका सान्निध्य प्राप्त नहीं करता! करता तो देख सकता कि आन्तरिक शक्ति और वैभवकी तुलनामें ये बाहरी समृद्धियाँ तुच्छ हैं।

आत्मासे अस्तित्व है। उसे भुलाया नहीं जा सकता। उस एक सत्यका वरण करना होगा। यह अनुभव भी किया जाने लगा है कि वर्तमान स्थितिपर नियन्त्रण नहीं किया गया तो परिणाम भयंकर होगा। और वह परिणाम तो वे भी नहीं चाहते जो उसका कारण बन रहे हैं। कैसे हो निवारण उस परिणामका, किस प्रकार मनपर अधिकार करते हुए आत्माका सान्निध्य प्राप्त किया जाये, यह अनुभव-सिद्ध, सरल एवं प्रभावपूर्ण रूपमें प्रस्तुत कृतिमें देखें। मूल्य २.००

• क्या धर्म बुद्धिगम्य है ? : आचार्य तुलसी

तर्क और बुद्धिने धर्मको चुनौती दी तो सदासे ही है, किन्तु आज विज्ञान और उन्मुक्त चिन्तनने इस चुनौतीको अधिक व्यापक और अधिक मुखर बना दिया है। धर्मने इस चुनौतीको स्वीकारा भी सदासे है, किन्तु अतीतमें जो उत्तर जिज्ञासुओंको सन्तुष्ट कर देते थे, वे उत्तर आज अपर्याप्त हैं। आजके जीवनके परिवेशमें वर्तमानके चुभते प्रश्नों और अणुयुगीय रोमांचों तथा आतंकोंके सन्दर्भमें प्रश्नकी उत्कटता और प्रखरताको कौन झेले—क्या धर्म बुद्धिगम्य है ? इस प्रश्नका और प्रश्नोंमें-से उभरती उप-प्रश्नोंकी शृंखलाका उत्तर इस कृतिमें आपको मिलेगा। व्याख्याता हैं श्री आचार्य तुलसी, जो अणुव्रत-आन्दोलनके प्रवर्तक ही नहीं हैं, इस युगके विशिष्ट साधक, चिन्तक और दिशा-नायक भी हैं। श्री आचार्य तुलसीने धर्मका वह स्वरूप प्रतिपादित किया है जो बुद्धिगम्य है, जो सहज आस्था उत्पन्न करता है। मूल्य २.००

• आत्मजयी : कुँवर नारायण

कठोपनिषद्में नचिकेताका आख्यान आता है। सत्यद्रष्टा कविने इसके माध्यमसे भारतीय दर्शनकी एक विशिष्ट उपलब्धिको स्पष्ट किया है। इधर कुछ हिन्दी काव्य-कृतियाँ इस आख्यानको विषय-आधार बनाकर प्रकाशमें आयी हैं। 'आत्मजयी' इन सबमें कई दृष्टियोंसे भिन्न है और विशेष अर्थपूर्ण भी। यह कृति मूल प्रसंगके दार्शनिक पक्षकी ऊहापोह नहीं करती, न ही उसे दिव्यकथाके रूपमें ग्रहण करती है। 'आत्मजयी' के कविने मुख्यतः नचिकेताकी मानवीय परिस्थितिको ही दृष्टिमें रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नचिकेताकी ही तरह आजका चिन्ताशील मनुष्य भी ऐसे मूल्योंके लिए जीना चाहता है जो उसमें सुख ही नहीं सार्थकताका भी बोध करा सकें। सर्वथा संग्रहणीय कृति। मूल्य ३.५०

● सिकन्दरनामा : सलमा सिद्दीक़ी

सिकन्दरनामा यानी सिकन्दरका हाल। हाँ, सिकन्दर। इतिहासका सिकन्दर नहीं। उसपर सदियोंकी मोटी चादरें पड़ गयी हैं। यह आजका सिकन्दर है जिसके अस्तित्वका सबसे बड़ा सबूत यह है कि स्वयं सलमा सिद्दीक़ीने उसे अपनी जादुई क़लमकी नोकपर बैठाकर साहित्य-संसारमें रॉकेटकी तरह छोड़ा है।

आप चाहें तो इस सिकन्दरको डॉन क्विग्ज़ोटकी परम्परामें शुमार कर लें; लेकिन है यह मियाँ खोजीकी जात-बिरादरीके। जिस तरह हर मिट्टी-पानीकी अपनी-अपनी पौध होती है जो अपने-अपने रंग और सुगन्धमें लाजवाब होती है, उसी तरह यह सिकन्दर है – हिन्दुस्तानकी धरतीका एक हँसोड़ क्यारीका लुभावना फूल। बहुत दिलचस्प दास्तान है इस सिकन्दरकी। और, सलमा सिद्दीक़ीकी सादाबयानीका मोहक कमाल! नये अन्दाज़, नयी अदा, और कुछ पुराने तौर-तरीक़ोंपर नयी चुलबुली निगाह! मूल्य २.००

● दर्शन अनुचिन्तन : म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

चुने-चुने चौदह निबन्धोंका यह एक सुसम्बद्ध संकलन है जो भारतीय दर्शनोंके समूचे स्वरूप और प्रमुख सिद्धान्तोंका सुन्दर परिचय देता है। और ऐसी सरल सुबोध भाषामें सारा विचार-विवरण उपस्थित करता है कि सामान्य जन इसे अपने ही लिए लिखा गया मानें और सुधी विशेषज्ञ देखें कि सब कुछ ज्ञातव्य भी और नया चिन्तन भी सुबोध ढंगसे कैसे लिखा जा सकता है। मूल्य ३.००

सांस्कृतिक

● उपासकाध्ययन : मूल – सोमदेवसूरि, स० -अ० – पं० कै० च० शास्त्री

सोमदेव सूरि कृत महान् संस्कृत ग्रन्थ यशस्तिलकके अन्तिम तीन आश्वास, जिन्हें स्वयं सोमदेवने भी उपासकाध्ययन नाम दिया है। जैन श्रावकाचारका विशद विवेचन। हिन्दी प्रस्तावना, अनुवाद, संस्कृत टीका तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ११६ + ५३९। प्रथम संस्करण १९६४। मूल्य १२.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• करकण्ड चरिउ : मूल–मुनि कनकामर, सम्पा०–डॉ० हीरालाल जैन

जैन और बौद्ध साहित्यमें 'प्रत्येक बुद्ध'के रूपमें प्रसिद्ध महाराज करकण्डके जीवन-चरित्रपर लिखा गया अपभ्रंश काव्य। हिन्दी अँगरेज़ी प्रस्तावना, अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ६४ + २७८। द्वितीय संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

• भोजचरित : मूल – पाठक राजवल्लभ, सम्पा० – अनु० – डॉ० बहादुरचन्द छाबड़ा, शंकरनारायणन्

परमार नरेश भोजके जीवनपर लिखा गया ऐतिहासिक महत्त्वका एक विशिष्ट संस्कृत काव्य। महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी प्रस्तावना, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल २४ + १९२। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

अच्छी हिन्दी कैसे लिखें

लेखक

डॉ० भगीरथ मिश्र एम० ए०, पी-एच्० डी०

डॉ० शुभकार कपूर एम० ए०, पी-एच्० डी०

क्या हिन्दी भाषी क्या अहिन्दी भाषी, क्या देशी क्या विदेशी, सभीको ऐसी पुस्तककी कमी खटक रही थी जो शुद्ध हिन्दी लिखना-बोलना सीखनेमें सहायक हो। विद्वान् लेखकोंने वर्षोंके परिश्रमसे प्रस्तुत पुस्तकको तैयार कर इस अभावकी पूर्ति की है। हिन्दीके विद्यार्थियोंके लिए, अथवा उन लोगोंके लिए जो शुद्ध हिन्दी लिखना-बोलना सीखनेके इच्छुक हैं, यह पुस्तक अनिवार्य है।

मूल्य चार रुपये मात्र

प्रभात प्रकाशन

२०५ चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक कैसे बढ़ें ?

रामनारायण उपाध्याय

हिन्दीमें पाठक बढ़ें कैसे ?—यह एक बड़ी समस्या है। पर सोचना-देखना यह भी है कि पाठक बढ़ क्यों नहीं रहे हैं।

हिन्दीमें पाठक कैसे बढ़ें – इस बातपर विचार करनेके साथ-ही-साथ हमें इस बातपर भी विचार करना है कि हिन्दीमें पाठक क्यों नहीं बढ़ रहे हैं ? इसके कुछ कारण हैं। आइए, हम बारी-बारीसे इनका हल खोजें।

इसका सबसे पहला कारण तो यह है कि आज भी देशमें एक ऐसा वर्ग है जो राष्ट्रभाषा हिन्दी और हिन्दीकी पुस्तकोंको हेय दृष्टिसे देखता है तथा अँगरेज़ीकी हलकी-फुलकी पुस्तकोंको अपनी बग़लमें लेकर चलनेमें गौरव अनुभव करता है। हिन्दीकी प्रगतिके मार्गमें ये बहुत बड़े रोड़े हैं, लेकिन इन्हें तो हमें समयके हाथों सौंपकर आगे बढ़ना है।

दूसरी बात यह है कि आज लोगोंमें पढ़नेकी रुचि तो बढ़ी है, लेकिन ख़रीदकर पढ़नेकी वृत्तिका अभी निर्माण नहीं हो पाया है।

एक दिन मैंने एक माँगकर पढ़नेके अभ्यस्त साधन-सम्पन्न महोदयसे कहा– "आपको तो पुस्तकें ख़रीदकर पढ़नी चाहिए !"

बोले – "जब मुफ़्तमें पढ़नेको मिल जाती है तो क्यों ख़रीदें।"

मैंने कहा – "इससे लेखकका नुक़सान होता है।"

बोले – "लेखककी बात छोड़िए। आपकी आलमारीमें जो पुस्तकें रखी हैं उन्हें यदि मैं पढ़ लेता हूँ तो उससे आपका कौन-सा नुक़सान हो जाता है ?"

मैंने कहा – "आपकी पेटीमें जो नोट भरे हैं उनमें-से कुछका यदि मैं उपयोग कर लूँ और बादमें उन्हें ज्योंका त्यों आपको लौटा दूँ तो इसमें आपका कौन-सा नुक़सान हो जाता है ? मैं आपको पुराने नोटोंकी जगह नये नोट दूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन एक ओर तो आप अपने नोटोंका भी ब्याज चाहते हैं और दूसरी ओर लेखककी अपना रक्त देकर लिखी गयी पुस्तकका बिना मूल्य दिये मुफ़्तमें उपयोग करना चाहते हैं, यह कौन-सा न्याय है ?"

वे कुछ चौंके। बोले – "मेरा मतलब यह नहीं। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि जिस पुस्तकको आपने मूल्य देकर ख़रीद लिया उसे पढ़नेमें भला लेखकका क्या नुक़सान है ?"

मैंने कहा – "लेखकका सम्पूर्ण जीवन उसकी पुस्तकपर निर्भर रहता है। पुस्तकको लिखने तथा उसके प्रकाशित हो जानेपर भी उसे उसके श्रमका मूल्य नहीं मिलता। वरन् पुस्तककी बिक्रीपर ही उसके पारिश्रमिककी दर निर्भर रहती है। ऐसी अवस्थामें यदि कोई उसकी पुस्तकको बिना मूल्य दिये बीचमें ही पढ़ लेता है तो वह उसका अप्रत्यक्ष रूपसे कितना बड़ा शोषण करता है, इसे आप समझ सकते हैं।"

वे तो समझ गये। लेकिन यह प्रश्न आज भी हमारे सामने ज्यों-का-त्यों खड़ा है और इसके लिए हमें ख़रीदकर पढ़नेकी विचारधाराके प्रसारके साथ-ही-साथ माँगकर पढ़नेकी वृत्तिका भी जमकर विरोध करना होगा।

तीसरी बात यह है कि आज हिन्दीके प्रकाशन व्यवसायमें अच्छी-बुरी पुस्तकोंके प्रकाशनकी जो बाढ़ आयी है उसमें-से श्रेष्ठ पुस्तकोंको चुनना हिन्दीके एक साधारण पाठकके लिए कठिन समस्या है। एक ही पुस्तकको दो विभिन्न नामोंसे प्रकाशित करने तथा एक संग्रहकी कुछ कहानियोंको दूसरे संग्रहमें भी खपा देनेकी वृत्तिने लेखक और प्रकाशकोंकी प्रतिष्ठाको कम धक्का नहीं पहुँचाया है। पुस्तकोंकी सरकारी ख़रीदने तो मानो हलकी-फुलकी पुस्तकोंपर अपनी प्रामाणिकताकी मुहर ही लगा दी है। आज प्रौढ़-शिक्षा और समाज-शिक्षाके नामपर गाँवोंमें जिस प्रकारकी पुस्तकें प्रचारित की जा रही हैं उनसे ग्रामीण जनताके ज्ञानमें कितने प्रतिशत वृद्धि हुई है यह तो आंकिक विभाग जाने, लेकिन उससे सरकारी बुद्धिपर तरस अवश्य बढ़ा है।

यदि हम सचमुच साहित्यका प्रसार चाहते हैं तो हिन्दीके प्रकाशकोंको साहसपूर्वक हलकी-फुलकी विचारहीन पुस्तकोंके प्रकाशनका लोभ संवरण करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तमें, जो लोग सचमुच ख़रीदकर पुस्तकें पढ़नेके अभ्यस्त हैं उनकी कठिनाइयोंपर भी हमें विचार करना है। आज पुस्तकोंपर पोस्टेजकी दर इतनी बढ़ी हुई है कि एक रुपयेकी पुस्तकपर तेरह आनेका तो पोस्टेज ही लग जाता है। ऐसी हालतमें किसी भी पाठकके लिए घर बैठे अपनी मन-पसन्द पुस्तकें मँगा सकना सम्भव नहीं है। इसके लिए हमें डाक-तार विभागसे भी पुस्तकोंपर रजिस्ट्री या साधारण डाककी दरें कम करवानेका प्रयत्न करना होगा। साथ ही, आज देशके प्रत्येक प्रमुख स्थानमें श्रेष्ठ पुस्तकें मिलनेकी कोई व्यवस्था नहीं है। रेलवे बुक-स्टालोंपर तो हलकी-फुलकी पुस्तकोंने अपना क़ब्ज़ा ही जमा रखा है।

जिस तरह पुस्तकोंको उनपर प्रकाशित मूल्यपर ही बेचनेके प्रश्नको लेकर एक 'संयुक्त हिन्दी प्रकाशक संघ' का निर्माण हुआ है उसी तरह यदि हिन्दीकी चुनी हुई श्रेष्ठ पुस्तकोंकी बिक्रीके लिए भी एक 'विक्रेता-संघ' की स्थापना होकर उसके ज़रिये देशके प्रत्येक बड़े शहरमें श्रेष्ठ पुस्तकें मिलनेकी व्यवस्था की जा सके तो उससे हिन्दीके पाठकोंमें निश्चित रूपसे वृद्धि होगी।

● ●

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

कामता ग्रन्थावली

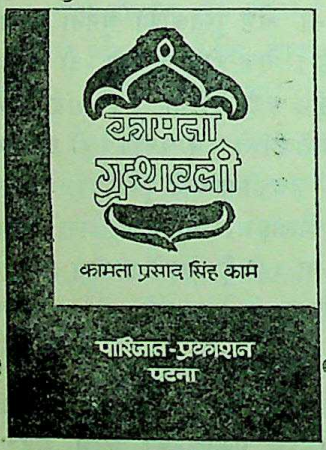

खण्ड-१

●

कामताप्रसाद सिंह 'काम'

प्रस्तावना : डॉ० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'

'काम'जीके निबन्ध :

स्व० नलिनविलोचन शर्मा

●

मूल्य ८.००

शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों एवं पुस्तक विक्रेताओंको विशेष सुविधाएँ।

पारिजात प्रकाशन : डाक बँगला रोड, पटना–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार
प्रगतिके बढ़ते चरण

प्रथम पुरस्कार १९६५ में घोषित कर देनेके विचारसे भाषा परामर्श समितियों तथा भाषावर्ग समितियोंकी बैठकें क्रमशः १९६४ और १९६५ के आरम्भमें ही पूरी हो गयीं। अब अन्तिम रूपसे सात भाषाओं—हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, बंगाली, तेलुगु तथा उर्दूकी सात चुनी हुई पुस्तकें प्रवर परिषद्के समक्ष प्रस्तुत होनेको हैं।

प्रारम्भमें इन पुस्तकोंका हिन्दी तथा अँगरेज़ी अनुवाद करवाकर समान माध्यमसे ही परीक्षण प्रस्तुत करनेका विचार था, किन्तु प्रवर परिषद्ने फ़रवरी १९६५ की दिल्ली बैठकमें हिन्दी-अँगरेज़ीके चुने हुए विशिष्ट अनुवाद विशेषज्ञों-की गोष्ठीमें विचार-विमर्श करनेके उपरान्त यह निर्णय लिया कि इन भाषाओंकी पुस्तकोंका मूल रूपमें ही दो-दो या तीन-तीनके समूहमें तुलनात्मक परीक्षण तथा सर्जनात्मक साहित्यिक कसौटीपर मूल्यांकन कराया जाये, ताकि अन्तिम निर्णय यथाशीघ्र लिया जा सके।

आगेकी कार्यवाही करके परीक्षणकी प्रक्रिया निश्चित करनेका दायित्व प्रवर परिषद्ने अपनी एक उपसमितिको दिया है जिसके सदस्य हैं : १—डॉ० रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर, २—डॉ० हरेकृष्ण मेहताब, ३—डॉ० गोपाल रेड्डी, ४—श्रीलक्ष्मीचन्द्र जैन। उपसमितिने तुलनात्मक परीक्षणका यह आधार निश्चित किया कि जहाँ-तक सम्भव हो ऐसे समीक्षक चुने जायें कि समीक्षक जिन दो भाषाओंकी पुस्तकों-का तुलनात्मक अध्ययन तथा मूल्यांकन करें उन दोनों भाषाओंमें-से कोई भी उसकी मातृभाषा न हो किन्तु वह उन दोनों भाषाओंका कुशल समीक्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। पहले तो ऐसे विद्वानोंका मिलना ही कठिन जान पड़ा, लेकिन प्रयत्न करने पर सभी भाषाओंकी पुस्तकोंके लिए हमें योग्य समीक्षक मिल गये।

अब तुलनात्मक परीक्षण तथा मूल्यांकन हो रहा है। यह कार्य सम्पन्न होते ही प्रवर परिषद्की बैठक आमन्त्रित की जायेगी जो कि प्रथम पुरस्कारकी तिथिके विषयमें अन्तिम घोषणा कर देगी। प्रवर परिषद्ने गत बैठकमें यह निर्णय तो ले ही लिया है कि पुरस्कारकी घोषणा मार्च १९६६ तक अवश्य हो जायेगी।

जैसा कि सर्वविदित है, पुरस्कार प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृतिपर प्रदान किया जायेगा। द्वितीय पुरस्कार (१९६६) के लिए भी प्रस्ताव-पत्र १९६५ में ही आमन्त्रित किये गये थे। इस पुरस्कारके लिए विचारणीय पुस्तकोंकी प्रकाशन अवधि १९२५ से १९५९ के बीचकी रखी गयी थी। इस सम्बन्धमें अन्य १३ भाषाओंकी परामर्श समितियोंके निर्णय प्राप्त हो चुके हैं। केवल तेलुगु भाषा परामर्श समितिकी बैठक शेष है। परन्तु वह भी शीघ्र ही होने जा रही है। इसके बाद द्वितीय पुरस्कारके लिए अनुशासित कृतियोंको दृष्टिमें रखकर भाषावर्ग समितियोंका गठन किया जायेगा और दो-दो या तीन-तीन पुस्तकों पर विचार होनेके बाद जो पुस्तकें आगे आयेंगी उनपर प्रवर परिषद् अपना निर्णय देगी।

प्रथम पुरस्कारके लिए जो पुस्तकें भाषावर्ग समितियों-द्वारा संस्तुत होकर आयी हैं उनका तुलनात्मक परीक्षण तो चल ही रहा है, हिन्दी अनुवादकी भी व्यवस्था की जा रही है। सब पुस्तकोंको हिन्दीमें अनूदित कर देनेसे प्रवर परिषद्के प्रायः सभी सदस्योंको निर्णय लेनेमें सुविधा होगी। हिन्दी अनुवादके प्रयत्नका एक बड़ा आधार यह भी है कि भारतीय भाषाओंकी पुस्तकोंका अनुवाद हिन्दीमें अथवा अन्य भारतीय भाषाओंमें जितनी सरलतासे किया जा सकता है उतना अँगरेज़ीमें सम्भव नहीं। मूलका भाव तथा प्रभाव भी हिन्दीमें उतना धुँधला नहीं होगा जितना कि किसी विदेशी भाषामें होनेका भय है।

चौदह भाषाओंमें-से सर्वश्रेष्ठ पुस्तक चुननेका कार्य कितना जटिल है यह अनुभव तो १९६५ और १९६६ के पुरस्कारके लिए अभी तक किये गये प्रयत्नोंसे हो रहा है। इतने बृहत् कार्यके लिए दो वर्षकी अवधि भी कम पड़ती है। किन्तु हमें सन्तोष है कि हम कार्य-सरणि और समय तालिकाके अनुसार कार्यक्रम पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेमें सफल हुए हैं। देर हुई भी तो अधिकसे अधिक तीन महीनेकी।

तृतीय पुरस्कार १९६७ के सम्बन्धमें भी काम शुरू हो चुका है। इसके लिए प्रस्ताव-पत्र भी शीघ्र ही आमन्त्रित किये जायेंगे।

इस सम्बन्धमें हमारा एक अनुरोध है। यह ठीक है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपनी रुचिकी कोई भी पुस्तक प्रस्तावित करनेका अधिकार है परन्तु प्रस्ताव-पत्र भरते समय यह ध्यान अवश्य रखा जाये कि प्रस्तावित पुस्तकको सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मयकी प्रतिस्पर्धामें आना है और उसे एक लाख रुपयेके पुरस्कारके लिए प्रस्तावित किया जा रहा है। अतः कृतिकी उत्कृष्टता असन्दिग्ध होनी चाहिए।

आशा है कि भविष्यमें हमें पहलेकी अपेक्षा भी अधिक व्यापक स्तरपर सहयोग प्राप्त होगा।

उपन्यास :

नया आदमी : ७.६२ : शिवचन्द्र शर्मा

आँख : २.०० : भालचन्द्र ओझा

पहिए : १५.०० : द्वारका प्रसाद

जादू टूट गया : ५.०० : कर्त्तारसिंह दुग्गल

कहानी-संग्रह :

फूल तोड़ना मना है : ५.०० : कर्त्तारसिंह दुग्गल

पंच-दश-तन्त्र : ३.५० : शिवचन्द्र शर्मा

चलो बादलों में छिप जायें : २.०० : योगेन्द्रनाथ सिनहा

एक डब्बा प्यार : २.०० : छेदीलाल गुप्त

ईश्वर पैदा हुए : २.०० : भालचन्द्र ओझा

सद्यः प्रकाशित : जून १९६५

कविताएँ शिवचन्द्र शर्माकी

ब्रह्मा : शिवचन्द्र शर्मा। आवरण : मक़बूल फ़िदा हुसैन।

विशेष संस्करण : ४.००, सामान्य : ३.२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी योजनाएँ
नये प्रयत्न

साहित्य-जगत्में बनती नयी योजनाओं और होते नये प्रयत्नोंका परिचायक स्तम्भ

• 'पीढ़ी'

काव्य-पुस्तिका : १

सोलहपृष्ठी पत्रिका-नुमा 'पीढ़ी' पढ़ो।

कोई वार्षिक शुल्क नहीं। एक प्रति बीस पैसेकी। 'सम्पादक' तीन—सर्वश्री उमाकान्त वर्मा, ब्रजकुमार पाण्डेय और हरेकृष्ण। 'संकेत' नवरत्न—सर्वश्री श्रीकान्त गोविन्द, मधुकर गंगाधर, सत्यदेव अष्ठाना, राजेन्द्रप्रसाद सिंह, मधुकर सिंह, सीतेन्द्रदेव नारायण, नीरज, रणधीर सिन्हा, राधाकृष्ण सहाय।

समवेत स्वरोंमें रोचक कथ्य और द्वन्द्वका उभार।

द्वन्द्व ये कि 'कवि-या कविता,' 'सृजनसे वाद कि वादसे सृजन'? या फिर 'कवि और आलोचक कि सम्पादक-पाठक भी?'

'परम्परा कि अपरम्परा? आग्रह या दुराग्रह?'

—'पीढ़ी'के अपने जवाब एकदम साफ़।

'पीढ़ी' इस बातका सबूत है कि नयी पीढ़ी जागरूक है, और आत्माभिव्यक्ति-को आतुर भी। कवितासे भी आगे बढ़कर वह प्रक्रियाकी व्याख्याता भी। कविता और प्रक्रियाके प्रकाशनार्थ समवेत रूपसे प्रयत्नरत।

प्रयत्न चाहे यह जितना लघु हो, महत्त्वका है—आग्रह और स्वावलम्ब लिये हुए है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशके एक लघु-से अंचलमें कविताके प्रति इस क़दर चेत !! बिहारका अंचल, हाजीपुर और उसमें एक साथ सात-आठ कवि-कवित्रियाँ !

तो क्योंकर कह या मान लें कि कविताका भविष्य अँधेरा है ?

सवाल सिर्फ़ इतना है ये नये कवि छपें कहाँ ? इन्हींमें-से एक बजरंग वर्मा-को यह 'याचना' पठनीय है ।

"भगवान्,
मुझे भी
नये ढंगकी कविताएँ लिखने का
बल दो, पत्रों में उन्हें छपवा सकूँ
ऐसा
छल दो ।
पाठक उन्हें पढ़ें
लेकिन,
उनके ब्रेन थोड़ा
डल दो ।
यदि यह सब तुम न दे सको
तो सुनो,
मुझे डूबकर मर जाने को
एक चुल्लू
जल दो ।"

लक्ष्मीचन्द्र जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीका डायरी

राजभाषा अधिनियम नेहरूजीकी प्रेरणासे स्वीकृत हुआ था। अब उसमें संशोधन नेहरूजीका अपमान न होगा क्या ?

लक्ष्मीशंकर व्यास

यह मास राजभाषा हिन्दीके भविष्यकी दृष्टिसे विशेष महत्त्वका है। इसी मास संसद्के पावस अधिवेशनमें भारत सरकार राजभाषा अधिनियममें संशोधन उपस्थित करनेवाली है। यह प्रश्न हमारे संसद् सदस्योंकी अग्निपरीक्षाका होगा। यदि सत्ता तथा पदका मोह छोड़कर राजभाषाके सुविचारित निर्णयमें परिवर्तन करनेकी कोशिश की गयी तो देशका भविष्य अन्धकारमें पड़ जायेगा। स्पष्ट है कि हमारी स्वाधीनता उस समय तक पूर्ण नहीं कही जा सकती जबतक भारत सरकारका काम-काज भारतकी राष्ट्रीय भाषाके माध्यमसे नहीं हो जाता। अठारह वर्ष पूर्व इसी अगस्त मासमें देशको राजनीतिक स्वाधीनता मिली थी। राजभाषा हिन्दीको उसी समय शासन तथा राजकाजमें प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए था। यह न होना ऐतिहासिक भूल रही है। अब यह बात सारे देशके सम्मुख स्पष्ट हो गयी है।

इस मासका प्रथम दिवस उस महापुरुषका पुण्य-स्मरण दिवस रहा है जिसने देशको 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का मन्त्र दिया। इसी दिन देशके प्रमुख भागोंमें हिन्दी दिवसका आयोजन हिन्दी-साहित्य सम्मेलनके निर्देशनमें मनाया गया। इस अवसरपर देशके हिन्दी प्रेमियोंको त्याग एवं बलिदानके लिए प्रस्तुत रहनेको कहा गया। साहित्य सम्मेलनकी ओरसे चार प्रस्ताव भी पारित किये गये। एक प्रस्तावमें सभी हिन्दी भाषी राज्योंमें सारा कामकाज हिन्दीमें करनेका आग्रह किया गया है। दूसरेमें केन्द्रीय सरकारसे कहा गया है कि वह राजभाषा अधिनियममें कोई संशोधन न करे। तीसरे प्रस्तावमें कहा गया है कि यदि संशोधन हो तो इस बातका उसमें स्पष्ट निर्देश हो जाना चाहिए कि कितनी अवधिमें अँगरेजीको प्रशासनसे एकदम समाप्त कर दिया जायेगा। चौथेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति-द्वारा दिये गये उस निर्देशका स्मरण दिलाया गया है जिसके अनुसार सन् १९६५ सितम्बर मासमें लोकसभा-आयोगकी परीक्षाओंका माध्यम हिन्दी होना चाहिए।

साहित्य सम्मेलन-द्वारा जनताके भी दैनिक व्यवहारसे अँगरेज़ीको हटानेका सविनय आन्दोलन चलाया जा रहा है जिसमें विशेष सफलता मिल रही है और चतुर्दिक् एक जागृति उत्पन्न हो उठी है। सम्मेलनकी ओरसे हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया है, जिसे प्रधान मन्त्री श्री शास्त्रीके पास भेजकर अनुरोध किया जायेगा कि प्रस्तावित संशोधन न किया जाये।

उधर भारत सरकारके अधिकारी पिछले दिनों उस प्रारूपको तैयार करनेमें व्यस्त रहे हैं जिसे काँग्रेस कार्यसमितिके निर्देशानुसार तैयार किया गया है। इसपर काफ़ी मतभेद रहा है। पिछले दिनों केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलमें इस विषयपर अढ़ाई घण्टे तक विचार होता रहा किन्तु कोई निर्णय नहीं हो सका। इसका मुख्य कारण यही कि जहाँ एक ओर भारत सरकारके अधिकारी अँगरेज़ीके प्रयोगको सामान्य रूपसे चलाना चाहते हैं वहीं दूसरी ओर अहिन्दी भाषी मन्त्री इस बातपर अड़े हुए हैं कि भारत सरकारके पूरे शासनमें पहलेकी ही भाँति अँगरेज़ी बनी रहे। इस आशयका स्पष्ट उल्लेख वे संशोधन विधेयकमें करा लेना चाहते हैं। वे इस बातके भी विरोधी हैं कि जिन मन्त्रालयोंमें हिन्दी जाननेवाले अधिकारी-कर्मचारी हैं वहाँका काम अँगरेज़ीमें भी न होकर हिन्दीमें ही हुआ करे।

देशसे अँगरेज़ीका प्रयोग शासनमें कब समाप्त हो इसके लिए जबतक सभी अहिन्दी भाषियोंकी स्वीकृति न हो जाये तबतक टाले रहनेका अर्थ होता है देशमें अँगरेज़ीको सदाके लिए बनाये रखना। यह स्थिति संविधानमें संशोधनसे भी भयंकर है और हमारे संविधानके निर्देशके विपरीत है। किसी एक या दो प्रदेशोंके हाथमें निषेधाधिकार क्यों? यह स्थिति जनतन्त्रात्मक शासनके विपरीत है। वास्तविकता यही है कि १९६३ के राजभाषा अधिनियममें संशोधनका प्रस्ताव ही लोकतन्त्रकी भावनाके सर्वथा प्रतिकूल है। श्री नेहरूके आश्वासनोंकी दुहाई देकर यह संविधान-विरोधी कार्य किया जा रहा है। स्मरणीय है कि १९६३ का राजभाषा अधिनियम श्री नेहरूकी ही प्रेरणासे स्वीकृत हुआ था। अब उसमें संशोधन वास्तवमें नेहरूका अपमान है!

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीविश्व

कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ

जो केवल मनोरंजनके लिए नहीं, बहुत-कुछ
सोचने और पानेके लिए हैं

• 'महफ़िल' का 'अज्ञेय अंक'

शिकागो विश्वविद्यालयके दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग-द्वारा प्रकाशित साहित्यिक त्रैमासिक 'महफ़िल' ने अमेरिकी पाठकोंको अज्ञेयकी रचनाओंसे परिचित करानेके लिए एक सुन्दर विशेषांक प्रकाशित किया है। इसमें एक दर्जनके लगभग कविताएँ, दो कहानियाँ, 'अपने-अपने अजनबी' का एक खण्ड, एक लेख, अँगरेज़ीमें अनूदित करके दिये गये हैं। कहानियों तथा कुछ कविताओंके अनुवाद अज्ञेयने स्वयं किये हैं। उनके साहित्यपर दो-तीन लेख भी हैं। विशेषांक बहुत ही सफल बन पड़ा है।

• नेहरू पुरस्कारके लिए चुनाव समिति

केन्द्रीय सरकारने अन्तर्राष्ट्रीय समझ-सहमतिके लिए नेहरू पुरस्कार चुनाव समितिके सात सदस्योंके नाम घोषित कर दिये हैं। भारतके उप-राष्ट्रपति तथा मुख्य न्यायाधीश तो निर्णायक सभाके पदेन सदस्य रहेंगे, अन्य पाँच सदस्योंको तीन वर्षकी अवधिके लिए नियुक्त किया गया है। उनके नाम हैं: श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, श्री एन० ए० पलखीवाला, श्री चेलापति राव, डॉ० डी० एस० रेड्डी, न्यायाधीश जे० एम० शेलत। पुरस्कार हर वर्ष दिया जायेगा। गत वर्षमें विश्वशान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय समझ-सहमतिके लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया व्यक्ति अथवा संस्था ही पुरस्कार पा सकेगी। पुरस्कार-स्वरूप एक लाख रुपये नक़द तथा एक पदक दिया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• सादिस्ट लेखक क्लोसोव्स्की पुरस्कृत

फ्रान्सके आलोचकोंका वार्षिक पुरस्कार 'ल प्री दे कृतीक' जो १९४५ के बादसे अबतक कामू और रोब्बे ग्रिये-जैसे साहित्यिक और फ्रांस्वा सागां जैसे व्यावसायिक लेखकोंको मिल चुका है, इस वर्ष पियरे क्लोसोव्स्कीको उनके ऐतिहासिक उपन्यास 'बाफ़ोमे' पर दिया गया है। क्लोसोव्स्की, जो वासना और विलासके निरूपणमें सादको परम्परा इस युगमें नये सिरेसे चला रहे हैं, काफ़ी बिकनेवाले लेखकोंकी श्रेणीमें आते हैं। इनको पुरस्कार देनेका निर्णय होनेसे पहले निर्णायक मण्डलमें काफ़ी गरमागरम बहस हुई और प्रसिद्ध आलोचक राजे केयवा इस चुनावसे इतने रुष्ट हुए कि उन्होंने मण्डलसे त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने कहा—पुरस्कारके लिए मौलिकता, साहित्यिकता और अपूर्व रूप-विधान आवश्यक है।

• अथर्ववेद सम्बन्धी अनुसन्धान

सोवियत विज्ञान अकादमीके एशिया जनगण संस्थानकी विद्वत्-परिषद्के निरुक्त विभागने तरुण सोवियत भारतविद्याविद् ए० गेरासिमोवको सर्वसम्मतिसे निरुक्तमें मास्टरका प्रमाणपत्र उनके निबन्ध 'प्राचीन भारतीय संस्कृतिके इतिहास-के बारेमें जानकारीका स्रोत अथर्ववेद'पर दिया है। किसी सोवियत विद्वान्का अथर्ववेद सम्बन्धी यह प्रथम विशेष निबन्ध है।

गेरासिमोवने, जिन्हें संस्कृत, बंगला और पश्चिमकी कई भाषाओंकी अच्छी जानकारी है, प्राचीन भारतके इतिहास और संस्कृतिसे सम्बन्धित अनेक मूल ग्रन्थों तथा निबन्धोंका विश्लेषण किया।

गेरासिमोवने कई वर्ष तक अथर्ववेदका बड़ी लगन और परिश्रमके साथ अध्ययन किया। गेरासिमोवने मूलके अध्ययनकी एक रोचक विधि सुझायी है तथा पाठके प्रत्येक वाक्यमें निहित निश्चित नियमोंके आधारपर मन्त्रोंके आन्तरिक गठनका ठीक-ठीक विश्लेषण करनेका नियम बताया है। इसके फलस्वरूप गेरासिमोव ऋग्वेदकी तुलनामें अथर्ववेदके मन्त्रोंकी विशेषताएँ बतलानेमें समर्थ हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके निबन्धके एक अध्यायमें अथर्ववेदमें वर्णित राजनीतिक प्रणाली तथा सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धोंका विवेचन किया गया है। गेरासिमोवने प्राचीन भारतके सभा-समिति-जैसे राजनीतिक संगठनोंकी विशेषताएँ बतलायी हैं तथा बतलाया है कि खेतीका स्तर क्या था और दस्तकारियाँ तथा अन्य भौतिक उपलब्धियोंमें प्राचीन भारतने कितनी सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने पुरोहित समाजका भी अध्ययन प्रस्तुत किया है। निबन्धकी बहुत प्रशंसा की गयी है और उसे सोवियत भारतविद्याके क्षेत्रमें ठोस योगदान माना गया है।

गत तीस वर्षों से हिन्दी प्रचार-कार्य में रत विशिष्ट
साहित्यकार पं० अनुसूयाप्रसाद पाठक के दो अमूल्य ग्रन्थ

- **तमसा की गोद में** : खण्डकाव्य, पृ० सं० १६०, आकार २० × ३० क्राउन, मूल्य तीन रुपये

पुस्तक सर्वांगीण नवीन है। काव्य रचना तो नवीन है ही। कविके चिन्तनका ढंग, सांस्कृतिक आस्था, अनुभूति, नयी चेतनाके साथ रस–अलंकार, शब्द–छन्द गति विशिष्टतासे ओत-प्रोत है। पुस्तक अपनेमें पूर्ण तथा संग्रहणीय है।

- **जहाना** : उपन्यास : पृ० सं० १८० साइज २० × ३० नयनाभिराम छपाई आकर्षक कवर कलात्मक मुद्रण। मूल्य तीन रुपये

ग्रामीण समस्यापर आधारित सत्यकथा है। इसलिए प्रारम्भसे अन्त तक पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता।

प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार**
बाँका बाज़ार, कटक-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
द्वारा प्रकाशित
तथा श्री बालकृष्ण राव-द्वारा
सम्पादित मासिक

'माध्यम' एक वर्ष की अल्पावधि में हर प्रबुद्ध पाठक की सबसे प्रीतिकर पाठ्य-सामग्री बन गया है।

'माध्यम' के प्रवेशांक से अबतक की पूरी फ़ाइल की धुआँधार माँग इसके स्थायी महत्त्व और लोकप्रियता का परिचायक है।

सहवर्ती साहित्य, विवेचना, प्रतिपत्तिका, समीक्षाएँ, प्रत्यालोचन-पुनर्विचार, हिन्दीजगत्, पत्र-पत्रिकाएँ 'माध्यम' के स्तम्भगत आकर्षण हैं।

एक अंक का मूल्य : १.०० । वार्षिक शुल्क : १०.००

पत्राचार : पो० बा० सं० ६०, इलाहाबाद

सम्पादकीय तथा व्यवस्थापकीय कार्यालय :

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन जगत्
प्रवृत्तियाँ और परिवेश

७

वास्तवमें प्रकाशन 'एक' व्यवसाय नहीं होता, एकमें अनेक होता है।

जहाँ प्रकाशक लेखक नहीं लेखिकाओंकी मनुहार करता है

वक़्त काटनेके लिए ही तेलुगुमें महिलाओंने लिखना शुरू किया था। पर पाठक वर्गकी महिलोन्मुखी प्रवृत्तिने उन्हें प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप तेलुगुमें स्थिति आज यह है कि प्रकाशक महिला लेखिकाओंकी पुस्तकें (विशेषकर उपन्यास) प्रकाशित करना ही पसन्द करता है।

असमी भाषाकी पुस्तकें

असमीमें भी सबसे अधिक बिकनेवाली पुस्तक उपन्यास ही है। तीन-चार हज़ार प्रतियोंका पहला संस्करण सामान्यतया निकलता है। यात्रा-वृत्तान्त और जासूसी साहित्यका नम्बर दूसरा है। कविता कम बिकती है।

कन्नड़ी किताबोंकी स्थिति

एक हज़ार प्रतियोंका संस्करण बिकनेमें दस वर्षसे भी अधिक लग जाते हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादेमी और दक्षिण भाषा बुक ट्रस्टकी सहायतासे भी अनेक प्रयत्न किये जानेके बावजूद पाठकोंकी संख्या नहीं बढ़ पा रही।

'अश्लीलता' विधि-आयोगके सुपुर्द

बेशुमार मुक़दमे चलाने, लड़ने और हारनेके बाद भारत सरकारने अब हताश होकर अश्लील पुस्तकें प्रकाशित करनेवाली धाराको बदलवानेकी सोची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है! सबसे बड़ी बात तो यह है कि अश्लीलताकी ठीक-ठीक क़ानूनी परिभाषा ही अबतक नहीं हो पायी। मन्त्री श्री जयसुख लाल हाथीने हाल ही में यह तथ्य स्वीकारा है। अतः अब देखना है कि अश्लीलताका क्या बनता है, जिसे क़ानून विधि-आयोगके सुपुर्द कर दिया गया है।

जहाँ क्लब किताबें बेचते हैं

आपने भी सुना होगा कि अमेरिकामें पुस्तकें दुकानों-द्वारा ही नहीं, क्लबों-द्वारा भी बेची जाती हैं। इन क्लबोंके जो सदस्य प्रतिवर्ष निश्चित संख्यामें पुस्तकें खरीदना स्वीकार कर लेते हैं उन्हें कम क़ीमतपर विशिष्ट पुस्तकें मिल जाती हैं।

बस बुक-स्टॉल

हालमें ही ब्रिटेनके कुछ प्रकाशकोंने मिलकर अपनी पुस्तकें बेचनेका नया ढंग निकाला। सीधे-सीधे ग्राहक तक दुकान ले जानेके लिए बस बुक-स्टॉलका प्रयोग शुरू किया।

एक पुरानी यात्री-बसको ठीक-ठाक करके उसमें पुस्तकें सजायीं और लण्डनसे ३० मील दूर ल्यूटनको चल दिये। इस क़स्बेको इसलिए चुना क्योंकि यहाँ कुछ कारखाने हैं और पुस्तक प्रकाशकोंके विचारमें ऐसी जगहोंपर किताबोंके पाठक नहीं मिलते।

इन नये पुस्तक-विक्रेताओंकी बस क़स्बेके बीचो-बीच जा खड़ी हुई। जाते ही चालीस किताबें बिक गयीं। फिर वह अपनी दुकानको एक मोटर-कारखानेके सामने ले गये। वहाँ कुछ और बिक्री हुई।

पहले-पहले तो लोगोंने कोई खास उत्साह नहीं दिखाया, मगर बादमें जब-जब भी ये प्रयोगवादी विक्रेता अपनी बस-शॉपको इस क़स्बे तथा अन्य छोटी-छोटी जगहोंपर भी ले गये, सफलता अप्रत्याशित रूपसे उनके चरण चूमती रही। एक ही स्थान, गाँव या क़स्बेमें बार-बार वही बस देखकर लोग-बाग उत्सुक हो-होकर किताबें खरीदने आने लगे।

प्रकाशक संघके प्रस्ताव

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघके दसवें वार्षिक अधिवेशनमें प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बिक्रीकी समस्याओंपर जो प्रस्ताव पास किये गये उन्हें कार्यान्वित करनेकी दिशामें प्रयत्न करनेका समय अब आ गया है। प्रस्ताव हैं :—

[१] हिन्दीमें अबतक देश-भरमें विभिन्न विषयोंकी जो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, आगामी एक वर्षमें उनकी सूची प्रकाशित की जाये।

[२] अच्छी पुस्तकोंके प्रकाशनके लिए प्रकाशकोंको सस्ती ब्याज-दरपर ऋण उपलब्ध करानेके लिए एक अर्ध-सरकारी संस्थाकी स्थापना की जाये।

[३] विज्ञानकी उत्तम पुस्तकोंको पुरस्कृत करनेके लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की जायें।

[४] पुस्तकोंके पार्सल भी अखबारोंके पार्सलोंकी तरह सस्ती दरोंपर रेलवे द्वारा बुक किये जायें।

[५] पुस्तकोंके क्रय-विक्रय और निर्माण आदिके सम्बन्धमें समय-समयपर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किये जायें।

[६] ग़लत शर्तोंपर लेखकोंके साथ अनुबन्ध न किया जाये और लेखकके हितका भी ध्यान रखा जाये।

●●

आचार्य चतुरसेन-साहित्य

गोली	६.५०	पाँच एकांकी	२.५०
खग्रास	६.५०	श्रीराम	२.५०
सह्याद्रिकी चट्टानें	३.००	धर्मके नामपर	३.००
राजसिंह	३.५०	व्यभिचार	४.००
अजीतसिंह	३.५०	बुद्ध और बौद्ध धर्म	५.००
अमरसिंह	२.५०	सोमनाथ	८.००
छत्रसाल	२.५०	वैशालीकी नगरवधू	१२.००
मेघनाद	२.५०	मेरी आत्म-कहानी	१६.००
गान्धारी	३.००		

प्रभात प्रकाशन, २०५, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति और साहित्यकार

एक बहुत पुराना प्रश्न
जो अब फिरसे नया हुआ और
साथ ही तीखा भी

नयी पीढ़ीके कवि बड़े गर्वसे कहते हैं कि पिछली पीढ़ीके हिन्दी कवियोंकी दृष्टि बहुत सीमित थी यहाँतक कि वे राष्ट्रीय सीमासे आगे बढ़कर देख ही नहीं पाते थे, जब कि नयी पीढ़ीकी व्यापक दृष्टि पूरे विश्वको अपने व्यासमें समेटे हुए है। यह दावा सही होता यदि इस विश्वव्यापी दृष्टिकी किरणें आजकी विश्व-राजनीतिपर भी कुछ तेज़ रोशनी डालतीं—'राजनीति' न सही तो विश्वमें जहाँ भी मानवतापर संकट हो उसपर 'मानव-नियति' या 'मानव-स्थिति'के ही नाते ये नये कवि कुछ प्रकाश बिखेरते !

लेकिन व्यवहारमें स्थिति कुछ ऐसी दिखाई पड़ रही है कि यह पीढ़ी बहुत-कुछ अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ीसे भी अधिक 'क्षेत्रीय' और संकीर्ण हो चली है ! ऐसा नहीं है कि इस पीढ़ीमें 'असन्तोष' और 'विद्रोह'की आग नहीं है, लेकिन लगता है कि वह आग जैसे एक सिगरेटपर आकर ख़त्म हो जाती है ! बातोंसे इतना तो पता चलता है कि यह लेखक सरकारसे समझौता करनेको तैयार नहीं है—सरकारके सामने न तो वह हाथ फैलानेकी जिल्लत उठाना चाहता है और न सरकारी सम्मानका भूखा है; यहाँतक कि वह सरकारसे किसी तरह डरता भी नहीं; अपने जनतान्त्रिक अधिकारोंका उपयोग करते हुए वह सरकारके ख़िलाफ़ कुछ भी कहने या लिखनेका हौसला रखता है। लेकिन देखिए तो अमलमें वह करता क्या है ?

जो लेखक उसकी समझसे 'सरकारी' हैं उनपर हमला—यानी हमला सीधे सरकारपर नहीं, बल्कि उसपर जो किसी प्रकार सरकारका समझा जाता है, क्योंकि उसे पता है कि सरकार तथाकथित अपने उस लेखककी मदद करने नहीं आयेगी; उल्लेखनीय है कि जिस समय रॉबर्ट लावेल अपने राष्ट्रके प्रेसिडेण्ट जॉनसनकी नीतिको चुनौती दे रहा था, उस समय हिन्दीमें उसके भाईबन्द नये साहित्यकार अपने 'प्रेसिडेण्ट' या प्रधान मन्त्रीको नहीं बल्कि साठ पार कर चुके एक कविपर दल बाँधकर तीरन्दाज़ी कर रहे थे। प्रतिरोधकी समानता यह कि अमेरिकी कवि राष्ट्रपतिका निमन्त्रण लेनेसे इनकार करता है तो हिन्दी कवि अपने वरिष्ठकी कविता-पुस्तक पढ़नेसे इनकार करता है। विद्रोहमें इससे बढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समानता और क्या हो सकती है ? यही नहीं बल्कि एक दूसरा कवि आगे बढ़कर यह सूत्रकी फक्तिका लिखता है जिसमें सारा जोर 'भाषा' पर है।

और इस तरह भाषापर तान टूटना आकस्मिक नहीं है। पश्चिमी साहित्य-समीक्षा-को दूरसे सूँघकर अपने यहाँ कुछ ऐसा समझा जाने लगा है कि 'आधुनिक भाववोध' से परिपूर्ण होनेके लिए 'भाषा-संवेदना' बीज-मन्त्र है। शायद इस 'आधुनिक भाषा-संवेदना' का ही यह राजनीतिक विस्तार है जो नये लेखकोंने सरकारके खिलाफ़ अपने विद्रोहको व्यक्त करनेके लिए एकमात्र भाषाके सवालको चुना और एक छोटे-से वक्तव्यपर बीस-पचीस हस्ताक्षर करवाके अपने विद्रोह भावको तुष्ट कर लिया। निश्चय ही इससे आगे बढ़नेका अर्थ होता अपनी लेखकीय सीमाका उल्लंघन ! इस प्रकार विद्रोह भी हो गया और कोई खतरा भी नहीं आया। समझदारी और कहते किसे हैं ? कितनी सूक्ष्म और कितनी कलापूर्ण ! जनता नासमझ है जो इस आह्वानपर लेखकके पीछे उमड़ नहीं पड़ती। इसीको कहते हैं : स्थूलके प्रति सूक्ष्मका विद्रोह।

"भाषाको ठीक करनेसे पहले मैं मनुष्योंको ठीक करना चाहता हूँ।" प्रसादके चाणक्यका यह कथन निश्चय ही इन नये लेखकोंके लेखे सूक्ष्मके प्रति स्थूलका विद्रोह होगा और सम्भवतः 'असाहित्यिक' भी ! यह भी एक विडम्बना है कि आजके अनेक नये लेखकोंकी तुलना-में निरे 'साहित्यिक', छायावादी और राष्ट्रीय सीमामें बँधे रहनेवाले प्रसाद तो इतना 'राजनीतिक' वक्तव्य दें और आजके छायावाद-विरोधी, अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिवाले परम जागरूक साहित्यकार भाषाकी क्रान्तिको ही अन्तिम क्रान्ति मान लें ! ऐसी मनोदशामें केवल शब्दोंकी 'प्रासाद-क्रान्ति' का सपना देखा जा सकता है।

आकस्मिक नहीं है जो नयी पीढ़ीके आधुनिकतावादी कवियोंने अमेरिकाके नये कवियोंके राजनीतिक प्रतिरोधको अनदेखा कर दिया। जहाँ एक कवि साफ़ कहता हो कि—

"हल ढूँढ़नेका काम कवियोंने ऊबकर
सौंप दिया है
गणितज्ञ पर
और उसने राजनीतिज्ञ पर।"

वहाँ आजकी राजनीतिमें इस कविसे किसी सामाजिक भूमिकाकी आशा करना व्यर्थ होगा। कहनेके लिए यह 'बुखारमें कविता' है किन्तु मानसिक बुखारका यह प्रलाप खासा सोचा-विचारा हुआ है। जो सारे सवालोंको हल करनेकी जिम्मेदारी राजनीतिज्ञोंपर छोड़ देनेको तैयार हो, वह कलको अपनी और अपने क़ौमकी तक़दीर भी किसी अयूब या हिटलरके हवाले कर सकता है। कामका बँटवारा इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि एक तानाशाह सारे राज्यकी बागडोर सँभाले और कवि ऐसे तमाम सवालोंसे जान बचाकर चुपचाप कविता लिखे। जर्मनीमें किसी समय साहित्यकारोंके इसी रुखके कारण फ़ासिस्ट हुकूमत आयी और अमेरिकामें भी इसी रुझानके चलते मैकार्थीवादका उदय हुआ। भारतमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकोंका यह सपना पूरा भले न हो पाये किन्तु अपने इस रुझानसे वे अनजाने ही फ़ासिज़्मके लिए रास्ता तैयार कर रहे हैं। विडम्बना तो यह है कि वे जब होशमें बातें करते हैं तो फ़ासिज़्मका घोर विरोध करते हैं किन्तु ज्यों ही अपनी कविताके बुखारमें जा पड़ते हैं तो वही बड़बड़ाते हैं जिसे सुनकर फ़ासिस्ट शक्तियाँ चढ़ आती हैं। दुनियाको राजनीतिज्ञोंके हवाले करना बहुत-कुछ उसी तरह है जैसे 'ऐगजल्स कासिल' का अभिजात नायक ज़िन्दगी जीनेका काम अपने नौकरोंपर छोड़ देनेको तैयार था!

राजनीतिज्ञोंपर इतनी ज़िम्मेदारी डालनेके बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघकी शाखाओंमें जाकर शरीर बनानेका ही काम बच रहता है क्योंकि इस समय भारतमें वही एक 'अ-राजनीतिक' संगठन रह गया है जहाँ लड़कोंकी बाल-बुद्धिपर किसी तरहका आवश्यक-अनावश्यक ज़ोर नहीं डाला जाता, यहाँतक कि उसका 'बौद्धिक' भी वस्तुतः शारीरिक ही होता है। आश्चर्य नहीं जो दिमाग़ी परेशानियोंसे बचनेके लिए बहुत-से नये लेखक इस शारीरिक अभ्यासको कहीं ज़्यादा पसन्द करें—बशर्ते वहाँ सूर्योदयसे पहले उठनेका नियम हटा लिया जाये! प्रेसिडेण्ट जॉनसनका भाषण ऐसे लेखकोंके लिए अच्छा सबक़ है। वैसे प्रेसिडेण्टने एक तरहसे इन लेखकोंके ही मनकी बात कही है क्योंकि जॉनसनकी तरह ये भी अपनी कलाको राजनीतिक अस्त्र नहीं मानते!

ऐसा नहीं कि नये साहित्यकार किसी राजनीतिक सवालपर नहीं बोलते। राजनीतिके बारेमें इस प्रकारका अ-राजनीतिक रुख रखते हुए भी कुछ समय पहले उन्होंने दक्षिणी अफ़्रीकाके वर्ण-भेद और उससे भी पहले लुमुम्बाकी हत्या तथा उसीके आस-पास अल्जीरिया-के मुक्ति आन्दोलनपर सामूहिक हस्ताक्षरके साथ वक्तव्य प्रकाशित किया था। यही नहीं बल्कि केरलके गत चुनावके बाद जनतान्त्रिक सरकार बनाने तथा तत्सम्बन्धी राजबन्दियों-को मुक्त करनेके लिए भी उन्होंने अपील निकाली थी। ये छिटफुट कार्रवाइयाँ निश्चय ही नये लेखकोंके साहस और राजनीतिक जागरूकताकी सूचक हैं और इन्हें ऐसे अवसरोंपर अपेक्षित व्यापक समर्थन भले ही प्राप्त न हुआ हो किन्तु अनेक क्षेत्रोंसे इसका नैतिक समर्थन किया गया! किन्तु इन इक्की-दुक्की कार्रवाइयोंके बीचके लम्बे अन्तरालोंको देखकर कभी-कभी लगता है कि यह सब कहीं कवि-जनोचित रोमानी साहसका प्रदर्शन-मात्र तो नहीं! क्या इन कार्योंको उतनी गम्भीरता और ज़िम्मेदारीके साथ सचमुच पूरा किया जाता है जितनी इनके लिए अपेक्षित है? इनमें कहीं यह भाव तो नहीं कि देख लो हम यह भी कर सकते हैं या 'हमको जो करना था सो कर गुज़रे।'

इन तमाम बातोंके बावजूद किसी नये लेखकसे 'साहित्य और राजनीति' के सम्बन्ध-पर सैद्धान्तिक चर्चा कर लीजिए तो देखिए कि कितनी बारीकियोंके जाल बिछ जाते हैं और क्या-क्या सींसे नहीं निकाले जाते — यहाँतक कि अन्ततक जाते-जाते विषयकी मूल भाषा ही बदल जायेगी और 'कमिटमेण्ट, एंगेजमेण्ट' आदि जाने कौन-कौन-से सूक्ष्म पारिभाषिक शब्द आ टपकेंगे, और इस प्रकार कोई सक्रिय क़दम उठानेसे पहले थक चुकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि आजके विश्वकी जो आसन्न स्थिति है वह एक लेखकसे विचारके साथ ही क्रियाकी भी माँग करती है। ज्याँ पाल सार्त्र, इसीलिए जहाँ एक ओर दर्शनपर गम्भीर ग्रन्थ लिखते हैं वहाँ दूसरी ओर वियतनामके सवालपर अमेरिकाका निमन्त्रण अस्वीकार करके वक्तव्य भी देते हैं—ऐसा वक्तव्य जिसके शब्द सहज ही क्रियाका रूप धारण कर लेते हैं। क्या हम अपनी जागरूकताको ऐसा क्रियात्मक रूप नहीं दे सकते?

प्रश्न हम सबके सामने है जिसका जवाब सिर्फ़ एक है : क्रिया केवलम् उत्तरम्।

केवल क्रिया नहीं और न क्रियाके लिए क्रिया। कुछ करना चाहिए इसलिए जब-तब कुछ कर बैठना नहीं, बल्कि सुचिन्तित. सुनियोजित, सुसंगत एवं संगठित क्रिया!

—नामवर सिंह

'जनयुग' : ४ जुलाई १९६५

डाँगेके शिविरमें रणदिवे

कवियों, लेखकों, बुद्धिजीवियोंके साथ कैसा सलूक किया जाये – सारी दुनियाकी कॅम्युनिस्ट पार्टियाँ इस जटिल प्रश्नपर पिछले तीस सालसे लगातार विचार करती रही हैं। आख़िरकार अधिकतर पार्टियाँ इसी नतीजेपर पहुँचीं कि लेखकोंको उनके हालपर छोड़ देना चाहिए। कवि-कर्म अपने-आपमें मनुष्यताके प्रति सौगन्ध उठानेका कर्म है, कविको किसी मतवादके कठघरेमें खड़ा कर हलफ़नामा उठानेके लिए बाध्य करनेकी ज़रूरत नहीं। इस धारणाका दबाव पार्टीपर इतना अधिक रहा कि एक समयमें माओत्से दुंगकी चीनी पार्टीको भी नारा लगाना पड़ा 'हर फूलको आज़ादी है।' यद्यपि फूलोंकी आज़ादीका यह स्वप्न-वसन्त चीनी पार्टीके कठमुल्लापनकी लूमें तुरत ही झुलस गया।

'बुरा' लिखनेकी आज़ादी : सोवियत रूसकी २० वीं पार्टी काँग्रेसमें स्तालिनकी शव परीक्षाके बाद लेखकों और कलाकारोंने भी कुछ राहतका अनुभव किया। 'अच्छा' (पार्टीके मानदण्डके अनुसार) लिखनेकी आज़ादी तो सोवियत लेखकको पहले ही थी, 'बुरा' (पार्टीके मानदण्डके अनुसार) लिखनेकी आज़ादी ख़ुश्चोवने दी – किसीको सूली नहीं चढ़ाया गया, किसीको यातना-शिविरमें नहीं भेजा गया – यद्यपि अमूर्त्त चित्रकला या नयी कविताओंपर ठेठ फ़तवे उसकी पुरानी पसन्दको ज़ोरदार ढंगसे प्रकट करते रहे। कलाके प्रति ख़ुश्चोवकी इस ग़ैरज़िम्मेदाराना मुहावरेबाज़ीसे खीझकर इतालवी पार्टीके नेता तोल्याट्टीने कहा था, "कॉमरेड ख़ुश्चोव यह भूल गये हैं कि कोई भी नेता, समाजशास्त्री या राजनीतिज्ञ, कितना बड़ा क्यों न हो, कलाका नियति-निर्माता नहीं हो सकता। उसे कलाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारेमें फ़तवेबाज़ी करनेका कोई अधिकार नहीं; उसे यह मानकर चलना चाहिए कि वह कलाकारके सामने अदना आदमी है।"

लेनिनका आत्मस्वीकार : लेकिन कलाकारके सामने अपनेको अदना आदमी केवल एक कॅम्युनिस्टने माना था – लेनिनने, जिसने तोल्स्तोयके दर्पणमें अपना चेहरा देखा था और पाया था कि मैं तुच्छ हूँ। शोपाँका संगीत सुनते हुए बग़लमें बैठे एक पार्टी कार्यकर्त्ताने फुसफुसाकर लेनिनसे पूछा था, "कॉमरेड ! शोपाँका व्याख्या हम किस शब्दावलीमें करें ? मेरा मतलब है, हम शोपाँका उपयोग कैसे करें ?" संगीतमें डूबे हुए लेनिनने चिढ़कर जवाब दिया, "बेवक़ूफ़ोंकी तरह बात मत करो। कुछ चीज़ें होती हैं जिनकी कोई व्याख्या नहीं की जा सकती।"

लेखकको नाराज़ मत करो : लेकिन लेनिनके बाद ऐसे बेवक़ूफ़ोंकी कमी नहीं रही, जो रचनात्मक साहित्यकी व्याख्या रोज़ बदलनेवाली राजनैतिक पैंतरेबाज़ीकी शब्दावलीमें करना चाहते रहे; हालाँकि भारतीय कॅम्युनिस्ट पार्टीने सन् १९५२ में 'प्रगतिशील लेखक संघ' के विघटनके बाद लेखकोंसे एक बहुत बड़ा सबक़ लिया था। पार्टीने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि 'प्रगतिशील लेखक संघ' उन राजनैतिक संकीर्णताओंके कारण ख़त्म हुआ जो मानवतावादी लेखकोंको 'प्रतिक्रियावादी' और 'साम्राज्यवादी' एजेण्ट घोषित करने लगी थीं। प्रगतिशील लेखक संघने सबसे अधिक नुक़सान पहुँचाया भारतीय कॅम्युनिस्ट पार्टीको। अपनी तानाशाहीसे उसने लेखकों, कवियों और बुद्धिजीवियोंको पार्टीका दुश्मन बना दिया, जब कि पार्टीका उद्देश्य उन्हें दोस्त बनाना था। उसके बाद पश्चिमी यूरोपकी समझदार पार्टियोंकी तरह भारतीय कॅम्युनिस्ट पार्टीने भी फ़ैसला किया कि कलामें कोई हस्तक्षेप न किया जाये, लेखकोंका कोई संगठन न बनाया जाये, बल्कि दूर रहकर उनकी सद्भावना ही अर्जित की जाये। बीच-बीचमें जब भी पार्टीके कुछ महत्त्वाकांक्षी लेखकोंने साहित्यकारोंका संगठन बनानेका प्रस्ताव किया तब पार्टी कतरा गयी—'साहित्यकारों और कलाकारोंको नाराज़ करना अच्छा नहीं होगा।'

ज़रूर नाराज़ करो : लेकिन 'जनयुग' के नये (४ जुलाई, १९६५) अंकमें साहित्यकारोंके विरुद्ध जेहाद बोल दिया गया है और साहित्यकारोंको पार्टीसे युद्धके लिए आमन्त्रित किया गया है। नये रूपमें पार्टीका मुखपत्र 'जनयुग', जो इसके पहले बम्बई और फिर लखनऊसे प्रकाशित होता था, दिल्लीसे निकलने लगा है। पी. सी. जोशीकी सहायतासे सम्पादकका पद प्राप्त किया एक हिन्दी आलोचकने, जिसने साहित्यकारोंके प्रति अपने अनुदार और अमानुषिक दृष्टिकोणसे नामवरी हासिल की। 'राजनीति और साहित्यकार' शीर्षक लेखके अन्तर्गत सम्पादकने युवा साहित्यकारोंको 'फ़ासिस्ट', 'मैकार्थीके अनुयायी', 'हिटलर और अयूबके चहेते' घोषित करते हुए आह्वान किया है कि इनका दमन किया जाये। रणदिवेके ज़मानेमें साहित्यकारोंको जिस तरह अपमानित किया गया, उसे लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी भूल नहीं पाये हैं। जो भूल गये होंगे उन्हें याद दिलानेके लिए रणदिवेकी ही भाषामें और रणदिवेके ही तर्कोंका सहारा लेते हुए साहित्यकारोंपर आरोप लगाया गया है कि 'वे हिटलरको आमन्त्रित कर रहे हैं।' लेकिन हिटलर-जैसा ही रुख अख्तियार कर पार्टीके 'एकमेवाद्वितीय' आलोचक और शास्ता बननेके इरादेसे उन प्रगतिशील आलोचकोंकी भर्त्सना की गयी है जो पहले स्वयं यह प्रयत्न करके उसे बेकार समझकर पार्टीके प्रति वफादार रहते भी थोड़ी उदारताका परिचय देने लगे थे। नये 'जनयुग' का सम्पादन रणदिवेके उत्तराधिकारियोंकी विजय और डांगेके अनुयायियोंकी पराजय है। साहित्यकारोंके प्रति 'जनयुग' का रवैया यही रहा तो उन्हें फिरसे कॅम्युनिस्ट पार्टीका विरोधी बनानेका श्रेय 'जनयुग' को मिलेगा, यह निश्चित दीखता है।

—'दिनमान' : १६ जुलाई, १९६९

राजनीति और साहित्यकार···और इतना ही नहीं

राजनीति और साहित्यकारके सम्बन्धपर चर्चा कोई नयी चीज नहीं है। नया सम्बन्ध ही कोई नया सम्बन्ध है। बल्कि, हिन्दी साहित्यके पिछले सौ वर्षोंकी जीवनीकी प्रमुख घटना ही है साहित्यकारका राजनीतिसे लगाव और अपनी स्वतन्त्र सत्ताकी खोज। भारतेन्दुसे लेकर मैथिलीशरण गुप्त तक श्रेष्ठ साहित्यिक व्यक्तित्वोंका कोई-न-कोई कभी-न-कभी राजनीतिक मुद्दआ रहा है।

स्वतन्त्रताके वर्ष १९४७ के तुरन्त बाद आलोचनामें इस सिद्धान्तकी कसरत अपनी हदको पहुँची थी कि साहित्य कॅम्युनिस्ट पार्टीके वर्ग-संघर्षका अस्त्र है जिसे स्तालिन और माओकी सलाहसे लेखक इस्तेमाल करें, तो जनवादी साहित्य बनता है। यह सिद्धान्त पनप नहीं सका क्योंकि स्वतन्त्रताके बाद स्वतन्त्रताकी खोज देशमें प्रबल थी और ले साहित्यकारोंने इस राजनीतिक सिद्धान्तको, जो पार्टीने साहित्यकी नक़ाब डालकर पेश किया था, जल्दी ही खोलखालकर दिया। यह केवल एक संयोग था कि ठीक उस समय जब जगह-जगह प्रगतिशील लेखक संघोंमें साहित्यकी दमघोंट आलोचनासे बगावत हो रही थी तभी मास्कोसे उदारता दिखलानेका आदेश आया और संयुक्त मोर्चेकी उदारता उभर बढ़ाकर उग आयी। इससे जनवादी या पार्टीवादी साहित्यिक मान्यताओंका विरोध थोड़ा-बहुत कुन्द हो गया, क्योंकि उनका समर्थन मन्द हो गया था। यह अन्तर्राष्ट्रीय परिवर्तन न हुआ होता तो भी व्यक्तिके दमनके विरुद्ध साहित्यकारका संस्कार इतना गहरा था कि पार्टीवादी साहित्यका आन्दोलन पनप नहीं सकता था।

पर आज फिर क्या कारण है कि पार्टीवादी राजनीतिक अनुसरणकी सलाह साहित्यकारको दी जाने लगी है। राजनीतिसे सम्बन्धके नामपर एक ख़ास दलकी राजनीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धका आदर्श सामने रखा जा रहा है। इस घटनाका एक दिलचस्प पहलू भी है, पर उसके बारेमें बादमें। अभी तो एक चीज़के बारेमें साफ़ समझ लें। वह यह कि लेखकके लिए राजनीतिसे अलग रहना हर हालतमें बेमानी और बेईमानी है। परन्तु राजनीतिक पार्टीके गुलाम हो जाना सिर्फ़ उसी हालतमें बेईमानी है जब आप यह हरकत साहित्यके नामपर कर रहे हों।

यानी राजनीतिको आत्मसमर्पण या राजनीतिसे विरोध, दोनों फ़तवे आजके संकटसे भागनेके बहाने हैं। राजनीति बहुत ज़रूरी है; पर मैं भी, अपने लिए, बहुत ज़रूरी हूँ – अपनी उस कला-परम्पराके लिए जो कि मेरे और दुनियाके बीच नितान्त मेरा बनाया हुआ एकमात्र सम्बन्ध है जो मेरे जीवनको सार्थकता देता है, जो और कोई चीज़ दे नहीं सकती।

विराट भीड़ोंके समाजको बदलनेका आज सिर्फ़ एक साधन है : वह है उस सत्ताका उपयोग जो समुदायका एक-एक व्यक्ति अलग-अलग निर्णयोंसे कुछ हाथोंमें देता है—सरकार, जो राज्यकी प्रतिनिधि है, जो समाजकी प्रतिनिधि है, अधूरी, टूटी, नक़ली, मिलावटी, सूखी, जैसी भी वह हो सकती है, अकेला कारगर साधन भीड़के हाथमें है। मैं इस साधनके अधिकसे अधिक सही इस्तेमालके लिए लड़े बिना नहीं रह सकता, लेकिन इसके माने यह नहीं कि मैं भीड़का या भीड़को नियन्त्रित करनेवाली भीड़का क़ायल हूँ और जो कुछ रचता हूँ उस नियन्त्रणके अधीन रचता हूँ। यही नहीं, मुझे जो चाहे रचनेकी आज़ादी हो भी तो वह आज़ादी नहीं है, अगर साहित्यका मूल्यांकन करते हुए मेरे राजनीतिक व्यवहारका प्रमाणपत्र देखनेकी माँग, पार्टीके आलोचक करते हों।

मैं बदमाशों, गधों, आधे पागलों और मक्कारोंके लिए एक ज़िम्मेदारी महसूस करता हूँ पर जो कुछ मैं रचता हूँ सिर्फ़ अपनी ज़िम्मेदारी पर रचता हूँ – या फिर नहीं रचता, फ़िलहाल अपनेको योग्य बनाये रखनेमें लगा रहता हूँ। मैं सिर्फ़ अपने प्रति ज़िम्मेदार नहीं हूँ पर लिखता सिर्फ़ अपनी ज़िम्मेदारीपर हूँ। मैं राजनीतिमें हिस्सा लेता हूँ पर लेखन छोड़कर राजनीतिक कार्य-प्रणालीके क्षेत्रमें राजनीतिक विधियोंसे अपना रचनात्मक काम नहीं करने लग जाता : या फिर इस आशामें कि पार्टीके अनुचरके रूपमें मैं जो लिखूँगा श्रेष्ठ साहित्य घोषित किया जायेगा, जो जो चाहूँ सो लिखने भी नहीं लग जाता। इसके मूलमें मेरा वही अकेलापन है जिसके बलपर मैं वही लिखनेकी शर्त अपनेसे रखता हूँ जो मैं देखूँ या जिस समय देखूँ उसी समय कहनेका साहस करता हूँ : दलके आदेशों-में बँधकर कहनेका उचित अवसर नहीं ढूँढ़ता रह जाता। न किसी पार्टी आलोचकको यह अधिकार लेने देता हूँ कि वह मेरी रचनामें अपने सत्यके न होनेकी शिकायत कर सके।

साहित्यसे बाहर, राजनीतिमें, मैं किस हद तक समाजसे बँधा हूँ, यह आलोचककी कचहरीके बाहरका मुक़दमा है और राजनीतिसे बाहर मैं साहित्यमें किस हद तक समाजके लिए हितकर हूँ यह राजनीतिक पार्टीकी कचहरीमें जाँचा जाने नहीं दिया जा सकता।

इस तरह आप देखेंगे कि साहित्यकार एक ख़ासा टेढ़ा आदमी है जो आसानीसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्थे नहीं चढ़ता। यही तो वह है और इसीसे कॅम्युनिस्ट साहित्यालोचकोंको शिकायत है – 'इन तमाम बातोंके बावजूद किसी नये लेखकसे राजनीति और साहित्यके सम्बन्धपर सैद्धान्तिक चर्चा कर लीजिए तो देखिए कितनी बारीकियोंके जाल बिछ जाते हैं···यहाँतक कि अन्त तक जाते-जाते विषयकी मूल भाषा ही बदल जायेगी और 'कमिटमेण्ट' 'इंगेजमेण्ट' आदि जाने कौन-कौन-से सूक्ष्म पारिभाषिक शब्द आ टपकेंगे और इस प्रकार कोई सक्रिय क़दम उठानेसे पहले ही थक चुकेंगे' (कॅम्युनिस्ट पार्टीका मुखपत्र जनयुग; ४ जुलाई; पृष्ठ २४) इसी सिलसिलेमें लेखकोंसे माँग की जाती है कि चूँकि भाषाके सवालपर उन्होंने जो क़दम उठाया है, (भाषा वक्तव्य और कार्यक्रम : कल्पना; जुलाई '६५) वह 'जब तब कुछ कर बैठना' है इसलिए नाकाफ़ी है और 'सुचिन्तित, सुनियोजित, सुसंगत एवं संगठित क्रिया' आवश्यक है।

यह केवल पार्टीको सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करके हो सकता है – चाहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघको चाहे कॅम्युनिस्ट पार्टीको, हालाँकि इनमें-से एक-दूसरेको कभी पसन्द न करेंगे।

'जनयुग' ने आदर्शके तौरपर सार्त्रका वह वक्तव्य उद्धृत किया है 'जिसके शब्द सहज ही क्रियाका रूप धारण कर लेते हैं' और जो वियतनामके सवालपर अमेरिका आनेका निमन्त्रण अस्वीकार करते हुए उन्होंने दिया था। उनकी तारीफ़में कहा गया है कि वे दर्शनपर गम्भीर ग्रन्थ भी लिखते हैं। ज़ाहिर है कि यदि अमेरिकाका विरोध उन्होंने न किया होता तो उनके दर्शन ग्रन्थ विशिष्ट विशेषणोंके साथ ही उल्लिखित किये गये होते।

अब इस सम्पूर्ण समर्थनके आग्रहके उस दिलचस्प पहलूको लें जिसका पहले नाम लिया गया था। वह यह है कि इस नये अभियानमें सारा ज़ोर एक ऐसे मामलेपर है जिसपर ज़ोर देनेसे एक ओर तो लेखक पार्टी नीतिकी हाँमें हाँ मिलाता है, दूसरी ओर, किसी ऐसी समस्याके आमने-सामने आ खड़ा नहीं होता जो उसके निकट परिवेशकी हो। वियतनाम वह मामला है। अमेरिकी लेखकोंने अपनी सरकारकी नीतिका विरोध किया है इसलिए वे आदर्श हैं, इसलिए भारतीय लेखक उनका साथ दें और अमेरिकी सरकारका विरोध करें। जी हाँ, अमेरिकी सरकारका, भारत सरकारका नहीं। दरअसल, उन मामलोंमें जहाँ 'जनयुग' सबसे अधिक फँसा हुआ है, वहाँ पार्टीकी नीति भारतीय सरकारकी इस समय सहगामिनी है। जब भाषाके सवालपर ७० से अधिक लेखकोंके हस्ताक्षरसे युक्त एक वक्तव्य और बादमें मूल प्रस्तावकों-द्वारा एक कार्यक्रम प्रकाशित किया गया था, तो पहली बार भाषा-जैसे लोकपरक सवालपर, जिसका सीधा असर ९८% उस जनतापर पड़ता है जो अँगरेज़ी नहीं जानती, लेखकोंने एक निर्भीक और बेलाग रास्ता दिखाया था। परन्तु यह दुर्भाग्यसे उन लेखकोंको मुआफ़िक नहीं – जिनका सहयोग पार्टीको इस समय वियतनामके सवालपर आसानीसे मिल सकता है। फ़र्ज़ कीजिए, सेठ गोविन्ददास, श्री सुमित्रानन्दन पन्त, श्री नगेन्द्र, श्री दिनकर आदि कहें कि अमेरिकाको दक्षिण वियतनामसे हटना चाहिए तो यही भारत सरकार भी कहती है इसलिए कोई ख़तरा नहीं पैदा होता, इसलिए पार्टी उनके यह कहनेसे ख़ुश होगी, बल्कि चाहेगी कि यही कहें। मगर भाषाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामलेमें इन सबके और कॅम्युनिस्ट पार्टीके हित एक ही हैं : अँगरेज़ी बनाये रखनेकी हज़रत है, इसलिए न वे कहेंगे कि अँगरेज़ी अभी हटे न पार्टी कहेगी और दोनों ख़तरेसे बचे रहेंगे।

भाषाके सवालपर राय देना नाकाफ़ी बताते हुए 'जनयुग' ने जयशंकर प्रसाद-जैसे 'निरे साहित्यिक छायावादी और राष्ट्रीय सीमामें बँधे रहनेवाले लेखक' के पात्र चाणक्यका यह वाक्य उद्धृत किया है, "भाषाको ठीक करनेसे पहले मैं मनुष्यको ठीक करना चाहता हूँ।" यह प्रसादकी अपनी राय है या चाणक्यकी, इससे 'जनयुग' को बहस नहीं क्योंकि इस समय प्रसादके इस वाक्यको 'राजनीतिक' सिद्ध करना है। अगर मान लें यह प्रसादकी राय थी तो निश्चय ही प्रसाद मनुष्योंको जानवर समझते रहे होंगे। बिना भाषाके मनुष्य जानवर ही हो सकते हैं, और उन्हें अगर जानवरोंकी तरह इस्तेमाल करना है तो उनकी भाषासे पहले उनको ठीक करना ही होगा। भाषा ही क्यों, विचारोंके पहले भी मनुष्योंको ठीक करना हो सकता है और प्रसादको राय तो इसपर नहीं मालूम लेकिन स्टालिन और माओ यह करते भी रहे हैं।

यह दृष्टि अभी केवल कॅम्युनिस्ट पार्टीके मुख-पत्रमें भूमिकाके तौरपर आयी है। साहित्यकी आलोचनामें अभी इसके अनुरूप प्रतिमान नहीं बन सके हैं—यानी आजकी भारतीय कॅम्युनिस्ट पार्टीकी डावाँडोल नैतिकताके अनुसार आजके प्रतिमान १९४८–५१ में श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त और श्री रामविलास शर्माने जो बनाये थे वे उसके बादके साहित्य सृजनने बेकार कर दिये थे। नये सिरेसे आलोचनामें पार्टीकी नीति बनानेमें कुछ समय लगेगा, क्योंकि अभी पार्टीको अगले चुनावके लिए अपना आसन ठीक करना है। यह आशा करना कि पार्टी साहित्य और कलाओंसे अलग रहेगी फ़िज़ूल है। परन्तु यह आशा करना साधार है कि अब हिन्दी साहित्य जिस जगह पहुँच चुका है वहाँ राजनीति और साहित्यकारका सम्बन्ध ही नहीं, कुछ और भी अच्छी तरह पहचाना जा चुका है। वह है साहित्यकारकी स्वतन्त्रता जिसे नया साहित्यकार अनेक प्रकारके जोखम उठाकर बनाये रखता रहा है और रखेगा। इसलिए राजनीति और साहित्यकारके बाद कहना चाहिए और इतना ही नहीं साहित्यकारकी स्वतन्त्रता भी।

—रघुवीर सहाय

'कल्पना' १६६, १९६५

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

• •

* **गंगा लहरी :** सं० श्री सुधाकर पाण्डेय। यह पुस्तक कई विश्व-विद्यालयोंके बी० ए० के पाठ्यक्रममें निर्धारित है। १.२५

* **बन्दीकी चेतना :** श्री कमलापति त्रिपाठी। जीवनके सहज अन्तर्द्वन्द्वसे प्रसूत मनोविश्लेषणात्मक निबन्धोंका पत्रात्मक शैलीमें लिखा ग्रन्थ। ५.००

* **मतिराम ग्रन्थावली :** सं० स्व० कृष्णबिहारी मिश्र एवं स्व० डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र। यह पुस्तक मतिरामका सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करती है। ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित। पुनः सम्पादित एवं परिवर्द्धित संस्करण। इस शोधयुगपर प्रस्तुत पुस्तकमें श्री करुणापति त्रिपाठीकी गम्भीर अनुशीलनयुक्त भूमिका है। १२.५०

* **मधुमालती वार्ता :** सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त। हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंकी परम्परामें 'मधुमालती' का प्रेमाख्यान कई लेखकों-द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किन्तु चतुर्भुजदासकी यह रचना उन सबसे भिन्न लोक-व्यवहारपरक है। यह ग्रन्थ मुद्रित रूपमें पहली बार हिन्दी संसारके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। ८.००

* **खालिकबारी :** सं० श्रीराम शर्मा। अमीर खुसरोकृत खालिकबारीका नाम हिन्दी साहित्यमें विख्यात है। आरम्भमें भूमिका और अन्तमें हिन्दी शब्दोंका भाषा-वैज्ञानिक अभिधान। २.७५

* **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण :** दो खण्डोंमें सन् १९०० से १९५५ तकके प्राप्त हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय। मूल्य प्रति खण्ड ३०.००

• •

नागरी प्रचारिणी सभा

वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० जगदीश गुप्त
की कविताओं का संग्रह

हिमविद्ध

• •

हिमवान् हिमालय समस्त भारतीय चेतनाका देवालय रहा है : ऐसा देवालय जहाँ सत्य, शिव और सुन्दर तीनों एक साथ प्रतिमित हों, जहाँ पवित्रता और मांगलिकता ही नहीं, जड़में चेतन शक्तिका भी साक्षात्कार होता हो। यहाँ जो भी आता है वह एक भव्य शोभा और शक्तिके भावसे तो अविभूत होता ही है, जीवनके एक अपूर्व बोधसे भी स्पन्दित हो उठता है; मानो वहाँका विराट् सत्य उसके सम्पूर्ण अस्तित्वको विद्ध कर देता हो।

प्रस्तुत कविता संग्रहका 'हिम-विद्ध' नाम इसी विद्धताकी ओर संकेत करता है। हिम-देशके सम्पर्कने कविके अभ्यन्तर की रिक्तताको जिस कोमल-स्निग्ध समृद्धिसे भर दिया है उसीका ये कविताएँ संवहन करती हैं।

एक बड़ी विशेषता इन कविताओंकी यह है कि विषय सूक्ष्म और चित्रात्मक होते हुए भी, ये सब अत्यन्त सरल और सरस—अपनेमें रमा लेनेवाली हैं। *मूल्य ३.००*

भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली–६
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

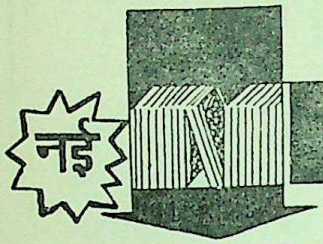

- फागुन के दिन चार (उपन्यास) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
- पत्थर की नाव (उपन्यास) मन्मथनाथ गुप्त
- पराई डाल का पंछी (उपन्यास) अमरकान्त
- ज़मीन आसमान (उपन्यास) पर्ल बक
- मौत की छाया (उपन्यास) कानन डायल
- स्वस्थ रहनेके सहउपाय (जीवनोपयोगी) डॉ० लक्ष्मीनारायण
- काग़ज़ के फूल (हास्य-व्यंग्य) वीरेन्द्रकुमार
- कारवाँ गुज़र गया (कविता) नीरज

प्रत्येक का मूल्य एक रूपया

कबतक पुकारूँ (उपन्यास) रांगेय राघव
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

पिता और पुत्र (उपन्यास) तुर्गनेव
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

विश्व भ्रमण (यात्रा-संस्मरण) सेठ गोविन्ददास
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरोशिमा के फूल

शीघ्र प्रकाशित होनेवाली इस पुस्तक में

- तरुणी यू
- धीरे-धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर होनेवाले उसके पति फूमियो
- जिस मनुष्य से प्रेम करती थी उसके सम्पर्क से विकृत बीभत्स सन्तान न उत्पन्न हो, इस भय के कारण उस व्यक्ति से दूर भागने वाली यू की बहन

और

- जलती मशाल की तरह नदी में कूद जानेवाली उसकी माँ

की कहानी है

इसके अतिरिक्त यह कहानी ऐसे अन्य अनेक पात्रों की है जो पहले स्वस्थ और सुन्दर थे लेकिन ऐटम बम की विभीषिका के बाद अंगहीन और भयावह रूप से कुरूप हो गये। और उनके बीच चौदह वर्ष पहले **हिरोशिमा** पर बम गिरानेवाले देश का निवासी आता है।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्त्वपूर्ण नवीनतम प्रकाशन

शोध-ग्रन्थ

१. हिन्दी-भक्तिकाव्यमें लोक तत्त्व : डॉ० रवीन्द्र 'भ्रमर' १२.००
२. द्विवेदी युगीन हिन्दी गद्य शैलियाँ : डॉ० शंकरदयाल चौकसि १५.००
३. हिन्दी तथा मराठी उपन्यासोंका तुलनात्मक अध्ययन : डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त १५.००
४. अपभ्रंश भाषाका अध्ययन : डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव १२.००

समीक्षात्मक-ग्रन्थ

५. डॉ० नगेन्द्र : व्यक्तित्व और कृतित्व : सं० रणवीर रांग्रा ८.००
६. साहित्य, साधना और संघर्ष : ,, ,, ५.००
७. कामायनी-चिन्तन : डॉ० विमलकुमार जैन १२.००
८. उपन्यासकार प्रेमचन्द : प्रो० श्यामसुन्दर घोष ४.००
९. उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा : डॉ० रामदरश मिश्र ३.५०
१०. गद्य लेखिका महादेवी वर्मा : श्री योगराज थानी ४.००
११. अनुवाद कला : कुछ विचार : ५.००
१२. हिन्दी वार्षिकी १९६२ : सं० डॉ० नगेन्द्र १०.००

उपन्यास

१३. कोहनूरका हरण : श्री गोविन्दवल्लभ पन्त ५.००
१४. मंगल सूत्र : श्री महेन्द्र मित्तल ५.००
१५. बुराँश फूलते तो हैं : श्री हिमांशु जोशी ५.००
१६. अन्तिम-मिलन : श्री रघुवीरशरण शर्मा ५.००

काव्य तथा गद्य काव्य

१७. हिन्दी व्यंग्य विनोद : सं० गोपालप्रसाद व्यास ८.००
१८. कृष्णायन : श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र १४.००
१९. विस्मृतिके पंख : श्री निरंजननाथ आचार्य ३.००

भारती साहित्य मन्दिर, फ़व्वारा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका
तथा भारतीय भाषाओंकी
सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृतिपर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार - योजना - प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित सामग्रीका अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

●
●
●

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला

• राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी दो	नानक सिंह	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

• उपन्यास

सूरजका सातवाँ घोड़ा [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
पीले गुलाबकी आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर मानव	४.००
गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	२.००
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.००
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.००
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	६.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	४.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	२.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस०	२.००
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००
• कहानी		
दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	३.००
झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
कालके पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोस्ताँ [द्वि० सं०]	शेख़ सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने अँगन रस बरसै	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
मोतियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १—२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
अतीतके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५१
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

• कविता

चाँदका मुँह टेढ़ा है [द्वि० सं०]	मुक्तिबोध	८.००
आत्मजयी	कुँवरनारायण	३.५०
कनुप्रिया [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
हम विषपायी जनमके [द्वि० सं०]	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
वेणु लो गूँजे धरा [द्वि० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
बीजुरी काजल आँज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
देशान्तर	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूप शर्मा	६.००

• शाइरी

गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
नग़मए-हरम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००

• नाटक

बारह एकांकी [द्वि० सं०]	विष्णु प्रभाकर	३.५०
घाटियाँ गूँजती हैं [द्वि० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम क़ैद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
तरकशके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
चेखॅवके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

• विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजितकुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

• रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

• ललित-निबन्धादि

चिन्तककी लाचारी	माखनलाल चतुर्वेदी	४.००
एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकीराय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
ठूँठा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
ग़रीब और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रावी	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकरायी [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

दीप जले शंख बजे [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो वार्ता-शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००
रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [च० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन [द्वि.सं.]	भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरतके नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो	मुनि नथमल	२.००
क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?	आचार्य तुलसी	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
दर्शन अनुचिन्तन	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

• सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव [द्वि० सं०]	मुनि नथमल	१.५०
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

• हास्य-व्यंग्य

सिकन्दरनामा	सलमा सिद्दीक़ी	२.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य [द्वि० सं०]	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
तेलकी पकौड़ियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
काग़ज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
मुर्ग़े-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : अगस्त १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

समाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं०पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

मदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — ६.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन — २.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — ८.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — १०.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ४
सम्पादन : डॉ० जोहरापुरकर — ७.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये ३.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन–वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल .५०
स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश]
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल १.५०
रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका]
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री प्रभाचन्द्राचार्य २.००
लाटी संहिता [संस्कृत]
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल .५०
नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका]
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात .२५

आगामी प्रकाशन

साहित्यिक

* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ :** कृष्णाचार्य (शोध)
* **अपभ्रंश भाषा और साहित्य :** डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन (शोध)
* **अठारह सूरजके पौधे :** रमेश बक्षी (उपन्यास)
* **नये प्रतिमान पुराने निकष :** लक्ष्मीकान्त वर्मा (समीक्षा)
* **खण्डित सेतु :** डॉ० शम्भुनाथ सिंह (कविता)
* **सिंहली कहानियाँ :** सं०—भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा एस्० मेधंकर (कहानी)
* **प्रतिनिधि-कविता-संकलन** (मराठी) : [illegible]नकर सोनवलकर

■

ज्ञानपीठ पत्रिका : अगस्त १९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैशवांकन

अर्थात्
'बेबी बुक' हिन्दी में

★

शिशुके जन्मोत्सवपर होनेवाले आयोजनोंकी शोभा स्मरणीय होती है। बाल-विकासका प्रत्येक चरण विस्मयकर है। इन आयोजनोंकी स्मृतिको और शिशुकी विकास-प्रगतिको मोहक तथा कलात्मक ढगसे अंकित करके सुरक्षित रखनेकी इच्छा प्रत्येक माता-पिताके लिए स्वाभाविक है। इन प्रयोजनोंके लिए अभी विदेशी जीवन-पद्धतिपर रचित अँगरेज़ीकी 'बेबी बुक' का व्यवहार होता है। भारतीय ज्ञानपीठको गर्व है कि इस कलात्मक प्रकाशनके द्वारा वह इस अभावकी पूर्ति कर रहा है।

'शैशवांकन'में जन्मोत्सवसे सम्बन्धित अवसरों तथा शिशुका उत्तरोत्तर प्रगतिका लेखा आयोजित है। 'शैशवांकन' मधुर स्मृतियों एवं उपयोगी तथ्योंके संरक्षणके लिए सर्वथा नया और प्रीतिकर उपहार है। अपने शिशुके लिए स्वयं बरतें और जो आपके अपने हैं उन्हें भेंट करें।

मूल्य १२.००

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी–५
विक्रय केन्द्र : ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• चाँद का मुँह टेढ़ा है : मुक्तिबोध

मुक्तिबोधकी कविताओंका प्रस्तुत संग्रह हिन्दी काव्यकी नयी प्रखरता, क्षमता और युग-बोधकी सचेष्टताका ही प्रयोग नहीं, नयी उपलब्धियोंका भी मानक है। ये कविताएँ इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण हैं कि इन सशक्त शब्द-रेखाओंमें आयी अपनी छविके यथार्थसे सारा समाज परिचित हो और उस यथार्थको पीड़ाके साथ उसके संकल्प-स्वरको भी ग्रहण करे। मूल्य ८.००

• अर्द्ध शती : बालकृष्ण राव

बालकृष्ण रावकी अनुपम कविताओंका संग्रह—भावपूर्ण और रस-भोगी कविताएँ। कविताओंकी विशेषता यही है कि न इनकी अनुभूतियोंमें कोई दुराव है न अभिव्यक्तिमें किसी प्रकारका उलझाव। काव्य-प्रेमियोंके लिए अनिवार्य रूपसे पठनीय। मूल्य ३.००

• कनुप्रिया : धर्मवीर भारती

प्रस्तुत कृतिका आविर्भाव साहित्य-लोककी एक विशिष्ट घटना है। इसमें जहाँ बहुमुखी प्रणयके विविध आयाम प्राणोंकी धारामें-से प्रस्फुटित होकर प्रकृतिके प्रतीकोंमें सार्थक तादात्म्य प्राप्त करते हैं, वहीं राधाके प्रणयको एक सर्वथा नयी दृष्टि और नया परिप्रेक्ष्य भी देते हैं।

मूल्य ३.००

भारतीय ज्ञानपीठ

विक्रय-केन्द्र : ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष चार : अंक दो
सितम्बर १९६५

पुस्तकालय
गुरुकुल कँगड़ी
*
११/८/६५

ज्ञानपीठ पत्रिका

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

लेखन-प्रकाशनकी अधुनातन
दिशा-प्रवृत्ति और उपलब्धि-परिचायिनी
मासिकी

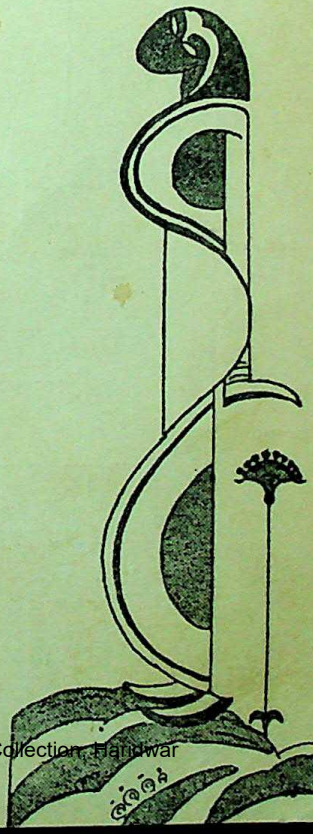

संग्रहणीय नये प्रकाशन

• नये प्रतिमान : पुराने निकष

...कान्त वर्माके चिन्तन और समीक्षात्मक लेख : जिनका ...य है नवलेखन - आजका साहित्य।

• अठारह सूरज के पौधे

...वक्षीका नया उपन्यास : बिलकुल नयी शैली – बिल- ...नया कथ्य। रोचक और पठनीय।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी
साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पत्रिका

वर्ष चार : अंक दो
सितम्बर १९६५

१. उद्घोष : साहित्यका विषय—आ० हजारीप्रसाद द्विवेदी २
२. आधुनिकताके सन्दर्भमें—लक्ष्मीकान्त वर्मा ३
३. सिंहलकी कहानियाँ—भदन्त आनन्द कौसल्यायन ७
४. आधुनिक मराठी कविता—डॉ० प्रभाकर माचवे ११
५. इतिहासकी घाटियोंसे—कृष्णाचार्य १५
६. ग्रामरस + रामरस = रामायन रस—विवेकीराय १८
७. युनेस्कोके जापानी प्रकाशन—महेन्द्र कुलश्रेष्ठ २१
८. प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर २३
९. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित २९
१०. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया ३४
११. एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार ४३
१२. हिन्दीकी डायरी—लक्ष्मीशंकर व्यास ४६
१३. भारतीबिम्ब : कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ ५०
१४. प्रकाशन जगत् : परिवेश और सूचनाएँ ५५
१५. समसामयिकी ५८
१६. पत्रमंच ६४

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन :: अगदीश

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन एवं वितरण कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
मूल्य : छह रुपये वार्षिक, पचपन पैसे प्रति, द्विवार्षिक : ग्यारह रुपये

समाज-शिक्षा विभाग, राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यका विषय

आदिम मनोवृत्तियाँ साहित्यका विषय नहीं
साहित्य वही है जो मनुष्यका हित-साधन करे

आ० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

इधर कुछ ऐसी हवा बही है कि हर सस्ती चीज़को साहित्यका वाहन माना जाने लगा है। इस प्रवृत्तिको वास्तविकताके ग़लत नामसे पुकारा जाने लगा है। तरह-तरहकी दलीलें देकर यह बतानेका प्रयत्न किया जा रहा है कि मनुष्यकी लालसोन्मुख वृत्तियाँ ही साहित्यके उपयुक्त वाहन हैं।

मुझे किसी मनोरागके विपक्ष या पक्षमें कुछ भी नहीं कहना है। मुझे सिर्फ़ इतना ही कहना है कि साहित्यके उत्कर्ष या अपकर्षके निर्णयकी एकमात्र कसौटी यही हो सकती है कि वह मनुष्यका हित-साधन करता है या नहीं। जिस बातके कहनेसे मनुष्य पशु-सामान्य धरातलसे ऊपर नहीं उठता, वह त्याज्य है। मैं उसीको सस्ती चीज़ कहता हूँ। सस्ती इसलिए कि उसके लिए किसी प्रकारके संयम या तपकी ज़रूरत नहीं होती।

धूलमें लोटना बहुत आसान है, परन्तु धूलमें लोटनेसे संसारका कोई बड़ा उपकार नहीं होता। मनुष्यमें बहुत-सी आदिम मनोवृत्तियाँ हैं जो ज़रा-सा सहारा पाते ही झनझना उठती हैं। अगर उनको ही साहित्य-साधनाका बड़ा आदर्श कहा जाने लगे तो उसे मानने और पालन करनेवालोंकी कमी नहीं रहेगी।

पुरानी सड़ी रूढ़ियोंका मैं पक्षपाती नहीं हूँ, परन्तु संयम और निष्ठा पुरानी रूढ़ियाँ नहीं हैं। वे मनुष्यके दीर्घ अभ्याससे उपलब्ध गुण हैं और दीर्घ अभ्याससे ही पाये जाते हैं। इनके प्रति विद्रोह प्रगति नहीं है। सत्य अपना पूरा मूल्य चाहता है। उसके साथ समझौता नहीं हो सकता। साहित्यके चरम सत्यको पानेके लिए भी उसका पूरा-पूरा मूल्य चुकाना ही समीचीन है।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिकताके सन्दर्भमें

आज नहीं तो कल इतिहास-मुक्त मानव-संकल्प
वास्तविक आधुनिकताको विकसित करनेमें
सहायक होगा

लक्ष्मीकान्त वर्मा

यह सत्य है कि आधुनिकताके तत्त्व जीवनमें एक थकी हुई, शिथिल सृष्टिके मृतप्राय संस्कारोंके सह-अस्तित्वमें विकसित हो रहे हैं फिर भी हम आधुनिकताकी धारणाको मात्र टोटके या रूढ़िके रूपमें नहीं ग्रहण कर सकते। एक प्रकारकी उलटी बुद्धि कभी-कभी यह तर्क प्रस्तुत करती है कि अमेरिकाके लिए भूदान यज्ञमें शामिल होना आधुनिक है और भारतका न्यूयॉर्कके स्काइ-स्क्रेपर्सके प्रति आकर्षित होना आधुनिक है। इसी सन्दर्भमें बीटनिक कल्टके अन्तर्गत काशीमें आकर अमेरिकोका गाँजा पीना और मणिकर्णिका घाटपर अघोरियोंके साथ रहना बड़ा आधुनिक लग सकता है, और कुछको न्यूयार्क और लेनिनग्राद-मॉस्को मोहित कर सकते हैं; किन्तु इन दोनोंमें आधुनिकता नहीं है क्योंकि आधुनिकता गुणात्मक बोध है और साथ ही वह आकार-मोह न होकर तत्त्व-अन्वेषणकी दृष्टि है!

आधुनिकताको जो लोग केवल नारेके रूपमें स्वीकार करते हैं वह भी विचारोंके कुत्सित होने और दिवालियेपनका परिचय देते हैं। क्योंकि आकारात्मक मोहमें समसामयिकताका केवल नकारात्मक मोह है, सार्थक दृष्टि नहीं है। इसके विरुद्ध आधुनिकता गुणात्मक बोध होनेके साथ-साथ नितान्त समसामयिकताके सन्दर्भमें एक सकारात्मक दृष्टि है। वह जहाँ स्वनियन्त्रित होती है वहीं सन्दर्भ-च्युत नहीं होती। आकारात्मक मोह सन्दर्भ-च्युत होता है—वह केवल माध्यम बननेकी निष्क्रिय प्रक्रिया है, जागरूक होकर सक्रिय होनेकी क्षमतासे वह सर्वथा विच्छिन्न होती है। आज भारतीय जीवनमें जो आधुनिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है वह केवल आकारात्मक मोहसे प्रेरित होकर विकसित हो रही है इसलिए वह क्षणके यथार्थको वहन करनेमें असमर्थ है। यह असमर्थता उसे सन्दर्भ-च्युत बना देती है। यह सन्दर्भ-च्युत स्थिति ही यह कारण है कि आज हमारे बीच आधुनिकता केवल बाह्य आकार बनकर रह गयी है और उसे अभीतक उस मानसिक दृष्टिका आधार नहीं मिल पाया है जो सम्पूर्ण जीवनको समग्रताके साथ देखनेके अतिरिक्त उसे सापेक्ष दृष्टि दे सके। मेरा अपना विचार है कि वास्तविक आधुनिक भावबोध उसी व्यक्तिको प्राप्त हो सकता है जो सतही लाक्षणिकतासे मुक्त होकर नितान्त निरपेक्ष सेक्युलर तत्त्वोंको जन्म देनेमें समर्थ होता है।

सबसे बड़ा व्यंग्य तो तब लगता है जब लोग आधुनिकताकी दृष्टिको भी टोटकेके स्तरपर बरतने लगते हैं और नितान्त समसामयिकताके सन्दर्भको उसके गम्भीर दायित्व-बोधसे पृथक् करके कुछ अनर्गल और अनावश्यक तत्त्वोंपर बल देने लगते हैं। एकरूपताको अधिक प्रश्रय देकर समझते हैं कि इसीसे आधुनिकताका दायित्व निभाया जा सकता है। सापेक्ष दृष्टि जब इस प्रकारकी मिथ्यावादितामें फँस जाती है तब क्षणके दायित्वकी अपेक्षा कुछ आरोपित तथ्य उसके महत्त्व और दायित्व दोनोंको खण्डित कर देते हैं।

कभी-कभी इतिहासकी ग़लत दृष्टि और उसका अनावश्यक आग्रह भी हमें खण्डित और झूठा बना देता है। इतिहासके प्रति भी इसीलिए जबतक एक समग्र दृष्टि नहीं बनेगी तबतक आधुनिकताका उचित बोध नहीं विकसित हो पायेगा। यही नहीं, कमसे कम मुझे तो यह दीख पड़ता है कि यदि आज मृतप्राय सृष्टिमें इतिहासका बोध मात्र टोटकेके स्तरपर होगा तो मानव-क्रियाशीलताका नियतिबद्ध होकर कुण्ठित और कुत्सित होना अवश्यम्भावी है। साम्राज्यवादियों और उपनिवेशवादियों-द्वारा इतिहासका जो नियतिवादी अर्थ पिछली दो शताब्दियोंसे सारे संसारकी गतिको रोके हुए था, और आज भी जो उसकी परिणति सारे संसारको दो खण्डोंमें बाँटे हुए है वह इतिहासकी इसी अनर्गलताकी उपज है। मानव-नियतिको सुधारनेका जो नया रूप बनाया जा रहा है – चाहे वह विश्व राष्ट्रसंघके रूपमें हो या उसमें और कोई रूप हो – उसमें अब भी उस नियतिवादी आग्रहका बोध शेष है। इस अर्थमें यदि हम देखें तो आज इतिहासकी जो कुत्सित परिणति हुई है वह न तो आधुनिक है और न तो विवेकपूर्ण संगतिसे सम्पन्न ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सही है कि आधुनिकतामें एक ऐतिहासिक क्रम और इतिहास-बोधकी ग्राह्यता परिलक्षित है, किन्तु इतिहासका लाक्षणिक रूप आज सम्पूर्ण मानवताको विषाक्त जर्जरताकी ओर ही ले जा रहा है। इतिहास एक आत्मग्राही दृष्टि भी है और एक स्मृति-विकृति भी। विकृत स्मृतिसे घायल मानव-मस्तिष्कमें केवल कालका आतंक रहता है, उसका प्रवाह नहीं। स्मृतियोंसे मुक्त जीवन शायद मानव-सभ्यताकी और मानवीय-चेतनाकी समस्त भाव-स्थितियोंकी मूर्त सजीवताका द्योतक है। स्मृति जब अभिप्राय रूपमें किसी भी चेतनापर छा जाती है तो समस्त चिन्तन-शक्ति रुग्ण हो जाती है। इतिहासके प्रति जो लोग अनावश्यक रूपमें मोहजनित और आग्रहशील हैं वे शायद इतिहास और ऐतिहासिकताका उचित अर्थ नहीं समझते। ऐतिहासिकताकी यह माँग है कि हम इतिहासकी वर्तमान बाह्य परिणतिसे मुक्त होकर भी कुछ सोचें। क्या मानव-इतिहास स्वयं आज उस स्थितिपर नहीं पहुँच चुका है जहाँ हमारे सारे काल-विभाजन झूठे पड़ गये हैं? ऐतिहासिकता, परम्परा और कर्मकाण्डको एक साथ लेकर न तो हम जीवनके प्रति न्याय कर पाते हैं और न मूल्योंके विकासमें ही अग्रसर हो पाते हैं क्योंकि इतिहास एक प्रकारकी पूर्व-निश्चयवादी प्रवृत्तिको प्रश्रय देता है। इतिहासके माध्यमसे मार्क्स उसी निष्कर्षपर पहुँचता है जिस निष्कर्षपर नीत्शे पहुँचा था।

प्रश्न उठता है – क्या इतिहासको वास्तवमें कालका मापदण्ड कहा जा सकता है? यदि इतिहासको मात्र घटनाओंका पुंज मान लिया जाये तो क्या यह सत्य नहीं होगा कि जब-जब इतिहाससे पृथक् कोई भी मानव-निश्चय किसी भी दिशामें आगे बढ़ा है तो कालका एक चरण खोखला बन गया है और दूसरा जीवन्त बनकर उभरा है! हमारी दृष्टिका भ्रम यह रहा है कि जो कुछ भी खोखला बनकर छूट गया हम उसको भी महत्त्वपूर्ण मान बैठे। यही नहीं हुआ, उसके सन्दर्भमें ही विकासको भी मापनेका प्रयास किया गया है। इतिहासके अतिरिक्त धर्मने भी मानव-सम्भावनाओंको निश्चयवादी प्रवृत्तिसे मुक्त नहीं किया है। चाहे वह हिन्दुओंका पुनर्जन्मवाद हो अथवा कर्मवाद, चाहे वह 'डे ऑव जजमेण्ट'का रूप हो – प्रायः सभी पद्धतियोंमें कालके मापदण्डकी विधि एक ही प्रकारकी है। मानव-मुक्तिकी गाथा, यदि वास्तवमें देखी जाये, तो इतिहासकी इस कुत्सित स्मृतिके शिकंजेमें कसकर टूटती रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज समस्त मानव-सभ्यताके समक्ष सबसे बड़ी समस्या मानव-मुक्तिकी है। इस मुक्तिका अर्थ ही नहीं बन पायेगा यदि हम सम्पूर्ण मानव-जातिको केवल इतिहासका उच्छिष्ट मानकर चलेंगे। इसीका परिणाम है परम्पराके प्रति आग्रह। जब हम परम्पराकी बात करते हैं तो यह मानकर चलते हैं कि हम इतिहासके प्रति आभारी हैं। इतिहासके प्रति आभारी होनेका अर्थ है कि जो कुछ हमने सीखा है उसे भुलानेके लिए हम प्रस्तुत नहीं हैं। इतिहास जब एक कृत्रिम स्मृतिके रूपमें काम करता है तो वह ऐसी परम्पराका आश्रय लेता है जो 'सीखे' हुए के प्रति आग्रहशील है। किन्तु मुक्तिका अर्थ होता है 'स्मृति मुक्ति' – 'भुलानेकी क्षमता'। मानव-मुक्तिकी कल्पना जबतक इन दो सन्दर्भोंमें रखकर नहीं देखी जायेगी तबतक इतिहासका विष और ऐतिहासिक पद्धतिकी रूढ़िवादिता इसी प्रकार मानव-मुक्तिकी कामनाको ग्रसित करती रहेगी। सभ्यता विकसित तभी होती है जब हममें 'सीखे' हुए को 'भुलाने'की क्षमताके साथ-साथ एक आदिम जिज्ञासाके माध्यमसे समस्त संवेदनशील स्थितियोंको देखने और समझनेकी क्षमता, बिना किसी पूर्वग्रहके, विद्यमान होती है। आधुनिकताके सन्दर्भमें जब हम 'सभ्यता'का विश्लेषण करते हैं तो हमारे सामने जो भी 'मानव-मुक्ति'की कल्पना विद्यमान होती है उसमें उपर्युक्त दोनों तत्व अनिवार्य मालूम पड़ते हैं।

प्रस्तुत सन्दर्भमें देखनेसे आधुनिकता मूलतः गुणात्मक बोध है। नितान्त समसामयिकताका बोध, क्षणके यथार्थके प्रति दायित्व, आत्मनिश्चयका दायित्व, व्यक्तिकी पारस्परिक आत्म-निष्ठाके प्रति आस्था, विवेककी संगति और व्यक्ति-स्वातन्त्र्यके सह-सम्बन्धको विकसित करनेकी क्रियाशीलतामें ही आधुनिकता परिलक्षित होगी। कोई भी इतिहास मानव-प्रज्ञासे बड़ा नहीं है, कोई भी परम्परा मानव-चेष्टासे बड़ी नहीं हो सकती। जो सापेक्ष है, विवेक-संगत है, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य और व्यक्ति-निष्ठाके अनुकूल है वह परम्परा-निष्ठ होकर नहीं रहेगा। वह स्मृतिके अनावश्यक तत्त्वोंमें नहीं उलझेगा। वह समसामयिकताके बोधसे द्रवित हो सकता है, क्रियाशील हो सकता है। आधुनिकताकी सबसे बड़ी माँग कभी-न-कभी इस इतिहास-मुक्त मानव-चेष्टासे सम्बद्ध होगी। वस्तुतः आज नहीं तो कल इतिहास-मुक्त मानव-संकल्प वास्तविक आधुनिकताको विकसित करनेमें सहायक होगा।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहलकी कहानियाँ

हम हिन्दीवालोंकी एक बड़ी कमी है कि
हमने अपने पड़ोसी देशोंके साहित्यकी ओर या तो देखा ही नहीं
या कभी देखा तो अँगरेजीके झरोखेसे

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

जैसे यह कह सकना कठिन है कि पहला कवि कौन था और उसने पहले-पहल कौन-सा गीत गाया, उसी तरह यह भी बता सकना असम्भव है कि पहला कहानीकार कौन था, और उसने सर्वप्रथम कौन-सी कहानी रची ? सम्भावना इसीकी है कि जो पहला कवि रहा होगा, वही पहला गीतकार भी, और जो पहला कवि तथा गीतकार रहा होगा, वही पहला कहानीकार भी। क्योंकि अपने शैशवकालमें मानव-जीवन इस प्रकार विभक्त नहीं था, जैसे आज है। आज तो मानव-जीवनका इतना अधिक शव-परीक्षण हो गया है कि बेचारे गरीबके जीवनका तो कहीं पता नहीं, शेष रह गया है जीवन-शून्य शव ! विश्वके तो क्या, किसी भी देशके और किसी भी भाषाके प्रथम कथाकारका नामोल्लेख करना असम्भव है। इसलिए सिंहल द्वीपका प्रथम कथाकार भले ही कोई रहा हो, किन्तु सिंहलके प्राचीन कथाकार वही रहे हैं, जिन्होंने भारतीय जातक कथाओंको तथा धम्मपद-अट्ठकथाओंको, सिंहल जनताके विनोदार्थ ही नहीं उनका इहलौकिक तथा पारलौकिक हितसाधन करनेके लिए, द्वीप-भाषामें सुनाया ही नहीं, लिपिबद्ध भी किया। जातककथा सिंहल तथा भारत दोनोंका प्राचीन विशालतम जन-कथा-संग्रह है।

कहानी क्यों कही या लिखी जाती रही है, अथवा क्यों कही या लिखी जानी चाहिए ? अवान्तर भेदोंको भुला दिया जाये, तो भी कहानीके कहने या लिखनेके तीन उद्देश्य हो सकते हैं—मनोरंजन, यथार्थ चित्रण, तथा नीतिपरक प्रेरणा। जिनका 'कला पक्ष' प्रबल है, उनका कहना है कि कहानी ऐसी कही जानी चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जो आदमीको ऐसे लोकमें पहुँचा दे कि आदमी इस लोकको भूल ही जाये। आन्तरिक जगत् तथा बाह्य संसारकी यथार्थ अभिव्यक्तिका प्रयास करनेवाली रचनाओंको वे 'फ़ोटोग्रैफ़ी' नाम देकर उनका तिरस्कार करते हैं।

जिनका 'यथार्थ-पक्ष' प्रबल है वे कहते हैं कि ऐसी रचनाएँ जो यथार्थकी उपेक्षा कर आदमीको काल्पनिक-लोककी सैर कराती हैं, उस सुराके समान हैं, जो पीनेवालेको थोड़ी देरके लिए 'स्मृति-शून्य' बना देती है। इनका मूल्य बच्चों-के दिल बहलानेवाले खेलोंसे अधिक कुछ नहीं। आयु प्राप्त होनेपर भी मानसिक विकासको दृष्टिसे जो अभी बाल ही हैं, वे ही भले उनके कहने-सुननेमें अपना काल-यापन करें, प्रौढ़ोंके ये योग्य नहीं ही हैं।

जो तीसरे पक्षके पक्षपाती हैं, वे हर निरुद्देश्य रचनाको दो कौड़ीकी समझते हैं। और 'उद्देश्य'से उनका मतलब किसीका मनोरंजन करना या यथार्थका चित्रण करना नहीं ही होता, बल्कि अपने श्रोता या पाठककी नैतिक चेतनाको जाग्रत कर, उसका मार्ग-प्रदर्शन करना होता है। इस पक्षके लोगोंका कहना है कि रचना कितनी भी कलापूर्ण क्यों न हो, उसमें कितना भी यथार्थ-चित्रण क्यों न हुआ हो, यदि वह किसीकी सद्वृत्तियोंको उभारनेमें सहायक नहीं होती, तो वह निकम्मी है।

हमारी अपनी मान्यता है कि भोजन भी हो, अच्छी तरह परोसा गया भी हो और स्वास्थ्यकर भी हो। भोजन ही न हो तो परोसा क्या जायेगा? अच्छी तरह परोसा न गया हो तो खानेवालेको अच्छा न लगेगा। और, भोजन भी हुआ तथा खानेवालेको अच्छा भी लगा, लेकिन स्वास्थ्यप्रद न हुआ तो वह भी किस कामका? क्या बुरा है यदि हर रचना इसी कसौटीपर जाँची जाये कि वह 'सत्य' भी हो, 'सुन्दर' भी हो और 'शिव' भी हो।

सिंहलवासियोंकी कथा-परम्पराकी जानकारी हमें सिंहल-द्वीपके प्राचीन साहित्यके अवलोकनसे ही प्राप्त हो सकती है। शुद्ध देशी कथाओंका अध्ययन करनेके लिए अमावतुर, बुत-सरण, दह्म-सरण, संग-सरण, सद्धर्मरत्नावली आदि सद्ग्रन्थोंका पारायण अनिवार्य है। यद्यपि समस्त जातकका सिंहल अनुवाद १४वीं शताब्दीमें हुआ है, लेकिन सिंहलके कविवर ११वीं शताब्दीसे ही अपने काव्योंमें उन कथाओंका उपयोग करते चले आये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४वीं शताब्दीमें सिंहल जातक कथाकी रचनाके बाद सिंहल भाषाको, कला-शिल्पको नाना प्रकारकी प्रतिकूल परिस्थितियोंमें-से गुज़रना पड़ा। सिंहल जातिकी संस्कृति और सभ्यताको जब इतना नीच-ऊँच देखना पड़ा, तब भी उसने अपने कथा-वाङ्मयको जो नष्ट नहीं होने दिया। उसका कारण है सिंहल जातिकी अन्य जातियोंके समान ही 'कथा-कहानी' कहने-सुननेमें आनन्द लेनेकी अभिरुचि।

कुछ लोगोंका कहना है कि वर्तमान सिंहल लघु-कथाएँ सिंहल द्वीपको विदेशोंकी ही देन हैं। यदि इसका यह अर्थ लिया जाये कि वे विदेशी प्रभावोंसे प्रभावित हैं, तो यह कथन बहुत कुछ मान्य हो सकता है, अन्यथा नहीं। सिंहल लघु-कथाएँ भी किसी भी दूसरे देशकी लघु-कथाओंकी तरह सिंहल मिट्टी-पानीकी ही उपज हैं। यह दूसरी बात है कि बहुत-सी कथाओंपर विदेशी क़लम लगी हुई है। अपेक्षाकृत पुरानी कहानियाँ धार्मिक कथा-कलापोंका ही आश्रय लेकर रची गयी थीं। नयी कहानियोंकी पृष्ठभूमि सर्वथा नवीन है। यह बात कुछ सिंहल कहानियोंकी ही विशेषता नहीं है। अंशतः हिन्दी कहानियोंके बारेमें भी यही कहा जा सकता है।

नये लघु-कथाकारोंके कथानक, कथा कहनेका ढंग, कहानियोंका शिल्प, जो पुराने कथाकारोंसे विशिष्ट रहता है, उसका कारण विदेशी प्रभाव ही है। नया कथाकार किसी भी कथानकको एक ही दृष्टिसे ग्रहण न कर, जहाँ हम नहीं पहुँच सकते, हमें वहाँ पहुँचाने, जिस अनुभूतिका हमें एहसास नहीं होता उसका एहसास करानेका प्रयास करता है। ऐसा करनेमें उसका उद्देश्य अपने पाठकोंको जीवनकी विस्तृत और गहरी अनुभूति कराना ही प्रतीत होता है। वह उसमें सफल होता है या नहीं, और यदि सफल होता है तो कितनी मात्रामें, यह दूसरा प्रश्न है। आधुनिक सिंहल कथाकारोंने जिन-जिन बाह्य प्रभावोंको अपनेमें आत्मसात् कर लिया है उन्हें तीन अंशोंमें विभक्त किया जा सकता है—१. फ़्रान्सीसी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, २. अमेरिकी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, ३. रूसी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ।

२०वीं शतीकी सिंहल लघु-कथाओंने जो इतनी तीव्र गतिसे अपना विकास किया, उसमें उन्हें विशेष सहायता मिली है फ़्रान्सीसी तथा अमेरिकी लेखकोंकी निरन्तर 'उत्सुकता बनाये रखनेवाली' कहानियोंसे। रूसी कहानियोंमें इतने वेगसे उत्सुकताको जाग्रत करनेकी प्रवृत्ति नहीं रहती, तो भी पिछले दस वर्षोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सिंहल साहित्यने जिन कारणोंसे सामान्य प्रगति की है, उन्हीं कारणोंसे लघु-कथाओंमें भी काफ़ी विकास हुआ है। पुरानी सिंहल कथाओंकी परम्परापर रूसी कथाओंका पैवन्द लगनेसे ही उनका वर्तमान स्वरूप स्थिर हुआ है।

सिंहलके उपन्यासोंका प्रतिपाद्य विषय कितना ही महत्त्वपूर्ण हो, उसकी अभिव्यक्ति उतनी विशिष्ट नहीं प्रतीत होती। लेकिन लघु-कथाओंकी स्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। उनके माध्यमसे जो बात कही जाती है, उसकी अपेक्षा जिस ढंगसे कही जाती है, वह ढंग ही महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। तो भी चाहे उपन्यास हों और चाहे लघु-कथाएँ हों उनका महत्त्व उनके माध्यमसे कही गयी बातमें ही है। लघु-कथाकारोंके लिए उपन्यासकारोंकी भाँति नाना चरित्रोंको लेकर एक लम्बा ताना-बाना बुननेकी गुंजाइश नहीं रहती। इसलिए वह जीवन-की किसी एक घटनाको अथवा किसी एक ही मानसिक उलझन या ग्रन्थिको अपनी कथाका आधार बनाता है। लेकिन घटना भले ही छोटी या मामूली हो, उसे अपनी अनुभूति तो अपनी उस कथाके माध्यमसे पाठकको हृदयंगम करानी ही पड़ती है। यदि ऐसा नहीं होता तो वह लघु-कथा न होकर किसी समाचार-पत्रकी रिपोर्ट अथवा किसी उपदेशकका उपदेश मात्र सिद्ध होती है। इसीलिए आजका सिंहल लघु-कथाका रचयिता अपने लिए किसी ऐसे ही कथानकको चुनता है, जो किसी विशिष्ट विषयके चौगिर्द ही चक्कर काटता है। इसीके फलस्वरूप आज सिंहल-कथाओंमें भावना-प्रधान कथाओंकी भी प्रचुरता है।

सिंहल लघु-कथाओं और हिन्दी लघु-कथाओंकी तुलनात्मक समीक्षा करना तो सहज कार्य नहीं, लेकिन इतना आसानीसे कहा जा सकता है कि न तो हिन्दी कथाओंका ही सिंहल लघु-कथाओंपर कोई विशेष प्रभाव पड़ा है और न सिंहल कथाओंका हिन्दी कथाओंपर। उसका सीधा और सरल कारण है कि न हिन्दीके कथाकार सिंहलके कथाकारों अथवा उनकी रचनाओंसे सीधा सम्पर्क स्थापित कर पाये हैं और न सिंहलके लघु-कथाकार हिन्दीके कथाकारों तथा उनकी रचनाओं-से। हम 'हिन्दीवालों'की यह एक बड़ी कमी है कि हमने अपने पड़ोसी देशों—सिंहल, स्याम, बर्मा, मलय, लाओ, वियतनाम, कम्बोडिया—के साहित्यकी ओर या तो झाँका ही नहीं, या कभी उधर देखा भी तो केवल अँगरेज़ीके झरोखेसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक मराठी कविता

मराठी कविताकी आधुनिकतम प्रवृत्तियों और
उपलब्धियोंकी एक प्रस्तुति

डॉ० प्रभाकर माचवे

पहले कुछ कवियोंके बारेमें मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ जो उनके समझनेमें अधिक सहायक होगा, साथ ही मराठी कविताकी प्रवृत्तियोंके बारेमें भी। कवियोंमें मैं केवल उनके बारेमें कहना चाहता हूँ जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूपसे विशेष जानता रहा, जिनकी सब प्रकाशित रचनाएँ मैंने पढ़ी हैं, और जिनके सम्बन्धमें यह नहीं कहा जा सकता कि अभी इनमें विकास होना बाक़ी है और अभी निर्णयात्मक रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता।

इन कवियोंको मैं तीन स्तबकोंमें बाँटना चाहता हूँ – एक है नवकाव्यवाले आधुनिकतावादियोंका जिनमें मर्ढेकर, रेगे, बिन्दा करन्दीकर और मंगेश पाडगाँवकर आते हैं और जिनकी सचेतन आधुनिकताको ही बादमें दिलीप पुरुषोत्तम चित्रे, सदानन्द रेगे, आरती प्रभु आदि चला रहे हैं या आगे बढ़ा रहे हैं।

दूसरा दल है कविताके सामाजिक आशय और उत्तरदायित्वको महत्त्व देनेवालोंका। इसमें आ० र० देशपाण्डे अनिल, कुसुमाग्रज, कान्त, बसन्त बापट, शरदचन्द्र मुक्तिबोध आदि आते हैं। इसी दलमें मनमोहन और अमरशेख और कई 'लोक शाहीर' आते हैं। यह नहीं कि पहले प्रयोगवादी दलकी छाप दूसरेपर न पड़ी हो या प्रयोगवादियोंने इन सामाजिक आशयप्रधान प्रगतिवादियोंसे कुछ ग्रहण न किया हो। बल्कि कुछ समय तक दोनों एक-दूसरेसे परस्पर अतिव्याप्त (ओवर-लैपिंग) जान पड़ते हैं।

तीसरा एकान्तिक दल गीतकार कवियोंका है जिसे 'ताम्बे स्कूल' भी कहा जाता रहा है। ब० भ० बोरकर, ग० दि० माडगूलकर ('गीत रामायण'के लेखक, जिसे सुनकर विनोबा भावे भी अश्रुसिक्त हो गये थे और चीनी आक्रमणके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद 'जिकू अथवा मँरू' वाली प्रसिद्ध कविताके लेखक) मधुकर केचे (आधुनिक अभंग कविता लेखक) और कई कवयित्रियाँ संजीवनी, इन्दिरा, पद्मा आदिकी कविताकी कसीदाकारी नाज़ुक भावगीतात्मक है।

यह कहना ग़लत होगा कि मराठी कवितामें अमुक एक प्रवृत्ति ही अमुक काल-खण्डमें एक-छत्र राज्य करती रही, बल्कि ये तीनों पक्ष बौद्धिकता, कर्मयोग-परक और भावुकताके बराबर चलते रहे। यह ज़रूर कहा जा सकता है कि सम्प्रति आधुनिकतावादी, तथाकथित बौद्धिकता-प्रधान और पश्चिमके नवीनतम काव्य-प्रयोग शिल्पको आत्मसात् करनेकी ज़िद (मराठीमें ज़िदका मतलब है आग्रह) रखनेवाली कविता ही प्रधान होती जा रही है। साहित्यिक पत्रिकाएँ मराठीमें बहुत कम हैं – अकेली 'सत्यकथा' या 'आलोचना' (जिसमें कविता नहीं छपती) अपवाद हैं। छन्द, शब्द उसी निर्वाणके रास्ते चले गये जिसपर 'अभिरुचि', 'प्रतिभा', या 'ज्योत्स्ना' गये। अतः कोई मार्ग नहीं है कि कविताका प्रकाशन प्रतिमास उचित रूपसे पढ़नेको मिले।

मुझे याद आया कि मर्ढेकरकी कविताओंके उनके जीवन-कालमें मैंने 'आजकल'में ('ही एक मूँगी' – हम सब चीटियाँ) और नयी कविताके प्रथमांकमें और अन्यत्र जो प्रथम हिन्दी अनुवाद किये थे, उसपर उन्होंने ऑल इण्डिया रेडियोकी इमारतमें कहा था – "मेरी कविताका अनुवाद असम्भव है। उसमें अन्तर्निहित सन्दर्भोंका – जैसे तुकारामकी कविताका इस नयी कविता १– में सन्दर्भ जबतक हिन्दी-भाषी पाठक न जानें तबतक रसग्रहण असम्भव होगा। इसीलिए मैं मराठी और अँगरेज़ीमें अलग-अलग लिखता हूँ, कभी अपनी कविताओंका एक भाषासे दूसरी भाषामें अनुवाद करनेका यत्न नहीं करता।" मर्ढेकर और तत्सम आधुनिकतावादी कवियोंकी रचनाका बहुत बड़ा भाग भाषा-विषयक उनके प्रयोगपर निर्भर करता है। उसकी पूरी अन्तर्कथाएँ और अर्थछटाएं (न्युएन्सेज़) अन्य भाषामें उपलब्ध कराना प्रायः असम्भव होता है। अनिलकुमार ने भी मर्ढेकरकी मराठी कविताओंका हिन्दी अनुवाद किया है और कुछ अंशोंमें (ही) सफलता मिली है। मेरा तो यह भी मत है कि आधुनिकतावादी कविके हर शब्द, उसकी योजना, छन्द, यहाँतक कि पंक्ति तोड़ने और लिखनेकी पद्धतिमें भी कोई सचेतन अर्थ होता है। पॉल वालरी नामक फ्रेंच कविने कहा था कि "मैं जब कविता लिखता हूँ तो एक सर्जन (शल्यचिकित्सक) की तरह आगे बढ़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ, जो कि अपने हाथ स्टेरलाइज़ (अशुद्ध कीटाणुओंसे मुक्त होनेके लिए साफ़ धोना) करता है और जिसपर काम करना हो उस क्षेत्रको तैयार करता हूँ··· मानसिक स्थितिको स्वच्छ बनाकर।" मर्ढेकर बहुत-कुछ ऐसा ही करते थे। उनमें शब्दोंपर अद्भुत सामर्थ्य और उनकी मितव्ययितासे विलक्षण स्फोटक प्रभाव पैदा करनेकी क्षमता थी। विन्दा करन्दीकरमें वह शक्ति कुछ मात्रामें है। और उनकी पद्धतिके कवि प्रयोगशील अवस्थामें हैं। पु० शि० रेगे अपवादमें हैं। उन्होंने कलात्मक ईमान (मराठीमें अर्थ—शुद्ध कलापरक प्रामाणिकता) रखनेका पूरा प्रयत्न किया है। मितव्ययितामें वे मर्ढेकरसे भी एक पग आगे बढ़ते हैं और प्रयोगशीलता उनका सहज स्वभाव बन गयी है। मर्ढेकरकी तरह वह एक प्रतिज्ञा नहीं जान पड़ती।

'शिशिरागम' पर मैंने 'ज्योत्सना' में लिखा था। विलायतसे लौटनेपर मर्ढेकरसे सन् '३८ में पहली मुलाक़ात हुई, उन्होंने वह संग्रह मुझे भेजा था। मेरी आलोचनासे वे प्रसन्न हुए थे। वही समय था जब युरॅपमें युद्धके नगाड़े बज रहे थे और भारतके किनारे महायुद्धकी ज्वालाएँ आकर हमारे देशके आँचलको झुलसा रही थीं। उस समय हमारे कवियोंकी प्रतिक्रियाएँ भिन्न थीं : मर्ढेकरने लिखा – "जो भी उठ खड़ा होता है, वह नेता बन जाता है। लम्बी-चौड़ी बातें करता है। हुल्लड़का नियन्ता कोई नहीं है। शब्दशूर बाचावीर। हमारे बड़े-बड़े नेता हैं। जिन्होंने प्रेतोंका बाज़ार बुलाया है। धर्मको नीलाम लगा दिया। सत्ताकी हविस बुरक़ा पहने घूम रही है। वहाँ, तुम्हें-हमें मिस्टर, सिर्फ़ मौत है। जो-जो नेता कहलाते हैं, वक़्त आनेपर वे दुम दबाकर भाग जाते हैं। पीठमें छुरा, छातीमें छुरा। तुम्हारे और हमारे।" मर्ढेकरकी कवितामें बंगालके अकाल, हिन्दू-मुसलिम दंगे आदिकी, हिंसाको बढ़ावा देनेवालोंके प्रति जुगुप्सा आदि भाव बहुत स्पष्ट हैं, साथ ही यन्त्रयुगकी बढ़ती हुई यन्त्रीकरण-वाली प्रवृत्तिका भी विरोध है। मर्ढेकर और रेगेकी कविता राजनीतिसे असम्पृक्त रही।

गत महायुद्धमें भारतीय बुद्धिजीवियोंमें राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयताके विरोधका और उससे भी बढ़कर मानवीय मूल्योंके संकटका एहसास तीव्र हो गया था। फ़ासिस्टवाद विरोधी साम्यवादी-रायवादी पक्ष राजनीतिमें थे, काँग्रेस और समाजवादी पक्ष 'दिल्ली छोड़ो' और '४२ के स्वतन्त्रता-संग्राममें विरत थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गान्धी वैयक्तिक सत्याग्रह-द्वारा हिंसाके विरोधी थे। बोरकरको छोड़कर (और वे भी पूर्णतया गान्धीवादी नहीं हैं) कोई गान्धीवादी कवि महाराष्ट्रमें नहीं हुआ। साने गुरुजी, कुसुमाग्रज, वा० रा० कान्त आदि समाजवादी और राष्ट्रीय संग्राममें पूरी तरह डूबे थे। उन्हें 'स्थण्डिलवादी' और अग्नि-सम्प्रदायके कवि कहा गया। साम्यवादी या अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी विचारोंकी तरफ़ झुके हुए कवियोंमें अनिल, विन्दा करन्दीकर, शरच्चन्द्र मुक्तिबोध आदि थे। अनिलकी 'निर्वासित चिनी मुलास' ऐसी ही एक उस समय प्रसिद्ध कविता थी। परन्तु क्षण-भर ऐसा बुद्धि-भेद कवियोंकी विचारधाराओंमें उस समय जान पड़नेपर भी, स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद पुनः शुद्ध साहित्य-मूल्य या विशुद्ध कवितापर आग्रह बढ़ने लगा। और आज कुछ प्रचारात्मक गीत-लेखक छोड़ दें तो किसी मराठी कविकी रचनाओंको विशिष्ट सामाजिक, राजनैतिक, विचारधारासे लेबिल नहीं किया जा सकता। मराठी कविता ऐसे वादके साँचे और चौखटे कभीकी पीछे छोड़ आयी।

तो फिर बचे शुद्ध मुक्तक। क्योंकि 'रवि किरण मण्डल' वालोंके कथा-प्रधान खण्डकाव्योंको छोड़ इधर गये पच्चीस वर्षोंमें मराठीमें किसीने महाकाव्य या खण्डकाव्य नहीं लिखा। 'भग्नमूर्ति' (मेरा अनुवाद अनिलके दीर्घ विश्लेषणात्मक मुक्त छन्द काव्यका साहित्य अकादेमीसे छपा है। मूल लेखन वर्ष १९४०) और 'विश्वमानव' (ना० ग० जोशी) के सिवा कोई उल्लेखनीय दीर्घकृति नहीं। मुक्तकोंमें प्रगीत और मुक्त छन्दात्मक (क्षणकी मनःस्थितिको चित्रित करनेवाले, या विचारप्रधान, 'रिफ़्लेक्टिव') अधिक हैं। यहाँ आकर कविता-सम्बन्धी अभिरुचियोंकी विभिन्नता बढ़ जाती है और एक समान भावसे साधारणीकृत मानदण्ड सम्भव नहीं रहता। गीत-पद्धतिने जानपद-गीत और नवगीतके रूप लिये, पर वह अब छीजने लगी है।

अनुभूतिके प्रति प्रतिश्रुति (कमिटमेण्ट) और अभिव्यंजनाके प्रति सतर्कता, सचेतनता – यही दो महत्त्वपूर्ण प्रश्न कविताके मूल्यांकनमें बचे रहते हैं। सामाजिक सत्य या यथार्थके प्रति कविकी जागरूकता एक आवश्यक शर्त नहीं रहती – कविता अधिक अमूर्त बनती जाती है: दिलीप चित्रेके लिए गुरुदत्त सिने-कलाकारकी मौत एक निमित्त हो सकती है, विन्दा करन्दीकरके लिए 'वज्रसूक्त'-में क़वायद करनेवाले लाख कंकाल। पर कवि उस सामाजिक यथार्थके बिन्दुसे आगे बढ़ता है।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहासकी घाटियोंसे

हिन्दीके आदि-मुद्रण युगमें पुस्तकें कितनी छपती थीं
किन अपेक्षाओंसे प्रेरित हो पुस्तकोंकी मुद्रण-संख्याएँ बनती थीं
मुद्रण-इतिहासके कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

कृष्णाचार्य

हिन्दी भाषा और नागरी लिपिमें कोई पुस्तक सम्भवतः १८०२ से पहले नहीं छपी। आधुनिक मुद्रण-कलाकी जन्मभूमि योरॅपमें छपाईका काम १४५० ई० के लगभग आरम्भ होकर १५०० ई० के आसपास अपना बाल्यकाल पूरा कर चुका था। मुद्रण-कालके क्षेत्रमें इस आरम्भिक अवस्थाको संपालन युग (इंक्युनाब्युला पीरीयड) नाम दिया गया है। इस समय टाइप, काग़ज़, स्याही और छापनेवाली मशीन भी प्रायः एक ही व्यक्ति या एक ही निर्माण-केन्द्रसे बनी। दूसरे शब्दोंमें, हम मुद्रणके इस युगको सृजनात्मक युग भी कह सकते हैं। मुद्रण-कला अपनी आरम्भिक अवस्थामें एक ही व्यक्तिकी लगन, कल्पनाशीलता और प्रयोग-क्षमतापर निर्भर थी। इस दृष्टिसे मुद्रण-कलाके संपालन-युगका विशेष महत्त्व है।

अपने देशमें संपालन युगकी सृजनात्मक शक्ति प्रधान रूपसे टाइप-निर्माणके प्रयत्नोंसे व्यक्त हुई। श्रीरामपुर प्रेस-द्वारा ही भारतमें संपालन युगका श्रीगणेश हुआ और यह परम्परा ही आगे बढ़ी। किन्तु बादमें नागरीके बम्बइया टाइप ही हिन्दी प्रदेशमें अधिक लोकप्रिय हुए।

संपालन युगमें पुस्तकें कितनी छपती थीं? किन आवश्यकताओंसे प्रेरित होकर मुद्रित होनेवाली पुस्तकोंकी मुद्रण-संख्याएँ निर्धारित होती थीं? सांख्यकीय अध्ययनसे मुद्रक-पाठक आदिके स्तर बाज़ार-माँग आदि उपयोगी तत्त्वोंपर प्रकाश पड़ता है। योरॅपमें १५वीं शतीके संपालन युगमें पुस्तकोंकी प्रायः २००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियाँ छपती थीं। केवल विशेष कारणोंसे अधिक प्रतियाँ छपनेके विवरण मिलते हैं। हिन्दी संपालन युगकी पुस्तकोंपर विशेषकर संस्कृत प्रेसकी पुस्तकों-पर मुद्रण-संख्या नहीं मिलती है। किन्तु फ़ोर्ट विलियम कॉलेजके विवरणों और श्रीरामपुर प्रेसके वार्षिक अनुवाद विवरणोंमें मुद्रित प्रतियोंकी संख्याओंका उल्लेख है। बादकी, मिशन युग (१८२२-१८४४) की, पाठ्य-पुस्तक क्रममें छपनेपाली पुस्तकोंपर कहीं-कहीं मुद्रण-संख्या मिल जाती है।

१८०२ के पूर्व हिन्दीकी किसी मुद्रित पुस्तकका पता नहीं लगा है। इस वर्ष केवल कलकत्ताके तीन प्रेसोंसे हिन्दीकी पुस्तकें सम्भवतः पहली बार छपीं। १८०२ और १८०३ के बीच अख़लाक़ए-हिन्दी, बैताल पचीसी, मिस्कीनका मर्सिया, माधोनल, सकुन्तला नाटक, और सिंहासन बत्तीसी (मर्सियाको छोड़ प्रायः सब पुस्तकें अधूरी छपीं) का प्रकाशन हुआ था। विवरणोंसे ज्ञात होता है कि ये पुस्तकें पाँच-पाँच सौकी संख्यामें छापी गयी थीं। प्रत्येक पुस्तकके छापनेके पीछे दो प्रकारकी प्रवृत्तियाँ काम करती थीं: पहली आशा यह रहती थी कि कुछ प्रतियाँ एक मुश्त कॉलेज ख़रीदेगा। फ़ोर्ट विलियम कॉलेज लगभग सौ प्रतियाँ ख़रीदता भी था, और कभी-कभी सम्पूर्ण प्रतियोंको लागत मूल्य देकर भी ख़रीद लेता था। उर्दू, हिन्दीकी पुस्तकें प्रायः पाँच सौ ही छपती थीं। १७ जन-वरी १८१२ को माँगे गये कॉलेजके विवरणोंसे ज्ञात होता है कि राजनीति, बिहारी सतसई, प्रेमसागर, प्रिन्सिपिल्स ऑव ब्रजभाषा ग्रामर आदिकी सौ-सौ प्रतियाँ ख़रीदी गयीं। मिस्कीनका मर्सिया पाँच सौकी संख्यामें छपा था। यह सब प्रतियाँ कॉलेजने ले लीं।

मुद्रण-कार्य और पुस्तकें खपानेकी दृष्टिसे लेखकोंको सबसे अधिक प्रेरणा देने-का कार्य गिलक्रिस्ट करते थे। कभी-कभी, इस कारण, इन्हें अधिकारियोंका कोपभाजन भी बनना पड़ता था। किन्तु गिलक्रिस्ट कुछ निर्भीक स्वभावके थे। कहा यह भी जा सकता है कि ये हिन्दुस्तानी प्रेसको चलानेकी दृष्टिसे भी इन कामोंमें रुचि लेते थे। गिलक्रिस्ट लेखकोंको पुरस्कार तथा पारिश्रमिक दिलानेकी भी व्यवस्था करते थे।

हिन्दुस्तानी प्रेससे १८०५ में छपी माधोनल, सिंहासन बत्तीसी और बैताल पचीसीकी मुद्रित प्रतियोंकी संख्याका पता नहीं लग पाया है। किन्तु विवरणके आधारपर यह कहना आपत्तिपूर्ण नहीं होगा कि ये पुस्तकें भी पाँच-पाँच सौकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्यामें छपी थीं। श्रीरामपुर प्रेससे छपी हिन्दी बाइबिल और अन्य स्फुट बाइबिल साहित्यकी संख्याओंका पता प्रति वर्ष छपनेवाले अनुवाद मेमॉएर्ससे लगता है। इस ओर सबसे पहले ध्यान दिया जॉर्ज ग्रियर्सनने। संस्कृत प्रेससे छपी हिन्दी क्लासिक्स – रामायण, विनय पत्रिका, बिहारीके दोहे, सभा विलास, माधव-विलास, सुदामा चरित और ब्रजवासीदास कृत ब्रज-विलास आदिकी भी सौ-सौ प्रतियाँ कॉलेज-द्वारा ख़रीदी जाती थीं। फुटकल प्रतियाँ भी बेचनेकी व्यवस्था थी।

इस प्रकार, इन विवरणोंके आधारपर, कहा जा सकता है कि १८०२ से १८२१ तक पाठ्य-क्रमकी दृष्टिसे छपनेवाली पुस्तकोंकी संख्या पाँच सौ होती थी। प्रचार कार्यके लिए मिशनरियों-द्वारा प्रायः एक हज़ार पुस्तकें छपती थीं। पर्याप्त धन और साधन जुटाकर छापी जानेवाली बाइबिलें दो हज़ारसे कम नहीं छपती थीं। कभी-कभी ये बाइबिलें चार हज़ार तक छपती थीं। उर्दूसे अधिक हिन्दी बाइबिलें छपती थीं। श्रीरामपुर प्रेसने तो हिन्दीकी कई बोलियोंमें भी बाइबिलें छापीं। बैप्टिस्ट मिशनरियोंने भी हिन्दीको अधिक महत्त्व दिया।

● ●

अकसर सुना जाता है कि लेखन और प्रकाशन अन्योन्याश्रित हैं : एकके बिना दूसरेका कल्याण तो हो ही नहीं सकता, जीवन भी सम्भव नहीं है। यह कुछ वैसी ही बात है जैसी यह कि विज्ञान प्रगतिका साधक है। अणुबम और उद्जन-बम वैज्ञानिक प्रगतिके सूचक हैं निःसन्देह, लेकिन प्रगति किस दिशामें ?

आदर्शोंकी बात अलग है—आदर्शमें विज्ञान मूलतः कल्याणकारी है और प्रकाशन भी मूलतः कल्याणकारी है। लेकिन समकालीन वास्तविकता देखें तो मानना होगा कि प्रकाशन भी लोक-कल्याणसे उतना ही दूर है जितना कि विज्ञान।

— 'आत्मनेपद' : स० ही वात्स्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामरस+रामरस=रामायनरस

एक तथ्य—मनोरंजक और
मानें तो विचारोत्तेजक भी

विवेकी राय

क़स्बेमें आयोजित तुलसी-जयन्तीके उस समारोहमें सम्मिलित होनेका सु-अवसर आखिर हाथ नहीं ही आया और शाम होते-होते पछतावेके साथ उदासीका भाव गहरा होने लगा। ऐसा भासने लगा कि अब इस समय सभी मान्य लोग मंचपर पधार चुके होंगे। एम० एल० ए० साहब सभापतिके आसनपर विराज-मान हो चुके होंगे। पीछे गोस्वामीजीका सुसज्जित चित्र लगा होगा। अब सभा-की काररवाई शुरू होगी···अब कविता पाठ होता होगा···अब भाषण होता होगा····और अब सभाकी काररवाई हो चुकी होगी···जलपान शुरू होगा और मिठाई तथा नमकीनकी प्लेटें···चाय !

आगेकी कल्पनाके साथ मेरा रोम-रोम सिहर उठा। अत्यन्त पुलकाकुल होकर मैं बोल उठा—'धन्य हो गुसाईं जी ! यह सब आपका ही प्रसाद है !'

ठीक उसी समय 'सियाबर रामचन्द्र की जै !' की सनसनाती हुई जयजयकार-ने कानोंपर धक्का दिया और कान खड़े हो गये। यह कौन-सी 'तुलसी-जयन्ती' यहाँ हमारे गाँवमें मनायी जा रही है ? सोचा, चलकर मँडराना चाहिए। सम्भव है कुछ हाथ लगे। लेकिन वह बरनदासकी रामकथा थी जहाँ सिर्फ तुलसीदल मिलता है। पवित्र रामकथा और परम पवित्र तुलसीदल ! धन्य हैं ये गाँववाले जो नित्य बहुत रात गये तक राम-कथा सुनाते-सुनते हैं।

मनमें भरपूर श्रद्धा उमड़ आयी। यही असली तुलसी जयन्ती है, दिखावट-बनावटसे दूर ! वहाँ चाय मिलती और यहाँ भगवान्‌का चरणामृत, साथ ही तुलसीदल भी !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सोच रहा था, वहाँ तुलसी-जयन्ती क्या ख़ाक मनायी गयी होगी ? कोरे खम्बू प्याली-प्लेट सूँघते जुट आये होंगे। रस्मी कविता-भाषण ! आज ऊँची कक्षा तकके छात्रोंसे पूछिए कि क्या वे कभी रामचरित मानसको एक बार भी पढ़ गये हैं ? उत्तरसे निराश होना पड़ेगा। जैसे-जैसे तुलसी जयन्तियोंकी धूम मचती जा रही है वैसे-वैसे तुलसी जनताके कण्ठसे उतरकर कोरे काग़ज़ोंपर उतरते जा रहे हैं।

मैंने फिर सोचा, यहाँ चार-छह व्यक्ति ही होंगे तो क्या हुआ ? वहाँके चार सौसे अच्छे हैं। श्रद्धापूर्वक बैठे तो होंगे ! व्यर्थ तालियोंकी गड़गड़ाहट, विचित्र आवाज़ें और प्रदर्शनका भड़भड़ तो नहीं होगा ! फिर वह कवि-सम्मेलन ! भगवान् बचायें इन भाड़ेके कवियों से ! 'मार्ग-व्यय आदि' के चक्करमें आये होंगे। इन्हें तुलसी-जयन्तीसे क्या लेना-देना है ? बुद्धिजीवी और श्रमजीवीकी तरह 'समारोहजीवी' लोगोंका यह एक नया वर्ग-जैसा बन रहा है।

बरनदासकी झोंपड़ी। मैंने देखा, सामने श्रोतागण दो दलोंमें विभक्त बैठे हैं। दीवटपर ढिबरी रखी है। सामने रेहलपर मोटी रामायणकी पोथी खुली है। बाबा बरनदास ज़मीनपर कम्बलका एक टुकड़ा बिछाये बैठे हैं। सफ़ेद-पतली कमानीके चश्मेके भीतर उनकी आँखें चमक रही हैं। बुढ़ौतीमें यह जोत ! बाबा बरनदासने एक बार मेरी ओर देखा और पुनः पोथीपर छा गये। पतले, साफ़ और ठनकते गलेसे उन्होंने एक चौपाई उठायी—

कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि
कहत लखन सन रामु हृदय गुनि।

कुंजल दादा अर्थ कह रहे थे—'आहा···हा···हा···हा···का कहे के ? धन्य हो गुसाईं जी ! दुनियामें जावेतक पदारथ बा, बाकी रउआँ बचनकी मिठाईका जोकाबिल कुछु ना ! हाँ, चलीं आगे।' राम-कथाके साथ व्याख्यान अथवा यह अभ्याख्या कवितापाठका आकर्षक कार्यक्रम रहा।···

निःसन्देह रामकथाके साथ यहाँ नित्य तुलसी-जयन्ती मनायी जाती है। श्रोता डूबकर रस ले रहे हैं। मुझे भी रस कम नहीं मिल रहा था और सोच रहा था कि वहाँका वह हाल और यहाँका यह हाल ! इसी बीच चौपाई आयी—

जनु विरंचि सब निज निपुनाई
बिरचि बिस्व महँ प्रगट दिखाई।

रामरस + रामरस = रामायनरस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंजल दादा फटाक्से बोलते हैं—'का पूछेके बा ? विरंची जी कइसन आपन निपुनाई देखावत बानीं ? कइसन साफ़-साफ़ झलक रहल बा ? जैसे-जैसे डूबों रस खूब मिली । हाँ, आगे चलीं ।'

क्या पढ़े-लिखे लोगोंमें और क्या गँवारोंमें बेचारे महाकवि तुलसीदासकी दशा एक-सी है । एक जगह अति चेतनताकी ज्योतिका बौद्धिक प्रदर्शन है तो दूसरी जगह अति जड़ताके अन्धकारका श्रद्धासमन्वित पूजन है । वहाँ तुलसी विचार-वितर्कके सहारे इतने ऊँचे उठ गये कि व्यावहारिक पकड़के बाहर हो गये और यहाँ अन्धरूढ़ियोंकी विचारहीन भक्ति-परिपाटीमें इस प्रकार जकड़ गये कि काग़ज़के देवता-सरीखे हो गये ।

उधर कथा-प्रवाह चल रहा था और इधर मेरा अपना विचार-प्रवाह। चौपाई सामने थी—

सुन्दरता कँह सुन्दर करई
छवि गृह दीप सिखा जनु बरई ।

झूम गये कुंजल दादा—

'हरे···हरे····हरे····अब हम का कहीं ? जो कुछ बचल-खुचल रस रहल ह सो सब अब गोसाईंजी एही चौपाईमें भभका देले बानीं ! धन्य हो भगवान् । जो तुलसी ना होते तो भवजालसे पापिनके कइसे उद्धार होइत । धन्य हो भगवान् रामचन्द्रजी और धन्य हो गोसाईंजी । हाँ, आगे चलीं ।'

मैंने 'रामायन जी' को सिर झुकाया और 'धन्य हो गोसाईंजी' कहकर चला आया । कथा देर तक चलती रही ।

मैं सोच रहा था और सोच रहा हूँ कि यथार्थ साहित्य, साहित्यका रस, साहित्यकी उपयोगिता-सार्थकता, और पाठकों-श्रोताओंकी लगन क्या वहाँ है जहाँ तुलसी जयन्ती मनायी जाती हैं या यहाँ जहाँ वह सारा वातावरण और टीमटाम बिलकुल अपरिचित बातें हैं !

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनेस्कोके जापानी प्रकाशन

यूनेस्को-द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण जापानी साहित्यके अनुवादोंका एक परिचय

महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

विश्वके क्लासिक ग्रन्थोंका अँगरेज़ी और फ्रेंच अनुवाद प्रकाशित करनेकी दिशामें यूनेस्को गत अनेक वर्षोंसे महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस वर्ष जापानी साहित्यके कुछ अच्छे अनुवाद सामने आये हैं। इनमें पहला है 'मन्योशू' जो जापानका प्राचीनतम काव्य-संचयन है। इसमें आठवीं शताब्दीसे पूर्वकी ४००० कविताओंका संग्रह है जो बीस खण्डोंमें विभक्त है। इसके कवियोंमें राजदरबारों-के कवि तो हैं ही, जनताके कवि भी हैं, इसलिए इसमें नागरिक और ग्रामीण दोनों ही सभ्यताओंका परिचय मिल जाता है। इसकी तुलना 'ग्रीक एन्थॉलॅजी'-से की जा सकती है, परन्तु उदीयमान सभ्यताकी झाँकी होनेके कारण यह उससे उत्तम भी है। जापानी नारा युगके अन्तमें इसका संकलन किया गया और लग-भग आधी शताब्दी तक यह कार्य चलता रहा। तत्पश्चात् सदा ही जनतामें यह बहुत ही लोकप्रिय रहा। लगभग एक शताब्दी पूर्व इसके अनुवाद होने आरम्भ हुए और अँगरेज़ी, फ्रेंच, जर्मन और इटालियन, सभी मुख्य युरॅपीय भाषाओंमें इसके एकाधिक अनुवाद निकले। इनमें प्रस्तुत अनुवाद ही सबसे सन्तोषजनक माना जाता है। इसे जापानी विद्वानोंकी एक समितिने सम्पन्न किया है और एक अँगरेज़ कविने सम्पादित किया है। इस चुनावमें एक हज़ार कविताएँ ही रखी गयी हैं। अब यह कोलम्बिया युनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क तथा लन्दन-द्वारा प्रकाशित है। मूल्य है १२.५० डॉलर (लगभग ६३ रुपये)। इसमें एक लम्बी भूमिका,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुवाद, रोमनमें मूल कविताएँ, कवि-परिचय तथा अन्य आवश्यक सूचियाँ हैं। मुद्रण एकदम प्रथम श्रेणीका है।

दूसरा है 'कागेरो निक्की' नामक सुप्रसिद्ध डायरीका अनुवाद जिसे 'द गोसामेर इयर्स' के नामसे चार्ल्स ईटटिल कम्पनी, टोक्यो तथा रुटलैण्डने ४.५० डॉलर (लगभग २२.५० रुपये) मूल्यपर प्रकाशित किया है। यह एक अज्ञात-नामा जापानी भद्रमहिलाकी आत्मकथा है जो उसने दसवीं शताब्दीमें लिखी थी। इसी युगमें सुप्रसिद्ध 'गेंजीकी कहानी' भी लिखी गयी। इस महिलाका प्रेम और विवाह फूजीवारा कानेई नामक एक कुलीन व्यक्तिसे हुआ था। बादमें उस व्यक्तिने कई और स्त्रियोंसे विवाह आदि किये। महिलाको यह अच्छा नहीं लगा और वह डायरीमें अपनी दुःख-गाथा लिखने लगी। इस प्रकार यह जापानी समाज-व्यवस्थाके विरुद्ध एक महिलाका आक्रोश है। यह डायरी जनतामें बहुत लोकप्रिय हुई। जापानमें इससे आधुनिक साहित्यका आरम्भ माना जाता है। पहले भी इसके कुछ अनुवाद प्रकाशित हुए हैं परन्तु एडवर्ड सीडेनस्टिकर-कृत यह अनुवाद सभी दृष्टियोंसे बढ़-चढ़कर है। छोटी भूमिकाके अतिरिक्त टिप्पणियाँ तथा तत्कालीन रहन-सहनको व्यक्त करनेवाले चित्र भी दिये गये हैं।

तीसरा ग्रन्थ है आधुनिकतम जापानी साहित्यका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास जिसके लेखक हैं श्री कोबो एबे और जो 'द वुमन इन द डयून्स' के नामसे साइमन ऐण्ड शुस्टर लन्दन, ने प्रकाशित किया है। मूल्य है २१ शिलिंग। इसमें अस्तित्ववादी चिन्तनकी समर्थक एक कथा है कि कीड़े-मकोड़ोंकी खोज करनेमें रुचि लेनेवाला एक अध्यापक, अपनी छुट्टियाँ इसी काममें लगानेके लिए समुद्रतट-के एक गाँवमें जाता है जो रेतके ढूहोंपर बसा है। यहाँ एक रात बितानेकी प्रार्थना करनेपर गाँववाले उसे एक ऐसे घरमें रख देते हैं जिसमें सिर्फ़ एक स्त्री है और जो ढलानपर इस तरह नीचे बना है कि उसमें-से सीढ़ीके बिना कोई ऊपर नहीं आ सकता। हवाओं और तूफ़ानोंके कारण रेत हर समय बहता रहता है और गाँववाले अपनी सारी शक्ति लगाकर रोज़ रात उसे कुदालोंसे काट-काटकर अलग करते रहते हैं। स्त्री अकेली है और इस काममें उसकी सहायताके खयालसे ही गाँववाले अध्यापकको वहाँ छोड़ गये हैं – वह बन्दी है। इस प्रकार अकेले घरमें फँस जानेकी मनोदशा और छुटकारेके प्रयत्नोंका बड़ा अच्छा चित्रण किया

[शेषांश पृष्ठ ४८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित समीक्षाएँ

शेष स्वर

'एक साहित्यिककी डायरी'

स्तम्भ नया है, और उद्देश्य इसके पीछे यही कि विशिष्ट कृतियोंपर प्रकाशित महत्त्वपूर्ण और विवेकी समीक्षाओंके मूल स्वर एक व्यवस्थित रूपमें उपलब्ध हों; जिनके माध्यमसे पाठक भी अपनेको कृतिके अधिक निकट पहुँचा सकें। प्रस्तुत हैं स्व० गजानन माधव मुक्तिबोधकी कृति 'एक साहित्यिककी डायरी' पर आयीं तीन समीक्षाएँ।

:१:

साहित्यको व्याख्या करनेवाली पुस्तकें तो बहुत हैं लेकिन साहित्यकी धाराको बदलनेवाली विचारोत्तेजक पुस्तकें एकाधिक दशक बाद आती हैं। मुझे लगता है कि मुक्तिबोधकी लिखी 'एक साहित्यिककी डायरी' एक ऐसी ही क्रान्तिकारी कृति है – विशेषतः नवलेखनके लिए। यह जीवन्त बहसका सर्जनात्मक दस्तावेज़ है। नवलेखनके अन्तर्गत नाटकीयता मुक्तिबोधकी अपनी विशेषता है। जिस तरह प्लेटोके डॉयलॉग्ज़की सबसे बड़ी उपलब्धि सुकरात-जैसा व्यक्तित्व है, उसी तरह एक दूसरे स्तरपर मुक्तिबोधकी डायरीकी सबसे बड़ी उपलब्धि एक कवि-व्यक्तित्व है। यह इस आत्म-सजग युगका सबसे आत्म-सजग व्यक्तित्व है – एक गहरे अर्थमें राजनीतिक जिसके बिना आजके युगमें कोई भी लेखक सार्थक साहित्यकार नहीं हो सकता। इस व्यक्तित्वकी सबसे बड़ी सार्थकता यह है कि इसके माध्यमसे मुक्तिबोधने आजके साहित्यमें एक शलाका-पुरुषकी स्थापना की है; ऐसा शलाका-पुरुष जो आजकी स्थितिके योग्य कविकी भूमिका अदा कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस डायरीसे उभरनेवाला कवि-व्यक्तित्व सामाजिक स्तरपर एक नितान्त सामान्य निम्न मध्यवर्गीय पारिवारिक प्राणी है, जिसके लिए कविता अलगसे किसी साधनाकी चीज़ नहीं, बल्कि जीनेकी जटिल क्रियाका एक सहज अंग है, जो समाजसे लड़ते हुए भी उसकी सहकारिताको सम्बलके रूपमें स्वीकार करता है। जितना कष्टप्रद उसका आर्थिक-संघर्ष, उतना ही कष्टप्रद सर्जन-संघर्ष। और वह अपनी निजी पीड़ाको व्यापक मानवीय पीड़ासे अर्थपूर्ण बनाना चाहता है। नितान्त मानवीय मुक्तिबोधने समकालीन साहित्यमें प्रचलित सौन्दर्यजीवीके 'विशिष्ट' और 'अद्वितीय' व्यक्तित्वपर प्रहार किया है। वे एक स्थापित कवि-प्रतिभाके स्थानपर साहित्यमें एक नये कवि-व्यक्तित्वकी प्रतिष्ठा करनेके लिए व्याकुल हैं। डायरीमें कवितापर विचार करनेसे अधिक, कवि-व्यक्तित्वके स्वरूप-पर विचार किया गया है। मुक्तिबोध आजकी स्थितिमें कविताकी परिभाषा करनेसे अधिक आवश्यक समझते हैं कवि-व्यक्तित्वका निर्माण। उन्होंने कवि-सम्बन्धी परिकल्पनाके द्वारा काव्यसम्बन्धी परिकल्पनाको भी परिभाषित किया है।

—डॉ० नामवर सिंह

:२:

'एक साहित्यिककी डायरी' पढ़कर ऐसा लगा मानो दूर तक फैली हुई कोई पहाड़ी झील है, लोग आ-जा रहे हैं, उनकी परछाइयाँ जल-दर्पणपर तैर-तैर जाती हैं। और इसी झीलके एक किनारेपर मुक्तिबोध चिन्तनकी गहराइयोंमें डूबे हुए हैं। वे पाससे गुजरते चेहरोंको पहचाननेकी चेष्टा करते हैं, कभी उनकी आँखोंमें आँखें डालकर, और कभी-कभी झीलके प्रतिबिम्बको देखकर। उनकी दृष्टि सामनेकी ऊँची पहाड़ीपर जाती है—उदात्त कल्पनाओंमें डूबते हैं, मानो पृथ्वीसे आकाश तकको अपने चिन्तनसे नाप लेंगे। देखते-देखते, सोचते-सोचते जब मुक्तिबोध कुछ ऊबने लगते हैं तो उस पहाड़ी झीलमें एक कंकड़ी फेंक देते हैं—सारा दर्पण आन्दोलित हो उठता है, प्रतिबिम्ब बोलने लगते हैं। मुक्तिबोधने जीवन और जगत्‌को इसी प्रकार देखा था—झीलकी गहराई और विस्तार, दोनोंके साथ।

मुक्तिबोधकी मूल चेतना एक कविकी है, पर ऐसा सजग और जीवित कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसने अपनी चेतनाके द्वार अन्तिम क्षण तक खुले रखे। चिन्तनकी गहराइयोंमें डूबते हुए प्रायः रचनाकार स्वयंकी परिक्रमा करने लगते हैं, पर समस्त आत्म-विश्लेषणके बावजूद मुक्तिबोध समीपवर्ती जीवनसे घनिष्ठ रूपमें सम्पृक्त हैं। कविधर्मका निर्वाह करना वर्तमान युगमें कितना कठिन हो गया है—इस ओर संकेत करते हुए मुक्तिबोधने 'एक लम्बी कविताका अन्त' में स्वयं लिखा है कि "मैंने बार-बार सोचा है कि गद्य लिखूँगा ताकि कुछ पैसे पा सकूँ, पर यह कविता मेरा पिण्ड नहीं छोड़ती—।" और जो रचनाकार अपने काव्यसे एकाकार हो गया अथवा काव्य जिसकी आन्तरिक विवशता हो, उसकी सच्चाई, ईमानदारी और निष्ठा कितनी उच्च कोटिकी होगी, कहनेकी आवश्यकता नहीं। मुक्तिबोधने डायरीके ये पृष्ठ लिखे हैं, इन्हें गद्य-विधाके अन्तर्गत रखा जायेगा, पर इनकी निर्मिति कवि-चेतनाने की है, इसमें सन्देह नहीं। यहाँ वर्णन, विस्तारका लोभ नहीं है, पर कुछ महत्त्वपूर्ण चिन्तन-क्षण हैं जो डायरीके पृष्ठोंपर बिखर गये हैं।

'एक साहित्यिककी डायरी' में कुछ पात्र आते हैं, पर इनके माध्यमसे चरित्रांकन करना मुक्तिबोधका उद्देश्य नहीं था। सम्भव है इनमें-से कुछ पात्र उन्होंने जीवनसे प्राप्त किये हों, पर इनकी सार्थकता यह है कि वे रचनाकारके प्रश्नोंको, शंकाओंको गति देते हैं। इससे डायरी-शिल्पकी सम्भावनाओंका एक नया द्वार खुलता है। प्रायः दैनन्दिनियाँ वर्णनात्मक होकर रह जाती हैं, पर मुक्तिबोधकी सर्जनात्मक आकांक्षा यहाँ भी शिल्प और माध्यमकी सीमाएँ स्वीकार नहीं करती, वह उसमें नयी सम्भावनाओंको जन्म देती है। अपना विवेचन, आत्म-निरीक्षण करते हुए कवि मुक्तिबोध स्वीकार करते हैं कि व्यावहारिक बुद्धिसे आजका मनुष्य कुछ सफलताएँ प्राप्त कर सकता है, पर इसे उपलब्धि कैसे कहा जाये? सांसारिक समझौता क्या एक प्रकारसे मानव व्यक्तित्वकी पराजय नहीं है? विद्रोहके कण सूख जानेपर स्रष्टाके पास शेष ही क्या रह जायेगा? लगता है, मुक्तिबोधके रचनाकारने अपने भीतरके सांसारिक बोधसे निरन्तर संघर्ष किया। वे बाहरसे देखनेपर टूट भले ही गये हों, पर भीतर-भीतर वे सर्जनरत थे। जब मुक्तिबोध कहते हैं, "छोटी-सी एक सजग चिनगारी उस बुझे ज्वालामुखीसे बड़ी तो है ही, वह उसे चुनौती भी देती है", तो वे आधुनिक चेतनाका स्वागत करते हैं। जो आधुनिकता केवल फ़ैशन तक सीमित रह गयी है, उसे साहित्यके लिए मुक्तिबोध छद्म वेश मानते हैं क्योंकि उसमें हमारी पूर्ण निष्ठाकी शक्ति नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने इन खतरोंकी ओर इशारा भी किया है।

मुक्तिबोध 'एक साहित्यिककी डायरी' में एक कविकी पूर्वग्रह-रहित स्वतन्त्र चिन्तना अपने निष्कर्ष निर्भीकतासे प्रकाशित करती है। यह चिन्तन काल्पनिक, वायवी न होकर जीवन-प्रसूत है, अनुभव-परिचालित है। कलाके तीन क्षणोंकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा है कि कलाका प्रथम क्षण है, जीवनका उत्कृष्ट तीव्र अनुभव-क्षण। दूसरा क्षण है, इस अनुभवका अपने कसकते-दुखते हुए मूलोंसे पृथक् हो जाना और एक ऐसी फ़ैण्टैसीका रूप धारण कर लेना मानो वह फ़ैण्टैसी अपनी आँखोंके सामने ही खड़ी हो। तीसरा और अन्तिम क्षण है, इस फ़ैण्टैसीके शब्दबद्ध होनेकी प्रक्रियाका आरम्भ और उस प्रक्रियाकी परिपूर्णावस्था तककी गतिमानता···। इस प्रकार मुक्तिबोधके लिए सर्जन एक अनवरत गतिशील यात्रा है, जिसमें नये तत्त्व सम्मिलित होते जाते हैं, और जो रचनाकार जिस प्रकारके तत्त्वोंका प्रवेश उसमें करा सकेगा—कृति उसीके अनुरूप आकार पा जायेगी। फ़ैण्टैसीपर किंचित् विस्तारसे विचार करते हुए मुक्तिबोधने निष्कर्ष दिया है कि "फ़ैण्टैसी अनुभवकी कन्या है और उस कन्याका अपना स्वतन्त्र विकासमान व्यक्तित्व है। वह अनुभवसे प्रसूत है इसलिए वह उससे स्वतन्त्र है।" निश्चय ही मुक्तिबोधकी 'फ़ैण्टैसी' के विषयमें यह स्वतन्त्र उपपत्ति है और यहाँ मतभेदकी गुंजाइश है, पर उनकी मौलिक विचारणाको स्वीकारना ही होगा। समीक्षाके कुछ सूत्र डायरीके पृष्ठ हमें देते हैं जिनसे कवि मुक्तिबोधके संकलन 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' की ग्रन्थियोंको खोलनेमें भी हम सहायता पा सकते हैं। पर दूसरी दृष्टिसे ये चिन्तन-सूत्र कविताओंके पूरक भी माने जा सकते हैं।

मुक्तिबोध विस्तारमें भटकनेकी अपेक्षा गहराइयोंमें उतरना अधिक पसन्द करते हैं; इसीलिए कहीं-कहीं उनके चिन्तन-सूत्र उलझे हुए प्रतीत होते हैं, पर ध्यान देनेपर लम्बी भूमिकाओंके भीतर कोई सूक्ष्म निरीक्षण प्रतिपादित दिखाई देगा। मुक्तिबोध और मार्क्स अपनी-अपनी चिन्तन-धाराओंमें एक ही निष्कर्षपर आये हैं—मुक्तिबोधके पास इतिहास, अर्थशास्त्रका वह विस्तृत अध्ययन भले न हो, जिस विद्या-सम्पत्तिके सहारे स्थितियोंका विवेचन करनेमें सुगमता होती है, पर वे समाजशास्त्रके जिज्ञासु विद्यार्थी थे और अपनी निरीक्षण-क्षमतासे बिखरे हुए सूत्रोंमें क्रम स्थापित कर लेते हैं अथवा स्थितियोंके मध्य किसी निष्कर्षको खोज लेते हैं। उनका मनोविज्ञान-सम्बन्धी ज्ञान भी इसमें उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता करता है। मुक्तिबोधका चिन्तन अपने वर्तमानसे इतने घनिष्ठ रूपमें सम्बद्ध है कि युग-बोधका पूर्ण परिपाक हमें उसमें प्राप्त होता है। वे समाजकी जटिलताओंके भीतर अपनी संवेदनशील निरीक्षण-क्षमतासे झाँक लेते हैं और उसे सहज मानवीय भावसे प्रस्तुत कर देते हैं। वहाँ व्यंग्य नहीं है और न किसी अहंकारीका-सा पाण्डित्य-प्रदर्शन! मुक्ति- बोधका चिन्तन मानवीयता परिचालित चिन्तन है—एक सदाशयतासे उद्वेलित। इसी चिन्तनको न समझनेवाले उनके काव्यमें दुरूहता पाते हैं।

'एक साहित्यिककी डायरी' मुक्तिबोधकी जीवन-सम्बन्धी चिन्तना है और साहित्यको भी उसी क्रममें इसे स्वीकार करना होगा। जब वे 'स्वयंसे अस्वयं होने' की बात कहते हैं तब मुझे उन्हींके शब्द याद आते हैं कि उन्होंने सारा अन्य-प्रदेश श्वासमें भर लिया। सारी पृथ्वी वक्षमें छिपा ली। और मैं यही सोचता हूँ कि जिन्दगी दूर तक फैली हुई झील है और मुक्तिबोध चिन्तनकी गहराइयोंमें डूबे हुए हैं।

—डॉ० प्रेमशंकर

:३:

'एक साहित्यिकी डायरी' मुक्तिबोधकी नव्यतम और अन्तिम गद्य कृति है। पुस्तकके शीर्षकमें डायरी शब्द होते हुए भी उसका प्रकाशित रूप डायरी-सरीखा नहीं है। 'वसुधा' के लिए मुक्तिबोधने इस गद्यको डायरीके रूपमें ही लिखना शुरू किया था, परन्तु प्रस्तुत पुस्तकके सम्पादनके समय इसे डायरीका रूप देनेकी चेष्टा नहीं की गयी। परन्तु डायरी कहा जाये या किसी अन्य नामसे पुकारा जाये, यह कृति अपनी विचार-सम्पत्तिमें, अपने 'कॅण्टेण्ट'में, आजकी जटिल जीवन-परिस्थितियोंमें सृजन करनेवाले एक साहित्यिकके प्रखर यथार्थ-बोध तथा अनुभूत जीवन-वास्तवका बड़ा साफ़-सच्चा चित्र है, अपने रचनाकार, विचारक, चिन्तककी मूलभूत ईमानदारी तथा दायित्व-चेतनाकी साहसपूर्ण खरी अभिव्यक्ति है। युगके किन ज्वलन्त सन्दर्भोंमें आजका सृजन साँसें ले रहा है, सृजनके दौरान आजके ईमानदार रचनाकारकी उन सन्दर्भोंके प्रति क्या प्रतिक्रिया हो सकती है, इन सन्दर्भोंमें सामने आनेवाले सृजनका रूप क्या है, आजके रचनाकारके युग-बोध तथा दायित्व-चेतनाके कौन-से स्तर हैं और वे कहाँतक एक ईमानदार युग-सम्पृक्त सृजनका परिचय देते हैं आदि आदि न जाने कितनी बातें मुक्तिबोध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रखर-दृष्टि, गहन अनुभूति तथा पैनी लेखनीका विषय बनकर इस डायरी कही जानेवाली गद्य कृतिमें बड़े ढंगसे सामने आयी हैं।

मुक्तिबोधकी यह कृति उनके प्रखर जीवन-संघर्षों, अनुभूत जीवनके गहन विश्लेषण तथा युग-जीवनकी एक-एक पर्तको एक बौद्धिक व्यक्तित्वकी सारी वैज्ञानिक समझके साथ उद्घाटित करनेवाले सचेतन तथा सजग प्रयासोंकी दुर्लभ उपलब्धि है। ध्यान रखना चाहिए कि इस उपलब्धिको सामने लानेवाला व्यक्ति एक साहित्यिक है। मुक्तिबोधका व्यंग्य इस कृतिमें अपनी सारी प्रखरता को लेकर सामने आया है, उनकी कविताएँ भी व्यंग्यकी इस धाराको सामने रखती हैं, परन्तु गद्यमें मुक्तिबोधका व्यंग्य कितना सटीक और मर्मभेदी हो सकता है, यह कृति इसका प्रमाण है। इस व्यंग्यकी एक विशेषता है। युग, समाज, राजनीति, संस्कृति, साहित्य, और इनसे सम्बद्ध व्यक्तियों, प्रवृत्तियों आदिपर तो व्यंग्य किये ही गये हैं, व्यंग्यका लक्ष्य वहाँ लेखकने अपनेको भी बनाया है और अपने ऊपर किये गये वारोंके माध्यमसे ही अर्थपूर्ण व्यंजनाएँ की हैं। मुक्तिबोधके व्यंग्यकी वह प्रखरता जिसके पीछे उनकी सजग, निस्संग, व्यापक आलोचनात्मक दृष्टि है, उनके गद्यको एक अतिरिक्त गरिमा देती है और उनकी लेखन-क्षमताओंको नये आयाम। आधुनिक युग-व्यवस्थापर चढ़े मुलम्मे, उसमें पलनेवाले साहित्य तथा साहित्यकारोंकी अपनी जीवन-स्थितियोंको जितनी सफ़ाई-के साथ इस कृतिमें उघाड़ा गया है, उतना मेरी समझमें इधरकी प्रकाशित किसी भी वैचारिक कही जानेवाली कृतिमें नहीं। जीवनका सही सत्य उपलब्ध करना यदि यह बात आधुनिक सन्दर्भोंमें किसी हिन्दी लेखकके लिए कही जा सकती है तो वह मुक्तिबोधके लिए।

कुल मिलाकर 'एक साहित्यिककी डायरी' युग, समाज, जीवन तथा साहित्य—हमारे आजके सम्पूर्ण जीवनको अपनी परिधिमें समेटती है, आजकी समूची जीवन-व्यवस्थापर रोशनी डालती है। आधुनिक युगका एक अतीव प्रबुद्ध मस्तिष्क तो कृतिके बीचसे उभरता ही है, युगकी जटिल जीवन-प्रक्रिया भी अपनी सारी रेखाओंके साथ उद्घाटित होती है, उस जीवन-प्रक्रियाके भीतरसे ही साहित्य तथा साहित्यकारको कृतिके अन्तर्गत देखना अधिक समीचीन है।

—डॉ० शिवकुमार मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ

ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत-कुछ सकीं

• साहित्यिक

• इतिहास पुरुष : डॉ० देवराज

कितने होते हैं कवि जिनके दृष्टिबोधमें दर्शन, इतिहास, जीवन तीनोंका उजाला समन्वित हो ! और कितनी ऐसी काव्य-कृतियाँ होती हैं जो काव्य और शिल्पका ही उदाहरण न हो, लघुमानवकी कुण्ठाग्रस्त चेतनामें यथार्थ जीवन-बोधका ज्वार भी उठा सकें ! प्रस्तुत कृति 'इतिहास-पुरुष' यहीं विचारणीय होती सामने आती है।

इसके 'प्राक्कथन' में श्री सुमित्रानन्दन पन्तने इसे 'नयी कविताका एक उत्कृष्टतम काव्य' माना है। और, उनके ही शब्दोंमें, इसके द्वारा कविने "इतिहास-के अतल अकूल समुद्रका मन्थन कर अपनी दर्शनज्ञ दृष्टिसे जीवन-नवनीत स्वरूप जिस अक्षय तत्त्वको पाठकोंके हाथोंमें रख दिया है वह अपने आलोक, ऐश्वर्य, उपयोगिता तथा कवित्वमें चिरपुराण होते हुए भी चिरनवीन अभिव्यक्तिके सौन्दर्यसे आप्लावित है।"

अपनी संचेतनामें 'इतिहास-पुरुष' उत्तर-अस्तित्ववादी युगके प्रारम्भकी सूचक रचना है जिसमें, निराशा और विभिन्न निषेधोंपर हावी होते हुए, जीवनकी मूल आस्थाओंके पुराख्यान और उज्जीवनका प्रयत्न है। क्या भाव-बोध और क्या भाषा, दोनोंमें ही ये रचनाएँ एक नितान्त मौलिक, सशक्त एवं समृद्ध संवेदनाको स्खरित करती हैं : ऐसी संवेदनाको जिसे किसी सामयिक आन्दोलनके कोलाहलमें खो जानेका या उसके उतार-चढ़ावसे प्रभावित होनेका भय नहीं है। मूल्य ३.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● विवेकके रंग : सम्पादक--डॉ० देवीशंकर अवस्थी

'विवेकके रंग' अर्थात् महत्त्वपूर्ण समकालीन कृति-साहित्यपर प्रकाशित गणनीय समीक्षाओंका संकलन। अपने प्रकारकी प्रथम कृति : प्रौढ़ और प्रभावपूर्ण।

जिन हिन्दी पुस्तकोंकी समीक्षाएँ संकलित की गयी हैं वे पिछले पन्द्रह वर्षोंके लेखनका एक बड़ी सीमा तक प्रतिनिधित्व करती हैं; और समीक्षाएँ तो, एक पुस्तकपर एक, चुनी वही गयी हैं जो पुस्तककी आन्तरिक सत्ताका उद्घाटन करती हों या फिर समीक्षा-सिद्धान्त या पद्धतिकी दृष्टिसे कोई नयी बात प्रस्तुत करें।

यह सर्वमान्य है कि जिस प्रकार लेखनमें उसी प्रकार समीक्षणमें भी युग-मनके अनुरूप विकास और परिवर्तन होता है। यों भी हर युगकी समीक्षात्मक दृष्टि तत्कालीन साहित्यसे अनुकूलित और अनुशासित होती है और उसे अनुकूलित करती भी है। प्रस्तुत संकलनके माध्यमसे साम्प्रतिक साहित्यका, सभी पीढ़ियोंके समकालीन लेखनका, समग्र व्यक्तित्व भी सामने आ जाता है और समीक्षा-सम्बन्धी नये विवेक, नयी पद्धतिको भी संकेन्द्रित ढंगसे देखा जा सकता है। एक बड़ी बात यह कि इस संकलनके प्रकाशनसे अब समीक्षाओंके स्तरीय महत्त्वकी ओर समीक्षकों, सम्पादकों और पाठकोंका ध्यान आकर्षित होगा।

इस प्रकार, प्रस्तुत कृति न केवल अपनेमें ही महत्त्वपूर्ण है बल्कि अनेक अर्थोंमें आगेके लिए प्रेरणा-सम्भावनापूर्ण भी है। इसीलिए विशेष उपयोगी, अतिरिक्त रूपसे संग्रहणीय है।

मूल्य ७.००

● प्रेत : मूल – इब्सेन, अनु० – नेमिचन्द्र जैन

प्रेत अर्थात् वह योनि या कहें स्वरूपावस्था, जिसमें मृत्युके बाद मनुष्य बना रहे। स्थूल शरीर तब नहीं होता, वासनाएँ-भावनाएँ रहती हैं। माता-पिताकी वासनाएँ-भावनाएँ सन्तानमें यों भी आती हैं। पर उनसे मुक्त रखनेके ज्ञात और सम्भव सभी उपाय करके सन्तानमें हठात् उन्हें उन्हींका त्यों सक्रिय देखें तब प्रतीकोंकी भाषा उसे प्रेत नाम ही देगी।

प्रस्तुत कृति लगभग सौ वर्ष पूर्व लिखे गये एक नाटकका सफल अविकल हिन्दी अनुवाद है। मूल कृति है इब्सेनकी 'घोस्ट्स'। इब्सेन अर्थात् 'इब्सेन', आधुनिक नाटकका प्रवर्तक, शॉ भी जिसका ऋण स्वीकारनेको विवश हुआ, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-देशके नाट्य-लेखन और रंगमंचने जिससे दिशा पायी, प्रभाव ग्रहण किये। और 'घोस्ट्स' – एक लघुकाय पर सम्पूर्ण नाटक, जिसने तत्कालीन सामाजिक जीवन-आचरणकी ऐसी सच्ची और अचूक प्रतिलिपि सहसा उपस्थित की कि समूचे योरपका भद्रवर्ग तिलमिला उठा और प्रतिक्रियाओंके प्रत्युत्तरमें इब्सेनको एक और नाटक लिखना पड़ा।

सौ वर्ष पूर्वके जीवन-आचरणका यह चित्र सामने आज दर्पण-जैसा लगेगा। इब्सेन नहीं है, पर तथ्य पुकारेंगे और साहित्यकार अपना धर्म निबाहते चूकता नहीं। विश्वकी प्रायः सभी भाषाओंमें अनूदित, रंगमंचके लिए सदासे सबका चहेता, प्रस्तुत है इब्सेनका नाटक 'प्रेत' – जितना क्लासिक उतना ही मॉडर्न, आजका।

मूल्य : २.२५

• अन्धा चाँद : मुनि रूपचन्द

चाँदके लिए 'अन्धा' विशेषण अटपटी-सी कल्पना लगेगी। है उसके पीछे एक वस्तुसत्य। उसका सारा उजाला पराया, लिया हुआ, नहीं होता क्या? इससे रहित, उसका अपना स्वरूप कैसा क्या रहता है?

प्रस्तुत संग्रहकी कविताओंमें इसी स्वरूप-विश्लेषणकी दृष्टिको प्रधानता दी गयी है। जो है, न उसे छिपायें न उससे छिपनेकी करें, यही भावना है जिससे ये कविताएँ अनुप्राणित हैं और जो इन्हें एक विशेषता प्रदान करती है। इसीलिए जहाँ ये अत्यन्त मार्मिक हो उठी हैं वहीं यथार्थके सौन्दर्यसे युक्त भी हैं।

सीधी-सरल बोल-चालकी भाषा, कला और शिल्पकी कृत्रिमताओंसे मुक्त : इन कविताओंकी ऋजुता विवेचकको सन्तोष देगी और सामान्य पाठकको इनका सत्य एक दृष्टि और प्रेरणा देगा।

मूल्य : ३.००

• जुलूस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

नया शायद कुछ नहीं होता। आँख-ओझल तथ्योंके उद्घाटनको शोध नाम मिलता है और जाने-परखे तत्त्वोंका अपने प्रयोजनके अनुरूप संघटन आविष्कार कहलाता है। साहित्य सृजनमें भी, व्यापक दृष्टिसे देखें तो, अपूर्व शायद ही कुछ होता हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रेणु' की यह कृति 'जुलूस' भी अपूर्व तो कैसे कही जाये, पर अनूठी इसे मानना पड़ेगा। हिन्दीमें इस विषय-भूमिकी ओर इसके भाव-संकेत लिये हुए कोई कृति बिरले ही आयी होगी। एक लघुकाय उपन्यास पर विशाल अन्तरंग, गझिन, शक्तिशाली और सारा कथानक सामयिक : घटनाओंकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण और मूल्योंकी दृष्टिसे भी। शैली-शिल्प 'रेणु' के अपने : पहलेसे अधिक प्रौढ़, मँजे-निखरे, प्रभावपूर्ण।

कथानक सीधा-सा है, कला उसका उपयोग करनेकी है। इसके माध्यमसे हिन्दी पाठक देखेंगे कि प्रान्तीय भाव-भेद कितने भी वास्तविक लगें, यथार्थ जीवनके सन्दर्भमें उनका अस्तित्व क्षीण हुए बिना नहीं रहता। और ठीक यही तो मूल आधार है देशकी भावात्मक-सांस्कृतिक एकताके सत्यका। आवश्यकता आचरणकी है, दृष्टिदानकी है। प्रस्तुत है इस दिशामें यह 'रेणु'का सफल रचनात्मक प्रयत्न। मूल्य ३.५०

• आत्मजयी : कुँवर नारायण

कठोपनिषद्में नचिकेताका आख्यान आता है। सत्यद्रष्टा कविने इसके माध्यमसे भारतीय दर्शनकी एक विशिष्ट उपलब्धिको स्पष्ट किया है। इधर कुछ हिन्दी काव्य-कृतियाँ इस आख्यानको विषय-आधार बनाकर प्रकाशमें आयी हैं। 'आत्मजयी' इन सबमें कई दृष्टियोंसे भिन्न है और विशेष अर्थपूर्ण भी। यह कृति मूल प्रसंगके दार्शनिक पक्षकी ऊहापोह नहीं करती, न ही उसे दिव्यकथाके रूपमें ग्रहण करती है। 'आत्मजयी' के कविने मुख्यतः नचिकेताकी मानवीय परिस्थितिको ही दृष्टिमें रखा है। नचिकेताकी ही तरह आजका चिन्तनशील मनुष्य भी ऐसे मूल्योंके लिए जीना चाहता है जो उसमें सुख ही नहीं सार्थकताका भी बोध करा सकें। सर्वथा संग्रहणीय कृति। मूल्य ३.५०

• सिकन्दरनामा : सलमा सिद्दीक़ी

सिकन्दरनामा यानी सिकन्दरका हाल। हाँ, सिकन्दर इतिहासका सिकन्दर नहीं। उसपर सदियोंकी मोटी चादरें पड़ गयी हैं। यह आजका सिकन्दर है जिसके अस्तित्वका सबसे बड़ा सबूत यह है कि स्वयं सलमा सिद्दीक़ीने उसे अपनी जादुई क़लमकी नोकपर बैठाकर साहित्य-संसारमें रॉकेटकी तरह छोड़ा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप चाहें तो इस सिकन्दरको डॉन क्विग्ज़ोटकी परम्परामें शुमार कर लें; लेकिन है वह मियाँ खोजीकी ज़ात-बिरादरीके। जिस तरह हर मिट्टी-पानीकी अपनी-अपनी पौध होती है जो अपने-अपने रंग और सुगन्धमें लाजवाब होती है, उसी तरह यह सिकन्दर है – हिन्दुस्तानकी धरतीका एक हँसोड़ क्यारीका लुभावना फूल। बहुत दिलचस्प दास्तान है इस सिकन्दरकी। और, सलमा सिद्दीक़ीकी सादाबयानीका मोहक कमाल! नये अन्दाज़, नयी अदा, और कुछ पुराने तौर-तरीक़ोंपर नयी चुलबुली निगाह!

मूल्य २.००

सांस्कृतिक

• उपासकाध्ययन : मूल–सोमदेवसूरि, स०-अ०–पं० कै० च० शास्त्री

सोमदेव सूरि कृत महान् संस्कृत ग्रन्थ यशस्तिलकके अन्तिम तीन आश्वास, जिन्हें स्वयं सोमदेवने भी उपासकाध्ययन नाम दिया है। जैन श्रावकाचारका विशद विवेचन। हिन्दी प्रस्तावना, अनुवाद, संस्कृत टीका तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ११६ + ५३९। प्रथम संस्करण १९६४। मूल्य १२.००

• करकण्ड चरिउ : मूल–मुनि कनकामर, सम्पा०–डॉ० हीरालाल जैन

जैन और बौद्ध साहित्यमें 'प्रत्येक बुद्ध'के रूपमें प्रसिद्ध महाराज करकण्डके जीवन-चरित्रपर लिखा गया अपभ्रंश काव्य। हिन्दी अँगरेज़ी प्रस्तावना, अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ६४ + २७८। द्वितीय संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

• भोजचरित : मूल–पाठक राजवल्लभ, सम्पा०–अनु०–डॉ० बहादुर-चन्द छाबड़ा, डॉ० शंकरनारायणन्

परमार नरेश भोजके जीवनपर लिखा गया ऐतिहासिक महत्त्वका एक विशिष्ट संस्कृत काव्य। महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी प्रस्तावना, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल २४ + १९२। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंका प्रतिक्रिया

लेखन-प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी इकाई अधूरी
रहेगी जबतक पारखी पाठककी प्रतिक्रिया
प्रकाशकके पास होती लेखककी मेज़ तक न पहुँचे

संक्रान्त

कैलाश वाजपेयी

संक्रान्तके कवि कैलाश वाजपेयी प्रारम्भमें सुकुमार रोमानी भावोंके गीत कवि रहे हैं, ऐसे गीत कवि जिनपर वय:सन्धिवाला रोमानी नशा सवार रहा करता है। उनका कवि परिवर्तनके दौरसे गुज़रा पर सहसा वह रोमान्सके छोरसे दौड़ता हुआ आत्म-पीड़न और पर-पीड़नके क्षयिष्णु छोर तक पहुँच गया, यह एक कुतूहलपूर्ण दु:खकी बात है। एक विकासमान कविके लिए यह बात एक दुर्घटना ही मानी जायेगी। क्यों ऐसा हुआ ? क्यों कविको अपना जीवन निरर्थक प्रतीत होने लगा ? सारी दुनिया क्यों उसके लिए कूड़ा-घर बन गयी और क्यों वह 'पराङ्मुख चिन्तन' करता हुआ संसारको यह शाप देने लगा ?

दुर्भिक्ष ऐसा पड़े कि हवा सड़ जाये
मिट्टीमें दबा बन्द बीज बने कोयला—
सूर्य कहीं ऊपर
ऊपर ही ऊपर टकराये
भ्रूणों का मांस बिके पृथ्वी पर
बिना शब्द किये
ग्लोब भाप बन जाये !

यह भयंकर प्रतिक्रिया सम्भवत: कविकी कुण्ठाग्रस्त मानसिक ग्रन्थियोंकी देन है। नयी कविता कठोर यथार्थकी भूमिपर संघर्षरत सामाजिक व्यक्तिकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोभूमिकाको व्यक्त करती है और उसका मूल स्वर मानवतावादी है। अतः कैलाश वाजपेयीकी यह क्षयग्रस्त, असामाजिक मनोवृत्ति नयी कविताके लिए घातक है। यदि ऐसी कविताओंको नयी कविताके नामपर चालू किया गया तो नयी कविताका भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा। ग़नीमत है कि कैलाश वाजपेयी नयी कविताके भीतर अपने ढंगके 'अकेले' कवि हैं। घोर प्रतिक्रियात्मक मनोवृत्ति अराजकतावादी मनोवृत्ति होती है और काव्यके क्षेत्रमें इस मनोवृत्तिके लिए कोई स्थान नहीं होता। राजनीतिके क्षेत्रमें अराजकतावादी समस्त व्यवस्थाके नाशका नारा अवश्य लगाते हैं पर उनके सामने भी एक सरकारविहीन पूर्णव्यवस्थित समाज-की कल्पना होती है। कैलाश वाजपेयीके सामने केवल नाश-ही-नाश है, निर्माण-की कोई कल्पना और भविष्यका कोई स्वप्न उनके पास नहीं है। अतः स्पष्ट है कि उनकी सारी चीख-पुकार दिशाहारा अर्धविक्षिप्त व्यक्तिकी चीख-पुकार है अथवा उसे ऐसा मानसिक रोग हो गया है जिसके कारण वह अपनेको झूठ-मूठ भयंकर बीमारीसे ग्रस्त मानते हैं :

और अब अपनी कायरता
ओछे इतिहास और
खोटे प्रारब्ध के साथ
मैं अकेला हूँ।
चकनाचूर देह और खोखले दिमाग़ और बीमार आत्मा का
बोझ ढोता हुआ—
.....
भूकम्पके बाद बचे किसी पागल रोगी-सा
एकदम अकेला हूँ।

यह भी नहीं है कि कविकी मनोवृत्ति अस्तित्ववाद-जैसे किसी दर्शनकी या विचारधाराकी मूल पापकी भावनाकी देन है। दार्शनिक या धार्मिक मनोवृत्ति जिस गहरे तल और विस्तृत आयामोंका स्पर्श करती है, इन कविताओंमें उनका नितान्त अभाव है। पर कविके निजी जीवनमें कहीं गहरी चोट अवश्य लगी है जिसका बदला वह अपनेको ही पीड़ित करके लेना चाहता है। आत्म-रतिका विकृत रूप ही आत्म-पीडन होता है और कैलाश वाजपेयीकी ये कविताएँ उसी आत्मरतिकी ग्रन्थिके विकार और उत्पातसे उत्पन्न बीमार अनुभूतियोंको व्यक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती है।

किन्तु संक्रान्तकी सभी कविताएँ ऐसी नहीं हैं। उनमें-से कुछमें युग मानवकी सामान्य पीड़ा भी अभिव्यक्त हुई है। वर्तमान मानव-समाजमें व्यक्ति भीड़में खोता चला जा रहा है और समस्त मानवीय मूल्य और आदर्श खोखले शब्द बनते जा रहे हैं। आजका संसार ऐसे संकटकी स्थितिसे गुज़र रहा है जिसमें व्यक्ति शून्य बन गया है, वह भीड़में खो गया है। कैलाशकी कई कविताओंमें भीड़के आतंकको व्यक्त करनेवाली मनःस्थितियों और टूटे बिखरे मूल्योंकी सफल अभिव्यंजना हुई है। 'पिशाच संस्कृति', 'अस्तित्व बोध', 'अशनाया और अनस्तित्वके बीच' और 'दिल्ली टुकड़ोंमें' ऐसी ही कविताएँ हैं। इस संकट-बोधको सफलतापूर्वक व्यक्त कर देना श्लाघनीय अवश्य है पर जब यह लगने लगता है कि कविकी गति बस यहीं तक है और वह इस संकटकी स्थितिके बाद मानवताके नाशको ध्रुव मानता है, इतना ही नहीं, वह विश्वकी इस भयावह विपत्तिकी कल्पना करके खुश भी हो लेता है, तो फिर कविकी मानसिक स्वस्थताके सम्बन्धमें सोच होने लगता है। पराजय, क्रोध और बौखलाहट जब किसी व्यक्ति, वर्ग या समूची पीढ़ीका स्वभाव बनने लगे तो ऐसे लोगोंकी सामूहिक मानसिक-स्वास्थ्यके लिए उपाय किया जाना चाहिए।

कैलाश वाजपेयीकी कविताओंमें ये विकृतियाँ हैं तो अवश्य, किन्तु सम्भवतः उन्हींके कारण उनका कवि-व्यक्तित्व नये कवियोंमें 'अद्वितीय' बन गया है। ऐसा कवि अनसुना और अनपढ़ा नहीं गुज़रने दिया जा सकता।

—डॉ० शम्भुनाथ सिंह

• काग़ज़ के फूल

भारतभूषण अग्रवाल

पाश्चात्य काव्य-जगत्में कवि लीअरके लिमरिक अत्यन्त लोकप्रिय हैं, किन्तु हिन्दीमें इस रचना-शैलीका इतिहास अत्यन्त संक्षिप्त है। लीअरके प्रभाववश हिन्दीमें इसे श्री भारतभूषण अग्रवालने प्रायः दो दशक पूर्व जन्म दिया था। उस समय यह एक ऐसा प्रयोग था, जिसके विषयमें वे स्वयं सशंक थे, किन्तु बादमें अज्ञेय, प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती, गिरिजाकुमार माथुर प्रभृति अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकारोंने उनके लिमरिकोंकी सराहना की। 'लिमरिक' का 'तुक्तक' के रूपमें रूपान्तर कैसे हुआ, यह भी एक रोचक प्रश्न है। वस्तुतः उनकी रचना-प्रकृतिको ध्यानमें रखकर यह नामकरण डॉ० जगदीश गुप्तने किया था। तुक्तकमें, जैसा कि नामसे ही सिद्ध है, कभी-कभी सम्पूर्ण चमत्कार तुक-योजनामें ही रहता है। इसीलिए इसमें सीमित आकार होनेपर भी अन्त्यानुप्रासका दो भिन्न वर्गोंमें आयोजन रहता है। इसका आयाम केवल पाँच पंक्तियोंमें है और उनमें भी तीसरी तथा चौथी पंक्तियोंमें अन्त्यानुप्रासका प्रयोग अन्य पंक्तियोंसे भिन्न रूपमें होता है।

तुक्तकका गुण उसकी अर्थहीनतामें है अर्थात् उसमें अर्थ-संगतिकी अपेक्षा शब्दोंके चित्र-विचित्र प्रयोगपर बल रहता है। दूसरे शब्दोंमें तुक्तकको प्रयोगवादी कविताका अंग-विशेष माना जा सकता है। यद्यपि यह सत्य है कि इसके अधिष्ठाता केवल भारतभूषण अग्रवाल ही हैं: पुराने खेवेके प्रयोगवादी कवियोंका ध्यान इस ओर नहीं गया, तथापि यह भी सत्य है कि नये कवि इसके अनुकरणका प्रयत्न कर रहे हैं। व्यंग्य अथवा परिहासको अटपटे रूपमें प्रस्तुत करना इसका मुख्य गुण है, फलतः यह काव्य-विधा पिछले कुछ वर्षोंमें अत्यन्त लोकप्रिय हुई है।

भारतभूषण अग्रवालके इन तुक्तकोंका संग्रह 'काग़ज़के फूल' भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित हुआ है, जिसमें व्यंग्य-चित्रोंका निर्माण प्रसिद्ध व्यंग्य-लेखक श्री प्रभाकर माचवेने किया है।

जैसा कि अभी कहा गया है, तुक्तककी विशेषता उसका व्यंग्य है। 'दिनकर' जीने 'नये सुभाषित' में भी कुछ इसी प्रकारका प्रयोग किया है, किन्तु तुक्तकोंकी बात ही कुछ और है। वे हास-परिहास, छेड़-छाड़ अथवा चुहलबाज़ीसे अनुप्राणित रहते हैं। पाठकोंका मनोरंजन उनका मुख्य ध्येय है। ऐसी स्थितिमें उनके स्थायित्वके विषयमें भले ही शंका की जा सके, किन्तु उनके सामयिक महत्वको तो कदापि नहीं भुलाया जा सकता। इसके दो कारण हैं—भारतभूषण-जीने उनमें या तो समकालीन सामाजिक प्रवृत्तियोंपर व्यंग्य किये हैं अथवा व्यक्ति-विशेषको अपनी कविताका इष्ट रखा है। अपने तुक्तक-संग्रहकी भूमिकामें उन्होंने व्यक्तिपरक तुक्तकोंको बड़े संकोचके साथ उद्धृत किया है, किन्तु मुझे तो वे उतने ही प्राणवान् लगे जितने कि उनके अन्य तुक्तक। हाँ, उनका अध्ययन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वाग्रहमुक्त दृष्टिसे करना होगा। भारतभूषणजीको कवि श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' के विषयमें लिखित तुक्तकके विषयमें विशेष संकोच रहा है, किन्तु सच पूछें तो यह रचना अपनेमें बहुत सशक्त बन पड़ी है—

काँटोंके बिना ही जब मिले थे हमें सुमन
मैंने कहा: 'आपका कहाँ है वह गन्ध-धन ?'
भौंह चढ़ा, बाहु बढ़ा बोले, 'मतिमन्द तू
स्वार्थी है, खोजता है यदि मात्र गन्ध तू
कण्टक नहीं हैं, यही है क्या कम आकर्षण ?'

—डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त

• हिन्दी जैन भक्ति काव्य और कवि

डॉ० प्रेमसागर जैन

यह एक विचित्र बात है कि भारतके बहुभागकी जिस तत्कालीन लोक-भाषाको अबसे लगभग एक हज़ार वर्ष पूर्व नवागत मध्य एशियाई मुसलमानोंने हिन्द (भारत) की जनभाषा–मातृभाषा होनेके कारण हिन्दी नाम दिया था और कई शताब्दियों पर्यन्त इस नामका व्यवहार एवं प्रचार करके उसे रूढ़ कर दिया, आज भारतके उन्हीं मुसलमानोंका अधिकांश उसके इतिहास, स्वरूप एवं स्वतन्त्र अस्तित्वका विरोध कर रहा है। उस समय संस्कृत भाषासे स्वतन्त्र इस भाषा, देशी भाषा, या जनबोलीका अस्तित्व सहज स्वीकार कर लिया गया था और यह स्वाभाविक ही था। उसके उपरान्त लगभग चार सौ वर्ष पर्यन्त तो यह हिन्दी मुसलमान सुल्तानों और उनके सूबेदारोंके राजकार्यकी भी मुख्य भाषा बनी रही। भारतीय जनसाधारणकी तो वह मातृभाषा थी ही, उनके समस्त लोकव्यवहार एवं साहित्य-रचनाका भी प्रधान माध्यम वही थी।

लगभग दो-तीन सौ वर्ष यह भाषा अपनी जननी अपभ्रंशके उदरमें पोषण पाती रही और १०-११वीं शतीमें जब यह अपभ्रंशसे निकसित होकर उदरसे आ रही थी प्रायः तभीसे हिन्दी नाम भी धारण कर चली। इस हिन्दी भाषा और उसके साहित्यके विकास और इतिहासकी शोध-खोज एवं व्यवस्थित निर्माण अभी गत एक सौ वर्षोंमें हुआ है और उक्त इतिहासमें उसके १९वीं शतीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यके पूर्वके इतिहासको प्रायः चार युगोंमें विभाजित किया जाता है : प्रथम लगभग दो सौ वर्षका युग आदिकाल, सिद्धकाल, अथवा वीरगाथाकाल कहलाता है, दूसरे दो-ढाई सौ वर्षका युग सन्तकाल, प्रेमगाथाकाल अथवा निर्गुणभक्तिकाल कहलाता है, तीसरा लगभग दो सौ वर्षका युग सगुण भक्ति अथवा राम एवं कृष्णभक्तिकाल कहलाता है; उसके उपरान्त लगभग एक सौ वर्षका युग रीतिकाल कहलाता है, जिसके पश्चात् आधुनिक युगका प्रारम्भ मान्य किया जाता है। युगविशेषमें साहित्यिक प्रवृत्तिविशेषकी प्रमुखताके आधारपर ही यह युगविभाजन किया गया है।

किन्तु हिन्दी साहित्यके इन आधुनिक इतिहासोंमें एक सबसे बड़ा दोष यह रहा है कि उनमें तथाकथित हिन्दू धर्मके अनुयायियों-द्वारा रचित प्रायः प्रत्येक कृतिको शुद्ध लौकिक, धर्मनिरपेक्ष साहित्य मान लिया गया है और उन्हीं कृतियोंकी समकालीन एवं समकक्ष जैनों-द्वारा रचित कृतियोंको धार्मिक या साम्प्रदायिक सूचित किया गया। तुलसीका रामचरितमानस और केशवकी रामचन्द्रिका शुद्ध साहित्यिक हैं किन्तु जैन कवियों-द्वारा रचित रामचरित, कृष्ण-चरित अथवा तीर्थंकरोंके चरित धार्मिक और साम्प्रदायिक हैं! कृष्ण भक्तिसे ओत-प्रोत सूर और मीराके पद शुद्ध साहित्यिक हैं किन्तु बनारसी, द्यानत, भूधर, आनन्दघन, रंगविजय, यशोविजय आदिके जिनेन्द्रभक्तिपरक पद्य साम्प्रदायिक हैं, अस्तु साहित्यिक दृष्टिसे अध्ययन योग्य नहीं हैं!

यह भी नहीं कहा जा सकता कि हिन्दीके विपुल मध्य-कालीन जैन साहित्यका हिन्दी प्रेमियों और उसके इतिहासके लिखनेवालोंको ज्ञान ही नहीं था। अबसे लगभग पचास वर्ष पूर्व स्व० पं० नाथूराम प्रेमीने हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अधिवेशनमें पठित अपने निबन्धमें उक्त हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त परिचय दिया था। वह निबन्ध तभी प्रकाशित भी हो गया था। उसके लगभग तीस वर्ष पश्चात् स्व० बा० कामताप्रसाद जैनका 'हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास' प्रकाशित हुआ, तदनन्तर मेरी पुस्तक 'जैन साहित्य' और डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्रीकी पुस्तक 'हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन' (२ भाग) प्रकाशित हुई। राजस्थान आदिके अनेक भण्डारोंकी सूचियों, कई प्रशस्ति संग्रहों तथा जैन हितैषी, जैन सिद्धान्त भास्कर, अनेकान्त, राजस्थान भारती, व्रजभारती, जैन सन्देश-शोधांक आदि पत्रिकाओंमें सैकड़ों लेख हिन्दी जैन लेखकों एवं उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतियोंके सम्बन्धमें प्रकाशित हो चुके हैं। तथापि विश्वविद्यालयों, हिन्दीकी अखिल भारतीय साहित्यिक संस्थाओं एवं शोध संस्थानोंके स्तरपर तथा हिन्दीके जाने-माने समीक्षकों, अध्येताओं, प्राध्यापकों एवं इतिहासकारों द्वारा हिन्दीका पुरातन जैन साहित्य प्रायः उपेक्षित ही रहा है। उसके विभिन्न दृष्टियोंसे विशेषाध्ययन, तुलनात्मक विवेचन, मूल्यांकन आदिकी ओर जो ध्यान दिया गया है वह प्रायः नगण्य है।

गत दस-पन्द्रह वर्षोंमें कतिपय विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीके अध्ययनमें अच्छी प्रगति हुई है। और कुछ अनुसन्धित्सुओंने पी० एच० डी० की उपाधिके लिए हिन्दी जैन-साहित्यको भी अपनी शोध-खोजका विषय बनाया है। डॉ० प्रेमसागर जैनका भी कार्य इस सम्बन्धमें उल्लेखनीय है। अपने महानिबन्धको उन्होंने दो खण्डोंमें प्रकाशित किया है – 'जैन भक्ति काव्यकी पृष्ठभूमि' और 'हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि'। प्रथम खण्डमें विद्वान् लेखकने जैन परम्परासम्मत भक्तिका स्वरूप, उसके अंग, भेद आदिका विवेचन करते हुए उक्त परम्परामें भक्ति-तत्त्वकी प्राचीनता स्थापित करनेका प्रयास किया है। और प्रस्तुत खण्ड–'हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि'में जैन भक्तिकी प्रवृत्तियोंका निर्देश, वि० सं० १४००से १८०० पर्यन्त हुए जैन भक्त-कवियों और उनकी कृतियोंका परिचय, जैन भक्ति-काव्यके भावपक्ष और कलापक्षका विवेचन तथा जैनेतर निर्गुण एवं सगुण भक्तिके साथ जैन भक्तिका संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करनेका स्तुत्य प्रयास किया है।

विद्वान् लेखकने विषयसम्बन्धी सूचनाओंको प्रामाणिक रूपसे प्रस्तुत करनेमें सफलता प्राप्त की है। विवेचनमें उसकी दृष्टि समीक्षात्मक एवं निष्पक्ष रही है। उसके अनेक मन्तव्यों, धारणाओं अथवा निष्कर्षोंसे कतिपय विद्वानोंको यत्र-तत्र मतभेद हो सकता है, किन्तु लेखकके परिश्रम, अध्यवसाय एवं पैनी आलोक दृष्टिमें शंका नहीं की जा सकती। पुरातन हिन्दी जैन-साहित्यके भक्ति पक्षपर ऐसा विशद प्रकाश डालनेवाली अन्य कोई पुस्तक अभीतक प्रकाशमें नहीं आयी है। इस पुस्तकके प्रकाशनसे यह आशा की जाती है कि तथाकथित भक्तियुगीन हिन्दी साहित्यके नवीन विवेचनोंमें तत्कालीन एवं समकक्ष हिन्दीकी भक्तिपरक जैन रचनाओंको समुचित स्थान मिलेगा।

इस सम्बन्धमें एक बात ध्यातव्य है – ऐसा लगता है कि प्रस्तुत पुस्तकमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान् लेखक स्वयंको हिन्दी साहित्यके इतिहासकारों एवं समीक्षाशास्त्रियों-द्वारा निर्धारित एवं निर्बन्धित दायरोंसे बाहर निकालनेमें कुछ असमर्थ-सा रहा है। वह 'भक्ति' की परिभाषा, व्याख्या, स्वरूप-विवेचन, उसके रूपों, भेदों, अंगों, प्रवृत्तियों यहाँ तक कि तथाकथित भक्ति-युगकी कालावधियोंके विषयमें भी स्वयंको कुछ बँधा-बँधा-सा पा रहा है। जैनेतर हिन्दी साहित्यका युग-विभाजन हिन्दी जैन-साहित्यपर यथावत् लागू नहीं होता। जैन लेखकों और उनकी रचनाओंपर उनके समकालीन जैनेतर लेखकोंकी प्रवृत्तियों, शैलियों आदिका प्रभाव पड़ना तथा दोनों पक्षोंमे परस्पर अल्पाधिक आदान-प्रदान होना तो स्वाभाविक है किन्तु सामान्य हिन्दू जगत्के मध्य जैन-जगत् अपना स्वतन्त्र अस्तित्व भी अक्षुण्ण बनाये रहा और उसके साहित्यमें जो समय-समयपर मोड़ आये उनके अनेक अन्तरंग कारण भी रहे, उसकी अपनी अनेक स्वभावगत विशिष्टताएँ भी रहीं। उदाहरणार्थ, हिन्दी जैन साहित्यके इतिहासमें वीरगाथाकाल और रीतिकाल नामके कोई युग सम्भवतया हैं ही नहीं। उसकी तथाकथित निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति सर्वथा पृथक्-पृथक् दो वस्तुएँ या धाराएँ हैं ही नहीं – वह तो एक ही भावके दो स्तर हैं, एक ही कविकी प्रायः एक ही रचनामें दोनों भाव साथ-साथ दृष्टिगोचर होते हैं, विद्वान् लेखकने वि० स० १८०० (अर्थात् १८वीं शती ई० के मध्य) के लगभग ही हिन्दीके भक्त जैन-कवियों और काव्योंकी परम्परा समाप्त कर दी। जब कि उसके आगेके लगभग एक सौ वर्षोंमें त्यागी बाबा दौलतराम, भागचन्द्र, बुधजन, यति नयनसुखदास, कवि वृन्दावनदास-जैसे अनेक उच्चकोटिके भक्त जैन कवि हो गये हैं। कम-से-कम एक परिशिष्टमें ही उनका परिचय दे दिया जाता तो अच्छा रहता।

—डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

• करकण्डचरिउ

अपभ्रंश साहित्य अबतक कम ही प्रकाशमें आया है, पर जो आया है उसने इतना तो उजागर किया ही कि भारतीय वाङ्मयका अध्ययन अपभ्रंश साहित्यके बिना पूरा नहीं हो सकता।

मुनि कनकामरकृत करकण्डचरिउ इसमें भी विशेष है। अपभ्रंश भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और साहित्यकी दृष्टिसे यह कृति जितनी महत्त्वकी है, उतनी ही भारतीय सांस्कृतिक इतिहासकी दृष्टिसे भी। कथाकी रोचकता, छन्दोंकी सरस गेयता, रस और अलंकारोंकी मधुरता तथा सरल, सुस्पष्ट, प्रांजल रचनाशैलीके कारण यह प्रबुद्ध पाठकोंको जितना आकर्षित करती है, उतना ही साधारण पाठकोंको भी।

करकण्डचरिउ सन् १९३४ में कारंजासे पहली बार प्रकाशित हुआ था, और तभीसे इसने विद्वत्समाजमें यह स्थान बनाया कि कई विश्वविद्यालयोंको उपाधि तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओंके लिए निर्धारित किया गया। अब उसीका नया संस्करण भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशमें आया है। नया इसलिए भी है कि इसमें पहले संस्करणकी अपेक्षा पाठ-शुद्धि ही नहीं की गयी है प्रत्युत ह्रस्व और दीर्घ 'ए' तथा उनकी मात्रा एवं अनुनासिक और अनुस्वारके पृथक् संकेतोंका समावेश, हिन्दी-अँगरेज़ी प्रस्तावनामें परिवर्द्धन तथा सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद भी जोड़ दिया गया है। प्रस्तावनामें विद्वान् सम्पादक डॉ० हीरालाल जैनने ग्रन्थका ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिसे सर्वांगपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया है।

करकण्डचरिउ 'प्रत्येक बुद्ध'के रूपमें जैन और बौद्ध परम्परामें प्रसिद्ध महाराज करकण्डके जीवनपर लिखित एक ललित कृति है। पालि साहित्यके कुम्भकार जातकमें करकण्ड राजाकी कथा आयी है।

उत्तराध्ययनकी देवेन्द्र गणिकृत टीकामें भी करकण्डु राजाकी कथा आयी है, पर इन दोनों कथाओंकी अपेक्षा करकण्डचरिउकी कथा अधिक विस्तृत तथा अधिक सांगोपांग है।

प्रस्तुत संस्करणके परिशिष्टमें कुम्भकार जातक तथा उत्तराध्ययन टीकाकी कथा दे देनेसे पाठकको एक साथ पूरी जानकारी मिल जाती है। ग्रन्थके अन्तमें दिया गया ५२ पृष्ठोंका शब्दकोश विशेष महत्त्व और उपयोगका है। जैसा कि ग्रन्थभाषा सम्पादकीयमें डॉ० आ० ने० उपाध्येने लिखा है – "डॉ० हीरालाल जैन अपभ्रंश भाषा और साहित्यसम्बन्धी अध्ययनके हमारे एक पथनिर्माता है।" और इसीलिए करकण्डचरिउका उनके द्वारा सम्पादित यह संस्करण अपभ्रंश ग्रन्थोंके सम्पादनके लिए आदर्श है।

—(डॉ०) गोकुलचन्द्र जैन

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार

प्रगतिके बढ़ते चरण

इस योजनाके अधीन इस समय तीन पुरस्कारोंका काम एक साथ आगे बढ़ रहा है। प्रथम पुरस्कार (१९६५) के लिए चुनी गयीं सात भाषाओं (हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, बँगला, तेलुगु तथा उर्दू) की सात पुस्तकें अन्तिम निर्णयके लिए प्रवर परिषद्के समक्ष प्रस्तुत होनेवाली हैं। उससे पहलेकी आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। सात पुस्तकोंमें-से एक कृतिको निश्चित रूपसे स्तरीय और बहुपठित मानकर अन्य चुनी हुई पुस्तकोंका तुलनात्मक परीक्षण ऐसे द्विभाषी समीक्षकों और प्रामाणिक साहित्य-अध्येताओंसे करवाया जा रहा है जो दोनों भाषाओंके मर्मी विद्वान् हैं, किन्तु सम्भवतया जिनकी मातृभाषा समीक्षाधीन कृतियोंकी भाषासे भिन्न भारतीय भाषा है। द्वितीय पुरस्कार (१९६६) का भी लगभग एक-तिहाई कार्य समाप्त हो चुका है। चौदहों भाषाओंकी परामर्श-समितियोंके निर्णय प्राप्त हो चुके हैं। भाषा-वर्ग-समितियोंका गठन प्रारम्भ हो गया है। तृतीय पुरस्कार (१९६७) के लिए प्रस्ताव-पत्र आमन्त्रित किये जाने-वाले हैं। नये प्रस्ताव-पत्र तथा अद्यतन संशोधित-समन्वित योजना-पुस्तिका छप रही है।

तीनों पुरस्कारोंके लिए विचारणीय पुस्तकोंकी जो प्रकाशन-कालावधियाँ रहीं, वे इस प्रकार हैं—

प्रथम पुरस्कार (१९६५)····१९२० से १९५८ तक (३९ वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार (१९६६) ···१९२५ से १९५९ तक (३५ वर्ष)
तृतीय पुरस्कार (१९६७)····१९३५ से १९६० तक (२६ वर्ष)

कालावधियोंके निर्धारणमें प्रवर परिषद्की दृष्टि यह रही है कि हम ख्याति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त जीवित साहित्यकारोंकी कृतियोंको पुरस्कार-अवधिके अन्तर्गत आनेका उचित अवसर तो दें किन्तु प्रत्येक वर्ष समसामयिक साहित्यपर अधिकाधिक ध्यान केन्द्रित करते चले जायें ताकि नये सृजनको विशेष प्रोत्साहन मिले।

तृतीय पुरस्कारके लिए पुस्तक प्रस्ताव-पत्र भारतीय ज्ञानपीठके कार्यालयमें ३१ अक्टूबर १९६५ तक प्राप्त हो जायेंगे।

जिन लेखकों, आलोचकों, प्राध्यापकों एवं प्रबुद्ध पाठकोंके पतोंमें इस बीच कोई परिवर्तन हुआ हो, वे कृपया निम्न पतेपर हमें सूचित करनेका कष्ट करें ताकि पुस्तक-प्रस्ताव-पत्र उन्हें सही पतेपर शीघ्र ही भेजा जा सके—

मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, ९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस बार हमें भारतीय भाषाओंके साहित्यिक-जगत्का पहलेसे भी अधिक व्यापक सहयोग प्राप्त होगा।

गत तीस वर्षों से हिन्दी प्रचार-कार्य में रत विशिष्ट
साहित्यकार पं० अनुसूयाप्रसाद पाठक के दो अमूल्य ग्रन्थ

● **तमसा की गोद में** : खण्डकाव्य, पृ० सं० १६०, आकार २० × ३० क्राउन, मूल्य तीन रुपये

पुस्तक सर्वांगीण नवीन है। काव्य रचना तो नवीन है ही। कविके चिन्तनका ढंग, सांस्कृतिक आस्था, अनुभूति, नयी चेतनाके साथ रस–अलंकार, शब्द–छन्द गति विशिष्टतासे ओत-प्रोत है। पुस्तक अपनेमें पूर्ण तथा संग्रहणीय है।

● **जहाना** : उपन्यास : पृ० सं० १८० साइज २० × ३० नयनाभिराम छपाई आकर्षक कवर कलात्मक मुद्रण। मूल्य तीन रुपये

ग्रामीण समस्यापर आधारित सत्यकथा है। इसलिए प्रारम्भसे अन्त तक पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता।

प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार**
बाँका बाज़ार, कटक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

* **गंगा लहरी :** सं० श्री सुधाकर पाण्डेय। यह पुस्तक कई विश्वविद्यालयोंके बी० ए० के पाठ्यक्रममें निर्धारित है। १.२५

* **बन्दीकी चेतना :** श्री कमलापति त्रिपाठी। जीवनके सहज अन्तर्द्वन्द्वसे प्रसूत मनोविश्लेषणात्मक निबन्धोंका पत्रात्मक शैलीमें लिखा ग्रन्थ। ५.००

* **मतिराम ग्रन्थावली :** सं० स्व० कृष्णविहारी मिश्र एवं स्व० डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र। यह पुस्तक मतिरामका सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करती है। ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित। पुनः सम्पादित एवं परिवर्द्धित संस्करण। इस शोधयुगपर प्रस्तुत पुस्तकमें श्री करुणापति त्रिपाठीकी गम्भीर अनुशीलनयुक्त भूमिका है। १२.५०

* **मधुमालती वार्ता :** सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त। हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंकी परम्परामें 'मधुमालती' का प्रेमाख्यान कई लेखकों-द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किन्तु चतुर्भुजदासकी यह रचना उन सबसे भिन्न लोकव्यवहारपरक है। यह ग्रन्थ मुद्रित रूपमें पहली बार हिन्दी संसारके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। ८.००

* **खालिकबारी :** सं० श्रीराम शर्मा। अमीर खुसरोकृत खालिकबारीका नाम हिन्दी साहित्यमें विख्यात है। आरम्भमें भूमिका और अन्तमें हिन्दी शब्दोंका भाषा-वैज्ञानिक अभिधान। २.७५

* **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण :** दो खण्डोंमें सन् १९०० से १९५५ तकके प्राप्त हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय।

मूल्य प्रति खण्ड ३०.००

नागरी प्रचारिणी सभा

वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी डायरी

डायरीके तीन पृष्ठ : कि तथ्य
अब स्वयं बोलें

लक्ष्मीशंकर व्यास

राजभाषा हिन्दीकी प्रगतिको अवरुद्ध करनेवाली राजनीतिक प्रक्रियाओंके विरुद्ध हिन्दी जगत्‌की उग्र प्रतिक्रियाने भारत सरकारको भी प्रभावित किया है। इसी प्रभावके कारण केन्द्रीय सरकार राजभाषा अधिनियममें संशोधनका विधेयक लानेका निर्णय करके भी स्वयं हिचक रही है। इस हिचकका कारण मनोवैज्ञानिक तथा जनताकी क्षोभ भावना है। राष्ट्रको आधारभूत नीतिके सन्दर्भमें जो सर्व-सम्मत निश्चय पन्द्रह वर्ष पूर्व ही किया जा चुका है, अब उसे बदलनेका दुस्साहस सामान्य नहीं है। इस प्रकार सर्वसत्ता-सम्पन्न भारतीय गणराज्यकी आधारभूत नीतियोंको बदला जाता रहा तो भारतीय गणराज्यकी गौरव-परम्परा कहाँ रहेगी ? स्वयं भारत सरकारके केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलमें प्रस्तावित संशोधनपर गहरा मतभेद है। यही कारण है कि अनेक बार केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलकी बैठकों तथा काँग्रेस संसदीय दलकी बैठकोंमें कोई निर्णय नहीं हो सका है।

कुछ समय पूर्व मैसूरके श्री हनुमन्तैयाने प्रधान मन्त्री श्री शास्त्रीके सम्मुख यह प्रस्ताव रखा था कि कश्मीरमें पाकिस्तानके नये हमलेको देखते हुए भाषा-सम्बन्धी संशोधन विधेयकको स्थगित कर दिया जाये। इसी आधारपर अगस्तके अन्तिम सप्ताहमें प्रधान मन्त्री श्री शास्त्रीके सुझावपर संसद्‌में अहिन्दी प्रदेशोंके सदस्योंकी बैठक बुलायी गयी। इस बैठकमें स्वराष्ट्र मन्त्री श्री नन्दाने स्वयं कहा कि देशके सम्मुख जैसी परिस्थिति है उसे देखते हुए सम्प्रति विवादास्पद संशोधन विधेयकको प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए। बैठकमें मद्रासके सदस्योंके अतिरिक्त प्रायः सभी अहिन्दी प्रदेशोंके संसद् सदस्योंने इस बातपर बल दिया कि प्रस्तावित संशोधन अभी स्थगित किया जाये। अनेक सदस्योंने तो संशोधन विधेयकके स्वरूपपर ही आपत्ति की और कहा कि जिन बातोंपर काँग्रेस कार्यसमितिकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बैठकमें बता दिया गया था, उन्हें विधेयकमें न रखकर अलग प्रस्तावमें क्यों रखा जा रहा है? प्रस्तावमें त्रिभाषा सूत्रको जिस रूपमें रखा गया है और चौदहों क्षेत्रीय भाषाओंके सम्बन्धमें जो व्यवस्था की गयी है उससे हिन्दीको शीघ्रसे शीघ्र राजभाषा न बनाकर सदा-सर्वदा अँगरेज़ीको ही बनाये रखनेका कुचक्र रचा गया है। स्वराष्ट्र मन्त्री श्री नन्दाने यह बात स्वीकार की कि यदि सदस्य चाहें तो संशोधन विधेयकका स्वरूप बदला जा सकता है। आशय यह कि त्रिभाषा सूत्रको भी उसका अंग बनाया जा सकता है। बैठकका निष्कर्ष यही निकला कि इस प्रश्नपर पुनः केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलकी बैठक हो। केवल मद्रासी सदस्योंको छोड़कर अन्य सभी अहिन्दी राज्योंके संसद् सदस्य संशोधन विधेयकको उपस्थित करनेके पक्षमें नहीं हैं, यह बात निर्विवाद रूपसे स्पष्ट हो गयी। देशमें जैसी विषम स्थिति उत्पन्न है उसमें ऐसे विवादास्पद विधेयकको लाना उचित नहीं है। लक्षणोंसे यही आशा है कि भारत सरकार संशोधन विधेयकको संसद्के समक्ष सम्प्रति उपस्थित नहीं करेगी।

० ० ० ० ० ० ०

राजधानी दिल्लीमें १५–१६ अगस्तको जो राजभाषा आन्दोलन हुआ उसमें कांग्रेस तथा भारत सरकारकी भाषानीतिकी कटु आलोचना की गयी। सम्मेलनमें यह बात भी स्पष्ट कर दी गयी कि यदि संशोधन विधेयकका जन-प्रतिनिधियोंने संसद्में विरोध न किया तो आगामी चुनावमें उन्हें वोट नहीं दिया जायेगा। सम्मेलनका सभापतित्व किया डॉक्टर हरेकृष्ण महताबने और उद्घाटनकर्ता थे श्री मुरारजी देसाई। सम्मेलनकी एक विशेषता यह रही कि अहिन्दी-भाषी क्षेत्रोंके विद्वानोंने इसमें भाग लिया। सम्मेलनमें सुझाव तो अनेक प्रकारके आये किन्तु सर्वसम्मतिसे दो प्रस्ताव स्वीकार किये गये। एकमें कहा गया कि राजभाषा अधिनियममें संशोधनका उग्र विरोध किया जाता है और दूसरेमें हिन्दीभाषी क्षेत्रोंके संसद् सदस्योंसे संकल्प लेनेको कहा गया कि वे प्रस्तावित संशोधनका विरोध करें। श्री देसाई तथा श्री महताब दोनोंके भाषणोंका सार यही रहा कि भारतमें अँगरेज़ीका प्रयोग राजकाजमें अब न किया जाये। स्वतन्त्र देशमें किसी विदेशी भाषाको राष्ट्रभाषा या राजभाषाका पद नहीं दिया जा सकता।

० ० ० ० ० ०

राजभाषा हिन्दीकी दृष्टिसे सितम्बरका महीना इसलिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है कि १४ सितम्बर, १९४९ को ही भारतकी संविधान सभामें सर्वसम्मतिसे हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेका ऐतिहासिक निर्णय किया गया था। इसीलिए प्रतिवर्ष १४ सितम्बरको सारे देशमें हिन्दी-दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष इसका महत्त्व विशेष हो गया है। एक तो इस कारण कि संविधानके निर्देशानुसार सन् '६५ की २६ जनवरीसे हिन्दीको भारत सरकारकी एकमात्र राजभाषा हो जाना चाहिए था। यह निर्णय तो लागू किया गया किन्तु उसका प्रबल विरोध अँगरेज़ीके मानसपुत्रोंने हिंसापूर्ण आन्दोलनके द्वारा किया है। इस प्रकार हमारे पवित्र संविधानके संकल्पको जो चुनौती दी गयी है वह प्रत्येक स्वाभिमानी राष्ट्रप्रेमीके लिए चुनौती है। सन् १९६३ के राजभाषा अधिनियमके अनुसार सन् '६५ के बाद भी अँगरेज़ीको बनाये रखनेकी व्यवस्था स्वतन्त्र देशके सुनामपर कलंक है। इसे और भी कालिमापूर्ण बनानेके लिए अब जो संशोधन विधेयक लानेकी बात हो रही है। उससे अनन्त काल तक देशमें अँगरेज़ीको बनाये रखा जा सकेगा। स्पष्ट है—हमारी स्वाधीनताको खण्डित करनेका कुचक्र चलाया जा रहा है। १४ सितम्बरको सारे देशमें हिन्दी दिवसका आयोजन कर न केवल हिन्दी प्रदेशोंकी जनताको अपितु समग्र देशकी जनताको यह संकल्प लेना है कि राजभाषा हिन्दीको उसका संवैधानिक अधिकार व्यवहार रूपमें प्रदान किया जाये तथा प्रस्तावित संशोधनके द्वारा पवित्र संविधानकी हत्या न की जाये !

● ●

[पृष्ठ २२ का शेष]

गया है। अन्तमें स्त्री गर्भवती हो जाती है और युवक बाहर आ जाता है। परन्तु इस समय तक उसने एक ऐसा आविष्कार कर लिया है जिसके सफल होनेसे सारे गाँवका बड़ा ही लाभ हो सकता है – वे अपनी संकटमय परिस्थितिसे बच सकते हैं। इसलिए युवक भागता नहीं और स्त्रीके अस्पतालसे लौटनेकी प्रतीक्षा करता रहता है। उपन्यास अत्यन्त विचारोत्तेजक है। कहें तो विश्व-साहित्यकी यह अमूल्य निधि भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नए प्रकाशन

• **भारतकी संस्कृति और कला** : राधाकमल मुकर्जी १२.००

सभ्यता और संस्कृतिके अधिकारी विद्वान् श्री राधाकमल मुकर्जीके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी ग्रन्थका हिन्दी रूपान्तर।

• **संघर्ष** (उपन्यास) : हरमन मेलविले ६.००

हरमन मेलविलेके संसार प्रसिद्ध उपन्यास 'Moby Dick' का हिन्दी रूपान्तर। समरसेट मॉमके विचारमें यह संसारके दस श्रेष्ठतम उपन्यासोंमें-से एक है।

• **नागमणि** (उपन्यास) : अमृता प्रोतम २.५०

यह साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त पंजाब कोकिला अमृता प्रीतमका नवीनतम उत्कृष्ट, साहसिक एवं रोमैण्टिक उपन्यास है।

• **नया समाज** : डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा १.००

इसमें सहकारिता आन्दोलन और उपभोक्ता भण्डारोंपर आधारित नये समाजकी एक झलक प्रस्तुत की गयी है।

• **हिन्दोस्तान हमारा** : धर्मपाल शास्त्री १.५०

इस बालोपयोगी सचित्र पुस्तकमें 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्ताँ हमारा' को अत्यन्त रोचक शैलीमें प्रामाणिक जानकारी सहित चरितार्थ किया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतविश्व
कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ

जो केवल मनोरंजनके लिए नहीं
बहुत कुछ सोचने और पानेके लिए हैं

• जापानी उपन्यासकार तानिज़ाकीका निधन

जापानके श्रेष्ठतम उपन्यासकार जूनिचिरो तानिज़ाकीका अगस्तके प्रथम सप्ताहमें देहान्त हो गया। वे ७९ वर्षके थे।

तानिज़ाकी टोकियोंमें जनमे। वहींके राजकीय विश्वविद्यालयमें आपने जापानी साहित्यका अध्ययन किया।

युवावस्थामें तानिज़ाकीपर आस्कर वाइल्डका गहरा प्रभाव था। १९२३ के भूकम्पके बाद वे क्योटो ओसको जाकर बस गये। वहीं उनके विचारोंमें परिवर्तन आया। वे अतीतमें खो गये। और इसी नगरमें आपने अपने सर्वप्रसिद्ध उपन्यास 'माकियोकर बहनें' लिखा।

तानिज़ाकीको १९४९ में साहित्यका राजकीय पुरस्कार मिला। उन्होंने यौन सम्बन्धों और विवाहपर ११९ उपन्यास लिखे। उन्हें जापानका डी० एच० लारेन्स कहा जाता है।

• एक प्रकाशन संस्थान : पाँच साहित्यिक पुरस्कार

फ़ॉसेट नामक एक प्रसिद्ध अमेरिकी प्रकाशन संस्थानसे प्रकाशित पुस्तकोंपर इस वर्ष विश्वके पाँच बड़े साहित्यिक पुरस्कार घोषित किये गये हैं। शर्ले एन ग्राहके उपन्यास 'कीपर्स ऑव द हाउस' पर सन् '६५ का पुलिट्ज़र पुरस्कार; साल बैलोके उपन्यास 'हरज़ोग' पर दो पुरस्कार – एक तो राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा दूसरा प्रिक्स अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार; हैरी कैमल मैनका उपन्यास 'फ्राइडे द थ्री स्लैप्ट लेट' अमेरिकी लेखकोंके एक संघ-द्वारा पुरस्कृत हुआ है; तथा फासेट-द्वारा प्रकाशित उपन्यास 'सियान्स ऑन ए वैट आफ़्टर नून' (लेखक : मार्क मैक्शाने) पर आधारित फ़िल्मको एम० डब्ल्यू० ए० पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

• पुस्तक-विक्रेताओंके लिए एक उपयोगी कार्ड

इटलीके एक प्रकाशकने अपने प्रकाशनोंकी बिक्री बढ़ानेमें एक कार्डसे जितना काम निकाला है, उतना शायद सैकड़ों एजेण्ट रखकर तथा हजारों रुपयोंके विज्ञापन देकर भी नहीं निकल सकता था।

यह प्रकाशक अपनी किताबोंमें एक छपा कार्ड डाल देता है जिसपर यह लिखा रहता है : 'यदि आपको यह पुस्तक पसन्द न आये तो कृपया किसी और-को दे दें। रुचियाँ भिन्न होती हैं। हो सकता है, कोई दूसरा व्यक्ति इसे पसन्द करे, पर यदि आपको यह पुस्तक रुचिकर लगे तो इसे किसीको पढ़नेके लिए मत दीजिए। ऐसा करके आप अपने प्रिय लेखकके प्रति अन्याय करेंगे। दूसरोंको बता भर दें, वे स्वयं अपनी प्रतियाँ खरीद लेंगे।'

• चिर महत्त्वके बारह लेखक

बुक्स ऐण्ड बुकमैन नामक एक ब्रिटिश पत्रिकाने हालमें ही अपने पाठकोंके लिए बारह अमेरिकी उपन्यासकारोंकी ऐसी कृतियोंकी सूची प्रस्तुत की है जो चिरकाल तक साहित्यमें टिकी रहेंगी। अमेरिकी सूचनाविभाग-द्वारा ही यह सूची बनायी गयी है। उपन्यासकारों तथा उपन्यासोंके नाम इस प्रकार हैं : जेम्स बाल्डविनका 'एनदर कन्ट्री'; सॉल बैलोका 'एडवेंचर्स ऑव ग्रेजी मार्च'; ट्रूमन कपोटका 'दि ग्रास हार्प'; जॉन वीवरका 'दी बैपशाट क्रानिकल', जोज़ेफ हैलरका 'कैच २२', जैक केरुआकका 'आन दि रोड', नार्मन मेलरका 'दि नेकड एण्ड दि डैड', बर्नर्ड मैलायडकी 'ए न्यू लाइफ़', फ़िलिप रॉथकी 'लाई डाउन इन डार्कनैस', जॉन उपडिकेकी 'द पूअरहाउस फ़ेयर'।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरोशिमा के फूल

शीघ्र प्रकाशित होनेवाली इस पुस्तक में

- तरुणी यू
- धीरे-धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर होनेवाले उसके पति फूमियो
- जिस मनुष्य से प्रेम करती थी उसके सम्पर्क से विकृत बीभत्स सन्तान न उत्पन्न हो, इस भय के कारण उस व्यक्ति से दूर भागने वाली यू की बहन

और

- जलती मशाल की तरह नदी में कूद जानेवाली उसकी माँ

की कहानी है

इसके अतिरिक्त यह कहानी ऐसे अन्य अनेक पात्रों की है जो पहले स्वस्थ और सुन्दर थे लेकिन ऐटम बम की विभीषिका के बाद अंगहीन और भयावह रूप से कुरूप हो गये। और उनके बीच चौदह वर्ष पहले **हिरोशिमा** पर बम गिरानेवाले देश का निवासी आता है।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स

द्वारा प्रकाशित

दो रुपये सीरीज़ की उत्कृष्ट पुस्तकें

माँ	(उपन्यास)	गोर्की
पिता और पुत्र	(उपन्यास)	तुर्गनेव
एक औरत की ज़िन्दगी	(उपन्यास)	मोपासाँ
वैशाली की नगरवधू	(उपन्यास)	आचार्य चतुरसेन
सोमनाथ	(उपन्यास)	आचार्य चतुरसेन
कब तक पुकारूँ	(उपन्यास)	रांगेय राघव
प्रतिशोध	(उपन्यास)	गुरुदत्त
प्रवंचना	(उपन्यास)	गुरुदत्त
तब और अब	(उपन्यास)	गुरुदत्त
गिरती दीवारें	(उपन्यास)	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
विनाश के बादल	(उपन्यास)	प्रतापनारायण श्रीवास्तव

- विश्व ज्ञानकोश : अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार
- भारत ज्ञानकोश : अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार
- विश्वभ्रमण : सेठ गोविन्ददास
- भारत के क्रान्तिकारी मन्मथनाथ गुप्त
- जापान : देश और निवासी : हरिदत्त शर्मा
- जर्मनी : देश और निवासी उदयनारायण तिवारी

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०

शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दा म्प त्य वि शे षां क'

नवम्बर १९६५ :: पृष्ठ लगभग ४०० :: मूल्य ३.००

- युगल-युग्म चित्रों सहित रंगीन सज्जा
- परिचर्चा, संस्मरण, डायरी, कहानी, पत्र, एकांका···सभी विधाएँ।

ज्ञा नो द य

इस विशेषांककी लेखक-सूचीमें विशिष्ट :

○ परिसंवादमें कुछ स्थानीय, कुछ अतिथि चर्चाकार ○ भारतभूषण अग्रवाल ○ रामधारी सिंह दिनकर ○ अमृतलाल नागर ○ यशपाल ○ इलाचन्द्र जोशी ○ देवराज ○ भगवतशरण उपाध्याय ○ भदन्त आनन्द कौसल्यायन ○ रमेश कुन्तलमेघ ○ प्रभाकर माचवे ○ रंगनाथ राकेश ○ राममनोहर लोहिया ○ भोलाशंकर व्यास ○ तारकेश्वरी सिन्हा, कमला रत्नम् ○ मन्मथनाथ गुप्त ○ रमेश बेदी ○ कुन्था जैन ○ सोमावीरा, शोभिता जैन, सुनीता ○ मनोहरश्याम जोशी ○ विद्यानिवास मिश्र ○ श्रीलाल शुक्ल ○ हरिशंकर परसाई ○ शरद जोशी ○ केशवचन्द्र वर्मा ○ गोपालप्रसाद व्यास ○ काका हाथरसी ○ श्याम परमार ○ विष्णुकान्त शास्त्री ○ धनञ्जय वर्मा ○ लक्ष्मीनारायण लाल ○ विष्णु प्रभाकर ○ जगदीश गुप्त ○ 'प्रभाकर' ○ रजनी पनिकर ○ कृष्णचन्द्र ○ शान्ति मेहरोत्रा ○ शशिप्रभा शास्त्री ○ उषा प्रियंवदा ○ राजेन्द्र यादव ○ 'रेणु' ○ कमलेश्वर ○ परेश ○ अनामिका ○ चित्रा मुद्गल ○ मुक्ता राजे ○ अनीता औलक ○ इरफाना शरद ○ पुष्पा राही ○ निर्मला वर्मा ○ रणजीत ○ सलमा सिद्दीक़ी ○ ममता अग्रवाल ○ सुधा अरोड़ा ○ मोहनसिंह सेंगर ○ अजीत कौर ○ सुदर्शन चोपड़ा ○ कुबेरनाथ राय ○ धर्मवीर भारती ○ मोहन राकेश ○ अमृता प्रीतम ○ डॉ० सुमन ○ अश्क ○ कर्तारसिंह दुग्गल ○ आईन रैण्ड ○ एनी फ्रैंक ○ सीमन 'द बाउवा

ज्ञा नो द य

सम्पादकीय कार्यालय :
९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
वितरक : बैनेट कोलमैन एण्ड कं० लि०

पूरक विशेषांक : दिसम्बर १९६५ ::
पृष्ठ लगभग २००

'दा म्प त्य — वि शे षां क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन जगत्
सूचनाएँ

वास्तवमें प्रकाशन 'एक' व्यवसाय
नहीं होता, एकमें अनेक होता है।

• अप्रकाशित राहुल साहित्य

मुझे तो इसी बातमें सन्देह है कि हिन्दीके पाठकों – और काफ़ी लेखकोंको भी - प्रकाशित राहुल-साहित्यका ठीक-ठीक पता है या नहीं। बातचीतकी बात छोड़ दीजिए, राहुलजीपर लिखे जानेवाले लेखोंमें भी प्रायः पढ़नेको मिल जाता है - राहुलजीने दो सौ ग्रन्थोंकी रचना की। कभी-कभी तो यह संख्या तीन सौके ऊपर भी पहुँच जाती है। मैं समझती हूँ कि यह संख्यातिरेक राहुलजीकी विविध विषयोंपर चलनेवाली द्रुत क़लम तथा उनके बृहदाकार ग्रन्थोंके दर्शनसे जनित एक स्वाभाविक परिकल्पना है। राहुलजीके नामसे किन ग्रन्थोंका सम्बन्ध है और उनकी संख्या कितनी है इसके बारेमें अभी कुछ दिन पहले एक लेख लिखकर मैंने सम्मेलन-पत्रिकामें प्रकाशनार्थ भेज दिया है।

राहुलजीका अप्रकाशित साहित्य, आज केवल राहुल-संग्रहालयकी सम्पत्ति होनेपर भी, मैं समझती हूँ हिन्दी संसारकी एक अमूल्य निधि है। जबतक वह सब सामग्री प्रकाशित नहीं होती, उसका संक्षिप्त परिचय भी बहुतोंके लिए उपादेय हो सकता है। इसी उद्देश्यसे प्रेरित होकर मैं हिन्दी संसारके सामने राहुलजीके अप्रकाशित साहित्यका परिचय यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ :

राहुलजीने स्वतन्त्र रूपसे और अनेक विद्वानोंके सहयोगसे हिन्दी जगत्को अनेक शब्दकोश प्रदान किये हैं। उनका तिब्बती-हिन्दी कोश साहित्य-अकादेमी छाप रही है। उनका एक और कोश 'तिब्बती-संस्कृत कोश' अप्रकाशित है। इस कोशकी सजिल्द पाण्डुलिपिके प्रथम पृष्ठपर राहुलजीने स्वयं लिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है – समाप्तिः ल्हासानगरे, २५–२–३०, ८ बजे सायंकाल। इसपर लगे हुए सीलोंसे ज्ञात होता है कि यह पाण्डुलिपि देवली जेलका भी चक्कर लगाकर लौटी है। मैं समझती हूँ कि राहुलजीका यह पहला कोश है। आश्चर्य यही है कि यह अबतक अप्रकाशित कैसे रह गया। इसके प्रकाशनके लिए कुछ दिक्कतें हैं ही, जैसे, तिब्बती टाइप और तिब्बती तथा संस्कृत जाननेवाले सम्पादकका प्राप्त होना।

राहुलजीके 'जीवन-यात्रा' के तीन खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं—'जीवन-यात्रा' भाग – १, 'जीवन-यात्रा' भाग – २ और 'रूसमें पच्चीस मास'। इनमें १९४७ तककी जीवनीका समावेश है। १९५६ तककी जीवनीको राहुलजीने उसी वर्ष लिख डाला था। किन्तु यह पाण्डुलिपि अभीतक प्रेसमें नहीं पहुँच पायी है।

यदि हिन्दीके प्रबुद्ध पाठक राहुलजीके महायथार्थका दर्शन करना चाहें तो उन्हें एक दिन राहुलजीकी डायरियाँ भी प्रकाशित रूपमें पढ़नी होंगी। यदि असली राहुलके दर्शन करने हों तो केवल उनकी डायरियोंमें ही सम्भव है! १९२७ से लेकर १९६१ के अन्तिम दिन तककी, केवल आधे वर्षकी छोड़कर, सभी डायरियाँ राहुल संग्रहालयमें सुरक्षित हैं। १९४२ के आधे वर्षकी डायरी, राहुलजीके कहनेके अनुसार, डाकमें-से ब्रिटिश सरकारके गुप्तचरोंने उड़ा ली। राहुलजीकी डायरियोंमें अनेक भाषाओंके और अनेक लिपियोंके दर्शन होते हैं। कई वर्षोंकी डायरियाँ तो संस्कृत भाषा और ब्राह्मी लिपिमें हैं। राहुलजीने नियमित रूपसे ८ दिसम्बर १९६१ तक डायरी लिखी है। १९६२ की डायरीपर केवल उनका नाम ही है। अपने सिंहल निवास-कालमें राहुलजीने 'संस्कृत काव्य-धारा' के ढाँचेकी और उतने ही बड़े आकारकी एक पुस्तक पालि काव्य-धारा तैयार की थी। यह भी अभी अप्रकाशित ही है। राहुलजीने १९५३ में नेपालपर एक वृहदाकार ग्रन्थ लिखा था। 'नेपाल'में नेपालका भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विशद विवरण तो है ही, कहीं-कहीं राजनैतिक सत्य भी है।

राहुलजीने हिमालय क्षेत्रपर कई ग्रन्थ लिखे हैं। फिर भी, हिमालयपर उनका सर्वोत्तम ग्रन्थ – हिमालय-परिचय – अभीतक अप्रकाशित ही है। यह ग्रन्थ ज्ञानमण्डलसे प्रकाशित कुमायूँके आकार-प्रकारका तो होगा ही। राहुलजीने १९५९-६१ के बीच अपने पुत्र जेता और पुत्री जयाको बहुत-से लम्बे पत्र लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इन पत्रोंका विषय है सरल और सुबोध भाषामें – बच्चोंकी भाषामें – कहानियोंके रूपमें पृथ्वीपर मानवके क्रमिक विकासकी कथा। यदि इन पत्रोंका प्रकाशन हो जाये, तो भारतके बच्चोंको भी महापण्डितका साहित्य पढ़नेको मिल जायेगा। मेरे पास इन पत्रोंकी प्रेस-कॉपी तैयार है।

अपने अत्यधिक व्यस्त, साथ ही अस्त-व्यस्त, जीवनके बावजूद राहुलजीने १९२८ के बादके उन सारे महत्त्वपूर्ण पत्रोंको सुरक्षित रखा था जो समय-समयपर उनको बड़े-बड़े लोगोंने लिखे थे। 'राहुल-संग्रहालय'में ये सभी पत्र सुरक्षित हैं। मैं समझती हूँ कि इन सारे पत्रोंका प्रकाशन अत्यन्त उपयोगी होगा। और, उन सारे पत्रोंका भी संग्रह करना है जो राहुलजीने अपने मित्रों यथा परिचितोंको लिखे हैं। कुछ मित्रोंने मुझे पत्रोंकी प्रतिलिपियाँ भेजी हैं। उचित अवसर आने-पर मैं इन्हें प्रकाशित रूपमें देखना चाहूँगी।

राहुलके लिखे हुए ऐसे अनेक फुटकल निबन्ध भी हैं जिन्हें यदि पुस्तकाकार छापा जाये तो राहुल-निबन्धावलीके कमसे कम पाँच खण्ड तो तैयार हो ही सकते हैं। एक खण्ड संस्कृत निबन्धोंका तैयार हो सकता है और एक खण्ड अँगरेज़ी निबन्धोंका। मैं आजकल इन निबन्धोंका संग्रह कर रही हूँ।

राहुलजीके इस अप्रकाशित साहित्यको प्रकाशनमें लानेके लिए, मुझे आशा है, हिन्दी-सेवी-संसार सहयोग प्रदान करेगा।

—डॉ० कमला सांकृत्यायन

• हिन्दी साहित्य भण्डार

हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊका कार्यालय गंगाप्रसाद रोडसे ५५, चौपटिया रोड, सराय मालीखाँ (कालीचरण कॉलेजके पास) स्थानान्तरित हो गया है। सम्बन्धित पुस्तक-व्यवसायियोंसे प्रकाशन संस्थाके अध्यक्ष श्री तेजनारायण टण्डनने अनुरोध किया है कि भविष्यमें सम्पूर्ण पत्र-व्यवहार और अपेक्षित सम्पर्क इस नये पतेसे ही करनेमें सुविधा होगी। फुटकल बिक्रीकी व्यवस्था अभी पहलेवाले कार्यालयमें भी की गयी है।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समसामयिकी

हिन्दी आलोचनाकी वर्तमान स्थिति

पत्रिकाके पिछले कई अंकोंमें प्रकाशित हो रहे इस स्तम्भके उद्देश्य और प्रयोजनकी बात शायद अब अपेक्षित नहीं रही। उपयोगिताके प्रति आश्वस्त होकर, हिन्दी-जगत्में चर्चित एक और जलते प्रश्नपर यहाँ कुछ विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इधर हिन्दी आलोचनाकी वर्तमान स्थिति पर काफ़ी-कुछ कहा-सुना गया है। किसीने उसकी प्रवृत्तियों और ईमानदारीपर आरोप लगाये हैं तो किसीने बचाव और उसे ईमानदार साबित करनेके लिए वकालत की है या सफ़ाई दी है। बहर-हाल मानें तो स्थिति बड़ी विचित्र और विचारणीय रही है।

यह एक प्रीतिकर संयोग है कि यहाँ संयोजित विचार अधिकांश उनके हैं जिनका हिन्दी आलोचनाकी वर्तमान स्थिति के निर्माणमें महत्त्वपूर्ण योग रहा है।

श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय : आलोचना एक बौद्धिक प्रक्रिया है। कृतिको पढ़ने-समझनेके बाद जो कुछ हम कृतिसे पाते हैं, उसे दूसरों तक पहुँचाते हैं। यही आलोचना है। उसके कई पक्ष होते हैं जैसे, विश्लेषण, व्याख्या और मूल्यांकन, और ये सब मिलकर आलोचनाका रूप निर्धारित करते हैं। नवलेखन तक आते-आते हम इतने अन्तर्राष्ट्रीय हो गये कि हमारे मौलिक चिन्तनमें भी कमी आ गयी। वास्तवमें समग्र जीवनको लेकर जो साहित्य निर्मित होता है उसीसे स्वस्थ आलोचनाका विकास होता है।

डॉ० नामवर सिंह : हिन्दी आलोचनाकी वर्तमान स्थितिके सम्बन्धमें हमें अब स्पष्ट हो ही जाना चाहिए कि वर्तमान आलोचना बहुत आगे बढ़ी है। जो लोग साहित्यके दायरेके प्रायः बाहर हैं उन्हें ही आलोचनाकी वर्तमान स्थिति दयनीय दिखाई पड़ती है। किन्तु जो इस क्षेत्रसे सम्बद्ध हैं उन्हें मालूम होगा कि पुराने आलोचकसे एक नये आलोचकके बोधका औसत स्तर ऊँचा है। पुरानी आलोचना 'भाव-पक्ष' और 'कला-पक्ष' में बँटी हुई थी। बीचमें राजनीतिक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियोंका भी यान्त्रिक विधिसे आलोचनामें समावेश किया जाने लगा था। किन्तु आजके आलोचकने भाषा और उसके अर्थको इतना गहरा और संवेदनशील बना दिया है कि आलोचनाका एक समग्र रूप विकसित हो गया है, और उसीके द्वारा कृतिके भाव-पक्ष, कला-पक्ष आदिको टुकड़ोंमें न बाँटते हुए सम्पूर्ण रचनाको उसके ऐतिहासिक सन्दर्भके साथ रख देता है।

एक ओर हमारी दृष्टि जहाँ हिन्दी आलोचनाके विकासपर जाती है वहीं हमें उसकी खामियोंपर भी विचार करना चाहिए। बहुत दिनोंसे 'प्रतिमान' की तलाश होती रही है। वस्तुतः 'प्रतिमान' महत्त्वपूर्ण नहीं होता, 'पद्धति' महत्त्वपूर्ण होती है। आज इसे ही विकसित होना है। आवश्यकता है 'आलोचना' के अर्थको निर्धारित करनेकी। इसके साथ ही, 'आलोचना' की भाषापर विचार होना चाहिए।

श्री विश्वम्भर 'मानव' : आधुनिक आलोचना दो भागोंमें बँट गयी है। पहले प्रकारकी आलोचना वह है जिसमें 'रस' को प्राण माना गया था। दूसरे प्रकारकी आलोचनामें तीन कोटियाँ हैं। एक है मनोविश्लेषणवादी आलोचना, दूसरी है प्रगतिवादी आलोचना, और तीसरी है प्रयोगवादी आलोचना। दूसरे प्रकारकी आलोचनामें 'रस' को स्वीकार नहीं किया गया है। अतः जब दोनों प्रकारकी आलोचनाको हम गम्भीरतासे देखते हैं तब स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि उत्तर छायावादी आलोचना एकांगी है, अपरिपक्व है और दलबन्दीसे युक्त है। समय-समयपर सिद्धान्त नहीं बदला करते। यह नहीं हो सकता कि पुरानी कृतियोंके लिए आलोचनाके मानदण्ड पुराने हों और नयेके लिए दूसरे। आज हम 'नवलेखन' और नये प्रकारकी आलोचनाकी बात करते हैं, किन्तु खेदकी बात है कि पूरे चौंसठ वर्षोंमें आचार्य शुक्लके 'हिन्दी साहित्यका इतिहास' को छोड़कर कोई ऐसा प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं आ सका जो सर्वांगपूर्ण हो।

डॉ० सावित्री सिन्हा : हिन्दी आलोचनाकी पीठिकाके रूपमें आलोचना-का जो प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा है उसे ध्यानमें रखते हुए आजकी आलोचनापर जब विचार करती हूँ तब प्रतीत होता है कि नये प्रतिमानोंकी आवश्यकता है। किन्तु नये प्रतिमानोंका रूप क्या हो यही विचारणीय है। वास्तवमें साहित्य तो अखण्ड है, इस कारण पुराने प्रतिमान छोड़े नहीं जा सकते। पुराने मानदण्डको नये मानदण्डके रूपमें ढालना पड़ेगा। डॉक्टर नामवर सिंहने पुरानी आलोचनाको नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
माना है। वस्तुतः पुरानी आलोचनाने ही विकसित होकर नयेको जन्म दिया है। दो मताग्रहोंके बीच आजकी आलोचना फँस गयी है। आजके सन्दर्भमें 'रस' की शास्त्रीय मान्यता आवश्यक नहीं है, लेकिन आज नये और पुरानेका समीकरण अवश्य होना चाहिए। यह समीकरण आज नहीं हो रहा है।

श्री अमृत राय : नया आलोचक स्वयं इस बुरी तरहसे अपने ही वाग्जालमें फँस गया है कि वह क्या कह रहा है, उसे स्वयं नहीं मालूम रहता। ऐसा लगता है कि आजके आलोचककी सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन-दृष्टि साफ़ नहीं है, धूमिल हो गयी है। वह आगे देखनेमें असमर्थ है। समीक्षक पाठकको एक दिशा देता है। इसके लिए समीक्षककी दृष्टि साफ़ होनी चाहिए। दुर्भाग्यकी बात है कि आज हम जिस सामाजिक जीवनमें हैं वह विच्छिन्न हो चुका है। हम बराबर कुछ श्रेणियोंको अलग करके देखते हैं। समाजको व्यक्तिसे, अर्थको शब्दसे, पाठकको लेखकसे, कृतिको कृतिकारसे अलग कर दिया गया है।

यह कहना कि पहले समन्वित दृष्टि थी और अब नहीं है, फ़िज़ूल बात है। यह हमारी बहुत बड़ी भूल है कि हम साहित्यकारके सामाजिक दायित्वको उसके साहित्यसे अलग कर देते हैं। आज जिस प्रकार हमारी सामाजिकता ह्राससे गुज़र रही है उसमें हम अपनी जगह नहीं पहचान पा रहे हैं। हम देख रहे हैं कि बाहरकी विचारधाराओंका ऐसा रेला आ रहा है कि हमारे पाँव डगमगाते जा रहे हैं। अतः जबतक परिवेशमें रखकर कृति या रचनाको नहीं देखा जायेगा तबतक समन्वित दृष्टि नहीं बनेगी।

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी : आलोचनाके क्षेत्रमें प्रतिष्ठित या अप्रतिष्ठित-की बात उठाना निरर्थक है। हर नया कवि, हर नया आलोचक जो समर्थ है, वह प्रतिष्ठित तो है ही। हिन्दी आलोचनाकी वर्तमान स्थितिमें प्रतिमानोंकी, कसौटियोंकी बात उठायी गयी है। कहा तो जाता है कि हम प्रतिमानोंके विरोधमें हैं लेकिन विचार करनेपर और वक्ताओंको सुननेके बाद लगता है कि हमारा आग्रह प्रतिमानोंके लिए ही है। यही सत्य भी है। प्रश्न है केवल नये और पुराने प्रतिमानोंका। अब यह बात स्वीकार कर ली गयी है कि साहित्यके वैशिष्ट्यको पकड़नेके लिए आज न तो 'रस-सिद्धान्त' अपेक्षित है और न इलियटका निर्वैय-क्तिकतावाद'। इन शब्दोंको ज़रूरतसे ज़्यादा घसीटना उचित नहीं है। इन दोनों प्रतिमानोंसे नये साहित्यकी प्रकृतिको, मर्मको, वैशिष्ट्यको नहीं पकड़ा जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकता। वास्तवमें जिस प्रकार रचनाकारको रचनाके लिए स्वयंको अनुभवके प्रति समर्पित करना पड़ता है, उसी प्रकार रचनाके प्रति स्वयंको खुला रखना आलोचकका प्रमुख कार्य है।

श्री बालकृष्ण राव : क्या यह सच है कि जब हम आलोचक नहीं होते तब हम पूर्वग्रहोंसे दबे नहीं होते ? आजके आलोचककी स्थिति क्या है ? आलोचककी कमजोरियाँ कहाँकी कमजोरियाँ हैं ? जब हम कोई राजनीतिक बात करते हैं तब हम एक बाहरी बोझसे दबे-से रहते हैं। यदि आजके साहित्यकार या आलोचकमें भी ऐसी बात है तो आश्चर्य नहीं है। पहले न इतनी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थीं, न इतनी गोष्ठियाँ ही होती थीं। इस कारण आज संख्यामें बहुत सारी बेकार, पूर्वग्रहग्रस्त आलोचना निकलती है। फिर भी आलोचना निश्चय ही आगे बढ़ी है। शब्दका कथ्यसे सम्पृक्त होना या ऐसे नये शब्दोंका प्रयोग, जैसे 'परिप्रेक्ष्य', 'आयाम' आदि यह सिद्ध करता है कि आजकी आलोचना प्रबुद्ध और महत्त्वाकांक्षिणी है, क्योंकि इन नये शब्दोंका प्रयोग इसका प्रमाण है। वास्तवमें उपलब्धियोंसे अधिक चेष्टाकी महत्ता है। वर्तमान आलोचनाने आज एक और दिशा पकड़ी है। एक सर्जनात्मक साहित्यिक प्रक्रियाके रूपमें आलोचना विकास कर रही है। पहलेकी आलोचना एक भाष्यकारकी आलोचना थी। न्यायाधीशके आसनपर स्वतःको अधिष्ठित कर अच्छा-बुरा घोषित कराना साहित्यिक आलोचना नहीं है। कृति या कृतिकारके प्रति भावकवर्गमें आस्वादन उत्पन्न करना ही वास्तविक आलोचना है। हिन्दी आलोचना इसी दिशामें अग्रसर भी है। वह पूर्ववर्ती आलोचनासे कई क़दम आगे बढ़ गयी है।

डॉ० देवराज : यह तो निश्चित है कि जब नया आलोचक कोई नया सौन्दर्य देखता है तब वह 'एडिक्वेट' भाषामें कहना चाहता है। इस भाषाको उसे बनाना और खोजना पड़ता है। हमें यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि अगर हम 'रसवाद' छोड़ देंगे तो हमारी संस्कृति चली जायेगी। नये मानोंकी खोज करना कोई शिकायतकी बात नहीं है। नये मानोंकी खोज प्रत्येक लेखक करता है और साथ ही युग भी नये मानोंकी खोज करता है। मैं चाहता हूँ कि हर लेखकका अपना व्यक्तित्व हो, न कि चार-पाँच आदमी मिलकर एक ही 'कोरस' गायें।

जो बात सस्ते पायी जाती है वह सस्ते छूट भी जाती है। सुचिन्तित और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम-चिन्तित वक्तव्यमें भेद होता है। यह ठीक है कि हिन्दी आलोचनामें बहुत-से शब्द आ गये हैं। प्राचीन कालमें वामनने भी बहुत-से शब्द बनाये थे। शब्द तो बनाये ही जाते हैं लेकिन मात्र इसीसे आलोचनाका स्वर नहीं बनता। शब्दोंके गुणात्मक भेदको बड़ा व्यक्तित्व ही स्पष्ट करता है। इसलिए नयी आलोचनाको यह विवेक देना पड़ेगा कि कौन कितना आगे बढ़ रहा है। औसतसे फ़ैसला नहीं होता। वास्तवमें हमें 'शिखर' को तलाश करना पड़ेगा। शिखरसे ही साहित्यका मानदण्ड स्वीकार किया जाता है। आलोचकको बार-बार 'क्रिस्टलाइज़ेशन' पर ध्यान रखना होगा। इसीसे 'शिखर' देखा जा सकता है। यह समझना भूल होगी कि हम बड़ी तेज़ीसे आगे बढ़ रहे हैं। वास्तवमें 'क्षण' से अधिक 'रैशनलाइज़ेशन' का प्रश्न है। लेखकके सामने जीवनका विराट् रूप रहता है। इसे ही 'क्रिस्टलाइज़' करना है और इसीके द्वारा मानदण्ड निर्मित होते हैं। सिद्धान्ततः शोरगुल नहीं होना चाहिए। जहाँतक भाषाका प्रश्न है, लेखकके सामने पूरा जीवन रहता है। वह कोशिश करता है कि किस प्रकारके शब्दोंको वह उसमें-से ग्रहण करे। अच्छा लेखक या आलोचक 'अनुगामी कोटि' में नहीं आता। चिन्ताकी बात है कि हम समयके बहावके साथ बहे जा रहे हैं।

—'माध्यम' : जून १९६५

नगेन्द्र - साहित्य

- रस सिद्धान्त २०.००
- भारतीय काव्यशास्त्रकी परम्परा २०.००
- भारतीय काव्यशास्त्रकी भूमिका २०.००
- देव और उनकी कविता ७.००
- रीति काव्यकी भूमिका ५.५०
- विचार और अनुभूति ४.५०
- विचार और विश्लेषण ५.५०
- अनुसन्धान और आलोचना ४.००
- आधुनिक हिन्दी कविताकी मुख्य प्रवृत्तियाँ ४.००
- सियारामशरण गुप्त ७.५०
- कामायनीके अध्ययनकी समस्याएँ ६.००

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

'चन्द्रलोक', जवाहर नगर, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
द्वारा प्रकाशित
तथा श्री बालकृष्ण राव-द्वारा
सम्पादित मासिक

'माध्यम' एक वर्ष की
अल्पावधि में
हर प्रबुद्ध पाठक की सबसे
प्रीतिकर पाठ्य-सामग्री
बन गया है।

'माध्यम' के प्रवेशांक से
अबतक की पूरी फ़ाइल की
धुआँधार माँग इसके स्थायी
महत्त्व और लोकप्रियता का
परिचायक है।

सहवर्ती साहित्य, विवेचना, प्रतिपत्तिका,
समीक्षाएँ, प्रत्यालोचन-पुनर्विचार, हिन्दीजगत्, पत्र-पत्रिकाएँ
'माध्यम' के स्तम्भगत आकर्षण हैं।

● ●

एक अंक का मूल्य : १.०० । वार्षिक शुल्क : १०.००

● ●

पत्राचार : पो० बॉ० सं० ६०, इलाहाबाद
सम्पादकीय तथा व्यवस्थापकीय कार्यालय :
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-मंच

पत्रिका निश्चय ही उपयोगी और सुन्दर है। इसके लेख बड़े मार्मिक और स्थायी महत्त्वके होते हैं और हम फ़ाइल रख रहे हैं। साहित्यिक प्रवृत्तियोंको स्पष्ट करनेमें आपकी सेवाएँ प्रशंसनीय हैं। हार्दिक बधाई।

—डॉ० रामचरण महेन्द्र, कोटा

'ज्ञानपीठ पत्रिका' —
कलात्मक सज्जा : अनुपमेय
सामग्री : विचारात्मक
प्रस्तुतीकरण : मौलिक
इसकी तुलना कर सकूँ
ऐसी कोई दूसरी पत्रिका (अपने विषयकी)
हिन्दीमें है ही नहीं।

— दिनकर सोनवलकर, दमोह

मेरी जानकारीमें यह आया है कि बनारससे कुछ लोग 'संग-तराश' नामसे कोई पुस्तक आकलन या और कुछ प्रकाशित करनेवाले हैं, और – लिखना न होगा कि आपकी जानकारीमें मेरा अपराध गल्प-संग्रह 'संग-तराश' नामसे भारतीय ज्ञानपीठ संस्थानसे एक-दो मासके अन्तर्गत प्रकाशित होनेवाला है। विशेष जानकारीके लिए यह लिख देना उचित और युक्तिपूर्ण समझता हूँ कि 'संग-तराश' (कहानी-विशेष); जिसपर संग्रहका सोद्देश्य नामकरण हुआ है, लगभग दो वर्ष पूर्व 'योगी' (साप्ताहिक, पटना) – विशेषांकमें प्रकाशित भी हो चुका है कि हमारे नामकरणमें द्वितीयताकी जगह नहीं बच रह जाती; फिर भी भ्रमनिवारणके लिए मेरा यह पत्र प्रकाशित कर प्राथमिकता और वास्तविकताकी जानकारी दूसरोंको देनेकी अर्हता दें।

— शिवचन्द्र शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका
तथा भारतीय भाषाओंकी
सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृतिपर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार - योजना - प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

प्राचीन विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित साहित्यका अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला

• राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी दो	नानक सिंह	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

• उपन्यास

सूरजका सातवाँ घोड़ा [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
पीले गुलाबकी आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर मानव	४.००
गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	२.५०
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.२५
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	३.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	६.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	४.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस०	२.५०
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००
) कहानी		
दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	३.००
झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
झलके पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोलाँ [द्वि० सं०]	शेख सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने आँगन रस बरसै	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
चोटियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १—२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
जलतीके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५०
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

● कविता

इतिहास-पुरुष	डॉ देवराज	३.५०
देशान्तर [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
अन्धा चाँद	मुनि रूपचन्द	
चाँदका मुँह टेढ़ा है [द्वि० सं०]	मुक्तिबोध	८.००
आत्मजयी	कुँवरनारायण	३.५०
कनुप्रिया [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
हम विषपायी जनमके [द्वि० सं०]	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
वेणु लो गूँजे धरा [द्वि० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
बीजुरी काजल आँज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूप शर्मा	६.००
• शाइरी		
गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
ग़मए-हरम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००
• नाटक		
प्रेत	मूल-इब्सेन, अनु०-नेमि०	२.२५
बारह एकांकी [द्वि० सं०]	विष्णु प्रभाकर	३.५०
घाटियाँ गूँजती हैं [द्वि० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम क़ैद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
तरकशके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
फ्रेंचके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

• विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजित कुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

• रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

• ललित-निबन्धादि

चिन्तककी लाचारी	माखनलाल चतुर्वेदी	४.००
एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकीराय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
टूँगा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
गाँव और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रात्री	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकरायी [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

दीप जले शंख बजे [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

विवेकके रंग	डॉ० देवीशंकर अवस्थी	७.००
हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो वार्ता-शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००
रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [च० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन[द्वि.सं.]	डॉ० भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ०रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरत्के नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो	मुनि नथमल	२.००
क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?	आचार्य तुलसी	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
दर्शन अनुचिन्तन	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

• सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव [द्वि० सं०]	मुनि नथमल	१.५०
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

• हास्य-व्यंग्य

सिकन्दरनामा	सलमा सिद्दीक़ी	२.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य [द्वि० सं०]	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
तेलकी पकौड़ियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
काग़ज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
मुर्ग़-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ०महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं०फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

सभाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं०शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं०पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल ; कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

मदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — ६.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन — २.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — ८.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — १०.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ४
सम्पादन : डॉ० जोहरापुरकर — ७.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : सितम्बर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये ३.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन–वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल

स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश] .५०
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका] १.५०
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री प्रभाचन्द्राचार्य

लाटी संहिता [संस्कृत] २.००
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल

नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका] .५०
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात .२५

आगामी प्रकाशन

साहित्यिक

* **मुरदा सराय** : डॉ० शिवप्रसाद सिंह (कहानी)
* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ** : कृष्णाचार्य (शोध)
* **अपभ्रंश भाषा और साहित्य** : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन (शोध)
* **अठारह सूरजके पौधे** : रमेश बक्षी (उपन्यास)
* **नये प्रतिमान पुराने निकष** : लक्ष्मीकान्त वर्मा (समीक्षा)
* **सिंहली कहानियाँ** : सं०–भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा एस्० मेधंकर (कहानी)
* **प्रतिनिधि-कविता-संकलन** (मराठी) : दिनकर सोनवलकर
* **संग-तराश** : शिवचन्द्र शर्मा (कहानी)

■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शै श वां क न

अर्थात्

'बेबी बुक' हिन्दी में

★

शिशुके जन्मोत्सवपर होनेवाले आयोजनोंकी शोभा स्मरणीय होती है। बाल-विकासका प्रत्येक चरण विस्मयकर है। इन आयोजनोंकी स्मृतिको और शिशुकी विकास-प्रगतिको मोहक तथा कलात्मक ढंगसे अंकित करके सुरक्षित रखनेकी इच्छा प्रत्येक माता-पिताके लिए स्वाभाविक है। इन प्रयोजनोंके लिए अभी विदेशी जीवन-पद्धतिपर रचित अँगरेज़ीकी 'बेबी बुक' का व्यवहार होता है। भारतीय ज्ञानपीठको गर्व है कि इस कलात्मक प्रकाशनके द्वारा वह इस अभावकी पूर्ति कर रहा है।

'शैशवांकन'में जन्मोत्सवसे सम्बन्धित अवसरों तथा शिशुकी उत्तरोत्तर प्रगतिका लेखा आयोजित है। 'शैशवांकन' मधुर स्मृतियों एवं उपयोगी तथ्योंके संरक्षणके लिए सर्वथा नया और प्रीतिकर उपहार है। अपने शिशुके लिए स्वयं बरतें और जो आपके अपने हैं उन्हें भेंट करें।

मूल्य १२.००

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी–५
विक्रय केन्द्र : ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड सं० ए
10.55
11.35
12.15
12.25

चौंसठ कविताएँ

इन्दु जैन

० ०

मर्मस्पर्शी कविताओंका संकलन

'चौंसठ कविताएँ' एक बहु-आयामी चेतना मानसकी रचना है। न कहें कुछ और, पर भिन्न और विशेष इन कविताओंके परिचयमें अवश्य कहा जायेगा। ये कविताएँ हिन्दी कविताकी अधुनातन दिशा, भाव-बोध और शिल्पकी प्रामाणिक उपलब्धिका संकेत देती हैं। और प्रचलित सब प्रकारके उलझावोंसे ये मुक्त हैं और अपना अर्थ बड़ी सहजताके साथ स्वयं खोलती हैं।

सब चौंसठ कविताएँ हैं, पर प्रत्येक जैसे एक सौम्य बिजलीकी कौंधका निमिष हो जो अन्दरकी अकुलाहटको, किसी दर्द या उल्लासको, सतरंगी प्रकाश रेखाओंकी भाषामें उकेर जाये। अनुभूतियोंको ऐसी अभिभूत करनेवाली अभिव्यक्ति इनमें हुई है कि क्षितिजपर क्षितिज सामने खुलते चले जाते हैं और भीतर एक गन्ध-भरी चाँदनी छिटक पड़ती है। कविताओंकी पंक्ति पंक्तिसे साक्ष्य मिलता है कि अन्तश्चेतना भी कितनी मुखर हो सकती है। कविता-प्रेमियोंके लिए कृति अनिवार्य रूपसे पठनीय है।

मूल्य ३.००

भारतीय ज्ञानपीठ

विक्रय-केन्द्र : ३६९, २, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

वर्ष चार : अंक तीन
अक्तूबर १९६५

१६.१०.६५

ज्ञानपीठ पत्रिका

ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

प्रकाशनकी अधुनातन
प्रवृत्ति और उपलब्धि परिचायिनी

o o o o o o o

दो नये प्रकाशन

प्रतिनिधि संकलन : कविता : मराठी

सोनवलकर-द्वारा संकलित-अनुवादित प्रतिनिधि मराठी कविताओंका संग्रह । मूल्य ३.००

बक रहा हूं जुनून में

पण्डितके अनूठे व्यंग्य-निबन्धोंका नया संग्रह । रोचक पठनीय कृति ।

मूल्य ३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी
साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पत्रिका

वर्ष चार : अंक तीन
अक्तूबर १९६५

१. उद्घोष : साहित्यका विधान : ग० मा० मुक्तिबोध २
२. अनुसन्धान और अनुसन्धान : जैनेन्द्र कुमार ३
३. इतिहासकी घाटियोंसे : कृष्णबिहारी मिश्र ५
४. यशस्तिलक : गोकुलचन्द्र जैन ८
५. नये प्रतिमान पुराने निकष : लक्ष्मीकान्त वर्मा १०
६. समकालीन जर्मन लेखन : श्रीपति उपाध्याय १३
७. गुजराती साहित्य : एक परिचय : सुबोध शास्त्री १६
८. संस्कृत साहित्यकी गतिविधि : महेन्द्र कुलश्रेष्ठ २०
९. एक पुनश्च : अज्ञेय २३
१०. प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर : २६
११. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया ४१
१२. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित ४९
१३. एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार ५५
१४. हिन्दीकी डायरी : लक्ष्मीशंकर व्यास ५७
१५. भारतीविश्व : कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ ५९
१६. प्रकाशन जगत् : सूचनाएँ ६१
१७. पत्र-मंच ६४

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन :: जगदीश

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन एवं वितरण कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
मूल्य : छह रुपये वार्षिक, पचपन पैसे प्रति, द्विवार्षिक : ग्यारह रुपये
समाज-शिक्षा विभाग, राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यका विधान

कला और साहित्यकी अवतारणा ही इसलिए होती है
कि व्यक्तिका जो कुछ समाजकी आँखोंसे
ओझल रहता है उसे सामने लाया
जा सके

ग० मा० मुक्तिबोध

साहित्य तथा अन्य कलाओंका विधान इसीलिए हुआ है कि व्यक्तिका जो भाग समाज या मानवताकी दृष्टिसे ओझल रहता है वह सबके सामने प्रकट हो जाये, और इस प्रकार उसपर विचार हो सके, उसे उचित रूप मिल सके, समाजकी अपनी किसी ग़लतीसे वह सम्बन्धित हो तो समाज भी अपनी ग़लती सुधार सके।

हम जो समूह हैं वह केवल इकाइयोंसे बनी हुई संख्या नहीं है। हम केवल समूह भी नहीं हैं। आवश्यकतानुसार, समयानुसार हम समूह हैं; आवश्यकतानुसार, समयानुसार समाज और मानवता। अपने-अपने घरोंमें लौटकर हम अपनी-अपनी विवेक-चेतना, सुख-दुःख, स्थिति-परिस्थिति लिये हुए एक जीवित-जागृत चैतन्य हैं। इसी चैतन्यके कारण, किन्हीं विशेष उद्देश्योंसे हमें समूह भी बन जाना पड़ता है। हृदय-हृदयमें व्याप्त जो कोमल मानव-सम्बन्ध है, आत्मीयता, न्याय-भावना, परस्पर सहायता, परदुःख-कातरता, सहानुभूति, करुणा, चारित्रिक उच्चताके आदर्श हैं—उसीको एक साथ समूहवाचक, भाववाचक संस्था मानवता है। प्रत्येक व्यक्ति कभी समूहका, कभी समाजका, मानवताका अंग रहता है।

सही है कि व्यक्तिके एकान्तपर समाजका अनुशासन नहीं हो सकता, समाजकी दृष्टि प्रत्येक व्यक्तिके अन्तर्निहित उस ओझल हिस्सेमें नहीं घुस सकती। किन्तु इसी स्थितिमें उसी ओझल आगको महत्त्वपूर्ण जान प्रकट करनेके लिए साहित्य और कलाकी अवतारणा हुई, जिससे वह ओझल हिस्सा समाजके सामने आये। अगर समाज उसके महत्त्वको नहीं पहचानता है तो पहचाननेकी कोशिश करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसन्धान और अनुसम्धान

हिन्दीमें होते विपुल अनुसन्धान कार्यके प्रति एक सहज जिज्ञासा

जैनेन्द्र कुमार

इतना-इतना जो अनुसन्धान-कार्य, विशेषकर हिन्दीमें हो रहा है, क्या उसे सही दिशा मिली है, क्या वह अच्छे स्तरका है, और साथ ही क्या उसमें जीवनके लिए उपयोगी हो जानेकी क्षमता भी मिलती है ?

इस सम्बन्धमें मैं खुद चक्करमें हूँ। मैं स्वयं समझना चाहता हूँ कि जो भीतर और विगतकी ओर 'अनुसन्धान और अवगाहन है, उसका बाहर और भविष्यकी ओर क्या योग और अनुदान होना चाहिए। सचमुच वह योग और अनुदान विशेष नहीं दिखाई दे रहा है। हिन्दी साहित्यमें उत्कर्ष, गाम्भीर्य, गुरुता और गहनता उस अनुसन्धान-कार्यके परिणामस्वरूप कुछ बढ़ी हो, ऐसा मुझे तो नहीं दिखाई देता।

जान ऐसा पड़ता है कि अनुसन्धान एक कोरे परिश्रम और अध्यवसायकी चीज रह गयी है। दो वर्षोंमें बहुतसे ग्रन्थोंको उलट-पुलट कर और उनकी लम्बी सूची साथमें प्रस्तुत करके चार-पाँच सौ पृष्ठ भारी-भरकम गद्यके प्रस्तुत कर देनेसे अनुसन्धानकी सफलता मान ली जाती और अच्छे वेतनकी प्राध्यापिकी पानेकी राह खुल जाती है। उस सब अनुसन्धानका अन्तमें किसी चित्तत्त्व और चित् प्रयोजनसे सम्बन्ध जुड़ता है, ऐसा नहीं मालूम होता। अनुसन्धानका बहुत ही महत्त्व होना चाहिए। किसी सृजनसे वह कम नहीं है।

लेकिन आज हिन्दीके क्षेत्रमें चलनेवाले अनुसन्धानमें क्या वह सत्व और वर्चस्व है ? कदाचित् उसका अपने आशयसे विच्छेद हो गया है और उसकी सार्थकता नाना प्रकारकी रूखी-सूखी जानकारियोंको बटोर कर एक ग्रन्थके रूपमें सामने ला देनेमें समझ ली गयी है। साहित्यके डॉक्टर मालूम होता है कि क्लासरूमके लिए तैयार होते हैं, खुले मानव-क्षेत्रके लिए उनके पास कोई क्षमता और योग्यता होनेकी आवश्यकता नहीं है। कहना होगा कि अनुसन्धानकी वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारणा निस्सत्त्व और रुग्ण है जिसके अधीन यह सब चल रहा और सहा जा रहा है। इससे ज्ञानका ही अपवाद होता है और स्वीकार करना होगा कि हिन्दी डॉक्टरीके लिए आज सम्बद्ध क्षेत्रोंमें कम अवमानना और अवहेलनाका भाव नहीं है।

ऐसा लगता है कि ज्ञान और सृष्टिको दो अलग विभागोंमें डाल दिया गया है कि जैसे उन दोनोंको परस्पर लेना-देना कुछ हो नहीं। या तो रचनाका पण्डित बना जा सकता है या फिर रचनाकार ही हुआ जा सकता है। ऐसे हमने साहित्यको सृष्टिसे उतार कर कारीगरी तक उतार दिया है और ऐसा मालूम होता है कि पाण्डित्यको इस कारीगरी तक दिलचस्पी है, आगे सृष्टिके रहस्यकी ओर जानेकी चेष्टा मानो विज्ञताके लिए अनावश्यक है। ऐसी विज्ञता और विद्वत्ता निष्प्राण और निस्पन्द वस्तु बन जाती है और साहित्य पण्य और क्रय पदार्थ। व्यक्ति-जीवन और समाज-जीवनके उत्कर्ष और उत्क्रान्तिका जो दायित्व साहित्य-के ऊपर आता है, मानो इस पाण्डित्यके द्वारा उसे उससे विहीन कर दिया जाता और कोरे हस्तलाघव और हस्तशिल्पके रूपमें उसे अध्यवनीय समझा जाता है। आज मानो वह एक ऐसा कर्म है जो प्रयोजनसे बिछुड़ा हुआ है।

● ●

मानव मूल्य और साहित्य

●

डॉ० धर्मवीर भारती

मानव-मूल्योंके सन्दर्भमें साहित्यका
विश्लेषण, परीक्षण और आकलन

मूल्य २.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहासकी घाटियोंसे

हिन्दी गद्यके निर्माणसे कलकत्ते-की पत्रकारिताका योगदान

कृष्णविहारी मिश्र

आधुनिक साहित्यके माध्यमके रूपमें खड़ी बोलीकी प्रतिष्ठा ऐतिहासिक घटना हो चुकी है। ब्रजभाषाके उन्नत और समृद्ध माध्यमको अपदस्थ करके खड़ी बोली अनेक राजनीतिक और सामाजिक कारणोंसे सांस्कृतिक विचार-विनिमयकी भाषा बन गयी। खड़ी बोलीका गद्य जो आज हिन्दी क्षेत्रमें सभी प्रकारके ज्ञान-विज्ञानके शिक्षण, राजव्यवस्था-संचालन तथा अन्तर्प्रान्तीय विचार-विनिमयका माध्यम है, सौ वर्षोंका ही जीवन व्यतीत कर सका है। संसारके भाषावैज्ञानिक इतिहासमें यह सम्भवतः पहली घटना है कि इतने अल्प कालमें किसी भाषाका गद्य इस गतिसे विकसित और परिमार्जित हुआ हो और देखते ही देखते वह एक वृहद् क्षेत्रमें उसके सभी सारस्वत कार्योंके समर्थ माध्यमके रूपमें प्रतिष्ठित हो गया हो, किन्तु भाषाशास्त्रका विद्यार्थी एक ओर जहाँ इस विकास-क्षिप्रताको देखकर आश्चर्यचकित होता है वहीं जब वह अनेकानेक हिन्दी गद्य-निर्माताओंके बलिदानी श्रमको देखता है तो वह एक सहज आत्म-श्लाघा का अनुभव भी करता है।

१८वीं-१९वीं शताब्दीके बीच हिन्दीके लड़खड़ाते हुए बाल गद्यको जिन लोगोंने पाला-पोसा, चलना सिखाया और उसमें एक समर्थ गत्वरताका संयोजन किया उनके तपश्चरण और परिश्रमको कदापि विस्मृत नहीं किया जा सकता। यह हिन्दी गद्य एक ओर मुसलमानी शासकोंकी छत्रछायामें विकसित हुआ तो दूसरी ओर फोर्ट विलियम कॉलेजके तत्त्वावधानमें इसके निर्माणका भगीरथ प्रयत्न किया गया। जहाँ इसके व्यक्तित्वमें आर्य समाजी गद्य-निर्माताओंके वाक्पाटववश ओज है वहीं मिशनरियोंके त्याग और औदार्यका स्वर भी। अर्थात् हिन्दी गद्य जातीय सम्मिश्रण और संस्कृतियोंके परस्परावलम्बनका जीवित प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। किन्तु हिन्द गद्यके निर्माणमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योग आरम्भिक हिन्दी पत्रकारोंका है। जीवनके नानाविध उलझे और निरन्तर विकसमान प्रवाहको पत्रकारिता संक्षेपमें सम्पुटित कर जन-जनके पास भेजनेका कार्य करती है।

कलकत्तेके हिन्दी पत्रकारोंने इस आरम्भिक गद्यको जिस प्रकार सजाया और सँवारा और उसे पुनर्जागरण कालीन भारतीय राष्ट्रकी समस्त आकांक्षाओं और सम्भावनाओंको समर्थ माध्यमके रूपमें प्रतिष्ठित किया, वह जितना ऐतिहासिक महत्त्वका है उतना ही एक बृहद् विश्लेषण और विवरणका भी।

वैसे तो खड़ी बोलीका गद्य बीजांकुर रूपमें हो सही, बहुत पहलेसे मिलने लगता है। अनेक विद्वान गोरखपन्थी ग्रन्थोंकी टीकाओंमें हिन्दी गद्यका सन्धान कर चुके हैं। आचार्य शुक्लने १४०७ वि० सं० के आस-पास लिखे एक ग्रन्थसे गद्यसे उद्धरण दिये हैं। इन नमूनोंको वे ब्रजभाषा गद्यका नमूना कहते हैं और ये हैं भी, किन्तु इनमें भी खड़ी बोलीके तत्त्व यत्र-तत्र झलक जाते हैं। सच तो यह है कि १९वीं शतीके पहले तक खड़ी बोलीको, चाहे वह गद्य या पद्यके माध्यमके रूपमें हो, सार्वजनिक स्वीकृति नहीं मिली थी। खुसरो खड़ी बोलीके प्रशंसक हो सकते हैं, किन्तु, हाब्सन-जाब्बनके उद्धरणोंसे स्पष्ट मालूम होता है कि हिन्दुस्तानी या खड़ी बोलीको एक गँवारू बोलीसे अधिक महत्त्व प्राप्त न था।

मुसलमान बादशाहोंका मुख्य गढ़ दिल्ली था इसलिए यह स्वाभाविक था कि वहाँकी खड़ी बोलीसे उनका निकटतर सम्पर्क होता। खड़ी बोलीके क्षेत्रीय ढाँचेको लेकर उसमें फ़ारसी आदि विदेशी शब्दोंको भर मुसलमानोंने जिस कामचलाऊ भाषाका निर्माण किया वह जबाने-उर्दू कहलायी। उर्दूका अर्थ सेनाका शिविर या छावनी होता है। यह नयी भाषा मुसलमानी सेनाकी छावनियोंकी भाषा थी। मुसलमानोंके निरन्तर आधिपत्य और देश-भरमें बिखरावके साथ-ही-साथ यह भाषा विजेताओंकी भाषाके रूपमें चतुर्दिक् फैलने लगी। दिल्लीसे मुर्शिदाबाद और दिल्लीसे हैदराबाद इसके प्रसारकी दिशाएँ बनीं। सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याने लिखा है, "१७वीं शताब्दी अन्तसे नहीं तो १८वीं शताब्दीके आरम्भसे मुसलमानों-द्वारा बोली जाती तथा विकसित इस उत्तर भारतीय हिन्दी भाषाके लिए एक नया नाम प्रयुक्त होने लगा। वह नाम था हिन्दुस्तानी।" इसी हिन्दुस्तानीका पद्यगत रूप रेख्ता नामसे प्रसिद्ध था। "तबकी भाषा पश्चकालीन उर्दूकी तरह फ़ारसीसे बिलकुल लदी हुई न थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारसीके शब्द अपेक्षाकृत कम संख्यामें मिलाये जाते थे। एक पंक्तिमें कहीं-कहीं छितरे हुए (रेख्ता) रहते थे। इसलिए आधुनिक उर्दू हिन्दुस्तानी पद्यकी भाषाका आदि रूप कहलाता था।" रेख्तासे मिलती-जुलती एक भाषा हैदराबाद-के आस-पास मुसलमान शासकों-द्वारा प्रतिष्ठित की जाकर दक्खिनी हिन्दीका रूप ग्रहण कर रही थी। किन्तु यह भाषा अभीतक गद्यका सशक्त माध्यम नहीं बन सकी थी। "उन्नीसवीं शतीके आरम्भ तक पत्रों या एतादृश अन्य दस्तावेजोंके अतिरिक्त हिन्दुस्तानीमें गद्यकी रचना नहीं हो पायी थी। अतएव साहित्यिक कलाके विकासकी गुंजाइश ही न थी।"

खड़ी बोलीके इसी अविकसित गद्यको पत्रकारिताका माध्यम माना गया। यह गद्य चूँकि आरम्भमें मुसलमानोंके विचार-विनिमय या सामान्य राजकीय कार्योंके लिए प्रयुक्त होता था, इस कारण जो समर्थ गद्य दिखाई भी पड़ता था वह फ़ारसी-का भारतीय रूप-जैसा ही प्रतीत होता था। अतः कलकत्तेके हिन्दी पत्रकारोंका यह कर्त्तव्य हुआ कि वे इस गद्यको भारतीय सांस्कृतिक जीवनका माध्यम बनायें। भारतीय जीवन एक ओर प्राचीन ह्रासशील परम्परासे उबर रहा था दूसरी ओर अँगरेज़ी आधिपत्यके शिकंजे निरन्तर कसते जा रहे थे। एक ओर युरॅपीय सम्पर्कके कारण युरॅपीय ज्ञान-विज्ञानका प्रवेश हमारे देशमें हो रहा था दूसरी ओर यातायातके अनेक साधन तथा अँगरेज़ी राज्य-व्यवस्थाके तौर-तरीक़े हमारे जीवनको नयी दिशामें बदल रहे थे। इन सभी परिस्थितियोंकी समुचित अभि-व्यक्तिके लिए खड़ी बोलीके गद्यको नये सिरेसे निर्मित और विकसित करनेकी आवश्यकता थी और यह कार्य १८०० से लेकर १९०० के भीतर कलकत्तेकी पत्रकारिताने बड़े मनोयोगके साथ पूरा किया। 'देवनागर'-जैसा पत्र कलकत्तेसे ही निकलता था। देवनागरी लिपिके साथ ही हिन्दी भाषाको अन्तर्प्रान्तीय प्रतिष्ठा दिलानेका महत् अनुष्ठान 'देवनागर'के ही माध्यमसे सम्पन्न हुआ था। लिपि-उन्नयन और प्रसारका जैसा सशक्त उपक्रम 'देवनागर'ने किया वह भाषाकी दृष्टिसे कलकत्तेकी हिन्दी पत्रकारिताकी निस्सन्देह बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कलकत्ता आधुनिक हिन्दी गद्य-शैलीकी जन्म-भूमि ही नहीं बल्कि उसके क्रमिक विकास और उन्नयनमें भी इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशस्तिलक

एक हज़ार वर्ष पूर्वकी एक महत्त्वपूर्ण कृतिका
संक्षिप्त परिचय

डॉ० गोकुलचन्द्र जैन, आचार्य

यशस्तिलक एक महत्त्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थ है जो सोमदेव सूरिकी कृति है और महाराज यशोधरके जीवनचरित्रको आधार बनाकर गद्य और पद्यमें लिखा गया है। ग्रन्थमें आठ आश्वास या अध्याय हैं और सब मिलाकर इसमें दो हज़ार तीन सौ ग्यारह पद्य हैं तथा शेष गद्य। सोमदेवने दोनोंको मिलाकर आठ हज़ार श्लोक प्रमाण बताया है।

इस कृतिका रचनाकाल निश्चित है। सोमदेवने ही कृतिके अन्तमें लिखा है कि चैत्र शुक्ल त्रयोदशी शक संवत् ८८१ (९५९ ई०) को जिस समय राष्ट्रकूट नरेशकी कृष्णराजदेव पाण्डव, सिंहल, चोल, चेर आदि राजाओंको जीतकर मैलपाटी (वर्तमान मेलाडी जो उत्तर अकार्टकी वांदिवाश तहसीलमें है) सेना शिविरमें थे, उस समय उनके चरणकमलोपजीवी, चालुक्यवंशीय अरिकेसरीके प्रथम पुत्र सामन्त वाद्दिगकी राजधानी गंगधारामें यह काव्य रचा गया।

राष्ट्रकूटोंके राज्यमें साहित्य, कला, धर्म और दर्शनकी चतुर्मुखी उन्नति हुई। उस युगकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमिको आधार बनाकर अनेक ग्रन्थोंकी रचना की गयी। यशस्तिलक उसी युगकी एक विशिष्ट कृति है। इसकी रचना जिस मिश्र गद्य और पद्यमें हुई है, साहित्यकी उस विधाको समीक्षकोंने चम्पू कहा है। यशस्तिलकको भी इसी आधारपर चम्पू कहा जाता है।

स्वयं सोमदेवने यशस्तिलकको महाकाव्य कहा है। वास्तवमें यह अपने प्रकारका एक विशिष्ट ग्रन्थ है और इसकी विधा अपने प्रकारकी स्वतन्त्र विधा। एक उत्कृष्ट काव्यके सभी गुण इसमें विद्यमान हैं। कथा और आख्यायिकाके श्लिष्ट, रोमांचकारी और रोचक वर्णन, गद्य और पद्यके सम्मिश्रणका रुचि-वैचित्र्य, रूपकके प्रभावकारी और हृदयग्राही सरल कथोपकथन, महाकाव्यका वृत्तविधान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रससिद्धि, अलंकृत चित्रांकन तथा प्रसाद और माधुर्य युक्त सरल शैली, सुरुचिपूर्ण कथावस्तु और साहित्यकारके दायित्वका कलापूर्ण निर्वाह—यह यशस्तिलकका साहित्यिक स्वरूप है। गद्यका पद्यों-जैसा सरल विन्यास, प्राकृत छन्दोंका संस्कृतमें अभिनव प्रयोग तथा अनेक प्राचीन अप्रसिद्ध शब्दोंका संकलन यशस्तिलकके साहित्यिक स्वरूपकी अतिरिक्त विशेषताएँ हैं।

संस्कृत साहित्य सर्जनके लगभग एक सहस्र वर्षोंमें सुबन्धु, बाण और दण्डिके ग्रन्थोंमें गद्यका; कालिदास, भवभूति, भारवि और श्रीहर्षके महाकाव्योंमें पद्यका; तथा भास और शूद्रकके नाटकोंमें रूपक-रचनाका जो विकास हुआ, उसका और अधिक परिष्कृत रूप यशस्तिलकमें उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त इसमें ऐसी प्रचुर सामग्री है जो इसे प्राचीन भारतके सांस्कृतिक इतिहासकी विभिन्न विधाओंसे जोड़ देती है।

जितनी विविधता और प्रचुरता सामग्रीकी है, उतनी ही इस ग्रन्थमें शब्द-सम्पदा और विवेचन शैलीकी दुरूहताकी भी है। सम्भवतया इस दुरूहताके ही कारण यह साधारण पाठकोंकी पहुँचसे दूर बना आया, पर दक्षिण भारतसे लेकर उत्तर भारत, राजस्थान और गुजरातके शास्त्र-भण्डारोंमें उपलब्ध यशस्तिलककी हस्तलिखित प्रतियाँ इस बातका प्रमाण हैं कि पिछली शताब्दियोंमें भी यशस्तिलकका सम्पूर्ण भारतवर्षमें मूल्यांकन हुआ, और अब तो व्यापक रूपसे भारतीय विद्वानोंका ही अपनी इस निधिकी ओर ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ बल्कि पीटरसन और कीथ-जैसे पाश्चात्य विद्वानोंका भी हुआ है।

सम्पूर्ण यशस्तिलक श्रुतसागर सूरिकी अपूर्ण संस्कृत टीका-सहित लगभग ६० वर्ष पूर्व निर्णयसागर प्रेससे दो खण्डोंमें प्रकाशित हुआ था। इस संस्करणमें पाठकी अनेक अशुद्धियाँ हैं। १९४९ में शोलापुरसे प्रो० कृष्णकान्त हन्दिकीका 'यशस्तिलक ऐण्ड इण्डियन कल्चर' प्रकाशमें आया। १९६० में वाराणसीसे पं० सुन्दरलाल शास्त्रीने हिन्दी अनुवादके साथ प्रथम तीन आश्वासोंका सम्पादन करके प्रकाशन किया है। अन्तिम तीन आश्वासोंका पं० कैलाशचन्द्र शास्त्रीने सम्पादन और हिन्दी अनुवाद किया है और यह 'उपासकाध्ययन' नामसे गत वर्ष ही भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये प्रतिमान पुराने निकष

वास्तवमें हमारे पास यदि कुछ नया है तो नयेको
पुरानेके आमने-सामने होते एन्काउण्टरके
रूपमें आना होगा

लक्ष्मीकान्त वर्मा

आजकी स्थितिमें जब केवल नये मूल्योंका हमें आभास मात्र मिल पाता हो और उसकी कोई तार्किक संगति न बैठ पाती हो या जब प्रतिष्ठित मूल्योंका खोखलापन स्पष्ट दीख पड़ता हो लेकिन वह खोखलापन जीवनसे छूट न रहा हो—मैं समझता हूँ कि इन चिन्तनके क्षणोंकी उपलब्धि इसीमें है कि वह उस आभासको स्वरूप देनेकी चेष्टा बनकर हमें कुछ अनिवार्य विषयोंपर सोचनेकी प्रेरणा देती है।

नये प्रतिमानोंको आज जहाँ नये विचारकोंको विकसित करना है वहीं पुराने और प्रतिष्ठित निकषोंकी व्याख्या और उसकी सीमाओंको भी निर्धारित करना है। मैं यह मानता हूँ कि यह काम कठिन है, किन्तु यदि वास्तवमें हमारे पास कुछ नया है तो उस नयेको पुरानेके समक्ष, आमने-सामने 'एन्काउण्टर' के रूपमें आना होगा। इस दिशामें अभी बहुत काम बाक़ी है और जो शोध कार्य हिन्दीमें चल रहे हैं वे प्रायः इससे शून्य हैं। इतिहासके प्रति, समाजशास्त्रीय स्तरपर, जीवन अध्ययनके,स्तरपर, विशुद्ध सौन्दर्यशास्त्रीय स्तरपर अभी हिन्दीमें उतना काम नहीं हो रहा है जितना अपेक्षित है। इसीलिए आज हिन्दीके साहित्यिक क्षेत्रमें एक बहुत बड़ी खाई है जो नये-पुरानेके बीच उपस्थित होकर दोनोंको एक एक-दूसरेके लिए अछूत सिद्ध कर रही है।

नये साहित्यकार और चिन्तक भी इस समस्याकी या तो उपादेयता नहीं समझते या वे इसको करनेसे डरते हैं। विचारके क्षेत्रमें यह डर प्रायः बड़ा खतरनाक सिद्ध होता है। विचारकको अपने नये विचारोंके लिए उसी प्रकार तत्पर रहना चाहिए जितना कि उसकी आलोचनाके लिए। अपनी स्थापनाओंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भीकताके साथ प्रस्तुत करना चाहिए और यदि तार्किक माध्यमसे, विवेकके माध्यमसे वे विचार ग़लत साबित होते हैं, असंगतियोंसे पूर्ण सिद्ध होते हैं, तो उसे स्वीकार करनेमें भी नहीं हिचकिचाना चाहिए। विचारोंकी स्वतन्त्रतामें विश्वास करनेवालेके लिए यह आवश्यक है और सह-चिन्तनकी यदि कोई सार्थक उपलब्धि हो सकती है तो यही है।

हिन्दीकी सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि इसके वयोवृद्ध चिन्तकों और विचारकोंने इस दृष्टिकोणसे सोचना ही बन्द कर दिया है। हिन्दी साहित्यका इतिहास जो स्व० रामचन्द्र शुक्लने लिख दिया था वही अभी तक मान्य है। उससे आगे सोचने-समझने, लिखनेकी चेष्टा ही नहीं की गयी है। इसी प्रकार आलोचना शास्त्रमें प्राचीन शास्त्रियों-द्वारा निर्धारित साहित्यके सिद्धान्तोंका एक वैज्ञानिक विश्लेषण आवश्यक है। मैं समझता हूँ प्राचीन आलोचनाशास्त्र विवरणात्मक अधिक है और मात्र वर्गीकरण करके साहित्यकी मूल प्रवृत्तियोंकी मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक और विश्लेषणात्मक व्याख्या कम है। प्रयाग विश्वविद्यालयमें आयोजित एक सेमिनार (१९६४) में जब डॉ० जगदीश गुप्तने रस-सिद्धान्तकी सीमाओंको निर्धारित करते हुए यह कहा कि आजके आधुनिक काव्यपर वह पूर्णतया लागू नहीं किया जा सकता तब डॉ० नगेन्द्र और उन्हींके समान कुछ पुराने विचारकोंको यह बात बुरी लगी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्वविद्यालयोंमें शायद नये और पुरानेको आमने-सामने रखकर देखनेकी दृष्टिका अभी श्रेष्ठ है। इसीलिए उन स्वतन्त्र लेखकोंका जो विश्वविद्यालयसे मुक्त हैं, इस दिशामें विचार करना और अध्ययन प्रस्तुत करना नितान्त आवश्यक है।

आजका साहित्य वस्तुतः रोमानी और अ-रोमानी प्रवृत्तियोंको एक साथ लेकर चल रहा है जिसके कारण बहुत-कुछ साहित्य जो नयेके नामसे लिखा जा रहा है, उसके पुनर्मूल्यांकनकी आवश्यकता है। केवल रूप नया दे देनेसे कोई भी कृति अ-रोमानी नहीं हो सकती। नये हिन्दी समीक्षकोंको नये साहित्यको भी इस दृष्टिसे प्रस्तुत करना चाहिए। चिन्तनके क्षेत्रमें कोई भी विचार बेईमानीका विचार नहीं होता।—हाँ वह ग़लत हो सकता है, भ्रमपूर्ण हो सकता है; और असंगतियाँ भी सहज हो सकती हैं और भ्रम भी सहज हो सकते हैं। बेईमानी शब्द ही साहित्यके क्षेत्रका, चिन्तनके क्षेत्रका नहीं है और न उसका कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौन्दर्यात्मक महत्त्व ही है।

नया साहित्य वहाँसे प्रारम्भ ही होता है जहाँ रसकी निष्पत्तियाँ शुद्ध रूपमें टिकनेमें असमर्थ होती हैं। यह असमर्थता कोई आरोपित असमर्थता नहीं है, यह स्वजन्य असमर्थता है, यह उस आलोचना शास्त्रकी सीमा है। नया साहित्यकार इस सीमाको स्वीकार करके चलता है और एक नये सन्दर्भमें अपनी संवेदनाओंको नयी व्यवस्था देता है। मूल रूपमें जो आज नये-पुरानेका अन्तर है वह यह है कि प्राचीन आलोचना शास्त्रके अनुसार लोग रूपको नयी व्यवस्था देते थे—स्थायी भाव और मूल संवेदनाओंमें कोई परिवर्तन नहीं आता था। आज स्थायी भाव ही पुनर्व्यवस्थित हो रहा है! उसके आधार नये सिरेसे नये सन्दर्भोंमें जुड़कर अपना रागात्मक अर्थ बना रहे हैं। ऐसी स्थितिमें यह कहना कि प्राचीन काव्य-शास्त्रके अनुसार ही हम नये साहित्यका मूल्यांकन करेंगे—ग़लत और निरर्थक होगा।

किसी भी साहित्यिक प्रवृत्तिके मूल्यांकनके लिए बीस वर्षकी अवधि पर्याप्त होनी चाहिए। विभिन्न प्रवृत्तियोंके माध्यमसे आजका नया भावबोध इन बीस वर्षोंमें व्यक्त होता आ रहा है। यदि इन बीस वर्षोंमें प्राचीन काव्य-शास्त्र-द्वारा इस बीचके साहित्यिक कृतित्वका मूल्यांकन नहीं हो सका तो यह आवश्यक है कि इस बीस वर्षकी साहित्यिक प्रवृत्तियोंमें निहित मूल्योंकी विवेचना और उनकी सौन्दर्यात्मक उपलब्धियोंके विश्लेषणका शास्त्र इन्हीं काव्य साहित्यसे निर्मित किया जाये। आजके सन्दर्भमें यह अनिवार्य तो है ही साथ ही यह उचित भी होगा।

साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य

डॉ० रघुवंश

एक महत्त्वपूर्ण आलोचना-कृति

पठनीय और संग्रहणीय

मूल्य ५.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समकालीन जर्मन लेखन

आधुनिक जर्मन साहित्यके परिवेश
और उसकी उपलब्धियोंकी झाँकी

श्रीपति उपाध्याय

यह कहना या मानना तो कठिन है कि दूसरे महायुद्धके कारण जर्मनीके साहित्य-जगत्‌की गतिविधिमें कोई अवरोध नहीं आया। क्योंकि नाज़ीवाद और युद्धका जितना भयानक परिणाम जर्मनीके सांस्कृतिक क्षेत्रको भुगतना पड़ा वह वहाँके आर्थिक क्षेत्रको नहीं भुगतना पड़ा है। युद्धके बाद पश्चिमी जर्मनीने जिस गतिसे अपनी आर्थिक स्थितिको पुनः सुदृढ़ किया है, सांस्कृतिक क्षेत्रमें उसी गतिसे वह अपनी स्थिति नहीं सँवार पाया है और आगे भी इस अभावकी पूर्ति जल्दी सम्भव है—यह नहीं कहा जा सकता। नाज़ीवादकी भयंकर अव्यवस्था, अपराधमें स्वयं भागी होनेकी दोष-भावना, हार, विनाश और राष्ट्रके बँटवारेसे मिले आघातको वहाँके साहित्यकार और चिन्तक-दार्शनिक सहज ही नहीं भुला पायेंगे।

इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमें आधुनिक जर्मन साहित्यकी चर्चा करते हुए सर्वप्रथम हम कथा-साहित्यको लेना चाहेंगे। पिछले महायुद्धके बाद कथा-साहित्यका क्षेत्र उन्हीं लेखकोंसे प्रभावित रहा जिन्होंने १९२०-३० के आसपास लिखना प्रारम्भ कर दिया था। भले ही उनमें-से कईने प्रसिद्धि और ख्याति काफ़ी बादमें पायी। उदाहरणके लिए फ्रेंज काफ़्काका नाम लिया जा सकता है। अन्य लेखकोंमें हेरमान क्रोश, हेनरिश मान, रॉबर्ट मुसिल, टामस मान और अल्फ्रेड डब्लिनकी कृतियाँ युद्धकालमें या उससे पहले ही लिखी गयीं लेकिन प्रसिद्धि उन्हें भी बादमें ही मिली। ऐसी कृतियोंमें टामस मानके 'डॉक्टर फाउस्टस' और डब्लिनके 'हैमलेट ऑडेर डी लाँग नाइट निम्ट आइन एण्ड'—उपन्यासोंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लेख किया जा सकता है। टामस मानका उपन्यास जर्मन साहित्यके विशिष्ट उपन्यासोंमें-से एक गिना-माना जाता है। डब्लिनका उपन्यास भी एक महत्त्वपूर्ण कृतिके रूपमें स्वीकार किया गया है। यह उपन्यास युद्धमें आहत उस सैनिक की कथा है जो जीवनके कटु-कठोर सत्योंको अस्वीकार नहीं कर पाता और अपने भोगे हुए सत्योंके माध्यमसे ही नये जीवनका वरण करता है।

समसामयिक जर्मन साहित्यमें गद्य काफ़ी मात्रामें और महत्त्वपूर्ण ढंगसे लिखा जा रहा है। लेखकोंमें विचारोंका अन्तर है जो कि स्वाभाविक भी है। मसलन कुछ परम्परा और अतीतसे जुड़े हुए हैं, कुछ बिलकुल नयी चेतना, नयी संवेदनाके लेखक हैं जो तमाम रूढ़ियों और ढकोसलोंकी दीवारें ढहा देना चाहते हैं, और कुछ 'मज्झिमनिकायी'—बीचकी कड़ीवाले हैं।

जर्मन साहित्यमें गद्य लिखनेवालोंकी एक लम्बी संख्या होनेके बावजूद विशिष्टता कुछको ही मिली है। पिछले दिनों जो कृतियाँ वहाँ बहुत चर्चित हुईं उनमें 'ब्रिलियर्ड उमहात्सेन', 'डी ब्लेश्त्रोमेल', 'श्लूसबेल' और 'स्टिलर' प्रमुख हैं। ये सभी उपन्यास हैं। हांइरिश बलका उपन्यास 'ब्रिलियर्ड उमहात्सेन' इधरकी बहुत चर्चित पुस्तकोंमें-से एक है। इस कृतिने साहित्य-समीक्षकों और सामान्य पाठकों—दोनोंको ही सन्तोष दिया है। हांइरिश बलकी अनेक कहानियों का भी जर्मन साहित्यमें विशिष्ट स्थान है। 'डी ब्लेश्त्रोमेल'—कुंटेर ग्रासका उपन्यास है। यह एक ऐसा विवादास्पद उपन्यास है जिसमें जर्मनीके गत तीस वर्षोंकी बड़ी रोमांचक कथा कही गयी है। 'श्लूस बेल' उपन्यासके लेखक गर्ट गैसर नैतिकतावादी आलोचक भी हैं। यह उनका व्यंग्य-उपन्यास है जिसमें पश्चिमी जर्मनीके आर्थिक पुनरुत्थानके बीच उपजे नित नये कुत्सित प्रभावोंपर करारा व्यंग्य किया गया है। मैक्स फ्रिशका उपन्यास 'स्टिलर' भी जर्मन साहित्यमें पर्याप्त चर्चा और लेखककी ख्यातिका विषय बना है।

कहना न होगा कि जर्मनी वासियोंका रंगमंचके प्रति अपूर्व और अत्यधिक अनुराग है। युद्धमें अधिकांश नाट्य-गृहोंके नष्ट हो जानेके बाद भी यह अनुराग बना रहा, और फलतः युद्धोत्तर कालमें जिस गतिसे वहाँ नये थियेटर निर्मित हुए, सचमुच वह एक प्रीतिकर विस्मयकी स्थिति है। यहीं उल्लेखनीय बात यह भी है कि जर्मनीके अधिकांश नाट्य-गृह राज्य एवं नगर प्रशासन-द्वारा संरक्षित हैं। उन्हें राज्य और नगर प्रशासनसे अनुदान मिलता है। यही कारण है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनीका रंगमंच राजनयिक कुचक्रों और व्यावसायिक स्वार्थोंसे सुरक्षित बचा हुआ है।

जर्मनीमें रंगमंचकी इन सतत जागरूक गतिविधियोंके बावजूद महत्त्वपूर्ण नये नाटकोंका अभाव है। आज भी वहाँ प्रायः पुराने लिखे नाटक या विदेशी नाटक ही प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रायः सभी विख्यात विदेशी नाटकोंका जर्मन रंगमंचपर प्रस्तुतीकरण हो चुका है। जर्मनीके पुराने नाटककारोंमें बर्तोल्त ब्रेख्त-के नाटक काफ़ी लोकप्रिय हुए हैं और उनके नाटक कई-कई बार मंचपर प्रस्तुत किये गये हैं। नये नाटककारोंमें प्रमुख हैं बोल्फगांग बोर्शेर्ट, कार्ल विटलिंगर, माटिआस ब्रान, लियोपोल्ड आलसेन, बोल्फगांग हिल्डाशाइमर। बोर्शेर्टके एकमात्र नाटक 'ड्राउसन फॉर डेर टुएर' ने जर्मनीके नाट्य-प्रेमियोंके बीच काफ़ी-लोक-प्रियता अर्जित की है।

कविताकी दृष्टिसे जर्मन साहित्यकी एक गौरवपूर्ण परम्परा रही है। ह्यूगो-वान, रिल्के, ब्रेख्त, हरमान हेस्स, युंगर, गारफ्रिट बैन और विल्हेम लेमानकी कविताएँ आज विश्वके काव्य-जगत्में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी हैं। रिल्केको तो इस शतीका महानतम युरॅपीय कवि कहा जा सकता है। यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि जर्मन कविताकी उपलब्धि, अन्य साहित्यिक विधाओंकी अपेक्षा, अधिक समृद्ध है।

आजकी जर्मन कविता अपनी अभिव्यक्ति और काव्य तथा भाषा-प्रयोगोंके कारण अपनी पूववर्ती काव्य-परम्परासे काफ़ी बदली हुई है। इसे हम उसकी विकास-गतिकी उपलब्धि भी मान सकते हैं। इधरके अत्याधुनिक जर्मन कवियोंमें इंगबर्ग बाशमान और पाउलु सिलेके नाम महत्त्वपूर्ण हैं। इनकी रचनाएँ जर्मन काव्य-जगत्में काफ़ी चर्चित और सम्मानित हुई हैं।

कुल मिलाकर हम देखते हैं कि जर्मन साहित्य युगकी जटिल जीवन-अनु-भूतियोंको विश्लेषित करता हुआ निरन्तर विकसमान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजराती साहित्य

इतिहास और उपलब्धि की रेखाएँ

सुबोध शास्त्री

भारतकी चौदह भाषाओंमें गुजरातीका महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्यके इतिहास और गुजरातीके इतिहासका तुलनात्मक अध्ययन करनेपर एक प्रीतिकर और आश्चर्यजनक साम्य दिखाई देता है। गुजराती भाषा भी प्राचीन कालमें ब्रजभाषासे काफ़ी प्रभावित रही है। आगेका सत्य तो यह भी है कि गुजरातीके कविके लिए ब्रजभाषामें कविता करना सम्मानजनक या कहें तो अनिवार्य भी माना जाने लगा। इतिहासके आधारपर पता चलता है कि गुजरातीके अनेक वैष्णव कवियोंने अपनी रचनाका माध्यम ब्रजभाषाको ही बनाया है। हाँ, रीतिकाल गुजरातीमें नहीं है, पर शृंगार-प्रधान रचनाओंकी भी कमी गुजरातीमें नहीं।

गुजरातो साहित्यके इतिहासको सामान्यतः हम तीन कालोंमें बाँट सकते हैं : १. आदि काल (सन् १००० से १५०० तक), २. मध्य काल (१५०० से १८५० तक), और ३. आधुनिक काल (१८५० से अद्यतन)। कहना न होगा कि यह विभाजन भाषाके विकासके ही समानान्तर है।

भाषाकी दृष्टिसे आदि कालमें अपभ्रंश और गौर्जर अपभ्रंशकी प्रधानता है। अपभ्रंशके श्रेष्ठ रचनाकारोंमें हेमचन्द्रका नाम आता है। हेमचन्द्रने महाकाव्य, छन्दशास्त्र, योगशास्त्र, काव्यशास्त्र, व्याकरण, शब्दकोश और जीवनचरित-पर ऐतिहासिक महत्त्वका कार्य किया है। साथ ही उन्होंने प्रबन्ध-काव्य और रासकी भी रचना की। अपभ्रंशके अन्य विशिष्ट रचनाकारोंमें धनपाल, सोम गुणवस्तुपालका नाम आता है। गौर्जर अपभ्रंशके लेखकों और कवियोंमें जिनपद्म सूरि, विनयभद्र, शालिभद्र सूरि, राजशेखर और विजयसेन सूरि प्रमुख हैं। ये सभी नाम जैन धर्म और सिद्धान्तोंसे सम्पृक्त हैं। जैनेतर रचनाकारोंमें प्रमुख हैं आसाहत, श्रीधर व्यास, अब्दुर्रहमान आदि। गद्य साहित्य-रचनाकी दृष्टिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजराती साहित्यके इतिहासमें इस युगका काफ़ी महत्त्व है।

गुजराती साहित्यके मध्य कालको हम हिन्दीके समानान्तर भक्ति कालके रूपमें स्वीकार कर सकते हैं। इस युगका प्रारम्भ न केवल गुजरातीके बल्कि समूचे साहित्य-जगत्के भक्त कवि नरसी मेहतासे माना जाता है। नरसी मेहताने गुजराती साहित्यको अनेक विशिष्ट रचनाएँ दी हैं जिनपर गुजरातीभाषी सहज ही गौरवका अनुभव कर सकता है। नरसी मेहताकी रचनाओंमें प्रमुख हैं : 'सुदामा चरित', शामलशाहका विवाह, राससहस्र पदी, हारमाला तथा हुण्डी। इसी सन्दर्भमें दूसरा नाम हम मीराका ले सकते हैं। मीराकी काव्य-साधना जितना अवदान हिन्दीके लिए है किसी भी दृष्टिसे गुजरातीके लिए कम नहीं है। गुजराती साहित्यमें मीराका उतना ही सम्मानपूर्ण स्थान है जितना हिंदी साहित्यमें।

'कादम्बरी' संस्कृतमें ही नहीं लिखी गयी, गुजरातीमें भी इसकी रचना संस्कृतके प्रकाण्ड पण्डित कवि भालणने की है। इतिहासका तो यहाँ तक दावा है कि गुजरातीमें आख्यान-काव्य रचनाकी शुरुआत भालणने ही की है और उनके अनुकरणपर काफ़ी बाद तक गुजरातीमें आख्यान-काव्योंकी रचना की जाती रही है। भालणको ही पारम्परिक उपलब्धियोंमें पद्मनाभ, विष्णुदास, नाकर, रुद्रव आदिका नाम लिया जाता है।

मध्य कालके कवियोंमें गुजराती साहित्य-जगत्में जितनी जनप्रियता प्रेमानन्दने पायी, वह अन्यको नहीं मिल सकी। अपनी अद्वितीय काव्य रचनाओं और लोकप्रिय अभिव्यक्तियोंके कारण प्रेमानन्द गुजराती साहित्यका एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व है। और यहीं हम मध्य कालके अन्तिम कवि दयारामका उल्लेख कर सकते हैं। दयाराम विशुद्ध शृंगारिक कवि थे।

और अब आधुनिक काल : बिलकुल वही स्थितियाँ-परिस्थितियाँ जो हिन्दीके साथ रहीं। और हिन्दी ही क्यों समूचे देशके साथ रहीं। यह वही समय था जब आधुनिकताका प्रारम्भ हुआ। कहें तो भारतीय नवजागरणकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह आधुनिकता ही है। अँगरेज़ोंके आगमन और अँगरेज़ी शिक्षाने हमारे राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिवेशमें परिवर्तनकी अपेक्षा उत्पन्न की। गुजरात प्रदेश इस नवजागरणसे प्रभावित हुआ। वहाँ भी अपनी पूरी चेतनाके साथ धार्मिक, राजनयिक और साहित्यिक नवक्रान्तिकी आवाज़ें गूँजने लगीं। विचार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वातन्त्र्यके लिए संघर्ष प्रारम्भ हुए। हाँ, इस संघर्षका स्वर हिन्दी या अन्य भाषाओंकी तुलनामें भिन्न केवल इस दृष्टिसे था कि वहाँ गान्धीका अहिंसावाद अधिक सिरपर चढ़कर बोल रहा था। दूसरी बात एक यह भी कि गुजराती साहित्य वादोंके दलदलमें नहीं फँसा था।

संक्रमण और विघटनके इस युगमें हिन्दीके भारतेन्दु-जैसे एक व्यक्तित्वका नाम गुजराती साहित्यमें भी लिया जायेगा—नाम है 'नर्मद'। नर्मद गुजराती साहित्यका एक क्रान्तिकारी व्यक्तित्व है जिसने साहित्य और समाजको हर दिशामें, उसके प्रत्येक ग़लत स्थलपर जमकर और खुलकर लिखा है। नर्मदके ही समकालीन कवीश्वर दलपतराम थे। दलपतरामकी कविताएँ अपनी सुधारवादी भावनाओं और अभिव्यक्तिके कारण गुजराती साहित्यमें महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। गुजरातीका पहला उपन्यास भी इसी समय लिखा गया और आलोचनाका सूत्रपात भी नर्मदके ही समकालीन माना जाता है। नन्दशंकर और तुलजाशंकर मेहता उपन्यासके क्षेत्रमें और नवलराय पण्ड्या आलोचनाके क्षेत्रमें पुरस्कर्ताके रूपमें स्वीकारे जाते हैं।

इसके बाद गुजरातीका महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय उपन्यास 'सरस्वती चन्द्र' (१८८७ ई०) प्रकाशित हुआ। लेखक थे गोवर्धन राम : जो १९०५ में प्रथम गुजराती साहित्य परिषद्के अध्यक्ष भी थे। गुजराती साहित्यको समृद्ध बनानेमें गोवर्धनरामका विशिष्ट योगदान कहा है। इन्हीं समकालीन गुजराती साहित्य-सेवियोंमें नरसिंह राव दिवेटिया, रमण भाई, मणिलाल, नीलकण्ठ, आनन्द शंकर ध्रुव, कवि कान्त, केशव हर्षद ध्रुव आदिका प्रमुख स्थान है। इसी अवधिका एक और महत्त्वपूर्ण नाम न्हानालालका है। न्हानालालके रास और गीत गुजरातीकी अमूल्य निधियाँ हैं।

जैसा कि पहले कहा गया है, आधुनिक गुजराती साहित्य गान्धीजीके व्यक्तित्व और उनके सिद्धान्तोंसे बहुत अधिक प्रभावित हुआ। इस प्रभावकी सीमा रेखा हम सन् १९२० से १९४० के बीच खींच सकते हैं। बीस वर्षोंकी अवधिमें, गुजराती साहित्यके इतिहासमें बड़े महत्त्वपूर्ण नाम जुड़े हैं, जिनमें-से कुछ तो आन्तरभारती महत्त्वके भी माने जा चुके हैं। काका कालेलकर, किशोरलाल मश्रूवाला, महादेव देसाई, रामनारायण पाठक, नरहरि भाई पारिख जैसे चिन्तक-विचारक और आलोचक इसी अवधिकी देन हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और विशिष्ट नाम—जिसका गुजराती साहित्यके विकास और समृद्धिमें अभूतपूर्व अवदान है—श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशीका है। मुंशी भी हैं तो इसी अवधिकी देन किन्तु गुजराती साहित्यको आज भी उनकी लेखनीका योग निरन्तर मिल रहा है। मुंशी राजनयिक दृष्टिसे तो गान्धीके व्यक्तित्वसे प्रभावित रहे पर लेखनके क्षेत्रमें उन्होंने इस प्रकारके किसी प्रभावको नहीं स्वीकार किया। कहना न होगा कि मुंशीजीने कई विधाओं—उपन्यास, कहानी, निबन्ध नाटकमें अपनी रचनाएँ दी हैं।

१९४० के बाद गुजराती साहित्यमें एक बिलकुल नयी तरह की तेज़ी आयी। विषय और वस्तु दोनों ही दृष्टियोंसे लेखनमें परिवर्तन आया, रचनाकारोंने अपनी अभिव्यक्तिका माध्यम नयी भाषा नयी शैलीको बनाया। जीवनको और अधिक गहरी और व्यापक दृष्टिसे देखनेकी प्रवृत्ति जगी। काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास, आलोचना, निबन्ध प्राय: सभी विधाओंमें नये प्रयोग किये गये। प्रत्येक विधाने अपने विकास-मार्गपर बड़े सधे और जीवन्त चरण रखे।

रचनाकारोंमें प्रमुख हैं—इस युगके कवियोंमें : उमाशंकर जोशी, स्नेह रश्मि, प्रह्लाद पारिख; कहानीकारोंमें : धूमकेतु; उपन्यास-लेखकोंमें : रमणलाल देसाई, चुन्नीलाल शाह, गुणवन्त राय आचार्य; नाटककारोंमें : चन्द्रवदन मेहता और चनसुखलाल मेहता; आलोचकों और निबन्धकारोंमें : उमाशंकर जोशी, अनन्तराम रावल, विष्णुप्रसाद त्रिवेदी, विनोदिनी नीलकण्ठ, विजयराय वैद्य। लोक साहित्य मर्मज्ञ झवेरचन्द्र मेघाणीका नाम भी इसी शृंखलामें लेना होगा।

इसके बादकी (कहें तो आजकी) पीढ़ीमें जो रचनाकार गुजराती साहित्यको अपनी हार्दिकता और ईमानदारीके साथ अपनी रचनाएँ दे रहे हैं उनमें उल्लेखनीय कवि हैं : राजेन्द्रलाल शाह, जयन्त पाठक, पिनाकिन ठाकोर और कथाकार हैं : पन्नालाल पटेल, चुन्नीलाल मड़िया, ईश्वर पेटलीकर, गुलाबदास ब्रोकर, पीताम्बर पटेल, और नाटककार हैं : जयन्ति दलाल, पुष्करचन्दर; और सुरेश जोशी-जैसा चिन्तक-विचारक भी।

शोध और अनुसन्धानकी दृष्टिसे जितनी 'उर्वर' तथा 'स्तरीय' उपलब्धि हिन्दीकी है, ग़नीमत है कि गुजरातीकी शायद अन्य भारतीय भाषाओंको भी नहीं है! गुजराती साहित्यके शोधकार्यमें जिन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है उनमें प्रमुख हैं—हरिवल्लभ भायाणी, के० का० शास्त्री, भोगीलाल सांडेसरा आदि।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्यकी गतिविधि

एक महत्त्वपूर्ण शोध-संस्थाके परिचय प्रसंगमें

महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

संस्कृत शोध तथा प्रकाशनकी सुप्रसिद्ध संस्था, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होश्यारपुर (पंजाब), के लिए यह वर्ष अनेक दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण है। इस वर्ष इसकी सर्वप्रमुख योजना, "वैदिक पदानुक्रम कोश" का अन्तिम, १६वां खण्ड प्रकाशित हो गया। इसपर गत ६१ वर्षसे कार्य चल रहा था। इसमें २० लाखके लगभग रुपया खर्च हो चुका है। इसकी सह-योजनाके रूपमें "वैदिक-पद-तालिका" के भी ६ खण्ड पूरे हो गये हैं। अब "वैदिक शब्दार्थ कोश" की योजनापर कार्य आरम्भ कर दिया गया है जिसके १५ खण्ड होंगे। इसका नमूना तैयार करके सम्मत्यर्थ देश-विदेशके विद्वानोंको भेज दिया गया है। इसमें सभी शब्दोंके अबतकके विद्वानों-द्वारा स्वीकृत अर्थोंको देकर उनके सही अर्थोंपर विचार किया जायेगा। शब्दोंके इस ऊहापोहके साथ देश-विदेशकी भाषाओंके तुलनात्मक अध्ययन तथा उनके मूल रूपोंकी खोजका कार्य भी चल रहा है।

अगस्तसे आरम्भ इसी सत्रसे संस्थानके शोध शिक्षण, तथा पुस्तकालय विभागोंका प्रबन्ध पंजाब विश्वविद्यालयने ले लिया है। इस पुनर्गठित संस्थाका नाम 'विश्वेश्वरानन्द संस्कृत व भारत भारतीय संस्थान' है तथा यह वर्तमान संचालक आचार्य विश्वबन्धुके अधीन पूर्ण स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करती रहेगी। यहाँ एक "कालिदास चेयर" की स्थापना भी की जा रही है।

संस्थानके संस्कृत त्रैमासिक "विश्व संस्कृतम्" संस्कृतकी नयी पत्रिका है जो पुष्ट आकार-प्रकारमें विपुल सामग्रीके साथ प्रकाशित होती है। यह एक नया दौर है जिसमें अब अच्छे स्तरकी पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी हैं। इससे पहलेसे जो संस्कृत पत्रिकाएँ निकलती हैं वे बेहद दुबली-पतली, रद्दी काग़ज़पर छपी तथा साधारण कोटिकी सामग्रीसे पूर्ण होती हैं – यद्यपि इनमें दो-तीन साप्ताहिक भी हैं। साहित्य अकादेमीके षाण्मासिक, 'संस्कृत प्रतिभा' ने यह नया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व आरम्भ किया। भारतीय विद्या भवन, बम्बई, ने भी 'संविद्' नाम से एक सुन्दर त्रैमासिक आरम्भ कर दिया है। इसी प्रकार स्वाध्याय मण्डल, पारडी (सूरत) से पं० श्रीपाद दा० सातवलेकरके सम्पादनमें 'अमृतलता' नामक त्रैमासिक आरम्भ हुआ है। इन पत्रिकाओंमें नये क़िस्मका साहित्य भी दिखाई देता है।

पी० लाल-कृत एक और महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ है – 'भगवद्गीता' का। पिछले अनुवादोंकी भाँति इसमें भी सरलीकरण कर दिया गया है और उसकी पठनीयता बढ़ा दी गयी है। परन्तु गत अनुवादकी भाँति इसमें मूलकी काट-छाँट नहीं की गयी है, इसलिए सम्भवतः यह अधिक पसन्द किया जायेगा। सरलताकी दृष्टिसे पेंगुइन्स-द्वारा दो-तीन वर्ष पूर्व प्रकाशित जुआन मास्करो-कृत गीतानुवादकी बड़ी प्रशंसा हुई थी। यह भी उसीके समकक्ष रखा जा सकता है। अभी यह केवल सौ प्रतियोंके विशेष संस्करणके रूपमें प्रकाशित हुआ है, बादमें सम्भवतः यह सामान्य संस्करणके रूपमें निकले। लाल अब ऋग्वेदके अग्नि सूक्तोंका अनुवाद कर रहे हैं। अपने कार्यकी इस व्यापकताके लिए वे बधाईके पात्र हैं।

यूनेस्कोकी अनुवाद योजनाके अन्तर्गत लन्दनके प्रकाशक एलेन ऐण्ड अनविनने सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ, स्व० प्रो० फ्रैंकलिन एडगर्टनके दो ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं। पहला है 'पंचतन्त्र' का अनुवाद तथा दूसरा वेद, उपनिषद् तथा महाभारतके दर्शनपरक अंशोंका अनुवाद – इसका नाम है 'दि बिग्निंग्स ऑव इण्डियन फिलॉसॉफी'। प्रो० एडगर्टने इस विषयपर वर्षों कार्य किया। खेद है कि पुस्तकके प्रकाशनसे पूर्व ही उनका देहान्त हो गया।

संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० भोलाशंकर व्यास

मूल्य ५.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ

द्वारा प्रकाशित

युद्ध

सम्बन्धी दो उपन्यास

देशके वर्तमान वातावरणमें

सर्वथा पठनीय

• •

रक्तराग

देवेश दास

राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादजीके शब्दोंमें यह पुस्तक सामरिक पृष्ठभूमिपर उपन्यासके रूपमें लिखी गयी है। सैनिक-जीवन सर्वसाधारणके लिए एक प्रकारसे रहस्य बना रहता है। इसमें उस जीवनपर प्रकाश डाला गया है। मेरी आशा है कि इससे देशको और विशेषकर हमारे सैनिकोंको कुछ मार्ग-दर्शन मिलेगा और सच्चे सैनिकका आदर्श उनके सामने आयेगा।

३.००

• •

पलासी का युद्ध

तपनमोहन चट्टोपाध्याय

देशके इतिहासको एक मोड़ देनेवाले इस युद्ध और उसकी पृष्ठभूमिका सर्वप्रथम प्रामाणिक चित्रण, जो तथ्यात्मकताके बलपर इसे इतिहास-पुस्तक बनाता है और कथा-रसके कारण उपन्यास। महत्त्वपूर्ण होनेसे मूल बंगला पुस्तकका अँगरेज़ी अनुवाद भी हुआ।

३.५०

प्राप्ति-स्थान : भारतीय ज्ञानपीठ, ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पुनश्च

'नदीके द्वीप' : क्यों और किसके लिए

अज्ञेय

अपनी किसी कृतिके बारेमें कुछ कहनेका आकर्षण कितना खतरनाक है, इसको वे लोग पहचानते होंगे जिन्होंने कवि-सम्मेलनों आदिमें कवियोंको अपनी कविताकी व्याख्या करते सुना है। कृतिकारको जो कहना है, जब उसने कृतिमें वह कहा ही है, और मानना चाहिए कि यथाशक्य सुन्दर रूपमें ही कहा होगा, तब क्यों वह उसे कम सुन्दर ढंगसे कहना चाहेगा? एक जवाब यह हो सकता है कि जो कृतिमें सुन्दर ढंगसे कहा गया है, वह व्याख्यामें सुबोध ढंगसे कहा जायेगा। तो इस जवाबमें सुन्दर और सुबोधका जो विरोध मान लिया जाता है, उसे कमसे कम मैं तो स्वीकार नहीं करता। सुबोधता भी सौन्दर्यका ही एक अंग है या होना चाहिए। ऐसा ज़रूर हो सकता है कि वस्तुके अनुकूल रूप-विधानमें – और इस अनुकूलतामें ही सौन्दर्य है – सुबोधता इसलिए कम हो कि वह वस्तु भी वैसी हो। तब इस दशामें सुबोध बनानेमें हम वस्तुसे कुछ दूर ही चले जायेंगे। कोई भी वस्तु, कृतिमें अपने सुन्दरतम और इसलिए सुबोधतम रूपमें आनी चाहिए, तभी वह कृति कला-कृति है। अगर वह सुबोधतम होकर भी सहज सुबोध नहीं हुई है, तो यह तभी हो सकता है कि उस स्थितिमें वह वस्तु अधिक सुबोध नहीं हो सकती, और अगर ऐसा है तो व्याख्या सुबोध तभी होगी जब वह कृतिके सम्पूर्णको खण्डित करके उसके खण्डको ही – या अलग-अलग खण्डोंको ही देखें।

'नदीके द्वीप'में भूमिका नहीं है। इसीलिए नहीं है कि मैंने सीख लिया, उपन्यासमें उपन्यासकारको जो कहना है, वह उपन्याससे ही प्राप्य होना चाहिए; न सिर्फ़ होना चाहिए, उपन्याससे ही हो सकता है, नहीं तो फिर उपन्यासकारने वह कहा ही नहीं है। मैं क्यों मान लूँ कि मेरा पाठक इतना बुद्धि-सम्पन्न नहीं होगा कि मेरी बात पहचान ले? बल्कि इतना ही नहीं, यह भी तो सम्भव है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि मैंने जो कहा है, उसे मैं स्वयं दूसरे रूपमें उतना ठीक न पहचानूँ, न जानूँ? स्पष्ट है कि कहानीकार भी इस बातको मानता है कि 'कहानीपर विश्वास करो, कहानीकारपर मत करो'। नहीं तो कहानी क्यों लिखता, बिना कहानीके ही निरी व्याख्या क्यों न लिख डालता? ऐसे भी लेखक हैं जिन्होंने कृतिसे बड़ी भूमिकाएँ लिखी हैं – कभी-कभी भूमिकाएँ ही पहले और प्रधान मानकर लिखी हैं, और फिर कृतिमें केवल भूमिकामें प्रतिपादित सिद्धान्तोंको उदाहृत कर दिया है। लेकिन ऐसी दशामें भूमिकाको ही कृति मानना चाहिए, और तथा-वर्णित कृतिको उसकी एक अलंकृति, एक दृष्टान्त।

'नदीके द्वीप' व्यक्ति-चरित्रका उपन्यास है। इससे इतर कुछ वह क्यों नहीं है, इसका मैं क्या उत्तर दूँ? और दूँ ही, तो वह मान्य ही होगा ऐसा कोई आश्वासन तो नहीं है। व्यक्ति अपने सामाजिक संस्कारोंका पुंज भी है, प्रतिबिम्ब भी, पुतला भी; इसी तरह वह अपनी जैविक परम्पराओंका भी प्रतिबिम्ब और पुतला है – 'जैविक' सामाजिकके विरोधमें नहीं, उससे अधिक पुराने और व्यापक और लम्बे संस्कारोंको ध्यानमें रखते हुए। फिर वह इस दायपर अपनी छाप भी बैठाता है, क्योंकि जिन परिस्थितियोंसे वह बनता है उन्हींको बनाता और बदलता भी चलता है। वह निरा पुतला, निरा जीव नहीं है, वह व्यक्ति है, बुद्धि-विवेक-सम्पन्न व्यक्ति। तो अब हम चाहें तो व्यक्तिको जैसा वह है वहींसे ले सकते हैं, उस बिन्दुसे आरम्भ करके उसकी गति-विधिको देख सकते हैं, या फिर मुख्यतया इसीपर विचार कर सकते हैं कि वह वैसा है वैसा हुआ क्यों; और वैसा होकर वह क्या कर रहा है, इसे गौण मान ले सकते हैं। पहलेमें सामाजिक शक्तियोंको निहित मानकर चलते हैं और व्यक्ति-चरित्र ही सामने होता है, दूसरेमें व्यक्ति गौण होता है और सामाजिक शक्तियाँ ही प्रधान पात्र हो जाती हैं। जहाँ तक शिल्प-विधानका प्रश्न है, दोनों प्रक्रियाएँ अपना स्थान रखती हैं, दोनोंकी विशेषताएँ और मर्यादाएँ हैं। और दोनोंके अपने-अपने जोखम भी। सतर्क कलाकार जोखमसे बचकर चल सकता है।....

तो मेरी रुचि व्यक्तिमें रही है और है; 'नदीके द्वीप' व्यक्ति-चरित्रका ही उपन्यास है। घटना उसमें प्रत्यक्ष और परोक्ष रूपसे काफ़ी है, पर घटनाप्रधान उपन्यास वह नहीं है। 'शेखर'की तरह वह परिस्थितियोंमें विकसित होते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्यक्तिका चित्र और उस चित्रके निमित्तसे उन परिस्थितियोंकी आलोचना भी नहीं है। वह व्यक्ति-चरित्रका—चरित्रके उद्घाटनका उपन्यास है। उसमें पात्र थोड़े हैं; बल्कि कुल चार ही पात्र हैं। चारोंमें फिर दो, और दोमें फिर एक और भी विशिष्ट प्राधान्य पाता है। 'शेखर' से अन्तर मुख्यतया इस बातमें है कि 'शेखर' में व्यक्तित्वका क्रमशः विकास होता है; 'नदीके द्वीप' में व्यक्ति आरम्भसे ही सुगठित चरित्र लेकर आते हैं। हम जो देखते हैं वह अमुक स्थितिमें उनका निर्माण या विकास नहीं, उनका उद्घाटन-भर है। और चार पात्रोंमें जो दो प्रधान हैं उनपर यह बात और भी लागू होती है, बाक़ी दो पात्रोंमें तो कुछ क्रमिक विकास भी होता है। आप चाहें तो यह भी कह सकते हैं कि 'नदीके द्वीप' चार संवेदनाओंका अध्ययन है। उसमें जो विकास है, वह चरित्रका नहीं, संवेदनाका ही है।

उपन्यास क्या है या क्या नहीं है, इसको लेकर बहुत बहस हो सकती है, लेकिन उसमें लेखकका कोई सम्पूर्ण जीवन-दर्शन नहीं तो जीवनके सम्बन्धमें विचार तो प्रकट होते ही हैं। 'नदीके द्वीप'के लेखकके वे विचार क्या हैं? यहाँ कहना होगा कि वे स्पष्ट कम ही कहे गये हैं, लेखककी ओरसे तो बिलकुल नहीं, पात्रोंकी उक्तियों या कर्मोंमें सीधे या प्रतीप-भावसे ही वे प्रकट होते हैं, और वह भी सम्पूर्ण जीवनके सम्बन्धमें नहीं, उसके पहलुओंके। 'नदीके द्वीप' एक दर्द-भरी प्रेम-कहानी है। दर्द उनका भी जो उपन्यासके पात्र हैं, कुछ उनका भी जो पात्र नहीं हैं। किसी हद तक वह कहानी असाधारण भी है—जैसे कि किसी हद तक पात्र भी असाधारण हैं—सब नहीं तो चारमें-से तीनके अनुपातसे। लेकिन इस हद तक असाधारणता दोष ही होती है, ऐसा मैं नहीं मान लूँगा। 'नदीके द्वीप' समाजके जीवनका चित्र नहीं है, एक अंगके जीवनका है; पात्र साधारण जन नहीं हैं, एक वर्गके व्यक्ति हैं और वह वर्ग भी संख्याकी दृष्टिसे अप्रधान ही है; लेकिन कसौटी मेरी समझमें यह होनी चाहिए कि क्या वह जिस भी वर्गका चित्रण है, उसका सच्चा चित्र है? क्या उस वर्गमें ऐसे लोग होते हैं उनका जीवन ऐसा जीवन होता है, संवेदनाएँ ऐसी संवेदनाएँ होती हैं? अगर हाँ तो उपन्यास सच्चा और प्रामाणिक है, और उसके चरित्र भी वास्तविक और सच्चे हैं, न साधारण टाइप हैं, न असाधारण प्रतीक हैं। और मेरा विश्वास है कि 'नदीके द्वीप' उस समाजका, उसके व्यक्तियोंके जीवनका जिसका वह चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, सच्चा चित्र है। निस्सन्देह उपन्यासके मूल्यांकनमें इससे आगे भी जाना होता है, इस प्रश्नका उत्तर खोजना होता है कि लेखकमें तटस्थता कितनी है, अमुक वर्गके संस्कारोंसे वह कहाँ तक असम्पृक्त रह सका या हो सका है। पर वह बात पात्रोंकी या वस्तुकी असाधारणतासे अलग है।

वास्तविकताके इस निर्वाहके साथ 'नदीके द्वीप'में एक आदर्श-परकता भी है। वास्तव और आदर्शमें कोई मौलिक विरोध नहीं होता, यह कहना शायद आवश्यक नहीं है। इतना ही है कि जो आदर्श वास्तवकी भूमिसे नहीं उठता, वह निराधार ही रहता है, उसे पाया नहीं जा सकता, उसकी ओर बढ़ा नहीं जा सकता, वह जीवन नहीं देता। तो 'नदीके द्वीप'में क्या आदर्श है? कदाचित् यह मुझे कहनेकी कोशिश भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जैसा मैंने आरम्भमें कहा, यही वह क्षेत्र है जहाँ कथाकारकी ओर नहीं, कथाकी ओर देखना चाहिए। कथासे अलग आदर्शको निकाल कर मैं कहना चाहता या कह सकता तो कथा क्यों लिखता? यों उपन्यासके आरम्भमें सूत्र-रूपसे जो दो उद्धरण दिये गये हैं—एक शैलीका, एक स्वयं लेखककी कवितासे, वे अर्थ रखते हैं : दर्दमें भी जीवनमें आस्था, जीवनका आश्वासन—जो शैलीके सन्दर्भसे ध्वनित होता है; और दर्दसे मँजकर व्यक्तित्वका स्वतन्त्र विकास, ऐसा स्वतन्त्र कि दूसरोंको भी स्वतन्त्र करे—जो 'अज्ञेय'के सन्दर्भसे ध्वनित होता है। आदर्शके दो सूत्र कथामें हैं, चरित-नायक भुवन एकको ध्वनित करता है तो मुख्य स्त्री-पात्र रेखा दूसरेको। चन्द्रमाधव और गौरा स्वतन्त्र व्यक्ति भी हैं, और भुवन तथा रेखाके प्रतिचित्र भी। चारों एक ही समाज या वर्गके प्राणी हैं। पर चन्द्रमाधवका चरित्र-विकास विकृतिकी ऐसी ग्रन्थियोंसे गुथीला हो गया है कि उसका विवेक भी उसे कुपथ पर ले जाये, और उसकी सदोन्मुखता आत्म-प्रवंचना-के कारण है। इसीमें वह भुवनका प्रति-भू है। दूसरी ओर गौरा तथा रेखा भी प्रत्यवस्थित किये गये हैं। त्यागकी स्वस्थ भावना एकको दृष्टि देती है तो दूसरीमें एक प्रकारके आत्म-हननका ही कारण बनती है—यद्यपि उसकी भावना इतनी उदात्त है कि हम उसे अपनी सहानुभूति दे सकें। यानी आप दे सकें। यानी आप दे सकें—क्योंकि मैंने तो सभी पात्रोंको अपनी सहानुभूति दी है। भले ही साधारण सामाजिक जीवनमें कुछसे मिलना-जुलना चाहूँ, कुछसे बचना चाहूँ, पर अपनी कृतिके क्षेत्रमें तो सभी मेरी समवेदनाके पात्र हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिल्पके बारेमें मेरा कुछ न कहना ठीक है, पर नामके बारेमें एक बात कह दूँ। इस नामकी मेरी एक कविता भी है। पर दोनोंमें विशेष सम्बन्ध नहीं है। उपन्यास लिखना आरम्भ करनेसे पहले, जब मैं उसे लिख डालनेके लिए कहीं जा छिपनेकी बात सोच रहा था तब दो-एक मित्रोंने पूछा था कि नाम क्या होगा। मैंने तब तक निश्चय नहीं किया था। उन्हींसे पूछा – "आप ही सुझाइए।" कविताके कारण ही एक मित्रने यह सुझाया; मैंने कहा, "अच्छा, यही सही।" फिर मेरे लिखना आरम्भ करनेसे पहले ही नामका विज्ञापन भी हो गया। यों नामका निर्वाह उपन्यासमें हो गया है, ऐसा मेरा विश्वास है।

'नदीके द्वीप' मैंने किसके लिए लिखा है? अगर कहूँ कि सबसे पहले अपने लिए, तो यह न समझा जाये कि यह पाठककी अवज्ञा करना है। कदापि नहीं। बल्कि मैं मानता हूँ कि जो अपने लिए नहीं लिखा गया, वह दूसरेके सामने उपस्थित करने लायक़ ही नहीं है। यहाँ 'अपने लिए' की शायद कुछ व्याख्या अपेक्षित है। 'अपने लिए,' अर्थात् अपनेको यह बात सप्रमाण दिखानेके लिए कि मेरी आस्था, मेरी निष्ठा, मेरे संवेदना-जालकी सम्पूर्णता और सच्चाई, मेरी इण्टेग्रिटी उसमें अभिव्यक्त हुई है। जब तक अपने सामने इसका जवाब स्पष्ट न हो तब तक दूसरेके सामने किसी लेखकको जाना नहीं चाहिए; उससे भूल हो यह दूसरी बात है।

फिर, अपने बाद, संवेदनशील, विचारवान्, प्रौढ़ अनुभूतिके पाठकके लिए। स्पष्ट है कि ऐसा कहना, यह कहना नहीं कि जन-जनार्दनके लिए। साहित्य पाठकमें कुछ तैयारी, अनुकूलता और परिपक्वता माँगता ही है। पुराने आचार्य तो इसे मानते हो आये, आजकल भी यह मत नितान्त अमान्य तो नहीं है। जनकी दुहाई देनेवाले भी प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूपसे मानते हैं कि पाठककी संवेदनाओंकी व्यापकता और परिपक्वताका कुछ महत्त्व होता है। तो – क्या 'नदीके द्वीप' मैंने आपके लिए लिखी है? यदि आप यहाँ तक मेरी बात ध्यान देकर पढ़ते रहे हैं तो कहूँगा कि हाँ, आपके लिए भी, फिर आप चाहे जो हों। और यदि इससे पहले ही आप ऊब चुके हैं, या दूसरा कोई मत बना चुके हैं, तो फिर मेरी हाँ भी आप तक कैसे पहुँचेगी?

और अगर आज आपमें वह परिपक्वता नहीं है तो? तो आपके शुभेच्छुके नाते मैं मानता हूँ कि कल वह हो!

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

* **गंगा लहरी :** सं० श्री सुधाकर पाण्डेय। यह पुस्तक कई विश्व-विद्यालयोंके बी० ए० के पाठ्यक्रममें निर्धारित है। १.२५

* **बन्दीकी चेतना :** श्री कमलापति त्रिपाठी। जीवनके सहज अन्तर्द्वन्द्वसे प्रसूत मनोविश्लेषणात्मक निबन्धोंका पत्रात्मक शैलीमें लिखा ग्रन्थ। ५.००

* **मतिराम ग्रन्थावली :** सं० स्व० कृष्णविहारी मिश्र एवं स्व० डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र। यह पुस्तक मतिरामका सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करती है। ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित। पुनः सम्पादित एवं परिवर्द्धित संस्करण। इस शोधयुगपर प्रस्तुत पुस्तकमें श्री करुणापति त्रिपाठीकी गम्भीर अनुशीलनयुक्त भूमिका है। १२.५०

* **मधुमालती वार्ता :** सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त। हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंकी परम्परामें 'मधुमालती' का प्रेमाख्यान कई लेखकों-द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किन्तु चतुर्भुजदासकी यह रचना उन सबसे भिन्न लोक-व्यवहारपरक है। यह ग्रन्थ मुद्रित रूपमें पहली बार हिन्दी संसारके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। ८.००

* **खालिकबारी :** सं० श्रीराम शर्मा। अमीर खुसरोकृत खालिकबारीका नाम हिन्दी साहित्यमें विख्यात है। आरम्भमें भूमिका और अन्तमें हिन्दी शब्दोंका भाषा-वैज्ञानिक अभिधान। २.७५

* **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण :** दो खण्डोंमें सन् १९०० से १९५५ तकके प्राप्त हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय। मूल्य प्रति खण्ड ३०.००

नागरी प्रचारिणी सभा

वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित समीक्षाएँ
शेष स्वर

स्तम्भका उद्देश्य इतना ही है कि महत्त्वपूर्ण समकालीन कृतियोंपर प्रकाशित विभिन्न पर विवेकी समीक्षाएँ एक साथ सामने आयें और पाठकको कृतिके समग्र व्यक्तित्वसे परिचित करा सकें : इस अंकके द्वारा 'शिखरोंका सेतु' से परिचित हों, अगला 'चारुचन्द्र लेख'का परिचय प्रस्तुत करेगा

संकलनको मैंने हाथमें लिया और लेखकके ही 'आशाबन्ध' की 'प्रार्थना' पर उसके साथ 'यात्रा' पर चल पड़ा, उन पद-चिह्नोंको देखने जो उसके निबन्धोंको प्रेरणा बने, उसे विचार और कल्पनाके भावमय जगत् तक ले जाकर कुछ लिखनेके लिए विवश कर सके। कृतिकार डॉ० शिवप्रसाद सिंहका बहुमुखी-प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्व मेरे लिए अपरिचित नहीं था, पर इन निबन्धोंने परिचयको आन्तरिकता प्रदान करके और घनीभूत कर दिया।

भारतवर्षके चिन्तन-मननकी गहनता तथा भारतीय संस्कृतिकी अनुभव समृद्ध परम्परतासे निकटका परिचय रखनेवाले, साथ ही उसके प्रति एक सहज आत्मीयताका अनुभव करनेवाले ईमानदार तरुण लेखककी आधुनिक युगमें कैसी विषम मनःस्थिति होती है, उसकी समस्याएँ किस प्रकारकी जटिलता और खिंचाव-से भर जाती हैं, इसकी गाथा इस संकलनके प्रत्येक पृष्ठपर अंकित है। बाहरसे आनेवाली विचारधाराओं और परम्पराओंके बीच अपनी ईमानदारी और लेखक-सुलभ चिन्तन-स्वातन्त्र्यकी रक्षा करने तथा अतीतसे प्राप्त रिक्थकी मूल्यवत्ताको नये सिरेसे परखने और सिद्ध करनेमें उसे कितनी छटपटाहट और बेचैनीका अनुभव होता है यह पुस्तकके उत्तरार्द्धमें संकलित निबन्धोंसे विशेषतः प्रकट होता है।

लेखकने इसमें अपनी 'छोटी बड़ी बाईस गद्य-कृतियाँ', 'विषयकी दृष्टि' और 'कथ्यकी परिधि' के अनुसार चार 'वृत्तों' में विभाजित करके प्रस्तुत की हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीतके तोरण, अबोले बोले, पुष्पके अभावमें, निर्बन्ध चिन्तन। यह 'वृत्त' उसके अनुसार "परस्पर स्वतन्त्र" भी हैं और "एक दूसरेको सहज रूपसे काटते हुए भी दिखाई पड़ेंगे····क्योंकि तभी अनेक कटाओं और अल्पनाओंका जन्म होता है।"

कटाओं ? शायद 'कटानों' या 'कटावों' से अभिप्राय है। चिन्तनमें ही नहीं, शब्द-प्रयोगमें भी वह निर्बन्ध रहना चाहता है ? जो हो, पर वृत्तोंकी अल्पनाओं-को जन्म देनेवाली धारणा मुझे सार्थक और प्रिय लगी। उससे मुझे शिवप्रसाद सिंहजीकी 'कल्पना' में प्रकाशित एक कहानीका स्मरण हो आया जिसमें, यदि मैं भूलता नहीं हूँ तो, कलाईमें पड़ी चूड़ियोंके परस्पर एक-दूसरेको काटते हुए वृत्तोंके बिम्बको अत्यन्त कलात्मक रीतिसे उभारकर प्रस्तुत किया गया है। यह बिम्बात्मक रूप-कल्पना ही उसे 'शिखरोंका सेतु' तक ले गयी है। और उसके भीतरके कवि-कथाकारका व्यक्तित्व भी इसीसे प्रत्यक्ष हो जाता है।

अपने प्रारम्भिक वक्तव्यमें लेखकने पुस्तकके प्रत्येक निबन्धके विषयमें निजी धारणाएँ क्रमबद्ध ढंगसे पर्याप्त विस्तारके साथ व्यक्त कर दी हैं तथा 'अतीत' और 'आधुनिक' के द्वन्द्वके बीच अपने दृष्टिकोणकी ओर भी स्पष्टतासे इंगित कर दिया है। इससे सामान्य पाठकको लेखक और उसकी कृतिके विषयमें वैसी धारणा बनानेमें सहायता मिलेगी जैसी लेखक चाहता है कि वह बनाये।

मुझे इस वक्तव्यमें आये हुए वाक्यों—"आधुनिक दृष्टिकोण इसीलिए परम्परा-द्रोहका पर्याय नहीं है। आधुनिकता आजकी परिस्थितिमें हमारी दृष्टिका वह परिप्रेक्ष्य है जो हमें अपनी साम्प्रत भौतिक सीमामें अतीत और भविष्य दोनोंको अधिक अनुभवगम्य बनानेमें सहायक हो।····आधुनिकताके नामपर हानिकर विदेशी मालके आयातकी आवश्यकता नहीं है।"—के पीछे झलकनेवाली जागरूक विवेकशीलताकी संगति 'निर्बन्ध चिन्तन' के भीतर व्यक्त की गयी भावनाओं और विचारोंके वाहक प्रमुख वाक्यों—"किसी चीज़को पुराना मानकर उससे कतरानेकी कोशिश करना पलायन है।····तथा आधुनिकता निरन्तर विकासमान मानवताके प्रत्येक पदविक्षेपको सही-सही समझानेका (समझनेका भी) दृष्टिकोण है।"—से प्रतिबिम्बित होनेवाली आग्रहपूर्ण आस्थाके साथ स्पष्ट दिखाई देती है। मैं इसीलिए डॉ० शिवप्रसाद सिंहको सही दिशामें गतिशील एक सत्यान्वेषी ईमानदार साहित्यकारके रूपमें देखता हूँ जिसका उदय गत दशकमें हुआ है।

डॉ० शिवप्रसाद सिंह जीवनको वादहीन दृष्टिसे एक ऐसे रचनाकारकी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखनेकी प्रवृत्ति रखते हैं जो राजनीतिसे दिग्भ्रमित नहीं है। उनकी यह तटस्थ सचेतनता 'पुष्पके अभावमें' वृत्तमें संग्रहीत निराला, चेखॅव, पास्तरनाक, अलबेयर कामू और हेमिंग्वे-विषयक निबन्धोंमें भी लक्षित होती है जो अधिकतर शोकोद्-गारपूर्ण हैं। इन प्रख्यात एवं प्रतिष्ठित साहित्यकारोंके प्रति लेखकका सजग आत्मीयता-भाव उसकी सारग्राहिताका द्योतक है। 'शंकापुत्र बनाम अनास्थाके बेटे' शीर्षक निबन्धमें जिस ओजस्वितासे उसने रूढ़िवादी दृष्टिकोणका खण्डन करते हुए 'नयी कविता' का पक्ष ग्रहण किया है वह भी मार्मिक है।

'अतीतके तोरण' वृत्तके निबन्ध बहुधा अपनी परिधि छोड़कर कहानीके कल्पनात्मक सजीव क्षेत्रमें उतर जाते हैं। 'मण्डन मिश्रकी डायरी' और 'जेहि मन पवन न संचरै' को सरलतासे किसी कहानी-संग्रहमें स्थान दिया जा सकता है। 'ताराका पाप' पत्र-शैलीकी और 'देवी : मेरी प्राण-वल्लभा' डायरी शैलीकी कथा-कृतियाँ ही तो हैं। इन सबको निबन्ध कहना निबन्ध और कहानीके बीचके अन्तर-को मिटाना है, और इस बातसे लेखक भी अनभिज्ञ नहीं है, इसीलिए उसने अपने प्रारम्भिक वक्तव्यमें 'कथात्मक' शब्दको निबन्धोंके 'ललित' आदि अन्य विशेषणोंसे पूर्व ही जोड़ दिया है। लघुकथाको कथात्मक निबन्ध न कहा जा सके ऐसी मर्यादा निश्चित की जा सकती है यदि निबन्धके बीच कहीं-कहीं स्वल्प कथात्मकताके समावेश तक ही सीमा मान ली जाये परन्तु आद्यन्त कथात्मक कृतिको निबन्ध कहना मुझे साहसिक ही प्रतीत होता है। यह बात केवल विधाके स्वरूपकी है, सन्दर्भित रचनाओंकी श्रेष्ठता-हीनतासे इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस वृत्तमें और इसके बादके वृत्त 'अबोले बोले' में भी कई निबन्ध ऐसे हैं जिनसे लेखकका शाक्त-चिन्तनकी ओर विशेष झुकाव लक्षित होता है; किन्तु जहाँतक मुझे लगता है यह अतीतान्वेषणकी सद्भावनासे प्रेरित है, विकृति या एकांगिता उसमें नहीं है। जो थोड़ा-बहुत अतिरेक है भी उसका परिहार लेखकने पुस्तकके अन्तवाले निबन्धमें आत्मालोचनकी नाटकीय विधि अपनाते हुए यह लिखकर कर दिया है : "तो आप पुरातनवादी हैं, धर्मभीरु! यह आया आपने इधर बहुत-से लेख आदि लिखे हैं जिनमें महाशक्ति, राधा, कृष्ण, तान्त्रिक, भैरव, भैरवियों आदिके नाम लगातार आने लगे हैं....."

आत्मलोचन तो दूर रहा, बहुत-से लेखक अपनी हलकी-सी आलोचना भी सहन नहीं कर पाते। ऐसी स्थितिमें प्रस्तुत लेखककी अपने कृतित्वको तटस्थतासे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं देखते चलनेकी प्रवृत्ति सराहनीय है। अपनेसे हटकर अपनेको देखनेकी सामर्थ्य किसी भी व्यक्तिको उन्नत बनाती है यदि वह उसे केवल दूसरोंको नाटकीय छद्ममें डालनेके लिए ही प्रयुक्त नहीं करता हो। स्रष्टाके लिए तो आत्मद्रष्टा होना और भी आवश्यक है। सब मिलाकर 'शिखरोंका सेतु' निःसन्देह एक स्वागत योग्य संकलन है।

— डॉ० जगदीश गुप्त

'शिखरोंका सेतु' पढ़कर बहुत दिनोंके बाद ऐसा लगा कि एक अच्छी और सन्तोषजनक हिन्दी गद्य कृति पढ़नेको मिली। कहना होगा कि इस ललित निबन्ध संग्रहके लेखकके पास एक उत्तम निबन्ध-लेखकके लिए आवश्यक सभी गुण हैं: विद्वत्ता, फक्कड़पन, यायावरी वृत्ति, लोककथा-प्रेम, सूक्ष्म विचार-शक्ति और गद्यकाव्य-जैसी शैली।

विद्वत्ता-गुणके लिए पुस्तकके आठवें निबन्ध 'तीन घेरे एक क्षितिज' का यह अंग देखिए : "इस 'सिस्टर' शब्दकी आज जो भी दुर्गति हो पर उसके मूलमें विश्वव्यापी कल्याणकी एक अनुपम अर्थवत्ता छिपी हुई है। आज 'सिस्टर' अन्तर्वैयक्तिक मर्यादाहीन सेक्सका आवरण बन गया है। किन्तु आवरणकी शक्ति ही क्या उसके पवित्र अर्थकी अभिव्यंजना नहीं करती? आश्चर्य तो यह देखकर होता है कि 'सिस्टर' शब्द संसारकी सभी भाषाओंमें किसी-न-किसी रूपमें विद्यमान है। पुरानी अँगरेज़ीमें Sweoster, डच भाषामें Zuester, जर्मनमें Schwester, मध्यकालीन अँगरेज़ीमें Suster, स्कैण्डिनेवियनमें systir, स्वेडेनकी भाषामें systor, लैटिनमें soror, और इन सबका मूल कहाँ है? एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका देखिए तो मूल स्पष्ट हो जायेगा। मूलमें है संस्कृत शब्द 'स्वसृ' जिसका अर्थ अमरसिंहसे पूछिए—'सुष्ठु अस्यति अस्यते वा। सौष्ठव। स्वस्ति।' अर्थात् जिसके कारण कल्याण हो, सौष्ठव हो!"

फक्कड़पनके गुणके लिए संग्रहका छठा निबन्ध 'टेराकोटाका साक्ष्य' पृष्ठ ४८ परिच्छेद दूसरा देखें: "नृत्य आरम्भ हुआ, कलाइयोंके कंगन, पैरोंके पायजेब और करधनीके छोटे-छोटे घुँघुरुओंकी समवेत ध्वनिसे दिशाएँ गूँज उठीं। यमुनाकी रमण-रेतीके बीच गौरांगनाओंसे बलयित श्याम ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो पीली-पीली दमकती हुई सुवर्णमणियोंके बीच नील मणि अपनी पूर्ण प्रभामें उद्दीप्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हो; पैरोंका लोल नर्तन, रेशमी दुपट्टोंका तीव्र आघूर्णन, भौंहोंका सस्मित वंकिम विलास, आँचलका अनायास स्खलन, कानके कुण्डलोंका इन्द्रधनुषी वितान, स्तन-मण्डलकी अनुपम थिरकन। श्रमसे पसीनेकी बूँदें ललाटपर छलछला उठीं, कबरी शिथिल हो गयी, नीवीकी गाँठें खुल गयीं। अपरिमेय गतिसे नाचते हुए कृष्णके शरीरसे सटी गोपियाँ ऐसी लगतीं कि काजल-काले बादलोंमें पिंगल विद्युत्की लहरें मचल रही हों, किसीकी कबरीसे गुँथे फूल बिखरकर पृथ्वीपर आ गये, श्वासकी गरमीसे किसीके वक्षपर लगा चन्दनका लेप सूख गया!"

यायावरी वृत्तिके लिए इसी प्रकार बारहवाँ निबन्ध 'लाल इमारतोंका नगर' पृष्ठ १०४: "चौड़ा रास्ता। जी हाँ, यह जयपुरका मशहूर चौराहा है। यहाँ नदीकी विशाल धाराकी तरह चौड़ी-चौड़ी चार सड़कें मिलती हैं, बीचमें एक बहुत बड़ा दूबोंसे ढँका हुआ चबूतरा है जो चारों सड़कोंको अपनी-अपनी सीमाओं-में बाँधता है। मिलनको नियमित बनानेवाले इस टापूनुमा चबूतरेपर अजीबो-ग़रीब क़िस्मके लोग जमे हुए दिखाई पड़ते हैं। एक तरफ़ फूलहाट, जहाँ छोटी-बड़ी बीसियों टोकरियोंमें कई तरहके फूलोंकी मालाएँ सजाये फूल-विक्रेता—आदमी कम, औरतें ज़्यादा: गन्दी कुछ काली-काली मालिनें, गाढ़े रंगोंमें रँगी ओढ़नियों और छींटके लहँगोंमें लिपटीं। गेंदेके फूलोंकी टोकरियाँ ज़्यादा थीं। पीले-लाल रंगके गेंदेके फूलोंकी मीठी गन्धकी इस चहारदीवारीकी बग़लमें हज़ामत बनानेके लिए बैठे नाइयोंकी लम्बी क़तार, बालोंको आकार देती क़ैंचियोंकी चमक, खल्वाट सिरपर मौजोंमें फिसलते छूरेकी रंगत देखते आगे बढ़िए तो हथेलियों, अँगूठे आदि-के छापोंके काले-भूरे नक़्शे फैलाये और गणित करनेके लिए छोटी-सी स्लेट और पेन्सिल लिये मोटे थुलथुल ज्योतिषीजी, जो हाथकी रेखाओंसे ज़्यादा आँखकी रेखाएँ पढ़नेके अभ्यस्त मालूम होते थे। उनकी नज़र पुष्पगन्धकी डोर पकड़कर बिच्छल रास्तेमें दौड़ ही जाती थी, ज्योतिषीजीकी बग़लमें नानक और अन्य विशेष धर्म-गुरुओंके चित्र बेचते सरदारजी, बग़लमें एक झुण्ड गन्नेवालियाँ, पैसेके भाव गन्ने लुटानेको आतुर, झगड़ती और चिल्लाती हुई। पासमें खाली जगह देखकर बैठे हुए थके-थकाये कुछ लोग, सम्भवतः अदालती कामसे आये हुए हैं ये ग्रामीण, जो अपने खानेकी गठरी खोलकर निर्द्वन्द्व भावसे पेट-पूजामें मग्न।...."

लोक-कथाकी ओर प्रेमके उदाहरणमें संग्रहके पाँचवें निबन्ध 'पशु-प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानुष द्वारे'का पृष्ठ ४३-४४ देखें : "१९५४ के 'चीनी-साहित्य' के दूसरे अंकमें कई कहानियोंके अँगरेज़ी अनुवाद दिये हुए हैं। 'ज़ेनकी प्रेम-गाथा' इनमें सर्वोत्तम कहानी है जिसमें एक पशु-परी फ़ॉक्स फ़ेअरीके प्रेमोत्सर्गकी मार्मिक घटनाका वर्णन है। ज़ेनने चेंग नामक व्यक्तिसे प्रेम किया जो न तो बुद्धिमान् था, न रूपवान्। ज़ेनके रूपसे आकृष्ट होकर जाने कितने सामन्त-पुत्रोंने उसे अपनाना चाहा, पर वह तैयार न हुई। चेंगके सम्बन्धी और संरक्षक वाइने बलपूर्वक ज़ेनको अपनी बनाना चाहा। ज़ेन बेहोश होकर गिर पड़ी। उसने कहा, 'आप धनी हैं, सुन्दर हैं, समाजमें आपका आदर है। चेंग ग़रीब है, मैं ही उसका सहारा हूँ। आप क्यों हमारे इस छोटे-से घरको उजाड़ना चाहते हैं? वह आपका दिया खाता है, पहनता है, इसीसे शायद आप ऐसा करनेका साहस करते हैं। काश, चेंग अपने पैरोंपर खड़ा हो पाता!' कालान्तरमें वाइ-जैसे कुत्तोंने उसे जानसे मार डाला, परन्तु पशु-परी ज़ेनने अपने प्रेमको कभी कलंकित न होने दिया। उसने चेंगको जीनेकी शक्ति दी, अपने पैरोंपर खड़ा होनेका बल दिया, परावलम्बितासे छुटकारा दिलाया। वह पशु थी, पर उन सैकड़ों मानवियोंसे अच्छी थी जो धन-रूपसे आसक्त होकर अपनेको तथा अपने प्रेमको बेच देती हैं।"

सूक्ष्म विचार-शक्तिको उपयुक्त उद्धरणोंसे सजानेकी कला देखें दूसरे निबन्ध 'दक्षिणेश्वरने कहा' पृष्ठ २१ पर : "१९३० में बर्लिनकी वह सन्ध्या किसे भूलेगी जब विश्व-वैज्ञानिक आइन्सटीनने विश्वकवि रवि ठाकुरसे पूछा, 'कवि, क्या मानव सृष्टिके लय हो जानेके बाद प्राकृतिक नियम भी नष्ट हो जायेंगे? जैसे, क्या यह सत्य कि त्रिभुजके तीनों कोणोंका योग दो समकोणके बराबर है, व्यर्थ हो जायेगा?' मानवतावादी कविने कहा, 'हाँ, क्योंकि ये नियम मानवबुद्धिके किसी-न-किसी स्तरकी उपलब्धि हैं; फिर मानवबुद्धिके विलयके बाद इनका अर्थ ही क्या रहेगा?' वैज्ञानिक चुप हो गया। रुककर बोला, 'यद्यपि आप भारतसे आ रहे हैं, तथापि मैं आपसे कहीं अधिक आस्तिक हूँ।"

गद्य काव्य-जैसी शैलीका एक उदाहरण संग्रहके चौथे निबन्ध 'देवी : मेरी प्राण-वल्लभा', पृष्ठ ३४ से लें : "तुम मुझे पागल क्यों नहीं कर देतीं? मेरी सारी चेतनाका अपहरण क्यों नहीं कर लेतीं? मैं तुम्हें कहाँ ढूँढूँ? क्यों ढूँढूँ? क्यों एक छलनाको सत्य मानकर पागल हिरण-सा वन-वन दौड़ता फिरूँ? उठो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठते तुम्हारी वे कजरारी आँखें मेरे मनको हज़ारों वाणोंसे घायल कर देती हैं। आँखें छितनारी, बरौनियोंमें चमकती आँखें, जैसे हज़ारों-हज़ार धाराओंमें निरन्तर बरसती है। ऊदी-ऊदी आँखें, श्वेत रतनारी आँखें—जाने कहाँका रहस्य भरा है तुम्हारी उन आँखोंमें! वर्षाकी काली रातमें हज़ारों-हज़ार आँखें मेरे चारों ओर नाचती हैं। स्नेह, ममता, प्यार, क्रोध, विरक्तिसे भरी आँखें····!"

हिन्दी वैयक्तिक निबन्धको जिन कुछ नये कुशल शैलीकारोंने आगे बढ़ानेकी दिशामें योग दिया है—यानी जो उसे सियारामशरण, हजारीप्रसाद, वेनीपुरी, महादेवीसे आगे ले चले—उनमें हैं विद्यानिवास मिश्र, कुट्टिचातन और शिव-प्रसाद सिंह। बात कहते-कहते, हलकेसे-हलके स्तरसे, परिहास-व्यंग्य-विनोदके सहारे, चाटूक्तिके सहारे, एकदम गम्भीर दर्शन तक बातको ले जाना; पाठकोंको पूरे आत्मविश्वासमें लेकर कहीं भी उन्हें ऐसा न लगने देना कि वे जानकारीसे उबाये जा रहें हैं या अनिर्बन्ध चिन्तनमें भटक रहे हैं—यह शिवप्रसादकी खास शैली है। शिवप्रसाद चिन्तनके युग-सन्धि-स्थलपर खड़े हैं। वे मार्क्सवादकी आर्थिक मजबूरियोंसे परिचित हैं, वे अस्तित्ववादकी गहन निराशा-भरी 'नो एग्जिट' वाली विवशतासे भी परिचित हैं—वे सीमाओंको जानकर उनके आरपार देखना चाहते हैं। शब्दोंकी माला पिरोनेमें वे अटक नहीं गये हैं। वे सचेतन रूपसे अचेतनमें अवगाहन करते हैं। यही उनकी 'आधुनिकता' है।

'आशाबन्ध' शीर्षकसे पुस्तककी भूमिकामें शैलीके बारेमें वे कहते हैं: "शिल्पकी बात आयी इसलिए कुछ शब्द इन रचनाओंके शिल्पपर भी निवेदित हैं। अध्यापकीय आलोचनाके दावेदार मेरे सहकर्मी अवश्य ही असन्तुष्ट होंगे कि इनमें कहानी, गद्य काव्य, स्केच, व्यक्ति-व्यंजक निबन्ध, संस्मरण तथा यात्रा-वर्णनोंमें-से किसीकी भी तयशुदा पद्धतिका कड़ाईसे पालन नहीं किया गया है। यही नहीं, इनमें कहीं कथोपकथन है, कहीं आन्तरिक एकालाप (इण्टीरियर मोनोलोग), कहीं सुसुप्त चेतना-प्रवाह (स्ट्रीम ऑव कॉन्शस्नेस), कहीं स्मृति पुनरावर्तन (मेमॅरी फ़्लैशबैक) तो कहीं सांस्कृतिक सन्दर्भगूढ़ता और कहीं ऐतिहासिक अन्तर्बन्धता (हिस्टॉरिकल इण्टरलॉकिङ्), कहीं नाटकीय पद्धतिका अनुसरण है तो कहीं मुक्त रंगमंचीय विधान। आखिर यह सब क्या है? यह मेरी विवशता है। लाचारी है कि मैं शैलीको शरीरका चमड़ा अथवा कोट कुछ भी नहीं मान पाता। शायद शॉपेनहॉअरका यह कथन मेरी शैलीके आदर्शका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत है कि 'शैली और कुछ नहीं, मन-बुद्धि अथवा सूक्ष्म मस्तिष्ककी विचार-भावनाओंकी बाह्य रूपाकृति मात्र है।' और मेरे निकट उसकी साधना व्यक्तित्व-का विलयन है, एक आध्यात्मिक प्रक्रिया।"

मैं शिवप्रसाद सिंहको हिन्दीका एक बहुत बड़ा आशा-प्रकाशस्तम्भ मानता हूँ। वे अपने कथ्यके प्रति प्रामाणिक हैं, उनमें लघु-मानववाली कोई कुण्ठा नहीं, प्रगतिवादियोंकी जिघांसु प्रदर्शन-प्रियता नहीं। उनमें सहज चिन्तक और कवि-कथाकारके बड़े मधुर एवं सुदृढ़ दर्शन होते हैं। 'जहँ मन-पवन न संचरहिं' शीर्षक निबन्ध उनके इस संग्रहका मेरा सबसे प्रिय अंश है।

—डॉ० प्रभाकर माचवे

कहानीकार शिवप्रसाद सिंहका मैं प्रशंसक रहा हूँ, गो 'इन्हें भी इन्तजार है' की कहानियाँ पढ़नेके बाद उस सम्बन्धमें कुछ शंका मनमें उत्पन्न हो गयी है। 'शिखरोंका सेतु' में अधिकांश उनके 'विद्वान्' रूपके दर्शन होते हैं, जो मुझे कुछ विशेष रुचा नहीं, क्योंकि जैसा अकसर होता है, विद्वान् लेखक बहुधा अपनी विद्वत्ताके जंगलमें ही खो गया है।

इन ललित निबन्धों (मोटे तौरपर हम उन्हें इस कोटिमें रख सकते हैं) में-से कई निबन्ध मैं पहले पत्र-पत्रिकाओंमें पढ़ चुका हूँ। विशेषतः 'अतीतके तीरपर' खण्डके जो निबन्ध मैंने पहले पढ़े थे उन्हें अबतक मैं किसी अन्य व्यक्तिकी रच-नाएँ ही समझता था। ये अति-आलंकारिक निबन्ध विद्वत्ताके जंगलका उत्तम उदाहरण हैं। अतीतके किन्हीं खण्डोंको लेकर, और उनका 'सोलहसिंगार' करके ये निबन्ध पाठकको चमत्कृत कर सकते हैं, लेकिन कोई संगठित विचार नहीं प्रस्तुत करते। 'चार चरण' इस दृष्टिसे अपवाद है कि वह एक संगठित विचार-सूत्र प्रस्तुत करता है, गो वह विचार-सूत्र स्वयं किसी विशेष गम्भीर अन्तर्दृष्टिका द्योतक नहीं है।

पुस्तकके शेष आधेसे कुछ अधिक भागमें अलंकृत विद्वत्ताका यह दोष अपेक्षा-तया कम है, और कम अलंकृत है। इनमें 'मारूदेशकी जादुई झील' का लिखा उसे सामान्यतासे ऊपर उठा देता है। श्रद्धांजलिके रूपमें लिखा गया 'निरालां'-सम्बन्धी लेख कविके व्यक्तित्वका सरलीकरण होनेपर भी अच्छा बन पड़ा है, क्योंकि वह 'निराला'के व्यक्तित्वके एक महत्त्वपूर्ण पक्षको प्रस्तुत करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शंकापुत्र बनाम अनास्थाके बेटे' भी उत्तम है। शेष निबन्ध साधारण हैं।

— ओमप्रकाश दीपक
(कल्पना)

अनुभूति और विचारणाके कुछ स्वर ऐसे भी होते हैं जिन्हें किसी विशेष शिल्प-विधामें बन्दी नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत ललित निबन्ध-संग्रह 'शिखरों-का सेतु'के लेखकने तो आरम्भिक वक्तव्यमें स्वयं स्वीकार किया है कि इन निबन्धोंमें अनेक विधाएँ आकर अपने सम्मिलित रूपमें प्रस्तुत हुई हैं। ध्यान रखना होगा कि ये निबन्ध नयी पीढ़ीके एक सशक्त कथाकार-द्वारा रचे गये हैं और अनेक स्थलोंपर प्रमाणके लिए जो विवरण संकलित किये गये हैं, उनसे शिवप्रसाद सिंहके कथाकारका परिचय मिल जाता है। पर मुख्य रूपसे उनके स्रष्टाके दो पक्ष यहाँ अधिक उभरकर आये हैं—एक तो संस्कृतिकी उनकी व्याख्या और दूसरा है उनका कविके समान कल्पना-वैभव!

शिवप्रसाद सिंह मण्डन मिश्र, राधा, पुरुरवा-उर्वशी आदिके माध्यमसे हमें इतिहासकी जिन घाटियोंमें ले जाते हैं, उनमें हमें उनकी सांस्कृतिक दृष्टिका परिचय प्राप्त होता है। इतिहास और संस्कृतिकी व्याख्या, विवेचनमें 'शिखरोंका सेतु' का लेखक तर्क और विचारणाकी अपेक्षा अपनी भावात्मक दृष्टिका आश्रय अधिक ग्रहण करता दिखाई देता है, इसलिए कतिपय अवसरोंपर लेखकके निष्कर्ष मननीय हैं। 'दक्षिणेश्वरने कहा' निबन्धमें मातृशक्तिकी जो विवेचना प्रस्तुत की गयी है, वह इस दृष्टिसे विचारणीय है। व्याख्या, विवेचनकी जो क्षमता शिव-प्रसादमें मिलती है, उसपर एक सूक्ष्म दृष्टि डालनेसे ऐसा ज्ञात होता है कि उन्होंने इस प्रयासमें अपने समर्थ आचार्य पं० हजारीप्रसाद द्विवेदीसे बड़ी प्रेरणा पायी है।

अतीतके तोरणसे निकलकर जब हम 'अबोले बोल' के रेखांकनमें आते हैं तब हमें शिवप्रसाद सिंहके यात्रा-संस्मरणोंके सरस चित्र देखनेको मिलते हैं। ऐसा यात्री, जो परिस्थिति, पात्र वातावरण सभीमें रमता है और इतना ही नहीं, उस भूखण्डका पूराका पूरा इतिहास उसके सामने मूर्तिमान हो उठता है। बिना धरतीका मोह स्वयंमें जगाये हुए, यह घनिष्ठ चित्रण नहीं किया जा सकता। लाल इमारतोंके नगरका वर्णन करते हुए यात्री लेखकने जिस घनिष्ठताके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चित्र अंकित किये हैं उससे ज्ञात होता है कि वह धरतीसे घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करना चाहता है—वह मनमें उसके प्रति एक मोह भी लिये हुए है। और इसलिए यात्राओंके ये रेखांकन अपने विवरणमें सजीव और समृद्ध हैं। वातावरण इतना सजीव हो उठता है जैसे लेखकने आपको उस नगरीमें ले जाकर उपस्थित कर दिया है। और यात्रो-लेखक यह अच्छी तरह जानता है कि उसे कौन-से महत्त्व-पूर्ण विवरण देने हैं ताकि वातावरण सजीव हो सके, अंकन विश्वसनीय बन सके।

पुष्पके अभावमें कतिपय प्रसिद्ध रचनाकारोंके रेखांकन हैं और संयोगवश वे भी दिवंगत रचनाकार हैं, जिन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है। शिवप्रसाद एक संवेदन-शील स्रष्टा हैं, इसलिए उन्होंने अपने प्रिय रचनाकारोंके व्यक्तित्वको उनकी रचनाओंमें ही खोजने-पानेकी चेष्टा की है। श्रेष्ठ रचनाकार अपने सृजनमें समाये रहते हैं और जोनके बाह्य क्रियाकलापोंमें खोजनेका प्रयास करके उनके साथ न्याय नहीं किया जा सकता। 'निराला'का रेखांकन करते हुए शिवप्रसादने स्पष्ट लिखा है—"भविष्यमें जब निरालाके बारेमें प्रचलित कथाएँ मूक हो जायेंगी, संस्मरण विस्मृतिके गर्भमें खो जायेंगे, मित्रोंके साखी-शब्द निस्तेज हो उठेंगे"" तब आनेवाली पीढ़ी 'निराला'के विषयमें सिर्फ़ 'निराला'से पूछेगी, उनकी कृतियोंसे पूछेगी···।" चेखॅव, पास्तरनाक, अलबेयर कामू, हेमिंग्वे सब जैसे शिवप्रसाद सिंहके प्रिय रचनाकार हैं और उन्होंने उन्हें उनकी कृतियोंके भीतर पाना चाहा है। इसीलिए रेखांकनके माध्यमसे सभीमें इन महत्त्वपूर्ण साहित्यकारोंकी कृतियों-की संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत की गयी है। ये सभी स्रष्टा अपने सृजन और लेखनके प्रति पूर्ण ईमानदार थे, वे अपनी लेखनोके प्रति समर्पित थे, वे किसी भी मूल्यपर बिकनेको तैयार न थे। उनमें युगके प्रश्नोंसे जूझनेकी क्षमता थी और वे एक समर्थ आस्थासे परिचालित थे—इन सब गुणोंने शिवप्रसाद सिंहको अधिक अभि-भूत किया है। स्वीकार करना होगा कि इन श्रेष्ठ रचनाकारोंके रेखांकनमें 'शिखरोंका सेतु'के लेखककी अपनी दृष्टि महत्त्वपूर्ण रही है और वह प्रशंसक ही प्रशंसक है—समीक्षक नहीं, पर विश्लेषण और व्याख्याकी क्षमता उसमें यहाँ भी विद्यमान है।

'शिखरोंका सेतु' का शिल्पगत वैविध्य सहज आकर्षणका विषय है। और शिल्पका सामर्थ्य लेखकको उसके गन्तव्य तक ले जानेमें सफल हुआ है, इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई सन्देह नहीं। कहीं यात्राओंके रोचक संस्मरण हैं, कहीं इतिहासके खण्डहरों-में खोजे गये विवरण हैं, कहीं मृत आत्माओंके प्रति श्रद्धा-भाव है। जब कभी लेखक भावनामय प्रवाहमें आ जाता है वह गद्यकाव्यका सृजन करता है, अपनी रागात्मकताको पूर्ण अभिव्यक्ति देता है। शिवप्रसादमें कल्पनाकी भी कम क्षमता नहीं और उनकी भाषा सांस्कृतिक विषयोंके पूर्णतया अनुरूप है। ये रेखांकन इतिनिरपेक्ष आस्तिकताकी भूमिकापर रचे गये हैं और अतीतमें जाकर भी अपने युगसे स्पन्दित हैं।

— डॉ० प्रेमशंकर
(धर्मयुग)

• एक महत्त्वपूर्ण पठनीय एवं संग्रहणीय कृति •

गुप्तकालीन
उत्तर-भारत
का
राजनीतिक
इतिहास

•

डॉ० प्रशान्तकुमार जायसवाल

•

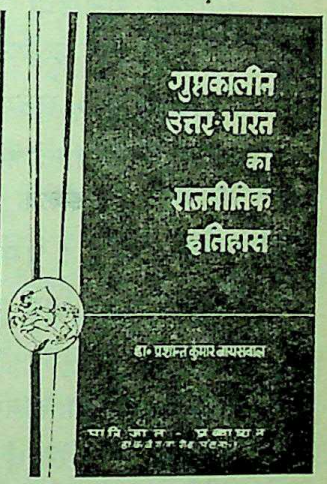

पारिजात प्रकाशन
डाक बँगला रोड, पटना–१

मूल्य १०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नए प्रकाशन

• **भारतकी संस्कृति और कला** : राधाकमल मुकर्जी १२.००

सभ्यता और संस्कृतिके अधिकारी विद्वान् श्री राधाकमल मुकर्जीके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी ग्रन्थका हिन्दी रूपान्तर।

• **संघर्ष** (उपन्यास) : हरमन मेलविले ६.००

हरमन मेलविलेके संसार प्रसिद्ध उपन्यास 'Moby Dick' का हिन्दी रूपान्तर। समरसेट मॉमके विचारमें यह संसारके दस श्रेष्ठतम उपन्यासोंमें-से एक है।

• **नागमणि** (उपन्यास) : अमृता प्रीतम २.५०

यह साहित्य अकादेमी पुरस्कार-प्राप्त पंजाब कोकिला अमृता प्रीतमका नवीनतम उत्कृष्ट, साहसिक एवं रोमैण्टिक उपन्यास है।

• **नया समाज** : डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा १.००

इसमें सहकारिता आन्दोलन और उपभोक्ता भण्डारोंपर आधारित नये समाजकी एक झलक प्रस्तुत की गयी है।

• **हिन्दोस्तान हमारा** : धर्मपाल शास्त्री १.५०

इस बालोपयोगी सचित्र पुस्तकमें 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्ताँ हमारा' को अत्यन्त रोचक शैलीमें प्रामाणिक जानकारी सहित चरितार्थ किया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंकी प्रतिक्रिया

लेखन-प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी इकाई अधूरी रहेगी जबतक पारखी पाठककी प्रतिक्रिया प्रकाशकके पास होती लेखककी मेज़ तक न पहुँचे।

• जुलूस

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

भूमिकामें रेणुकी स्वीकारोक्ति है—"मैं एक अद्भुत भ्रममें हूँ।" उनका यह भ्रम किस स्तरपर है, लेखकके रूपमें या जल्दी-जल्दी बदलते हुए सामाजिक मूल्योंको देखकर! सम्भवतः ऐसी कोई सूक्ष्म समस्या 'रेणु'के सामने नहीं है। उनकी सबसे बड़ी समस्या यही मालूम पड़ती है कि वे अपनेको जुलूससे अलग नहीं रख पा रहे हैं। उसी रौमें वे भी हैं। 'दीर्घतपा' और 'जुलूस' इन दोनों उपन्यासोंके प्रकाशनके बाद उनका यह भ्रम उनके पाठकोंपर भी जाहिर हो गया।

'जुलूस' कहानी तो नहीं ही है। क़िस्सा-गोई 'रेणु'की आदत ही नहीं। अहसास, एकके बाद एक आते चले जाते हैं। लेकिन न जाने क्यों अगले अहसासके साथ ही पिछला अहसास समाप्त हो जाता है या कहा जाये अर्थहीन हो जाता है। सोचने पर लगता है—किसी भी स्थितिकी अपने-आपमें कोई सत्ता नहीं। एक बार लगता है—एक भूमिसे उखड़े हुए लोगोंका दूसरी अनजान भूमिमें जमनेके लिए संघर्ष है। पहले ही परिच्छेदमें यह बात स्पष्ट हो जाती है। लेकिन उसके तुरन्त बाद एक दूसरी बात सामने आती है—उच्च वर्गका आर्थिक और मानसिक पतन और सम्पन्न होते हुए निम्न वर्गकी उच्छृंखलता और मूल्यहीनता।

'जुलूस' और आगे बढ़ता है। अर्ध-शिक्षित महिलाओंकी असन्तुलित महत्त्वाकांक्षा, प्रकारान्तरसे अनमेल विवाह और युवती-विधवाकी सेक्स-समस्या ग्राम स्तरपर ही असन्तुलित नेतृत्वकी भूख। प्रान्तीयताके स्फुलिंग भी बिखरे पड़े हैं। 'जुलूस'के इस धकापेलमें सब-कुछ 'चौकियों'की भाँति निकल जाता है। हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बार ध्यान आकर्षित होता है। लेकिन बहुत कम समयके लिए, जबतक 'रेणु' उस स्थितिको सामने बनाये रखते हैं। एक बात ज़रूर है, 'रेणु' इन सब तथ्योंके बीचकी विरलताको 'टिपिकल' चरित्रों, अनुरूप भाषा, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओंके शेड्स से भरते जाते हैं, जो इन सब स्थितियोंकी क्षणिकताको खींचकर कुछ लम्बा कर देती हैं। ईंटके ऊपर ईंट रखकर तैयार होता वातावरण 'रेणु'की उपस्थितिका अहसास बराबर बनाये रखता है। वातावरण, 'टिपिकल' चरित्र, बंगला मिश्रित स्थानीय भाषा, काला चाँद-जैसे चरित्रोंकी क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ शेड्स' आदि 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' के माध्यमसे पूर्व परिचित हैं। उनका प्रभाव निश्चित ही उतना तो नहीं होता, जितना उन दोनों उपन्यासोंको पढ़कर हुआ था। फिर भी पर्याप्त है। पाठकोंको 'रेणु'से जोड़े रखता है। लेकिन पकड़ता है, छोड़ देता है। पकड़ लगातार नहीं बनी रह पाती। उनकी इस 'स्थानीयता' से काफ़ी आत्मीयता हो गयी है। सम्भवतः इसी आत्मीयताके कारण 'जुलूस'को भी उसी मापदण्डपर रखकर तौलनेका मन हो आता है। ये ग़लत हो सकता है। किसी क्रियाशील लेखककी श्रेष्ठतम कृतियोंसे नयी रचनाओंकी तुलना करना उसकी अभिव्यक्तिको सीमित करना भी है। लेकिन पाठककी भी अपनी सीमाएँ हैं।

'पवित्रा' जैसे चरित्रका निर्माण आदर्शोन्मुख ज़रूर है। कोई वस्तु आदर्शोन्मुख है—मात्र इसीलिए यथार्थ नहीं, यह बात अर्थहीन है। लेकिन पवित्रा उतना 'कनविन्स' नहीं करती। जाने क्यों? जितने बड़े आदर्शको प्रस्थापित करना होता है उसके पीछे उतनी बड़ी आस्थाकी भी ज़रूरत होती है। पवित्राका वह आदर्श कहीं खोखला है। मात्र 'क़ासिम' और 'विनोद'के साथ अपने सम्बन्धोंको स्मरण करनेसे ही यथार्थता नहीं आ जाती। 'प्रेमाश्रम'की भाँति ही पवित्रा भी अपने लोगोंकी एक आदर्श बस्तीकी स्थापना करना चाहती है। एकदम प्रान्तीयता-विहीन बस्ती। लेकिन पवित्राके यह कहनेमें 'देश माने हिन्दुस्तान....." उतनी गहराई नहीं मालूम पड़ती जितनी गहराई हरलाल साहके ये कहनेमें है—"हिन्दुस्तान कैसे आपना देश होगा?" इस वाक्यमें बंगला चरित्र और उनमें निहित प्रान्तीयताकी पूर्ण प्रतिध्वनि मिलती है। यदि पवित्राके यह कहनेमें "देश माने हिन्दुस्तान"—अधिक गहराई आ गयी होती तो पवित्राके मुँहसे निकला यह वाक्य उस पूरी प्रान्तीयताके विरोधमें अधिक महत्त्वपूर्ण और अर्थपूर्ण होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरत बाबू 'दीदियों'के निर्माणमें सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। उनके उपन्यासों और लम्बी कहानियोंमें हर प्रकारकी दीदी उत्कर्षके साथ पाठकोंके सामने आयी हैं। किसी भी उपन्यासमें यदि कोई दीदी सामने आती है, तो शरत-द्वारा निर्मित कोई-न-कोई दीदी भी उसके मुक़ाबलेमें आ खड़ी होती है। 'पोत्रा दी' (पवित्रा) जिस तरह कॉलोनी मेम्बरकी सदस्यतासे इस्तीफ़ा देती है, नरेश वर्मामें 'विनोद' (पूर्व मंगेतर) की झलक पाकर उसके प्रति अनुरक्त हो जाती है, एकाएक उससे विवाह न करनेका इरादा कर लेती है और अन्तमें तूफ़ानसे पीड़ित बस्तीके लिए दान माँगने निकल पड़ती है। या अपना जीवन अपने साथियोंकी सेवामें लगानेका निश्चय कर लेती है। ये सब न सहज हैं, न आत्मसात् किया हुआ। मात्र ऊपरी।

काला चाँद, पारस, योगेशदास, पहलवान, बहुएँ, रामजय और जयराम सिंघ आदि एकदम सजीव और वास्तविक चरित्र हैं। इन सब चरित्रोंसे लगता है 'रेणु' 'स्थानीयता'के 'कवि' हैं। वही राग उनके होठोंपर शोभा देता है। फिर भी कुल मिलाकर यह उपन्यास 'प्लस' है 'दीर्घतपा'की भाँति 'मायनस' नहीं।

— गिरिराज किशोर

• नये रंग : नये ढंग

लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रत्येक युग अपनेको विशिष्ट मानता आया है—यदि हम अपने युगको विशिष्ट मानते हैं, तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। इस युगकी विशिष्टता इसकी अनेकानेक असंगतियों और दाहक स्थितियों में है। यदि आजका मनुष्य एक ओर अन्तरिक्षकी सीमाएँ तोड़कर मुक्त उड़ानें भरता है, तो दूसरी ओर वह अपनी स्वार्थकी सीमा तोड़नेमें अपनेको असमर्थ पा रहा है। यदि एक ओर 'शान्ति' 'शान्ति'की आवाज़ ऊँची की जा रही है, तो वहीं दूसरी ओर विध्वंसक अस्त्र-शस्त्रोंके कारखानोंकी आवाज़ें और तेज़ होती जा रही हैं। ऐसी अनेक स्थितियाँ हमारे सामने हैं, जिनकी तीखी प्रतिक्रियाएँ प्रत्येक जागरूक एवं चेतन मस्तिष्कमें होती हैं। 'नये रंग : नये ढंग' में एक बड़े सजग मनकी प्रतिक्रियाएँ अंकित हुई हैं।

'नये रंग : नये ढंग' लक्ष्मीचन्द्र जैनकी कृति है। पुस्तक दो खण्डोंमें विभक्त है—'जो वे स्वयं न कह पाये!' और 'नये रंग : नये ढंग'। प्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डमें उन प्रसिद्ध नेताओंमें-से कुछके जीवनपर ध्यान केन्द्रित रखा गया है जिन्होंने भारतके वर्तमान राजनीतिक क्षेत्रमें कार्य किया है और किसी-न-किसी रूपमें लोगोंका ध्यान आकृष्ट किया है। ये नेता हैं—राजेन्द्र बाबू, नेहरूजी, मौलाना आज़ाद, राजाजी, कृष्ण मेनन, जयप्रकाशनारायण, ढेबर भाई, मोरारजी देसाई, शंकरन् नम्बूद्रिपाद, विजयलक्ष्मी पण्डित और विनोबा भावे। इन नेताओंने अपने प्रत्यक्ष सामाजिक जीवनमें जिन भावों-विचारोंको व्यक्त नहीं किया है, उन्हें ही लक्ष्मीचन्द्रजीने इन रचनाओंमें इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि लगता है, वे कल्पनाप्रसूत होते हुए भी यथार्थसे बहुत दूर नहीं हैं। वास्तवमें 'जो वे स्वयं न कह पाये' की रचनाओंमें नेताओंके प्रत्यक्ष जीवनकी नहीं, उनके अन्तर्मनकी अभिव्यक्ति है। अन्तर्मनकी भाव-छवियोंको ग्रहण कर उन्हें कुशलतासे अंकित कर सकना सचमुच कठिन काम है, पर इन कृतियोंमें ऐसा करनेका प्रयत्न किया गया है। यह दावा नहीं किया जा सकता, और सम्भवतः लेखक यह दावा करना भी नहीं चाहेगा कि ये रेखाचित्र यथार्थपर आधारित हैं—ये एक विचारशील एवं सजग लेखककी कल्पनाकी तूलिकासे रँगे गये चित्र हैं। लेखकने इन्हें 'रेखाचित्र' कहा है, पर ये वास्तवमें रेखाचित्र नहीं हैं। हाँ, इनमें स्थान-स्थानपर व्यंग्यकी रेखाएँ बड़े स्पष्ट रूपमें उभरकर आयी हैं जिनसे ये कृतियाँ कलात्मक और आकर्षक बन गयी हैं। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं। राजेन्द्र बाबूकी वाणीमें कहा गया है :

"कौन नहीं जानता कि हमारे ही देशमें राजर्षि भी हुआ करते थे? बाहरसे कुछ भी दीखे, अन्दरसे मन कभी इस राजसी ठाठमें भीगा नहीं। वह घटना बराबर कचोटती रही जब बापूने एक दिन साबरमती आश्रममें, भर-दुपहरी पसीनेसे तर देखकर भी कह दिया था, 'इक्केमें एक रुपया क्यों खर्च किया? जब देशका शासन चलाओगे तो क्या इसी तरह अपव्यय करोगे?'"

इसी प्रकार राजाजीकी वाणीमें कहा गया है : "डिक्शनरीमें तो दो शब्द हैं : एक 'राजनीति' दूसरा 'कूटनीति'। जब मैं किसी ऊँचे पदपर होता हूँ तो कूटनीतिसे काम लेता हूँ और जब साधारण पदपर या बिना पदके होता हूँ तो राजनीतिसे काम चलाता हूँ। हिन्दीका समर्थन कूटनीति थी, हिन्दीका विरोध आजकी साधारण राजनीति।"

व्यंग्यकी ऐसी रेखाएँ सभी चित्रोंमें हैं। इन रचनाओंका आकर्षण इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत करनेके ढंगमें भी है। ये रचनाएँ उत्तम पुरुष में हैं, और लेखकने नेताकी शब्दावली, भाषा, लहजा, अभिव्यक्ति-शैली आदिपर भी ध्यान रखा है। यही कारण है कि प्रथम खण्डकी ये रचनाएँ वास्तविक-जैसी लगती हैं।

दूसरे खण्ड यानी 'नये रंग : नये ढंग' में विभिन्न प्रकारकी रचनाएँ हैं। 'गंगा-बोल्गाके संगमपर' १९५५में बुल्गानिन-ख्रुश्चेवकी भारत-यात्रापर आधारित है। इसमें उस यात्राको विभिन्न दृष्टिकोणोंसे देखनेका प्रयत्न किया गया है। 'असीम आकाशके बियाबानमें' में लायकाकी अन्तरिक्ष-यात्राकी प्रतिक्रिया अंकित की गयी है। 'बापूके बारिसोंके नाम' में यशलोलुप और हीनचरित्र कांग्रेसी लोगोंपर व्यंग्य किया गया है। 'डियर आइक' और 'माई डियर कैनेडी', इन नेताओंके नाम समसामयिक समस्याओंपर लिखित पत्र हैं। 'मौत : एक माध्यम' अर्नेस्ट हेमिंग्वे की आकस्मिक मृत्युकी प्रतिक्रिया है। 'चाँद-तारोंकी दुनियाकी ओर' विभिन्न अन्तरिक्ष-यात्राओंकी डायरी है। 'एक डाकू : दो खत : तीन दृष्टियाँ'में चैसमैनके जीवनपर विभिन्न कोणोंसे प्रकाश डाला गया है। 'नये वर्षकी नयी डायरियाँ' में वर्षके प्रथम दिनकी विभिन्न व्यक्तियोंकी प्रतिक्रियाएँ हैं। ये सभी रचनाएँ सामयिकतापर आधारित हैं। सामयिकता बड़ी सरलतासे पत्र-कारिता बन जाती है—उसे साहित्यके धरातलपर ले आनेके लिए विशेष सजगता और कुशलताकी अपेक्षा होती है। लक्ष्मीचन्द्रजीने ऐसी कुशलता बरतने-की कोशिश की है। सम्भवतः इसीलिए इनके शिल्पपर विशेष ध्यान रखा गया है। इन रचनाओंमें शैलीकी विविधता रखी गयी है। कहीं डायरी है, कहीं पत्र हैं, कहीं रेडियो-कॉमेण्ट्री है, कहीं किसी पत्रका अंश है, आदि-आदि। इनसे रचनाओंका आकर्षण बढ़ा है। लेखककी भाषा-शैली सर्वत्र विषयके अनुरूप और प्रभावपूर्ण रही है।

'नये रंग : नये ढंग' में, जैसा कि लेखकने कहा है, इस ज़मानेकी रंगीनियाँ हैं। ये रंगीनियाँ आजके ज़मानेको पसन्द आयेंगी, ऐसी आशा की जा सकती है। सम्भव है, समयकी हवा अगले ज़मानोंके लिए इनकी चमक कुछ कम कर दे, लेकिन आज अगले ज़मानोंकी चिन्ता कौन करता है? आजका आदमी आजकी ज़िन्दगी हो अच्छी तरह जी ले, यही क्या कम है?

— डॉ० सिद्धनाथ कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो

मुनि नथमल

आध्यात्मिक साहित्यके निर्माणमें मुनि नथमल राजस्थानके विचारकोंमें अग्रगण्य हैं। जैन दर्शनपर आपकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं तथा हिन्दीमें जैन-दर्शनसम्बन्धी साहित्यकी पूर्त्ति करती हैं। प्रस्तुत कृति 'तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो' लेखककी नवीनतम गम्भीर कृति है। भारतके दर्शनमें जैन धर्म और जैन परम्पराओंका विशिष्ट स्थान रही है। प्रस्तुत पुस्तकमें जैन-दर्शनकी सुनियोजित पृष्ठभूमिपर मनुष्यके अन्तर्मुखी विकासका मार्ग स्पष्ट किया गया है। लेखकने दिखाया है कि मनुष्यको उसमें छिपी गुप्त आध्यात्मिक शक्तियोंका अनुमान नहीं है। इसीलिए वह अपनेको दीन-हीन और पतित पाता है। हमारे बाहर नहीं, असली शक्ति हमारे भीतर छिपी हुई है। खेद है कि हमारी इन्द्रियाँ बहिर्मुखी हैं और मन भी तुच्छ सांसारिकतामें उलझा हुआ है। मनुष्यकी आध्यात्मिक शक्ति ही उसमें वास्तविक शक्ति और शाश्वत आनन्द भर सकती है। लेखकने मनुष्यकी इन भीतरी शक्तियोंके प्रकटनका मार्ग स्पष्ट किया है। ध्यान, एकाग्रता, भावक्रिया और अनावेग, मोह-व्यूह, आवेग और उप-आवेग अभयका मन्त्र, ब्रह्मचर्य, संवेग, निर्वेद, सहिष्णुता, समर्पण, प्रामाणिकता आदि अनेक उपयोगी विषयोंपर लेखकने सविस्तार उपयोगी विवेचन प्रस्तुत किया है। भारतमें योगकी परम्परा बहुत प्राचीन रही है। यह पुस्तक जैन योगके परिचय पानेका एक माध्यम बन जायेगी ऐसी आशा है।

• क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?

आचार्य तुलसी

आचार्य तुलसी तपे हुए साधक एवं विचारक हैं। आपके भाषणोंके अनेक संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें मौलिक विचार दर्शन मिलता है। प्रस्तुत पुस्तकमें आचार्यजीने धर्मके एक उलझे हुए प्रश्नको समझानेका प्रयत्न किया है, 'क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?' धर्मको प्रायः लोग श्रद्धागम्य मानते हैं। जो लोग श्रद्धामें विश्वास नहीं रखते वे यह कैसे मान सकते हैं कि धर्म श्रद्धागम्य है। लेखकने चित्रित किया है कि धर्म न श्रद्धागम्य है, और न बुद्धिगम्य है। वह तो दोनोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमें प्राप्त होनेवाला तथ्य है। धर्मसे वर्तमान और भविष्य दोनों ही सुधरते हैं, उससे आत्माकी गम्य वृत्तियाँ भी विकसित और समुन्नत होती हैं। इसलिए वह बुद्धिगम्य है। लेखकने मनुष्य जीवनमें धर्मकी उपयोगिता स्पष्ट की है। राष्ट्रीय चरित्रको सुधारने तथा देशमें सदाचार फैलानेके लिए पुस्तक बड़ी उपयोगी बन पड़ी है। 'भावात्मक एकता और स्वभाव-निर्माण' प्रकरण विशेष पठनीय है।

—डॉ० रामचरण महेन्द्र

• भोजचरित्र

मूल: राजवल्लभ, सम्पादन : डॉ० ब० चं० छाबड़ा तथा शंकरनारायणन्

भारतीय इतिहासमें परमार नरेश भोज एक महान् शासक, कवि, लेखक एवं साहित्य-स्रष्टाओंके आश्रयदाताके रूपमें प्रख्यात रहे हैं। यही कारण है कि अनेक प्रतिभाशाली जैन व जैनेतर मनीषियोंने विशिष्ट ग्रन्थ लिखकर उनके पवित्र चरित्रपर पर्याप्त प्रकाश डाला है।

जैनेतर विद्वान् बल्लालका भोजप्रबन्ध विद्वत्संसारमें प्रसिद्ध है। इसकी भाषा संस्कृत है। इसमें गद्यके साथ पद्य भी हैं जिनकी संख्या ३२८ है। इसके पद्योंमें जितना आकर्षण है, उतना गद्यमें नहीं है। इसका रचनाकाल सोलहवीं शताब्दी है जैसा कि पं० बलदेव जी उपाध्याय (संस्कृत साहित्यका इतिहास पृ० ४४५) और प्रस्तुत समीक्ष्य कृतिके सम्पादक डॉ० छाबड़ा (सं० सा० इति० पृ० ९२१) ने लिखा है।

प्रस्तुत ग्रन्थकी रचना राजवल्लभने पन्द्रहवीं शताब्दीमें की थी। इसकी भाषा संस्कृत है, पर बीच-बीचमें प्राकृतका भी प्रयोग किया गया है। इसके पाँचों प्रस्तावोंके कुल पद्योंकी संख्या १५७५ है। पूरा ग्रन्थ पद्य शैलीमें लिखा गया है। इसमें अनुष्टुप् छन्दका प्रयोग आदिसे अन्त तक हुआ है। यों बीच-बीचमें अन्य छन्दोंका भी प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, पर बहुत कम। रचना सरस है। प्रसाद गुणसे ओत-प्रोत होनेसे अर्थ लगानेमें विलम्ब नहीं होता। कथासार इस प्रकार है—

मालवा प्रान्तमें धारा नगरीका सिन्धु नामक एक राजा था। उसकी प्रधान रानीका नाम रत्नावली था। सन्तान न होनेसे वे दुःखी थे। एक दिन नदीके तटपर घूमते समय राजाकी दृष्टि एक तेजस्वी बालकपर पड़ी जो मूँजपर लेटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। उसे देखकर राजाको बड़ा हर्ष हुआ। वह उसे चुपचाप अपने घर ले गया। उसे देखते ही रानीके स्तनोंमें दूध भर आया। फलतः उसने उसका पालन-पोषण औरस पुत्रकी भाँति किया। प्रजामें रानीके गूढ़ गर्भकी अफ़वाह फैला दी गयी। सारी प्रजाको प्रसन्नता हुई। उसने राजाको बधाई दी। राज-महलमें उत्सव मनाया गया। ग्यारहवें दिन उस शिशुका नाम मुंज रखा गया; क्योंकि वह मुंजपर पड़ा हुआ पाया गया था।

मुंज पाँच वर्षका हो गया तब सिन्धुको रत्नावलीके गर्भसे पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई। उसका नाम सिन्धुल रखा गया। दोनों कुमार बड़े हुए तो सिन्धुने उनका विवाह कराया। फिर समय आनेपर राजाने मुंजको उसका पिछला इतिहास बताते हुए अपना उत्तराधिकार उसे सौंपा और सिन्धुलको युवराज-पद दिया। युवराज-की विशेषताओंको देखकर मुंजके मनमें द्वेष जागा और उसने युवराजकी आँखें फुड़वा दीं। कुछ समय बाद युवराज सिन्धुलके एक पुत्र हुआ जिसका नाम भोज रखा गया। ज्योतिषियोंसे ज्ञात होनेपर कि भोज गौड़से लेकर दक्षिण तक लगातार पचपन वर्ष सात मास तीन दिन राज्य करेगा, मुंजने उसको हत्या करवानेका प्रयत्न किया। चाण्डाल उसे नगरके बाहर ले गये किन्तु दयावश उसे मारा नहीं। अदृष्ट अनुकूल था और अन्ततोगत्वा राज्य-संचालन भोजके हाथोंमें आ गया। भोज अत्यन्त न्यायी प्रजा पालक ही नहीं था, साहित्यानुरागी और कलावेत्ताओंका आश्रयदाता भी था। उसके यहाँ एक-एक विषयके शीर्ष विद्वान् सदैव रहा करते थे और दूर-दूरसे बराबर आते रहते थे। वह स्वयं भी महान् विद्वान् था। लिखा ही गया है कि संगीत, साहित्य, कवित्व, नय, विनय और चतुरतामें भोज-जैसा राजा इस भूमण्डलपर न हुआ, न कभी होगा।

प्रस्तुत ग्रन्थमें भोजके वर्तमान जन्मके साथ पिछले जन्मका भी विस्तृत वर्णन है। भोजने पिछले जन्ममें दान दिया था। इसीलिए उनमें एक ही साथ अनेक अद्भुत विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती थीं।

दो विशिष्ट विद्वानोंके द्वारा आठ हस्तलिखित प्राचीन प्रतियोंके आधारपर सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ विस्तृत प्रस्तावना और परिशिष्टोंसे विभूषित होकर अत्यन्त उपादेय हो गया है। प्रस्तुत कृतिकी एक बड़ी विशेषता यह है कि यह भोजके चरित्रके साथ पुरातत्त्वपर भी प्रकाश डालती है।

—अमृतलाल शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ
ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा
एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी
गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत-कुछ सकीं

• साहित्यिक

• विवेकके रंग : सम्पादक – डॉ० देवीशंकर अवस्थी

'विवेकके रंग' अर्थात् महत्त्वपूर्ण समकालीन कृति-साहित्यपर प्रकाशित गणनीय समीक्षाओंका संकलन। अपने प्रकारकी प्रथम कृति : प्रौढ़ और प्रभावपूर्ण।

जिन हिन्दी पुस्तकोंकी समीक्षाएँ संकलित की गयी हैं वे पिछले पन्द्रह वर्षोंके लेखनका एक बड़ी सीमा तक प्रतिनिधित्व करती हैं; और समीक्षाएँ तो, एक पुस्तकपर एक, चुनी वही गयी हैं जो पुस्तककी आन्तरिक सत्ताका उद्घाटन करती हों या फिर समीक्षा-सिद्धान्त या पद्धतिकी दृष्टिसे कोई नयी बात प्रस्तुत करें।

यह सर्वमान्य है कि जिस प्रकार लेखनमें उसी प्रकार समीक्षणमें भी युग-मनके अनुरूप विकास और परिवर्तन होता है। यों भी हर युगकी समीक्षात्मक दृष्टि तत्कालीन साहित्यसे अनुकूलित और अनुशासित होती है और उसे अनुकूलित करती भी है। प्रस्तुत संकलनके माध्यमसे साम्प्रतिक साहित्यका, सभी पीढ़ियोंके समकालीन लेखनका, समग्र व्यक्तित्व भी सामने आ जाता है और समीक्षा-सम्बन्धी नये विवेक, नयी पद्धतिको भी संकेन्द्रित ढंगसे देखा जा सकता है। एक बड़ी बात यह कि इस संकलनके प्रकाशनसे अब समीक्षाओंके स्तरीय महत्त्वकी ओर समीक्षकों, सम्पादकों और पाठकोंका ध्यान आकर्षित होगा।

इस प्रकार, प्रस्तुत कृति न केवल अपनेमें ही महत्त्वपूर्ण है बल्कि अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अर्थोंमें आगेके लिए प्रेरणा-सम्भावनापूर्ण भी है। इसीलिए विशेष उपयोगी, अतिरिक्त रूपसे संग्रहणीय है।

मूल्य ७.००

• इतिहास पुरुष : डॉ० देवराज

कितने होते हैं कवि जिनके दृष्टिबोधमें दर्शन, इतिहास, जीवन—तीनोंका उजाला समन्वित हो! और कितनी ऐसी काव्य-कृतियाँ होती हैं जो काव्य और शिल्पका ही उदाहरण न हो, लघुमानवकी कुण्ठाग्रस्त चेतनामें यथार्थ जीवनबोधका ज्वार भी उठा सकें! प्रस्तुत कृति 'इतिहास-पुरुष' यहीं विचारणीय होती सामने आती है।

इसके 'प्राक्कथन' में श्री सुमित्रानन्दन पन्तने इसे 'नयी कविताका एक उत्कृष्टतम काव्य' माना है। और, उनके ही शब्दोंमें, इसके द्वारा कविने "इतिहासके अतल अकूल समुद्रका मन्थन कर अपनी दर्शनज्ञ दृष्टिसे जीवन-नवनीत स्वरूप जिस अक्षय तत्त्वको पाठकोंके हाथोंमें रख दिया है वह अपने आलोक, ऐश्वर्य, उपयोगिता तथा कवित्वमें चिरपुराण होते हुए भी चिरनवीन अभिव्यक्तिके सौन्दर्यसे आप्लावित है।"

अपनी संचेतनामें 'इतिहास पुरुष' उत्तर-अस्तित्ववादी युगके प्रारम्भकी सूचक रचना है जिसमें, निराशा और विभिन्न निषेधोंपर हावी होते हुए, जीवनकी मूल आस्थाओंके पुराख्यान और उज्जीवनका प्रयत्न है। क्या भाव-बोध और क्या भाषा, दोनोंमें ही ये रचनाएँ एक नितान्त मौलिक, सशक्त एवं समृद्ध संवेदनाको स्वरित करती हैं: ऐसी संवेदनाको जिसे किसी सामयिक आन्दोलनके कोलाहलमें खो जानेका या उसके उतार-चढ़ावसे प्रभावित होनेका भय नहीं है। मूल्य ३.५०

• जुलूस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

नया शायद कुछ नहीं होता। आँख-ओझल तथ्योंके उद्घाटनको शोध नाम मिलता है और जाने-परचे तत्त्वोंका अपने प्रयोजनके अनुरूप संघटन आविष्कार कहलाता है। साहित्य सृजनमें भी, व्यापक दृष्टिसे देखें तो, अपूर्व शायद ही कुछ होता हो।

'रेणु' की यह कृति 'जुलूस' भी अपूर्व तो कैसे कही जाये, पर अनूठी इसे मानना पड़ेगा। हिन्दीमें इस विषय-भूमिकी और इसके भाव-संकेत लिये हुए कोई

ज्ञानपीठ पत्रिका : अक्तूबर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृति विरले ही आयी होगी। एक लघुकाय उपन्यास पर विशाल अन्तरंग, गझिन शक्तिशाली और सारा कथानक सामयिक : घटनाओंकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण और मूल्योंकी दृष्टिसे भी। शैली-शिल्प 'रेणु' के अपने : पहलेसे अधिक प्रौढ़, मंजे-निखरे, प्रभावपूर्ण।

कथानक सीधा-सा है, कला उसका उपयोग करनेकी है। इसके माध्यमसे हिन्दी पाठक देखेंगे कि प्रान्तीय भाव-भेद कितने भी वास्तविक लगें, यथार्थ जीवनके सन्दर्भमें उनका अस्तित्व क्षीण हुए बिना नहीं रहता। और ठीक यही तो मूल आधार है देशकी भावात्मक-सांस्कृतिक एकताके सत्यका। आवश्यकता आचरणकी है, दृष्टिदानकी है। प्रस्तुत है इस दिशामें यह 'रेणु' का सफल रचनात्मक प्रयत्न। **मूल्य ३.५०**

• **सिकन्दरनामा** : सलमा सिद्दीक़ी

सिकन्दरनामा यानी सिकन्दरका हाल। हाँ, सिकन्दर इतिहासका सिकन्दर नहीं। उसपर सदियोंकी मोटी चादरें पड़ गयी हैं। यह आजका सिकन्दर है जिसके अस्तित्वका सबसे बड़ा सबूत यह है कि स्वयं सलमा सिद्दीक़ीने उसे अपनी जादुई क़लमकी नोकपर बैठाकर साहित्य-संसारमें रॉकेटकी तरह छोड़ा है।

आप चाहें तो इस सिकन्दरको डॉन क्विग्ज़ोटकी परम्परामें शुमार कर लें; लेकिन हैं यह मियाँ खोजीकी जात-बिरादरीके। जिस तरह हर मिट्टी-पानीकी अपनी-अपनी पौध होती है जो अपने-अपने रंग और सुगन्धमें लाजवाब होती है, उसी तरह यह सिकन्दर है — हिन्दुस्तानकी धरतीका एक हँसोड़ क्यारीका लुभावना फूल। बहुत दिलचस्प दास्तान है इस सिकन्दरकी। और, सलमा सिद्दीक़ीकी सादाबयानीका मोहक कमाल! नये अन्दाज़, नयी अदा, और कुछ पुराने तौर-तरीक़ोंपर नयी चुलबुली निगाह! **मूल्य २.००**

• **आत्मजयी** : कुँवर नारायण

कठोपनिषद्में नचिकेताका आख्यान आता है। सत्यद्रष्टा कविने इसके माध्यमसे भारतीय दर्शनकी एक विशिष्ट उपलब्धिको स्पष्ट किया है। इधर कुछ हिन्दी काव्य-कृतियाँ इस आख्यानको विषय-आधार बनाकर प्रकाशमें आयी हैं। 'आत्मजयी' इन सबमें कई दृष्टियोंसे भिन्न है और विशेष अर्थपूर्ण भी। यह कृति मूल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसंगके दार्शनिक पक्षकी ऊहापोह नहीं करती, न ही उसे दिव्यकथाके रूपमें ग्रहण करती है। 'आत्मजयी' के कविने मुख्यत: नचिकेताकी मानवीय परिस्थिति-को ही दृष्टिमें रखा है। नचिकेताकी ही तरह आजका चिन्तनशील मनुष्य भी ऐसे मूल्योंके लिए जीना चाहता है जो उसमें सुख ही नहीं सार्थकताका भी बोध करा सकें। सर्वथा संग्रहणीय कृति। मूल्य ३.५०

● **अन्धा चाँद : मुनि रूपचन्द**

चाँदके लिए 'अन्धा' विशेषण अटपटी-सी कल्पना लगेगी। है उसके पीछे एक वस्तुसत्य। उसका सारा उजाला पराया, लिया हुआ, नहीं होता क्या? इससे रहित, उसका अपना स्वरूप कैसा क्या रहता है?

प्रस्तुत संग्रहकी कविताओंमें इसी स्वरूप-विश्लेषणकी दृष्टिको प्रधानता दी गयी है। जो है, न उसे छिपायें न उससे छिपनेकी करें, यही भावना है जिससे ये कविताएँ अनुप्राणित हैं और जो इन्हें एक विशेषता प्रदान करती है। इसीलिए जहाँ ये अत्यन्त मार्मिक हो उठी हैं वहीं यथार्थके सौन्दर्यसे युक्त भी हैं।

सीधी-सरल बोल-चालकी भाषा, कला और शिल्पकी कृत्रिमताओंसे मुक्त: इन कविताओंकी ऋजुता विवेचकको सन्तोष देगी और सामान्य पाठकको इनका सत्य एक दृष्टि और प्रेरणा देगा। मूल्य : ३.००

● **प्रेत : मूल – इब्सेन, अनु० – नेमिचन्द्र जैन**

प्रेत अर्थात् वह योनि या कहें स्वरूपावस्था, जिसमें मृत्युके बाद मनुष्य बना रहे। स्थूल शरीर तब नहीं होता, वासनाएँ-भावनाएँ रहती हैं। माता-पिताकी वासनाएँ-भावनाएँ सन्तानमें यों भी आती हैं। पर उनसे मुक्त रखनेके ज्ञात और सम्भव सभी उपाय करके सन्तानमें हठात् उन्हें ज्योंका त्यों सक्रिय देखें तब प्रतीकोंकी भाषा उसे प्रेत नाम ही देगी।

प्रस्तुत कृति लगभग सौ वर्ष पूर्व लिखे गये एक नाटकका सफल अविकल हिन्दी अनुवाद है। मूल कृति है इब्सेनकी 'घोस्ट्स'। इब्सेन अर्थात् 'इब्सेन', आधुनिक नाटकका प्रवर्तक, शॉ भी जिसका ऋण स्वीकारनेको विवश हुआ, और देश-देशके नाट्य-लेखन और रंगमंचने जिससे दिशा पायी, प्रभाव ग्रहण किये। और 'घोस्ट्' – एक लघुकायपर सम्पूर्ण नाटक, जिसने तत्कालीन सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-आचरणकी ऐसी सच्ची और अचूक प्रतिलिपि सहसा उपस्थित की कि समूचे योरॅपका भद्रवर्ग तिलमिला उठा और प्रतिक्रियाओंके प्रत्युत्तरमें इब्सेनको एक और नाटक लिखना पड़ा।

सौ वर्ष पूर्वके जीवन-आचरणका यह चित्र सामने आज दर्पण-जैसा लगेगा। इब्सेन नहीं है, पर तथ्य पुकारेंगे और साहित्यकार अपना धर्म निबाहते चूकता नहीं। विश्वकी प्रायः सभी भाषाओंमें अनूदित, रंगमंचके लिए सदासे सबका चहेता, प्रस्तुत है इब्सेनका नाटक 'प्रेत' – जितना क्लासिक उतना ही मॉडर्न, आजका।

मूल्य : २.२५

• सांस्कृतिक

• उपासकाध्ययन : मूल–सोमदेव सूरि, सं०–अ० : पं० कै० च० शास्त्री

सोमदेव सूरि कृत महान् संस्कृत ग्रन्थ यशस्तिलकके अन्तिम तीन आश्वास, जिन्हें स्वयं सोमदेवने भी उपासकाध्ययन नाम दिया है। जैन श्रावकाचारका विशद विवेचन। हिन्दी प्रस्तावना, अनुवाद, संस्कृत टीका तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ११६ + ५३९। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य १२.००

• करकण्ड चरिउ : मूल–मुनि कनकामर, सम्पा०–डॉ० हीरालाल जैन

जैन और बौद्ध साहित्यमें 'प्रत्येक बुद्ध' के रूपमें प्रसिद्ध महाराज करकण्डके जीवन-चरित्रपर लिखा गया अपभ्रंश काव्य। हिन्दी अँगरेज़ी प्रस्तावना, अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ६४ + २७८। द्वितीय संस्करण १९६४।

मूल्य १०.००

• भोजचरित : मूल–पाठक राजवल्लभ, सम्पा०–अनु––डॉ० बहादुर-चन्द छाबड़ा, डॉ० शंकरनारायणन्

परमार नरेश भोजके जीवनपर लिखा गया ऐतिहासिक महत्त्वका एक विशिष्ट संस्कृत काव्य। महत्त्वपूर्ण अँगरेज़ी प्रस्तावना, व्याख्यात्मक टिप्पण तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल २४ + १९२। प्रथम संस्करण १९६४।

मूल्य ८.००

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

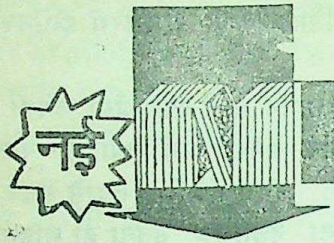

- फ़िल्मी फुलझड़ियाँ (हास्य-व्यंग्य) कृश्नचन्दर
- मैली चाँदनी (उपन्यास) गुलशन नन्दा
- जाड़ेकी धूप (उपन्यास) रजनी पनिकर
- अन्तिम परिचय (उपन्यास) शरतचन्द्र
- तेलुगुकी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानियाँ) सं०बालशौरि रेड्डी
- मौतकी माँदमें (शिकार सा०) महन्त धनराजपुरी
- काकाके कारतूस (हास्य-कविता) काका हाथरसी
- हिन्दी कवयित्रियोंके प्रेम-गीत (कविता) सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन'

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

तब और अब (उपन्यास) गुरुदत्त
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

एक औरतकी ज़िन्दगी (उपन्यास) मोपासाँ
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

जर्मनी : देश और निवासी (सचित्र) उदयनारायण तिवारी
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार

प्रगतिके बढ़ते चरण

इस बीच भारत-भरमें शायद ही कोई ऐसा विद्वान्, पत्रकार, लेखक अथवा प्रबुद्ध पाठक होगा जो भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित एक लाख रुपयेके साहित्यिक पुरस्कार योजनासे परिचित न हो गया हो।

सन् १९६२ में जब इसका सूत्रपात हुआ था तब भी हमें इस कार्यकी गुरुताके कारण क्रियान्वितिकी समय-सीमाका बराबर ध्यान था, इसीलिए प्रथम पुरस्कार सन् १९६५ के पुरस्कारके नामसे ही अभिहित भी किया था। जैसा कि पहले विवरणोंमें स्पष्ट है, मार्च १९६६ तक इस प्रथम पुरस्कारको घोषित कर देनेका निर्णय प्रवर परिषद् कर चुकी है।

चौदहों भारतीय भाषाओंकी श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्यिक कृतियोंमें-से पहले हर भाषाकी परामर्श समिति-द्वारा पुस्तकें चुनी गयीं फिर भाषा-वर्ग समितियों-द्वारा संस्तुत होकर सात भाषाओं (हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, बंगला, तेलुगु तथा उर्दू) की सात पुस्तकें भारतीय ज्ञानपीठ कार्यालयमें पहुँचीं। उसके बाद देश-भरके अनेक ऐसे एकाधिक भारतीय भाषा-भाषी प्रतिष्ठित विद्वानोंसे उनका तुलनात्मक अध्ययन कराया गया जिनकी मातृभाषा समीक्ष्य कृतियोंसे इतर हो, ताकि तटस्थ दृष्टिको अधिकाधिक अवसर मिले। सभी पुस्तकोंका तुलनात्मक परीक्षण कार्य समाप्त हो चुका है तथा सभी विद्वानोंने अपनी-अपनी सम्मतियाँ भेज दी हैं।

इन सात कृतियोंमें-से किसी एकको सर्वश्रेष्ठ घोषित करनेका अन्तिम दायित्व प्रवर परिषद्का है, अतः निकट भविष्यमें ही प्रवर परिषद्की बैठकमें इन कृतियोंपर विचार होगा और अन्तिम निर्णयकी दिशामें अगला पग उठाया जायेगा।

द्वितीय पुरस्कार (१९६६) के लिए भी, प्रथम पुरस्कारकी ही तरह,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-प्रस्ताव पत्र आमन्त्रित किये गये। उसी प्रकार हर भाषाकी अलग-अलग परामर्श समितियाँ बनायी गयीं। प्रत्येक समितिने अपना-अपना निर्णय ले लिया है और बैठकोंका विवरण भी प्राप्त हो चुका है।

अब भाषा वर्ग समितियाँ गठित की जा रही हैं। भाषा परामर्श समितियों द्वारा अनुशंसित होकर आयीं पुस्तकें वर्ग-समितियोंके सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत की जायेंगी।

तृतीय पुरस्कार (१९६७) के लिए, पुरस्कार योजना-सम्बन्धी पुस्तिका-की नयी आवृत्ति प्रकाशित हो गयी है। नये पुस्तक प्रस्ताव-पत्र भी छप चुके हैं। इस बार बहुत बड़ी संख्यामें प्रस्ताव-पत्र भेजनेकी योजना बनायी गयी है। आगामी कुछ ही दिनोंमें प्रस्ताव-पत्र भेज दिये जायेंगे। तृतीय पुरस्कारके लिए प्रस्ताव-पत्र भारतीय ज्ञानपीठमें प्राप्त होनेकी अन्तिम तारीख १५ नवम्बर १९६५ नियत की गयी है।

तृतीय पुरस्कारके लिए पुस्तकें प्रस्तावित करनेके इच्छुक महानुभावोंसे अनुरोध है कि हमें पत्र लिखकर प्रस्ताव-पत्र मँगवा लें। पता है—मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७।

गत तीस वर्षों से हिन्दी प्रचार-कार्य में रत विशिष्ट
साहित्यकार पं० अनुसूयाप्रसाद पाठक के दो अमूल्य ग्रन्थ

- **तमसा की गोद में** : खण्डकाव्य, पृ० सं० १६०, आकार २० × ३० क्राउन, मूल्य तीन रुपये

पुस्तक सर्वांगीण नवीन है। काव्य रचना तो नवीन है ही। कविके चिन्तनका ढंग, सांस्कृतिक आस्था, अनुभूति, नयी चेतनाके साथ रस-अलंकार, शब्द-छन्द गति विशिष्टतासे ओत-प्रोत है। पुस्तक अपनेमें पूर्ण तथा संग्रहणीय है।

- **जहाना** : उपन्यास : पृ० सं० १८० साइज २० × ३० नयनाभिराम छपाई आकर्षक कवर कलात्मक मुद्रण। मूल्य तीन रुपये

ग्रामीण समस्यापर आधारित सत्यकथा है। इसलिए प्रारम्भसे अन्त तक पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता।

प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार**
बाँका बाजार, कटक-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी डायरी

राजभाषाके सम्बन्धमें किये गये ऐतिहासिक निश्चयमें किसी प्रकारका परिवर्तन न किया जाये

लक्ष्मीशंकर व्यास

गत ५ अगस्तसे पाकिस्तानने कश्मीरपर जो नया तथा भीषण हमला शुरू किया, उससे देशके सम्मुख गम्भीर संकट उपस्थित हो गया। पाकिस्तानी विश्वास-घातक आक्रमणका भारतीय विजयवाहिनीने जिस वीरता-शूरतासे मुँहतोड़ उत्तर दिया, उससे न केवल देशमें अपितु समस्त संसारमें उसकी यश-गाथा फैली। इस सन्दर्भमें समस्त हिन्दी-जगत् और साहित्यकारोंने एकता तथा जनमनोबलको सुदृढ़ करनेका शिव-संकल्प लेकर शत्रुकी चुनौतीका सामना करनेका निश्चय किया। देशके साहित्यकारों-सम्पादकोंने जहाँ एक ओर स्वतन्त्रता देवीकी आराधना-अर्चनाके लिए शत्रु-रक्तसे अभिषेक करनेका आह्वान किया, वहीं प्रतिरक्षा मन्त्रीसे 'मत चूक्यो चौहान' का सम्बोधन कर शत्रु-सेना पर प्रबल प्रहार करनेकी जनमनोभावनाको अभिव्यक्त किया। राष्ट्र और राष्ट्रभाषाके साहित्यकारोंने इस प्रकार दिखा दिया कि वे राष्ट्रीय संकटके समय अपना कर्तव्य एवं दायित्व भलीभाँति जानते हैं और स्वतन्त्रताके सजग प्रहरी हैं।

जैसी सम्भावना हमने व्यक्त की थी, उसीके अनुसार राजभाषा संशोधन विधेयक संसद्में उपस्थित ही नहीं किया गया। राष्ट्रीय संकटके समय विवादास्पद प्रश्न उठाये ही नहीं जाने चाहिए। कारण इनसे देशकी एकता तथा शान्ति भंग होनेका भय था। देशपर जो संकट आया उसके माध्यमसे सम्भवतः दैव भी इस अराष्ट्रीय विधेयकके विरुद्ध थे। इसे साधारण अथवा संयोग मात्रकी घटना न मानना चाहिए कि जब-जब राष्ट्रभाषा हिन्दीके विरुद्ध अँगरेज़ी भाषाको बनाये रखनेकी चेष्टा की गयी है, तब-तब देशपर भारी विपत्ति आयी है। सन् १९६२ में जब भारत सरकार सन् '६५ के बाद भी अँगरेज़ी भाषाको बनाये रखनेके लिए राजभाषा विधेयक लायी, उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय चीनका भारी आक्रमण हुआ। इस संकेतके अर्थको न समझकर भारत सरकारने उसे सन् १९६३ में बलपूर्वक स्वीकार ही करा लिया। सन् १९६५ में संसद्के पावस अधिवेशनमें पुनः अँगरेज़ीको अनन्तकाल तक बनाये रखनेका संविधान विरोधी विधेयक उपस्थित किया जानेवाला था। समस्त राष्ट्रके लोगोंने इसका विरोध किया था किन्तु मद्रासके प्रतिनिधि इस हठपर अड़े थे कि इसे अवश्य स्वीकृत किया जाये। भारतके स्वराष्ट्र मन्त्री श्री नन्दाने सरकारी दृष्टिकोणको स्पष्ट कर दिया था, यह समय ऐसे विवादास्पद विधेयकको उपस्थित करने का नहीं। अन्ततः पाकिस्तानके बर्बर आक्रमणके फलस्वरूप विधेयक नहीं उपस्थित किया जा सका। वस्तुतः ऐसे अराष्ट्रीय तथा संविधान विरोधीको अब कभी लानेकी आवश्यकता ही नहीं। भारत सरकार चीन-पाकिस्तान तथा ब्रिटेनकी साँठगाँठ विशेषतः ब्रिटेनकी कपटपूर्ण नीतिके बाद भी, देशमें अँगरेज़ीको बनाये रखनेका निश्चय करेगी तो इससे अधिक दुर्भाग्यकी कोई बात नहीं होगी। इधरके संकटसे हमें अँगरेज़ों और अँगरेज़ी दोनोंसे सदा-सर्वदाके लिए सावधान हो जाना है। देशसे इन दोनोंके प्रभावको शीघ्रसे शीघ्र समाप्त करनेमें ही कल्याण है। यह बात पाकिस्तानसे संघर्षके समय स्पष्ट हो चुकी है।

१४ सितम्बरको सारे देशमें प्रतिवर्षकी भाँति हिन्दी दिवस सोत्साह मनाया गया। राष्ट्रीय संकटके समय राष्ट्रीय एकताको एकसूत्र एवं अखण्ड करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दीको समस्त राजकाज तथा सार्वजनिक जीवनमें व्यवहृत करनेका संकल्प किया गया। इस अवसरपर यह भावना भी व्यक्त की गयी कि सन् १९६५ से संविधानके निश्चयानुसार हिन्दीके भारतकी राजभाषा पदपर पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित हो जानेके बाद इस दिवसको मनानेकी आवश्यकता न पड़ेगी। भारत सरकारके अँगरेज़ी प्रेमने इस आशाको निराशामें परिणत कर दिया। देशके विभिन्न भागोंमें हिन्दी-दिवसका आयोजन कर तथा संकल्प लेकर पुनः निश्चय किया है कि भारतीय संविधानमें राजभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें जो ऐतिहासिक निश्चय किया जा चुका है, अब उसमें कोई परिवर्तन न किया जाये।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीविश्व
कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ

जो केवल मनोरंजनके लिए नहीं
बहुत-कुछ सोचने और पानेके लिए हैं

• संस्मरणांजलि

सितम्बरकी ११ तारीखको जिसकी पहली बरसी थी, मगर देशके युद्धरत होनेके कारण मनायी न जा सकी, उस मुक्तिबोधकी याद आ रही है।

वह मुक्तिबोध याद आ रहा है जो अपने मस्तिष्ककी बम फ़ैक्ट्रीमें सैकड़ों मैगेटनके बम बना-बनाकर हिन्दीके 'हवाई' अड्डोंपर फेंकता रहा। पर एक था कोई ऐसा बम जो उसके दिमाग़की नसोंमें ही फट उठा था, और···

····'पिस गया वह भीतरी और बाहरी दो कठिन पाटों बीच' आजीवन युद्धरत गजानन माधव मुक्तिबोध—साहित्य और समाजके आपसी सम्बन्धोंको ढूंढ़ता-ढूंढ़ता ही।

मुक्तिबोध पहला साहित्यिक योद्धा था जो रचना और आलोचनाके युद्धमें रचनाको जिता ले गया। निम्न मध्यवर्गकी चेतनाको अक्षरोंमें आँजकर कष्टों और निराशाओंकी जो आक्रोशी अभिव्यक्ति उसने की, उसने चाँद तकका मुँह टेढ़ा करके रख दिया।

उसी योद्धाकी समाधिपर सिर झुकाये खड़े हैं हम।

• एक और विदा

हर कोई एक नक़शा बनाता है जिसके अनुसार वह अपनी ज़िन्दगी बिताना चाहता है। मगर देर-सबेर हर किसीको ही वह नक़शा फाड़-फेंक देना पड़ता है। बेशुमार मजबूरियाँ होती हैं जो हमें अपने बनाये नक़शेके मुताबिक़ जी लेने नहीं देतीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर कितने खुशनसीब हैं वे चन्द लोग जिन्हें अपने नक़शेका स्केल तक नहीं बदलना पड़ता ! या यूँ कह लें कि जो हर मजबूरीको रौंदकर अपने उसूलों और नक़शोंके साथ मिला-मिलाकर ज़िन्दगी जीते चलते हैं।

ऐसे ही चन्द लोगोंके नक़शे-क़दमपर दुनियाकी सारी तरक़्क़ी चलती आयी है। डॉक्टर एलबर्ट स्वाइट्ज़र भी इन्हीं चन्दमें-से एक थे—लेखक, चिन्तक, डॉक्टर, संगीतज्ञ, मानव सेवक।

नोबेल शान्ति पुरस्कार—१९५२ तथा जर्मन शान्ति पुरस्कार जिन्हें दिया गया, वह ९० वर्षकी उम्र तक अपने देशसे दूर अफ़्रीकाके जंगलोंमें कोढ़ियों और बीमारोंकी सेवा करते-करते ख़त्म हो गये।

नतशिर हैं हम उस महामानवके निधन पर।

• सोवियत संघमें शरच्चन्द्र चट्टोपाध्यायकी ९०वीं वर्षग्रन्थि

बंगलाके सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरच्चन्द्र चट्टोपाध्यायकी ९०वीं वर्षग्रन्थि, जो अगले साल पड़ती है, सोवियत संघमें बड़े पैमानेपर मनायी जायेगी।

'खुदोफेत्स्वेन्नाया लितरातुरा' प्रकाशनगृह लेखककी उन रचनाओंका संग्रह प्रकाशित करेगा जो अब तक रूसीमें अनुवादित नहीं हुई। दूसरा प्रकाशनगृह 'नाउका' उनकी कहानियोंका संग्रह प्रकाशित करेगा। इस संग्रहकी भूमिकाके रूपमें एक लेख शरच्चन्द्रके जीवन और कृतियोंके बारेमें होगा।

शरच्चन्द्रका 'गृह दाह' सोवियत संघमें सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ था। १९५८ में इसकी १२५०००० प्रतियाँ प्रकाशित की गयी थीं। १९६० में 'श्रीकान्त'का अनुवाद रूसीमें किया गया था।

• छपाईके लिए काग़ज़की प्लेटें

लेनिनग्रादके इंजीनियरोंने ऐसा काग़ज़ तैयार किया है जो छपाईमें जस्त और अल्यूमिनियमसे होड़ लेता है। यह काग़ज़ एक प्रकारका रोगन लगाकर तैयार किया गया है जिसके फलस्वरूप इसकी प्लेटें बनाकर छपाईकी मशीनपर २००० तक प्रतियाँ छापी जा सकती हैं। यह क्रास्नोगोर्स्क काग़ज़ मिलने तैयार किया है। ऑफ सेट छपाईके लिए मिलने ऐसा काग़ज़ बनाना शुरू कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन जगत्
सूचनाएँ

वास्तवमें प्रकाशन 'एक' व्यवसाय
नहीं होता, एकमें अनेक होता है

• भारतीय प्रकाशनोंकी संख्या

१९६४-६५ के वित्तीय वर्षमें भारतमें प्रकाशित होनेवाली पुस्तकोंकी कुल संख्या २१,२६५ है। पुस्तक प्रकाशनके क्षेत्रमें दिल्लीका स्थान पहला रहा, महाराष्ट्रका दूसरा, मद्रासका तीसरा तथा बंगालका चौथा। इन राज्योंमें छपनेवाली पुस्तकें क्रमशः ५०४८, ३५६३, २५६८ तथा २४५० हैं।

• एक महत्त्वपूर्ण शब्दकोश

बीस युरॅपीय भाषाओंके पारिभाषिक शब्दोंका एक कोश प्रकाशित हुआ है। प्रकाशक है हंगरीकी एक प्रकाशन संस्था—गोन्दोलात। पुस्तकालय विज्ञान सम्बन्धी सैकड़ों तकनीकी शब्दोंकी विस्तृत व्याख्याएँ युरॅप-भरकी महत्त्वपूर्ण भाषाओंमें सँजोकर रख देनेकी दिशामें यह पहला प्रयास है। अबतक इस प्रकारके कोशोंमें आमतौर पर चार ही भाषाएँ होती थीं—जर्मन, फ्रांसीसी, अँगरेजी और रूसी। न्यूयार्ककी ब्रुकलिन सेण्ट्रल बुक कम्पनीने इस कोशके वितरणाधिकार प्राप्त किये हैं। कोशका नाम है—डिक्शनारियम बिब्लियोथेकारी प्राक्तिकम (पुस्तकालय कर्मचारी व्यावहारिक शब्दकोश)।

• गानेवाली पुस्तकें

रंगोंसे भरी दुनियाको अन्धे नहीं देख सकते। इन्सानने जो ज्ञान अर्जित किया है उसे जाननेमें उन्हें काफ़ी समय लगता है। हालतक अन्धे किताबोंकी दुनियासे अनभिज्ञ थे। ब्रेल विधिसे पूरा ज्ञान नहीं मिल पाता था क्योंकि उसमें किताबें कम हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आविष्कारकर्ता इसकी खोजमें लगे हुए हैं कि साधारण शब्दोंको अर्थपूर्ण संकेतोंमें बदल दिया जाये जिससे अन्धे समझ सकें।

रूसी जनतन्त्रकी भाषाविज्ञान अकादेमीके अधीन विज्ञान अनुसन्धान इंस्टिच्यूटकी स्वेर्दलोव्स्क शाखामें सोवियत वैज्ञानिकोंने एक लुच (किरण) का आविष्कार किया है। यह अन्धोंके लिए साधारण पाठोंको पढ़ सकता है। लुच रीडर बहुध्वनियन्त्र कहलाता है क्योंकि प्रत्येक अक्षर विभिन्न सम्बद्ध तत्त्वोंमें बदल जाता है और प्रत्येक तत्त्व पुनः एक संगीतात्मक स्वरमें सुना जा सकता है जिसमें ध्वनिमानमें अन्तर होता है।

जिस पुस्तकको अन्धा व्यक्ति पढ़ना चाहता है उसे लुच रीडरपर रख दिया जाता है और यन्त्रको शुरू होनेवाली पंक्तिपर रख दिया जाता है और उसकी लम्बाई और खाली जगहोंके अनुरूप यन्त्रोंको समन्वित कर दिया जाता है। स्विच चालू करनेपर संगीतमय सुर फ़ौरन सुनाई पड़ने लगते हैं।

हर ग्राफ़िक तत्त्वके लिए एक निश्चित तार होता है और प्रत्येक अक्षरका अपना निश्चित ध्वन्यात्मक स्वरूप होता है। इससे छपा पाठ लुचमें 'गीत' बन जाता है। जिस तरह एक अनुभवी संगीतज्ञ अपने स्वरोंको 'पढ़' सकता है उसी तरह कोई अन्धा व्यक्ति भी लुचकी सहायतासे किताबोंको पढ़ सकता है और इसके लिए उसे संगीतज्ञ होनेकी आवश्यकता नहीं है।

अन्धोंको 'ठोस रूपसे पढ़ने'में मदद देनेके लिए एक विशेष प्रकारकी तकनीक अपनायी गयी है। ऐसे चार्टोंका विकास किया गया है जिससे अक्षरोंकी ध्वनिकी पहचान हो सके। पहले अन्धे व्यक्तिको साधारण सुरवाला अक्षर पहचानना सिखाया जाता है। इसके बाद वह जटिल अक्षरोंको पहचानना सीखता है। अन्तमें वह साधारण पुस्तकोंको पढ़ने लगता है। इसमें दक्ष होनेपर उसके पढ़नेकी रफ़्तार तेज़ हो जाती है।

व्यवहारसे पता चलता है कि औसत क़िस्मका अन्धा व्यक्ति ६ महीनेमें पढ़ने लगता है। यन्त्र चलाना कठिन नहीं है। इससे प्रत्येक मिनिटमें १०० अक्षर पढ़े जा सकते हैं जो ब्रेल पद्धतियोंसे निश्चित रूपसे आगे बढ़ी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल के नये प्रकाशन

• **हिरोशिमा के फूल :** एदिता मारिस, अनु० मोहन राकेश ३.५०

इस उपन्यासके संसार भरके विभिन्न देशोंमें ३० संस्करण हो चुके हैं और पुस्तक लाखोंकी संख्यामें बिक चुकी है। २० वर्ष पहले एटम बमकी विभीषिकाके परिणामस्वरूप हिरोशिमाके निवासी अबतक भीतर ही भीतर किस तरह गल रहे हैं, लेकिन बाहरसे संस्कार जन्य मुसकराहट बिखेरते रहते हैं। अत्यन्त द्रावक उपन्यास।

• **भग्न सीमाएँ :** बालशौरि रेड्डी ४.००

मार्मिक और भावप्रधान होनेके साथ ही यह उपन्यास वैचारिक स्तरपर भी श्रेष्ठ है। दक्षिण भाषाभाषी बालशौरि रेड्डीका यह मौलिक उपन्यास है जिसमें उन्होंने आन्ध्र प्रदेशका जीवन प्रस्तुत किया है।

• **अँगरेज़ी हिन्दी पर्यायवाची कोश :** सं०डॉ० बद्रीनाथ कपूर ९.००

अँगरेज़ीमें एक ही प्रकारके अर्थ देनेवाली विभिन्न शब्दोंके अर्थोंकी सूक्ष्मताका विवेचन इस कोशकी विशेषता है। हिन्दी पर्याय सहित।

• **आपेक्षिकता की मूल संकल्पनाएँ :** बट्रेण्ड रसेल ६.००

आइन्स्टाइनके आपेक्षिकताके सिद्धान्तपर प्रसिद्ध मनीषी बट्रेण्ड रसेलने अपनी गहन दार्शनिक विवेचना दी है। यह पुस्तक भी हिन्दीमें प्रथम बार प्रकाशित हुई है।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली – ६ • पटना – ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-मंच

'ज्ञानपीठ पत्रिका' का नववर्षांक (अगस्त '६५) वैचारिकताके समावेश और नये स्तम्भोंके योग तथा सामग्रीकी विविधताके कारण विशेष आकर्षक लगा। यह प्रतिक्रिया मेरी ही नहीं बहुतोंकी होगी, ऐसा मुझे लगता है। भाषा-का प्रश्न, प्रान्तीय साहित्योंकी गतिविधि, महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंकी समीक्षा, प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर तथा सूत्र-सन्दर्भ आदि सबके द्वारा 'पत्रिका' वास्तवमें समृद्ध लगी।

'समसामयिकी' में 'राजनीति और साहित्यकार' की समस्यापर 'जनयुग', 'दिनमान' और 'कल्पना' से जो अंश लेकर छापे गये हैं उनसे वह परिचर्चा-जैसी हो गयी है। मुझे स्मरण आया कि 'परिमल' की ओरसे अखिल भारतीय स्तरपर एक बार 'लेखक और राज्य' की समस्या उठायी गयी थी। नामवरजी-को शायद ज्ञात नहीं कि साहित्यकारोंने जाने कितने जीवन्त प्रश्नोंपर सम्मिलित चर्चाएँ की हैं या शायद 'जानकर अनजान बन जा' की नीति ही उन्हें अनुकूल लगी हो। उन्हें एक हाँक लगानी थी सो उन्होंने लगा दी। पर हाँक सुनकर थर्रा जाने की स्थिति अब नहीं है।

मेरी हार्दिक बधाई अगस्त अंकपर।

—डॉ० जगदीश गुप्त, प्रयाग

'ज्ञानपीठ पत्रिका' का अगस्त अंक। प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर' तथा 'समसामयिकी' इन दो नये स्तम्भोंके लिए मेरी आशंसा स्वीकारें। ये दोनों ही स्तम्भ मात्र सूचनासे हटकर साहित्यिक गतिविधिको एक व्यापक आधार देते हैं। इनके कारण पत्रिका पहलेसे अधिक आकर्षक और विचारणीय बनी है।

—डॉ० शिवप्रसाद सिंह, वाराणसी

'ज्ञानपीठ पत्रिका' का अगस्त अंक पढ़ गया। 'लोकायतन' पर 'प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर' के अन्तर्गत अन्यत्र प्रकाशित जो समीक्षाएँ आपने संकलित की हैं वह एक उत्तम प्रयास है। इसे हर माह चलाया जाना चाहिए। मतभेदकी पूरी गुंजायशके बावजूद, और सही कहना होगा कि उसके कारण ही, 'सम-सामयिकी' वाली चर्चा बहुत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी रही।

—मधुरेश, बदायूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका
तथा भारतीय भाषाओंकी
सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृतिपर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार - योजना - प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित सामग्रीका अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

o

लोकोदय ग्रन्थमाला

• राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी दो	नानक सिंह	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

• उपन्यास

सूरजका सातवाँ घोड़ा [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
पीले गुलाबकी आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर मानव	४.००
गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस्०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	२.५०
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.२५
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	३.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	६.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	४.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस्०	२.५०
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०

ज्ञानपीठ पत्रिका : अक्तूबर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००
कहानी		
दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	३.००
झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
काल के पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोस्ताँ [द्वि० सं०]	शेख सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने अँगन रस बरसै	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
मोतियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १—२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
अतीतके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५०
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

● कविता

इतिहास-पुरुष	डॉ देवराज	३.५०
देशान्तर [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
अन्धा चाँद	मुनि रूपचन्द	३.००
चाँदका मुँह टेढ़ा है [द्वि० सं०]	मुक्तिबोध	८.००
आत्मजयी	कुँवरनारायण	३.५०
कनुप्रिया [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
हम विषपायी जनमके [द्वि० सं०]	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
वेणु लो गूँज धरा [द्वि० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
बीजुरी काजल ऑज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूप शर्मा	६.००
• शाइरी		
गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
नग़्मए-हरम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००
• नाटक		
प्रेत	इब्सेन,	२.२५
बारह एकांकी [द्वि० सं०]	विष्णु प्रभाकर	३.५०
घाटियाँ गूँजती हैं [तृ० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम क़ैद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
रक्तके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
चेखॉवके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

● विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजित कुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

● रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

● ललित-निबन्धादि

चिन्तककी लाचारी	माखनलाल चतुर्वेदी	४.००
एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकीराय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
ठूँठा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
ग़रीब और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रावी	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकरायी [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

दीप जले शंख बजे [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

विवेकके रंग	सं०-डॉ०देवीशंकर अवस्थी	७.००
हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो वार्ता-शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००
रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [च० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन[द्वि.सं.]	डॉ० भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ०रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरत्के नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ०भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो	मुनि नथमल	२.००
क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?	आचार्य तुलसी	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
दर्शन अनुचिन्तन	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

• सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव [द्वि० सं०]	मुनि नथमल	१.५०
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

• हास्य-व्यंग्य

सिकन्दरनामा	सलमा सिद्दीक़ी	२.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य [द्वि० सं०]	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
तेलकी पकौड़ियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
काग़ज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
मुर्ग़-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : अक्तूबर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

सभाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं०पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

मदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य ६.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल १.५०

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल २.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल १.५०

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १ २.००
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २ ८.००
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३ १०.००
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ४ ७.००
सम्पादन : डॉ० जोहरापुरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये ३.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन—वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल

स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश] .५०
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका] १.५०
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री प्रभाचन्द्राचार्य

लाटी संहिता [संस्कृत] २.००
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल

नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका] .५०
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात .२५

आगामी प्रकाशन

साहित्यिक

* **मुरदा सराय** : डॉ० शिवप्रसाद सिंह (कहानी)
* **नये प्रतिमान पुराने निकष** : लक्ष्मीकान्त वर्मा (समीक्षा)
* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ** : कृष्णाचार्य (शोध)
* **अपभ्रंश भाषा और साहित्य** : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन (शोध)
* **अठारह सूरजके पौधे** : रमेश बक्षी (उपन्यास)
* **सिंहली कहानियाँ** : सं०—भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा एस्० मेधंकर (कहानी)
* **प्रतिनिधि-कविता-संकलन** (मराठी) : दिनकर सोनवलकर
* **संग-तराश** : शिवचन्द्र शर्मा (कहानी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाक-आक्रमणसे उत्पन्न वर्तमान संकटकालीन स्थितिमें पूजा-दीपावलीके अवसरपर

ज्ञानोदय

ज्ञानोदय के २ विशेषांक

युद्ध - विशेषांक

नवम्बर अंक : लगभग २५० पृष्ठोंकी सचित्र और आँखों देखी सामग्री, या यूँ कहें वर्तमान स्थिति-का दर्पण। पत्रकारिताकी दिशामें अन्यतम प्रयोग कि यह सारी सामग्री 'ज्ञानोदय' तथा ज्ञानपीठके सहयोगियों-द्वारा ही प्रस्तुत की जा रही है।

मूल्य : २ रुपये। २२ अक्तूबरको प्रकाश्य।

दाम्पत्य - विशेषांक

दिसम्बर अंक : लगभग २५० पृष्ठोंकी युग्म-युगल चित्रोंसे सुसज्जित दाम्पत्य जीवनका विश्लेषण प्रस्तुत करनेवाली सामग्री। हिन्दीके सभी सुप्र-सिद्ध लेखकोंकी रचनाएँ।

मूल्य : २ रुपये। २५ नवम्बरको प्रकाश्य।

अपने आर्डर दोनों विशेषांकोंके लिए तत्काल भेजें :

९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

प्रमुख वितरक :

बेनेट कोलमन ऐण्ड कं० लि०, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजिस्टर्ड सं० एल-
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• •

हिन्दीके उपन्यास-साहित्यमें
भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा
एक और महत्त्वपूर्ण
प्रस्तुति

• •

जुलूस

फणीश्वरनाथ

मूल्य

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
कलकत्ता • दिल्ली • वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष चार : अंक चार
नवम्बर १९६५

ज्ञानपीठ पत्रिका

११.६५
पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

प्रकाशनकी अधुनातन
प्रवृत्ति और उपलब्धि परिचायिनी

दो संग्रहणीय प्रकाशन

• अठारह सूरज के पौधे
...का यात्रा-उपन्यास। बिलकुल नयी और प्रभाव-
...। सर्वथा पठनीय।
मूल्य ३.००

• प्रतिनिधि संकलन : कविता : मराठी
...सोनवलकर-द्वारा संकलित-अनुवादित प्रतिनिधि
...मराठी कविताओंका संग्रह।
मूल्य ४.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी
साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पत्रिका

वर्ष चार : अंक चार
नवम्बर १९६५

१. उद्घोष : फिर अँगरेज़ी क्यों···मामा वरेरकर २
२. बात : प्रभावित होने की···डॉ० देवराज ३
३. मैं लेखक कैसे बना ?····डॉ० प्रभाकर माचवे ७
४. 'तार सप्तक'के सन्दर्भमें···नेमिचन्द्र जैन १०
५. पूर्वेशियाई काव्य-जगत्···महेन्द्र कुलश्रेष्ठ १४
६. हमारा कश्मीरी साहित्य···सुबोध शास्त्री १७
७. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया :
श्रीराम वर्मा, जगदीश चतुर्वेदी २२
८. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित ३३
९. हिन्दीकी डायरी···लक्ष्मीशंकर व्यास ३७
१०. सरस्वतीके वरद पुत्रोंका कर्तव्य ३९
११. कवि जनताके आमने-सामने···रघुवीर सहाय ४१
१२. समसामयिकी : युद्ध और साहित्यकार ४९
१३. एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार ५७
१४. भारतीविश्व : कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ ५९
१५. पत्र-मंच ६४

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन :: जगदीश

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन एवं वितरण कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
मूल्य : छह रुपये वार्षिक, पचपन पैसे प्रति, द्विवार्षिक : ग्यारह रुपये

समाज-शिक्षा विभाग, राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्घोष

फिर अँगरेज़ी क्यों ?

संसारके अधिकांश राष्ट्रोंका सारा कार्य
यदि अँगरेज़ीके बिना चल सकता है तब
भारतको ही उसकी इतनी
आवश्यकता क्यों ?

मामा वरेरकर

अन्तर्राष्ट्रीय कामकाजके लिए अँगरेज़ी आवश्यक है, यह अँगरेज़ीके समर्थनमें एक बात बतायी जाती है। परन्तु वास्तविकता यह है कि इंग्लैण्ड और अमेरिकाका कुछ हिस्सा छोड़कर बाक़ी संसारमें अँगरेज़ी-भाषी लोग बहुत कम हैं। संसारकी जन-संख्यामें-से केवल ६ प्रतिशत अँगरेज़ी भाषाको जाननेवाले हैं। बड़े-बड़े देशोंमें फ्रान्स, रूस, जर्मनी आदि यूरोपीय देश तथा चीन, जापान आदि एशियाई देशोंकी जनता अँगरेज़ी नहीं जानती। इस स्थितिमें अँगरेज़ीका कोई ख़ास अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व नहीं रह जाता। अँगरेज़ीके बिना जो काम नहीं कर सकते और अँगरेज़ोंके अन्-पर ही पले हैं उनका ही यह तर्क है और इसीलिए वह हमारी समझमें नहीं आता। संसारके अनेकों राष्ट्रोंका कार्य यदि अँगरेज़ीके बिना ही चल सकता है तो भारतको उसकी इतनी आवश्यकता क्यों प्रतीत होती है ? महात्मा गान्धीके अनुयायी स्वतन्त्रताके पूर्व भारतकी राष्ट्रभाषामें ही बोलते थे। आज भी संसद्के बाहर वे हिन्दी या अन्य प्रादेशिक भाषामें बोलते हैं। फिर संसद्में और सरकारके काम-काजमें ही अँगरेज़ीका प्रयोग क्यों ?

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात : प्रभावित होनेकी

अनुयायी प्रतिभा उस छटपटाहटका अनुभव नहीं
कर सकती जो नये शिल्प और शैलीके
आविष्कारकी ज़रूरी शर्त है

डॉ० देवराज

एक प्रश्न उठाया गया कि हिन्दी लेखकोंपर अस्तित्ववादका कहाँतक प्रभाव पड़ा है। मेरे मनमें दूसरा ही प्रश्न उठा : यह 'प्रभाव पड़ना' क्या चीज़ होती है? प्रभावित होनेकी स्थितिके दो पक्ष होते हैं : एक प्रभाव डालनेवाला व्यक्तित्व और दूसरा प्रभाव ग्रहण करनेवाला व्यक्ति। जो व्यक्ति प्रभाव ग्रहण कर रहा है, उसमें इतनी योग्यता होनी चाहिए कि वह एक बड़े लेखककी दृष्टि या विचारोंसे प्रभावित हो सके। बड़े लेखक सहज ही बुद्धिगम्य नहीं होते। किसी महत्त्वपूर्ण लेखकको ठीकसे समझनेके लिए समझ और जानकारीकी पृष्ठभूमि अपेक्षित होती है। महत्त्वपूर्ण लेखक एक प्रश्न उठाता है जिसका लम्बा-चौड़ा सन्दर्भ होता है। महत्त्वपूर्ण प्रश्नकी दो परिभाषाएँ हो सकती हैं। एक, वह जिसमें ऐतिहासिक अथवा समकालीन मानवकी विशेष रुचि रही है, या है; मानवसे मतलब होगा समझदार, शिष्ट मनुष्योंका समुदाय। हर ऐरे-ग़ैरे मनुष्य-द्वारा उठाया प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहीं होता। दूसरे, महत्त्वपूर्ण प्रश्नका अर्थ हो सकता है ऐसा प्रश्न जिसका समाधान अनेक प्रश्नों या मसलोंपर रोशनी डाल सके। ऐसे प्रश्नोंको लेकर ही महत्त्वशाली जीवन-दृष्टियाँ अथवा विचार-सरणियाँ चलती हैं। इन दृष्टियों-सरणियोंके प्रभावको ठीकसे ग्रहण करनेके लिए यह ज़रूरी है कि अध्येता जिज्ञासुकी बड़े प्रश्नोंमें रुचि हो, या यह कि उसमें वैसे प्रश्नोंकी कठिनता तथा गुरुताका अहसास हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन जिस व्यक्तिमें प्रश्नोंके महत्त्वका अहसास है, वह समझदार और अधीत व्यक्ति होना चाहिए। कमसे कम यह निश्चित है कि ऐसे व्यक्तिकी चेतना एक 'कोरी पटिया' नहीं हो सकती। इसका मतलब यह माना जा सकता है कि एक सचमुच अच्छे विचारकसे प्रभावित होनेकी योग्यता उसी व्यक्तिमें हो सकती है जो मानवीय विचारोंके इतिहाससे थोड़ा-बहुत परिचित हो चुका है, लेकिन जिस व्यक्तिमें इतनी योग्यता है उसके किसी नये लेखक-द्वारा प्रभावित होनेका अर्थ यह कैसे हो सकता है कि वह उस लेखकके विचारोंको ज्योंका त्यों समग्रतामें स्वीकार कर ले? जब एक समझदार व्यक्तित्वकी दूसरे विचारवान् व्यक्तित्वसे क्रिया-प्रतिक्रिया होगी तो पहलेमें दूसरेके विचार ज्योंके त्यों स्वीकृत नहीं हो सकेंगे। नयी चेतनाके सन्दर्भमें पहुँचकर उनमें कुछ-न-कुछ परिवर्तन होना चाहिए। वहाँ पहुँचकर उन्हें उन दृष्टियों या विचारोंके साथ समझौता करना पड़ेगा जिनसे गृहीता व्यक्तित्व पहलेसे परिचित है। ऐसी हालतमें वह गृहीता व्यक्तित्व विचारक व्यक्तित्वका पूरा अनुयायी नहीं बन सकेगा।

मेरा विचार है कि जो व्यक्ति किसी भी बड़े लेखक या चिन्तकका अनुयायी बन जाता है उसकी चेतना बहुत कुछ 'कोरी पटिया'-जैसी होती है। ऐसा व्यक्ति थोड़ी-बहुत भाषा सीखे रहता है, लेकिन वह भाषा उसे यथार्थके चित्रोंके रूपमें अनुभूत नहीं होती। सन्देह होता है कि किसी भी मतवादके कट्टर अनुयायी प्रायः वही लोग हो सकते हैं जिन्होंने वयःसन्धिके आस-पास, जब उनकी चेतना यथार्थके गहरे स्पर्श और गम्भीर चिन्तन दोनोंकी अनभ्यस्त थी, उस मतवादके प्रति आत्म-समर्पण कर दिया था। इससे एक रोचक किन्तु कष्टकर निष्कर्ष निकलता है : किसी भी मतवादके कट्टर समर्थक वे लोग होते हैं जिन्होंने उस मतवादको अपनी चेतनाकी अविकसित अथवा अल्पविकसित अवस्थामें पकड़ लिया था। मतवादके ग्रहणके बाद प्रायः उनका विकास नितान्त एकांगी ढंगसे होता है। इसीलिए मतवादियोंके दिमाग़ों या लेखनियोंसे निकले हुए विचारों तथा साहित्यमें एक ही टकसालमें ढले हुए सिक्कों-जैसी समानता होती है।

नतीजा यह कि मतवादी लेखकमें निजी व्यक्तित्वका उभरना मुश्किल हो जाता है। उसके उभरनेके लिए यह ज़रूरी है कि व्यक्ति मतवादके वृत्तसे निकलकर जीवनके और इतिहासके यथार्थ और उनकी व्याख्या करनेवाली विचार-सरणियोंको निजी आलोचनात्मक दृष्टिसे देखना-परखना सीखे। जीवनकी विभि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रताके परिचयके लिए यह भी जरूरी है कि व्यक्ति कई-एक बड़े जीवन-द्रष्टाओं और विचारकोंके अनुभव तथा चिन्तनसे लाभ उठाना सीखे।

मतवादी या अनुयायी कभी उस मौलिक द्रष्टाकी समकक्षता प्राप्त नहीं कर सकता, जिसे उसने अपना गुरु स्वीकार किया है—दो कारणोंसे। एक, मौलिक द्रष्टाके सामने इतिहासकी एक खास परिस्थिति थी। उस परिस्थितिमें जीवन, दर्शन, भाषा आदिके खास पहलू उपेक्षित हो रहे थे। मौलिक द्रष्टाने उन पहलुओंको अपनी स्वच्छ-स्वतन्त्र दृष्टिसे देखा और उनपर गौरव किया। दूसरे, जिस अनुपातमें उक्त पहलू अपेक्षित थे, उसी अनुपातमें वह गौरव देनेकी क्रिया विविध और सबल बनी। गौरव देनेके लिए उस द्रष्टाने अभिव्यक्तिकी नयी विधाओंका आविष्कार व उपयोग किया। उस द्रष्टाका अनुयायी अभीतक उन्हीं पहलुओंको देखना चाहता है। वह यह नहीं जानता कि अब वे पहलू उपेक्षित नहीं हैं—और इसीलिए उन्हें गौरव देना उतना जरूरी नहीं रह गया है। एक महत्त्वपूर्ण लेखक या द्रष्टाने उन पहलुओंको सदाके लिए मानवीय चेतनाके केन्द्रमें प्रतिष्ठित कर दिया। दूसरे, अनुयायीको अब अभिव्यक्तिकी उतनी नयी विधाएँ भी प्राप्त नहीं हो सकेंगी, उसमें उपेक्षित यथार्थको व्यक्त करनेके लिए अब उतना उत्साह नहीं हो सकता जितना कि उसके प्रथम प्रतिभाशाली मौलिक द्रष्टामें था। उस द्रष्टाके उत्साह और आलोड़नके अभावमें अनुयायी प्रतिभा उस छटपटाहटका अनुभव नहीं कर सकती जो नये शिल्प और शैलीके आविष्कारकी जरूरी शर्त है। फलतः अनुयायी कभी पर्याप्त व्यक्तित्व व मौलिकतासे सम्पन्न नहीं हो सकेगा।

मैं सार्त्र या दूसरे पूर्ववर्ती लेखकों—विचारकोंका अनुयायी कैसे बन सकता हूँ? उनके सामने इतिहास और जीवनकी जो परिस्थितियाँ रहीं वे अब मेरे सामने नहीं हैं, स्वयं उन लेखकों और विचारकोंने अपनी नयी दृष्टियों-द्वारा उन परिस्थितियोंको बदल दिया। प्रत्येक महापुरुष जटिल सांस्कृतिक इतिहासकी रूपरेखामें थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर देता है। चूँकि इतिहास नये ढंगोंसे लगातार नये मोड़ लेता रहता है इसलिए उसका नियन्त्रण करनेवाले स्थिर नियमोंको खोज निकालना और उन नियमोंकी रोशनीमें सफल भविष्यवाणियाँ करना असम्भव है। इतिहासकी तथाकथित समस्त अवैज्ञानिक व्याख्याएँ वैज्ञानिक हैं। कविता, कथा-साहित्य, शैली आदिके बारेमें आग्रह-भरी भविष्यवाणियाँ वैसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवैज्ञानिक तथा निरर्थक हैं। प्राचीन कालका बड़ेसे बड़ा मस्तिष्क यह भविष्य-वाणी नहीं कर सकता था कि बीसवीं सदीका मनुष्य रॉकेट-जैसे आविष्कार करेगा और जेम्स जॉएसके 'यूलिसीज़'-जैसे उपन्यास लिखेगा।

लेखन और चिन्तनके क्षेत्रमें अनुयायियोंका वर्ग प्रायः 'मीडियॅकर' (मामूली या घटिया) लोगोंका वर्ग होता है। इस वर्गके लेखक कभी 'मास्टरपीस' नहीं लिखते। दलों या आन्दोलनोंसे सम्बद्ध अधिकांश लेखक इसी कोटिके बन जाते हैं। लाभान्वित सिर्फ़ दो-चार नेता होते हैं।

मौलिक द्रष्टाओंसे प्रभाव ग्रहण करनेका एक दूसरा ज़्यादा समझदार लोगों-का तरीक़ा भी है। ऐसे लोग वयःसन्धिमें मतवादी बन जानेकी दुर्घटनासे बच जानेवाले लोग ही हो सकते हैं। इस कोटिके लोग जीवनके प्रश्नोंके सम्बन्धमें एक मौलिक छटपटाहट लेकर उत्पन्न हुए होते हैं। वे पृच्छाशील भी होते हैं। उनकी जिज्ञासा जल्दी तृप्त नहीं होती। बड़ेसे बड़ा मौलिक द्रष्टा उनकी जिज्ञासु बुद्धिको पूर्णतया वशमें कर लेनेमें असमर्थ रहता है। वह बुद्धि अनेक महा-पुरुषोंकी समृद्ध दृष्टियोंका आघात सहकर भी अपने निजी रूपको विलीन नहीं हो जाने देती। वह विभिन्न महती दृष्टियोंको एक-दूसरेके विपक्षमें रखकर तौलती है, और इस प्रक्रिया-द्वारा ज़िन्दगी और इतिहासके यथार्थके प्रति एक नये, निजी गौरवको प्राप्त कर लेती है। इस गौरवको अपने ढंगसे प्रकट करने-की कोशिशमें वह नयी शिल्प-विधाओंका निर्माण करती है।

इस प्रकार बुद्धि या चेतना प्रत्येक महापुरुषकी वाणीको एक ऐसे आघातके रूपमें ग्रहण करती है जो स्वयं उसमें नयी सृजनात्मक बेचैनीकी उथल-पुथल उत्पन्न कर सके।

●●

मानवीय गौरवकी व्यापक प्रतिष्ठा करनेकी प्रक्रियामें हम यह पहचान सकेंगे कि यदि कहीं किसी भी मनुष्यके गौरवकी क्षति होती है तो वह मनुष्य मात्रके गौरवकी क्षति है। लेखकके इस विशिष्ट दायित्वमें राष्ट्र कोई निरपेक्ष इकाई नहीं है, राष्ट्र भी व्यापक मानव-नियतिके प्रसंगमें सार्थकता पाता है।

— मानव मूल्य और साहित्य : डॉ० धर्मवीर भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं लेखक कैसे बना ?

'ज्ञानपीठ पत्रिका'की ओरसे मुझसे यह प्रश्न पूछा गया है और उत्तरमें ५०० शब्द माँगे हैं। असलमें उत्तर तो एक ही शब्द हो सकता है (और शेष ४९९ शब्द तो टीका मात्र हैं)। वह शब्द है—

'ग़लतीसे'

इसका अर्थ यह हुआ कि बनना चाहिए था मुझे चित्रकार या पत्रकार या प्रचारक या दुभाषिया या कोशकार या····ये अमूर्त पेशे पसन्द न हों तो कमसे कम पहलवान या रसोइया ! पर इन सब कामोंमें सफलता न पाकर मैं एक असफल 'लेखक' विशेषणसे विभूषित हो गया, इसमें हिन्दीकी उदारता, ज़र्रा-नवाज़ी और सहज-विश्वासवाली वृत्तिको अधिक श्रेय है, मेरे परिश्रमको बहुत कम। हिन्दी भाषाकी कृपा हुई, मैं लेखक बना। उस भाषाका ऋणी हूँ।

मेरे लेखे मेरे लेखक बननेका कारण है मेरी आत्म-निर्वासनकी वृत्ति।

पहला द्रोह मैंने मातृभाषासे किया। जन्मना मराठी-भाषी, उसीमें लिखते रहना चाहिए था। यह क्या सूझा कि और भाषाएँ सीखो और फिर उसमें महारत भी हासिल कर लो। अब झींखो।

दूसरा द्रोह जन्म-प्रदेशसे। मध्यप्रदेशमें माँ जबलपुरकी, मेरा जन्म-नगर ग्वालियर, वह उनचास वर्षके जीवनमें मेरी सबोधावस्थामें शायद सन् '३८ में एक सप्ताह जबलपुर गया और ग्वालियरमें कुल मिलाकर दो-चार महीने। उज्जैन ग्यारह वर्ष पढ़ाया, पर सन् '४८ में जो छोड़ दिया तो अट्ठारह वर्षोंमें मैं कुल जमा चार दिन उधर गया। अफ़ीमकी उपज उस प्रदेशमें ज़्यादा है, तो क्या ?

तीसरा द्रोह जाति-धर्मसे। सन् '४० में ही सेवाग्राममें मैंने शिखासूत्र छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया और चातुर्वर्ण्यपर आश्रित धर्म मेरा धर्म नहीं है यह मेरी मान्यता रही। विदेशमें मैं अपनेको बौद्ध कहता था, यद्यपि मैं प्रव्रजित नहीं हूँ। 'धर्मातीत, धर्मनिरपेक्ष, अधर्मी, तेरी क्षय हो !' आत्म-शाप।

यों जो 'हूँ', उससे अलग 'होता' रहा। जैसे वृक्ष अपनी छाल बदलता है। कई मैत्रियाँ, कई प्रिय आदर्श-मतावलियाँ जीवनमें आती रहीं। जाती रहीं। नीत्शे, गान्धी, मार्क्स····ये सब घाट रहे—अपनी नाव कहीं बँधी नहीं। कोई एक 'गुरु' खूँटा नहीं बन सका। और जब कोई बाट बतानेवाला नहीं रहा तो बाक़ी सब तो 'विकट जमघाट' है ही।

इसीलिए मेरे रिश्तेदार और मेरे पुराने मित्र (जिनमें-से अधिकांश अब मेरे अमित्र हैं) मुझसे बेहद अप्रसन्न हैं। मैं किसीके लिए कभी कुछ नहीं कर पाया। चाहकर भी। मेरा मन परिग्रहोंमें नही जमा। छह विभिन्न पदोंपर मैं अबतक काम करता रहा—एक जगह जमकर नौकरी करता, तो अबतक पेन्शन लेकर, जुगाली करता। एकाध अभिनन्दन-ग्रन्थ छप जाता !

पर कोई कीड़ा भीतर है जो चुप नहीं रहने देता। पहले मैं कविता लिखता था, फिर कहानी, फिर रेखाचित्र, फिर एकांकी, फिर आलोचना, फिर हास्य-व्यंग्यके निबन्ध····यही सिलसिला चला—शब्द-निर्माण, दार्शनिक शोध, साहित्येतिहास, बालसाहित्य, यात्रावर्णन, लघु-उपन्यास इत्यादि इत्यादि। कई तरह-की शैलियाँ और विधाएँ अपने लिए नाकाफ़ी पाता रहा। अब लगता है सिर्फ़ 'पत्र' लिखनेके लायक़ बचा हूँ।

आत्म-निर्वासनका बड़ा प्रमाण यह है कि मैंने गये तीस वर्षोंमें विपुल मात्रामें लिखा। पर उसमें-से बहुत कम समेटकर, बचाकर रख पाया। संभाल-की सहार अपने राममें नहीं। लिखा सो छपने भेज दिया। बादमें वह रद्दी काग़ज़ बनकर बहुत जल्द कूड़ा ही बनेगा, यह विश्वास परम है। इसलिए यह मिथ्याभिमान मनमें कभी नहीं जगा कि मैं लिखनेसे समाजक्रान्ति कर रहा हूँ। या मेरे शब्द जगन्नियन्ता हैं या अनन्तकाल तक वे 'रस'-वर्षा करेंगे या औरोंके लिए मार्गदर्शक बनेंगे। मेरे मनमें गहरी शंका है कि जिस लेखकके शब्द उसके अपने लिए मार्गदर्शक नहीं बनते, वे औरोंका क्या करेंगे ? शायद शब्दकी नियति आज यही है : अपना और औरोंका क्षणिक मनोरंजन ! 'हँसता है सारा जहान पर दिल [illegible] भीतर रोता है !'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आत्म-निर्वासनकी प्रक्रिया अब भी जारी है। लेखन इसमें मेरा सहायक है। उसी हद तक मैं 'लेखक' हूँ।

मैं लेखकसे अधिक इनसान बनना चाहता हूँ। और ऐसे हैवानियतसे भरे आलममें, ग़ालिब साहब फ़रमा गये हैं, कि वह काम आसान नहीं है। मनुष्यका कोई पक्ष मेरे लिए अग्राह्य या त्याज्य नहीं। मैं समग्र सत्यको पाना चाहता हूँ, और पग-पगपर मुझे अप्रामाणिक और एकांगी और एकपक्षी खण्डित सत्य मिलते हैं। वे छुटते जाते हैं। मैं पग-पगपर आत्म-निर्वासित अनुभव करता हूँ—मेरे मूल देश-परिवेश, रूप-नाम सबसे निष्कासित। किस विराट्के घरमें मैं यह शब्दोंकी झाड़ू फेर रहा हूँ। मेरे सच्चे शस्त्र किसी शमी वृक्षकी खोखलमें छिपे पड़े हैं क्या ?

····चारों ओर कितनी उदासीनता है। जैसे अभी-अभी 'आत्म-क्लियर' हुआ हो, पर 'ब्लैक-आउट' सब ओर है। सूचीभेद्य तमिस्रा। अमावस।

बड़ी घुटन है। भीड़ और एकान्त एक साथ, आत्म-शोध और आत्म-निषेध एक साथ। इसी अनुभूतिमें-से मैं लेखक बना····शब्दकी पूँजी दाँवपर लगानेवाला, अस्तित्वका दिवालिया जुआरी : एशो एशो लोक्खी !···दीपमालिके···

अभी कई मोर्चे बाक़ी हैं। दममें दम रहा तो और भी लड़ेंगे। बचेंगे तो लड़ेंगे !

— डॉ० प्रभाकर माचवे

● ●

शैतान सदा इनसानको नीचा दिखानेके प्रयत्नमें रहा है। उससे डरकर भागनेमें सुरक्षा कहाँ ? और भागते हम ही नहीं, जहाँ भागकर जाते हैं वहाँकी जनताको भी भागनेकी प्रेरणा देते हैं। इस तरह तो भयकी एक 'चेन' बन जायेगी। इसलिए जोखिममें इनसानको सदा आत्माकी आवाज़ सुनकर डटे रहना चाहिए।

—घाटियाँ गूँजती हैं : डॉ० शिवप्रसाद सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तार सप्तक'
के
सन्दर्भ में

कुछ भ्रमों और तथ्योंका
स्पष्टीकरण

नेमिचन्द्र जैन

दुर्भाग्यवश 'तार सप्तक' एक बड़े भ्रमका शिकार हुआ। साधारणतः यही माना और समझा जाता है कि 'तार सप्तक' किसी सुचिन्तित काव्य-आन्दोलनका अग्रदल था जिसके झण्डाबरदार और नेता उसके सम्पादक महोदय थे। फलस्वरूप सम्पादक महोदयसे सम्बन्धित विभिन्न साहित्यिक और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहोंकी तीखी आलोचनाका बेशुमार बोझ भी 'तार सप्तक' के कवियों और उनके निमित्तसे मोड़ लेती हुई नयी काव्य-चेतनाको उठाना पड़ा। तथाकथित 'प्रयोगवाद' तथा समस्त नवीन काव्यकी सारी परवर्ती आलोचना मूलतः उसके सम्पादकके नेतृत्वकी, साहित्यकार और कवि 'अज्ञेय'को आलोचना होती रही, और इन कवियोंका अपना व्यक्तित्व उपेक्षित भी हुआ और ग़लत भी समझा गया। इसने किसी हद तक उन कवियोंके भावी विकासको, और हिन्दी काव्यकी परवर्ती दिशा तथा गतिको, अहितकर रूपमें प्रभावित किया और मूल्यांकनके मानदण्डोंमें भी विकृति उत्पन्न की।

इस भ्रमका निराकरण शायद इस अवसरपर समुचित हो। वास्तवमें, 'तार सप्तक' के सम्पादक महोदयका हाथ उसके प्रकाशनमें चाहे जितना रहा हो, पर उसकी परिकल्पना उनकी नहीं थी और न उसमें संग्रहीत कवि ही मूलतः उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसन्दके कारण एकत्र हुए थे। बल्कि सम्पादक महोदय स्वयं ही उस संग्रहमें शायद इस कारण ही अधिक थे कि वह उसके प्रकाशनमें प्रमुख रूपमें सहायक हो रहे थे। साथ ही संग्रहीत कवि स्वयं भी किसी सामान्य साहित्यिक या अन्य मान्यताओंके कारण नहीं, बल्कि नितान्त व्यक्तिगत कारणोंसे, विशुद्ध परिस्थिति और संयोगवश, एक साथ थे। 'तार सप्तक' किसी भी रूप या अर्थमें किसी साहित्यिक आन्दोलन या प्रवृत्तिसे प्रेरित न था। उसके कवि 'प्रयोगवादी' नहीं थे, शायद उस अर्थमें भी नहीं जो सम्पादकने पहले अपनी भूमिकामें उनपर आरोपित किया और जिसे फिर बादमें सैद्धान्तिक आधार दे दिया गया। उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों तत्कालीन सामाजिक और साहित्यिक परिस्थितियोंकी स्वाभाविक और लगभग अनिवार्य परिणति थीं।

यहाँतक भी शायद स्थितिमें कहीं कोई झमेला नहीं है, यद्यपि 'तार सप्तक' की सम्पादकीय भूमिका उसमें संग्रहीत कवियोंकी साहित्यिक स्थितिके लिए बहुत अच्छी नहीं सिद्ध हो सकी। किन्तु स्वाधीनताके बाद जब 'तार सप्तक' की ओर पाठकों-आलोचकोंका ध्यान आकर्षित हुआ और उसकी सम्भावनाओंको पहचान कर सम्पादक महोदयने वैसे ही और भी संग्रह निकालनेकी योजना बनायी तो स्थितिने एक नया ही मोड़ ले लिया। 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के प्रकाशनसे आलोचकोंका यह भ्रम पूरी तरह बाक़ायदा प्रतिष्ठित हो गया कि सम्पादक महोदय सचमुच 'प्रयोगवाद' नामक किसी नये काव्य-आन्दोलनके प्रवर्तक हैं।

'तार सप्तक' की सम्पादकीय भूमिका कुछ-एक सैद्धान्तिक उक्तियोंके बावजूद मूलतः उन सात कवियोंके एकत्र होनेके कारणोंका विवरण मात्र थी। पर बादके दोनों 'सप्तकों' की भूमिकाओंमें नियमित सिद्धान्त-विवेचन हुआ और उन्होंने प्रायः घोषणा-पत्रोंका रूप धारण कर लिया। 'दूसरा सप्तक' में सम्पादक महोदयने 'तार सप्तक' के सभी कवियोंकी ओरसे आलोचकोंको जवाब देते हुए कहा :

"तो 'तार सप्तक' के कवि ऐसे कवि थे, जिनके बारेमें कमसे कम सम्पादककी यह धारणा थी कि उनमें 'कुछ' है और वे पाठकके सामने लाये जानेके पात्र हैं....।" 'तीसरा सप्तक' की भूमिकामें "सप्तकोंकी योजना" के "आधारभूत विश्वास" की चर्चाके साथ उन्होंने कहा कि "'तार सप्तक' एक नयी प्रवृत्तिका पैरवीकार माँगता था, इससे अधिक और कुछ नहीं।" 'तार सप्तक' के कवियोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्र करने और 'पात्र' समझकर उन्हें पाठकोंके सामने लानेका यह मिथ्या दावा दम्भ न भी हो, पर इन कवियोंके साथ सरासर अन्याय तो है ही। पर यह बात उस समय इसलिए विश्वसनीय लगी कि दूसरा और तीसरा 'सप्तक' सचमुच सम्पूर्णतः सम्पादकके प्रयत्न, संयोजन और उनकी संगठनात्मक सामर्थ्य और पहल-के फल थे। यह बात तब स्पष्ट न हो सकी कि जहाँ मूलतः 'तार सप्तक' के कवियोंने अपना सम्पादक, या कि कहें प्रकाशक, चुना था, वहाँ बादके दोनों 'सप्तकों' के कवियोंको सम्पादकने चुना था। इन दोनों संग्रहोंमें कुछ-एक सर्वथा स्वतन्त्र, समर्थ और पूर्व-विकसित कवि-व्यक्तित्व सम्मिलित होनेके बावजूद, इन संग्रहोंके पीछे मूलतः उनके सम्पादककी साहित्य और काव्य-सम्बन्धी मान्यताओंकी प्रेरणा और अभिव्यक्ति थी। इन्होंने न केवल उपलब्ध नवीन काव्यका प्रकाशन किया बल्कि समकालीन काव्यके रूपको एक विशेष दिशामें मोड़ा। उनके कारण और परिणाम-स्वरूप बहुत-से तरुण कवि जाने-अनजाने एक सामान्य किन्तु अस्पष्ट और अस्फुट काव्य-धारणाके इर्द-गिर्द एकत्र होकर अन्य काव्याभिव्यक्तियोंका विरोध अथवा उनसे अपनी भिन्नता प्रकट करनेकी दिशामें प्रवृत्त हुए। सन् १९५० के बादके नवीन हिन्दी काव्यके एक विशेष दिशामें मुड़कर गुटबन्दी और संकीर्णतामें पड़ जानेमें 'सप्तकों' के प्रकाशनका भी बहुत-कुछ हाथ है। सन् १९५४–५५ के आसपास तो तरुण कवियोंके बीच चर्चाका सबसे बड़ा विषय ही यह हो गया था कि कौन किस 'सप्तक' में लिया जायेगा, अथवा नहीं ही लिया जायेगा। कवि-गण अपनी और दूसरोंकी आधुनिकता, सार्थकता और सफलता, कवि होना या न होना, सभी कुछ 'सप्तकों' में शामिल होने-न-होनेसे आँकने लगे थे। यह परिस्थिति काव्यगत मूल्यों और रुचियोंमें एक विचित्र प्रकारकी भ्रष्टता और संकीर्णताकी शुरुआत थी। 'सप्तक' एक बड़े अवांछनीय प्रकारके साहित्यिक संरक्षण (पैट्रनेज) के साधन और प्रतीक बन रहे थे।

दुर्भाग्यवश 'तार सप्तक' भी इस दुश्चक्रकी पहली कड़ी जैसा जान पड़ता था और निरन्तर पड़ता रहा है। उसके नये संस्करणके प्रकाशनपर यह कहना सर्वथा अप्रासंगिक नहीं है कि वास्तविकता यह नहीं थी। 'तार सप्तक'की स्थिति बादके दोनों 'सप्तकों'से मौलिक रूपमें भिन्न थी और वह किसी आन्दोलन या साहित्यिक संरक्षण वृत्तिकी उपज नहीं था। 'तार सप्तक'के कवि न तो स्वयं ही किसी भी रूपमें किसी भी अंश तक ऐसी किसी प्रवृत्तिसे परिचालित हुए थे न वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी प्रकारसे सम्पादकके ही वैचारिक, सैद्धान्तिक अथवा संगठनात्मक प्रयत्नों-के अंग थे, चाहे फिर व्यक्तिगत स्तरपर उनसे कवियोंकी कितनी ही घनिष्ठता क्यों न रही हो। महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं कि 'तार सप्तक'के प्रायः सभी कवि एक दूसरोंके कुत्तों और मित्रोंपर हँसते थे बल्कि यह कि उनका कोई दल नहीं था, कोई गुट नहीं था—और आज भी नहीं है। उनकी उपलब्धि चाहे जो हो, पर वे स्वतन्त्र रूपमें ही अपने काव्यका पथ खोजते और बनाते रहे हैं।

यह सब कहना आज इसलिए और भी आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण हो गया है क्योंकि हिन्दीमें संरक्षण, विशेषकर साहित्यिक संरक्षणका बाज़ार बड़ा गरम है—पुरानी पीढ़ीमें भी और नयीमें भी। मेरा विश्वास है कि यह हमारे साहित्यिक जीवनके लिए शुभ और स्वस्थ नहीं है। यह न केवल नितान्त व्यक्तिगत स्तरकी दलबन्दी और गुटबाज़ीको उकसाता है बल्कि उसके कारण तरुण रचनाकार प्रतिभावान् होकर भी जीवनको सीधे देखने, भोगने और उस अनुभूतिको अपने प्रति निर्मम ईमानदारीसे वाणी देनेके बजाय किसी-न-किसी संरक्षणकी तलाश करने लगता है—राजनीतिक दलकी, साहित्यिक नेताओंकी, अथवा प्रकाशकीय कृपाकी। यह स्थिति रचनाकारको कभी वयस्क नहीं होने देती। मैं मानता हूँ कि कविको अपने सिवाय किसीका प्रवक्ता नहीं होना चाहिए। प्रकाशनकी, प्रशंसा-की, अथवा अन्य किसी भी प्रकारकी सुविधाके लिए उसे अपनी वफ़ादारीका सौदा नहीं करना चाहिए। केवल अपने प्रति सच्चा रहकर ही सम्भव है कि किसी क्षणमें वह किसी बृहत्तर सत्यसे साक्षात्कार करके उसका प्रवक्ता भी बन सके। अन्यथा प्रचार और विज्ञापनकी प्रधानताके इस युगमें सम्भावना इसी बातकी अधिक है कि वह किन्हीं-न-किन्हीं प्रकट या अप्रकट शक्तियों या व्यक्तियोंका साधन मात्र बना रह जाये और दूसरोंकी जूठनको ही मौलिक अनुभूति समझकर और भाँति-भाँतिसे सजा-सँवारकर पेश करता रहे। व्यक्तित्वके स्तरपर कविता ही नहीं, समस्त सर्जनात्मक कार्यका यह एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसकी उपेक्षा घातक सिद्ध हो सकती है।

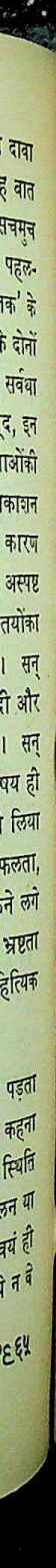

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वेशियाई काव्य-जगत्

कोरिया चीन और हिन्देशियाके
काव्यका एक विहंगावलोकन

महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

अपनी भाषागत जटिलताओंके कारण पूर्वेशियाई देशोंका साहित्य संसारमें प्रायः अपरिचित ही रहा है। अब यूनेस्को, एशिया सोसाइटी (न्यूयॉर्क) तथा पी० ई० एन० आदि संस्थाओंके उद्योगसे इनका कुछ चुना हुआ साहित्य अँगरेज़ी अनुवादके रूपमें हमारे सामने आने लगा है। 'पत्रिका' के गत एक अंक में हम जापानी साहित्यकी चर्चा कर चुके हैं। अब उसके आस-पासके कुछ देशोंके साहित्य, विशेषतः कविता, को देखेंगे। मेरे सामने छह काव्य-संकलन हैं जिनका रचना-देश कोरियासे हिन्देशिया तक विस्तृत है।

कोरियाके विषयमें हम बहुत भ्रमित हैं और इसे जापान और चीन अथवा इनमें-से किसी एकका सांस्कृतिक विस्तार मात्र समझते हैं। परन्तु ऐसा है नहीं। मेरे मित्र प्रो० युंग जून (सिओलके एक विश्वविद्यालयमें अँगरेज़ीके प्राध्यापक) ने मेरा यह भ्रम दूर करनेके लिए अपने देशकी संस्कृतिके विविध पक्षोंपर कई सचित्र ग्रन्थ भेजे जिनमें-से एक कोरियन पोइट्स एसोसियेशन-द्वारा प्रकाशित 'कोरियन वर्सेज़' नामक काव्य-संकलन भी है। इसमें लगभग ४५ कवियोंकी चुनी हुई रचनाएँ हैं, और सभी कवि इसी शताब्दीके हैं। इन रचनाओंमें कोरियाई कवितामें आधुनिकताका विकास देखा जा सकता है। अन्तमें कुछ प्राचीन कोरियाई गीत भी हैं। सभी अनुवाद कोरियनों-द्वारा ही किये गये हैं।

कोरियाई कविताका दूसरा संग्रह यूनेस्कोके अधीन जॉन डे कम्पनी न्यूयॉर्क-द्वारा प्रकाशित है। इसका नाम है 'ऐन्थॉलॅजी ऑव कोरियन पोएट्री' तथा मूल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ५ डॉलर (लगभग ३० रुपये)। यह संग्रह बहुत विस्तृत है तथा इसमें बिल्कुल आरम्भ (५७ ई० पू०) से लेकर अबतकके कवियोंकी रचनाएँ हैं। लगभग १०० कवि १९वीं शताब्दी तकके हैं और १५ बीसवींके। आरम्भमें लम्बी भूमिका है जिसमें कोरियाई कविताके विकासका परिचय दिया गया है। इन कविताओंमें प्रकृतिके सभी रूप अंकित हैं परन्तु साथ ही ठोस भौतिकता भी है जिससे यहाँके लोगोंकी जीवनप्रियतापर प्रकाश पड़ता है। अनुवाद मोटर हाम्यू ली ने किया है जो एक अच्छे विद्वान् हैं। आपने जर्मन भाषामें भी कोरियाई कविताका एक संकलन प्रकाशित किया है।

अब चीनको देखें। आधुनिक चीनमें कविताका भले ही सर्वनाश हो गया हो, यद्यपि उसके लेखकोंमें माओत्से तुंग भी हैं, परन्तु प्राचीन चीनकी कविता निस्सन्देह उत्तम थी। ऐसा ही एक अत्यन्त सुरुचिपूर्ण संकलन यूनेस्कोकी योजनाके अधीन अबेलार्द शूमाँ, लन्दन, न्यूयॉर्क, टोरण्टो-द्वारा 'पोएम्स ऑव शीलीच्यूड' के नामसे प्रकाशित हुआ है जिसका मूल्य है २५ शिलिंग (लगभग २० रुपये)। स्वतः यूनेस्कोने ही इसे 'सर्वोत्तम चीनी कविताका संकलन' घोषित किया है जो सच भी प्रतीत होता है। इसमें केवल ६ कवि और उनकी १०० के लगभग कविताएँ हैं। कवि तीसरी शताब्दीसे दसवीं शताब्दी तकके हैं जो चीनी संस्कृतिका मध्य युग कहा जा सकता है। इस प्रकार इनका काल बहुत भिन्न होते हुए भी ये सब एक ही चेतनाको व्यक्त करते प्रतीत होते हैं जो बड़ी गहरी और मूलतः एक होते हुए भी अपनी अभिव्यक्तियोंमें अत्यन्त भिन्न भी है। चीनी कवि सदा ही सरकारी कर्मचारी या राजनीतिज्ञ होते थे। राज्य परिवर्तनके कारण इन्हें निर्वासन भी भुगतना पड़ता था। जुआन ची शराबके सहारे ज़िन्दा रहा, साओ चाओ एक विद्रोहमें मारा गया, ली यू को सम्राट् होने पर भी ज़हर पीना पड़ा। परन्तु इनकी रचनाओंमें हिंसा नहीं, गहरी शान्ति ही व्यक्त होती है। संघर्षोंमें जनमी होने के कारण यह शान्ति बड़ी अनोखी और स्वादिष्ट है। जेरोम चेन और मिकाएल बुलकने इनका अनुवाद किया है।

दूसरा चीनी संकलन है सू तुंग-यो जिसमें इसी नामके कविकी चुनी हुई रचनाएँ हैं। इसे भी यूनेस्कोकी योजनाके अधीन कोलम्बिया युनिवर्सिटी प्रेस न्यूयॉर्कने ३.७५ डॉलर (लगभग १८ रुपये) मूल्यपर प्रकाशित किया है। यह सुंग वंशका सर्वोत्तम कवि था और ११वीं शताब्दीमें हुआ था। सुंग युगकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीवन-दृष्टि तथा मूल्य आधुनिक युगके समान ही थे। इसलिए उस समयकी कविता भी बहुत-कुछ आधुनिक ही प्रतीत होती है। प्रस्तुत कविकी दो-चार रचनाओंमें तो 'आधुनिक बोध' भी दिखाई देता है। सू तुंग-यो राज्यका एक अधिकारी था और उसे कई बार निर्वासन भोगना पड़ा। वह अच्छा चित्रकार भी था। उसकी रचनाओंमें कॅन्फ़्यूशियस, बुद्ध और ताओ तीनोंके दर्शनका योग मिलता है। उसने सभी चीनी छन्दोंका प्रयोग किया है। इस संकलनमें उसकी ८६ कविताएँ हैं। अनुवाद बर्टन वॉटसनने किया है जो कोलम्बिया विश्वविद्यालयमें चीनी पढ़ाते हैं।

अन्तमें हिन्देशिया—यहाँकी आधुनिक कविताका एक बहुत सुन्दर संकलन 'ऐन्थॉलॅजी ऑव मॉडर्न इण्डोनेशियन पोएट्री'के नामसे युनिवर्सिटी ऑव कैलीफ़ोर्निया प्रेस बर्क्ले तथा लॉस एंजिलीसने ४ डॉलर (लगभग २० रुपये) मूल्य पर प्रकाशित किया है। यह योजना न्यूयॉर्ककी एशिया सोसाइटी-द्वारा क्रियान्वित की गयी थी। इसमें एक परिचयात्मक भूमिका है और १५ कवियोंकी ९० के लगभग रचनाएँ। कुछ कवियोंकी केवल एक रचना है और कुछ की २० या ज़्यादा भी। अमीर हमज़ा, चयरिल अनवर, सितोर सितुमरंग तथा डब्लू० एस० रेन्द्रा प्रमुख कवि हैं। इन सभीमें परम्परासे आधुनिकताकी ओर बढ़नेका प्रयास दृष्टिगोचर होता है परन्तु चयरिल अनवर भाव और अभिव्यक्तिमें औरोंसे बढ़कर है। यह १९४९ में केवल २७ वर्षकी अवस्थामें मर गया परन्तु इसने एक नयी धारा प्रवर्तित कर दी जो राजनीतिक दृष्टिसे क्रान्तिकारी तथा साहित्यिक दृष्टिसे अस्तित्ववादी थी। चयरिलकी कविताओंका एक अलग संग्रह भी प्रकाशित हुआ है जिसके प्रकाशक हैं न्यूयॉर्कके न्यू डायरेक्शन्स। इन दोनोंके अनुवाद तथा सम्पादनकार्य बर्टन राफ़ेलने किया है।

●●

देशकी स्वतन्त्रता, उसकी सुख-शान्ति, प्रजातन्त्रीय परम्परा, उसकी सुरक्षा और संगठित एकता—प्रजाजनोंकी शुद्ध भावनापर निर्भर है।

— एशियाकी राजनीति : परदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा कश्मीरी साहित्य

रमणीक कश्मीरकी घाटियाँ आज धुएँ और
बारूदसे भरकर घुट रही हैं; और
कश्मीरी साहित्य ?

सुबोध शास्त्री

आधुनिक भारतीय भाषाओंमें कश्मीरी भी एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। यह भाषा जम्मू तथा कश्मीर राज्यकी कश्मीर घाटी, रामबन, किश्तवाड़ आदिके लगभग तीस लाख निवासियों-द्वारा बोली जाती है। कहना अप्रासंगिक न होगा कि अनेक भाषा-वैज्ञानिक विवादोंके बावजूद कश्मीरी भाषाका स्वतन्त्र अस्तित्व सदियों पुराना है। कल्हणकी 'राजतरंगिणी' में तो जन-भाषाके रूपमें इसका उल्लेख किया ही गया है, महाकवि बिल्हण तथा अन्य संस्कृत कवियोंकी कृतियोंमें भी इस भाषाका उल्लेख और इसके शब्दोंका प्रयोग भी कहीं-कहीं हुआ है।

वास्तवमें तेरहवीं शतीसे पूर्वकी कश्मीरी भाषाकी कोई भी साहित्यिक कृति उपलब्ध नहीं है। तेरहवीं शतीकी एक कृति 'महानय-प्रकाश' है। किन्तु इस कृतिकी भाषा वर्तमान कश्मीरीसे मेल नहीं खाती। विद्वानोंका मत है कि कश्मीरी भाषाका आदि रूप 'महानय-प्रकाश' का अपभ्रंश है, जो तत्सामयिक सभी प्राकृतोंसे निश्चय ही भिन्न है।

आधुनिक कश्मीरी भाषाका आदि रूप विद्वान् चौदहवीं शतीकी कश्मीरी भाषाको मानते हैं। संसारकी तमाम भाषाओंकी तरह कश्मीरीका यह आदि साहित्य भी पद्यमें ही मिलता है। और इतना ही नहीं एक प्रीतिकर साम्य इसका हिन्दी साहित्यसे भी है। हिन्दीकी ही भाँति कश्मीरीका आदि काव्य भी दार्श-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निक रहस्यवाद, समन्वय-भावना और धार्मिक मानवतावादपर आधारित है। इतिहास साक्षी है कि तेरहवीं शती कश्मीरके इतिहासका संक्रान्ति काल रहा। हिन्दू शासकोंका शासन समाप्त हो चुका था, और आधिपत्य मुसलमानोंका था। सूफ़ियों और सैयदोंके रूपमें इसलामके प्रचारक धर्म-प्रचार कर रहे थे। कट्टरपन्थी ब्राह्मण अपनी मान्यताओंका दायरा संकुचित कर रहे थे। स्थिति विषम थी; और तब ऐसी परिस्थितिमें सामंजस्य उत्पन्न करनेके लिए वह कुछ करनेकी आवश्यकता थी जो सबके लिए ग्राह्य तो हो ही, कश्मीरकी गौरवपूर्ण परम्पराको भी अक्षुण्ण बनाये रहे। कहना न होगा कि कश्मीरी साहित्यके आदिकालका मुख्य स्वर भी यही धारणा बनी।

कश्मीरी साहित्यके इतिहासको हम चार भागोंमें बाँटकर उसकी उपलब्धियोंसे सहज ही अवगत हो सकते हैं: १. आदि काल – १३वीं से १५वीं शती तक; २. पूर्व मध्यकाल – १६वीं से १८वीं शती तक; ३. उत्तर मध्यकाल – १९वीं शती; और ४. आधुनिक काल – २०वीं शतीके प्रारम्भसे अद्यतन।

सर्वप्रथम हम आदिकालको लें। इस कालका प्रतिनिधित्व दो सन्त कवि लल्लेश्वरी और शेख़ नूरुद्दीन वली करते हैं। आज भी इन दोनों सन्त कवियोंकी रचनाओंको कश्मीर घाटीकी हिन्दू और मुसलमान जनता समान रूपसे आदर और स्नेह देती है और इन्हें ललमाता और नुन्दऋषि कहती है। ललमाताके बोल 'बाख' और नुन्दऋषिके वचन 'ऊख' कहे जाते हैं। ये दोनों ही दार्शनिक कवि थे। कश्मीरीके आदिकालका साहित्य अधिकांश कालके गालमें समा चुका है। उस समयकी अन्य रचनाओंके सम्बन्धमें इतिहाससे जो जानकारी मिलती है अब केवल उसीसे सन्तोष किया जा सकता है। उस कालकी दो और प्रसिद्ध कृतियाँ हैं—जिनका उल्लेख इतिहासमें मिलता है—'जैन विलास' और 'जैन चरित'। सुलतान जैन-उल-आबदीनके दरबारी कवियों–सोमभट्ट और योधभट्ट द्वारा रचित ये कृतियाँ कश्मीरी साहित्यकी निधि हैं।

कश्मीरी साहित्यके इतिहासमें पूर्व मध्यकाल, जिसे गीत-काव्य-काल भी कहा जाता है, वह युग है जब कश्मीर मुग़ल साम्राज्यमें सम्मिलित हुआ। इस कालको गीत-काव्य-काल कहनेके पीछे एक तथ्य है। इस युगका काव्य 'लोल' काव्य कहा जाता है। 'लोल' शब्द कश्मीरीमें प्रीति, भक्ति, स्नेह, प्रणय, वात्सल्य और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औत्सुक्यका पर्याय है, किन्तु अनुवादमें कोई एक पर्याय पूर्णतः इसके अर्थको नहीं व्यंजित कर सकता। हिन्दीकी तुलनामें इसे रीतिकालीन काव्यसे जोड़ा जा सकता है। हम जिस विरह-मिलन, स्नेह-प्यार और दुःख-सुखका जीवन जीते हैं या जी चुके हैं, उन्हीं अनुभूतियोंको इस 'लोल' काव्यमें अभिव्यक्ति दी गयी है। कश्मीरकी रंगीन घाटीमें रचा गया इस प्रकारका काव्य कितना प्रभावोत्पादक हो सकता है—यह बताना अप्रासंगिक होगा। इस कालके कश्मीरी काव्यमें हब्बा खातून और अरजीमालकी रचनाएँ आज भी कश्मीरी जन-मनको द्रवित और भावविभोर कर देती हैं। हब्बा खातूनके वेदना-भरे गीत तो आधुनिक कश्मीरी काव्यके आधारशिला-जैसे बन गये। कहना न होगा कि इस कालके कवियोंमें जिस महत्त्वपूर्ण ढंगसे इन दोनों कवियोंका उल्लेख किया गया है, इतिहास अन्य रचयिताओंका उल्लेख करनेके नामपर मौन है।

उत्तर मध्यकालका कश्मीरी साहित्य, या कहें तो काव्य, स्पष्ट रूपसे दो पाटोंमें विभाजित हुआ दीखता है—एक है भक्ति और 'नातिया कलाम' का काव्य और दूसरा है तसव्वुफ़ तथा प्रेमाख्यानक (मसनवी) काव्य। भक्ति और नातिया काव्यके प्रतिनिधि कवियोंमें उल्लेखनीय हैं परमानन्द मट्टन, कृष्ण राज़दान, वनपूह, मीर सनाउल्लाह, अब्दुल अहद, 'नादिम'। प्रेमाख्यानक काव्यके रचयिताओंमें प्रमुख हैं महमूद गामी, मक़बूल शाह, वलीउल्लाह मत्तू, प्रकाशराम और लक्ष्मणजू। इन कवियोंकी चर्चित और ऐतिहासिक महत्त्वकी कृतियोंमें उल्लेखनीय हैं—'सुदामा चरित', 'शिवपरिणय', 'दीन-क्रन्दन' : परमानन्द मट्टन; 'शिवलग्न' और 'भक्ति लीलाएँ' : कृष्ण राज़दान; 'पैग़म्बर इसलामकी प्रशस्तियाँ, : मीर सनाउल्लाह; 'यूसुफ़-जुलेखा', 'लैला मजनूँ', 'शीरीं-फ़रहाद' : महमूद गामी; कश्मीरी लोककथापर आधारित काव्य 'हीमाल नागराय' : वलीउल्लाह मत्तू; 'गुलरेज़', 'परीनामा,' 'ग्रीसनामा' : मक़बूल शाह।

कहना न होगा कि ये कृतियाँ कश्मीरी साहित्यकी बड़ी उपलब्धि जानी-मानी जाती हैं।

बीसवीं शतीका प्रारम्भ अर्थात् कश्मीरी साहित्यके आधुनिक कालकी प्रारम्भ-रेखा। इस युगके प्रारम्भ होते समय तक उत्तर मध्यकालके भी कुछ प्रसिद्ध कवि रचना-क्रियामें संलग्न थे किन्तु कश्मीरी साहित्यमें आधुनिक-भावचेतना कवि ग़ुलाम अहमद 'महजूर' की रचनाओंसे आयी। महजूर पहले कवि रहे जिन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीरी कविताको तसव्वुफ़के भटकावोंसे अलग कर स्वस्थ यथार्थ भूमिपर लाने की कोशिशें कीं। यह वह समय था जब समूचे देशके साथ-साथ कश्मीर भी राजनीतिक संघर्षोंके बीचसे गुज़र रहा था। कश्मीर घाटी भी उन तमाम यातनाओंको सहते हुए अपनी स्वाधीनताके लिए छटपटा रही थी। 'महजूर'का कविहृदय वह सब देखकर मर्माहत हो गया। उन्होंने अपना साराका सारा अनुभूत सत्य ग़ज़लों और नज़्मोंके माध्यमसे व्यक्त किया। कहना न होगा कि 'महजूर' ने कश्मीरी कविताको सूफ़ी कवियोंके गुहान्धकारसे निकालकर कश्मीरकी रंगारंग धरतीको साँसके साथ अपनी साँस जोड़ते जनसाधारणके मन तक पहुँचाया। शायद 'महजूर' की लोकप्रियताका एक बड़ा कारण यह भी है।

कश्मीरी कवितामें सर्वाधिक विद्रोही स्वर अब्दुल अहद 'आज़ाद' की कविताओंमें मुखर हुआ। 'आज़ाद' की कविताओंमें आधुनिक मानव-संवेदनाओंकी जितनी गहरी और तल्खी-भरी अभिव्यक्ति हुई है, कहा जा सकता है कि उनके पहलेके किसी कविकी रचनाओंमें उतने समर्थ रूपमें नहीं हो पायी। 'आज़ाद' ने परम्परा और अतीतकी घिसी-घिसायी शैली-शिल्पोंसे हटकर उलझन-भरी ज़िन्दगीके अनगिनत जलते प्रश्नोंको विषय बनाकर क्रान्तिका जीवन्त स्वर प्रस्तुत किया। 'आज़ाद' ने कश्मीरी साहित्यके पहले समालोचकके रूपमें भी काफ़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। उनकी पुस्तक 'कश्मीरी ज़बान और शाइरी' अपने प्रकारकी महत्त्वपूर्ण कृतियोंमें गिनी-मानी जाती है। 'आज़ाद' कश्मीरी साहित्यको बहुत-कुछ देनेकी स्थितिमें ही थे कि अचानक १९४८ में उनका निधन हो गया।

स्वाधीनता मिली। पूरे देशके साथ केसरिया कश्मीरकी वादियाँ भी स्वतन्त्रताकी अगवानीमें झूमीं। लेकिन साथ-ही-साथ कुछ ऐसी समस्याएँ भी पनप गयीं जिनसे पूरी घाटीमें अशान्तिके बादल घिर आये, ऐसे घाव लगे जिनका दर्द आज भी टीस रहा है। छल-छद्म-भरी राजनयिक चालोंने शान्तिके नामपर ऐसे दाग़ लगाये जो कोढ़के बदबूदार दाग़ बन गये हैं। और सबका परिणाम यह कि आज भी रमणीक कश्मीरकी घाटी धुएँ और बारूदके नीचे घुट रही है। उसके सीनेपर नापाक क़दम डगमगाते हुए उसके अस्तित्वको रौंद रहे हैं! अस्तु!

यह विडम्बना ही थी कि १९४७ के बाद कश्मीरी साहित्यका प्रारम्भ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्धकी ललकार और देश-रक्षासे हुआ ! नये कवियोंने समयकी पुकार सुनी-समझी और राष्ट्रीयता तथा देशप्रेमसे भरी अपनी वाणीको वादीकी जन-जनकी आत्मा तक पहुँचाया। स्वाभाविक था कि जन-मानसमें नयी चेतना और जागृति उन रचनाओंसे दौड़ती ही ! और साथ ही यह भी एक बड़ी बात मानी जायेगी कि वह 'ललकारवादी' साहित्य कश्मीरकी अपूर्व निधि बनकर आज भी जीवित है ! इस युगके प्रतिनिधि कवियोंमें दीनानाथ नादिम प्रमुख हैं।

बादमें, संक्रान्ति और विघटनका समय टलनेके बाद कश्मीरी साहित्य प्रयोग-वादी दौरसे गुज़रा। साहित्यकारोंने बदलती हुई नयी धाराको पहचाना और नये-नये प्रयोगोंके माध्यमसे जन-जीवनकी नयी अपेक्षाओं तक पहुँचनेके प्रयत्न किये। कविताका रूप तो बदला ही, गद्यकी ओर लेखकोंकी विशेष रुझान हुई। कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, प्रहसन, रूपक आदि सभी विधाओंमें साहित्य रचा गया। कश्मीरी गद्यकारोंमें अख़्तर मुहीउद्दीन, अली मोहम्मद लोन, बंसी निर्दोष, कामिल आदि विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं।

अख़्तर मुहीउद्दीनका एक कहानी-संग्रह 'सतसंगर' साहित्य अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित हो चुका है। कश्मीरी नयी कविताके क्षेत्रमें दीनानाथ नादिम-के अतिरिक्त मास्टर ज़िन्दा कौल और रहमान राहीके नाम विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। मास्टर कौलका कविता-संग्रह 'स्मरण' तथा रहमान राहीका 'नौरोज़-सबा' कविता संग्रह भी साहित्य अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं।

यद्यपि कश्मीरी गद्य-साहित्य अभी सन्तोषजनक रूपमें (अन्य भारतीय भाषाओंकी तुलनामें) नहीं है, फिर भी यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि कश्मीरी साहित्य अपने-आपमें आगेकी तमाम उपलब्धि-सम्भावनाएँ सँजोये है।

● ●

निवेदन :

इस अंकमें किन्हीं कारणोंसे 'प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर' स्तम्भ नहीं जा रहा है। अगले अंकमें देखेंगे।

— सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंकी प्रतिक्रिया

लेखन प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी इकाई अधूरी रहेगी
जबतक पारखी पाठककी प्रतिक्रिया प्रकाशकके
पास होती लेखककी मेज़ तक न पहुँचे।

• आत्मजयी : कुँवरनारायण

प्रशान्त प्रश्नोंकी शृंखला

'आत्मजयी' सफलताकी दृष्टिसे अत्यन्त विवादास्पद कृति है। इसके कई कारण हैं; कारण होनेकी, हो सकनेकी सम्भावना है। चूँकि कुँवरनारायणने उपनिषद्से कथानक लिया है इसलिए 'आत्मजयी' असफल काव्य है; चूँकि उनकी भाषा शुद्ध एवं परिमार्जित है, यानी किताबी है, इसलिए यह कृति बेकार है। और चूँकि बहुत शान्तिके साथ बुद्धि और विवेकका उपयोग किया गया है इसलिए यह काव्य आधुनिक नहीं है। जो कृति आक्रामक है, हल्ला बोलती है, वही उचित और संगत है। चूँकि 'आत्मजयी' आक्रामक नहीं, हल्ला बोलनेवाली नहीं, इसलिए वह अनुचित और असंगत है। चूँकि नचिकेता हिन्दू प्रतिभाकी उपज है इसलिए उसमें शुरूसे ही विसंगति होना आवश्यक है, क्योंकि अस्तित्वके प्रश्न हिन्दू दर्शनसे मेल नहीं खाते। नचिकेता चूँकि एक संगठित धर्मका प्रतीक है, इसलिए वह असंगठित समाजके लिए निरर्थक है। 'आत्मजयी' में जो वस्तु है, वह न मौलिक है न आधुनिक। वह समकालीन नहीं है। "अच्छा युग इसी दृष्टिसे सफल है कि उसकी समस्या पौराणिक सन्दर्भके सहारे प्रस्तुत होनेपर भी मूलतः आधुनिक है।" कुँवरनारायणके मिथक और कथनमें समानता होनेके कारण कोई तनाव नहीं उपस्थित होता। वस्तुतः कविपर मिथक हावी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। आधुनिक संवेदनाके व्यक्तीकरणके लिए पुराणका उपयोग सीधे नहीं किया जा सकता। कटाव, पेंच वग़ैरह ज़रूरी है। 'आत्मजयी' में कोई नयी समस्या नहीं है। सुख और दुःख दोनों भोगकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं। केवल सुख नहीं। प्रस्तुत काव्यमें ऐसा नहीं है। फिर उसमें अमर जीवनका समर्थन है। इसकी भाषामें हमारी झलक और असफल छायावादी बिम्बोंका प्रयोग है। इसमें संगठनकी कमज़ोरी है। कुँवर नारायण झूठे संकटोंपर आधारित संशयोंके जन्म-दाता हैं। उनके संकट युगीन नहीं, चिन्तनात्मक मात्र हैं। मूल्योंके युगका चरित्र मूल्यहीनताके युगका प्रतीक नहीं बन सकता।" और अन्तमें यह भी कि चूँकि 'आत्मजयी' बौद्धिक कृति है इसलिए वह नयी नहीं है। इस तरहकी चीज़ोंके अगुवा 'अज्ञेय' हैं, थे और रहेंगे।

'आत्मजयी' को विवाद्य अतः बहुचर्चित बना देनेके लिए ये तर्क रखे जा चुके हैं। कुछ और रखे गये होंगे; कुछ शायद अब रखे जायें। किन्तु 'आत्मजयी'-को बिलकुल सचेत होकर किसीने न देखा है न समझा है; और उसकी विवेचना करते समय प्रायः अपने-आपको थोपा-भर है। 'आत्मजयी' आज भी आत्मजयी है। क्योंकि इन बीमार तर्कोंके पीछे "पालतू मुहावरे" हैं, "तुड़े-मुड़े-से" काव्य-शास्त्रीय विधान हैं; और अगत्या "वाणी है जो बाँधती नहीं, बुद्धियाँ हैं जो जानती नहीं।" इसलिए ये तर्क "भाषाकी केवल गूँज मात्र" हैं। इन्हें यदि ग़लत या कम ग़लत साबित किया जाये, तो स्वतः 'आत्मजयी' को समीक्षा हो जायेगी। यह तरीक़ा भी नया होगा। पुराणके कटावदार, पेंचदार प्रयोगियोंको भी मज़ा आ जायेगा और हल्ला बुलवानेवालोंको भी।

कोई भी हो, इस बातके लिए स्वतन्त्र है कि वह कथानक जहाँसे चाहे ले या न ले, फ़िलहाल चुननेका काम उसे ही करना पड़ेगा। क्योंकि चुनना उसकी अपनी और नितान्त निजी नियति है। यह कहना कि कथानक महाभारतका वर्तमान सन्दर्भमें ज्यादा अर्थवान् होगा उपनिषद्का नहीं, देखी हुई किताब ('अन्धा युग') और बने हुए काव्य-शास्त्रका आरोप है। कथानक या प्रतीक या शब्द सब न-कुछ होते हैं; उन्हें द्रष्टा या स्रष्टा कुछ बनाता है। किसीके बनाये हुएके आधारपर कनबतियाँ करना एक प्रकारका बनावटीपन है; बल्कि न होना है; न होनेके प्रति अग्रसर होना है। कुँवरनारायणने नचिकेताकी चुना अश्वत्थामा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं, तो यह अन्यथा नहीं किया। पर यहीं एक प्रश्न उठता है : नचिकेताको चुनना क्या जरूरी था ? यदि नचिकेताको बिलकुल हटा दें तो केवल धारणाएँ बच रहेंगी। चिन्तन शेष रहेगा। अनुभूति बच रहेगी। वे धारणाएँ, वे चिन्तन, वे अनुभूतियाँ स्वयंमें अधिक सम्यक् होंगी, उनका मूल्य अधिक होगा। तब काव्य-रचना अधिक कठिन और साहसिक होगी : नचिकेता उस साहसको ऊपरी स्तरपर अलंकृत-भर करता है, रचनाको कम कठिन या सरल बनाता है; काव्य-पर परम्परा, इतिहास और पुराने काव्यशास्त्रको या तो खामखाह आत्मसात् करनेपर मजबूर करता है या एक आरोप या व्यर्थका अलंकरण बनता है। इससे हम सच्ची कविता से वंचित होकर, खरी अनुभूतिसे बचकर, चित्रों-स्मृतियों, स्वप्नों-कल्पनाओं और कुल मिलाकर मिथकके जालमें फँस जाते हैं। इससे निश्चय ही एक ओर कुँवरनारायणका परिश्रम दुगुना-तिगुना हो जाता है; वे सारी परम्पराको अपने ऊपर झेलते नज़र आ सकते हैं, वे पुराने काव्योंको स्मृतिसे हमें चौंका सकते हैं, पुरानी शब्दावलीको नये सन्दर्भोंमें दिखाकर श्रेय प्राप्त कर सकते हैं, मिथकको हरिऔधकी तरह नया बनाकर पेश कर सकते हैं, यहाँतक कि अब-तककी स्वयंको शब्द-शक्तिसे तथा दूसरे नये लोगोंकी रचनाओंसे अलग एक नया और पुष्कल गाम्भीर्य भी दे सकते हैं, किन्तु कहीं-न-कहीं नचिकेताके कारण जो खरा और सच्चा है, उनका अपना है, वह या तो अव्यक्त रह जाता है या गड्ड-मड्ड—बेतरतीब हो जाता है। 'आत्मजयी' की सारी अनुभूति चूँकि बिलकुल कुँवर-नारायणकी है, इसलिए उसका आरोप नचिकेतापर करना अलंकरण हो सकता है, प्रतीक-दृष्टि हो सकता है, परम्परा-मोह हो सकता है—इसके सिवा कुछ नहीं।

नचिकेता कठोपनिषद्का एक नितान्त सूक्ष्म चरित्र है। उसे किस हद तक विस्तृत किया जा सकता है, यह अलग प्रश्न है; पर स्थिति जो भी हो, वह नाटकीयतासे सम्यक् अवश्य है। किन्तु कुँवरनारायणकी अतिशय चेतनता उसे नाटकीयता नहीं दे पायी; दरअसल नचिकेता स्वयं एक व्यक्तित्व न होकर कुँवरनारायण हो गया। यानी कल्पना करें, कुँवरनारायण 'आत्मजयी' न लिखते तो भी क्या उनकी वही स्थिति न बनी रहती, जो 'चक्रव्यूह' और 'परिवेश: हम-तुम' तक थी ? शायद यही स्थिति होती। जितना काव्य-सौष्ठव, जितना शब्द-शिल्प, जितना विशेषण-विपर्यय और जितने विचार वे दे चुके हैं, उससे अधिक वे 'आत्मजयी' में नहीं दे सके, जो इस कृतिसे अपेक्षित था। दरअसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे एक जगह सम्पूर्णतया दीख जाते हैं, लेकिन फिर उनके विशेषण-विपर्यय, उनके शब्द, उनके विचार, उनका सम्पूर्ण कुछ अतिरिक्त, कुछ ज़्यादा यानी अनार्थिक हो जाता है। कुँवरनारायणका परिश्रम स्वेदका परिचायक तो हो जाता है, लेकिन खरे और सच्चे अनुभव उससे गीले हो जाते हैं।

इसीलिए उनके शब्द 'दो बाँके' की तरह कहीं कायरतामें ठहर जाते हैं; 'मैला आँचल' की तरह फैला हुआ 'नचिकेता' महज़ बुनी हुई खाट बनकर रह जाता है। इसका कारण कुँवरनारायणके सम्पूर्ण व्यक्तित्वका 'आत्मजयी' पर ज़ोरदार प्रभाव है। कुँवरनारायण वस्तुतः शब्दोंके वैज्ञानिक हैं; उनकी कविता प्रयोगशालाकी कविता है; उनकी हर रचना, हर अनुभूति, हर विचार बिलकुल ठीक, चुस्त दुरुस्त होते हैं, जैसे गोली या थर्मामीटर जिसमें दवा या पारा एक निश्चित मात्रामें ही होता है। लेकिन हर चीज़के लिए प्रयोगशालाकी ज़रूरत नहीं होती, इसलिए वह प्रयोगशालाके अनुरूप भले हो जाये, किन्तु वह फिर कुछ और हो जाती है। इसीलिए 'आत्मजयी' इलियट, हर्बर्ट रीड, आई० ए० रिचर्ड्स-के सिद्धान्तोंपर शायद खरी उतर जाये, भरतके सारे सम्प्रदाय उसे श्रद्धा दे दें, प्राच्य और पाश्चात्य दर्शन भी शायद निछावर हो जायें, शब्द नये अर्थ ग्रहण कर लें, किन्तु न नचिकेता कुँवरनारायण हो पायेगा, न कोई नया आदमी 'आत्मजयी' को पूरे मनसे स्वीकार कर पायेगा।

स्थिति तो यह है कि जहाँ कुँवरनारायणके आलोचक पालतू मुहावरोंका प्रयोग करते हैं, वहाँ स्वयं कुँवरनारायण पालतू मुहावरेमें बोलते हैं और इसी-लिए आलोचकोंके तर्क या तो बीमार नहीं लगते या कम बीमार लगते हैं और कुँवरनारायणकी 'भूमिका' काफ़ी बीमार लगती है। कुँवरनारायणकी इस्तरी की हुई भाषाकी गूँज-भर हम इस कृतिमें सुन पाते हैं। किसीकी भाषा शुद्ध या परिमार्जित हो, तो भी उससे वह बहुत-कुछ कर सकता है, लेकिन यदि वह केवल वृत्तमें घूमकर रह जाये या अपनेको दुहरा भर दे, तब बात दूसरी है। यही दूसरी स्थिति 'आत्मजयी' की है।

बुद्धि और विवेकका उपयोग स्वयं अपने-आप होता है, तब रचनामें शान्ति चाहे जितनी हो, पर शब्द 'अँधेरेमें फूल'की तरह 'चीख़ते हैं', लेकिन जब जान-बूझकर बड़ी सतर्कताके साथ बुद्धि और विवेकका उपयोग किया जाता है या करनेको विवश हुआ जाता है, तब 'आत्मजयी'-जैसी ठण्डी कृतियाँ जन्म लेती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनका पारम्परिक दृष्टिसे महत्त्व एक बार हो जाये, लेकिन उनके आधुनिक होनेका प्रश्न नहीं उठता। वे हैं, जैसे वन्ध्या-पुत्र होता है; खरगोशके सींग होते हैं।

कोई भी कृति चाहे हल्ला बोले या न बोले, चाहे आक्रामक हो या अनाक्रामक, वह हर स्थितिमें उचित और संगत होती है या हो सकती है। लेकिन उसमें दृष्टिका सातत्य और अहंका पूर्ण स्फुरण होना अनिवार्य है। 'आत्मजयी' इस दृष्टिसे 'निर्मीनिङ्' है। नचिकेताकी मजबूरी यह नहीं है कि वह हिन्दू प्रतिभा है या वह विसंगतियोंसे पूर्ण या पृथक् है; नचिकेताकी मजबूरी केवल यह है कि वह नचिकेता है ही नहीं। काश, वह होता तो वह न होता जो 'आत्मजयी' है।

अस्तित्वके प्रश्न और हिन्दू दर्शनको कुँवरनारायणने अपनी प्रतिभासे निजी बनाकर इस तरह पेश किया है कि हम हीडेगर, यास्पर्स या सार्त्रको न याद करें और न ही भारतीय दर्शनोंको। इस दृष्टिसे 'आत्मजयी'की धारणाओंका महत्त्व बिलकुल मालिक रूपमें स्वीकार किया जाना चाहिए। पर इसे अलग करके ही देखा जाना संगत होगा। क्या ही अच्छा होता, कुँवरनारायण 'आत्मजयी' न लिखकर डायरी लिखते या कुछ लेख।

संगठित धर्मका प्रतीक असंगठित समाजके प्रतीककी दृष्टिसे अति नाटकीय, विद्रूपात्मक, आधुनिकता-सम्पन्न और न जाने कितने रूपोंवाला अतः महत्त्वपूर्ण हो सकता है। पर मिथक वग़ैरह खरेपनको काट देते हैं। अगर न काटें (जिनके 'कटाव और पेंच'के अलावा और भी तरीक़े हैं, हो सकते हैं) तो अलग बात है। मगर यही अलग बात तो 'आत्मजयी'में नहीं है। 'आत्मजयी'की वस्तु मौलिक, आकर्षक और क्लिष्ट है। उसे कुँवरनारायण ही छू भी सकते थे। लेकिन क्लिष्ट होनेके कारण या तो उसे समयकी जरूरत थी या सहज भावसे व्यक्त होनेको। वह नहीं हो सका। यदि वैसा होता, तो आधुनिकता क्षरित न हो पाती। और आधुनिकताके बीज अभी भी उसमें हैं। उन्हें उद्धरणोंसे समझाना बहुत उचित नहीं जान पड़ता। बल्कि उतने अंशोंमें 'आत्मजयी'की कविता किसी भी महान् कवितासे होड़ लेने लायक़ भी है।

'अन्धा युग'के मूलमें ही दोष है। वह कविता भी है नाटक भी है: इसलिए वह दोनों नहीं है। 'आत्मजयी' कमसे कम कविता तो है। उसका उद्देश्य सबसे बड़ा यही था भी। अश्वत्थामा बहुत साफ़ चरित्र भी है, नचिकेता बड़ा डेलिकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उसके साथ गड़बड़ी होना स्वाभाविक है। और दरअसल आधुनिक युगको सम्पूर्णतया अश्वत्थामामें प्रतीकित किया भी नहीं जा सकता। यह धारणा ही बिलकुल भ्रान्त है। ग़लत सफलताकी तुलनामें सही असफलताका अधिक महत्त्व है और इसी दृष्टिसे 'अन्धा युग'के समक्ष 'आत्मजयी'का विशेष मूल्य है।

'आत्मजयी'के भीतर तनाव निहित अवश्य है, केवल गहरी चेतनता भाषाको ठोससे अधिक ठोस बनाती हुई अनुभूतिपर ऑक्टोपसकी तरह हावी होती हुई तनावको ताबूतमें बन्द करती चलती है। वृहत्तर और अमर अर्थोंमें जीना, उस जीनेके लिए किसी विशेष सत्य या दर्शनकी खोज, और अन्ततः प्रश्नोंके समाधान होते-होते फिर प्रश्नोंके प्रति अतिशय प्रवृद्ध जिज्ञासा इस काव्यके मूल बिन्दु हैं जहाँ जीवनके आगे मृत्यु, फिर मृत्युसे आगे वृहत्तर या अमर जीवनकी सम्भावना चरम अनुभूतिके परिपक्व आलोकमें विजड़ित या शृंखलित होकर रह गयी है। सुख और दुःखके भोग या सार्थक और निरर्थक जीवनकी व्याख्या तो उसमें निहित या अनुस्यूत है ही। दुःख-भोगको कुँवरनारायणने भुला नहीं दिया है। 'आत्मजयी'में 'नचिकेताका विवाद' और 'आत्महत्याका प्रयत्न' नामक अध्याय जिनमें पश्चिमी काव्यों और भारतीय काव्यों (विशेषकर 'कामायनी') के परम सौन्दर्यका स्मरण आना बहुत स्वाभाविक है, इस दृष्टिसे द्रष्टव्य ही नहीं, प्रशंसनीय भी हैं।

कुँवरनारायण किसी भी शब्द या बिम्बको चाहे छायावादसे लें चाहे उर्दूसे ('गुम्बदे मीनाई') चाहें पश्चिमसे, उसे अपनी प्रतिभासे नया, अ-रोमाण्टिक (यानी क्लासिक) ही नहीं बना देते बल्कि चमका भी देते हैं। यही उनकी पुरानी विशेषता है।

कुँवरनारायणका संकट चूँकि एक चिन्तकका संकट है, इसलिए वह सत्य अवश्य है। झूठा इसलिए लगता है कि उसपर उनके विशेषण-विपर्यय, उनकी अतिशय जागरूकता, उनके प्रयोगशालिक संस्कार हावी हो जाते हैं, वह मोमसे मढ़ी कुप्पीके रंगकी विरहिणीकी तरह अस्वस्थ लगने लगता है, ब्राह्ममुहूर्तकी तरह जगाता हुआ, उद्वेलित करता हुआ नहीं लगता। यानी वह प्रस्फुटित नहीं लगता, आन्तरिक नहीं लगता, आरोपित लगता है, बाह्य लगता है।

मूल्योंका युग और मूल्यहीनताका युग कोई भी युग होता है। क्योंकि यह दृष्टिपर निर्भर है। इस आधारपर नचिकेताको या उपनिषदोंको या किसीको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कुछ भी क्यों न हो, को नहीं तौला जा सकता। इस दृष्टिसे 'आत्मजयी' पर दृष्टिपात एक प्रकारके अफ़वाह-जैसा है जिसका मूल्य हवामें भी नहीं हो पाता।

कुँवरनारायणपर बौद्धिकताका लांछन पहले भी लगता है, औरोंपर भी लगा है। लेकिन तब 'अज्ञेय' बौद्धिकतासे लांछित होते हुए भी ऐसी कृतियोंके 'अगुवा' नहीं हुए। यदि 'आत्मजयी'-जैसी असफल कृतिके पीछे उनका 'अगुवा' है तो किसीको क्या एतराज़ हो सकता है।

कुँवरनारायणकी भाषाको किताबी या विचारोंकी वाहिका कहा गया है। पर शब्द या भाषा न किताबी होती है न विचारों और अनुभूतियोंकी दृष्टिसे उसका विभाजन सम्भव है। वह होती है। उसे हम जैसा चाहें, जब चाहें, बना लें। वह किताबीपन या वैचारिकता उनके दुहराव, उनके वृत्त, उनकी स्वयंकी सतत परम्पराका प्रतिफल है, और कुछ नहीं। सीधे और रोज़मर्राके शब्द भी ज़रूरी नहीं है कि सबके हाथों कविता बन सकें, न ही परम्परासे चलते शब्द घिसकर खत्म ही हो जायें, यह सब कविपर ही निर्भर है। पुराने शब्दोंके अतिशय नये प्रयोगके लिए कुँवरनारायण बधाईके पात्र हैं। यह अलग बात है कि वे 'प्रसाद' की तरह शास्त्रीय और ठोस होते हुए भी व्याकरणकी भूलें कर सके हैं, एकाध ग़लत प्रयोग भी किये हैं और अन्ततः अपनी गम्भीरतासे उन्होंने काव्यको बिलकुल ठण्डा कर दिया है।

हमने सारे तर्कोंको बीमार और पूर्वग्रहोंसे ग्रस्त कहा था। लेकिन न्याय करते हुए कहाँसे कहाँ पहुँच गये। इतना कटावदार, पेंचदार तरीक़ा अपनाया, पर कुँवरनारायणकी जीत नहीं हुई, उनकी कविता व्यतीत हो गयी, आलोचक ज़्यादातर ताज़ा हो गये। हाथीदाँतकी मीनार जो कुँवरनारायणने किस मेहनतसे बनायी थी, वह भी बेकार साबित हुई। बस यही हुआ कि सारे पुराने आचार्य खुश हो गये, लेकिन नये लोग उलटे पाँव लौट गये। "यह गुम्बदे मीनाई, यह आलमे तनहाई। मुझको तो डराती है इस दश्त की पहनाई।"

—श्रीराम वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• संक्रान्त : कैलाश वाजपेयी

विसंगतियोंका तटस्थ पर्यवेक्षण

'संक्रान्त' की कविताओंमें निषेध है – प्रत्येक परम्परागत मूल्यको नकारनेकी प्रवृत्ति – और यह शुभ है। युगीन यन्त्रणाने आजके कविको जहाँ एक ओर घोर व्यक्तिपरक बना दिया है, वहाँ दूसरी ओर उसे आजके जीवनकी विसंगतियों, विद्रूपताओं और जटिलताओंका निर्वाहिक बनाकर उनकी तटस्थ एवं सहज अभिव्यक्ति करनेकी क्षमता भी प्रदान की है। प्रेमकी छायावादी रागात्मक वृत्ति उसके लिए मूल्यहीन हो गयी है और वह रोमानियतकी ऐन्द्रिजालिक कुहासे निष्पत्ति पानेके लिए प्रयत्नशील है। कैलाश वाजपेयीकी प्रस्तुत कविताओंमें ये प्रवृत्तियाँ सहज ही परिलक्षित की जा सकती हैं और इस नाते उनका यह संग्रह कुछेक कवियोंके बावजूद एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

यों भी मैंने कैलाश वाजपेयीके कवि-व्यक्तित्वका क्रमिक विकास देखा है और इस कारण मैं यह माननेको तैयार नहीं हूँ, जैसा कि कुछ लोगोंका मत है कि यह कविताएँ किसी फ़ैशन-परस्तीके व्यामोहकी शिकार हैं। रोमानी कविके रूपमें उनकी प्रसिद्धि रही है, किन्तु अनुभव और बौद्धिक चेतनाके साथ कवि यह महसूस करने लगे कि मात्र स्मृति, विलाप तथा प्रिया-स्नेह एक बचकानी दृष्टि थी तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। यदि युगीन चेतनासे सम्पृक्त कवि अपने काव्यका मूल स्वर परिवर्तित कर, एकदम विपरीत धाराका अभिव्यक्तिको अपने काव्य-सृजनका माध्यम बना ले तो इसे उसके मानसिक तथा कलात्मक विकासका पर्याय ही माना जायेगा।

आज हम ज़िन्दगीके जिस दौरसे गुज़र रहे हैं उसमें दोस्ती, प्यार, नौकरी, पत्नी यहाँतक कि सम्मानकी भावना तक महज़ एक धोखाधड़ी है। ऐसा लगता है कि बड़ी-से-बड़ी दुर्घटना और घनिष्ठ-से-घनिष्ठ सम्बन्धीकी मृत्युका समाचार भी मात्र एक सहज घटना है और उसका कोई अर्थ नहीं रह गया है। सारा जीवन और जीवनके सारे कार्यकलाप निष्प्रयोजन, अर्थहीन मालूम पड़ते हैं। कैलाशकी कविता 'परास्त बुद्धिजीवीका वक्तव्य' इस संत्रस्त जीवनसे गुज़रती सारी पीढ़ीकी ऊब तथा एकांगिताका समर्थन करती है :

न हमारी आँखें हैं आत्मरत
न हमारे होठों पर शोक गीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितनी कुछ ऊब सके ऊब लिये
हमें अब किसी भी व्यवस्था में डाल दो
(जो जायेंगे)

यही नहीं, कविको लगता है कि 'इतिहासान्त' हो गया है और 'ईश्वर' नामक शब्दको भी कोई महत्ता नहीं रही। उसे लगता है कि नियतिवादियों-द्वारा बनाये मूल्य एकदम सारहीन हो गये हैं :

ज़िन्दा रहने के लिए—
प्यार से कोई बड़ा झूठ बोलो
जिन्दा रहने के लिए—
अश्रु से ज़्यादा अच्छा ढोंग रचो
ईश्वर - सा उजला,
लेकिन बेकार शब्द
गढ़कर उगलो।

और कविको लगता है कि इस अनिश्चित जीवनको भोगनेका मात्र एक उपाय है – आत्महनन ! इस वृत्तिको वह निस्संगतासे ग्रहण करना चाहता है - 'पराङ्मुख चिन्तन' :

सभी दिग्भ्रमित हैं
त्रस्त, चोट खाये हैं
सभी अपनी राख मुट्ठी में दबाये हैं।
जब दुःख के अलावा और कोई लीक नहीं।
यन्त्रणा – यन्त्रणा – यन्त्रणा
बाक़ी कुछ ठीक नहीं।

कहीं-कहीं इन कविताओंमें 'ऐब्सर्ड' बोध भी पाया जाता है, और कहीं-कहीं कवि गिन्सबर्ग आदि बीटनिक कवियोंकी तरह भी सोचता पाया जाता है। उसे लगता है कि यह कटुता तटस्थ रहनेकी वस्तु है, इसे निर्विकार रहकर झेलो, भोगो और इसे सहज मानकर आचरण करो। जीवनकी इसी प्रत्येक क्षणमें परिवर्तित भावशृंखलाको 'विसंगति' कवितामें सार्थक अभिव्यक्ति दी गयी है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी कभी मेरा मन आत्महत्या करने का होता है
फिर मुझे बड़ी ज़ोर की हँसी आती है
लेकिन मैं हँसता नहीं हूँ
ताज़ा गुलाब तोड़ लाता हूँ
सारी पंखुरियाँ सुई से छेद कर चिथड़ा कर देता हूँ
पड़ौसी की भैंस के आगे डाल आता हूँ

'गुलाब'की पंक्तियोंको तोड़कर 'भैंस'के आगे डालना तथा आत्महत्याका निश्चय करना और फिर हँसना यह दो परस्पर विरोधी भावनाओंका एक साथ प्रकारान्तरसे वर्णन करना, चौंकानेके लिए नहीं है अपितु आजके जीवनके विरोधाभासको प्रकट करनेके किए है। आजका कवि घृणा और प्रेम, हिंसा और स्नेह, विरक्ति और सम्भोग—सभी क्रियाओंको एक-सी विरक्तिसे जीता है। वह जानता है कि सभी आकर्षण न प्रसन्न होनेकी वस्तु हैं न नकारनेकी। वे जिस रूपमें हैं, स्वीकार हैं। वह न आवश्यक हैं न अनावश्यक, वह जैसे हैं ठीक हैं। उसके लिए वह मात्र निरर्थकताके पर्याय हैं। 'आदर्शवाद'का खोखलापन उसके सामने स्पष्ट हो गया है। वह इस अनिश्चित और अनर्थक जीवनको भोग रहा है और खुश (?) है। और काव्य-निस्संगताकी स्थितिमें जीते इस कविको कभी-कभी देश और सीमापर हुए संकटोंके प्रति सक्रिय भी देखा जा सकता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जहाँ युद्ध या विषमताएँ कविको प्रभावित करती हैं। एक अनिर्वचनीय स्थितिमें 'संक्रान्त'का कवि 'राजधानी'में फैली अव्यवस्थाओं और 'भैंस और ट्रांज़िस्टरोंके बीच भड़भड़ाते' दिल्ली शहरको अपनी कविताकी सीमामें ले आता है और 'युद्ध चेतना : एक दार्शनिक पश्चात्ताप' जैसी कविताका सृजनकर्ता बनता है।

विभिन्न उपलब्धियोंके बाद भी कैलाशकी कविताओंका एक कमज़ोर पक्ष है : उनकी एकरसता। कई कविताएँ पुनरावृत्ति मालूम देती हैं। युगीन विषमताओंको एक बड़े कैनवासपर विभिन्न मनःस्थितियोंमें आँकनेका अभाव उनके काव्य-विक्षोभको सीमित दायरेमें प्रतिभासित करता प्रतीत होता है। फिर भी नयी कविताके अत्याधुनिक भाव-बोधको अपने सृजनका माध्यम बनानेवाले अति अल्प कवियोंमें उनको परिगणित किया जाना चाहिए।

—जगदीश चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा श्रेष्ठ नाटक साहित्य

बंगला से—

कांचन रंग : शम्भु मित्र, अमित मित्र (अनु० नेमिचन्द्र जैन) ३.००

रजनी गन्धा : धनंजय वैरागी (अनु० ममता अग्रवाल) ३.००

कन्नड़ से—

सुनो जनमेजय : आद्य रंगाचार्य (अनु० नेमिचन्द्र जैन) ३.००

गुजराती से—

सुवर्ण रेखा : शिवकुमार जोशी (अनु० युगजीत नवलपुरी) ३.००

फ्रेंच से—

तीन फरिश्ते : आल्बेर्तसों (अनु० ललित सहगल) ३.००

नये गुलाम	: कृष्णचन्द्र एम० ए०	३.००
घर की बात	: प्रेमनाथ दर	१.५०
माँ	: सूर्यनारायण अग्रवाल	१.२५
अमर बेल	: हरिश्चन्द्र खन्ना	३.००
अपनी धरती	: रेवतीसरन शर्मा	२.५०
चिराग की लौ	: ,, ,,	२.५०
पत्थर और आँसू	: ,, ,,	४.००
सम्राट् विक्रमादित्य	: विराज	२.००
तिरंगा झण्डा (एकांकी)	: विराज	१.२५
सूरज की धूप (,,)	: मनमोहन मदारिया	१.५०
अभिनव एकांकी	: राजकुमारी प्रसाद	३.५०

[पत्र लिखकर बड़ा सूचीपत्र मँगायें]

नेशनल पब्लिशिंग हाउस,

'चन्द्रलोक', जवाहरनगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ

ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत-कुछ सकीं

• जो : डॉ० प्रभाकर माचवे

'जो' एक उपन्यास है; अर्थात् उपन्यासमें जो होना चाहिए वह इसमें है। युगकी दृष्टिका उजाला और युगके लिए अभीष्ट दिशाका निर्देश दोनों इसमें हैं। कथानक आजके अमेरिकी काले-गोरे संघर्षकी एक यथार्थ जीवनपर आधारित मार्मिक छविका निरूपण प्रस्तुत करता है। रोचक और पठनीय तो है ही।

मूल्य ३.००

• दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

इतनी समर्थ, ऐसी मर्म-छूती, सहज और स्वाभाविक ये कथा-कहानियाँ हैं कि युग-युगों मानवको इनसे प्रेरणा मिली और आज भी ये उतनी ही सक्षम हैं। मनोरंजक होते हुए भी ये शिक्षाप्रद हैं और सरल होनेके साथ-साथ सीधे मनको प्रभावित करनेवाली! बड़ी विशेषता यह कि इन कहानियोंमें न साम्प्रदायिकताकी गन्ध है न संकुचितताका दोष। छोटे-छोटे आख्यान पर भावपूर्ण! प्रस्तुत है यह दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियोंके संग्रहका दूसरा संस्करण।

मूल्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● **देशान्तर** : डॉ० धर्मवीर भारती

इक्कीस पाश्चात्य देशोंकी एक सौ इकसठ कविताओंका प्रसिद्ध हिन्दी कवि धर्मवीर भारती-द्वारा संकलन और हिन्दी रूपान्तर, मूल कविताएँ उन कवियोंकी हैं जो विश्वमें 'आधुनिक काव्य-बोध'के निर्माता तो कहे जाते ही हैं, साथ ही अपनी-अपनी भाषाके लोकप्रिय और श्रेष्ठ कवि भी माने गये हैं। हिन्दीमें अपने प्रकारकी सर्वप्रथम कृति। अब प्रस्तुत है दूसरा संस्करण।

मूल्य १२.००

● **चौलुक्य कुमारपाल** : लक्ष्मीशंकर व्यास

अपने विषयका अद्यावधि अनुपम ग्रन्थ जिसे श्री क० मा० मुन्शीने 'भारतीय इतिहासके अध्ययनमें उपयोगी' माना और जिसके विषयमें 'आजकल'ने लिखा! इस ग्रन्थमें कुमारपालके सम्बन्धमें जो जानकारी प्राप्त की जा सकती है वह अँगरेजी व अन्य विदेशी भाषाओंके ग्रन्थोंसे नहीं मिलती।' उत्तर प्रदेश शासन-द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित, द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण।

मूल्य ४.५०

● **शैशवांकन** :

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित एक सर्वथा अनूठा, नयनाभिराम कलात्मक कृति। 'बेबी बुक' हिन्दीमें! अपने शिशुके जन्मोत्सवसे सम्बन्धित अवसरों तथा उत्तरोत्तर प्रगतिका लेखा अंकित करके सुरक्षित रखनेके लिए। सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण और उपयोगी भारतीय प्रकाशन।

मूल्य १२.००

● **कर्म प्रकृति**: मूल-आचार्य नेमिचन्द्र; सम्पा० अनु०—पं० हीरालाल जैन

प्राकृत-हिन्दी ग्रन्थ। जैन कर्म सिद्धान्तका संक्षेपमें विशद और पूर्ण परिचय करानेवाला महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रस्तावना, हिन्दी अनुवाद तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रायल ३२ + १६०।

मूल्य ६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• **सत्यशासन परीक्षा :**

मूल-आचार्य विद्यानन्दि, सम्पा०—गोकुलचन्द्र जैन

जैन न्यायकी महत्त्वपूर्ण कृति। विद्यानन्दिकी अन्तिम रचना। ग्रन्थका सर्वप्रथम प्रकाशन। हिन्दी प्रस्तावना तथा परिशिष्ट आदि सहित। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल ५६ + ३४ + ६२।

मूल्य ६.००

• **हरिवंश पुराण :** मूल-आचार्य जिनसेन, सं०—अनु०—पं० पन्नालाल साहित्याचार्य

जैन-साहित्यमें श्रीकृष्णकी प्रिय एवं प्रेरक कथाका वर्णन करनेवाले इस ग्रन्थमें सम्पूर्ण हरिवंशका परिचय तथा जैन-धर्म और संस्कृतिके उपादानोंका स्पष्ट विवेचन तो किया ही गया है भारतीय संस्कृति और इतिहासकी भी बहुविध सामग्री भरी पड़ी है। पृष्ठ संख्या सुपर रॉयल १००८।

मूल्य १६.००

गत तीस वर्षों से हिन्दी प्रचार-कार्य में रत विशिष्ट साहित्यकार पं० अनुसूयाप्रसाद पाठक के दो अमूल्य ग्रन्थ

• **तमसा को गोद में :** खण्डकाव्य, पृ० सं० १६०, आकार २० × ३० क्राउन, मूल्य तीन रुपये

पुस्तक सर्वांगीण नवीन है! काव्य रचना तो नवीन है ही! कविके चिन्तन का ढग, सांस्कृतिक आस्था, अनुभूति, नयी चेतनाके साथ रस—अलंकार, शब्द—छन्द गति विशिष्टतासे ओत-प्रोत है। पुस्तक अपनेमें पूर्ण तथा संग्रहणीय है।

• **जहाना :** उपन्यास : पृ० सं० १८० साइज २० × ३० नयनाभिराम छपाई आकर्षक कवर कलात्मक मुद्रण। मूल्य तीन रुपये

ग्रामीण समस्यापर आधारित सत्यकथा है। इसलिए प्रारम्भसे अन्त तक पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता।

प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार**

बाँका बाजार, कटक-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

* **गंगा लहरी :** सं० श्री सुधाकर पाण्डेय। यह पुस्तक कई विश्व-विद्यालयोंके बी० ए० के पाठ्यक्रममें निर्धारित है। १.२५

* **बन्दीकी चेतना :** श्री कमलापति त्रिपाठी। जीवनके सहज अन्तर्द्वन्द्वसे प्रसूत मनोविश्लेषणात्मक निबन्धोंका पत्रात्मक शैलीमें लिखा ग्रन्थ। ५.००

* **मतिराम ग्रन्थावली :** सं० स्व० कृष्णबिहारी मिश्र एवं स्व० डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र। यह पुस्तक मतिरामका सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करती है। ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित। पुनः सम्पादित एवं परिवर्द्धित संस्करण। इस शोधयुगपर प्रस्तुत पुस्तकमें श्री करुणापति त्रिपाठीकी गम्भीर अनुशीलनयुक्त भूमिका है। १२.५०

* **मधुमालती वार्ता :** सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त। हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंकी परम्परामें 'मधुमालती' का प्रेमाख्यान कई लेखकों-द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किन्तु चतुर्भुजदासकी यह रचना उन सबसे भिन्न लोक-व्यवहारपरक है। यह ग्रन्थ मुद्रित रूपमें पहली बार हिन्दी संसारके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। ८.००

* **खालिकबारी :** सं० श्रीराम शर्मा। अमीर खुसरोकृत खालिकबारीका नाम हिन्दी साहित्यमें विख्यात है। आरम्भमें भूमिका और अन्तमें हिन्दी शब्दोंका भाषा-वैज्ञानिक अभिधान। २.७५

* **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण :** दो खण्डोंमें सन् १९०० से १९५५ तकके प्राप्त हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय। मूल्य प्रति खण्ड ३०.००

नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी डायरी

भारत-पाकिस्तान युद्ध-जनित वर्तमान-
कालीन स्थितिकी पृष्ठभूमिमें नया
कृतित्व नयी उपलब्धियाँ

लक्ष्मीशंकर व्यास

राष्ट्रभाषा हिन्दी देशकी एकताका कितना महत्त्वपूर्ण साधन है, इसे पिछले महीनोंके संकटकालमें भली-भाँति अनुभव किया गया है। राजधानी नयी दिल्ली-में पिछले दिनों 'ललकार' नामक जो कविसम्मेलन हुआ उसमें प्रतिरक्षा मन्त्री श्री चह्वाणने कहा कि शत्रुसेना कवियोंसे डरती है। सन् '६२ में भी जब वीररस कविसम्मेलन हुआ तो चीनी सेना एकपक्षीय युद्धविराम करके पीछे हट गयी थी और इस बार जब फिर कवि-सम्मेलनका आयोजन हुआ तो पाकिस्तानने युद्ध विराम स्वीकार कर लिया। प्रतिरक्षा मन्त्रीके उक्त शब्द कवि-सम्मेलनमें हास्य अथवा चमत्कार उत्पन्न करनेके लिए ही नहीं कहे गये थे अपितु उनमें गम्भीर मर्म छिपा हुआ है।

इस कविसम्मेलनकी अध्यक्षता की कविवर श्री रामधारी सिंह दिनकरने और भारतीय ज्ञानपीठकी अध्यक्षा श्रीमती रमारानी जैन इस आयोजनकी स्वागताध्यक्ष थीं। श्रीमती जैनने इस अवसरपर उद्‌बोधक भाषण किया तथा स्थल सेनाध्यक्ष जनरल चौधरीको नोटोंकी माला पहनायी, प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री भी अपनी अत्यधिक व्यस्तताके बावजूद सम्मिलित हुए। राजधानी नयी दिल्लीमें ही नहीं, देशके विभिन्न भागोंमें हिन्दी कवियों तथा साहित्यकारों-द्वारा शत्रुको मार भगाने तथा मुँहतोड़ उत्तर देनेका संकल्प लिया गया और जनताको मनोबल जाग्रत रखनेकी आवश्यकतापर बल दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२० अक्तूबरको राष्ट्रीय एकता दिवसके आयोजनपर भी सारे देशमें यही मनोभावना तथा दृढ़ संकल्प प्रकट किया गया। देशके कुछ भागोंके साहित्यकार जहाँ वाद-विवाद ग्रस्त रहकर युद्ध और साहित्यकी परिछायामें ही उलझे रहे किन्तु स्वस्थ एवं निर्मल दृष्टिकोणवालोंको इसमें कभी उलझन नहीं रही। उनके सम्मुख एक ही लक्ष्य था और वह यह कि देशमें जो देव-दानव युद्ध हो रहा है, उनमें अन्तिम विजय हमारी ही होगी। विभिन्न मोरचोंपर भारतीय सैनिकोंने जो अभूतपूर्व वीरता-शूरता दिखायी, कवियों तथा साहित्यकारोंपर भी उसका व्यापक प्रभाव पड़ा। विजयादशमी और दीपावलीपर पारस्परिक त्योहार न मनाकर दुर्गासे यही प्रार्थना की गयी कि वह शत्रुओंका मान-मर्दन करनेकी अपूर्व शक्ति दे। जिस प्रकार असत्पर सत्की विजय हुई, उसी प्रकार माँ दुर्गेसे यह प्रार्थना की गयी कि हमारी स्वतन्त्रता तथा अखण्डताको खतरेमें डालनेवालोंका नाश हो। विजयादशमीकी भाँति ही दीपावलीपर अपनी जान हथेलीपर लेकर मर मिटनेवाले सैनिकोंके शौर्य एवं बलिदानको कवितामयी श्रद्धांजलि अर्पित की। शत्रु जो भारतीय शौर्यसे अपरिचित एवं अन्धकारमें रहा है उसे प्रकाश एवं सद्बुद्धि प्रदान करनेकी प्रार्थना की गयी। इस वर्षकी दीपावली तो मोरचोंपर सिरपर क़फ़न बाँधे सैनिकोंने ही मनायी। देशके कवियों और साहित्यकारोंने वीरगतिप्राप्त सैनिकोंकी प्रशस्ति तथा प्रशंसामें कविताएँ, लेखादि प्रभूत मात्रामें लिखे।

हिन्दीके प्रसिद्ध साहित्यकार तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलनके शासन निकायके अध्यक्ष सेठ गोविन्ददासकी ७०वीं जयन्ती प्रयागमें एक साहित्यिक समारोहमें मनायी गयी। आयोजनके अध्यक्ष थे उत्तर-प्रदेश लोक-सेवा आयोगके अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण। आपने अपने भाषणमें इस बातपर बल दिया कि समस्त भारतके विश्वविद्यालयों और उच्च न्यायालयोंके क्रियाकलापका माध्यम हिन्दी होनी चाहिए। इस तथ्यको भारत सरकार तथा सभी राज्य सरकारें जितनी जल्दी स्वीकार करेंगी, उतना ही यह देशके हितमें होगा।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वतीके वरद पुत्रोंका कर्त्तव्य

जब देश अपने इतिहासके एक बड़े मोड़ पर खड़ा हो

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन-द्वारा शहीद-दिवस गान्धी जयन्तीके दिन लाल क़िलेमें आयोजित विराट् वीररस कवि समारोहके अवसरपर भारतीय ज्ञानपीठकी अध्यक्षा श्रीमती रमा जैन का स्वागत भाषण

राष्ट्रकी रक्षाके निमित्त छत्रपति शिवाजीकी तलवारपर ओजस्विताकी नयी सान चढ़ानेवाले क़ीर्तिमान् रक्षामन्त्री श्री यशवन्तरावजी चव्हाण,

ज्वाल-मालाओंसे मण्डित राष्ट्रकी गर्वीली विजयवाहिनीके यशस्वी सेनानी जनरल चौधरी,

शत्रुओंको पराजित करनेके राष्ट्रीय संकल्पको तेजस्वी वाणी और क्रियाशील भावना प्रदान करनेवाले वीर-रस-संचारी कविगण,

वीरत्वके मस्तकपर श्रद्धा और प्यारका विजयतिलक अंकित करनेके लिए समागत बहनों और भाइयो,

—दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन-द्वारा आयोजित इस वीर-रस कवि सम्मेलनमें मैं आपका हार्दिक स्वागत करती हूँ।

हम अपने इतिहासके एक बड़े मोड़पर खड़े हैं। कई सौ वर्षोंके बाद युद्धक्षेत्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भारतने एक ऐसी कीर्ति प्राप्त की है जिसकी चर्चा सारे संसारमें हो रही है। हमें गर्व है कि हमारे वीर-बाँकुरोंने युद्धके कठिनतम मोर्चोंपर आक्रमणकारी शत्रुके छक्के छुड़ाये हैं। उन्होंने अपने बलिदानी रक्तके चन्दनसे भारत-माताके हिम-किरीटको चर्चित किया है। आज हमारी दिल्ली समूचे देशके सहयोगसे इतिहास-का एक नया तथा गौरवपूर्ण अध्याय अग्निके अक्षरोंमें लिख रही है।

राष्ट्रके निर्माणमें जितना योगदान सेनानी और राजनेता देते हैं उतना ही योग कवियों और साहित्यकारोंका भी होता है। पृथ्वीराजके साथ चन्द बरदायी और छत्रपति शिवाजीके साथ भूषणका नाम परम्परासे जुड़ा चला आया है। यह कविकी ही सामर्थ्य है कि जहाँ वह सदा प्रेम, शान्ति और मानवताके गीतोंकी पुष्पवर्षा करता है, वहाँ वह युद्धकी तलवारें तननेपर अपने छन्दोंमें वीरताकी वह्नि भी प्रवाहित करता है।

इस समय युद्ध विरामपर है और यह समय शक्तिको बढ़ाने और सँवारनेका है। वे भाग्यवान हैं जिन्हें राष्ट्रकी चेतनाको जगाने और जागे हुए राष्ट्रको बलिदानके लिए प्रेरित करनेका दायित्व मिला है। ये सरस्वतीके वरद पुत्र देशमें 'एक राष्ट्र' की भावनाको दृढ़ करें तथा जनताको विघटनकारी प्रवृत्तियोंसे बचायें। एकता और आज़ादी एक ही तत्त्वके दो नाम हैं। हमें दोनोंकी रक्षा करनी है। कवि राष्ट्रके हृदयके प्रतिनिधि होते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हमारे हृदयोंमें जो पौरुषकी ज्वाला घुमड़ रही है उसे वे वाणी देंगे।

पाकिस्तान हो या चीन, जो भी हमारे देशपर आक्रमण करेगा, उसे मुँहकी खानी पड़ेगी। हमारे नेता हैं नीतिज्ञ श्री लालबहादुर शास्त्री, धैर्य और ओजके प्रतीक—कवि बिहारीके शब्दोंमें—

देखत में छोटे लगें,
घाव करें गम्भीर।

हमारा सबसे बड़ा शस्त्र हमारा संकल्प है, हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी एकता है। हमारे देशकी रक्षाका भार जिन सबल कन्धोंपर है उनपर हमारा पूर्ण विश्वास है। विजय हमारी निश्चित है।

मैं पुनः आप सबका हार्दिक स्वागत करती हूँ।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि
जनताके आमने-सामने

लाल क़िलेमें दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन-द्वारा आयोजित 'वीररस कवि-समारोह' का एक समीक्षण; समारोहके सभापति बच्चनजी थे, स्वागताध्यक्षा भारतीय ज्ञानपीठकी अध्यक्षा श्रीमती रमा जैन थीं, और संयोजक थे श्री भवानीप्रसाद मिश्र।

रघुवीर सहाय

युद्धने सम्पूर्ण राष्ट्र-कायापर दबाव डाला है। विचार-भाषा और कर्म इन तीनों अंगोंमें आज सबसे अधिक तनाव है। तीनोंके कर्ता-वर्गोंने अपनेको रातों-रात एक बड़ी क्रान्तिमें गिरफ़्तार पाया था। आज वे उसकी आवश्यकताएँ समझने और उनके अनुसार अपनेको उभारनेके लिए उत्सुक हैं।

हालकी बात है, दिल्लीमें इसी उत्सुकताने कविसम्मेलनके रूपमें अभिव्यक्ति पायी। उसके प्रणेताओंने एक सहज उदात्त भावना—युद्धरत राष्ट्रका मनोबल बढ़ानेकी भावना—से प्रेरित होकर अपनी सम्पूर्ण निष्ठा और सामर्थ्यसे एक विराट् आयोजन किया था। समय उन्होंने शहीद-दिवस गान्धी जयन्ती और प्रधानमन्त्रीके जन्मदिनको चुना। इससे अधिक प्रेरक संयोग और क्या होता। स्थान उन्होंने वह चुना जहाँ सैन्य संस्कारोंकी सुधियाँ जागती हैं—लाल क़िला। और (आयोजक श्री गोपालप्रसाद व्यासके अनुमानसे) ६५-७० हज़ारकी अपूर्व संख्यामें श्रोता जमा हुए।

देशके रक्षामन्त्री श्री यशवन्तराव चव्हाण और कमाण्डर इन-चीफ़ जनरल चौधरी भी इस समारोहमें उपस्थित थे। जनरल चौधरी तो रक्षाकोषके लिए समर्पित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोटोंकी मालाओंसे लाद दिये गये (७५०० रु०) और उनकी झोली रुपयोंसे भर दी गयी (इनकी गिनती नहीं) स्वागताध्यक्षा श्रीमती रमा जैनने आजके अनुरूप स्वरमें श्री चव्हाणको सम्बोधित किया—'राष्ट्रकी रक्षाके निमित्त छत्रपति शिवाजीकी तलवारपर ओजस्विताकी नयी सान चढ़ानेवाले कीर्तिमान रक्षामन्त्री।' जनरल चौधरीके लिए उन्होंने ये विशेषण प्रयुक्त किये—'ज्वालमालाओंसे मण्डित राष्ट्रकी गर्वीली विजयवाहिनीके यशस्वी सेनानी।'

यह सम्बोधन अपनेमें ही सम्पूर्ण था परन्तु जिस समय उन्होंने श्रोताओंको 'वीरत्वके मस्तकपर श्रद्धा और प्यारका विजय-तिलक अंकित करनेके लिए समागत भाइयो और बहनों कहकर पुकारा, आयोजनको एक नया आयाम मिल गया।[1] उन्हींके शब्दोंमें कहें तो 'शत्रुओंको पराजित करनेके लिए राष्ट्रीय संकल्पको तेजस्वी वाणी और क्रियाशील भावना प्रदान करने' का जो दायित्व उपस्थित कवियोंपर था वह और भी अर्थवान् हो उठा।

ऐसा कम होता है कि इतने बड़े जन-समूहको कवि अपने सम्मुख सजीव समुपस्थित पाये और जब होता है तो फिर उस कविपर यह देखनेकी बड़ी भारी जिम्मेदारी आ पड़ती है कि वह इस समुदायके साथ क्या करता है; उसकी भावनाओंको किधर ले जाता और यदि सही दिशाकी ओर हो ले जाता है तो भी कैसे ले जाता है। आखिरकार मानव-समूह, चाहे समूह क्यों न हो, विचारशील व्यक्तियोंका पुंज है और उसकी प्रत्येक व्यष्टिमें उतारा गया प्रत्येक विचार राष्ट्रकी नियति निर्धारित करनेमें किसी भी समय महत्त्वपूर्ण योग या बाधा दे सकता है।

इस कविसम्मेलनमें जनता और कविका आमना-सामना इस दृष्टिसे और भी महत्त्वपूर्ण हो गया था कि 'इस समय युद्ध विरामपर है और यह समय शक्तिको बढ़ाने और सँवारनेका है। वे भाग्यवान् हैं जिन्हें राष्ट्रकी चेतनाको जगानेका और जागे हुए राष्ट्रको बलिदानके लिए प्रेरित करनेका दायित्व मिला है। ये सरस्वतीके वरद पुत्र देशमें 'एक राष्ट्र' की भावनाको दृढ़ करें तथा जनताको विघटनकारी प्रवृत्तियोंसे बचायें। एकता और आज़ादी एक ही तत्वके दो नाम हैं। हमें दोनोंकी रक्षा करनी है।' (स्वागत भाषण)

काव्य-साधना यों भी हर एकके वशकी चीज़ नहीं और फिर ऐसे कठिन

---

१ स्वागत-भाषण इसी अंकमें अन्यत्र दिया हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समयमें तो वाणीको वशमें रखना और भी मनस्विताका काम हो जाता है। ऊपरसे जब कविको मालूम हो कि हज़ारों आदमी उसकी कृतिकी परख उसी दम कर डालनेको तैयार बैठे हैं तब उसके अन्दाज़े बयाँपर एक और बोझ आकर बैठ रहता है—लोकप्रिय होनेका बोझ।

जबतक युद्ध नहीं हो रहा था राजनीतिज्ञोंसे ज़्यादा उत्साहसे प्रेमके गाने कवियोंके यहाँ गाये जा रहे थे। यह प्रेम, कहना न होगा, ज़्यादातर हवाई होता था; क्योंकि सचमुचका प्रेम करनेके लिए आदमीको पहले आदमी और साथमें हो सके तो कवि होना चाहिए जब कि हमारे अधिकांश गायक कवि पहले कवि हैं फिर कुछ और। इस तरहके प्रेम-काव्यने भाषाके साथ रन्देका-सा सलूक किया है और सब जगह एक-सो भावनात्मक प्रतिक्रियाओंका सपाट, पनीला, सलोतर साहित्य पैदा हुआ है।

लाल क़िलेके कविसम्मेलनकी कविताएँ इसी सलोतर भाषाके चंगुलमें फँसी हुई थीं। कुछ कवियोंमें इससे छूटनेकी वीरोचित छटपटाहट थी, कुछमें इसीको अपने नये कथ्यके साथ निबाहनेकी मजबूरी थी, कुछमें ये दोनों परिस्थितियाँ नहीं थीं और एक बिलकुल ताज़ा साक्षात्कार युद्धसे था—पर तब ऐसा न था कि उनकी कृतियाँ भाषाकी सशक्तताका दावा करती ही हों। निस्सन्देह एक बड़ी बात हुई—किसी कविपर आवाज़ें नहीं कसी गयीं—किन्तु इस घटनापर तो वह कहावत लागू होती है कि ताली एक हाथसे नहीं बजती—कुछ कविताने मोहित किया और कुछ जनताने आखिरी वक़्त तक उम्मीद रखी। श्रोताओंका काम, कुल मिलाकर, खरा रहा। वे बहुत-कुछ चाहते थे, पा भी सकते थे, किन्तु यदि सब-कुछ न पाकर भी वे शान्त रहे तो इसीलिए कि उन्हें कवियोंकी राष्ट्रीय मनोबल बढ़ानेकी इच्छामें सन्देह न था, सामर्थ्यमें पूरा विश्वास चाहे न हुआ हो।

ये कविताएँ सुनते हुए मुझपर जिस चीज़ने सबसे ज़्यादा असर डाला वह थी कवियों और युद्धके बीचकी वह दूरी जो आज भी, उसकी सारी ईमानदारीके बावजूद, बनी हुई है। युद्धक्षेत्रका वर्णन करने योग्य भाषा न पाकर ही शायद खड़ी बोलीके किसी कविने इसका कोई स्पष्ट प्रयत्न नहीं किया। ब्रजभाषाके कवि श्री रामललापर ही यह काम पड़ा और उन्होंने उसे बखूबी निभाया। माना कि उनका अमृत-ध्वनि छन्द प्राचीन युद्धकी स्मृति जगाता था, परन्तु वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कुछ कम न था। वास्तवमें यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी क्योंकि जिस लय-तालपर आजकी अनुभूति गति पाती है वह उसमें मौजूद थी, कई अन्य कवि-ताओंकी घूम-घूमकर एक ही टेकपर आनेवाली रेतती हुई गतिसे वह मुक्त थी।

श्रीमती लक्ष्मी त्रिपाठीकी कवितामें कथावस्तु—एक वीरगति प्राप्त सैनिक-की वापसी एक बहुत अछूती चीज़ थी। यह कवयित्री औरोंके मुक़ाबले युद्धके कुछ अधिक निकट जान पड़ी। इन्होंने भावावेग और उत्साहवर्द्धन-जैसे सर्व-सुलभ उद्देश्योंको छोड़कर युद्धकी एक कथा कहनेका प्रयास किया था। कितना अच्छा होता यदि ऐसी और भी कविताएँ सुननेको मिलतीं—ज़रा बन्दिश और कसी होती तो हर्ज न था। इस दृष्टिसे डॉ० आनन्दकी कवितामें भी काफ़ी वर्णनात्मक तत्त्व था और वह रचना इसीलिए प्रभाव डालती थी कि उसमें केवल आवेश नहीं कुछ ठोस ज़मीन भी थी।

एक और प्रकारकी कविताने इस कविसम्मेलनमें अपना रूप प्रकट किया: वह थी आन्तरिक द्वन्द्वकी कविता। राधेश्याम 'प्रगल्भ' की रचना, जिसमें कवि पहले ही प्रश्न पूछता है कि यह लड़ाई कैसी है कि मन्दिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरद्वारे सब उसके शिकार हैं, युद्धको आवश्यकतापर सन्देहकी दृष्टि नहीं डालती थी, युद्धके अन्तिम उद्देश्यके प्रति पहले जिज्ञासा और फिर निश्चय प्रकट करता था। राष्ट्रीय एकता अर्थात् आज़ादीके लिए उसमें जो ललक छिपी थी वही कविताके शरीरको लावण्य देती थी—कविको बल खाते छन्दों और लचकती आवाज़का सहारा नहीं लेना पड़ा था। परन्तु इस प्रबुद्ध स्वरकी रचनाओंमें एक और उदाहरण, कुछ दूसरे ढंगका, उल्लिखित किये बिना चित्र पूरा नहीं होगा। कविवर श्री भवानीप्रसाद मिश्रने कहा—

जब आकाश घिरा हो, और भयंकर लगता हो
जब रह-रह कर कम्प तुम्हारे मन में जगता हो
पाँवों के नीचे की धरती खिसक रही-सी हो
आसपास की सारी दुनिया सिसक रही-सी हो
ऐसे समय अकेले ही तुम गाकर तो देखो
तूफ़ानों पर अपने स्वर को छाकर तो देखो
कण्ठ खोलकर गाने से सब सम्भव होता है
हाहाकार बदल कर बरबस कलरव होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़ में चेतन में स्वर-अंकुर फूट फैलते हैं
और कि उसके स्वर लद-लदकर टूट फैलते हैं
इतना ग़लत प्रभाव कभी भी उगा नहीं कहीं
जिसकी सन्ध्या में पंछी की स्वर-झंकार नहीं।

सम्पूर्ण आयोजनके पीछे छिपी हुई जन-शक्तिका अच्छेसे अच्छा उपयोग आयोजकों और कवियोंने किया था— यानी जैसा वे आयोजक अपने साधनों और सदिच्छासे तथा ये कवि अपने काव्यसे कर सकते थे। आयोजकोंने कवियों-को जनताके आमने-सामने खड़ा कर दिया था। और सभापति श्री बच्चनके एक छोटे परन्तु मार्मिक भाषणने उन्हें आजकी आवश्यकतासे परिचित करा दिया था। यदि सभी कवि उस जनतासे घनिष्ठ सम्पर्क नहीं स्थापित कर सके तो कहीं-न-कहीं अनुभवकी सच्चाईमें कोई कमी अवश्य रही होगी। राष्ट्रकवि दिनकरकी ओजस्वी रचनाकी ये पंक्तियाँ आजके युद्ध-साहित्यके प्रणेताओंको मार्ग-निर्देश कर सकती हैं, उन्हें बता सकती हैं कि हथियारोंके नहीं मर्दोंके गीत कैसे गाये जाते हैं। ये पंक्तियाँ इसी सम्मेलनमें पठित उनकी रचनासे उद्धृत हैं –

ज़रूरत है उन आँसुओं की,
जो ढलते नहीं पलकों में टँगे रहते हैं।
और दर्द से गम्भीर उन इरादों की
जो कविता बन कर नहीं फूटते
न घाटों को तोड़ कर बहते हैं।

अन्तमें दिनकरजीने जब कहा कि—

दर्द जब भीतर गुमसुम पलेगा
एक दिन इस्पात बन ढलेगा

तो इस कवि सम्मेलनमें जितना कुछ सतही और फ़ौरी था उसका रहस्य खुल गया। युद्धकी अनिवार्यता, उसका सत्य, उसका दर्द अभी अधिकांश कवियोंके भीतर गुमसुम पला नहीं है। यदि पलेगा तो निश्चय ही एक दिन वह इस्पात बनकर ढलेगा—कवितामें ही सही।

एक बात और—और फिर यह समीक्षा समाप्त होती है। इसी कवि सम्मे-लनमें यह घोषणा की गयी थी कि साहू दम्पति श्री शान्तिप्रसाद जैन तथा श्रीमती रमा जैनने युद्धमें वीरगति पाये वीरोंके बच्चोंमें-से किन्हीं ५० की शिक्षा-दीक्षाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भार अपने ऊपर लिया है। यह घोषणा इस पत्रके आधारपर थी जो उन्होंने प्रधानमन्त्रीको उनके जन्मदिनपर लिखा था—

"भारतीय पौरुषके महायज्ञके पुरोधा श्रद्धेय शास्त्रीजी,

आजके दिन आपके शुभ जन्म-दिवसके अवसरपर मैं साहू-जैन प्रतिष्ठानके द्वारा किया गया एक विनम्र संकल्प आपकी सेवामें अर्पित करती हूँ।

संकल्प यह है कि भारत-पाकिस्तान युद्धमें वीरगति पाये हुए वीरोंके बच्चोंमें-से किन्हीं ५० बच्चोंकी शिक्षा-दीक्षाका भार साहू-जैन प्रतिष्ठान लेता है। यह प्रतिष्ठान इस कार्यपर औसतन ५,००० रुपये प्रतिमास व्यय तबतक वहन करेगा जब ये बच्चे पढ़-लिखकर नयी पीढ़ीके सफल नागरिक बन जायें।"

यह कुल ज़िम्मेदारी उठानेमें लगभग १७-१८ वर्ष तककी अवधिमें कोई दस-ग्यारह लाख रुपया व्यय होगा। साथ ही, शहीदोंके ११ परिवारोंको एक-एक सौ रुपया प्रतिमास एक वर्ष तक देनेका भी संकल्प जैन-दम्पतिने किया है। इसकी प्रेरणा उन्हें दिनकरकी इन पंक्तियोंसे मिली थी—

युद्ध का देवता पुराना रक्त नहीं पीता है।
वह उन्हें खा कर जीता है
जो इनसानियत के सिरताज
और अगली पीढ़ी की जान हैं
यानी जो ताज़े, हरे
कच्चे और नौजवान हैं।

यह दान कोरा दान नहीं है, यह उन स्त्रियों और बच्चोंकी ओर ध्यान आकृष्ट करता है जिनके भविष्यको हम युद्धकी एक प्रासंगिक घटनाके रूपमें देखते हुए एक मानवीय ट्रेजेडीके रूपमें नहीं देख पा रहे हैं। आज कितना ही अच्छा और उपयोगी प्रचार साहित्य इन वीर पत्नियों और वीर पुत्रोंके जीवनसे प्राण-शक्ति ले सकता है इसकी ओर अभी कवियोंका ध्यान नहीं गया है। यदि भविष्यमें कभी किसी कविसम्मेलनमें अब्दुल हमीद और आशाराम त्यागीकी कहानी वैसे ही सुननेको मिले जैसे आल्हा-ऊदलकी कहानी आज भी मिलती है, तो वाणी और श्रोता दोनों कृतकृत्य होंगे। ये कहानियाँ लोकप्रिय काव्यके रचयिताको आज एक बड़ी चुनौती दे रही हैं।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स की ३०० वीं पुस्तक

राष्ट्रपति राधाकृष्णन्

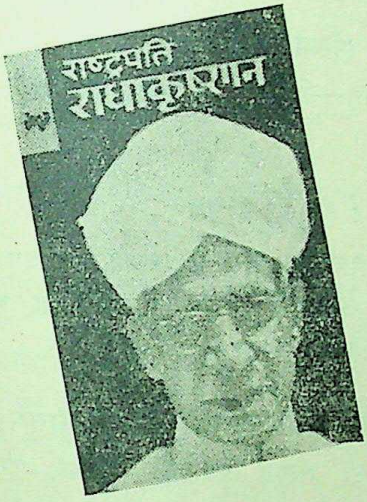

हिन्द पॉकेट बुक्स-द्वारा प्रकाशित पुस्तकोंकी अबतक एक करोड़से अधिक प्रतियाँ छप चुकी हैं !

— और अब —

हिन्दीके साथ-साथ उर्दू में भी पॉकेट बुक्स प्रकाशित हो रही है ।

हिन्द पॉकेट बुक्स शाहदरा, दिल्ली-३२,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन और महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

❀ **धीरे बहे दोन रे : दूसरा भाग : मिखाइल शोलोखोव**

नोबेल पुरस्कार विजेता श्री शोलोखोवके विश्व-प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'तिखी दोन'का अविकल हिन्दी अनुवाद, जो अँगरेजीमें 'ऐण्ड क्वाएट फ्लोज़ द डॉन' नामसे प्रसिद्ध है। इसमें दोन नदीके किनारे बसे कज़्ज़ाकोंकी ज़िन्दगीका यथार्थ और सजीव चित्रण किया गया है।

❀ **भटकती राख : भीष्म साहनी**

तीसरा कहानी-संग्रह—जिसमें उनकी बीस कहानियाँ हैं, जो इन दिनों बहु-चर्चित रही हैं।

❀ **धूप का टुकड़ा : अमृता प्रीतम**

कविताओंका एक नया संकलन। पंजाब-कोकिला अमृता प्रीतमकी मार्मिक एवं अनुभूतिप्रवण कविताएँ। साथ ही वह प्रसिद्ध रचना भी जिसपर उन्हें साहित्य-अकादेमी पुरस्कार मिला था।

❀ **छोटे आदमी की बड़ी कहानी : राही मासूम रज़ा**

परमवीर चक्र श्री अब्दुल हमीदकी कहानी, उन्हींके गाँव-वासीकी ज़ुबानी—जिसकी भूमिका लिखी है—प्रतिरक्षा-मन्त्री श्री यशवन्त राव चह्वाण ने।

राजकमल प्रकाशन

८ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली – ६

साइन्स कॉलेजके सामने, पटना – ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समसामयिकी

युद्ध-संकट और साहित्यकार

सुमित्रानन्दन पन्त

युद्ध एक नैतिक अनिवार्यता है क्योंकि वह सच्ची शान्तिका एक पक्ष है।

यह युद्ध एक महायुद्धका अंश है और ऐसी संस्कृति जन्म ले रही है जिसे भविष्यमें बहुत बड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। शान्ति एक गूढ़ और रहस्यमय शब्द है। उससे अनर्थकी सम्भावनाएँ कभी-कभी जुड़ जाती हैं, इसीलिए युद्ध अनिवार्य हो जाता है और वह इन्हीं अर्थोंमें नैतिक भी हो जाता है। यह युद्ध हमारे लिए एक वरदान भी साबित हो सकता है। कभी-कभी राष्ट्रको लौह-सदृश बनाने और विकसित करनेमें युद्धका बड़ा योगदान होता है। बहुत-से राष्ट्रोंकी नींद खुल जाती है। जब मैं युद्धकी बात करता हूँ तो हिटलरसे अलग अर्थमें करता हूँ। युद्ध एक नैतिक अनिवार्यता इसी रूपमें है कि वह शान्तिका—सच्ची शान्तिका—एक पक्ष है।

महादेवी वर्मा

संकट हमारे मूल्योंपर खड़ा है और अपने मूल्योंके प्रति हमें आस्था होनी चाहिए।

हम जानते हैं कि भारत कभी भी आक्रामक देश नहीं रहा है। हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्परा अधिकार-लिप्सा और धन-लिप्साकी परम्परा नहीं रही है। यह सच है कि इस समय हमारे मूल्योंपर संकट खड़ा हो गया है। देखनेमें हम सब एक ही आकाशके नीचे खड़े हैं, किन्तु एक तानाशाहके रूपमें जेहाद बोल रहा है और कोई अपने मूल्योंकी रक्षाके लिए सन्नद्ध है। असलमें हमें अपने मूल्योंके प्रति आस्था होनी चाहिए।

हजारीप्रसाद द्विवेदी

हमें उन सब प्रयत्नोंके संवर्धनका संकल्प करना होगा जो देशको समृद्ध और शक्तिशाली बनाते हैं।

हम नहीं जानते कि हमारे ऊपर आया हुआ संकट कबतक रहेगा। विजय हमारी होगी, यह ध्रुव सत्य है। पर इस बीच हमें अपने पावन कर्तव्यका दृढ़ता-के साथ पालन करते हुए सब प्रकारके त्यागके लिए प्रस्तुत रहना पड़ेगा। हमें उन सब प्रयत्नोंके संवर्द्धनका संकल्प करना होगा जो देशको समृद्ध और शक्ति-शाली बनाते हैं। इस समय हमें संकोचनशील मनोवृत्तिकी नहीं, विकसनशील मनीषाकी आवश्यकता है।

नन्ददुलारे वाजपेयी

साहित्यकार अपना दायित्व समझते हैं।

साहित्यकार अपने दायित्वको भलीभाँति समझते आये हैं और आज भी समझते हैं। परिस्थितियोंसे विवश होकर वे दायित्वका कहीं सम्पूर्ण निर्वाह न कर सकें, यह बात दूसरी है। किन्तु वैसी स्थितिमें साहित्यकार परिस्थितियोंसे संघर्ष करते हैं। उन्होंने विद्रोह भी किया है, परिस्थितियोंको सुधारा और उससे ऊपर भी उठे हैं।

स्वतन्त्रतासे पूर्वके साहित्यिक इतिहासको देखनेसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि साहित्यकारोंने युगकी प्रगतिका साथ दिया है, संघर्ष किया है, और अपने दायित्वके निर्वहनमें वे किसी अन्य वर्गके लोगोंसे पीछे नहीं रहे हैं। बीसवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धपर दृष्टि डालनेपर स्पष्ट देखा जा सकता है कि इस कालके प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी प्रमुख साहित्यिक राष्ट्रीय चेतनासे सम्पन्न रहे हैं और सभीने अपनी-अपनी दृष्टिसे उसके विकासमें सहायता पहुँचायी है। आज भी वे पीछे नहीं रहेंगे।

जैनेन्द्र कुमार

जीवनकी समग्रता और सम्पूर्णताके प्रति अपनेको दायी माननेवाले साहित्यके अवदानकी भूमिका ठीक यही हो सकती है।

●

प्रश्न जो होता है वह महज इस बहाने कि भारत गान्धीका देश है। मगर इतिहासमें एक विचित्र विरोधाभास भी देखनेमें नहीं आता है क्या? प्रेम और शान्ति और सत्यके जितने अवतार हुए उनका अधिकांश जीवन युद्धमें गया।

युद्ध जैसे कसौटी है धर्मकी। हर सत्य, हर प्रेम और हर शान्तिको जैसे इस परीक्षणकी आगमें-से परखा जायेगा। करनेका क्षेत्र कुरुक्षेत्र है। मगर कुरुक्षेत्र, देखते हैं कि, युद्धक्षेत्र बन ही जाता है। फिर उससे अलग धर्मक्षेत्र भी दूसरा नहीं रह जाता है। परम धर्मग्रन्थ महाभारतका सारसत्व है गीता। गीताका उपदेश किसी निभृत एकान्तमें नहीं किया गया है, गीता ठीक युद्धके मध्य सुनायी गयी है और सामने प्रचण्ड कर्मकी चुनौती है।

समझा जा सकता है कि उसके लिए रोष और आवेशकी आवश्यकता होगी, किन्तु गीतामें स्थितप्रज्ञता बतायी जाती है जिसमें किसी आवेशके लिए अवकाश नहीं है, जहाँ कर्तृत्व तकका अभिमान नहीं है, जहाँ व्यक्ति विराटके हेतुसे तद्गत हो जाता है, जहाँ जीवन और मरणमें कोई अन्तर नहीं रह जाता है। ऐसे युद्ध धर्मयुद्ध हो जाता है। तत्कालकी राजनीतिके हेतुकी क्षुद्रतासे वह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अभिप्रायकी विराटताको निष्पन्न करनेवाला हो जाता है। इस रूपमें युद्ध निन्दनीय पक्ष रखते हुए भी वरणीय बन जा सकता है।

तिसपर युद्धका नक़्शा भी अब बदल गया है। युद्धके उपादानोंमें बहुत अन्तर आ गया है। युद्ध अब टोटल बन गया है और उसका प्रधान मोर्चा काग़ज़ी हो गया है कि जिस माध्यमसे कूटनीति अपना काम करती है और जिसके सहारे राष्ट्रसमाज आपसमें लड़ा करते हैं। इस पद्धतिमें युद्धकी घटनाके सामयिक पहलूसे उसका नैतिक पहलू ऊपर आ जाता है। और यही पहलू है जहाँ साहित्यिक और साहित्यकी जगह ही नहीं है बल्कि उसका और उसके सांस्कृतिक मनोभाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विशेष महत्त्व भी है।

युद्धको घोर संसार-कर्म बताकर उससे किसी माने हुए अध्यात्म अथवा आदर्श अथवा शान्ति अथवा नैतिकताको दूर सुरक्षित एकान्तमें रखनेसे मैं नहीं मानता कि जीवनकी कृतार्थता अथवा पूर्णता सिद्ध हो सकती है। जगत्-कर्मके घमासानमें-से मानवताको निकालना और उस आगमें-से जलकर उजलना होगा। और जीवनकी समग्रता और सम्पूर्णताके प्रति अपनेको दायी माननेवाले साहित्यके अवदानकी भूमिका भी ठीक यही हो सकती है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

मानव मनमें युद्धको गौरवपूर्ण भावके रूपमें प्रतिष्ठित करनेका कार्य कवियोंने किया और वे ही करेंगे।

युद्ध बर्बर कृत्य है और कविता सभ्यताकी वाणी है, इस आधारपर कविताको युद्धसे अलग नहीं रखा जा सकता। युद्ध वह जन्तु है जो अपनी सेवा सभ्यताके अग्रणी लोगोंसे करवाता है। और कविताको भी असभ्यतासे परहेज नहीं है।

युद्धकी कविता केवल युद्धके ही समय नहीं लिखी जाती है। वह तब भी लिखी जाती है और लिखी जानी चाहिए जब युद्ध शुरू नहीं होते और उस समय भी जब युद्ध खत्म हो जाते हैं। संसार अभी भी उन कविताओंके प्रभावमें है जिन्हें हम युद्ध-काव्य कह सकते हैं। मनुष्यके मनके भीतर युद्धको गौरवपूर्ण भावके रूपमें प्रतिष्ठित करनेका सारा कार्य कवियोंने किया है।

विद्यानिवास मिश्र

भारतीय साहित्यकार विदुर और संजयकी भूमिका नहीं अदा करेगा।

हिन्दुस्तानकी लड़ाई धर्म-निरपेक्षताके लिए नहीं धर्मके लिए है : उस धर्मके लिए जो सर्वभूत मैत्रीपर आधृत है। धर्म-निरपेक्षताकी धूम मचाते-मचाते हम सचमुच धर्म-निरपेक्ष हो गये, स्व-निरपेक्ष हो गये, हमारी राष्ट्रीयता खोखली हो गयी।

हमारी इस धर्म-निरपेक्षताने पहला धक्का खाया चीनसे। तब हम कुछ सावधान-भर हुए। दूसरा धक्का मिला यह पाकिस्तानसे, उस समय जब हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने राजनैतिक दायित्वोंके निर्वाहमें लोकमत और न्यायके विरुद्ध जाकर उससे समझौता करनेके लिए मुहर लगा रहे थे।

इस धक्केने हमें विवश किया कि हम अपने 'स्व' के बलपर खड़े हों। इस 'स्व' के आह्वानने हमारा स्वरूप बदल दिया। हमारी राष्ट्रनीतिका स्वप्न भंग हुआ और हमने इस दिक्कालातीत देशके विराट् स्वरूपको पहचाना। हमारा हिन्दू हिन्दू न रहा, मुसलमान मुसलमान न रहा, ईसाई ईसाई नहीं।

यह युद्ध लम्बा चलेगा : रणक्षेत्रमें न सही, राजनीतिके क्षेत्रमें, अर्थनीतिके क्षेत्रमें। और यह युद्ध जिन आदर्शोंपर चलना है वे आदर्श राष्ट्रीय होंगे। राष्ट्रीयका अर्थ यह नहीं कि वे किसी संकीर्ण सीमा या ऐतिहासिक ऋण या प्रतिशोधसे बँधे होंगे, राष्ट्रीयका अर्थ व्यापक होगा : उस जीवित सत्यपर आधृत जिसे हमारे लोगोंने जिया और जिन दूसरोंने जीना चाहा उन्हें जीना सिखाया पर उन्हें हमने बाँधा नहीं।

हमारा यह युद्ध इसलिए जितना बाहर है उतना ही भीतर अपने मोहोंसे, ढोंगोंसे है, अपनी कमजोरियोंसे-बेईमानियोंसे है। बड़ा भरोसा होता है साधारण जनताके मनोबलपर, उससे कम होता है राजनेताओंकी दृढ़ता-घोषणाओंपर, पर सबसे कम भरोसा होता है भारतके बुद्धिजीवीपर। वह आज भी निरपेक्ष है।

माना इस वर्गने सत्रह वर्ष आत्मपीड़ा झेली है, वह युद्धके प्रति झागदार उत्साह नहीं रख सकता। पर तो भी क्या इस विराट् जागरणमें उसे निरपेक्ष रहना चाहिए? वह विवेकशील हो, दूरदर्शी हो, संयत हो, अनाविष्ट हो : इससे संघर्षको बल मिलेगा; मगर वह विदुरकी और संजयकी भूमिका क्यों अदा करे, कृष्णकी भूमिका क्यों न अदा करे?

बालकृष्ण राव

इस समय देशकी युद्धकी आवश्यकताएँ ही प्रमुख हैं।

साहित्यकारको राष्ट्रके सम्बन्धमें अपने दायित्वके सम्बन्धमें पुनर्विचार और पुनरावलोकन करना ही पड़ेगा। जन साधारणकी दृष्टिमें साहित्यकार शान्तिके समय एक विशिष्ट और बेकार-सा आदमी हमारे देशमें माना जाता है। उसका स्वरूप अधिकांशतः एक मनोरंजनकर्ताका रहा है। इस समय हमें यह मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेना चाहिए कि हम साहित्यकार बादमें हैं और देशके सामान्य नागरिक पहले हैं। इस समय देश, राष्ट्र, समाज और युद्धकी आवश्यकताएँ ही प्रमुख हैं।

नेमिचन्द्र जैन

साहित्यकार अपने गम्भीर और विराट् उत्तरदायित्वके प्रति सजग हो।

●

हमारे देशकी चेतनाको इस समय जो गहरा झटका एक विश्वासघाती पड़ोसीकी दम्भपूर्ण अहम्मन्यतासे लगा है उसके आवेशमें उस पड़ोसीको गाली देनेके बजाय हमें अपनी नैतिक चेतनाको जाग्रत और परिपुष्ट करनेकी आवश्यकता है, इच्छित विचारोंके मायालोकमें दौड़नेके बजाय अपने वैयक्तिक और सामाजिक जीवनके यथार्थको और भी गहराईसे, तीव्रतासे, सघनतासे पकड़ने और चित्रित करनेके लिए सन्नद्ध होनेकी आवश्यकता है। साहित्य इसी स्तरपर किसी देशको संकटका सामना करनेके लिए तैयार करता है जो अन्य किसी क्रिया-द्वारा सम्भव नहीं।

किसी आततायी, आक्रमणकारीका सामना करनेके लिए सक्षम और समर्थ राष्ट्रका निर्माण हम बुद्ध, अशोक और गान्धीकी परम्पराको छोड़, राणा प्रताप और शिवाजीकी परम्पराकी दुहाई देकर नहीं कर सकेंगे। वह तो हम अपने वैयक्तिक और सामाजिक जीवनमें-से अवसरवादिता और पाखण्डको निकालकर जीवनमें एक लक्ष्य और आदर्शकी स्थापना और उसमें आस्थाको दृढ़ करके ही सम्भव बना पायेंगे। हमारे सभी सर्जनशील और विचारक साहित्यकार अपने इस गम्भीर और विराट् उत्तरदायित्वके प्रति सजग हों, तभी इतिहास इस बातकी साक्षी दे सकेगा कि हमने संकटकालमें अपने सही कर्त्तव्यको पहचाना और निभाया है।

रघुवीर सहाय

यह इस समय अनिवार्य ही नहीं आवश्यक है।

●

एक चीज़ सवालोंसे परे है—युद्ध इस समय अनिवार्य ही नहीं आवश्यक है। पर एक और चीज़ सवालोंके ज़रिये निरन्तर स्पष्ट होती रहनी चाहिए—युद्ध किसलिए और किस अन्तिम उद्देश्यसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनके प्रथम आक्रमणके समय साहित्यमें खासी खलबली मची थी। उस समय सबको दो चीज़ोंकी चिन्ता थी—देशकी और नेहरूकी। आज नेहरू नहीं हैं पर देश है और पहलेसे ज़्यादा मज़बूत है क्योंकि अब उसे सिर्फ़ अपनी हिफ़ाज़त करनी है, इसलिए, समझा जा सकता है कि अब 'चीनकी चटनी बना लें'-मार्का साहित्य उतनी बदहवासीके साथ न लिखा जायेगा। निस्सन्देह यदि इस समय कविता लिखनेकी वह ज़रूरत किसीको नहीं मालूम होती जो कला-सृष्टिके मूलमें होनी चाहिए यानी जो कलाकारकी अदम्य आवश्यकता होती है तो कविता लिखे बग़ैर भी देशकी शक्ति बढ़ेगी! यदि किसीको मालूम होगा तो वह लिखेगा ही और शायद इस समय ज़्यादा गहरी चीज़ रची जायेगी। आज हम जिन मान्यताओंसे गुत्थमगुत्था हैं वे हमारे संस्कारोंपर घाव करनेवाली मान्यताएँ हैं।

तानाशाही और लोकतन्त्रका संघर्ष लौट रहा है और हम जाने-अनजाने दुनियाकी बड़ी शक्तियोंसे इस संघर्षमें शामिल होनेकी आशा करने लगे हैं। अगर हमारे लोकतन्त्रकी बात है तो कोई दूसरा देश हमसे ज़्यादा उसके लिए कष्ट नहीं उठाना चाहेगा! और तानाशाही भी किसीको अखरेगी नहीं जबतक कि वह उसके दरवाज़ेपर अपना डण्डा न खटखटाये। ग़रज़ यह कि यहाँ भी हमें अपनी कुछ निजी कोशिशोंपर निर्भर करना पड़ेगा—और इनमें युद्ध—आज नहीं तो इसी पीढ़ीके उत्तरार्द्धमें अनिवार्य है।

अमृत राय

इस समय साहित्यकार अपनी शान्तिका पल्ला पकड़े अलग नहीं बैठा रह सकता।

●

साहित्यकार प्रकृत्या जीवनधर्मी होता है; मानवधर्मी होता है; शान्तिकामी होता है। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। उच्चतर जीवन-मूल्योंकी सृष्टिके लिए यही उसकी आन्तरिक माँग होती है। लेकिन जब ऐसा कोई संकट सामने आ जाता है, जिसमें-से हम आज गुज़र रहे हैं, तब साहित्यकार भी अपनी शान्तिका पल्ला पकड़कर अलग नहीं बैठा रह सकता। हमें साहित्यकारके नाते बुद्धिजीवीके नाते, अपना कर्तव्य समझना है, अपनी भूमिका समझनी है। कर्तव्यका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोध नैतिकता-बोधमें-से ही आकार ग्रहण करता है और शक्ति पाता है। अतः हमारे लिए यह समझ लेना महत्त्वपूर्ण है कि इस युगमें सत्य और न्यायकी दृष्टिसे हमारी स्थिति कैसी है।

हम कोरे साहित्यकार नहीं हैं : हम अपने स्वतन्त्र देशके नागरिक भी हैं। उसकी स्वतन्त्रताकी रक्षाका अगर ज़्यादा नहीं तो कमसे कम उतना दायित्व हमारा भी है जितना देशके किसी अन्य नागरिकका। इस बातको जोर देकर कहनेकी जरूरत इसलिए पड़ती है कि पिछले दिनों हमारे साहित्यमें कुछ लोगोंने इस प्रवृत्तिका बड़े ज़ोरसे प्रचार किया है कि साहित्यकार एक ऐसा विशिष्ट प्राणी है जिसका कोई सामाजिक दायित्व नहीं है।

श्रीकान्त वर्मा

कविकी इस समय सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है कि वह ऊँचे जीवन-मूल्यों और आदर्शोंको खोनेसे बचाये।

जो लोग अबतक नयी कविताके रचयिता नये कवियोंको 'मानव-विरोधी' कहते रहे हैं, आज युद्ध-समर्थक काव्यकी माँग कर, वास्तविक मानव-विरोधी भाषामें बात कर रहे हैं। मगर इससे भी बड़ा व्यंग्य यह है कि जो कवि और आलोचक अभी कलतक 'शाश्वत' साहित्यकी माला जप रहे थे, आज 'क्षण-भंगुर' साहित्यका झण्डा उठा रहे हैं। आधुनिक युगका युद्ध भी आधुनिक होगा और उसकी ट्रेजेडी भी आधुनिक है। दो हमलोंके दौरान भारतमें जिस भड़-भड़िया काव्यकी रचना की गयी है, उसे श्रेष्ठ ठहरानेके लिए पश्चिमके युद्धोत्तर साहित्यकी दुहाई देना ग़लत है। पश्चिमका युद्धोत्तर साहित्य युद्धकी भयानक स्मृतियोंका साहित्य है, जब कि युद्धको लेकर लिखा गया भारतीय साहित्य सस्ती भावुकता और ओछे आत्म-प्रदर्शनसे भरा हुआ है। युद्धके दौरान कविकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यही हो सकती है कि वह पागलपनके ज्वारमें ऊँचे जीवन-मूल्योंको, आदर्शोंको खोनेसे बचाये; कविताकी, सौन्दर्यकी, कलाकी रक्षा करे। जो कवि कविताकी, कलाकी रक्षा नहीं कर सकते, उनका यह दावा महज स्वाँग है कि वे समाजकी रक्षा करेंगे। गिरी हुई इनसानियतका साहित्य किसीकी रक्षा नहीं कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय-ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार

प्रगतिके बढ़ते चरण

भारतकी चौदहों भाषाओंमें-से हर साल सर्वश्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्यिक कृतिपर एक लाख रुपयेका पुरस्कार देनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रथम पुरस्कार मार्च १९६६ तक घोषित कर देनेकी दिशामें यथेष्ठ प्रगति हुई है। भाषा-वर्ग समितियों-द्वारा चुनी गयी सात पुस्तकोंका हिन्दी अनुवाद समाप्तप्राय है। अनुवादों-को परिमार्जित करके मुद्रणमें देनेका प्रयत्न चल रहा है। ये पुस्तकें सात भाषाओंकी हैं—बंगला, मराठी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मलयालम, हिन्दी। इस प्रकार छह पुस्तकोंका हिन्दी अनुवाद प्रकाशनाधीन है।

द्वितीय पुरस्कार (१९६६-६७) की प्रगति यथा-कार्यक्रम हो रही है। हर भाषाकी परामर्श समिति पुस्तकें संस्तुत कर चुकी है। अब भाषा-वर्ग समितियों-का गठन-कार्य आगे बढ़ रहा है।

तृतीय पुरस्कार (१९६७) के लिए पुस्तक प्रस्ताव-पत्र भेजे जा चुके हैं। योजना पुस्तिकाका नया संस्करण प्रकाशित हो गया है। प्रस्ताव-पत्र भारतीय ज्ञानपीठके कार्यालयमें पहुँचनेकी अन्तिम तारीख १५ नवम्बर घोषित है। नवम्बरके अन्ततक आनेवाले प्रस्ताव-पत्रोंपर भी विचार हो सकेगा। तृतीय पुरस्कारके लिए जो पुस्तकें प्रस्तावित की जायेंगी उनकी प्रकाशनावधि सन् १९३५ और १९६० के बीचकी निर्धारित की गयी है।

इस सन्दर्भमें एक निवेदन यह है कि पुस्तकें प्रस्तावित करते समय इस तथ्यको विशेष रूपसे दृष्टिमें रखा जाये कि एक लाख रुपयेके पुरस्कारके लिए जो पुस्तकें प्रस्तावित हों वे केवल समस्त भारतीय भाषाओंको सर्जनात्मक साहित्यिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतियाँ ही हों और उन्हें उस भाषाको सर्वश्रेष्ठ माने जानेके पर्याप्त कारण हों। गत वर्ष कतिपय प्रस्तावक बन्धुओंने इन तथ्योंकी ओर समुचित ध्यान नहीं दिया था। फलस्वरूप भाषा परामर्श-समितियोंको इस दिशामें विशेष कठिनाईका सामना करना पड़ा।

इसी सम्बन्धमें एक विनम्र निवेदन और, कि यदि किसी कारणवश कोई सज्जन प्राप्त प्रस्ताव-पत्रका उपयोग न करना चाहें तो वह उसे कृपया अपने सम्पर्कके किसी अन्य प्रबुद्ध पाठकको देकर भर-भेजनेका आग्रह करें। इस प्रकार अतिरिक्त समय नष्ट किये बिना ही प्रस्ताव-पत्रका वांछित उद्देश्य पूरा हो जायेगा।

पुरस्कार योजनाकी सार स्थिति यह कि इस समय एक साथ तीन-तीन पुरस्कारोंका काम पूरी गतिसे चल रहा है, और देश-भरके शीर्षस्थ विद्वानोंका सहयोग हमें उपलब्ध है। वास्तवमें अब कार्य इसी क्रमसे होता रहेगा कि किसी भी समय तीन वर्षकी सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ विचाराधीन रहेंगी और उनमें-से प्रत्येक आगामी वर्षके लिए एक कृतिके चुनावकी ओर निश्चित कार्यक्रमके अनुसार कार्य बढ़ता रहेगा।

● ●

चौलुक्य कुमारपाल

लक्ष्मीशंकर व्यास

★

उत्तर प्रदेश शासन-द्वारा पुरस्कृत अपने विषयका अद्यावधि अनुपम ग्रन्थ। भारतीय इतिहासके अध्ययनमें उपयोगी

मूल्य ४·५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीविश्व
कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ

• विश्वकी प्रथम १२ साहित्यिक भाषाएँ

यूनेस्कोकी एक शोध-सूचीके अनुसार विश्वकी प्रथम बारह भाषाएँ इस प्रकार हैं: १. चीनी, २. अँगरेज़ी, ३. रूसी, ४. हिन्दी, ५. स्पेनिश, ६. जर्मन, ७. जापानी, ८. बंगला, ९. अरबी, १०. फ्रेंच, ११. पुर्तगाली, १२. इतालवी।

भारतके लिए गर्वका विषय है कि इन भाषाओंमें दो भारतीय भाषाएँ हैं। हिन्दीके लिए विशेष गर्वकी बात है कि वह विश्वकी चौथी बड़ी साहित्यिक भाषा है।

• एक दिनमें कुल ४५ लाख प्रतियाँ !

भारतकी विभिन्न भाषाओंमें कुल दैनिक समाचार-पत्र हैं ४६५, इनकी कुल प्रकाशित प्रतियोंकी संख्या है ४५ लाख।

मगर यह एक दिनमें ४५ लाखका आँकड़ा इस क्षेत्रमें इतना नगण्य है कि औसत बैठानेपर १·१ से आगे नहीं सरकता। अफ्रीकाको छोड़कर एशिया ही एक ऐसा महाद्वीप है जिसमें दैनिक समाचार-पत्रोंका प्रसार विश्वमें सबसे कम है। यहाँ हर १०० व्यक्तियोंके पीछे ४ प्रतियोंकी खपत है, जब कि विश्वकी औसत १० प्रतियोंकी है।

• स्मृतिका स्थानान्तरण :

इंजेक्शन देकर एक व्यक्तिका ज्ञान और स्मृति दूसरे व्यक्तिमें पहुँचायी जा सकेगी। अमरीकाके लॉस एंजेल्स नगरके कुछ वैज्ञानिकोंने दावा किया है कि इस प्रकारके इंजेक्शन निकट भविष्यमें ही निकल आयेंगे। ज्ञान-प्राप्तिके सरलतम उपायकी खोजमें जुटे इन वैज्ञानिकोंने सिखाये हुए चूहोंके शरीरके कुछ अणुओंको साधारण चूहोंके शरीरमें पहुँचाकर इच्छित परिणाम प्राप्त किये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये विशेष प्रकारके अणु रिबोन्यूक्लेइक एसिड नामक शरीरके एक मूल तत्त्वमें पाये जाते हैं।

• नेहरू पुरस्कार

हर वर्ष स्वर्गीय श्री नेहरूके जन्मदिवस (१४ नवम्बर) पर भारतीय लेखकों-द्वारा लिखित और सोवियत-भारत मैत्रीकी अभिवृद्धि करनेवाली एवं स्थायी शान्तिका संवर्धन करनेवाली सर्वोत्तम साहित्यिक कृतियोंपर पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। भारतीय भाषाओंमें हुए रूसी कृतियोंके अनुवाद भी इस योजनामें सम्मिलित हैं।

इन पुरस्कारोंके लिए उम्मीदवारोंकी सिफ़ारिश करनेका अधिकार सार्वजनिक संस्थाओं, प्रकाशन गृहों तथा भारतीय समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओंके सम्पादक मण्डलोंको होगा।

प्रथम पुरस्कार १५००० रुपये नक़द तथा दो सप्ताहकी निःशुल्क रूस यात्रा-के रूपमें, दूसरा पुरस्कार ७५०० रुपये और दो सप्ताहकी निःशुल्क रूस यात्राके रूपमें दिया जायेगा, तथा तृतीय पुरस्कारमें सिर्फ़ ५००० रुपये नक़द दिये जायेंगे। इनके अतिरिक्त एक-एक हज़ार रुपयेके पाँच पुरस्कार और रहेंगे।

• जान राइनिसकी जन्मशती

लतवियाके महाकवि जान राइनिस (१८६५–१९२९) की जन्मशती गत-मास बहुत बड़े पैमानेपर मनायी गयी।

जान राइनिसके बारेमें डॉक्टर सुनीतिकुमार चटर्जीने कहा कि गीति-नाट्य-के क्षेत्रमें तो इस कविकी तुलना दान्ते, शेक्सपियर और गेटेसे की जा सकती है। राइनिसकी पुस्तकें रूसमें बार-बार प्रकाशित हुईं और उनके नाटक आश्चर्यजनक सफलताके साथ खेले गये।

• पुस्तक-मेला

दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें एक पुस्तक-मेला आयोजित हो रहा है। आयो-जक है नेशनल बुक ट्रस्ट ऑव इण्डिया। मेला-स्थल होगा बम्बई। एक पखवाड़े तक यह मेला चलेगा। इसी अवधिमें देशके प्रमुख प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओंका एक सम्मेलन भी आयोजित होगा, जिसमें पुस्तक-जगत्की समस्याओं-पर विचार-गोष्ठियाँ होंगी।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० जगदीश गुप्त
की कविताओं का संग्रह

हिम-विद्ध

हिमवान् हिमालय समस्त भारतीय चेतनाका देवालय रहा है : ऐसा देवालय जहाँ सत्य, शिव और सुन्दर तीनों एक साथ प्रतिमित हों, जहाँ पवित्रता और मांगलिकता ही नहीं, जड़में चेतन शक्तिका भी साक्षात्कार होता हो। यहाँ जो भी आता है वह एक भव्य शोभा और शक्तिके भावसे तो अविभूत होता ही है, जीवनके एक अपूर्व बोधसे भी स्पन्दित हो उठता है; मानो वहाँका विराट् सत्य उसके सम्पूर्ण अस्तित्वको विद्ध कर देता हो।

प्रस्तुत कविता संग्रहका 'हिम-विद्ध' नाम इसी विद्धताकी ओर संकेत करता है। हिम-देशके सम्पर्कने कविके अभ्यन्तर-की रिक्तताको जिस कोमल-स्निग्ध समृद्धिसे भर दिया है उसीका ये कविताएँ संवहन करती हैं।

एक बड़ी विशेषता इन कविताओंकी यह है कि विषय सूक्ष्म और चित्रात्मक होते हुए भी, ये सब अत्यन्त सरल और सरस—अपनेमें रमा लेनेवाली हैं। मूल्य ३.००

भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
द्वारा प्रकाशित
तथा श्री बालकृष्ण राव-द्वारा
सम्पादित मासिक

माध्यम' एक वर्ष की
अल्पावधि में
हर प्रबुद्ध पाठक की सबसे
प्रीतिकर पाठ्य-सामग्री
बन गया है।

'माध्यम' के प्रवेशांक से
अबतक की पूरी फ़ाइल की
धुआँधार माँग इसके स्थायी
महत्त्व और लोकप्रियता का
परिचायक है।

सहवर्ती साहित्य, विवेचना, प्रतिपत्तिका,
समीक्षाएँ, प्रत्यालोचन-पुनर्विचार, हिन्दीजगत्, पत्र-पत्रिकाएँ
'माध्यम' के स्तम्भगत आकर्षण हैं।

एक अंक का मूल्य : १.०० । वार्षिक शुल्क : १०.००

पत्राचार : पो० बॉ० सं० ६०, इलाहाबाद
सम्पादकीय तथा व्यवस्थापकीय कार्यालय :
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ
द्वारा
प्रकाशित

महत्त्वपूर्ण पठनीय निबन्ध साहित्य

❀ **एक साहित्यिककी डायरी**
गजानन माधव मुक्तिबोध २.५०

❀ **चिन्तककी लाचारी**
माखनलाल चतुर्वेदी ४.००

❀ **नये रंग नये ढंग**
लक्ष्मीचन्द्र जैन २.००

❀ **आँगनका पंछी और बनजारा मन**
विद्यानिवास मिश्र ३.००

❀ **शिखरोंका सेतु**
शिवप्रसाद सिंह ३.५०

❀ **क्षण बोले कण मुसकाये**
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४.००

❀ **सांस्कृतिक निबन्ध**
डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ३.००

❀ **वृन्त और विकास**
शान्तिप्रिय द्विवेदी २.५०

❀ **बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी**
अहमद सलीम ३.००

प्राप्ति-स्थान
भारतीय ज्ञानपीठ
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-मंच

'ज्ञानपीठ पत्रिका' का अक्तूबर अंक पूरा पढ़ गया हूँ। जैनेन्द्रजी, कृष्णविहारी मिश्र और लक्ष्मीकान्त वर्माके लेख काफ़ी उपयोगी लगे। 'जुलूस' पर प्रकाशित गिरिराज किशोरकी समीक्षासे मैं भी सहमत हूँ। महत्त्वपूर्ण कृतियोंपर प्रकाशित विशिष्ट समीक्षाओंका प्रस्तुतीकरण सचमुच मौलिक योजना है। इसके लिए मेरी विशेष बधाई लें।

—डॉ० योगेश सहाय, आगरा

'पत्रिका' बराबर देखती हूँ। जहाँ अन्य प्रकाशन-पत्रिकाएँ अपनी एक मनहूस सीमा बना चुकी हैं वहीं यह स्थायी महत्त्वकी सामग्री देकर अपना विशिष्ट स्थान पानेकी ओर है, यह शुभ और सन्तोषकी बात है।

—सुश्री सन्ध्या वार्ष्णेय, प्रयाग

'ज्ञानपीठ पत्रिका' के अगस्त, सितम्बर और अक्तूबरके अंकोंके लिए बधाई स्वीकार करें। 'समसामयिकी' और 'प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर' – ये दो नये स्तम्भ बड़े जानदार और उपयोगी हैं। लक्ष्मीकान्त वर्मा, और देवीशंकर अवस्थीके लेख पत्रिकाके रूप और स्वरको समृद्ध करते लगे।

—प्रभाकर चतुर्वेदी, नागपुर

प्रान्तीय साहित्योंकी नित-नूतन गतिविधियोंसे हिन्दी संसारको परिचित करानेकी आपकी योजना वस्तुतः बहुत अच्छी है। इस समय हिन्दी-क्षेत्रमें इस कार्यकी बड़ी आवश्यकता है।

—धर्मपाल शास्त्री, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका
तथा भारतीय भाषाओंकी सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक
साहित्यिक कृतिपर प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार - योजना - प्रवर्तिका विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

प्राचीन विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित साहित्यकी अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

●
●
●

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला

• राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी दो	नानक सिंह	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

• उपन्यास

अठारह सूरज के पौधे	रमेश बक्षी	३.००
सूरजका सातवाँ घोड़ा [च० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
पीले गुलाबकी आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर मानव	४.००
गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस्०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	२.५०
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.२५
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	३.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	६.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	४.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस्०	२.५०
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००

• कहानी

दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	३.००
झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
कालके पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोस्ताँ [द्वि० सं०]	शेख सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने अँगन रस बरसे	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
मोतियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १—२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
अतीतके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५०
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

• कविता

इतिहास-पुरुष	डॉ देवराज	३.५०
देशान्तर [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
अन्धा चाँद	मुनि रूपचन्द	३.००
चाँदका मुँह टेढ़ा है [द्वि० सं०]	मुक्तिबोध	८.००
आत्मजयी	कुँवरनारायण	३.५०
कनुप्रिया [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
हम विषपायी जनमके [द्वि० सं०]	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
वेणु लो गूँजे धरा [द्वि० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
बीजुरी काजल आँज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूपं शर्मा	६.००
• शाइरी		
गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
नग़मए-हरम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००
• नाटक		
प्रेत	इब्सेन, अनु०नेमिचन्द्र जैन	२.२५
बारह एकांकी [द्वि० सं०]	विष्णु प्रभाकर	३.५०
घाटियाँ गूँजती हैं [तृ० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम क़ैद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
तरकशके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
चेखॅवके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

• विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजित कुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

• रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

• ललित-निबन्धादि

चिन्तककी लाचारी	माखनलाल चतुर्वेदी	४.००
एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकी राय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	डॉ० विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
ठूँठा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
ग़रीब और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रावी	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकरायी [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

दीप जले शंख बजे [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता [पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

विवेकके रंग	सं०-डॉ० देवीशंकर अवस्थी	७.००
हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो वार्ता-शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००
रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [च० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन [द्वि.सं.]	डॉ० भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरत्के नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो	मुनि नथमल	२.००
क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?	आचार्य तुलसी	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
दर्शन अनुचिन्तन	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

• सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव [द्वि० सं०]	मुनि नथमल	१.५०
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

• हास्य-व्यंग्य

बक रहा हूँ जुनून में	प्रकाश पण्डित	३.००
सिकन्दरनामा	सलमा सिद्दीक़ी	२.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य [द्वि० सं०]	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
तेलकी पकौड़ियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
काग़ज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
मुर्ग़-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : नवम्बर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ०महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं०फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

समाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं०शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य-ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल ; कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० : डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

मदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — ६.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन — २.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — ८.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — १०.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ४
सम्पादन : डॉ० जोहरापुरकर — ७.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : नवम्बर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये ३.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन–वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल

स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश] .५०
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका] १.५०
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री प्रभाचन्द्राचार्य

लाटी संहिता [संस्कृत] २.००
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल

नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका] .५०
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात

.२५

आगामी प्रकाशन

• •

साहित्यिक

* **मुरदा सराय** : डॉ० शिवप्रसाद सिंह (कहानी)
* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ** : कृष्णाचार्य (शोध)
* **अपभ्रंश भाषा और साहित्य** : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन (शोध)
* **सिंहली कहानियाँ** : सं०—भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा एस्० मेधंकर (कहानी)
* **अस्तंगता** : कृष्णचन्द्र वर्मा 'भिक्खु' (उपन्यास)
* **कुछ निबन्ध** : अक्षयकुमार जैन (निबन्ध)
* **तार-सप्तक** : सं० अज्ञेय (कविता)
* **दूसरा सप्तक** : सं० अज्ञेय (कविता)
* **संग-तराश** : शिवचन्द्र शर्मा (कहानी)

■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाक-आक्रमणसे उत्पन्न वर्तमान संकटकालीन स्थितिमें पूजा-दीपावलीके अवसरपर

ज्ञानोदय के २ विशेषांक

ज्ञानोदय

युद्ध - विशेषांक

नवम्बर अंक : लगभग ३२५ पृष्ठोंकी सचित्र और आँखों देखी सामग्री, या यूँ कहें वर्तमान स्थिति-का दर्पण। पत्रकारिताकी दिशामें अन्यतम प्रयोग कि यह सारी सामग्री 'ज्ञानोदय' तथा ज्ञानपीठके सहयोगियों-द्वारा ही प्रस्तुत की गयी है।

मूल्य : २ रुपये। ३० अक्तूबरको प्रकाशित।

दाम्पत्य - विशेषांक

दिसम्बर अंक : लगभग २५० पृष्ठोंकी युग्म-युगल चित्रोंसे सुसज्जित दाम्पत्य जीवनका विश्लेषण प्रस्तुत करनेवाली सामग्री। हिन्दीके सभी सुप्र-सिद्ध लेखकोंकी रचनाएँ।

मूल्य : २ रुपये। २५ नवम्बरको प्राकाश्य।

अपने आर्डर दोनों विशेषांकोंके लिए तत्काल भेजें :

९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

प्रमुख वितरक :

बेनेट कोलमन ऐण्ड कं० लि०, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक
महत्त्वपूर्ण
युद्ध-नाटक

• •

घाटियाँ गूँजती हैं

घाटियाँ गूँजती हैं। बरफ़की आग-सा सच यही है कि चीनके आक्रमणसे गूँजी हिमालयकी घाटियाँ आज भी गूँजती हैं। एक-एक दृश्यके तीन अंकोंका यह सहज अभिनेय नाटक। तीसरा संस्करण।

डॉ० शिवप्रसाद सिंह

•

मूल्य २.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
कलकत्ता • दिल्ली • वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष चार : अंक पाँच
दिसम्बर १९६५

ज्ञानपीठ पत्रिका

ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित

ज्ञानपीठकी अधुनातन
कृति और उपलब्धि परिचायिनी

० ० ० ० ० ० ०

शीघ्र ही प्रकाश्य
दो कृतियाँ

तार सप्तक

द्वारा संकलित-सम्पादित नयी कविताका ऐतिहासिक
ा संकलन। समकालीन और परवर्ती काव्य-विकास
लोके लिए अनिवार्य रूपसे पठनीय कृति।

ये प्रतिमान : पुराने निकष

न्त वर्माके चिन्तन-प्रधान समीक्षात्मक लेख: जिनका
नवलेखन–आजका साहित्य। सर्वथा पठनीय एवं
।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक विकास-उन्नयन
सांस्कृतिक अनुसन्धान-प्रकाशन
राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी
साधिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

[स्थापित सन् १९४४]

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पत्रिका

वर्ष चार : अंक पाँच

दिसम्बर १९६५

१. उद्घोष···आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी २
२. अर्थवान् शब्दकी समस्या···'अज्ञेय' ३
३. लेखन : एक दर्द एक त्याग····रघुवीर सहाय ५
४. जब एक कथांचल जी उठा···डॉ० शिवप्रसाद सिंह ६
५. लोक-जीवनका चितेरा : शोलोखोव····पद्मधर त्रिपाठी १३
६. नोबेल पुरस्कार : तथ्य और सिद्धान्त····हंसराज रहबर १७
७. संस्कृत साहित्यकी गतिविधि····महेन्द्र कुलश्रेष्ठ २१
८. प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर····'चारुचन्द्र लेख' २३
९. अक्षरोंका सेतु : कृतियोंकी प्रतिक्रिया····विश्वम्भर 'मानव',
नन्दकुमार राय, गोकुलचन्द्र जैन ३९
१०. नयी कृतियाँ : ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित ४९
११. एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार ५५
१२. भारतीविश्व : कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ ५७
१३. पत्र-मंच ६४

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

सम्पादक
लक्ष्मीचन्द्र जैन :: जगदीश

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन एवं वितरण कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
मूल्य : छह रुपये वार्षिक, पचपन पैसे प्रति, द्विवार्षिक : ग्यारह रुपये
समाज-शिक्षा विभाग, राजस्थान-द्वारा उच्च, उच्चतर
विद्यालय तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंके लिए प्रस्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्विग्न लेखक उदासीन पाठक

अच्छी पुस्तकें नहीं बिकतीं इसलिए लेखक उद्विग्न है जब कि अच्छी पुस्तकें नहीं मिलतीं इसलिए पाठक उदासीन है : क्यों ? क्या निराकरण है इसका ?

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

आज हिन्दीमें लेखकों और पाठकोंका एक विशाल समुदाय अच्छी साहित्यिक कृतियों और प्रेरक साहित्यिक विचारोंके लिए उद्विग्न और लालायित रहता है। फिर भी ये उन्हें सुगमतासे मिल नहीं पाते। कारण यह है कि हिन्दीका यह विशाल समुदाय अधिकतर असंगठित है।

हिन्दीमें अच्छी पुस्तकें और अच्छी पत्रिकाएँ कम इसलिए बिकती हैं कि हिन्दीका यह बृहत् पाठक समाज बहुत-कुछ केन्द्रविहीन है। इतना ही नहीं, उचित दिशा-दर्शनके अभावमें वह साहित्यके प्रति उदासीन रहने लगा है। हमारी पत्र-पत्रिकाएँ भी इन पाठकोंकी ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता नहीं समझतीं और प्रायः अपने संकीर्ण और छोटे घेरोंमें ही घिरी रहती हैं।

यह बड़ी दयनीय स्थिति है। आवश्यकता अब इस बातकी है कि हिन्दीमें साहित्यिक स्तरपर लेखकों और पाठकोंका एक राष्ट्रव्यापी संगठन हो। ऐसे संगठन सभी समृद्ध साहित्योंके पीछे रहा करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थवान् शब्दकी समस्या

जो कवि शब्दके संस्कारके प्रति सजग नहीं है
वह अर्थवान् शब्दका साधक नहीं : वह
कवि नहीं, न होगा !

अज्ञेय

बीस वर्ष पहले 'तार सप्तक'में अपने वक्तव्यके रूपमें जो कुछ मैंने लिखा था उसमें-से कुछ भी वापस लेना आवश्यक नहीं जान पड़ता। निःसन्देह बहुत-सी बातोंको आज दूसरे ढंगसे कहूँगा; पर सिद्धान्तकी मुख्य बातें ज्योंकी त्यों हैं और जिन बातोंको दूसरे ढंगसे कहना चाहूँगा उनका महत्त्व अपेक्षया कम है।

पाठक चाहें तो इस बातका यह अर्थ भी लगा सकते हैं कि मैंने इन बीस वर्षोंमें कुछ नहीं सीखा। यह बात बिलकुल ग़लत होगी। सीखा बहुत कुछ। यह भी कह सकता हूँ कि कविता लिखना भी बादमें ही थोड़ा-बहुत सीखा। भाषा लिखना भी सीखता ही रहा। बात असलमें यह है कि उस वक्तव्यमें मैंने जो प्रश्न उठाया था वह एक प्रकारसे काव्यका चिरन्तन प्रश्न है। इसीलिए उसे न अभी बदलनेकी आवश्यकता पड़ती है न वापस लेने की। युग-सम्पृक्त उत्तर बदलते रहते हैं और उत्तरोंके अनुरूप हम प्रश्नको भी नये-नये ढंगसे कहते हैं; लेकिन वास्तवमें प्रश्न बदलता नहीं है।

आज भी मेरे सामने जो एक समस्या है और जिसका हल पा लेना मैं अपने कवि-जीवनकी चरम उपलब्धि मानूँगा वह अर्थवान् शब्दकी समस्या है। काव्य सबसे पहले शब्द है; और सबसे अन्तमें भी यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। सारे कवि-धर्म इसी परिभाषासे निःसृत होते हैं। शब्दका ज्ञान—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दकी अर्थवत्ताकी सही पकड़—ही कृतिकारको कृती बनाती है। ध्वनि, लय, छन्द आदिके सभी प्रश्न इसीमें-से निकलते हैं और इसीमें विलय होते हैं। इतना ही नहीं, सारे सामाजिक सन्दर्भ भी यहींसे निकलते हैं। इसीमें युग-सम्पृक्तिका और कृतिकारके सामाजिक उत्तरदायित्वका हल मिलता है या मिल सकता है। किसी हद तक समकालीन आलोचनाकी अन्धेरगर्दी और (—अच्छी बात है, मैं स्वीकार करता हूँ क्योंकि शायद मुझपर ही हलका बोझ है !—) नये कविके बचकाने दुराग्रह भी इसीमें-से निकलते हैं और—एक दिन !—इसीमें विलय होंगे। कवि जब 'छन्द' को अमान्य करता है तब उसके सामने वह उस मात्रिक बन्धनके रूपमें होता है जो शब्दकी अर्थवत्ताको क्षीण करता है; दूसरी ओर पण्डित आलोचक जब छन्दकी बात करता है तक वह उस आभ्यन्तर अनुशासन-की बात सोचता है जो शक्तिका स्रोत है, जो अर्थवत्ताको गहराई देता है। इस प्रकार पक्ष और प्रतिष्ठाकी स्थिति ही नहीं रहती क्योंकि दोनों पहलवान अलग-अलग अखाड़ोंमें खम ठोकते रह जाते हैं।

इसी प्रकार एक ओर 'सामाजिक उत्तरदायित्व'की और दूसरी ओर 'ईमानदारी' (अपने प्रति दायित्व) की दुहाई देनेवाले भी अलग-अलग अखाड़ों-में अपने पैंतरे दिखाते हैं और जोड़ होनेकी सम्भावना ही नहीं होने देते; क्योंकि सामाजिक उत्तरदायित्व ओढ़ लेनेसे ही कृतित्वके क्षेत्रमें कोई समस्या नहीं हल होती—इतना ही होता है कि रोज़मर्रा जीवनमें काम आनेवाली 'प्रयोजनवती भाषा'का व्यवहार करते समय अन्य अधिक सतर्क हो जाते हैं—चाहे प्रयोजनोंके सामाजिक मूल्यांकनमें, चाहे अपनी बात और अपने काम (या अपनी नीयत) में सामंजस्यके मूल्यांकनमें। यानी आप रह जाते हैं सामाजिक मूल्योंके क्षेत्रमें ही, रचना-प्रक्रियाके क्षेत्रमें प्रवेश नहीं पाते। लेकिन शब्दकी अर्थवत्ताकी खोजमें शब्द-की ऐतिहासिक और अर्थकी सामाजिक परख दोनों निहित हैं, और अर्थवान् शब्दका संवेदन (सम्प्रेषण) हो हो नहीं सकता बिना युग-सम्पृक्तिके। जो कवि शब्दके संस्कारके प्रति सजग नहीं है (और जैसे जीवका हर कर्म उसके संस्कारको बदलता है वैसे ही शब्दका प्रत्येक उपयोग उसे नया संस्कार देता है) वह अर्थवान् शब्दका साधक नहीं है, और मैं कहूँगा कि वह कवि नहीं है, न होगा।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखन
एक दर्द एक त्याग

लेखककी डायरीसे कुछ विचार-सूत्र
कि देखें और सोचें—हम कहाँ हैं ?

रघुवीर सहाय

सबसे बड़ा आत्महनन जो किया जा सकता है वह है 'लिखना'। अब हम कैसे बतायें कि लिखना कितना बड़ा दर्द है, कितना बड़ा त्याग है। बताना मुश्किल है क्योंकि वह कई एक ऐसी वस्तुओंका त्याग है जिन्हें साधारणतया कोई महत्त्व नहीं दिया जाता।

कितना मोह है जीवनसे। जानता हूँ कि जैसे सभी जीते हैं, जिया करते हैं, वैसे जीनेमें कोई कर्म नहीं है, मज़दूरी ही है। 'कर्म' 'रचना' 'सृजन'—छोटे शब्द प्रयोग किये जायें या बड़े उस व्यवहारकी जो महत्ता है, वह है। वह साधारण जीवनसे ऊपर है और उसमें निहित कठिनाई यह है कि उसका आदर्श साधारण जीवन ही है। वह ऐसे कलाकारका कर्तव्य है जो सामाजिक जीवन-को कर्मयुक्त जीवन बनाना चाहता है पर जिसका कर्म वही नहीं है जो समाजमें कर्तव्य है, इसलिए उसका कर्म एक शाश्वत आदर्श है, तात्कालिक धर्म नहीं : आज, तुरन्त प्रतिकृत हो जानेवाला कोई ढकोसला नहीं, अपनी क्षुद्र वैयक्तिक सीमामें प्राप्त कोई शारीरिक गुदगुदी नहीं, बल्कि एक शान्त कायाकल्प।

तात्कालिक कर्म क्या है ? अवसरका लाभ उठाना या इस क्षणका कर्तव्य करना ? मोह हमें होता है। क्यों न होगा, बल्कि हमें तो और भी होगा, क्योंकि हम अपनी जीनेकी ललकको किसी छोटी तुष्टिसे, या कई छोटी-छोटी तुष्टियोंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार देना नहीं चाहते—ऐसे अल्पसन्तोषी हम नहीं। वे और होंगे जो रोज़ नये सिरेसे दिन शुरू करते हैं—इस भोजनसे उस भोजन तक अपनी व्यथा स्थगित करते जाते हैं। हमें तो बहुत भूख लगती है—बहुत! खाना-पीना, उठना-बैठना, पहनना-ओढ़ना, हँसी-मज़ाक़, प्रेम, आदर, भक्ति सबके लिए हम छटपटाते रहते हैं—और अभी कुछ मिल जाता है तो उसका मज़ा तो लेते नहीं, बैठकर सोचने लगते हैं कि अगली बार वह मिलेगा या नहीं। अच्छा, यदि हम जीवनकी इन अनेक इच्छाओंमें-से कोई एक पूरी कर सकें और उसकी ख़ूब अति करें—ख़ूब शराब पीने लगें, ख़ूब जुआ खेलने लगें, ख़ूब रण्डीबाज़ी करें, या कुछ ऊँचे बौद्धिक स्तरपर हों तो प्रेममें सब कुछ गँवा बैठें—तो क्या जीवनके प्रति वह मोह कहलायेगा। वह तो एक तिरस्कार्य लालच है और तृष्णाका अपमान है। जो कहा गया है कि भोगके लिए त्याग करो—सो ठीक ही है, चाहे हम अपने ढंग-से ही उसका अर्थ लगाकर उसे ठीक मान रहे हों। इन शब्दोंके अर्थ बदल गये हैं, अब ये केवल कृती, कलाकार, योद्धाके लिए प्रयुक्त किये जायें—विशिष्ट व्यक्तियोंके लिए—जो विशिष्ट हैं क्योंकि इसे कर सकते हैं।

उनका दायित्व रचनाका है। अपने जीवनकी परिधिमें आनेवाले दैनन्दिन उपभोगकी लालसा और विशदतर सामाजिक जीवनकी रचनामें जो द्वन्द्व है उसमें रणरणित होते रहनेका दायित्व उनका है। सम्प्रति, उपभोगमें स्वास्थ्य नहीं है—हो ही कैसे सकता है जब उपभोग्य ही अपूर्ण अतएव विकृत है।

इसलिए अनुभव करना चाहिए और उसका स्वार्थ भूल जाना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि जो कुछ हम सह चुके हैं वैसेका वैसा काग़ज़पर उतारा जाकर विशिष्ट कला ही कहलाये। हम अनुभव करें तो उस समय जीनेके लिए ही क्यों करें? उस अनुभवको बादके विशाल जीवनमें लादे हुए नहीं लिये हुए चलनेके लिए अनुभव करें। उसे उदारतासे किसीको दे न डालें—दे सकते नहीं क्योंकि वह तनपर अंकित हो जाता है—पर उसके हेतुको नष्ट कर दें अन्यथा उसे कन्धेपर लादे-लादे घूमेंगे और पछतायेंगे। न हम ऐसे शंकर हैं न वह ऐसा सती। हम उसका अर्थ आसानीसे हृदयमें लिये घूम सकते हैं और पछताना भी नहीं पड़ेगा।

....वह सत्य जो हम पायेंगे हमारा होगा पर वह हमारा तभी होगा जब वह हमारा नहीं रह जायेगा। जो उपलब्धि केवल हमारी है वह एक निम्न बौद्धिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल कांगड़ी

खरकी रचना है। जिस सत्यको हम देख आये हैं उसे सबमें देखें जिनके हम हितैषी हैं—वह हमारा स्वानुभूत तो हो, सहानुभूत भी हो।

मेरे लिए ईमानदारी अनुभूत की है, धर्म या मत या कर्तव्यकी नहीं—जो कहीं चीज है कि कोई भी रचना, चाहे वह किसीसे व्यवहार करना हो, चाहे कहानी लिखना, मेरे-द्वारा तभी हो सकती है जब मेरा मन गवाही दे।

बौद्धिकता और आत्मानुभूतिमें कोई विरोध नहीं देखता; बौद्धिकता अधिकसे अधिक एक तैयारी है, एक इक्विपमेण्ट है, मानवीय जीवनके अभीतकके इतिहास-को—जो अनुभवोंकी अनेक परम्पराओंका भण्डार है—समझने और आगे रचने-का साज-सामान है। समवेदना जो कि काव्यका उत्स है उससे कैसे विलष्ट हो सकती है, यह नहीं समझता। जिससे अपनी रक्षा करनी है वह निर्ममता है और निर्ममता अन्ततः वास्तविकताको आत्मसात् न कर पानेकी दशा है। सामान्य आलोचक जिसे सहृदयता-विरोधी बौद्धिकताका नाम देते हैं वही दृष्टि जीवनकी समग्रताको आत्मसात् कर सकती है। प्रयत्न, जिसका मैंने उल्लेख किया था अनुभूतिके पहलेकी इसी तैयारीका नाम है। पुस्तक, जो कि खुद वास्तविकताका एक अंग है—या जीवनके अन्य क्षेत्र जो कि उसके अभिन्न अंग हैं, इस तैयारीके केवल साधन हैं और वह तैयारी खुदमें न साधन है न साध्य है बल्कि सिर्फ़ एक तैयारी है जो कविको अपनी रचनाके लिए मुक्त छोड़ देती है। यह तैयारी सोद्देश्य हो इसमें खतरा है और वह खतरा इसलिए है कि उसमें कविको जो चाहे लिखनेकी लोकतन्त्रीय स्वाधीनता होनेपर भी, जो अनिवार्य है वह लिखने-की मुक्ति नहीं है।

नये लेखकोंको उनके दायित्वका ध्यान गुरुजन अकसर दिलाया करते हैं; कभी-कभी द्रवित होकर उनकी समस्याओंका भी ज़िक्र कर देते हैं, थोड़ी-बहुत छान-बीन भी, और नये लेखक यदि अपनी समस्याओंकी ओरसे उदासीन होते तो कम नये लेखकोंका भी उन्हें कोंचते रहना एक आवश्यक धर्मका पालन करना ही होता : लेकिन नये लेखक जब इस ओर बराबर चिन्तनशील हैं, अपनी सभाओंमें, गोष्ठियोंमें और साथियोंमें इस बारेमें सोच-विचार करते रहते हैं कि साहित्यमें आये हुए तत्कथित अवरोधके लिए हम कितने दोषी हैं कितने नहीं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अपनी समस्याओंका हल उन्हें स्वयं ही ढूँढ़ने देना अभीष्ट होगा। जिस लेखकके सामने सृजनकी समस्याएँ नहीं हैं वही लेखक पुराना कहा जा सकता है अन्यथा सभी नये हैं—इस अर्थमें कि सभी परिवर्तनशील वास्तविकताको आत्मसात् करनेके लिए शब्दोंके नये अर्थमें देखा करते हैं। यदि हम यह मानकर चलें तो इस खोजकी उपादेयता और भी महत्त्व रखने लगती है, और यह न मानकर चलें तो भी वह कम महत्त्व नहीं रखती क्योंकि यह स्पष्ट दीख रहा है कि वास्तविकताकी ओर बुद्धिमानोंके विचार दिन-प्रतिदिन अधिक वैज्ञानिक होते जा रहे हैं अर्थात् हम न केवल वास्तविकताकी शक्ल सुधार रहें हैं, बल्कि उसके तात्कालिक स्वरूपको भी उस अर्थमें समझते जा रहे हैं जिसमें अभीतक हम उसे नहीं जानते थे।

रचनाके लिए किसी-न-किसी रूपमें वर्तमानसे पलायन आवश्यक है। कोई-कोई ही इस पलायनको सुरुचिपूर्वक निभा पाते हैं; अधिकतर लोग अतीतके गौरवमें लौट जानेकी भद्दी भूल ग़लती कर बैठते हैं और यह भूल जाते हैं कि वर्तमानसे मुक्त होनेका प्रयोजन कालातीत होना है, मृत जीवनका भूत बनना नहीं। जिसमें उपभोग नहीं है परन्तु अनुभव है, वेदना नहीं है परन्तु करुणा है, संस्मरण नहीं है परन्तु स्मृति है, ऐसी कालातीत चेतना कलाकारकी दुर्लभ उपलब्धियों ही में-से एक है, पर है वही जो उसकी सच्ची चेतना है और जिसकी दुर्लभता साहित्यमें उत्कृष्ट कृतियोंके अनुपातमें ही है।

• •

अहंकारसे प्रतिभा उसी तरह कुण्ठित हो जाती है जैसे भयानक भू-कम्पसे प्रकृतिकी सहज शोभा नष्ट हो जाती है! अतः कलाकारके लिए आवश्यक है कि वह अहंकारके आघातोंसे प्रतिभाकी रक्षा करे।

—रजत-रश्मि : डॉ० रामकुमार वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब एक कथांचल जी उठा

शोलोखोवकी पुरस्कार-विजेता कृति 'और दोन अचंचल बहती है' का एक भाव-भीगा संक्षिप्त परिचय

डॉ० शिवप्रसाद सिंह

१९६५ के नोबेल-पुरस्कारसे सम्मानित प्रसिद्ध रूसी कथाकार शोलोखोवके आंचलिक उपन्यास 'ओर दोन अचंचल बहती है' में अक्खड़, मुक्त, रसीले कज़्ज़ाकोंका जीवन आँसू और हँसीके साँवले-रुपहले ताने-बानेमें बुनकर धूप-छाँही ताफ़ता-रंगकी कारीगरीको मात करता है। नाना रंगके कत्थई-भूरे वृक्षों और हेनब्रेनकी जंगली झाड़ियोंसे घिरा यह कज़्ज़ाक अंचल, जिसके बीचसे पतली दूधिया डोरकी तरह बहती है दोन, उनके इस उपन्यासका सबसे महत्त्वपूर्ण जीवित चरित्र है जिसकी प्रत्येक धड़कन, साँसकी गरमी और पसीनेसे सने जिस्म-की महक इस महान् उपन्यासकी हर शिरामें टपकती रहती है।

शोलोखोव इसी अंचलकी उपज हैं। उन्होंने इस जीवनको गहराईसे भोगा और जिया है। इसके अन्तर्तमकी हर स्थितिके वे साक्षी रहे हैं। उनके साहित्यकारका जन्म ही जैसे इस कथांचलको वाक्का अशरीरी आयाम प्रदान करनेके लिए हुआ था। उनकी पहली रचनासे लेकर अबतककी लिखी अन्तिम रचनामें निरन्तर इसी धरतीका अभिषेक होता रहा है। शुरू-शुरूमें उन्होंने कहानियाँ लिखी थीं—दोन अंचल की कहानियाँ। इन कहानियोंमें दोन कज़्ज़ाकोंका जीवन तमाम आंचलिक खूबियोंके साथ चित्रित हुआ। लेखक किशोर वयका था; पर कहानियोंमें भावुकताके स्थानपर उदासी और मायूसीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रधानता थी। प्रत्येक कहानी घनीभूत पीड़ाको जगानेवाले अन्तके कारण पाठकोंके मनमें कभी न भूल पानेवाली कसक जगा जाती।

'और दोन अचंचल बहती है' कहानियोंकी ज़मीनपर ही कज़्ज़ाकोंके जीवनका समष्टिगत अंकन है, जिसमें विस्तार है, गहराई है, संघर्ष है और प्रगतिशील आस्था और आशाका आरोपित मोटा आवरण भी; किन्तु इसमें कहानियोंकी लघु-लघु वेदनाएँ और कसककी कौंध कहीं नहीं दीखती। 'और दोन अचंचल बहती है' कलाकी दृष्टिसे एक बेडौल विशाल पर्वत है जिसमें छोटी-छोटी डूंगरियोंका अकेला-उदास व्यक्तित्व नहीं है, एक दबाव डालनेवाली समरस सहत गरिमा ज़रूर है। पूरा उपन्यास चार भागोंमें छपा है और अँगरेज़ी अनुवाद १३०० पृष्ठोंके विशाल आयतनमें फैला हुआ है। अपनी गरिमाके कारण ही यह उपन्यास अकसर कज़्ज़ाकोंका 'वॉर ऐण्ड पीस' कहा जाता रहा है।

"हाँ, इन्हीं स्टेप्सके मैदानोंसे वह शुरू हुआ था। याद नहीं उस समय मैं कितना बड़ा था। मुश्किलसे पन्द्रह-सोलहका रहा हूँगा कि उन्होंने मेरे क़त्लका हुक्म दे दिया। मैं अपनी मौतका इन्तज़ार दो दिनतक करता रहा। और रिहा हो गया। मेरी ज़िन्दगी जीनेकी प्यास हमेशा ही बहुत तेज़ रही है।" अपने मित्र ए० सोफ्रोनोवके साथ एक बातचीतमें उन्होंने कहा था, "इस अंचलके छोटे-छोटे गड्ढों, घासके हर मूठके नीचे, चप्पे-चप्पेमें मेरे साथी कॉमरेड दफ़नाये हुए हैं।" शोलोखोवका गला भर आया था। उन्होंने जंगली झाड़ियोंके फूल तोड़े और उन्हें धरतीपर बखेरते हुए कहा, "अमरताके उन देवदूतोंके नाम" मौतके सार्वदिक् ख़तरेके बीच जीवनकी शाश्वत प्यासका यही भाव शोलोखोवके समूचे कथा-साहित्यकी कुंजी है।

'और दोन अचंचल बहती है' उपन्यासका लेखन १९२३ में प्रारम्भ हुआ और पूरे बारह वर्ष बाद १९४० में पूरा हुआ। रूसी गृहयुद्धका यह विशाल महाकाव्यात्मक उपन्यास अपनी सीमामें आधुनिक रूसके सबसे अधिक कशमकश, मनोमन्थन, संघर्ष और पीड़ाके कालको बाँधनेका सारस्वत संकल्प है। उपन्यास-का नायक ग्रेगॅरो मेलेखोव समूचे रूसमें व्याप्त प्राचान और नवीनके भयानक संघर्षका सजीव प्रतिनिधि है। वह समादृत जीर्ण अतीत और सद्यःजात आशामय किन्तु तिरस्कृत नवीनके घात-प्रतिघातके बीच निरन्तर टूटता, हारता, विदीर्ण होता चला जाता है। युवावस्था अभी आयी तो वह पागलकी तरह उन्मत्त प्रकृति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देखता रहा। पर सोच न पाया कि उन्माद और संयममें कहीं कोई रिश्ता भी है या नहीं। प्यार कर बैठा प्रौढ़ वयकी अक्सीनियासे, जिसके उन्मद प्रौढ़ यौवन-की गन्ध उसकी नाकमें हेनब्रेनकी झाड़ीके बनैले मादक फूलकी तरह बस गयी। वह सिर्फ़ रातोंमें पलनेवाले प्रेमके ज्वारको सँभाल न पाया और अन्तमें अक्सी-नियाको लेकर भाग गया। बनैली लहरमें अशक्य बहते-बहते उसके शरीर और मन थके घोड़ेकी तरह शिथिल हो गये और उसके होठोंपर कामुकताकी गरमी निराशाकी पपड़ियाँ बनकर उभरने लगी।

भावलोक कठोर धरतीकी ठेससे बिखरने लगा। प्रथम गृहयुद्धकी विभीषिका-ने ग्रेगॅरीको भीतर-बाहरसे पूरी तरह तोड़कर रख दिया। युद्ध एक रासायनिक प्रक्रिया है जिसको क्रूरताओंके भीतरसे गुज़रनेवाला वही नहीं रह जाता जो वह होता है। लोगोंके चेहरे काले पड़ जाते हैं, होठोंपर झलक आनेवाली हँसी बेडौल और भोंड़ी लगती है, भाषाके रंगीन फूल झड़ जाते हैं और उसके स्थान पर भद्दे लहजे और अमानवीय शब्द बेलौस उभर आते हैं। आदमी कृत्रिम, नंगा और भयभीत होता है। उसकी आँखोंमें मशालें होती हैं और दिलमें भेड़िए की गुर्राहट घर किये रहती है।

शोलोखोवकी विशेषता यह है कि वह अंचलके जीवनके दैनन्दिन चित्रोंके भीतर व्यापक अर्थ और सन्दर्भ रखनेवाले विचारोंको भलीभाँति अनुस्यूत कर देते हैं। वे पाठकको विवश कर देते हैं ताकि वह सोचे कि युगकी प्रमुख समस्याएँ क्या हैं। किसी एक व्यक्तिके अपने छोटे-से दायरेमें सीमित अपनत्व-भरे जीवन और उसे एक क्रूर झटकेसे ज़र्रे-ज़र्रेमें बदल देनेवाली ऐतिहासिक मानव-नियति-के बीच क्या सम्बन्ध है। मनुष्यके अपने व्यक्तिगत चुनाव और सामाजिक क्रान्तियोंके बीच क्या विसंगतियाँ हैं।

शोलोखोवकी दूसरी विशेषता यह है कि वे इन महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंको इतना स्पष्ट, भारी और स्थूल कभी नहीं होने देते कि वे उपन्यासको नाजुक गठन और आन्तरिक संयोजनाको कहीं ठेस पहुँचा दें। परिणामतः उनके इस उपन्यासमें दोन कज़ाकोंके जीवनका व्यापक कैनवस, उनकी वंशानुगत सैनिक परम्पराएँ, उनके गीत, परी-कथाएँ, लोकनृत्य आदि क्रान्तिकी अग्नि और खूनसे बुनी घटनावलीके बीच रंगीन बूटोंकी तरह टँकते चले जाते हैं। गृह-युद्धकी तथ्यात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनाएँ कहीं भी धरती की गन्ध, घने जंगलोंकी सरसराहट, दोनके घास-मैदानों-की सोंधो-सुहानी खुशबू, पक्षियोंकी रंगारंग आवाज़ोंके ऑरकेस्ट्राके ज़िन्दा ताज़ा स्वरोंको दबा नहीं पातीं। सभी तरहके संघर्षों, सन्देहों, ग़लतफ़हमियों, विश्वा-सघातों और कष्टोंके बीच ग्रेगॅरी और अक्सोनियाका प्रेम हेनग्रेनकी बनैली खुशबू के झोंकेकी तरह लहराता चला जाता है। यद्यपि हेमिंग्वेके हैरी मॉरगनकी तरह वह नियतिके कठोर शिकंजेमें पूरी तरह पिस जाता है, पर अन्ततः उसे अक्सो-नियाके हृदयमें बहते उस प्रेम-स्रोतका पता मिल ही जाता है जिसमें पोस्तेके फूलोंकी मदहोश करनेवाली गन्ध नहीं, बल्कि सहयोगिनी नारीके आश्वस्तकारी प्रेमकी शीतल ममता होती है।

ये सारी विशेषताएँ मिलकर 'और दोन अचंचल बहती है' के रूपमें एक ऐसे उपन्यासका सृजन करती हैं जो अपनी अनगढ़ शक्तिमत्ता और जीवनकी उद्दामताके कारण विश्वसाहित्यका एक अमूल्य रत्न हो चुका है।

●●

कला बहुत फैलती है, युगों-युगों फैलती है और देश-देशान्तरपर छा जाती है। किन्तु वह अपने प्रचारका कोई साधन अपने पास नहीं रखती।···कला जहाँ एक तरफ़ भगवान्‌की रचनाका भावानुवाद है वहीं दूसरी तरफ़ सृष्टिके मौन आनन्द-कणोंकी मानो वह साँस है।

—अमीर इरादे ग़रीब इरादे : माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-जीवनका चितेरा
शोलोखोव

एक यथार्थवादी रूसी उपन्यासकार : जिनके उपन्यास 'और दोन अचंचल बहती है'को स्वीडिश अकादेमीने 'आदर्शवादी' ढंगकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचनाके रूपमें इस वर्ष 'नोबेल पुरस्कार' देकर सम्मानित किया

पद्मधर त्रिपाठी

"ग़रीबोंको प्रभुका आदेश है कि सन्तोष करें। इसलिए जब ग़रीब और भूखे रोते हैं तो वह उनके आँसुओंको इकट्ठा कर लेता है और कुहरा बना उसमें आकाशको लपेटकर गहरे नील सागरमें फेंक देता है। जलयान सागरमें भटकते हैं और अपनी राह भूल जाते हैं। कोई-कोई तो किसी जलती चट्टानसे टकराकर डूब भी जाते हैं। प्रभु कभी-कभी उन आँसुओंको ओसमें भी बदल देता है और एक ही रातमें धरतीपर दूर तक लहलहाती हमारी फ़सलें ठिठुर जाती हैं, उन्हें पाला मार जाता है। क्षोभके आँसुओंसे फ़सलें गल जाती हैं और दुनियामें भयंकर अकाल पड़ता है, महामारी फैलती है। इसलिए ग़रीबोंको रोना नहीं चाहिए, क्योंकि रोना अपने-आपको आघात देना है।"

—ये पंक्तियाँ साठ वर्षीय रूसी लोक-जीवनके सूक्ष्म चितेरे और जनप्रिय उपन्यासकार मिखाइल अलेक्जेन्द्रोविच शोलोखोवके उपन्यास 'भूमि : नयी तोड़ी हुई' की हैं। यह उनका दूसरा उपन्यास है। स्वीडिश अकादेमीने शोलखोवको उनके पहले उपन्यास 'और दोन अचंचल बहती है' पर अपने विश्वप्रसिद्ध नोबेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार (साहित्य)-द्वारा पुरस्कृत–सम्मानित किया है। कहना न होगा कि सोवियत तन्त्र अभी भी इस विश्वप्रसिद्ध पुरस्कार-सम्मानको अन्तर्राष्ट्रीय रूपमें स्वीकार नहीं करता। शोलोखोवके पहले भी दो अन्य रूसी लेखकों—इवान बुनिन (१९३३) और बोरिस पास्तरनाक (१९५८)—को यह पुरस्कार दिये जानेकी घोषणा हो चुकी है। पास्तरनाकने तो पुरस्कार लेनेसे इनकार भी कर दिया था : क्योंकि सोवियत-तन्त्र और जनमत उसके पक्षमें नहीं था। इस प्रसंगको जितने भी रूप दिये गये उनमें विशेष महत्त्वपूर्ण, जो कि विशुद्ध राजनयिक ही रहा, यह था कि पास्तरनाकको 'डॉ० जिवागो' में की गयी रूस-विरोधी अभिव्यक्तियोंके कारण ही पश्चिमी देशोंने पुरस्कृत किया है।

किन्तु जहाँ इस कथनके साथ एक बड़ी सचाई होनेकी गुंजाइश हो सकती है, गोकि अपने-आपमें यह सचाई भी ग़लत सन्दर्भोंवाली रही, एक बड़ी सही सचाई यह भी है कि शोलोखोवको नोबेल पुरस्कार दिये जानेपर सोवियत-तन्त्र उस पहलेवाली सचाईकी पुनरावृत्ति नहीं कर सकता। शोलोखोवने यह सम्मान सहर्ष स्वीकार कर लिया है। यहीं यह कहना शायद अप्रासंगिक न होगा कि पास्तरनाकको तो उस अस्वीकरणके बाद भी आखिरी साँस तक अपने 'साम्यवादी' देशमें ही बड़ी असम्मानजनक और यातना-भरी जिन्दगी बितानी पड़ी। शोलोखोवके साथ ऐसी कोई बात नहीं आयी है। और सोवियत संघके पास भी ऐसा कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं है कि वह उन्हें पुरस्कार लेनेसे मना कर सके। अलावा इसके रूसी लोकमत भी शोलोखोवके पक्षमें है। वहाँकी जनता उन्हें और उनके साहित्यको सम्मान देती है, प्यार करती है। शोलोखोव रूसके 'लेनिन' पुरस्कार तथा 'स्तालिन' पुरस्कार-द्वारा पहले ही सम्मानित हो चुके हैं।

समाचारपत्रोंमें जब शोलोखोवको नोबेल पुरस्कार मिलनेका समाचार निकला तो सहसा विस्मय हुआ। विस्मय इस कारण नहीं कि यह पुरस्कार शोलोखोवको मिला, न ही इसलिए कि शोलोखोवको यह इतनी देरसे क्यों मिला; विस्मय इस कारण हुआ कि समाचारपत्रोंने ही कुछ समय पूर्व तक इस पुरस्कारके लिए जिन प्रत्याशी नामोंकी विज्ञप्ति की थी उनमें शोलोखोव कहीं न था। जहाँतक शोलोखोवको यह पुरस्कार विलम्बसे मिलनेकी बात है, कुछ कहना व्यर्थ है। क्योंकि स्वीडिश अकादेमीने ही अपनी भूल स्वीकार करते हुए माना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोलोखोवको यह सम्मान लगभग तीस वर्ष पहले मिलना चाहिए था।—अर्थात् एक स्वीडिश प्रतिनिधि पत्रके स्पष्टीकरणके अनुसार, जब बुनिनको दिया गया। पास्तरनाकको पुरस्कार दिये जानेके समाचारपर शोलोखोवकी प्रतिक्रिया भी थी : "लेखकोंके साहित्यिक मूल्यांकनमें अकादेमी निरपेक्षता नहीं बरतती।" और अब शोलोखोवको जब स्वयं पुरस्कार पानेका समाचार मिला तो शिकार खेलते समय हलकी मुसकानके साथ वे बोले, "मुझे दिया गया है तो मैं स्वीकार करता हूँ, यद्यपि इससे साहित्यकारकी लोकप्रसिद्धि, प्रतिभा तथा प्रभावके सन्दर्भमें बहुत मामूली परिवर्तनकी कल्पना की जा सकती है।"

शोलोखोवका जन्म २४ मई १९०५ को दोन नदीके एक तटवर्ती गाँव वेशेन्स्कायामें हुआ था। शिक्षा समाप्त करनेके बाद शोलोखोवको जीवन-यापनके लिए अनेक धन्धे—प्राइमरी स्कूलकी अध्यापकी, खलासी, ईंट बनानेवाले, लेखा-पाल, पत्रकार आदि – स्वीकार करने पड़े। किन्तु उनकी मुख्य प्रवृत्ति लेखन-की ओर रही जो बहुत पहलेसे बनी थी। लिखना शोलोखोवने १९२३ से प्रारम्भ किया, यानी अठारहकी उम्रसे। प्रारम्भिक रचनाएँ १९२४ मे प्रकाशित हुईं। तबतक प्रमुख रूसी साहित्यकारोंमें उनकी गणना नहीं हो पायी थी। अपना यह पहला और नोबेल पुरस्कार सम्मान-प्राप्त उपन्यास 'और दोन अचंचल बहती है' उन्होंने १९२३ में लिखना प्रारम्भ किया और १९४० में पूरा होकर सामने आया। दोन-प्रदेशके कज़ाकोंके जीवनपर आधारित यह उपन्यास रूसी गृह-युद्धका 'महाकाव्य' माना जाता है। इस उपन्याससमें शोलोखोवने चरित्रोंके आन्तरिक द्वन्द्वों, व्यक्ति और समाजकी नियतिके बीच उपजती जटिलताओं तथा नायककी त्रासद स्थितियोंके माध्यमसे इतिहासके जीवन्त परिप्रेक्ष्यके प्रस्तुती-करणकी एक बड़ी शुरुआत की है। उपन्यासका हर चित्र दोन प्रदेशकी सतरंगी आंचलिकतासे रँगा हुआ है। गँवई मिट्टीकी गन्ध, दूर-दूर तक खेतोंमें फैलती धूप, 'बादलकी चटखी हुई सीप तोड़कर' निकली चाँदनी – सभी सजीव हैं। कज़ाकी लोकगीतोंका भी शोलोखोवपर बहुत प्रभाव रहा है जिसकी नशीली गूँजें उन्होंने अपने इस उपन्याससमें बाँधी हैं। इसके अतिरिक्त यह उपन्यास युद्धकी विभीषिका-में साँस लेते मानव और जीवनपर अटूट आस्थाकी भी कथा है।

शोलोखोव यथार्थवादी लेखक हैं। कहना न होगा कि उनके सभी उपन्यासों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चरित्र मानवीय भावनाओंके जीवन्त प्रतीक बन गये हैं। अपने हर चरित्रके साथ वे रम गये हैं : जैसे सभीका सुख-दुःख उनका अपना ही झेला हुआ हो। सामाजिक प्रसंगोंसे लेकर तीखे और 'पोस्तेके नीले फूलोंकी तरह रतनारे' प्रेम-प्रसंगोंको भी उन्होंने बड़ी सूक्ष्म और गहरी अभिव्यक्ति दी है। उनके अन्य उपन्यासोंमें प्रमुख हैं 'भूमि : नयी तोड़ी हुई', 'मनुष्यका भाग्य', 'पारिवारिक आदमी', 'नश्वर शत्रु' आदि।

इसमें सन्देह नहीं कि शोलोखोव हमारे युगके महान् कलाकार हैं। रूसकी किसानी ज़िन्दगीपर शासनके सन्दर्भमें पड़ते नये प्रभावोंका जितना सजीव और मर्मस्पर्शी चित्रण शोलोखोवने किया है, सम्भवतः अन्य किसी रूसी उपन्यासकारने नहीं।

●●

तार सप्तक

संशोधित परिवर्द्धित संस्करण

जो एक ऐतिहासिक दस्तावेज़को उपलभ्य बनाता है और साथ ही परवर्ती काव्य-विकासको समझनेके लिए आवश्यक सहायक कड़ी प्रस्तुत करता है

इसी समकालीन अर्थवत्ताकी पुष्टिके लिए इस महत्त्वपूर्ण कृतिके इस संस्करणमें पहले की सब सामग्री अविकल देते हुए अतिरिक्त रूपसे सातों कवियों के 'वक्तव्य' पर 'पुनश्च' और कमसे कम एक-एक नयी विशिष्ट रचना भी संकलित की गयी है

संकलनकर्ता—सम्पादक : 'अज्ञेय'

भारतीय ज्ञानपीठसे अगले मास प्रकाश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोबेल पुरस्कार
तथ्य और सिद्धान्त

इस वर्षके नोबेल पुरस्कारपर कुछ प्रश्न-चिह्नोंके बीच एक प्रश्न-चिह्न यह भी कि पुरस्कार समितिके अध्यक्षकी कूटनीतिक टिप्पणीके बावजूद शोलोखोवने पुरस्कार स्वीकार किया ?

हंसराज रहबर

इस वर्ष साहित्यका नोबेल पुरस्कार शोलोखोवको दिया गया है। यह एक घटना नहीं, असाधारण घटना है। असाधारण इसलिए कि किसी कॅम्युनिस्ट-मार्क्सवादी विचारधाराके लेखकको यह पुरस्कार दिये जानेका यह पहला अवसर है। समाचारपत्रोंमें यह खबर इस तरह प्रकाशित हुई है :—

"स्वीडेनकी अकादेमीने समाजवादी यथार्थवादके गद्य साहित्यके साठ वर्षीय साहित्यकारको यह पुरस्कार उनकी कलात्मक शक्ति और निष्ठा (इण्टिग्रेटी) के लिए दिया है जो कि उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'और दोन अचंचल बहती है' में अभिव्यक्त हुई है।"

साथ ही अकादेमी नोबेल समितिके अध्यक्ष डॉ० ऑस्टलिंगकी टिप्पणी है : "श्रीशोलोखोव हालाँ कि पक्के कॅम्युनिस्ट हैं तो भी उन्होंने अपने ग्रन्थको अपने सिद्धान्तसे अछूता रखा है।" उनकी यह टिप्पणी ही इस घटनाके असाधारण होनेका प्रमाण है। किसी भी लेखकके लिए क्या यह सम्भव है कि अपनी रचना-को वह अपने सिद्धान्तसे अछूता रखे ? समितिके अध्यक्षको आखिर यह कहनेकी जरूरत ही क्यों महसूस हुई ? समाजवादी यथार्थवाद अगर 'यथार्थ' तथा 'अति यथार्थवाद' से किसी तरह भिन्न है तो क्या उसका आधार ही द्वन्द्वात्मक भौतिक-वादका सिद्धान्त नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन प्रश्नोंका उत्तर देनेसे पहले 'और दोन अचंचल बहती है' पर एक दृष्टि डाल लेना आवश्यक होगा। यह उपन्यास आठ खण्डों और चार भागोंमें विभाजित है जो १९२९ से १९४० तक समय-समयपर प्रकाशित हुए। जैसा कि अखबारकी खबरमें भी कहा गया है कि इस उपन्यासमें शोलोखोवने रूसी जनताके एक ऐतिहासिक दौरको अभिव्यक्ति प्रदान की है; यह दौर १९१४ से १९२१ तकके महान् संघर्षका है; वह दौर है जिसमें रूसी जनताने अपने बहादुर सपूतोंको जर्मनीके विरुद्ध युद्धमें झोंका, फ़रवरी १९१७ और अक्तूबर १९१७ की दो क्रान्तियाँ देखीं और फिर उसे एक भयंकर गृह-युद्धमें जूझना पड़ा। इस भारी हलचलने रूसके पुराने सामन्ती समाजको जड़से उखाड़ फेंका और वहाँ एक नये सोवियत समाजका सूत्रपात हुआ। इस अग्नि-दीक्षामें रूसी जनताके परम्परागत जर्जर संस्कार, रूढ़ियाँ और अन्धविश्वास भस्म हुए और वह कच्चे लोहेसे कैसे इस्पात बनी – यही शोलोखोवके इस उपन्यासका बुनियादी विषय है।

इस विषयको निभाना और उसे कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करना निश्चय ही सहज नहीं था। मार्क्सवादी विचारधाराके अनुसार नयी सामाजिक व्यवस्था पुरानीके गर्भसे जन्म लेती है और इस परिवर्तनके दौरान समूचे समाजको एक भारी प्रसूति-पीड़ामें-से गुज़रना पड़ता है। प्रसूति-पीड़ाके इस युगको अभिव्यक्ति देना महज़ शब्दोंका खेल नहीं था। लेखकको एक कुशल दाईकी नाईं इस प्रक्रिया-से भलीभाँति परिचित होना और इस पीड़ाको शिवके विषकी भाँति अपने भीतर पचा लेना ज़रूरी था। शोलोखोवकी सफलता इसमें है कि उसने दोनोंका ध्यान रखा, और उसके हाथों क्रान्तिका जो बालक जन्म लेता है वह रूसी जनताकी महान् स्वस्थ ऐतिहासिक परम्पराका ही एक नया सुन्दर रूप है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सिद्धान्तके अनुसार प्रकृति और समाजमें विरोधी तत्त्वों-असंगतियोंका संघर्ष निरन्तर जारी रहता है। गति और परिवर्तन इसी संघर्षका नतीजा हैं। मानव समाजकी आदिम युगसे अबतक जो प्रगति हुई या आगे होगी, उसका आधार यही असंगतियोंका परस्पर संघर्ष है। साधारण परिस्थितिमें—अमन और शान्तिके दौरमें नया धीरे-धीरे बनता और उभरता है तथा पुराना बिगड़ता और मिटता रहता है। आख़िर जब नया प्रत्यक्ष होकर पुरानेको चुनौती देता है, उसके गर्भसे बाहर निकलनेको आतुर हो जाता है, तो गृह-युद्ध अथवा क्रान्तिकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। और इसका उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना अनिवार्य है—एक अटल ऐतिहासिक प्रक्रिया है। शोलोखोवने जिस ऐतिहासिक युगको अपनी इस पुरस्कृत उपन्यास-कृतिका विषय बनाया है उस समय रूसी समाजमें यह प्रक्रिया अपने चरमपर पहुँच चुकी थी। ज़ारके पुराने, बूढ़े, जर्जर सामन्ती समाजके गर्भसे नये समाजवादी समाजका सुन्दर-स्वस्थ बालक जन्म ले रहा था। दरअसल यह संघर्ष व्यक्तियोंका नहीं, नयी और पुरानी मान्यताओं—दो विरोधी सिद्धान्तोंका—भौतिकवाद और आदर्शवादका संघर्ष था। इसमें एकको टूटना और दूसरेको उसका स्थान ग्रहण करना था। अस्तित्व-की रक्षाके लिए ये संघर्ष स्वाभाविक भी हैं। ग्रीगोरी (उपन्यासका नायक), इज़वारिन, फोमिन, चुमाकोव आदि अपने बचावके लिए हाथ-पाँव पटकनेवाले पुराने समाजके प्रतिनिधि हैं। उनकी भी मान्यताएँ हैं और वे अपनी इन मान्य-ताओंके लिए अन्त तक निर्भीकता और वीरतासे संघर्ष जारी रखते हैं। शोलोखोव-ने उन्हें भी क्रान्तिकारियोंकी तरह साहस और योग्यतासे लड़ते-मरते दिखाया। गृह-युद्धके क्रान्तिविरोधी नेता कोलचक और डानविक अत्याचारी राक्षस या दैत्य नहीं, प्रतिक्रियाके प्रतिनिधि वीर-पुरुष हैं। विशेष ऐतिहासिक परिस्थितियोंने उन्हें एक भूमिका सौंप दी है और वे प्राणपणसे इसे निभा रहे हैं। इसी तरह क्रान्ति भी लेनिन या किसी दूसरे नेताका चमत्कार नहीं। उन्हें भी इतिहासने एक भूमिका सौंप दी है जिसे वे सजग और सचेत रूपसे निबाहते हैं।

शोलोखोवने जहाँ क्रान्ति-विरोधी पात्रोंके विरुद्ध घृणा अथवा आक्रोशका भाव नहीं अपनाया वहाँ क्रान्तिकारी नेताओं और पात्रोंके प्रति आदर्शवादी धार्मिक श्रद्धा भी नहीं दिखायी। विरोधी शक्तियोंके प्रति निजी पात्रोंको उनके गुण-दोषों तथा वर्गगत और व्यक्तिगत स्वभावके साथ चित्रित कर देना ही वस्तुतः समाजवादी यथार्थवाद है और यह द्वन्द्वात्मक भौतिकवादके सिद्धान्तको आत्मसात् किये बिना सम्भव नहीं।

—और अब ज़रा सोचिए कि डॉ० आस्टलिंगकी यह टिप्पणी कि शोलोखोव-ने पक्का कॅम्युनिस्ट होते हुए भी अपने ग्रन्थको अपने सिद्धान्तसे अछूता रखा है, कहाँतक संगत है? शोलोखोवके लिए यह सम्भव ही नहीं था। उसने संघर्षके जिस युगको उपन्यासका विषय बनाया है उसकी सशक्त और प्रगतिशील शक्ति ही मार्क्सवादी सिद्धान्त है। यदि शोलोखोव इसे व्यावहारिक रूप धारण करते न दिखाता तो न यह ऐतिहासिक युगके साथ न्याय होता और न वह अपने उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न्यासको समाजवादी-यथार्थ साहित्यकी उच्च कलाकृति बना पाता।

अध्यक्ष महोदयको यह टिप्पणी करनेकी जरूरत शायद इसलिए महसूस हुई कि शोलोखोव (एक कॅम्युनिस्ट) को पुरस्कार देकर समितिने पहली बार अपने उस नियमका उल्लंघन किया है जिसमें स्पष्ट कहा गया है कि 'पुरस्कार आदर्शवादी रचनापर दिया जायेगा।' लेकिन हमारा यह युग विज्ञानका युग है। आदर्शवाद बहुत पहले अपनी ऐतिहासिक भूमिका खत्म कर चुका है। आदर्शवादका सिद्धान्त अब विसंगतिके दार्शनिकों (फिलासफर्स ऑव ऐब्सर्डिटी) को जन्म देता है। लेकिन विजयी मानव, जो संघर्ष करते हुए आज यहाँतक आ पहुँचा है—अन्तरिक्षमें उड़ानें भर रहा है, जीवनको एक विसंगति (ऐब्सर्डिटी) माननेसे इनकार करता है। नोबल पुरस्कार समितिके अध्यक्ष डॉ० ऑस्टलिंग महोदयने समितिकी ओरसे इसे मनवानेका व्यर्थ प्रयत्न किया और समिति बदनाम हुई। शायद इस बदनामीको धोनेके लिए ही समितिने अपने नियमका उल्लंघन किया और अध्यक्ष महोदयको टिप्पणी करनी पड़ी।

सार्त्र चाहे मार्क्सवादी नहीं, पर उसने क्रान्ति-विरोधियोंकी पंक्तिमें खड़े होना कभी स्वीकार नहीं किया। उसके नोबल पुरस्कार अस्वीकारनेका कारण भी यही था। वह बदनामीका भागी नहीं बनना चाहता था। लेकिन शोलोखोवके साथ दूसरी स्थिति रही। उसे पुरस्कार मिलनेसे एक पुरानी प्रथा टूटी है। यही कारण है कि उसने पुरस्कार सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

● ●

न्यायकी रक्षा और अन्यायके प्रतिरोधके लिए निरन्तर संघर्ष, सब-कुछ सहकर भी अपना मस्तक ऊँचा रखनेका संकल्प, निष्ठा और अनन्यताकी अग्नि-परीक्षामें खरा निकलकर भी अन्यायी और अदीन बने रहनेका कठोर आत्मबल, अपनेको अर्पित करके भी अर्पित रूपमें अपना अस्तित्व अमिट रखनेका यत्न और आकाश-देवताकी आराधना करते हुए भी धरतीके प्रति ममत्व—यही तो पार्थिव धर्म है।

—आँगनका पंछी और बनजारा मन : विद्यानिवास मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्यकी गतिविधि

कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्योंकी
जानकारी

महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवसके अवसरपर राष्ट्रपति महोदयकी ओरसे भारतके ४ प्रसिद्ध संस्कृतज्ञोंको सम्मानित किया गया। इनके नाम हैं पण्डितराज टी. ए. वी. दीक्षितार, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, महामहोपाध्याय सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव तथा डॉ० राधागोविन्द बासक। इन सभीको 'सम्मान पत्र' प्रदान किया गया। पण्डितराज दीक्षितार वेद-शास्त्रके प्रकाण्ड विद्वान् हैं तथा संस्कृतके अच्छे धारा-प्रवाही वक्ता हैं। बीससे अधिक वर्ष तक आप तिरुपतिके श्रीवेंकटेश्वर संस्कृत कॉलेजके प्राध्यापक और प्राचार्य रहे, फिर प्रसिद्ध संस्कृत-प्रेमी श्री कन्हैयालाल मुन्शी आपको अपने बम्बई-स्थित भवन्स संस्कृत कॉलेजका प्राचार्य बनाकर ले आये। यहाँ वे १९४६ से कार्य कर रहे हैं। आपने प्रभाकर शाखाके मीमांसा ग्रन्थ 'अर्थवाद विचार' का सम्पादन किया है तथा इस समय वेदान्तके एक दुर्लभ ग्रंथ 'तत्त्वलोक' का सम्पादन कर रहे हैं। आप भवनके संस्कृत त्रैमासिक, 'संविद्' के संयुक्त सम्पादक भी हैं। कांची और द्वारिकाके शंकराचार्योंने भी आपको अनेक उपाधियोंसे विभूषित किया है।

डॉ० मंगलदेव शास्त्री संस्कृत, तथा मुख्यतः वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् हैं, जो विचार और अध्ययनकी आधुनिक प्रणालीसे प्रभावित हैं। आप भारतीय संस्कृति-के विकासकी कई खण्डोंमें मीमांसा कर रहे हैं जिसका प्रथम खण्ड, वैदिक धारा, बहुत ही लोकप्रिय हुआ है। आप काशी संस्कृत कालेजके प्रिन्सिपल तथा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयके उपकुलपति रहे। आपने 'ऋग्वेद प्रातिशाख्य' का ३ खण्डोंमें सम्पादन किया है तथा 'रश्मि माला' और 'अमृत मन्थन' नामक काव्य-ग्रन्थ लिखे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महापहोपाध्याय सिद्धेश्वर शास्त्री विष्णु चित्राव पूना-निवासी हैं तथा वहाँके प्रमुख पण्डितोंमें हैं। आपने मराठीमें ऋग्वेदका अनुवाद किया है तथा 'महाभाष्य शब्दकोष' का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त आपने तीन खण्डोंमें 'भारतवर्षीय चरित्रकोष''का प्रकाशन किया जिससे आपको बड़ी ख्याति प्राप्त हुई। 'प्राचीन चरित्रकोष' १९३२ में, 'मध्ययुगीन चरित्रकोष' १९३७ में तथा 'अर्वाचीन चरित्रकोष' १९४६ में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार पूनाके प्रसिद्ध कोषकारोंमें आपकी गणना की जाती है।

बंगदेशीय डॉ० राधागोविन्द बासक सम्भवतः इनमें सबसे वृद्ध हैं और ८०को लाँघ चुके हैं। आपने हालकी 'सत्तसई', प्रवरसेनके 'सेतुबन्ध' तथा सन्ध्याकरनन्दिनके 'रामचरित' का सम्पादन किया है। इसके अतिरिक्त आपने बंगलामें 'प्राचीन राज्य शासन पद्धति' तथा अँगरेज़ीमें 'हिस्ट्री ऑव नार्थ-ईस्टर्न इण्डिया' नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

इसी प्रकार कुछ समय पूर्व महाराष्ट्र सरकारने वेदकी प्राचीन परम्परा तथा पाठ पद्धतिको जीवित रखनेके लिए ५ विद्वानोंको सम्मानित किया था। ये हैं: कोल्हापुरके एम० जी० पुरोहित, सताराके एन० टी० लेले, बम्बईके एस० आर० पाटनकर, जालनाके यू० ए० माजलगाँवकर तथा नागपुरके भाऊ शास्त्री आर्वीकर। इन सभीको सम्मान-पत्रके अतिरिक्त रु०१००० भेंट किये गये। स्मरण रहे कि प्राचीन वेदपाठी पण्डित उत्तर भारतमें तो हैं ही नहीं, दक्षिणमें भी इने-गिने ही पाये जाते हैं। इस क्षेत्रमें महाराष्ट्रको विशेष स्थान प्राप्त है। आज भी वेदोंके प्रचारमें महाराष्ट्र ही अग्रणी है। इस सम्बन्धमें विशेष उल्लेखनीय हैं पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर और उनका स्वाध्याय मण्डल जिन्होंने सरल हिन्दीमें सभी वेदों तथा अन्य ग्रन्थोंका अनुवाद कर कई पीढ़ियोंको लाभान्वित किया है। इस समय पं० सातवलेकरकी अवस्था ९८ वर्षकी है परन्तु वे युवककी भाँति कार्यरत हैं।

तिरुपतिके सुप्रसिद्ध देवस्थानम्के प्रबन्धकोंने एक 'गीता ग्रन्थालय' की स्थापना की है जिसमें संसार-भरमें अबतक हुए गीताके सभी भाष्यों तथा विवेचक ग्रन्थोंका संग्रह किया जायगा। इस प्रकार यह गीताविषयक अध्ययनका एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन सकेगा।

● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित समीक्षाएँ
शेष स्वर

उद्देश्य इतना ही कि महत्त्वपूर्ण समकालीन कृतियोंपर
प्रकाशित विभिन्न पर विवेकी समीक्षाएँ एक
साथ सामने आकर पाठकको कृतिके
समग्र व्यक्तित्वसे परिचित करा सकें

चारु चन्द्रलेख*

१

एक टूटा दर्पण

दिक्कालकी मापमें अघोरनाथने चन्द्रद्वीपकी उपत्यकामें चन्द्रगुहाके पिछले हिस्सेमें उट्टंकित वृत्तकी जो प्रतिलिपि प्राप्त की, उसका काल है ईसाकी बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी और घटना-स्थल है आर्यावर्त—आजका उत्तरी भारत। यों उसमें प्रसंगतः मध्य एशिया, चीन, तिब्बत, किरात आदि देशोंके रोचक विवरण हैं और केवल प्रसंगतः आ गयी संज्ञाओंसे कुछ अधिक ही हैं। कथामें राजनीतिके दाँवपेंच हैं; प्रजातन्त्रका जयघोष है, तान्त्रिक और बौद्ध साधनाओंकी मनोवैज्ञानिक व्याख्याएँ हैं; सिद्धोंकी सिद्धियोंका चमत्कार है; गोरखनाथके योगका प्रताप है; पटुनटकलाचपल कृष्णकी लीलाका गान है; सामन्ती समाज-व्यवस्थापर प्रकाश है; रणनीतिकी विवेचना है; देशमें सोनेके रिज़र्व स्टॉककी समाप्तिकी घोषणा है और मुद्रा-स्फीतिकी समस्या है; विदेशी आक्रमण हैं; इस्लामकी विशिष्टता भी है और देश-प्रेमकी पुकार भी; आश्लेषमें लिपटी हुई बाहुएँ भी

* चारु चन्द्रलेख : हज़ारीप्रसाद द्विवेदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और तलवार भाँजती हुई भुजाएँ भी। इसमें कोटि-वेधी रस भी है और मर्मभेदी दृष्टि भी; अमोघवाक् भविष्यवाणियाँ भी हैं और पृथ्वीसे पराजित होने-वाले ग्रह-नक्षत्र भी। 'चारु चन्द्रलेख'में भारतवर्षकी मोहक प्रकृति—वन, लता, वृक्ष, पुष्प, पर्वत, उपत्यका, चाँदनी, सूर्योदय—है और है कालिदासकी कविता और उस कविताकी व्याख्या। भाषाविज्ञानके विद्यार्थियोंके लिए भी सामग्री है और चीनी आक्रमणके सन्दर्भमें यह भी जानने योग्य है कि शानवंशके प्रतापी राजाओंकी एक लाख सेनाको सिर्फ़ पाँच हज़ार विदेहोंने समाप्त कर दिया था और तिब्बत असलमें हमारा ही है। अस्तु, इसमें अतीतका इतिहास है, वर्तमानके विचार हैं एवं भविष्यके लिए सन्देश है, और इस अर्थमें कालके एक खण्डमें सीमित न रह कर कथा 'त्रिकालव्यापिनी' हो जाती है—त्रिजगन्मनोज्ञा त्रिपुर-सुन्दरीकी भाँति।

देश और कालमें ही नहीं, रूप और प्रकृतिमें भी इतनी फैली-बिखरी सामग्रीको समेटनेवाली कथाके लिए इतिहासके प्रामाणिक स्रोत हैं : कुछ पुराने ग्रन्थोंमें मिलनेवाली कथाएँ, कुछ साधन-ग्रन्थोंके कर्मकाण्ड सम्बन्धी श्लोक, और दर्शनकी चर्चा करनेवाले ग्रन्थोंके कुछ विचार। इतने क्षीण कथा-सूत्रोंकी वयन-चेष्टा लेखककी शक्ति और साहसका प्रमाण है और उस कल्पनाको बधाई दी जानी चाहिए जो इस असाध्य-साधन-जैसे कार्यके लिए उन्मुख हुई। कथा-तत्त्वकी कमीके सन्दर्भमें यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि कथानक-तत्त्वका यह ह्रास आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासोंसे भिन्न प्रकृति और कोटिका है। यहाँ कथामें बाह्य वस्तुनिष्ठता बराबर रही है—कथाकी बुनावट अन्तःप्रयाणपर आधारित नहीं है। 'चारु चन्द्रलेख' में द्विवेदीजीकी कल्पना-शक्तिको खुलकर खेलनेका अवकाश मिला है। मुख्य-कथाकी क्षीणताको लेखककी उर्वर कल्पनाने अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों, प्रसंगच्युत रोचक कथाओं, प्रकृति-सुषमा, उद्बोधना-त्मक विचारों आदिसे पृथुलतामें परिवर्तित करनेकी चेष्टा की है। अस्तु, इस चेष्टामें कल्पना भागती गयी है—बग़ैर शिल्पपर विचार किये, ठोस परिस्थितियों-पर विचार किये, कथाकी सम्भावनाओं, प्रतीतियों एवं मूल्य-सत्तापर विचार किये। कल्पनाने पीछे मुड़कर नहीं देखा कि कितनी धरती वह रौंद आयी है। पीछेका तमाम गड्डमड्ड होता जाता है, एक स्पष्ट, साफ़ और संगत तसवीर नहीं उभरती। उपन्यासके अन्तमें आकर तमाम दर्शन, व्याख्याएँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेष्टाएँ, प्रणय-प्रसंग सब डूब जाते हैं—एक अन्धकारमें। वह अन्धकार है इतिहासके इस प्रखर यथार्थका कि वह युग असफल है, वन्ध्य है। इस बातके अतिरिक्त लेखक जो कुछ कहना चाहता है वह प्रसंगानुकूल नहीं बन पाता या फिर 'जनवाद' आदिकी 'थीमें' अधकचरी, अर्धभुक्त तथा वायवी बन रह जाती हैं। अन्तिम अध्यायकी ट्रैजेडी अवश्य कुछ-न-कुछ संकेतित कर जाती है, उस पूरे युगकी व्यर्थताको। वहाँ क्रिया-शक्ति मैना मृतप्राय है, इच्छा-शक्ति रानो चलनेमें पंगु है तथा बोध-शक्ति बोधा भयभीत और पलायनशील है। त्रिपुरकी इस ट्रैजेडीको लेखक एक सीमा तक झेल सका—उसने 'कामायनी'-जैसा कोई काल्पनिक समाधान देकर विश्रान्तिका अनुभव नहीं करना चाहा—लेखककी रोमैण्टिक कल्पनाके लिए इतनी शक्ति और यह सफलता भी गणनीय मानी जानी चाहिए। हमारे साहित्यकारकी यथार्थ दृष्टि गहरी हुई है—इससे इतना संकेत तो मिलता ही है। पर जितने बड़े कैनवसमें जितनी बड़ी बात व्यंजित करनेकी चेष्टा की गयी थी, वह सफल नहीं होती।

अस्तु, कथाके जिस कच्चे मालकी ओर हम ऊपर संकेत कर आये हैं उसे सरसरी तौरपर भी देखकर इतना तो कहा ही जा सकता है कि वह हीन नहीं है, शक्तिकी सम्पूर्ण सम्भावनाओंसे युक्त है और स्थूल घटनापरकतासे लेकर उच्चतम बौद्धिक विचारणाओंके लिए सक्षम है। इन तथ्योंके माध्यमसे जो थीम उभरेगी उसे सबल होना चाहिए। पर एक दूसरी बात, जो यहाँ याद रखनी होगी, यह है कि ये तथ्य तो अरूप हैं, निष्क्रिय हैं; इनके लिए दृढ़ कथा-सूत्रमें विविध वस्तु-सम्बन्ध होने चाहिए। पर लगता है कि मूलतः लेखकसे चूक इसी बिन्दुपर प्रारम्भ होती है। कथाके अन्तर्गत संगत वस्तु-सम्बन्धों (ऑब्जेक्टिव कोरिलेटिव्ज)की खोज वस्तुतः शिल्पकी खोज है और द्विवेदीजीके मनमें शायद कहीं यह विद्यमान है कि कथ्य—यानी विचार या भाव—महान् होना चाहिए; शेष सब गौण है। इस दृष्टिकोणके कारण सम्पूर्ण कथा-सामग्रीसे अपनेको तटस्थ कर वे शिल्पके माध्यमसे उसका विश्लेषण और विकास नहीं कर सके; उसकी तमाम निहित सम्भावनाओंका अन्वेषण भी नहीं कर सके तथा जो सबसे अधिक आवश्यक कार्य था, उसका मूल्यांकन—वह भी नहीं हो सका। यह कार्य शिल्पके माध्यमसे ही सम्भव होता है और मेरा यह आरोप है कि लेखकको शिल्पके द्वारा अपनी सामग्री या विषय-वस्तुकी जो परिचर्या करनी थी, वह नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सका। इसे निष्ठाका अभाव भी कहा जा सकता है। परिणामस्वरूप प्रस्तुत उपन्यासमें कच्चे मालका जिस परिणत कथावस्तुमें रूपान्तरण होता है, वह सन्दिग्ध है। एक महत्त्वपूर्ण समीक्षक-द्वारा लिखे जानेवाले उपन्यासमें यह अनवधानता कुछ विचित्र-सी लगती है। इसीलिए यह सन्देह करना बहुत अनुचित न होगा कि लेखकने जो कुछ कहना चाहा है, उसका एक बहुत बड़ा अंश उसके अपने 'प्रामाणिक' अनुभव का अंग नहीं है—विचार और पाण्डित्यका भले ही हो। परिश्रमपूर्वक की गयी ऐतिहासिक खोजोंसे प्राप्त घटनाओं, दृश्यों, कथाओं आदिको उपन्यासकारने अत्यन्त वैयक्तिक व्याख्या देनेकी चेष्टा की है। यह तथ्य भी इसी बातकी ओर संकेत करता है कि कथाके एक बड़े अंशकी अनुभवगत 'प्रामाणिकता' सन्दिग्ध है—अगर असन्दिग्ध है तो पाण्डित्यका विलास।

इस उपन्यासकी कथा-पद्धति चित्र-समीक्षककी प्रणाली-जैसी है। पात्रोंको अतीतकी गैलरीमें निश्चित चित्रोंकी भाँति उनके निश्चित स्थानोंमें टाँग दिया जाता है और परवर्ती इतिहासके आलोक-बिन्दुपर खड़े होकर उनकी समीक्षात्मक परीक्षा की जाती है और अन्तिम भागमें पुनः सबको उतारकर उनके वास्तविक स्थान—असफलताके अन्धकार—में भेज दिया जाता है। विद्याधर, धीर शर्मा, अक्षोभ्य भैरव, अमोघवज्र, बोधा, नाटी माता, रानी चन्द्रलेखा आदि ऐसे ही पात्र हैं जिन्हें राजा सातवाहन-रूपी कला-समीक्षक—जो कि कथाका नैरेटर भी है—परखता जाता है और अपनी टिप्पणियाँ देता जाता है। इन पात्रोंकी पारस्परिक तनाव-प्रतिक्रिया पूरे उपन्यास में नगण्य है—मैना अवश्य इस दिशामें अपवाद है। पूरे उपन्यासमें यदि कोई दृष्टि-बिन्दु है तो वह वातावरणमें ही देखा जा सकता है, चरित्रोंकी सत्तामें नहीं। वे या तो नितान्त भावुक प्रतिक्रियाएं करते हैं, या फिर कुछ अरूपताओंके उदाहरण बन जाते हैं।

इस विवेचनसे यह स्पष्ट है कि हज़ारीप्रसादजीकी कथा-कल्पनाकी सारी कठिनाई उस द्विधा-विभक्तिकी है जिसमें वे अतीतके प्रति प्रामाणिक बने रहते हुए भी पूरेके पूरे वर्तमान समाजका रूपान्तरण भी करना चाहते हैं। अपने सामयिक बोधके आधारपर अतीतको देखना एक बात है और अतीतकी ऐसी व्याख्याकी चेष्टा कि जिसमें पूराका पूरा वर्तमान वहीं प्रतिष्ठित हो जाये—गुणात्मक रूपसे भिन्न, दूसरी बात है। यह तो मैं नहीं कहूँगा कि यह कार्य असम्भव है – बड़ी प्रतिभा सदा असाध्य-साधन करती आयी है – पर यह अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहूँगा कि इस चेष्टामें कथाका सारा ढाँचा चरमरा उठा है। या प्रतिभा आदि की चर्चा न करके यह कहूँ कि इतने बड़े लक्ष्य तथा फलकके लिए जिस प्रकारकी कला-दृष्टि और कथा-संगठनकी अपेक्षा थी, वह सम्भव नहीं हो सका। कथाका सारा ढाँचा चरमरा ही नहीं उठा है, वर्तमानके रूपान्तरणके नामपर एक प्रकार-का अरूपीकरण (ऐबस्ट्रैक्शन) प्रमुख हो गया है।

किसी भी ऐतिहासिक कथाकारके लिए यह याद रखनेकी बात होती है कि चाहे इतिहासकी घटनाएँ हों या धर्मों, राष्ट्रों अथवा व्यक्तियोंकी नियतियाँ हों, उनका एक स्वाभाविक, वस्तुनिष्ठ वज़न होता है और एक साथ ही एक प्रकृत और वस्तुनिष्ठ अनुपात भी। यदि लेखक ऐसी कथा लिखनेमें सफल होता है जो कि ठीकसे इन सम्बन्धों और अनुपातोंको उत्पन्न करती है तो ऐतिहासिक सत्यके परिपार्श्वमें मानवीय और कलात्मक सत्य अपने-आप उभर आयेगा। पर यदि उनके वज़न और अनुपातको विरूप किया गया तो कलात्मक चित्र भी उतना ही विरूप हो जायेगा। जनपद-पार्वती चन्द्रलेखाका सिद्धयोगिनी चन्द्रलेखामें जो संक्रमण है, वह ऐसे ही विरूपीकरणका उदाहरण है। मनुष्यके रोग-शोक, कष्ट-दुःख, युद्ध-हिंसा आदिके किसी वस्तुनिष्ठ वज़न और अनुपातकी कोटियोंकी रक्षा किये बिना यह जो धर्म-परिवर्तन है वह चोट पहुँचाता है – केवल पाठकको ही नहीं, जातिकी उस सम्पूर्ण वेदनाको भी जिसे इस रूपान्तरणके लिए आधार बनाया गया है। कहना न होगा कि कला या शिल्पकी दृष्टिसे भी यह उपन्यासके सबसे कमज़ोर अंशोंमें-से है। वस्तुतः ऐतिहासिक दृष्टिकी कमज़ोरी पूरे कलानुभवकी कमज़ोरी है, और कलानुभवकी कमज़ोरी पूरे शिल्पकी कमज़ोरी है।

इस पहचानकी प्रशंसा की जानी चाहिए कि लेखकने अपनी कथाके लिए जिस दिक्कालको चुना, वह वर्तमानके प्रक्षेपणके लिए बहुत-कुछ उपयुक्त प्रतीत होता है। यह हमारे इतिहासका एक ऐसा अन्ध-युग है जिसमें नाना प्रकारकी अपरिभाषित परिस्थितियोंकी भरमार है। इन अपरिभाषित परिस्थितियोंमें एक बड़ी सीमा तक इतिहासके वातावरणकी प्रामाणिकताको खण्डित न करते हुए भी काल्पनिक कथाकी तरलताको अधिक मनमाने ढंगसे ढालनेकी सम्भावनाएँ अधिक थीं। पर यह रूपान्तरण जीवन्त तभी हो सकता था जब कि कथाकी अन्तर्योजना और बुनावटके अन्तर्गत ठोस मानवीय स्थितियोंको सिरजा जाता और ये स्थितियाँ इतिहासकी कोटियोंके भीतर बनी भी रहतीं। मुझे लगता है कि प्रस्तुत उपन्यास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में इन मानवीय परिस्थितियोंका जीवन्त रूपायन नहीं हो सका—वर्णन भले ही हो। अतीत और वर्तमानके मध्य लेखक जिस सम्बन्ध-सूत्रको जोड़ता है वह अत्यधिक प्रत्यक्ष है, अत्यधिक बौद्धिक है, तथा अत्यधिक सामान्योकृत है।

वस्तुतः ऊँच-नीच, धर्म-सम्प्रदाय, कुल-मिथ्याभिमानको मिटाकर जिस जनतान्त्रिक मानवतावादको वह मुख्य-कथ्यके रूपमें स्वीकार करता है, उसके प्रति एक ऊँचे 'ऐब्स्ट्रैक्शन' के स्तरपर लेखक अभिमुख होता है। परिणामस्वरूप कथाकी तमाम चारित्रिक इकाइयाँ और घटनाएँ अल्प हो जाती हैं। 'चाह चन्द्रलेख' के प्रारम्भको लें—उपन्यासका प्रारम्भ ही विदेशी आक्रमणकी एक कथित अरूप स्थितिसे होता है, जिसमें नायक एक अरूप व्यक्ति सीदी मौलाको ढूँढ़ने निकलता है। फिर रानीसे मिलन, विवाह आदि एक अठोस, अरूप वातावरणमें ही सम्पन्न होते हैं। यह अरूपता कहीं नागनाथकी तपस्याके वर्णनमें है, कहीं नारीके बत्तीस लक्षणोंकी व्याख्यामें झमाझम निकलनेवाले श्लोकोंके रूपमें और कहीं विद्याधरके ओजस्वी व्याख्यानके रूपमें। इस अरूपता तक ही बात सीमित नहीं रहती—इसके आगे गधैयातालके प्रसंगमें जिस पाण्डित्यका प्रदर्शन है, वह इस अरूपताको और अधिक वायवी बना देता है। राजा और रानी हीं नहीं, विद्याधर, बोधा, गोरख, अमोघवज्र, सीदी मौला, सभी इसी प्रकारके बौद्धिक रूपसे 'ऐबस्ट्रैक्ट' और आदर्शीकृत पात्र हैं। ये पात्र जीवन कम जीते हैं, दर्शन या विचारको अधिक जी लेते हैं। कारण शायद यही है कि ये पात्र लेखकके अपने उन आधुनिक मानवतावादी विचारों तथा जनतान्त्रिक आदर्शोंके विग्रह हैं जिन्हें वह स्वयं स्वीकार करता है या जिनके लिए संघर्ष करना श्लाघ्य समझता है, परन्तु ये सभी स्वयं उसके लिए वर्तमान सन्दर्भमें 'ऐबस्ट्रैक्ट' ही हैं। फलतः ऐतिहासिक अनुभवकी तात्कालिकता इन पात्रोंसे तिरोहित हो जाती है; क्योंकि जीवनमें ये समस्याएँ बिखरी और छिटपुट होती हैं तथा एकदम वैयक्तिक रूपोंमें प्रकट होती है, जिन्हें ये पात्र सामान्यीकृत करके एक ऊँचे बौद्धिक स्तरपर अभिव्यक्ति देते हैं। और इस प्रकार यह बौद्धिक सामान्यीकरण ऐतिहासिक चरित्रको कमजोर करता है।

तात्कालिक इतिहासानुभवकी बौद्धिक परिणतिका रास्ता इतना सँकरा, छोटा और अरूप है कि सम्पूर्ण प्रक्रिया राजा सातवाहन-जैसे एक व्यक्तिमें घटित होने लगती है। परिणामस्वरूप यह तात्कालिक अनुभव अपनी उसी विस्तृति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेकरूपतामें उन पात्रों-द्वारा नहीं भोगा जाता जिनके पास सामान्यीकरणका यह व्यापार नहीं है। विदेशी आक्रमण या धर्म-साधनाओंके प्रति इन पात्रोंकी प्रतिक्रियाको लेकर इस बातको देखा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यासमें विदेशी आक्रमणके प्रति विभिन्न पात्रोंकी प्रतिक्रियाओंमें न वह विविधता है और न बहुरूपता, जो प्रत्येक पात्रकी सीधी, निजी प्रतिक्रियासे उत्पन्न होती है। फलतः युद्ध-द्वारा उनकी ज़िन्दगियोंकी जो परिणति होती है, वह उनकी भावनाओं और अनुभवोंमें व्यंजित नहीं होता। जो प्रतिक्रियाएँ होती हैं उनमें कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं लगता। इसी के सन्दर्भमें टॉलस्टॉयके उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' के फ्रेंच आक्रमणको लिया जाये तो स्थिति इसके विपरीत दिखाई देती है।

यही नहीं, 'चारु चन्द्रलेख'में इस सँकरे रास्तेको और सँकरा कर दिया गया है, आत्म-कथात्मक पद्धतिके द्वारा। राजा यहाँ नायक भी है और 'नैरेटर' भी; अतः सारी प्रतिक्रियाओंका बोझ उसे ही सँभालना पड़ा है। हर स्थान और हर परिस्थितिमें उसे एक समुचित ऐतिहासिक प्रतिक्रिया देनी पड़ती है। प्रतिक्रियाओंका इतना बोझ सामान्यीकरणके लिए विवश करता है। इस प्रकार अनुभव और सामान्यीकरणके मध्यका संक्रमण-पथ और अधिक संकीर्ण हो जाता है; तथा जिन स्थानोंमें, यथा विष्णुप्रियाके आश्रममें मैना और बोधाकी बातचीतके समय, या विद्याधरसे अतीतकी घटनाओंको सुनते समय (जब वह प्रतिक्रिया नहीं करता, मात्र अनुभव करता है) उन स्थानोंमें उसका चरित्र अपने ही स्तरसे नीचे गिर जाता है। क्योंकि प्रारम्भसे ही उसने 'ऐब्स्ट्रैक्शन'के माध्यमसे ही अपनी हैसियतको बनाये रखा है। वस्तुतः यहाँ जो पदार्थ खोये हुए हैं वे हैं अस्तित्वके ठोस तथ्य—और केवल वे ही लेखकको बता सकते हैं कि किसी युगके किसी पात्रके विचार, अनुभव या संवेदनाएँ क्या हो सकती हैं।

आत्मकथात्मक शिल्पकी सीमाओंकी ओर इंगित मैं पहले कर चुका हूँ। यहाँपर इस सन्दर्भमें 'बाणभट्टकी आत्मकथा'का स्मरण स्वाभाविक भी होगा और संगत भी। वह इसलिए कि इसके द्वारा प्रस्तुत उपन्यासकी असफलताको और अच्छी तरह समझा जा सकेगा। इसके अतिरिक्त जब मैं यह सवाल करता हूँ कि 'चारु चन्द्रलेख'-जैसे उपन्यासमें, जो कि ऐपिक-अभिप्रायोंको लेकर चला है, आत्मकथात्मक शिल्प क्यों अपनाया गया, तो तत्काल जो बात दिमाग़में आती है, वह यह कि एक बार 'बाणभट्टकी आत्मकथा' में उसने इस शिल्पको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध करनेमें अद्भुत सफलता प्राप्त की थी – अतः प्रस्तुत उपन्यासके लिखनेके समय भी अपने परिचित औज़ारका सहारा लेना स्वाभाविक हो जाता है। यह बात इस तथ्यसे भी समर्थित की जा सकती है कि 'चारु चन्द्रलेख' का प्रारम्भ 'बाणभट्टकी आत्मकथा' के तत्काल बाद, काफ़ी दिनों पहले, हो गया था। फिर शायद कथा अधूरी पड़ी रही और उसे पूरा १९६०-६१ में किया गया। उन दिनों इस शिल्पको अपनानेमें और अधिक आसानी हुई होगी। आत्मकथात्मक शैली रोमैण्टिक चेतनाके अधिक अनुकूल होती भी है। पर इसके बावजूद 'आत्मकथा' महत्त्वपूर्ण और सफल कलाकृति है तथा 'चारु चन्द्रलेख' अपनी असफलतामें महत्त्वपूर्ण। मुझे लगता है कि 'आत्मकथा मुख्यार्थके जिस स्तर पर घटित होती है उसकी परिधि सीमित वैयक्तिक-पारिवारिक इकाईकी है। राजनीति इस पारिवारिक-वैयक्तिक अर्थको पुष्ट-मात्र करती है। राष्ट्रकी नियतिका प्रसंग वहाँ अमुख्यार्थ रहता है; जब कि 'चारु चन्द्रलेख' में राष्ट्र या जनकी नियति मुख्यार्थ है जिसे कि वैयक्तिक-सीमित दायरेकी कथाके माध्यमसे व्यंजित करनेकी चेष्टा की गयी है। कथामें बलके इस बदलावके होते हुए भी लेखकने शिल्प वही रहने दिया है। यहाँतक कि तमाम कथानक-रूढ़ियों और घटनाओंके पैटर्न ज्योंके त्यों विद्यमान हैं। एक कविकी आत्मकथामें उन बहुत-सी बातोंका औचित्य सिद्ध हो जाता है जिन्हें कि 'चारु चन्द्रलेख' में औचित्यहीन माना गया है। आत्मनिष्ठ द्रष्टाकी तमाम व्याख्याएँ, प्रकृति, मानव-शरीर, देवमूर्ति आदिकी स्फीत ऐन्द्रिक-चाक्षुष प्रतिक्रियाएँ आदि 'आत्मकथा' में भी चित्रित हुई हैं जिनका कि औचित्य उस कवि-नायकके सन्दर्भमें है, जिसका राजनीतिके सक्रिय घटनाचक्रमें पड़ना एक आकस्मिक संयोग मात्र है। 'चारु चन्द्रलेख' के नायककी नियति दूसरी है – पर खेद है कि उसकी प्रकृति दूसरी नहीं हो सकी है।

वस्तुतः द्विवेदीजीके समस्त औपन्यासिक शिल्पका मूल स्वर वैयक्तिक निबन्धका है। वैसी ही उच्छल आवेगमयता, वैसी ही उड़ान, वस्तुओंके छिपे अर्थोंको ढूँढ़नेकी वैसी ही अभिभूत चेष्टा, प्रसंगच्युत टिप्पणियाँ तथा सूचनाएँ; पाण्डित्यका 'रहेटरिक', संस्कारों आदिके प्रति अत्यधिक उन्मुखता, प्रामाणिकता प्रकट रहने वाली व्याख्याएँ, एक ऐसा मुखौटा जिसकी आड़से लेखक अपने संघर्ष और समस्याओंको व्यक्त कर सके, आदि बातें उनके वैयक्तिक निबन्धोंमें भी हैं और इन उपन्यासोंमें भी वही अंश आये हैं। वस्तुतः यदि उनके ललित निबन्धों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यासोंके 'ग्राफ़' बनाये जा सकें तो 'कर्व' के बिन्दु आसपास ही रहेंगे। उनके समस्त चरित्रोंका निर्माण भी निबन्ध-धर्मी ही है। 'चारु चन्द्रलेख'में जनताके साथ एकमेक होनेकी बात बराबर कही गयी है। लेकिन ये जनप्रिय गठबन्धन किस प्रकारके हैं? राजाके सम्बन्ध जनतासे किस प्रकारके दिखाई पड़ते हैं? जनताके बारेमें हम क्या देखते हैं? मात्र एकाध प्रेम-प्रसंग और मित्रताएँ-भर न! शेष सभी निबन्ध या दस्तावेज़के रूपमें संक्षिप्त करके उपस्थित किया जाता है। इस निबन्ध-छाप शिल्पने इसी कारण, लेखककी परिकल्पनाको क्षत किया है। और जो कुछ अन्तमें उभरता है वह है एक टूटा हुआ दर्पण, जिसपर पड़नेवाला प्रतिबिम्ब समग्र नहीं होता—आकृतियाँ भले ही हज़ार हो जायें।

—डॉ० देवीशंकर अवस्थी
(माध्यम)

२

कल्पना-प्रधान वायवीय रचना

'चारु चन्द्रलेख' से ऐसा कोई निश्चित संकेत नहीं मिलता कि उसे ऐतिहासिक उपन्यास ही माना जाये, यद्यपि उसे ऐतिहासिक उपन्यास मानकर भी चर्चा शुरू की जा सकती है। कुछ ऐतिहासिक चरित्रों और घटनाओंके बावजूद उपन्यास कल्पना-प्रधान ही रहता है, तथ्य-प्रधान नहीं; कल्पना-प्रधान भी सजावटके अर्थमें नहीं, वायवीयताके अर्थमें। लेखकका इतिहास-बोध इतिहास-ग्रन्थोंपर आधारित न होकर प्राचीन धर्म-ग्रन्थोंपर निर्भर करता है। ऐतिहासिक तत्त्व धर्म-ग्रन्थोंसे भी लिये जा सकते हैं लेकिन 'चारु चन्द्रलेख' पर धार्मिक स्रोतोंकी शैली और चिन्तन-पद्धतिका अधिक प्रभाव दीखता है; वह दृष्टि नहीं मिलती जिसका रुझान मूलतः अतीतके वास्तविक जीवनमें हो। शायद, इसीलिए 'चारु चन्द्रलेख' का जीवन-पक्ष चटककर नहीं उभर पाता; लगता है, लेखक खिलौनोंकी तरह पात्रोंसे खेल रहा है।

लेखकने कई जगह आधुनिक समस्याओंकी बात उठायी है, लेकिन उपन्यास-का शिल्प इतना शिथिल है कि आधुनिक समस्याओं और ऐतिहासिक कथानकके बीच सामंजस्य नहीं बैठ पाता, जैसे सोदी मौलाका चीनपर वक्तव्य! १२वीं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३वीं सदीके ख़िलजी-कालीन भारतके कई चरित्रोंके माध्यमसे लेखकने हिन्दू-धार्मिक मनोवृत्तिका चित्रण किया है जिसे उसने मुख्यतः नाथ सम्प्रदाय—जिसके प्रमुख प्रचारक गोरखनाथ (९वीं-१०वीं सदी) माने जाते हैं—के सन्दर्भमें विचारा है। इस धर्मका 'सिद्धों' के लिए जो भी महत्त्व रहा हो, पर जन-साधारणके लिए वह हितकर नहीं सिद्ध हुआ—उसने किसी हद तक पलायनका रास्ता दिखाकर सामाजिक चेतनाको कुण्ठित किया। लेखकने जगह-जगह इस ओर संकेत किया है लेकिन कहाँतक वह इस प्रकारके विचारोंको उपन्यासके शिल्पमें पूरी तरह खपा पाया है, इसमें सन्देह है। अधिकतर वे एकालाप या वार्तालाप-द्वारा जोशीले वक्तव्योंमें प्रकट हुए हैं; चरित्रों और घटनाओंके अनिवार्य संघर्षों-द्वारा उत्पन्न नहीं होते।

शुद्ध औपन्यासिक दृष्टिसे, मुझे इस असफलताका मुख्य कारण ऐतिहासिक स्रोतोंका ग़लत चुनाव लगता है। जिस ऐतिहासिक सामग्रीसे लेखकने कथानक और पात्रोंका चुनाव किया है उससे अधिक प्रामाणिक और विस्तृत सामग्रीको उसने अछूता छोड़ दिया है। हिन्दू-कालीन भारतकी बात दूसरा है, जब कि अधिकांश सामग्री तत्कालीन धार्मिक और साहित्यिक पुस्तकोंमें ही मिलती है और विधिवत् लिखा गया इतिहास नहींके बराबर है। इसीलिए, शायद, प्रसाद-के नाटकोंमें प्राचीन भारतका वातावरण एक सजावटके रूपमें ही लाया गया है; घटनाओं, पात्रों और सामाजिक यथार्थपर अधिक ज़ोर नहीं दिया गया। यही प्रवृत्ति हम बादके अधिकांश उन हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासोंमें देखते हैं जिनमें प्राचीन भारतको लिया गया है। लेकिन मध्यकालीन और आधुनिक भारतकी स्थिति भिन्न है। ख़िलजी-कालीन भारतका इतिहास अपेक्षाकृत अधिक विश्वस्त सूत्रों-द्वारा भी उपलब्ध है। समकालीन इतिहासकारोंमें बरनी, सिराज, अमीर ख़ुसरो, इब्नेबतूता, फ़रिश्ता, एसामी आदिके रोचक और विस्तृत वृत्तान्त मिलते हैं जिनके सहारे उस समयके भारतकी सही और जीवन्त सामाजिक तसवीर खींची जा सकती थी, और जिन मन्तव्योंको लेखकने 'चारु चन्द्रलेख' में व्यक्त करना चाहा है उन्हें अधिक ठोस और विश्वसनीय आधार दिया जा सकता था।

ऐतिहासिक तथ्योंकी अवहेलना हो गयी है या किसी विशेष कारणसे की गयी है, इसको विचारनेसे पहले उपन्यासमें उपन्यासके नायक सातवाहनकी स्थितिपर थोड़ा विवेचन आवश्यक है—आवश्यक इसलिए कि ऐतिहासिक उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यासोंमें सुविख्यात ऐतिहासिक व्यक्तित्वको नायक बनाना कहाँतक उचित है और कहाँतक उपन्यासके कला-पक्षके लिए घातक, इस प्रश्नसे 'चारु चन्द्रलेख' की दूसरी असफलता जुड़ी हुई है। सातवाहनका चरित्र उपन्यासमें न तो कथाकी दृष्टिसे न इतिहासकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण बन पाया है। एक बार यदि यह मान भी लिया जाये कि ऐतिहासिक दृष्टिसे सातवाहन एक प्रमुख व्यक्तित्व है तो तुरन्त ही दूसरे प्रकारकी समस्या सामने यह उठती है कि उसमें एक सफल औपन्यासिक नायकके गुण कहाँतक समाविष्ट किये जा सके। प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्वपर एक सीमा तक ही कल्पनाका रंग चढ़ाया जा सकता है। वॉल्टर स्कॉटने कहीं भी प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्वोंको अपने उपन्यासोंमें नायक नहीं बनाया; उन्हें पृष्ठभूमिमें ही रखा। उसने ऐतिहासिक व्यक्तित्वोंकी अपेक्षा देश-कालके प्रामाणिक चित्रणपर अधिक ज़ोर दिया। इसीलिए, शायद, लेखकका पिछला उपन्यास 'बाणभट्टकी आत्मकथा' भी 'चारु चन्द्रलेख' की अपेक्षा अधिक सफल रहा। पूरे उपन्यासमें सातवाहन केवल उपस्थित है, सक्रिय नहीं। उपन्यासमें जो कुछ होता है वह सब केवल उसके नामपर। कथानक उसके साथ-साथ नहीं, उसके बावजूद चलता है। यहाँतक कि आगे चलकर कथानकका गतिकेन्द्र सातवाहन न होकर मैना या मैनसिंह बन जाता है। लेकिन मैनाका व्यक्तित्व उपन्यासमें इतना व्याप्त होते हुए भी विकसित नहीं हो पाता। अंशतः इसका कारण जगह-जगह वह बचकानी कायापलट भी है जो पाठकका कोई स्थायी रागात्मक सम्बन्ध न तो मैना न मैनसिंहके साथ बनने देता है। जहाँतक चन्द्रलेखाका प्रश्न है, उसका चारित्रिक महत्त्व उसी समय रद्द हो जाता है जब उसके मानसिक असन्तुलनका आभास करा दिया जाता है।

बाह्य यथार्थके यथातथ्य वर्णनकी अपेक्षा, यदि चेतना-विशेषको साक्षी बनाकर, घटनाओंका विवेचन किया जाये तो निश्चय ही एक बृहत्तर अनुभव-क्षेत्रको उपन्यासमें समेटा जा सकता है—कुछ-कुछ उसी प्रकार जैसे स्वप्नावस्थामें समयका बोध लगभग मिट-सा जाता है। मार्सेल प्रूस्त और जेम्स जॉएसने अपने विश्व-प्रसिद्ध उपन्यासों 'ए ला रेशार्श द्यू ताम्प्स पर्द्यू' और 'यूलिसिस' में इसी प्रकारकी तकनीकको अपनाया है। लेकिन 'चारु चन्द्रलेख'में कहाँतक इस तकनीकका सफल उपयोग हो सका, यह सन्दिग्ध है। प्रूस्त और जॉएसकी मुख्य चिन्ता थी यथार्थके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये स्तरोंकी खोज। सामाजिक यथार्थवादकी जो नींव १९वीं सदीमें पड़ी और मार्क्सवाद-द्वारा पुष्ट हुई उसने व्यक्ति-यथार्थको लगभग पृष्ठभूमिमें डाल दिया था। २०वीं सदीके आरम्भ होते-होते नये दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विचारोंने एक बार फिर साहित्यकारोंका ध्यान उस व्यक्ति-मनपर केन्द्रित किया जिसे वर्गसों, फ्रायड आदि इतना महत्त्व दे चुके थे। 'चारु चन्द्रलेख' को पढ़कर सहज ही यह प्रश्न उठता है कि लेखकने इस तकनीकको किस उद्देश्यसे अपनाया है। क्या वह यथार्थका कोई नया स्तर खोज सका है? क्या यह मानव-अनुभवके आयामको और विस्तृत कर सका है? क्या इस तकनीक-द्वारा इतिहास या धर्मको किसी नये आलोकमें देखा गया है? कलाकी दृष्टिसे इतना ही कहा जा सकता है कि यथार्थको प्रमुखता देनेवाले उपन्यासोंमें—चाहे वह सामाजिक यथार्थ हो, चाहे ऐतिहासिक यथार्थ, चाहे मनोवैज्ञानिक यथार्थ, चाहे धार्मिक यथार्थ—जिस विश्वसनीयताके प्रति कलाकार सतर्क रहता है 'चारु चन्द्रलेख' में उसकी सर्वथा अवहेलना हुई है। लोक-कथाएँ, धर्म-ग्रन्थ, सिद्ध-वाणी, भक्ति-साहित्य आदिके मुहावरोंमें लेखकने जिस कथा-शिल्पका निर्माण किया है, औपन्यासिक उपलब्धियोंको देखते हुए वह अनिवार्य नहीं सिद्ध होता। यद्यपि उन स्रोतोंका मनोविज्ञान और सामूहिक-मनोविज्ञानसे दूरका नाता है अवश्य, किन्तु उस सामग्रीका उपन्यासमें कुशल उपयोग नहीं हो सका।

समय 'चारु चन्द्रलेख' में नितान्त अ-मानवीय मालूम देता है, जिसके सामने मनुष्य और उसका संकल्प महत्त्वहीन ठहरते हैं। प्रस्तुत विश्लेषणमें समय मानवीय सन्दर्भमें ही महत्त्व पाता है। एकमें यथार्थ समयसे आक्रान्त है, दूसरेमें वह समयको अर्थ देता है। इसीलिए 'चारु चन्द्रलेख' का कोई ठोस—महत् भी नहीं—आकार नहीं बन पाता, और उसका ढाँचा कल्पित कथाओंके संग्रह-सा लगता है जिन्हें किसी प्रवक्ता या बातूनी पात्रों-द्वारा जोड़ दिया गया हो। जहाँ तक पौराणिक विषयोंका सवाल है, यह कह देना यहाँ प्रासंगिक होगा कि जेम्स जॉएसके 'यूलिसिस' का पूरा ढाँचा ही एक पौराणिक 'थीम'पर खड़ा है। 'चारु चन्द्रलेख' की कमज़ोरीका मुख्य कारण वैसे स्रोत नहीं, उपन्यास-शिल्पको ठीकसे न सँभाल पाना है। जिस सामाजिक चेतना और मिथ्या धर्म-भावनाकी बात लेखकने जगह-जगह उठायी है वह उपन्यासका अभिन्न अंग नहीं बन पाता। जोशीले भाषणों, उद्बोधनात्मक वक्तव्यों, नाथपन्थी पूजा-साधनाके साथ-साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ऐतिहासिक कथानकका खाका घिसटता हुआ चलता है। सवाल यहाँ उपन्याससे किसी शिल्प या मन्तव्यको गढ़ निकालना उतना नहीं, जितना उसके ठीक-ठीक पहचानमें आ सकनेका है। किसी उपन्यासके शिल्प-विधानका जटिल होना, या एक परिचित शिल्प-विधानका उसमें न होना, असन्तोषकी बात नहीं, लेकिन पाठक उस निरालेपनको किस सन्दर्भमें ग्रहण करे, इसका संकेत स्पष्ट होना चाहिए। 'चारु चन्द्रलेख'की धार्मिक-संवेदना न तो ऐतिहासिक प्रसंगमें ही पूरी तरह बँध पायी है, न उसका आधुनिक विचारोंके आलोकमें ही कोई महत्त्वपूर्ण विवेचन हो सका। शुद्ध मनोरंजनके लिए तो शायद यह उपन्यास लिखा ही नहीं गया।

—कुँवर नारायण
(कल्पना)

३

यह काव्य है।

यह सच है कि आधुनिक हिन्दी साहित्यमें जिस तरहके उपन्यास लिखे गये हैं उनमें 'बाणभट्टकी आत्मकथा' अद्वितीय था और वर्तमान समयमें जिस तरह के उपन्यास लिखे जाते हैं उनमें भी यह 'चारु चन्द्रलेख' अद्वितीय है। 'बाणभट्ट-की आत्मकथा'की भाँति 'चारु चन्द्रलेख' भी आत्मकथा ही है—सातवाहनकी आत्मकथावाली शैली इसमें भी है। 'चारु चन्द्रलेख' को कोई 'सातवाहनकी आत्मकथा' कह सकता है। इसके कथासूत्र प्राचीन भारतीय साहित्यसे आहृत हैं और "प्राचीन साहित्यमें जहाँ कहीं भी इस कथाके मिलते-जुलते अंश मिल सके हैं" उन्हें परिशिष्टमें संगृहीत किया गया है। सन्देह नहीं कि उपन्यासकी कथा अथवा वस्तुके आहरण मात्रमें कम विद्वत्तापूर्ण अध्यवसाय नहीं किया गया है।

'चारु चन्द्रलेख' में भारतके मध्ययुगीन इतिहासके सत्य और अधिक स्थलों पर इस सत्यकी अनुचारिणी कल्पनाके आधार पर कथाका ताना-बाना बुना गया है। वस्तुसंघटनाकी पद्धतिमें ऐसा सत्य और ऐसी कल्पना ही सजा लेनेके बाद उनमें पात्रोंके क्रियाकलापकी रंगीनी भरी गयी है। तात्पर्य यह कि वस्तुकल्पना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लेनेके बाद उसके अनुकूल पात्रकल्पना की गयी है। लेखक मध्ययुगके इतिहासके सत्य और संस्कृतिके सार-तत्त्वकी अभिव्यक्तिको ही लक्ष्यैक होकर उपस्थित करना चाहते हैं। कहना तो यह चाहिए कि उक्त युगकी संस्कृतिकी अभिव्यक्ति ही उनका परम उद्देश्य है। इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए वे अल्पतः इतिहासके सत्य और अभूततः इतिहासाधृत कल्पनाका सहारा लेते हैं। वे मध्ययुगकी धर्मसाधनाकी संस्कृतिकी व्याप्तिके चित्र प्रधानतः आँकना चाहते हैं। इस युगकी धर्मसाधनाकी संस्कृति आँकते समय भी उनकी उनकी दृष्टि मुख्यतः वज्रयानी सिद्धों तथा नागपन्थी योगियोंकी तन्त्र-मन्त्र साधना, अभिचार आदिकी साधना और उसकी सिद्धि सम्मुख रखने की है। तात्पर्य यह कि भारतकी मध्ययुगीन धर्मसाधनाका पूरा रूप 'चारु चन्द्रलेख' में अंकित है।

मेरा खयाल है कि 'चारु चन्द्रलेख' की रचनाका जो लक्ष्य—मिशन—है उसे उपस्थित करनेके लिए वस्तुकी ऐसी ही संघटनाके हेतु लेखक बाध्य हुए हैं कि कई प्रसंग अय्यारी-जासूसी उपन्यासोंके प्रसंगवत् हो गये हैं। यदि ऐसा न किया गया होता तो ये प्रसंग सम्पूर्णतः 'थीसिस' हो जाते। उपन्यासमें मध्ययुगीन वातावरणको बनाये रखनेके लिए कथा मन्थर गतिसे चलती है। कहीं वह स्थानीय व्यौरे उरेहती है, कहीं वह पात्रगत शील, स्वभाव, रूपको उभारती है। कथा अपने परिवेशमें आये सब-कुछको कहती-सुनती, देखती-दिखाती चलती है। इसीलिए प्राकृतिक परिवेशके संश्लिष्ट चित्रणमें भी वह रमती चलती है—प्रधानतः आलंकारिक पद्धतिसे। उपन्यासके लक्ष्यपर दृष्टि रखकर यदि विचार किया जाये तो मुझे 'चारु चन्द्रलेख' मुख्यतः वातावरण-प्रधान उपन्यास जान पड़ता है।

वस्तुगत कथा विकास तथा विस्तार कौतूहलपूर्ण है। कथामें आश्चर्य, औत्सुक्य एवं कौपूहल पाठकके लिए ही नहीं, पात्रोंके लिए भी है। चन्द्रलेखाके जन्म तथा उसकी प्राप्तिकी कथा, उसके द्वारा राजासे अपने पूर्व तथा वर्तमान जन्मकी कथा, मैनाके पानेकी कथा, आदि इसके प्रमाण हैं। उपन्यासमें घटनासूत्रोंका अम्बार लगा है, कथा कहनेकी पद्धति ऐसी है कि आगेकी कथाके लिए कौतूहल-औत्सुक्य बराबर बना रहता है। सभी पात्र, चाहे वे छोटे हैं, चाहे बड़े—अपनी-अपनी विशेषताओंसे युक्त हैं। सभी पात्रोंका अपना अलग-अलग व्यक्तित्व है। इस ग्रन्थमें चरित्र अथवा शील-कल्पना कौशलपूर्ण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यासकी वस्तुके अनुसार सभी पात्र, जो सम्बुद्धिपूर्ण हैं, मध्ययुगके आर्यावर्तको शत्रुसे और उसके समाजको नानाविध कलुषसे मुक्त करनेकी आप्राण चेष्टामें हैं। इसीलिए पात्र हैं तो मध्ययुगके किन्तु विचारधारा उनकी ध्वनित-प्रतिध्वनित होती है आधुनिक युगके भारतमें भी। सच तो यह है कि सातवाहन और चन्द्रलेखा और उनके आगे-पीछे घिरे रहनेवाले सहायक पात्र जन-जागरणके लिए अपना सब-कुछ स्वाहा करना चाहते हैं—कर देते हैं। यहीं 'चारु चन्द्रलेख' मध्ययुगका होकर आजका भी है और हमारा प्रेरणा-केन्द्र हो सकता है। अनेक स्थलोंपर वर्तमान भारतकी कई समस्याओं और उनके समाधानका प्रतिबिम्ब 'चारु चन्द्रलेख' में है, जिससे इसकी उपयोगिता वर्तमान कालको भी बाँधे है।

मानव जीवन और समाजके कुछ स्थायी मूल्य होते हैं जो हमारे हृदयभाव नाना स्थितियोंमें पड़ उन्हें लेकर चलते हैं, जिससे हम उठते भी हैं और गिरते भी। साहित्यकार अपनी रचनाको स्थायित्व देनेके लिए उन मूल्योंको भी उसमें सजाकर रखता है। 'चारु चन्द्रलेख' में ये भी सजकर आये हैं। ये इसे वर्तमानमें ही न रखकर भविष्यमें भी ले जायेंगे।

यदि 'प्रसाद' के नाटक काव्य हैं तो हजारीप्रसाद द्विवेदीके उपन्यास भी काव्य ही हैं। काव्यको चाहिए क्या? रूपके चित्र और उनमें भावोंके रंग। और काव्यको काव्य बन जानेके लिए चाहिए यह कि सूत्र रूपके चित्र वाणीकी तूलीसे ऐसे आँके गये हों कि मोटी-महीन रेखाओंके साथ वह अपने परिवेश-सहित पूरा हो तथा उसमें भावोंके समुचित रंगोंका भराव उसे रंगीनी देकर—रूप और भाव मिलकर—मनकी आँखोंके सामने रूपमय भाव अथवा भावमय रूप या चित्र इस प्रकार खड़ा कर दें कि वे आँखें उसे देखते-देखते उसमें रम जायें। 'चारु चन्द्रलेख' में ऐसे रूपमय भाव अथवा भावमय रूप—चित्र अपनी जगह खोजे कहीं भी मिल जायेंगे। इसीलिए यह काव्य है।

—डॉ० शिवनाथ
(आलोचना)

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नए प्रकाशन

• **दो चट्टानें** (कविता-संग्रह) बच्चन ७.००

यह हिन्दीके सुप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कवि बच्चनका नवीनतम संग्रह है और इसमें १९६२ से १९६४ तककी अवधिमें लिखी गयी उनकी समस्त कविताएँ संग्रहीत हैं।

• **गाइड** (उपन्यास) आर० के० नारायण ४.००

श्री आर० के० नारायणके सुप्रसिद्ध अँगरेज़ी उपन्यासका शिवदान-सिंह चौहान तथा श्रीमती विजय चौहान-द्वारा सरस अनुवाद। यह उपन्यास साहित्य अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत है।

• **खण्डहर** (मंच नाटक) विमला रैना ३.००

इस नाटक-संग्रहके दोनों नाटकोंमें दो दशाओं और भाव-भूमियोंमें नारीकी सामाजिक स्थिति, उसकी असहायता और विवशताका बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है।

• **रत्नगर्भा भारत भूमि** (ज्ञान-विज्ञान) भगवान सिंह १.५०

खनिज पदार्थोंके रूपमें भारत भूमि हमें क्या कुछ देती है, यही इस पुस्तकमें बड़ी रोचक शैलीमें बताया गया है।

• **हमारा घर** (बालो० उप०) कृश्नचन्दर २.००

अत्यन्त मनोरंजक लघु उपन्यास।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरोंका सेतु
कृतियोंकी प्रतिक्रिया

लेखन-प्रकाशनके आयोजन-श्रमकी इकाई अधूरी रहेगी
जबतक पारखी पाठककी प्रतिक्रिया प्रकाशकके
पास होती लेखककी मेज़तक न पहुँचे

• जुलूस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

संस्कारोंकी टकराहट : लोकमंगलकी ओर

प्रेमचन्द-युगके उपरान्त, जिसे कथा-साहित्यको स्वर्ण-काल कहा जा सकता है, उपन्यासको नया मोड़ देनेवाले दो ही लेखक दिखाई देते हैं। इनमें एक हैं श्री अज्ञेय और दूसरे श्री फणीश्वरनाथ 'रेणु'। अज्ञेयने सामाजिक उपन्यासोंके स्थानपर आत्मकथात्मक उपन्यासोंकी नींव डाली। वस्तुके स्थानपर उन्होंने व्यक्तिको प्रधानता दी। इनका अनुकरण करनेवालोंमें हम धर्मवीर भारती, डॉ० देवराज तथा गिरिधरगोपाल आदिके नाम ले सकते हैं। 'रेणु' ने आंचलिक उपन्यासोंकी परम्परा चलायी। इसके अन्तर्गत बंगाल, विहार, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, पंजाब और बम्बईके अनेक भू-भागोंकी निजी विशेषताओंको समेटनेवाले उपन्यास लिखे गये, जिनमें अमृतलाल नागर कृत 'बूँद और समुद्र' तथा उदयशंकर भट्ट कृत 'सागर लहरें और मनुष्य' विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। लेकिन 'रेणु' के उपन्यासोंको केवल आंचलिक कहनेसे जैसे सन्तोष नहीं होता। उनमें और भी बहुत-कुछ है। सबसे महत्त्वपूर्ण काम उन्होंने यह किया कि कथा-साहित्यमें नायक-सम्बन्धी धारणा ही बदल दी। उनके उपन्यासोंमें एक व्यक्तिके स्थानपर पूरा गाँव ही नायक होता है। हिन्दी-उपन्यासके क्षेत्रमें इसे एक क्रान्तिकारी चरण कह सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जुलूस' में बिहारके गोड़ियर गाँवकी कथा कही गयी है। थोड़ी-सी स्थानीय विशेषताओंको छोड़कर देशके अन्य गाँवोंकी भाँति यह एक सामान्य गाँव है; अतः 'जुलूस' की कहानी भारतवर्षके एक प्रतिनिधि गाँवकी कहानी है। इस गाँवमें भी किसान, मज़दूर, साहूकार, दूकानदार, फेरीवाले, पहलवान, लठैत और निकम्मे लोग रहते हैं। यहाँ भी निन्दा, ईर्ष्या, कलह, मारपीट, बेईमानी, व्यभिचार, अशिक्षा, दारू और यन्त्र-मन्त्रका खेल देखा जा सकता है। प्रेमचन्दकी आदर्शवादी दृष्टिसे 'रेणु' की यह यथार्थवादी दृष्टि एकदम भिन्न है। उनके कथा-साहित्यमें स्वतन्त्रताके उपरान्त गाँवका परिवर्तित रूप निखरकर आ रहा है। परिवर्तन उपस्थित करनेवाली जीवनकी नयी परिस्थितियाँ हैं। इनमें कुछ राजनीतिक हैं, कुछ सामाजिक, कुछ सांस्कृतिक, कुछ सामयिक। देशके विभाजनसे जो विभीषिका उत्पन्न हुई, उसे सम्पूर्णतामें अंकित करनेवाले यशपालके सशक्त उपन्यास 'झूठा-सच' से हम सभी परिचित हैं। 'रेणु' ने उतना व्यापक धरातल न ग्रहण कर विस्थापित लोगोंकी एक छोटी-सी कहानी कहा है। यह कहानी पश्चिमी पाकिस्तानकी न होकर पूर्वी पाकिस्तानकी है।

'जुलूस' दो गाँवोंकी कहानी है—बिहारकी नवीनगर कॉलोनी और पूर्वी पाकिस्तानके जुमापुर गाँवकी। इस कहानीको जोड़नेवाली कुमारी पवित्रा चटर्जी हैं। मुसलमानोंके अत्याचारसे पीड़ित होकर जुमापुरके कुछ बंगालियोंकी एक टोली गोड़ियर गाँवके बाहर बस जाती है। इसी स्थानका नाम नवीनगर कॉलोनी है। जैसे गोड़ियर गाँवका सबसे प्रभावशाली व्यक्ति है तालेवर गोढ़ी, उसी प्रकार इस कॉलोनीकी प्राण पवित्रा चटर्जी है। कॉलोनीके बस जानेसे गाँवका कायापलट होता है। यह परिवर्तन बाहरी ही नहीं, आन्तरिक भी है। बिहारियोंके अपने संस्कार हैं, बंगालियोंके अपने संस्कारोंकी इस टकराहटके परिणामको लेखकने लोक-मंगलकी ओर मोड़ दिया है। यही इस कृतिकी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

बंगालियों और बिहारियोंके बाह्य और आन्तरिक संघर्षकी यह कहानी जिसमें दोनोंकी संकीर्णताएँ उभरकर सामने आती हैं, बड़ी ही रोचक बन पड़ी हैं, विशेष रूपसे भाषाकी दृष्टिसे। लेकिन 'जुलूस' का महत्त्व एक यथार्थवादी मार्मिक कहानी कहने तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक गौरव जीवनके उन उदात्त तत्त्वोंको प्रतिष्ठित करनेमें निहित है, जो किसी जाति और देशके विकास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रेरणाका काम करते हैं। पूर्वी पाकिस्तानमें बंगालियोंपर जो अत्याचार हुए, उनमें लेखकने यद्यपि अग्निकाण्ड, धर्म-परिवर्तन और बलात्कारका उल्लेख किया है; पर पत्रिकाके प्रेमी विनोद मुखर्जीकी हत्याके पीछे क़ासिमके हृदयमें प्रेमकी प्रतिद्वन्द्विता दिखाकर उस भयंकरताको कुछ कम कर दिया है। इस प्रकार उसने अपनी कृतिको साम्प्रदायिकताकी मनोवृत्तिसे दूषित होनेसे बचा लिया है। सामान्य व्यक्ति और लेखकमें यही अन्तर होता है। किसी भी लेखकको इतना उच्च-हृदय होना भी चाहिए। नयी कॉलोनीमें शान्तिपूर्वक बसकर भी बंगाली शरणार्थी अपने गाँवको नहीं भुला पाते। एक बार पवित्रा गोड़ियर गाँवके बाहर जुमापुरसे मिलता-जुलता एक प्राकृतिक दृश्य उन्हें दिखलाती है, जिसके सौन्दर्यमें वे लीन हो जाते हैं। यह व्यक्तिको स्थानीय मोहसे मुक्त करना है। पवित्राकी वेदना इतनी गहन है कि उससे उद्धारका कोई उपाय नहीं दिखाई देता। एक दिन वह नरेश वर्मा नामके एक पत्रकारको देखती है, जिसका मुख विनोद मुखर्जीसे एकदम मिलता है और वह उसके प्रति आकर्षित हो जाती है। इससे जीवनका अदम्य प्रेम प्रकट होता है। इसी प्रकार बंगाली सन्ध्याका हरिप्रसाद यादवसे ग्रन्थि-बन्धन, जिसे पवित्राका पूर्ण समर्थन प्राप्त है, अन्तर्जातीय विवाहकी प्रथाको प्रोत्साहित करता है। और नरेश तथा पवित्राका पूर्णिया ज़िलेके धाँगड़ोंके नृत्य एवं गायनमें सम्मिलित होकर उनके जीवनसे अपने जीवनको एकाकार करना तो लोक-जीवनके निकट सम्पर्कमें आना है। उपन्यासके ये उदात्त प्रसंग निश्चित रूपसे उसे एक नयी गरिमा प्रदान करते हैं।

पवित्राके व्यक्तित्वका निर्माण लेखकने विशेष मनोयोगसे किया है। वह चारों ओरके जीवनमें प्रेरणाका मूल केन्द्र है। तालेवर गोढ़ी-जैसे व्यक्तिको जो अर्थ-पिशाच है, ओझागीरी करता है, दारू पीता है और अपने साधना-चक्रमें स्त्रियोंको भैरवी बनाकर भ्रष्ट करता है, एकदम बदल देती है। इस उपन्यासके अन्तिम पृष्ठ, जिनमें पवित्रा तालेवरके द्वारपर बाढ़पीड़ितोंके लिए भीख माँगने जाती है, इस दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है कि वहीं उसे वह दृष्टि मिलती है जो उसे अपने गम्भीर दुःखसे मुक्ति दिलाती है। वहीं वह अपने दुःखको व्यापक दुःखमें डुबाकर कुछ और पवित्र, कुछ और बड़ी हो जाती है। वहीं वह अपने अकेलेपन, अपने अजनबीपन, अपनी उदासी, अपनी आत्मकेन्द्रियतासे ऊपर उठती है। यह स्थल मुझे पूरी 'नयी कविता' की पतनशीलतापर व्यंग्य करता प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा ऐसा विश्वास होता जा रहा है कि 'नयी कविता' धीरे-धीरे मर रही है और आधुनिक युगकी चेतनाका वाहक भविष्यमें काव्य नहीं, गद्य होगा—उपन्यास, नाटक, निबन्धके रूपमें।

मेरी दृष्टिसे, फणीश्वरनाथ 'रेणु' का 'जुलूस' स्वतन्त्रताके उपरान्त लिखे जानेवाले हिन्दीके लघु उपन्यासोंमें केवल पठनीय और उल्लेखनीय ही नहीं, वरन् समसामयिक जीवनका यथार्थ और मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भी है।

—विश्वम्भर 'मानव'

• चौंसठ कविताएँ : इन्दु जैन

भाव-बोधकी नयी दिशा

साहित्यिक विधाओंके अन्तरालमें 'नया' और 'पुराना' दो शब्द विवादके विषय बनकर आते रहे हैं। ठीक इसी वजन पर 'मौलिकता' की समस्या भी आधृत है। कुछ लोग हैं जो अपनी हर वस्तुको 'मौलिक' और 'सर्वथा नवीन' क़रार देना चाहते हैं, किन्तु वैज्ञानिक तथ्य तो यह है कि कोई भी वस्तु अपनी अन्वितिमें 'पुरा' और 'परा' के बीचकी स्थितिमें नहीं होती। विश्लेषण करनेपर उसके अतीतके 'फ़ैब्रिक' रूपका 'फ़्लैश' अवश्य मिल जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि तब साहित्य करवटें क्यों और कैसे बदलता है? इसका साफ़ उत्तर है सामाजिक परिवेश और नयी मूल्यवत्ता। हर युग (कल्पित काल-खण्ड) में मानवकी अपनी जीवन-पद्धति होती है लेकिन उसका आधार (चाहे वह अत्यन्त आंशिक ही क्यों न हो) किसी-न-किसी रूपमें भूतागत ही होता है। अतः मौलिकता और नयेपनकी समस्या अधिक अंशोंमें एक साहित्यिक फ़ैशन है। उदाहरणके लिए नयी कविता और प्रयोगशील कविताको देखा जा सकता है। मेरे कहनेका तात्पर्य यह कि छायावाद कालपर अतीतका 'लेबल' भले ही लगा दिया गया हो, पर उसका भाव-स्राव आजकी नयी कविताको किसी-न-किसी प्रकारसे गलबाँहीं दिये चल रहा है।

नयापन युग-चिन्तनकी युगपत् प्रक्रिया है। मौलिकता और नयेपनको शत-प्रतिशत इतिवृत्तात्मक नहीं माना जा सकता। मनुष्य स्वयं मौलिक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता; फिर उसकी कृतिको मौलिक कैसे माना जाये ? साहित्यके नयेपनको सदानीराकी मोड़दार धार-जैसा मानना समीचीन होगा। साहित्यका नयापन मानवकी युगसापेक्ष अनुभूतिका चितेरा हुआ करता है। मूल्यांकनकी निकषता भी इसी युग-सापेक्षता पर निर्भर करती है। यही कारण है कि हर युगके मूल्यांकनका दृष्टिकोण मोड़दार, अतः भिन्न हुआ करता है। आजकी नयी कविता जिस धरातलसे होकर गुज़र रही है उसके पथमें वक्रता मन्द गतिसे आ रही है— इसका स्पष्ट रूप भी सम्भवतः बहुत शीघ्र दृष्टिगत हो सकेगा।

आजका कलाकार नयी कविताके पुराने 'फ़ॉर्म' (विधान) को रंग-परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करता जा रहा है। अतः कुछ सचेतन मस्तिष्क इसपर नन्दतिक प्रभावकी मुहर लगानेकी कामना करना चाहते हैं। 'चौंसठ कविताएँ' कृतिमें सुश्री इन्दु जैन ने मानवके नये परिवेशको ढालकर प्रस्तुत करनेका प्रयास किया है। आजका मानव विचित्र और विभिन्न असंगतियोंसे होकर गुज़र रहा है। असंगति जीवनकी द्वयतामें है – 'इन्सटेण्ट' और 'ऐबसटेण्ट' दोनों ही। इन्दु जैनकी यह कृति अपनी पहली ही कविताके साथ यूँ खुलती है :

नींद – डूबे जंगल में
छिपा हुआ चाँद

यह
मेरा वातावरण है।

निश्चय ही विवेच्य वातावरण अस्त-व्यस्तताका है, घुटनका है। वहाँ अन्धकारका अतिरेक है, प्रकाश रूठ चुका है। आजके मानवकी बेबसी तहलक़ेके साथ सामने आ रही है।

अतः निष्कर्ष कवयित्रीके ही शब्दोंमें यह कि – सब अपनी-अपनी जगह लाचार, असहाय। – यह आजके बुद्धिजीवी और उद्योगी मानवके भाग्यकी बड़ी विडम्बना है।

कई ऐसे अनुबन्ध हैं जहाँ किसी भी तटस्थ समीक्षकको कहनेके लिए बाध्य होना पड़ता है कि इन्दु जैनने कविताके लिए कविता' की सृष्टि नहीं की है प्रत्युत उनकी कविता जीवनके कगारोंसे होकर गुज़रती है। जीवनके विभिन्न और बहुल आयामोंको कवयित्रीने शब्द-प्राण दिये हैं। लगता ऐसा है कि कवयित्री की नागफनी भावनाएँ ही कविताके रूपमें ढल गयी हैं। ऊमससे बेतरतीब जीवन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आकुल और बिंधा हुआ स्वर इसकी विशेषता है। आजके वैज्ञानिक युगके धरती-पुत्रकी दुर्दान्त कहानी कवयित्रीके शब्दोंमें सुनें :

एक-एक पसली की दुःखन
साँसों की झटक
बड़ी असह।
कहाँ राजरोग प्राणों पर आ बैठा !
पिंजरे में इतना भी नहीं
नभ मिला—
पंख हिल जाते,
चोंच खोल पाता अन्धा पाँखी,
बोल कभी पाता —
वह प्यासा है।

अद्यतन मानवको अपनी वैज्ञानिक लब्धि पर बहुत बड़ा गर्व है। अपनेको आज 'बुद्धिका देवदूत' मान वह फूला नहीं समाता। लेकिन उसे क्या मालूम कि मस्तिष्कके पुष्परागमें मानवताका दंशक कोई क्रूर कीट भी आसन जमाये बैठा है। संवेगोंका बौद्धिक उतावलापन हृदयकी मसृणताको दबोचे हुए है। यह भी एक दाँव है—जीवन-प्रक्रियाका रूपान्तरण। नये परिवेशकी दुर्द्धर्षतासे सामान्य मानव ऊब-सा गया है। बौद्धिक उन्मेषका कमलनाल शंकाके कीचसे ही उत्पन्न होता है। अतः बौद्धिकताकी पहली शर्त है शंकित दृष्टिका होना। आजका हर बुद्धिवादी व्यक्ति अपनी बुद्धिके उस्तरेका कमाल दूसरेकी छातीको तराशकर ही दिखाना चाहता है। सुश्री इन्दु जैनकी कारयित्री प्रतिभाने इस भावके उपस्थापनका भी साहस किया है।

उत्तरशतीका मानव चन्द्रलोककी कल्पना करते-करते धरा-लोकको विस्मृतिके गर्त्तमें डाल बैठा है। काल और दूरीके व्यासको पीछे छोड़ देना आज मामूली-सी बात मानी जाने लगी है। आकाशकी नीलिमाको सर्वांशतः निर्वसना बनानेका सतत प्रयास किया जा रहा है। इसलिए जन-जीवनके मानसमें ऊब और ऊमसका भाव घर करने लगा है। परिणामतः कवयित्रीका अन्तर्मन बार-बार उसे पुकारना चाहता है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि जीवन वह होता ना
जो है !

जीवनकी इस चहलक़दमीसे ऊब किसे नहीं होगी ? जो भी शान्ति और सौम्यका हिमायती होगा, आज उसे सुश्री जैनकी पंक्तियोंकी आवृत्ति करनी होगी। मकड़ेके जालकी तरह आजके मानवकी अपनी ही बुद्धि दाँव-पेंचकी जाली आवृत किये बैठी है। इसलिए मानव-मानवमें वैषम्यका नृशंस व्यापार चल रहा है। काश, उसका दिशा मोड़कर उससे मानवताका पोषण किया जाता ! लेकिन मजबूरीको कौन क्या कहे :

हर मजबूरी में पिघलता
हमेशा का अवश तन
और
शान्तिकाया बुद्धि
—ग्लानि के ताप से
बचा ले जाती है,
हर बार
लहर से उछालो
सीपी - सा
असम्पृक्त, अकेला छोड़ जाती है।

तात्पर्य यह कि आजके हर व्यक्तिकी आँखोंके सामने मानवता द्रौपदीकी तरह अर्द्धवसनाके रूपमें, प्रश्न-चिह्न बनकर चीख-चिल्ला रही है। ऐसी विकट घड़ियोंमें किसी कल्पित कृष्णकी आवश्यकता नहीं; अपेक्षा है सामान्य मानवके पारस्परिक बाजुओंकी। आजके साहित्यको रस नहीं चाहिए, अलंकार उसे नहीं फबेगा। उसे तो एक ऐसा विक्रान्त भाव चाहिए, जो समस्याओंको छिन्न दे, पीड़ाको तराश दे। भाव-बोधकी वैसी ही अपेक्षित दिशाको इन्दु जैनने नया स्वर देनेका प्रयास यूँ किया है :

बहुजन की पीड़ा के वन से
आओ —
पेड़ तराश दें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीट बुहार कर
मार्ग निकाल दें !

कवयित्री सबके लिए, सबके समक्ष एक प्रश्न उपस्थित करना चाहती है :

अकर्म के श्राप से ग्रसे हुए
हम सब
निरर्थक सम्मोहन में बँधे
चले जायेंगे—कब तक ?
कब हमारे शब्द फलेंगे ?

समस्याओंका जाल हमने फैलाया है। अतः हम सबको मिलकर उसका निदान करना होगा अन्यथा लहू-लुहान मानवता कहाँ जायेगी – कौन जाने! निष्कर्ष और निदान कवयित्रीका श्लाघ्य एवं ग्रहणके योग्य बन पड़ा है।

स्पष्ट है कि कवयित्रीने युगाविल संवेदनाओंको व्यक्त करनेकी चेष्टा की है। चाँद और तारोंको छोड़कर मानवके यथार्थ भावों – जो उसकी आँखोंमें तैर रहे हैं, को कवयित्रीने अभिव्यक्ति दी है। इनकी कविताओंमें न तो वह पुरानी लीक है, न घिसा-पिटा पुराना स्वर और न कोई उलझाव। इसीलिए लगता ऐसा है कि इन्दु जैन की कविताएँ गीतात्मक न होकर, कथ्यात्मक हो गयी हैं, जो भावनाको बोधनाके धरातल पर ला बैठाती हैं। भाव-बोधका उनका यह मोड़दार पथ भविष्यका सम्भवतः 'लब्धि' ही माना जायेगा – ऐसा कहनेको मेरा जी चाहता है।

—नन्दकुमार व्य

• कर्म प्रकृति

मूल—आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादक – पं० हीरालाल शास्त्री

भारतीय विचारधारामें कर्म-सिद्धान्तका महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्रान्तदृष्टा आचार्यों तथा प्रबुद्ध मनीषियोंने इसके प्रत्येक पहलूपर विविध प्रकारसे सोचा है। यही कारण है कि कर्म-सिद्धान्तका प्रतिपादन करनेवाला विपुल साहित्य उपलब्ध है।

भारतीय चिन्तनकी विभिन्न धाराओंमें कर्म-सिद्धान्त-विषयक चिन्तनका जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमिक विकास देखा जाता है, उसमें सम्भवतया जैन कर्म-सिद्धान्त सबसे सूक्ष्म विवेचन करता है। इस विषयका स्वतन्त्र विवेचन करनेवाला जैन साहित्य भी पर्याप्त मात्रामें प्राप्त है। चिन्तनकी अन्य धाराओंमें ईश्वरको जितना बल दिया गया सम्भवतया जैन धर्ममें कर्म-सिद्धान्तको भी उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान मिला। 'कर्म प्रकृति' इसी कर्म-सिद्धान्तका विवेचन करनेवाला एक लघुकाय किन्तु महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। पहली बार यह पं० हीरालाल शास्त्री-द्वारा सम्पादित होकर हिन्दी अनुवाद और विस्तृत प्रस्तावना आदिके साथ भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित हुआ है। इसमें १६० प्राकृत गाथाएँ हैं। कुछ प्राचीन प्रतियोंमें १६१ गाथाएँ भी मिलती हैं। इनको विषयके अनुसार प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध तथा प्रदेशबन्ध इन चार विभागोंमें बाँटा गया है।

सम्पादकने मूल ग्रन्थको आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीकी कृति माना है। इनका समय विक्रमकी ११वीं सदी माना जाता है। जैन कर्म-सिद्धान्तके ये प्रकाण्ड पण्डित थे। चामुण्डरायके आग्रहपर इन्होंने जैन कर्म-सिद्धान्तका विवेचन करनेके लिए 'गोम्मटसार' नामक महान् ग्रन्थकी रचना की थी। प्रस्तुत 'कर्म-प्रकृति' में इस ग्रन्थकी १०२ गाथाएँ ज्योंकी त्यों उद्धृत हैं। सम्भवतया इसीलिए इसे नेमिचन्द्रकी रचना माना है। कुछ विद्वान् इसे एक संग्रह ग्रन्थ मानते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थके ग्रन्थमाला सम्पादकीयमें इस विषयपर प्रकाश डाला गया है। ग्रन्थका 'कर्मप्रकृति' नाम भी मूल ग्रन्थमें कहीं नहीं आया। केवल एक संस्कृत टीकाके पुष्पिका वाक्यमें यह नाम आया है। सम्भवतया उसीपर-से 'कर्मप्रकृति' नाम दिया गया है।

'कर्म-प्रकृति'पर प्राचीन संस्कृत और हिन्दी टीकाएँ भी हैं जिनमें-से ज्ञानभूषण व सुमतिकीर्तिकी संस्कृत टीका मूल ग्रन्थके साथ, तथा आगे अज्ञात कर्तृक संस्कृत टीका तथा पं० हेमराजकृत प्राचीन हिन्दी टीका भी प्रस्तुत संस्करणमें दी गयी हैं। इस सब सामग्रीके साथ यह संस्करण जैन कर्म-सिद्धान्तकी जानकारीके लिए विशेष उपयोगी बन गया है। अतिरिक्त विशेषता यह कि विद्वान् जहाँ अर्थ-गर्भ मूल प्राकृत ग्रन्थ और संस्कृत टीकाओंसे ग्रन्थके हार्दको हृदयंगम कर सकते हैं वहीं केवल हिन्दीके जानकार जिज्ञासुजन और विद्यार्थी भी हिन्दी प्रस्तावना, अनुवाद और हिन्दी टीकासे विषयको पर्याप्त स्पष्ट रूपसे समझ सकते हैं।

—गोकुलचन्द्र जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

• •

* **गंगा लहरी :** सं० श्री सुधाकर पाण्डेय। यह पुस्तक कई विश्व-विद्यालयोंके बी० ए० के पाठ्यक्रममें निर्धारित है। १.२५

* **बन्दीकी चेतना :** श्री कमलापति त्रिपाठी। जीवनके सहज अन्तर्द्वन्द्वसे प्रसूत मनोविश्लेषणात्मक निबन्धोंका पत्रात्मक शैलीमें लिखा ग्रन्थ। ५.००

* **मतिराम ग्रन्थावली :** सं० स्व० कृष्णविहारी मिश्र एवं स्व० डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र। यह पुस्तक मतिरामका सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करती है। ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित। पुनः सम्पादित एवं परिवर्द्धित संस्करण। इस शोधयुगपर प्रस्तुत पुस्तकमें श्री करुणापति त्रिपाठीकी गम्भीर अनुशीलनयुक्त भूमिका है। १२.५०

* **मधुमालती वार्ता :** सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त। हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंकी परम्परामें 'मधुमालती' का प्रेमाख्यान कई लेखकों-द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किन्तु चतुर्भुजदासकी यह रचना उन सबसे भिन्न लोक-व्यवहारपरक है। यह ग्रन्थ मुद्रित रूपमें पहली बार हिन्दी संसारके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। ८.००

* **खालिकबारी :** सं० श्रीराम शर्मा। अमीर खुसरोकृत खालिकबारीका नाम हिन्दी साहित्यमें विख्यात है। आरम्भमें भूमिका और अन्तमें हिन्दी शब्दोंका भाषा-वैज्ञानिक अभिधान। २.७५

* **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण :** दो खण्डोंमें सन् १९०० से १९५५ तकके प्राप्त हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय। मूल्य प्रति खण्ड ३०.००

• •

नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियाँ
ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखक वे सफल हुए जिन्होंने सारी अनुभूति-पीड़ा
एक ही कृतिमें नहीं उँड़ेल दी, और कृतियाँ वे गिनी
गयीं जो दिखीं सामान्य, पर दे बहुत कुछ सकीं

• अठारह सूरजके पौधे : रमेश बक्षी

यह उपन्यास है पर केवल उपन्यास ही नहीं। एक सचाई है यह कि बुद्धि-जीवीका संकट समूची संस्कृतिका संकट होता है। एक ज़मानेमें फ्रान्सके बुद्धि-जीवियोंने भी ऐसा ही संकट झेला था और आज हमारे यहाँकी जीवित और सक्रिय पीढ़ीके सामने भी एक संकट-जैसा ही प्रस्तुत है। मशीनी दौड़के बीच, कन्धे ठेलती भीड़के बीच, अनसुने शोरके बीच नयी पीढ़ीका आदमी उलझ रहा है। वह अपने मूल्योंकी टूटन बेहद गहरे उतरकर महसूस कर रहा है—लगातार····लगातार····।

और कहें तो इसी दिशामें रमेश बक्षीका यह नया उपन्यास 'अठारह सूरजके पौधे' भी गतिसे बँधे हुए कुछ वैसे ही संकटोंकी प्रस्तुति और उपलब्धि है—बिलकुल नयी, एक दिशान्तर-जैसी।

शैली-शिल्प भी इसका बिलकुल नया—मनको बहुत भीतरसे बाँधता हुआ; और आदिसे अन्त तक एक आत्मीय संगीतमें डूबा हुआ कथानक। कुछ अजीब-से नशेमें ढुलकती हुई चाल है इस यात्रा-उपन्यासकी। उपन्यास पढ़ते समय भले ही लगे कि यह सब मात्र मन बहलाने और फ़ुरसतका वक़्त काटनेके लिए है पर समूचा पढ़ जानेके बाद लगेगा कुछ और ही—हथौड़ोंकी चोटें कि आरा अस्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झनझना उठे, चुभे हुए तीरोंकी टीस, एक चुप झुलगती हुई आग, और एक धूप-गन्ध भी जो अजाने चेतनापर छा जाये। अतिरिक्त इतना और कि अपने तमाम दर्दोंमें डबडबाया हुआ उपन्यासका नायक सचमुच एक जीवित व्यक्ति है—अचम्भा नहीं होगा कि आपको भी आत्मीयता वह सहज ही पा ले।.....

मूल्य : ३.००

● **प्रतिनिधि संकलन : कविता : मराठी** : रूपान्तर एवं संकलनकर्त्ता : दिनकर सोनवलकर

हिन्दीकी एक सहोदरी भाषाके आधुनिक काव्यको इस प्रकारसे हिन्दीमें एक संकलनमें समेटनेका कदाचित् यह पहला प्रयास है। कितना सफल और उपयोगी भी यह रहा, यह कहनेकी नहीं देखनेकी बात है।

प्रस्तुत संकलन समकालीन मराठी कविता (१९४०-१९६२) की विविध प्रवृत्तियोंको रेखांकित करता है और प्रतिनिधि रचनाकारोंके कृतित्वकी झाँकी, एक बानगी, हिन्दी पाठकोंके सामने उपस्थित करता है। शृंगार, प्रणय, प्रकृति, व्यंग्य, विद्रोह, मानवप्रेम, और आधुनिकताके सात स्वरोंमें बजती यह बिलकुल पड़ोसकी बाँसुरी निश्चय ही सबको मोहेगी और भीतर कहीं-न-कहीं बहुतोंको कुरेद भी देगी।

सब १८ समकालीन मराठी कवियोंकी चुनी-चुनी ९० कविताओंका हिन्दी रूपान्तर यहाँ प्रस्तुत है। साथमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका भी है। जो काव्यप्रेमी हैं वे तो इस संकलनका स्वागत करेंगे ही, वे भी करेंगे जो विभिन्न भारतीय भाषाओंकी साहित्यिक प्रगतिके प्रति जिज्ञासु हैं, उसका तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं। सबके अतिरिक्त, राष्ट्रकी भावात्मक एकताका एक सशक्त सोपान यह है ही, जिसमें उपलब्धिका गर्व नहीं, प्रयासकी विनम्रता मात्र है।

मूल्य : ४.००

● **बक रहा हूँ जुनूनमें** : प्रकाश पण्डित

कहा जाता है हिन्दीमें हँसते भी हैं तो दार्शनिककी हँसी। मगर कहीं और भी कितने मोलिएर, कितने सेरवान्ते, कितने चॉसर या शॉ हुए? हास्य-साहित्य सब कहीं कम है, व्यंग्य-साहित्य और-भी कम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य मनका एक भाव होता है, एक प्रकृतिगत विशेषता होती है। बाहरी कारण उसकी अभिव्यक्तिको अवसर और रूप-स्वर देते हैं, फूटता यह भीतरसे है। फूटता भी वहाँ है जहाँ विश्वासपूर्वक कोई अपनेको सामान्यताका प्रतिमान मानकर औरोंकी दुर्बलताएँ लक्ष्य करता है और सुधार-भावनासे प्रेरित होकर उन्हें उपहास-भरी आक्षेपात्मक आलोचनाका विषय बनाता है।

प्रस्तुत कृतिका नाम भले ही 'बक रहा हूँ जुनूनमें' है और ऊपर-ऊपरसे देखनेपर कुछ वैसी ही रौ में लिखी हुई भी जान पड़े; मगर इसको हर रचना है एक उपहास-भरी आलोचना, टीका या टिप्पणी, मेरी-आपकी-बहुतोंकी किसी-न-किसी दुर्बलताकी। कहीं आक्षेप सीधे प्रहारके रूपमें है कहीं किसी सामयिक विषय-प्रसंगके द्वारा किया गया है। उद्देश्य सबका वही है : सुधार।

हिन्दीमें 'प्रकाश-पण्डित' एक हैं : उनकी यह कृति 'बक रहा हूँ जुनूनमें' भी एक ही निकलेगी। मूल्य : ३.००

• **घरेलू इलाज** : वैद्यरत्न चन्द्रशेखर गोपालजी ठक्कुर

सभ्यताका इतिहास बहुत पुराना है। पर रोग-व्याधियों और उनके उपाय-उपचारोंका इतिहास और भी पुराना है। कोई देश और जाति नहीं जहाँ उपाय-उपचारोंकी एक अपनी घरेलू पद्धति न रही हो। यह अनिवार्य था। अनेक तो ज्योंके त्यों आज भी प्रचलित हैं। और ऐसा दावा आधुनिक चिकित्सा पद्धतिका भी शायद ही हो कि वह उनसे, उनके प्रभावोंसे, सर्वथा अछूती है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति बड़ी विकसित पद्धति है। वह 'वैज्ञानिक' है। अर्थात् अनुसन्धान और प्रयोगोंपर आधारित-अवलम्बित। स्वभावतः एक जोखिम-का तत्त्व उसमें हुआ। अत्यन्त व्यय-साध्य वह है ही। अन्य कई कठिनाइयाँ भी हैं। सम्भव है यही कारण हों जो पुराने घरोंमें वे पुराने उपाय-उपचार आज भी प्रतिष्ठित हैं, शिक्षित वर्गमें होमियोपैथीका सहारा लिया जाता है, और पश्चिमके चिकित्साशास्त्री आयुर्वेदको मान-महत्त्व देने लगे हैं।

प्रस्तुत लघुकृतिमें प्रायः सभी रोग-व्याधियोंके ऐसे आयुर्वेदिक उपाय-उपचारों-का सम्यक् परिचय दिया गया है जो सरल हैं, सहज सुलभ हो सकते हैं, और आश्चर्यजनक रूपसे लाभकारी प्रमाणित होते आये हैं। बड़ी बात यह कि एक रोगका उपचार बनते हुए तीन नयोंकी भूमिका ये नहीं बनेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है और इसलिए हर घर-गृहस्थीके लिए आवश्यक, अनिवार्य ।

मूल्य : २.००

● **विवेकके रंग :** सम्पादक – डॉ० देवीशंकर अवस्थी

'विवेकके रंग' अर्थात् महत्त्वपूर्ण समकालीन कृति-साहित्यपर प्रकाशित गणनीय समीक्षाओंका संकलन । अपने प्रकारकी प्रथम कृति : प्रौढ़ और प्रभावपूर्ण। जिन हिन्दी पुस्तकोंकी समीक्षाएँ संकलित की गयी हैं वे गत पन्द्रह वर्षोंके लेखनका एक बड़ी सीमा तक प्रतिनिधित्व करती हैं; और समीक्षाएँ तो, एक पुस्तकपर एक, चुनी वही गयी हैं जो पुस्तककी आन्तरिक सत्ताका उद्घाटन करती हों या फिर समीक्षा-सिद्धान्त या पद्धतिकी दृष्टिसे कोई नयी बात प्रस्तुत करें ।

मूल्य : ७.००

● **जुलूस :** फणीश्वरनाथ 'रेणु'

हिन्दीके बहुचर्चित उपन्यासकार 'रेणु' का यह एक नया उपन्यास है। हिन्दीमें इस विषय-भूमिकी ओर इसके भाव-संकेत लिये हुए कोई कृति बिरले ही आयी होगी । एक लघुकाय उपन्यास पर विशाल अन्तरंग, गझिन, शक्तिशाली और सारा कथानक सामयिक : घटनाओंकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण और मूल्योंकी दृष्टिसे भी । शैली-शिल्प 'रेणु' के अपने—पहलेसे अधिक प्रौढ़, मँजे-निखरे, रोचक और प्रभावपूर्ण ।

मूल्य : ३.५०

● **इतिहास-पुरुष :** डॉ० देवराज

अपनी संचेतनामें 'इतिहास-पुरुष' उत्तर-अस्तित्ववादी युगके प्रारम्भको सूचक रचना है जिसमें निराशा और विभिन्न निषेधोंपर हावी होते हुए जीवनकी मूल आस्थाओंके पुराख्यान और उज्जीवनका प्रयत्न है । क्या भाव-बोध्य और क्या भाषा दोनोंमें ही यह काव्यकृति एक नितान्त मौलिक, सशक्त एवं समृद्ध संवेदना-को स्वरित करती है : ऐसी संवेदनाको जिसे किसी सामयिक आन्दोलनके कोला-हलमें खो जानेका या उसके उतार-चढ़ावसे प्रभावित होनेका भय नहीं है ।

मूल्य : ३.५०

● **आत्मजयी :** कुँवर नारायण

कठोपनिषद्में आये नचिकेताके आख्यानपर आधारित यह काव्य-कृति मूल प्रसंगके दार्शनिक पक्षकी ऊहापोह नहीं करती और न ही उसे दिव्य कथाके रूपमें ग्रहण करती है । 'आत्मजयी' के कविने मुख्यतः नचिकेताकी मानवीय परिस्थिति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ही दृष्टिमें रखा है। कृति नयी कविताकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है—पठनीय और संग्रहणीय भी। मूल्य : ३.५०

• चौंसठ कविताएँ : इन्दु जैन

सब चौंसठ मर्मस्पर्शी कविताएँ हैं—जो हिन्दी कविताकी अधुनातन दिशा, भाव-बोध, और शिल्पकी प्रामाणिक उपलब्धिका संकेत देती हैं। अभिभूत करनेवाली अनुभूति की अभिव्यक्ति, और सब प्रकारके उलझावोंसे मुक्त। कविताओंकी पंक्ति-पंक्तिसे साक्षात मिलता है कि अन्तश्चेतना भी कितनी मुखर हो सकती है। मूल्य : ३.००

• अन्धा चाँद : मुनि रूपचन्द

चाँदके लिए 'अन्धा' विशेषण अटपटी-सी कल्पना लगेगी। है उसके पीछे एक वस्तु सत्य। उसका सारा उजाला पराया, लिया हुआ, नहीं होता क्या? प्रस्तुत संग्रहकी कविताओंमें इसी स्वरूप-विश्लेषणकी दृष्टिको प्रधानता दी गयी है। सीधी-सरल बोलचालकी भाषा, कला और शिल्पकी कृत्रिमताओंसे मुक्त : इन कविताओंकी ऋजुता विवेचकको सन्तोष देगी और सामान्य पाठकको इनका सत्य एक दृष्टि और प्रेरणा देगा। मूल्य : ३.००

• क्या धर्म बुद्धिगम्य है ? : आचार्य तुलसी

आजके जीवनके परिवेशमें वर्तमानके चुभते प्रश्नों और अणुयुगीय रोमांचों तथा आतंकोंके सन्दर्भमें प्रश्नकी उत्कटता और प्रखरता कि क्या धर्म बुद्धिगम्य है?—इस प्रश्नका और प्रश्नोंमें-से उभरती उप-प्रश्नोंकी शृंखलाका उत्तर इस कृतिमें आपको मिलेगा। व्याख्याता हैं अणुव्रत आन्दोलनके प्रवर्तक और चिन्तक श्री आचार्य तुलसी। आचार्य तुलसीने धर्मका वह स्वरूप प्रतिपादित किया है जो बुद्धिगम्य है, जो सहज आस्था उत्पन्न करता है। मूल्य : २.००

• तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो : मुनि नथमल

मनुष्य केवल देह नहीं, प्रधान अंग आत्मा है। आत्मासे अस्तित्व है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। उस एक सत्यका वरण करना होगा। यह अनुभव भी किया जाने लगा है कि वर्तमान स्थितिपर नियन्त्रण नहीं किया गया तो परिणाम भयंकर होगा। और वह परिणाम तो वे भी नहीं चाहते जो उसका कारण बन रहे हैं। कैसे हो निवारण उस परिणामका, किस प्रकार मनपर अधिकार करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुए आत्माका सान्निध्य प्राप्त किया जाये, यह अनुभव-सिद्ध, सरल एवं प्रभावपूर्ण रूपमें प्रस्तुत कृतिमें देखें।

मूल्य : २.००

● **चिन्तककी लाचारी** : माखनलाल चतुर्वेदी

यह एक भाषण-संकलन। ऐसे भाषण-संकलन बहुत कम हैं जो इतिहास और राजनीतिकी जयमाल न होकर समग्र जीवन और अनुभूति-बोधके सत्योंके सूत्र थामे हुए वर्तमानका दृष्टिपथ अँजोर दें और विगतकी छवि-रेखाएँ उकेर जायें। ऐसे भाषण-संकलन मर्मी चिन्तकके होते हैं या निष्णात साहित्यकारके। इस प्रकार के अत्यल्प भाषण-संकलनोंके बीच प्रस्तुत संकलन विशिष्ट है क्योंकि ये भाषण श्री माखनलाल चतुर्वेदी—'एक भारतीय आत्मा'के हैं और हिन्दीमें माखनलालजी केवल एक हैं, अद्वितीय हैं। मूल्य : ४.००

इस मासके नवीन प्रकाशन

आदर्श कार्यालय पद्धति	मन्नूलाल द्विवेदी, संसद सदस्य	५.००
हिन्दी उपन्यास :		
सिद्धान्त और समीक्षा	डॉ० माखनलाल शर्मा	१२.००
सूर-साहित्य-विमर्श	डॉ० दशरथराज	५.००
एक इवर आँसू का	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	५.००
शारदोत्सव	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२.००
स्वतन्त्रताका परिणाम	,,	२.००
चतुरंग	,,	२.००
राहका पत्थर	विन्ध्याचलप्रसाद गुप्त	३.००

प्रभात प्रकाशन

२०५ चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लाख रुपयेका साहित्यिक पुरस्कार

प्रतिवर्ष भारतकी चौदहों भाषाओंमें-से सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृतिपर एक लाख रुपयेका पुरस्कार देनेकी दिशामें भारतीय ज्ञानपीठकी योजना तीव्र गतिसे आगे बढ़ रही है। प्रथम पुरस्कारके सम्बन्धमें सन् १९२५ से १९५८ तककी अवधिमें प्रकाशित ग्रन्थोंमें-से हर भाषाकी एक-एक सर्वश्रेष्ठ कृति चुननेके लिए पहले तो चौदह भाषा परामर्श-समितियोंकी बैठकें हुईं। फिर इन चुनी हुई पुस्तकोंको भाषा वर्ग-समूह समितियोंके समक्ष प्रस्तुत किया गया। इस प्रक्रियामें-से निकलकर सात भाषाओं (हिन्दी, उर्दू, मराठी, बंगाली, मलयालम, तेलुगु और कन्नड़) की सात कृतियाँ आगे आयीं। तदुपरान्त अधिकारी विद्वानोंसे इन सातों कृतियोंका परस्पर तुलनात्मक मूल्यांकन कराया गया। अहिन्दी ग्रन्थोंका हिन्दी अनुवाद भी कराया गया और आखिर सारी समितियोंकी ब्यौरेवार रिपोर्टें, समीक्षकोंकी सम्मतियाँ तथा कृतियोंके हिन्दी अनुवादोंकी प्रतिलिपियाँ प्रवर परिषद्के समक्ष प्रस्तुत की गयीं। परिषद्की बैठक १९ नवम्बरको ६, सरदार पटेल मार्ग, नयी दिल्लीमें डॉ० सम्पूर्णानन्दकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुई।

प्रथम पुरस्कारके लिए प्रवर परिषद्की अन्तिम बैठक २९ दिसम्बर १९६५ को ६, सरदार पटेल मार्ग, नयी दिल्लीमें होना तय पायी है। उसी बैठकमें पुरस्कार योग्य सर्वश्रेष्ठ कृतिका चयन हो जायेगा तथा ३१ दिसम्बरको पुरस्कार-की घोषणा कर दी जायेगी।

पुरस्कार वितरण समारोहके लिए निश्चित तिथि तथा स्थानका निर्णय भी प्रवर परिषद्की २९ दिसम्बरवाली बैठकमें ही लिया जायेगा।

जिन विद्वानोंने प्रथम पुरस्कारकी प्रक्रियामें ज्ञानपीठको सहयोग प्रदान किया है उनके परिचय तथा चित्रादि संकलित कर ज्ञानपीठ-द्वारा एक पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित किये जायेंगे। मराठी, बंगला, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़की सर्वश्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतियोंके हिन्दी अनुवाद भी ज्ञानपीठ-द्वारा प्रस्तुत किये जा रहे हैं। आशा है पुरस्कार वितरण-समारोह तक यह सारा का सारा कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

द्वितीय पुरस्कारके लिए भाषा परामर्श-समितियों-द्वारा संस्तुत पुस्तकें प्राप्त हो चुकी हैं। अब भाषा वर्ग-समितियाँ निर्मित की जा रही हैं।

रही बात तृतीय पुरस्कारकी, तो उसके लिए डेढ़ हजारसे अधिक पुस्तक प्रस्ताव-पत्र देशके कोने-कोनेमें भेजे जा चुके हैं। बहुत बड़ी संख्यामें भरे हुए प्रस्ताव-पत्र हमें प्रतिदिन प्राप्त हो रहे हैं।

प्रस्ताव-पत्र वापस प्राप्त होनेकी अन्तिम तारीख अब बढ़ाकर १५ दिसम्बर १९६५ कर दी गयी है। जो महानुभाव अभीतक प्रस्ताव पत्र न भेज पाये हों उनसे प्रार्थना है कि अब कृपया भेजनेका कष्ट करें तथा जो प्रस्ताव-पत्र प्राप्त करना चाहें वे इस पतेपर पत्र लिखकर प्राप्त कर सकते हैं: मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, ९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७।

आदर्श कार्यालय पद्धति

मन्नूलाल द्विवेदी, संसद सदस्य

(सचिव, संसदीय हिन्दी परिषद्)

सरकारी कार्यालयोंमें समस्त कामकाज हिन्दीमें करनेके लिए एक ऐसी पुस्तककी कमी खटक रही थी जिसमें व्यावहारिक कठिनाइयोंका समुचित समाधान प्रस्तुत किया गया हो। यह पुस्तक इसी दिशामें एक प्रयत्न है।

इसमें सरकारी पत्र-व्यवहार, टिप्पण, आलेखन, सारलेखन और आदर्श मसौदे दिये गये हैं। साथ ही कार्यालयोंमें काममें आनेवाले पारिभाषिक शब्दों एवं वाक्यांशोंकी ऐसी बृहद् सूची भी शामिल है जो इसे पारिभाषिक शब्दकोशका दरजा सहज देती है।

इसके विद्वान् लेखक श्री मन्नूलाल द्विवेदी पिछले १५ वर्षोंसे संसदीय हिन्दी परिषद्के प्रधान सचिवके रूपमें हिन्दीकी सेवा कर रहे हैं। उनकी अधिकारपूर्ण लेखनीकी प्रामाणिकता स्वयंसिद्ध है। मूल्य केवल पाँच रुपये

प्रभात प्रकाशन

२०५ चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीविश्व
कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ

जो केवल मनोरंजनके लिए नहीं
बहुत कुछ सोचने और पानेके लिए हैं

• अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मेलन

वर्षान्त – दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें अखिल भारतीय साहित्यकारोंके पाँचवें सम्मेलनका आयोजन एर्णाकुलमके निकट एलूरमें किया गया है। इसके पूर्व यह सम्मेलन क्रमशः दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बईमें हो चुका है। इस पाँचवें सम्मेलनमें मलयालमके चालीस साहित्यकारोंके अलावा अन्य भारतीय भाषाओंके दस-दस लेखक भाग ले रहे हैं। साथ ही, सागर पारके भी कुछ साहित्यकारोंको इस सम्मेलनमें आमन्त्रित किया गया है। सम्मेलनका प्रमुख कार्यक्रम है एक त्रिदिवसीय विचार-गोष्ठी; जिसमें विचार-विमर्शके लिए तीन विषय हैं—१. 'आधुनिक भारतीय साहित्य', २. 'आदि कलाओंके आपसी सम्बन्ध', और ३. 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण : भारतका बुद्धिजीवी वर्ग'।

• क्षेत्रीय भाषाओंके लिए सलाहकार समिति

संविधानकी चौदह भाषाओंमें-से बारहके लिए भारत सरकारने एक सलाहकार समितिके गठनका निश्चय किया है। यह समिति सभी क्षेत्रीय भाषाओंकी विकास-प्रगतिके सम्बन्धमें समय-समयपर भारत सरकारको सलाह देगी। प्रस्तुत समितिकी भाषा-सूचीमें हिन्दी और संस्कृत भाषाएँ नहीं सम्मिलित की गयी हैं क्योंकि इनके लिए पहलेसे ही एक सलाहकार समिति कार्य कर रही है।

• कवि विद्यापतिको राजकीय सम्मान

त्रिभुवनविजयी सौन्दर्यके अव्याज चारण, चौदहवीं शतीके मिथिलाके कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यापतिके सम्मानमें भारत सरकारके डाक-विभागने इसी १७ नवम्बरको पन्द्रह पैसेके विशेष डाक-टिकिटका प्रारम्भ किया है।

• नेहरू पुरस्कार

स्व० श्री जवाहरलाल नेहरूकी स्मृतिमें प्रारम्भ 'सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार'की घोषणा इसी १३ नवम्बरको कर दी गयी। इस घोषणाके अनुसार श्रेष्ठ साहित्यिक कृतिके प्रथम और द्वितीय क्रमशः १५,००० रु० और ७,५०० रु० के पुरस्कार श्री सुमित्रानन्दन पन्तके महाकाव्य 'लोकायतन' और श्री अली सरदार जाफ़रीको 'एक ख़्वाब और' के लिए दिये गये।

तीसरा साहित्य पुरस्कार शोलोखोवके 'अछूती धरती जोती गयी' उपन्यासके पंजाबी अनुवादक श्री जगजीत सिंह आनन्द तथा शोलोखोवके 'धीरे बहे दोन रे' उपन्यासके तीन गुजराती अनुवादकों – श्री सुरेश जोशी, श्री जयन्त पाठक और श्री रमणलाल पाठकको एक साथ मिला है, जो इनके बीच बराबर भागोंमें बँट जायेगा। साहित्यके पाँच अतिरिक्त पुरस्कार श्री अमृत राय (हिन्दी), श्री लिंगराजू (तेलुगु), श्रीमती सविताम्मा (कन्नड़), श्री रघुनाथन (तमिल) और श्री शची राउत रॉय (उड़िया) को दिये गये हैं।

पत्रकारिताके प्रथम और द्वितीय पुरस्कार क्रमशः ५,००० रुपये और २,५०० रुपये श्री बनारसीदास चतुर्वेदीको 'रूसकी साहित्यिक यात्रा' तथा श्री रविशंकर रावलको गुजराती लेख-संग्रह 'मैंने नयी मानवता देखी'के लिए दिये गये हैं। पत्रकारिताका तीसरा पुरस्कार श्री पवननको मलयालम लेख-संग्रह 'ख्रुश्चेवके बाद सोवियत संघ'के लिए मिला है। पत्रकारिताके पाँच अतिरिक्त पुरस्कार श्री विष्णु मुकर्जी (बँगला), श्री उत्तम (सिन्धी), श्री सतीश कुमार और रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत (हिन्दी) तथा प्रो० सैयद अब्दुल मलिक (असमी) को दिये गये हैं।

प्रथम और द्वितीय पुरस्कारोंके साथ सोवियत संघकी दो सप्ताहकी निःशुल्क यात्रा भी सम्मिलित है।

• अहिन्दी-भाषी लेखकोंको पुरस्कार

भारत सरकारने अहिन्दी-भाषी क्षेत्रोंके हिन्दी लेखकों तथा कवियोंको उनकी कृतियोंपर पन्द्रह-पन्द्रह सौ रुपयेका पुरस्कार देनेकी एक योजना स्वीकृत की है।

अहिन्दी-भाषी लेखकोंकी कृतियोंको पुरस्कृत करनेकी यह योजना गत वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही प्रारम्भ की गयी थी। इस सम्बन्धमें एक निर्णायक-समिति पुस्तकोंका चुनाव-कार्य कर रही है। शीघ्र ही निर्णायक-समितिके मत प्राप्त होते ही पुरस्कारोंकी घोषणा की जायेगी।

• संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार

संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्लीने हिन्दीके प्रसिद्ध नाटककार श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' को हिन्दी नाटकोंके लिए १९६४-६५ का पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। संगीत नाटक अकादेमी यह पुरस्कार प्रतिवर्ष देती है।

• रूसमें बाल-साहित्य

सोवियत संघने अपने देशमें प्रकाशित बाल-साहित्य-सम्बन्धी आँकड़े प्रस्तुत करते हुए एक विज्ञप्तिमें बताया है कि १९६४ में बच्चोंकी पुस्तकोंकी बीस करोड़ अस्सी लाख प्रतियाँ रूसमें प्रकाशित हुई हैं। इन प्रकाशित पुस्तकोंमें मौलिक कृतियोंके अलावा विश्वकी अन्य ७२ भाषाओं—जिनमें हिन्दी भी है—से अनुवादित कृतियाँ भी सम्मिलित हैं।

आवश्यकता इस बातकी नहीं कि यह विज्ञप्ति हमें कोई चोट दे, आवश्यकता अधिक यह है कि अपनी सीमाओं-सम्भावनाओंके परिप्रेक्ष्यमें हम विचार भी करें।

• उपन्यासका टेलेविज़न रूपान्तर

प्रसिद्ध अँगरेज़ी उपन्यासकार ई० एम० फ़ॉस्टरके उपन्यास 'ए पैसेज टु इण्डिया'का टेलेविज़न रूपान्तर 'प्ले ऑव द मन्थ' बी० बी० सी० टेलेविज़न-पर १६ नवम्बरको प्रस्तुत किया गया। रूपान्तरकार और प्रस्तुतकर्ता थे २६ वर्षीय युवा भारतीय श्री वारिस हुसैन।

श्री हुसैनने यह आशा व्यक्त की है कि भविष्यमें यह रूपान्तर भारतमें भी टेलेविज़नपर प्रदर्शित किया जायेगा।

• लन्दनमें मुशायरा

पिछले दिनों लन्दनके 'ऐलाएन्स हॉल' में एक मुशायरेका आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि थे भारतके उर्दू कवि श्री ग़ुलाम रब्बानी 'ताबाँ'। यह मुशायरा लन्दन स्थित एक साथ बैठकर दुर्दिनोंमें भी दोस्ती और इनसानियत-पर ज़ोर देकर अमनके लिए दुआएँ करनेमें गर्वका अनुभव करनेवाले हम जबानों-द्वारा संचालित संस्था 'नज़्मे तफ़री' ने आयोजित किया था।

मुशायरेमें लन्दनके सात उर्दू शायरीके कविता-पाठके बाद ताबाँ साहबने भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। उपस्थित श्रोताओंने उनकी जिस कविताको सर्वाधिक सराहा वह स्व० जवाहरलाल नेहरूके निधनपर लिखी गयी थी।

• पुस्तक प्रदर्शनी

गत मास वाशिंगटनमें स्मिथसोवियतके इतिहास और तकनीकी विद्या-सम्बन्धी संग्रहालयमें स्व० श्री जवाहरलाल नेहरूकी पाण्डुलिपियों, पत्रों और पुस्तकोंकी एक प्रदर्शनी प्रारम्भ हुई है। यह प्रदर्शनी २ जनवरी १९६६ तक चलेगी।

• भोजपत्रोंपर ब्राह्मी पाण्डुलिपि

हालमें तुर्कमानियामें ब्राह्मी लिपि-अंकित भोजपत्र पाये गये हैं। तुर्कमानिया-के कुछ पुरातत्त्ववेत्ताओंने भोजपत्रोंकी एक ऐसी थाकका पता लगाया है जिसपर ब्राह्मी लिपि अंकित है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि एशिया जनगण संस्थानको भेंट कर दी गयी है।

संस्थानके प्राच्यवेत्ताओंका कहना है कि पाण्डुलिपिमें सरस्वतीवादिन समाजके नियम-धर्म तथा बौद्ध-भिक्षुओंके आचार-विचार अंकित हैं। वैज्ञानिकोंका मत है कि उक्त पाण्डुलिपि ५वीं-७वीं शताब्दीकी है। स्मरणीय है कि भोजपत्रोंपर इतनी प्राचीन पाण्डुलिपि पहली बार हस्तगत हुई है।

• महाभारतका अनुवाद मलयालममें

गत वर्ष ही महाकवि श्री तुम्पुरानकी जन्मशतीके अवसरपर केरलके साहित्य-प्रेमियोंने यह संकल्प किया था कि महाकविके द्वारा अनूदित महाभारतके मलयालम अनुवादका संशोधित पुनर्मुद्रण अल्प-मोली संस्करणके रूपमें प्रकाशित किया जाये। महाकवि तम्पुरानने सम्पूर्ण 'महाभारत' का अनुवाद 'भाषा भारत'के नामसे लगभग साठ वर्ष पहले किया था, और इसके दो संस्करण प्रकाशित भी हुए थे। किन्तु बहुत व्यय-साध्य होनेके कारण इसके नये संस्करणका प्रकाशन किसी व्यावसायिक संस्था-द्वारा सम्भव नहीं हो सका।

इस वर्ष महाकविकी १०१वीं वर्ष-ग्रन्थिके अवसरपर केरलीय लेखकोंकी संस्था 'साहित्य प्रवर्तक सहकारी समिति' ने बड़े परिश्रमके साथ 'महाभारत' के इस महत्त्वपूर्ण मलयाली अनुवाद 'भाषा भारत' का तीसरा अल्प-मोली संस्करण प्रकाशित किया है। कहना न होगा कि इस प्रयत्नने केरलके डेढ़ करोड़ मलयालम भाषाभाषी जनताको सन्तोष और प्रसन्नता दी है।

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर मास के प्रकाशन

❀ रंगमंच और नाटक की भूमिका

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

मध्यकालीन पूर्व और पश्चिमके रंगमंचका अध्ययन। रंगमंचको वास्तविक अर्थ-गौरव और सही परिप्रेक्ष्य देनेवाला शास्त्रीय और व्यावहारिक विवेचन। अनेक महत्त्वपूर्ण फ़ोटो-चित्रोंसे युक्त। १०.००

❀ शतघ्नी

वीरेन्द्र भट्टाचार्य

'धर्मयुग' में धारावाहिक रूपमें प्रकाशित उपन्यास अब पुस्तकाकारमें। ५.००

❀ तात्या टोपे

श्रीनिवासबालाजी हार्डीकर

१८५७ के स्वातन्त्र्य-संग्रामके सेनानीका शोधपूर्ण जीवन-चरित्र। अनेक फ़ोटो-चित्रोंसे युक्त। ६.००

❀ बच्चों के नाटक

मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

सुगमतासे खेले जा सकनेवाले छात्र-जीवन सम्बन्धी छह लघु नाटक। २.५०

❀ चक्केकी कहानी

मनमोहन मदारिया

विज्ञानके अग्रदूत चक्केकी रोचक, सचित्र कहानी। १.००

नेशनल पब्लिशिंग हाउस,

'चन्द्रलोक', जवाहरनगर,

दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- धनगाँवकी रानी (उपन्यास) कृश्नचन्दर
- चम्पा (उपन्यास) नागार्जुन
- दुहरी ज़िन्दगी (कहानी-संग्रह) रमेश बक्षी
- राष्ट्रपति राधाकृष्णन् (जीवनी) अवनीन्द्रकुमार
- जागी आँखोंका सपना (उपन्यास) राबिन शॉ पुष्प
- कुमुद (उपन्यास) यज्ञदत्त शर्मा
- कहकहे (लतीफ़े) सं० स्वर्ण पण्डित
- ज़फ़रकी शायरी सं० प्रकाश पण्डित

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

निमन्त्रण (उपन्यास) चतुरसेन शास्त्री
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

विश्वके २० अमर उपन्यास सं० रांगेय राघव
पृष्ठ संख्या २५०, मूल्य २.००

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर माँ-बापकी कामना होती है कि
उनका बच्चा महान बनकर अपने देशका नाम रौशन करे
आजके बच्चोंमें-से ही कुछ कलके महापुरुष बनेंगे
और महान् बननेकी प्रेरणा मिलती है
महापुरुषोंकी जीवनियोंसे

हिन्दीके प्रसिद्ध साहित्यकार श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'के सम्पादनमें हम संसारके महान् लेखकोंकी जीवनियाँ प्रकाशित कर रहे हैं, जिन्हें सीधी सरल और बोधगम्य भाषामें इस तरह लिखा गया है कि महान् लेखकोंकी जीवनकी घटनाओंके साथ-साथ दसियों दूसरी बातोंके बारेमें बच्चोंका ज्ञान बढ़े।

पहली क़िस्तमें निम्नलिखित पुस्तकें छप रही हैं—विलियम शेक्सपियर, प्रेमचन्द, अर्नेस्ट हैमिंग्वे, लियो तालस्ताय, मार्कट्वेन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, ओ'नील, वाल्ट ह्विटमैन, बालज़ाक, पर्लबक, ओ'हेनरी, एंटन चेख़व।

इस योजनाकी दूसरी क़िस्तमें निम्नलिखित पुस्तकें प्रेसमें जा रही हैं—पुश्किन, दास्तविस्की, जॉन स्टीनबेक, जयशंकर प्रसाद, रॉबर्ट फ्रॉस्ट, सॉमरसेट मॉम, शरतचन्द्र, ऐडगर ऐलन पो, जार्ज बर्नाडशॉ, स्किलेयर ल्युईस, रोम्याँ रोलाँ, हर्मन मैलविल, विलियम फ़ॉकनर, अनातोल फ्रान्स।

योजनाकी तीसरी क़िस्तमें भारतकी प्रान्तीय भाषाओंके प्रसिद्ध लेखकों और कवियोंकी जीवनियाँ हम शीघ्र ही प्रकाशित कर रहे हैं।

आकर्षक रूप-सज्जासे सुसज्जित संसारके महान् लेखक जीवनी - मालाके ये अमूल्य रत्न हर घर और पुस्तकालयकी शोभा हैं।

मूल्य १.२५ प्रत्येक

नीलाभ प्रकाशन

बिक्री कार्यालय : १५-ए, महात्मा गान्धी मार्ग,
मुख्य कार्यालय : खुसरोबाग रोड—२
इलाहाबाद-१

तार : नीलाभ
पो०बॉ० : ५३

फ़ोन : ३३८०
३०२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-मंच

डॉ० देवराज, डॉ० प्रभाकर माचवे, श्री नेमिचन्द्र जैनके लेखों, कुँवरनारायण कृत 'आत्मजयो' की श्री श्रीराम वर्मा-द्वारा की गयी समीक्षा तथा 'समसामयिकी' स्तम्भके अन्तर्गत 'युद्ध संकट और साहित्यकार'के कारण वास्तवमें 'ज्ञानपीठ पत्रिका' का यह नवम्बर अंक बहुत समृद्ध लगा।

—डॉ० सत्येन्द्रनाथ शर्मा, दिल्ली

'ज्ञानपीठ पत्रिका' एक सही दिशाका पथ अँजोर रही है, यह हिन्दी और सभी भारतीय भाषाओंके लिए प्रीतिकर स्थिति है।

—मधुकर नारायण, मुंगेर

'पत्रिका' के नवम्बर अंकमें डॉ० देवराजका लेख 'बात : प्रभावित होनेकी' काफ़ी विचारोत्तेजक है, और अंककी महत्त्वपूर्ण प्रस्तुति भी। कश्मीरी भाषाकी प्रगति और उपलब्धियोंके सम्बन्धमें श्री सुबोध शास्त्रीका लेख भी बहुत प्रभावपूर्ण और उपयोगी है।

—विधुशेखर माथुर, मेरठ

'ज्ञानपीठ पत्रिका' के अंक नियमित देख रहा हूँ। पिछले तीन-चार मासके अंक तो सभी दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण लगे। 'समसामयिकी' और 'प्रकाशित समीक्षाएँ : शेष स्वर' स्तम्भ बहुत उपयोगी और मौलिक हैं। बाहरी नये प्रकाशनोंपर भी स्तरीय समीक्षाएँ प्रकाशित करनेकी व्यवस्था कर सकें तो और अच्छा हो। इसमें दो मत नहीं हो सकते कि यह पत्रिका हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके क्षेत्रमें अकेली है।

—डॉ० सुरेशचन्द्र जोशी, मसूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन
और राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठाकी साधिका
तथा भारतीय भाषाओंकी सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक
साहित्यिक कृतिपर प्रतिवर्ष एक लाख रुपये
पुरस्कार - योजना - प्रवर्तिका विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित सामग्रीका अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोकहितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

श्रेष्ठ
उपयोगी
संग्रहणीय
प्रकाशन

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला

• राष्ट्रभारती

प्रतिनिधि संकलन : कविता : मराठी	सं०—दिनकर सोनवलकर	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी दो	नानक सिंह	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी दो	प्रो० ना० सी० फड़के	४.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : पंजाबी	कर्तारसिंह दुग्गल	३.५०
प्रतिनिधि संकलन : आन्तरभारती एकांकी	सं०—अनिल कुमार	४.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : तेलुगु	नार्ल वेंकटेश्वर राव	३.५०
प्रतिनिधि रचनाएँ : बंगला	'परशुराम'	३.००
प्रतिनिधि रचनाएँ : मराठी	व्यंकटेश दि० माडगूलकर	४.००

• उपन्यास

अठारह सूरज के पौधे	रमेश बक्षी	३.००
सूरजका सातवाँ घोड़ा [च० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
पीले गुलाबकी आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर मानव	४.००
गुनाहोंका देवता [आठवाँ सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आइ०सी०एस्०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	२.५०
जो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! उनकी परम्पराएँ सुनें !!	'भिक्खु'	२.२५
पलासीका युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
अपने-अपने अजनबी	अज्ञेय	३.००
शतरंजके मोहरे [द्वि० सं० पुरस्कृत]	अमृतलाल नागर	६.००
शह और मात	राजेन्द्र यादव	४.००
राजसी	देवेशदास आइ०सी०एस्०	२.५०
संस्कारोंकी राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारह सपनोंका देश	सं०—लक्ष्मीचन्द्र जैन	४.००
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००

• कहानी

दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	३.००
झाड़ी	श्रीकान्त वर्मा	३.००
खोयी हुई दिशाएँ	कमलेश्वर	२.५०
मेज़पर टिकी हुई कुहनियाँ	रमेश बक्षी	३.५०
कालके पंख [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
खेल खिलौने [द्वि० सं०]	राजेन्द्र यादव	२.००
बोस्ताँ [द्वि० सं०]	शेख सादी	२.५०
जय-दोल [तृ० सं०]	अज्ञेय	३.००
ज़िन्दगी और गुलाबके फूल	उषा प्रियंवदा	२.५०
अपराजिता	भगवतीशरण सिंह	२.५०
कर्मनाशाकी हार	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.००
सूने अँगन रस बरसै	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	३.००
प्यारके बन्धन	रावी	३.२५
मोतियोंवाले [पुरस्कृत]	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
हरियाणा लोकमञ्चकी कहानियाँ	राजाराम शास्त्री	२.५०
मेरे कथागुरुका कहना है : १—२	रावी	६.००
पहला कहानीकार [पुरस्कृत]	रावी	२.५०
संघर्षके बाद [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विष्णु प्रभाकर	३.००
नये चित्र	सत्येन्द्र शरत्	३.००
अतीतके कम्पन [द्वि० सं०]	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
आकाशके तारे : धरतीके फूल [तृ०सं०]	कन्हैयालालमिश्र'प्रभाकर'	२.००
नये बादल	मोहन राकेश	२.५०
कुछ मोती कुछ सीप [द्वि०सं० पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
जिन खोजा तिन पाइयाँ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
गहरे पानी पैठ [तृ० सं०]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.५०
एक परछाईं : दो दायरे	गुलाबदास ब्रोकर	३.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑस्कर वाइल्डकी कहानियाँ	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
लो कहानी सुनो	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२.००

• कविता

इतिहास-पुरुष	डॉ देवराज	३.५०
देशान्तर [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	१२.००
अन्धा चाँद	मुनि रूपचन्द	३.००
चाँदका मुँह टेढ़ा है [द्वि० सं०]	मुक्तिबोध	८.००
आत्मजयी	कुँवरनारायण	३.५०
कनुप्रिया [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.००
हम विषपायी जनमके [द्वि० सं०]	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६.००
वेणु लो गूँजे धरा [द्वि० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
चौंसठ कविताएँ	इन्दु जैन	३.००
संक्रान्त	डॉ० कैलाश वाजपेयी	३.००
हिम-विद्ध	डॉ० जगदीश गुप्त	३.००
बीजुरी काजल आँज रही	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
अर्द्धशती	बालकृष्ण राव	३.००
रत्नावली	हरिप्रसाद 'हरि'	२.००
वाणी [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	४.००
सौवर्ण [द्वि० सं० परिवर्द्धित]	सुमित्रानन्दन पन्त	३.५०
आँगनके पार द्वार [अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत]	अज्ञेय	३.००
वीणापाणिके कम्पाउण्डमें	केशवचन्द्र वर्मा	३.००
रूपाम्बरा	सं०—अज्ञेय	१२.००
अनुक्षण	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
तीसरा सप्तक [द्वि० सं०]	सं०—अज्ञेय	५.००
अरी ओ करुणा प्रभामय	अज्ञेय	४.००
सात गीत-वर्ष [द्वि० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	३.५०
लेखनी-बेला	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
आवाज़ तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
पञ्च-प्रदीप	शान्ति मेहरोत्रा	२.००
मेरे बापू	तन्मय बुखारिया	२.५०

ज्ञानपीठ पत्रिका : दिसम्बर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपके धान [द्वि० सं० पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	३.००
वर्द्धमान [महाकाव्य पुरस्कृत]	अनूप शर्मा	६.००
• शाइरी		
गंगोजमन	'नज़ीर' बनारसी	३.००
शाइरीके नये मोड़ : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
नग़मए-हरम	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	४.००
शाइरीके नये दौर : १–५	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	१५.००
शेर-ओ-सुख़न : १–५ [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	२०.००
शेर-ओ-शाइरी [द्वि०सं०पुरस्कृत]	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	८.००
ग़ालिब	रामनाथ 'सुमन'	८.००
मीर	रामनाथ 'सुमन'	६.००
• नाटक		
प्रेत	इब्सेन, अनु०नेमिचन्द्र जैन	२.२५
बारह एकांकी [द्वि० सं०]	विष्णु प्रभाकर	४.००
घाटियाँ गूँजती हैं [तृ० सं०]	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	२.५०
नाटक बहुरूपी	डॉ०लक्ष्मीनारायणलाल	३.५०
आदमीका ज़हर	लक्ष्मीकान्त वर्मा	३.००
रजत रश्मि [द्वि० सं० पुरस्कृत]	डॉ० रामकुमार वर्मा	२.५०
तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ	परिपूर्णानन्द वर्मा	४.००
सुन्दर रस [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
नाटक बहुरंगी [द्वि० सं०]	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	४.५०
जनम क़ैद [पुरस्कृत]	गिरिजाकुमार माथुर	२.५०
कहानी कैसे बनी ?	कर्तारसिंह दुग्गल	२.५०
पचपनका फेर [द्वि० सं० पुरस्कृत]	विमला लूथरा	३.००
तरकशके तीर	श्रीकृष्ण	३.००
और खाई बढ़ती गयी [पुरस्कृत]	भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
चेखॅवके तीन नाटक	राजेन्द्र यादव	४.००
कुछ फ़ीचर कुछ एकांकी	डॉ०भगवतशरण उपा०	३.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखा सरोवर	डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	२.००
भूमिजा	सर्वदानन्द	१.५०

• विधा-विविधा

खुला आकाश : मेरे पंख	शान्ति मेहरोत्रा	४.५०
अंकित होने दो	अजित कुमार	४.००
काठकी घण्टियाँ	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	७.००
सीढ़ियोंपर धूपमें	रघुवीर सहाय	४.००
पत्थरका लैम्प-पोस्ट	शरद देवड़ा	३.००

• रुचिर कलात्मक

शैशवांकन		१२.००
परिणय गीतिका	सं०—रमा जैन, कुन्था जैन	५.००

• ललित-निबन्धादि

चिन्तककी लाचारी	माखनलाल चतुर्वेदी	४.००
एक साहित्यिककी डायरी [द्वि. सं. परिवर्द्धित]	गजानन माधव मुक्तिबोध	२.५०
अमीर इरादे ग़रीब इरादे [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	२.००
क्षण बोले कण मुसकाये	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
हम सब और वह	दयानन्द वर्मा	२.००
बातें, जिनमें सुगन्ध फूलोंकी	अहमद सलीम	३.००
महके आँगन चहके द्वार	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
शिखरोंका सेतु	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	३.५०
बाजे पायलियाके घुँघरू [द्वि० सं०]	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	४.००
फिर बैतलवा डालपर	विवेकी राय	३.५०
आँगनका पंछी और बनजारा मन	डॉ० विद्यानिवास मिश्र	३.००
नये रंग नये ढंग	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.००
बना रहे बनारस	विश्वनाथ मुखर्जी	२.५०
काग़ज़की किश्तियाँ	लक्ष्मीचन्द्र जैन	२.५०
सांस्कृतिक निबन्ध	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्त और विकास	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.५०
ठूँठा आम	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	२.००
हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान [द्वि.सं.]	डॉ० सम्पूर्णानन्द	१.००
ग़रीब और अमीर पुस्तकें	रामनारायण उपाध्याय	१.००
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?	रावी	२.५०
माटी हो गयी सोना [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	२.००
ज़िन्दगी मुसकरायी [तृ० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	४.००

• यात्रा-विवरण

चीड़ोंपर चाँदनी	निर्मल वर्मा	३.००
एक बूँद सहसा उछली	अज्ञेय	७.००
पार उतरि कहँ जइहौ	प्रभाकर द्विवेदी	३.००
सागरकी लहरोंपर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
हरी घाटी	डॉ० रघुवंश	४.५०

• संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी

दीप जले शंख बजे [द्वि० सं०]	कन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'	३.००
समयके पाँव [तृ० सं०]	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
रेखाचित्र [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	४.००
पराड़करजी और पत्रकारिता [पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	५.५०
आत्मनेपद	अज्ञेय	४.००
माखनलाल चतुर्वेदी	'बरुआ'	६.००
द्विवेदी पत्रावली	बैजनाथसिंह 'विनोद'	२.५०
जैन-जागरणके अग्रदूत	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	५.००
संस्मरण [द्वि० सं० पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
हमारे आराध्य [पुरस्कृत]	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००

• आलोचना, अनुसन्धान, रचना-शिल्प

घरेलू इलाज	वैद्यरत्न च० गो० ठक्कुर	२.००
विवेकके रंग	सं०-डॉ०देवीशंकर अवस्थी	७.००
हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि	डॉ० प्रेमसागर जैन	१२.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और संवेदना	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	२.५०
हिन्दी गीतिनाट्य	कृष्ण सिंहल	४.००
साहित्यका नया परिप्रेक्ष्य	डॉ० रघुवंश	५.००
जैन भक्ति-काव्यकी पृष्ठभूमि	डॉ० प्रेमसागर जैन	६.००
रेडियो वार्ता-शिल्प	सिद्धनाथकुमार	२.००
रेडियो नाट्य-शिल्प [द्वि० सं०]	सिद्धनाथकुमार	३.००
ध्वनि और संगीत [द्वि० सं०]	ललितकिशोर सिंह	४.५०
भारतीय ज्योतिष [च० सं०]	नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य	६.००
प्राचीन भारतके प्रसाधन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.५०
संस्कृत साहित्यमें आयुर्वेद	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००
संस्कृतका भाषाशास्त्रीय अध्ययन [द्वि.सं.]	डॉ० भोलाशंकर व्यास	५.००
हिन्दी नवलेखन	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मानव मूल्य और साहित्य	डॉ० धर्मवीर भारती	२.५०
शरत्के नारी-पात्र	डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी	४.५०
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन : १–२	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	५.००

• इतिहास-राजनीति

भारतीय संस्कृतिका विकास : वैदिक धारा :	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७.००
समाजवाद	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
कालिदासका भारत : भाग १ [द्वि० सं०]	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००
कालिदासका भारत : भाग २ [द्वि० सं०]	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	४.००
भारतीय इतिहास : एक दृष्टि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	८.००
चौलुक्य कुमारपाल [द्वि०सं० पुरस्कृत]	लक्ष्मीशंकर व्यास	४.५०
एशियाकी राजनीति	परदेशी	६.००
इतिहास साक्षी है	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	३.००
खोजकी पगडण्डियाँ [द्वि० सं० पुरस्कृत]	मुनि कान्तिसागर	४.००
खण्डहरोंका वैभव [द्वि० सं०]	मुनि कान्तिसागर	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• दार्शनिक-आध्यात्मिक

तुम अनन्त शक्तिके स्रोत हो	मुनि नथमल	२.००
क्या धर्म बुद्धिगम्य है ?	आचार्य तुलसी	२.००
अध्यात्म-पदावली [तृ० सं०]	डॉ० राजकुमार जैन	४.५०
दर्शन अनुचिन्तन	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	३.००
तान्त्रिक साधना	माधव पुण्डलीक पण्डित	१.५०
भारतीय विचारधारा	मधुकर एम० ए०	२.००
वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	६.००

• सूक्तियाँ

भाव और अनुभाव [द्वि० सं०]	मुनि नथमल	२.००
ज्ञानगंगा : भाग १ [द्वि०सं०]	नारायणप्रसाद जैन	६.००
ज्ञानगंगा : भाग २	नारायणप्रसाद जैन	६.००
सन्त-विनोद	नारायणप्रसाद जैन	२.००
शरतकी सूक्तियाँ	रामप्रकाश जैन	२.००
कालिदासके सुभाषित	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	५.००

• हास्य-व्यंग्य

बक रहा हूँ जुनून में	प्रकाश पण्डित	३.००
सिकन्दरनामा	सलमा सिद्दीक़ी	२.००
आधुनिक हिन्दी हास्य-व्यंग्य [द्वि० सं०]	सं० – केशवचन्द्र वर्मा	४.००
तेलकी पकौड़ियाँ [द्वि० सं०]	डॉ० प्रभाकर माचवे	२.००
जैसे उनके दिन फिरे [द्वि० सं०]	हरिशंकर परसाई	२.५०
काग़ज़के फूल शब्द : भारतभूषण अग्रवाल,	चित्र : प्रभाकर माचवे	३.००
चाय पार्टियाँ	सन्तोषनारायण नौटियाल	२.००
हास्य मन्दाकिनी	नारायणप्रसाद जैन	६.००
मुर्ग़-छाप हीरो	केशवचन्द्र वर्मा	२.००
अंगदका पाँव	श्रीलाल शुक्ल	२.५०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

तत्त्वज्ञान और सिद्धान्तशास्त्र

समयसार [प्राकृत-अँगरेज़ी]
मूल : आचार्य कुन्दकुन्द; सं०-अनु० : प्रो० ए० चक्रवर्ती ८.००

तत्त्वार्थराजवार्तिक [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य २४.००

सर्वार्थसिद्धि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य पूज्यपाद; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री १२.००

पंचसंग्रह [प्राकृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री १५.००

जैन धर्मामृत [संस्कृत-हिन्दी]
संकलन, सम्पादन और अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ३.००

जैन न्याय और कर्मग्रन्थ

कर्मप्रकृति [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य नेमिचन्द्र, सम्पादन : पं० हीरालाल शास्त्री ६.००

सत्यशासन-परीक्षा [संस्कृत]
मूल : आचार्य विद्यानन्दि; सम्पादन : गोकुलचन्द्र जैन ५.००

सिद्धिविनिश्चयटीका [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और अनन्तवीर्य; सम्पादन : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायविनिश्चयविवरण [संस्कृत] भाग १–२
मूल : भट्ट अकलंक और वादिराज सूरि; सं० : डॉ० महेन्द्रकुमार ३०.००

महाबन्ध [प्राकृत-हिन्दी] भाग २ से ७
मूल : भगवन्त भूतबलि; सं०-अनु० : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ६६.००

आचारशास्त्र, पूजा और व्रत विधान

उपासकाध्ययन [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : सोमदेव सूरि, सं०-अनु० : पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री १२.००

वसुनन्दि श्रावकाचार [प्राकृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य वसुनन्दि; सं०-अनु० : पं० हीरालाल शास्त्री ५.००

ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि [संकलन]
संकलन-सम्पादन : डॉ० आ.ने. उपाध्ये व फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ४.००

व्रततिथिनिर्णय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ३.००

मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन [हिन्दी]
लेखक : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २.००

व्याकरण, छन्दशास्त्र और कोश

जैनेन्द्र महावृत्ति [संस्कृत]
मूल : आचार्य अभयनन्दि; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी १५.००

सभाष्य रत्नमञ्जूषा [संस्कृत]
मूल : अज्ञात; सम्पादन : श्री हरि दामोदर वेलणकर २.००

नाममाला सभाष्य [संस्कृत]
मूल : कवि धनञ्जय–अमरकीर्ति; सम्पादन : पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी ३.५०

पुराण साहित्य

हरिवंशपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १६.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य जिनसेन; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य २०.००

उत्तरपुराण [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य गुणभद्र; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य १०.००

पद्मपुराण [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–३
मूल : आचार्य रविषेण; सं०-अनु० : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३०.००

पुराणसार-संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १–२
मूल : आचार्य दामनन्दि; सं०-अनु० : डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी ४.००

चरित व काव्य-ग्रन्थ

करकण्डुचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कनकामर, सं०-अनु० : डॉ० हीरालाल जैन १०.००

भोजचरित्र [संस्कृत]
मूल : राजवल्लभ, सम्पा० : डॉ० छावड़ा, शंकरनारायणन् ८.००

मयणपराजयचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी]
मूल : कवि हरिदेव; सम्पादन और अनुवाद : डॉ० हीरालाल जैन ८.००

मदनपराजय [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : नागदेव; सं०-अनु० : डॉ० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ६.००

पउमचरिउ [अपभ्रंश-हिन्दी] भाग १–३
मूल : कवि स्वयम्भू; सं०-अनु० : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन ९.००

जीवन्धरचम्पू [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : कवि हरिचन्द्र
सम्पादन, अनुवाद और टीका : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ८.००

जातकट्ठकथा [पाली]
सम्पादन : भिक्षु धर्मरक्षित ९.००

धर्मशर्माभ्युदय [हिन्दी]
अनुवादक : पं० पन्नालाल साहित्याचार्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और सामुद्रिक शास्त्र

भद्रबाहु संहिता [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : आचार्य भद्रबाहु; सं०-अनु० : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ८.००

केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य ४.००

करलक्खण [प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी]
मूल : अज्ञात; सम्पादन-अनुवाद : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ०.७५

विविध

वर्ण, जाति और धर्म
लेखक : पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ३.००

जिनसहस्रनाम [संस्कृत-हिन्दी]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : पं० हीरालाल शास्त्री ४.००

थिरुकुरल [तमिल]
सम्पादन : ए० चक्रवर्ती ५.००

आधुनिक जैन कवि [हिन्दी]
संकलन-सम्पादन : श्रीमती रमा जैन ३.७५

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची
संकलन-सम्पादन : पं० के० भुजबली शास्त्री १३.००

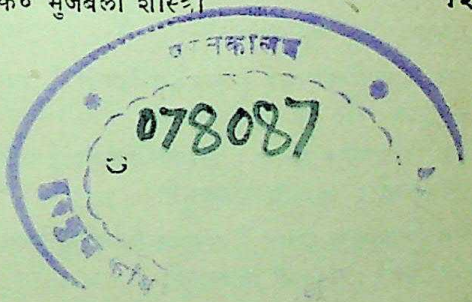

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला

पुराण

महापुराण [अपभ्रंश] आदिपुराण : भाग १
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग २
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — १०.००

महापुराण [अपभ्रंश] उत्तरपुराण : भाग ३
मूल : महाकवि पुष्पदन्त; सम्पादन : परशुराम शर्मा वैद्य — ६.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

पद्मपुराण [संस्कृत] भाग ३
मूल : आचार्य रविषेण; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — २.००

हरिवंशपुराण [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री जिनसेन सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल — १.५०

शिलालेख

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग १
सम्पादन : पं० श्री हीरालाल जैन — २.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग २
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — ८.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ३
संग्रहकर्त्ता : पं० श्री विजयमूर्ति — १०.००

जैन शिलालेख संग्रह [संस्कृत-हिन्दी] भाग ४
सम्पादन : डॉ० जोहरापुरकर — ७.००

ज्ञानपीठ पत्रिका : दिसम्बर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित, काव्य और नाटक

वरांगचरित [संस्कृत]
मूल : श्री जटासिंहनन्दि; सम्पादन : डॉ० आदिनाथ उपाध्ये ३.००

जम्बूस्वामीचरित [संस्कृत]
मूल : पं० राजमल्ल; सम्पादन : श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री १.५०

प्रद्युम्नचरित [संस्कृत]
मूल : श्री महासेन; सम्पादन : पं० मनोहरलाल, रामप्रसाद शास्त्री .५०

रामायण [अपभ्रंश]
मूल : महाकवि पुष्पदन्त २.५०

पुरुदेवचम्पू [संस्कृत]
मूल : श्रीमदर्हद्दास; सम्पादन : श्री जिनदास शास्त्री .७५

अंजनापवनंजय [नाटक]
मूल : श्री हस्तिमल्ल : सम्पादन–वासुदेव पटवर्धन ३.००

जैन-न्याय

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग १
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.००

न्यायकुमुदचन्द्रोदय [संस्कृत] भाग २
मूल : श्री प्रभाचन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य ८.५०

प्रमाणप्रमेयकलिका [संस्कृत]
मूल : श्री नरेन्द्रसेन; सम्पादन : पं० दरबारीलाल कोठिया १.५०

सिद्धान्त, आचार और नीतिशास्त्र

सिद्धान्तसारादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री जिनेन्द्राचार्य; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी १.५०

भावसंग्रहादि [प्राकृत-संस्कृत]
मूल : श्री देवसेनसूरि; सम्पादन : पं० पन्नालाल सोनी २.२५

पञ्चसंग्रह [संस्कृत]
मूल : श्री अमितगति सूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल .८१

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र [संस्कृत, मराठी अनुवाद]
मूल : पं० आशाधर; सम्पादन-अनुवाद : मोतीलाल

स्याद्वादसिद्धि [संस्कृत, हिन्दी-सारांश] ५०
मूल : श्री वादीभसिंहसूरि; सम्पादन : पं० दरबारीलाल

रत्नकरण्डश्रावकाचार [मूल, संस्कृत टीका] १.५०
मूल : श्री स्वामी समन्तभद्र; टीका : श्री. प्रभाचन्द्राचार्य

लाटी संहिता [संस्कृत] २.००
मूल : श्री राजमल्ल; सम्पादन : पं० श्री दरबारीलाल

नीतिवाक्यामृत (शेषांश) [संस्कृत टीका] .५०
मूल : सोमदेवसूरि; टीका : अज्ञात

.२५

आगामी प्रकाशन

साहित्यिक

* **कुछ निबन्ध** : अक्षयकुमार जैन (निबन्ध)
* **मुरदा सराय** : डॉ० शिवप्रसाद सिंह (कहानी)
* **हिन्दीके आदिमुद्रित ग्रन्थ** : कृष्णाचार्य (शोध)
* **अपभ्रंश भाषा और साहित्य** : डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन (शोध)
* **सिंहली कहानियाँ** : सं०—भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा एस्० मेधंकर (कहानी)
* **अस्तंगता** : कृष्णचन्द्र वर्मा 'मिक्खु' (उपन्यास)
* **तार-सप्तक** : सं० अज्ञेय (कविता)
* **दूसरा सप्तक** : सं० अज्ञेय (कविता)
* **संग-तराश** : शिवचन्द्र शर्मा (कहानी)

■

ज्ञानपीठ पत्रिका : दिसम्बर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक भावबोध, कला संचेतना और नवीनताका प्रतिनिधि

० ०

"युद्ध विशेषांक"के बाद

दाम्पत्य विशेषांक : दिसम्बर १९६५। ३० नवम्बरको प्रकाशित। पृष्ठ लगभग ३५० से अधिक। मूल्य : २ रुपये।

युगल-युग्म चित्रों सहित महत्त्वपूर्ण सामग्री-परिचर्चा, संस्मरण, डायरी, कहानी, व्यंग्य, पत्र, एकांकी....

दाम्पत्य विशेषांक : नये वर्षका स्वागत : पूरक अंक। जनवरी १९६६। २५ दिसम्बर को प्रकाश्य। पृष्ठ १५०। मूल्य : १ रुपया। उतनी ही महत्त्वपूर्ण सामग्री और युगल-युग्म चित्रोंकी मोहक सज्जा।

विस्तृत सूचना 'ज्ञानोदय'के नवम्बर अंकमें उपलब्ध

कृपया 'युद्ध विशेषांक' के लिए अब ऑर्डर न भेजिए, एक भी प्रति उपलब्ध नहीं है। पाठकोंसे निवेदन है कि वे युद्ध-विशेषांक मिल-बाँट कर पढ़ें।

ज्ञानोदय : सम्पादकीय कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७
प्रकाशन कार्यालय :
भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५
प्रमुख वितरक :
बैनेट कोलमैन ऐण्ड कम्पनी लि०, बम्बई–१

भारतीय ज्ञानपीठकी ओरसे जगदीश अग्रवाल-द्वारा प्रकाशित और सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसीसे मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रजिस्टर्ड सं० एल–१७४६

हिन्दीके समीक्षा-साहित्यमें
अपने प्रकारकी अकेली
और महत्त्वपूर्ण
नयी प्रस्तुति

• •

'विवेकके रंग' अर्थात् समकालीन विशिष्ट कृति साहित्यपर प्रकाशित गणनीय समीक्षाओं का संकलन। अपनी तरहकी पहली कृति-प्रौढ़ और प्रभावपूर्ण। संकलनके माध्यमसे साम्प्रतिक साहित्यका, सभी पीढ़ियोंके समकालीन लेखनका, समग्र व्यक्तित्व भी सामने आ जाता है और समीक्षा सम्बन्धी नये विवेक, नयी पद्धतिको भी संकेन्द्रित ढंगसे देखा जा सकता है।

प्रत्येक पुस्तकालयके लिए अनिवार्य रूपसे संग्रहणीय कृति।

विवेक के रंग

सम्पादक
डॉ० देवीशंकर अवस्थी

•

मूल्य ७.००

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाश
कलकत्ता • दिल्ली • वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri